मालवी - हिन्दी
शब्दकोश

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित
डॉ. प्रह्लाद चन्द्र जोशी

मालवी-हिन्दी
शब्दकोश

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित
डॉ. प्रह्लाद चन्द्र जोशी

प्रधान सम्पादक
श्रीराम तिवारी

सम्पादक
कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

प्रकाशक
संस्कृति संचालनालय, मध्यप्रदेश, भोपाल

बोलियाँ जनपदों के लोक जीवन में सम्प्रेषण और वाचिक रचना का आधार हैं। संस्कृति रचना और उसकी विशिष्टता के केन्द्र में मूलतः भाषाएँ होती हैं। बुन्देली, बघेली, निमाड़ी, मालवी आदि केवल बोलियाँ नहीं हैं, वे समृद्ध संस्कृतियाँ भी हैं।

जीवन की सुदीर्घ लोकयात्रा में विपुल शब्द सम्पदा का निर्माण होता है-भाषाओं की तुलना में अपनी जीवन्तता और त्वरा, अनुभव और अभिव्यक्ति में बोली अधिक नमनीय, लचीली, शब्द बहुल और सटीक होती है, क्योंकि उसके पीछे समूह चित्त और सामुदायिक परम्पराएँ सक्रिय होती हैं। लोक वास्तव में व्यवहार और आचरण में होता है- जीवन की व्यापक गतिविधि और कर्म के बीच अनुभव की ज्ञान परम्परा से बोलियों का दायरा विस्तृत होता है, सहज और प्रामाणिक, अनायास और प्रयत्नहीन कितने-कितने शब्द इस भाषिक सम्पदा में शामिल हो जाते हैं। वे लोगों के व्यवहार और सम्प्रेषण, रचना और अभिव्यक्तियों में अपने को प्रकट करते हैं, वे शब्द केन्द्रित रचना परम्पराओं से होते हुए हजारों कौशलों और सांस्कृतिक परम्पराओं, अनुष्ठानों और पवित्र देवधारणाओं तक फैल जाते हैं। मनुष्य की सांस्कृतिक धरोहरों में यह एक अनूठी विरासत है- इस शब्द सृष्टि का बड़ा मूल्य है। भाषाएँ जब-जब इन वाचिकताओं के निकट आती हैं-अन्तर्क्रिया करती हैं, उनकी शक्ति का संसार विस्तारित हो जाता है, वे अधिक जीवन्त और अर्थबहुल हो जाती हैं। उन्हें सम्प्रेषण और अभिव्यक्ति की नई व्यंजनाएँ और भंगिमाएँ मिल जाती हैं।

विभिन्न जनपदों में बोलियाँ लोक सम्प्रेषण और रचना का माध्यम ही नहीं है, वे वास्तव में एक सुदीर्घ और समृद्ध सांस्कृतिक परम्परा का आधार भी होती हैं। हम कह सकते हैं कि अपने आद्य रूप में भाषा ही तत्त्वतः संस्कृति रचना और बोध के केन्द्र में होती है। लोक समाजों में सम्प्रेषण वाचिक है, और साहित्यक रचना भी मौलिक परम्परा का एक भाग होती है-इस रूप में 'वाचिकता' वास्तव में लोक संज्ञान के प्रत्येक पक्ष और सर्जना के सभी माध्यमों में संभव होती है।

बोली और वाचिकता का संबंध एक दूसरे से जुड़ा है। वाचिक सम्प्रेषण में एक अद्‌भुत त्वरा और शक्ति होती है- भाषाओं की तुलना में बोलियाँ अधिक शब्द बहुल और अर्थान्विति को प्रकट करतीं हैं। यह जीवन की व्यवहार परम्परा और उसका अनुभव केन्द्रित ज्ञान है, जो प्रत्येक स्थिति, घटना, भाव, विचार और अनुभूति को तुरन्त एक विलक्षण अमिधा देता है।

कृषि और दस्तकारी के विभिन्न कौशलों के देशज ज्ञान प्रणालियों में से प्रत्येक अनुशासन की अपनी एक विशिष्ट पारम्परिक शब्दावली होती है। खेती, कुम्हारी, बुनकरी, रंगरेजी, लोहरी और काष्ठगीरी के पास अपने माध्यमों की खास भाषा होती है– यह लोक सम्प्रेषण की भाषा से इतर है और बोलयों के शब्दों के संसार को विस्तृत का देती है। जब हम लोक की व्यवहार परम्परा और अनुभव केन्द्रित ज्ञान की बात करते हैं, जिसके साथ वाचिक रूपों और शब्द सम्पदा का गहरा संबंध है, तब हमारा आशय यही होता है।

जनपदों में –एक भाषा के जनपद में बीस –तीस मील के अंतर से भाषा थोड़ा बदल जाती है, उसके शब्द, शब्दोच्चार और अर्थ भंगिमा में थोड़ा अंतर आ जाता है। कुछ नये शब्द और विलक्षण अर्थ उसमें शामिल हो जाते हैं। जब हम बोलियों के सम्यक् शब्दकोश बनाते हैं, तो यह कठिनाई बढ़ती जाती है– एक क्षेत्र में जो विशेष शब्द है, दूसरे क्षेत्र में उसमें थोड़ा अंतर आ जाता है, उच्चारण के ढंग में भी थोड़ा परिवर्तन होता है। इसलिए यह दावा करना कठिन है कि किसी भी बोली का समग्र शब्दकोश बनाया जा सकता है– वास्तव में इस क्षेत्र में शब्द संकलन और उनके प्रकाशन की पहल ही की जा सकती है। यह एक सतत् प्रक्रिया के रूप में संभव है, जब प्रतिवर्ष इन संकलनों में नयी शब्द सम्पदा शामिल हो और यही एक जीवन्त भाषा –कोश की जरूरत है।

'निमाड़ी' और 'बघेली' शब्दकोश के प्रकाशन के बाद 'मालवी' भाषा पर एकाग्र यह तीसरा शब्दकोश है। यह सारा कार्य बोलियों की शब्द सम्पदा के संकलन का आरंभ ही है– धीरे–धीरे यह कार्य अधिक विस्तृत और गहन भी होगा। उम्मीद है इस प्रयास पर आपकी प्रतिक्रिया हमें प्राप्त होगी।

–प्रकाशक

पूर्वरंग

हिन्दी परिसर के अन्तर्गत पश्चिम मध्यप्रदेश के पारम्परिक मालवा क्षेत्र की लोकभाषा मालवी है। इसकी वाचिक परम्परा नगर की अपेक्षा ग्राम में अधिक है। ग्राम कृषिप्रधान हैं। अतः इसकी शब्दावली भी ग्रामीण और कृषिमूलक अधिक है। अब नयी हवा के साथ अधुनातन अन्य शब्द भी उसमें प्रवेश करने लगे हैं।

मालवा पारम्परिक अवन्ती जनपद का बृहत्तर रूप है जो प्रायः दो हजार वर्षों से विभिन्न देशी-विदेशी भाषा-भाषियों के सम्पर्क में रहता आया है। यह भारत के केन्द्र में होने से चारों ओर की भाषाओं-बोलियों से भी आदान-प्रदान करता रहा। अतः मालवा की जनता निरन्तर उपयोगी और सार्थक शब्दों से अपनी भाषा को सदा समृद्ध करती रही। इस प्रकार मालवी की शब्द सम्पदा विविधवर्णी और असीम है। उस असीम शब्द सम्पदा के विधिवत् संकलन के छुटपुट प्रयास तो व्यक्तिगत संग्रहों के लिए अनेक मालवी प्रेमी करते रहे। उनमें से कुछ जब तब पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित भी होते रहे। उन सबके साथ ही कुछ व्यक्तिगत संग्रह मिलाकर डॉ. प्रहलादचन्द्र जोशी ने 1999 में प्रामाणिक मालवी-हिन्दी शब्दकोश प्रकाशित किया था। तभी डॉ. जोशी ने मुझसे आग्रह किया था कि इस प्रकाशित शब्दकोश का मैं संशोधन कर दूँ।

प्रायः पच्चीस-तीस वर्ष पूर्व व्युत्पत्तिमूलक सोदाहरण मालवी शब्दकोश तैयार करने का उपक्रम मैंने आरम्भ किया था। उनमें प्राचीन प्राकृत तथा देशी शब्दकोशों के साथ ही रचनात्मक ग्रंथों का भी उपयोग किया गया था। उसका कुछ संग्रह मेरी पुस्तक लोकभाषा और साहित्य में प्रकाशित है। उसकी प्रकृति अलग होने से उस सामग्री का इस कोश में उपयोग नहीं किया जा सका है, परन्तु जो सोदाहरण शब्दकोश का मैंने क्रम आरम्भ किया था, उसे मेरे ज्येष्ठ चिरंजीव मालवी नाट्यवेत्ता और प्रस्तोता शिरीष ने आगे बढ़ाया था। फिर मालवी संकलन में दक्ष मेरी धर्मपत्नी निर्मला ने उस क्रम को पर्याप्त आगे बढ़ाया। समस्त शब्दों की व्युत्पत्ति अल्पावधि में तैयार करना समय साध्य होने से इस कोश में देना सम्भव नहीं हो पा रहा है, परन्तु उधर डॉ. जोशी का आग्रह था ही। तब ही उनके कोश का संशोधित रूप भी उनके सामने प्रस्तुत कर दिया था और वे कोश के उस नये रूप को प्रकाशित देखने के लिए आतुर थे। परन्तु उनके रहते यह सम्भव नहीं हो पाया। अब आदिवासी लोककला एवं

तुलसी साहित्य अकादमी, भोपाल के सुधी निदेशक डॉ. कपिल तिवारी के द्वारा समुचित रूप में यह कोश पूर्वोक्त समस्त सामग्री को समेटते हुए प्रकाशित हो रहा है। डॉ. जोशी की कामना इस प्रकार अब पूर्ण होने जा रही है। उस दिवंगत मालव मेधावी के प्रति श्रद्धावनत हूँ और उनके वर्तमान परिवार का भी जिनकी इस कोश के प्रकाशन की अनुमति प्राप्त हुई। मैं अपने परिवार जनों का आभारी हूँ जिनके सहयोग के बिना यह क्रम पूरा नहीं हो पाता।

मालवी शब्दों का भण्डार अकूत है, विविधवर्णी है। मालवी में इतर भाषाओं के शब्दों को आत्मसात् कर उन्हें अपना रंग देने की अनोखी क्षमता है। ऐसी मालवी शब्द सम्पदा की अपार राशि में से समयसीमा होने से यथासम्भव कुछ ही शब्दों का यहाँ संकलन किया जा सका है और उनमें से भी कुछ शब्दों की ही उदाहरणों से पुष्टि की जा सकी है। कोई भी कोश कभी पूर्ण नहीं कहा जा सकता। शब्द संकलन की यह सतत प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में पूर्व संकलनों का उपयोग करते हुए आगे बढ़ा जाता है। उसी दिशा में यह प्रयत्न भी है। इसे सुचारु प्रकाशित करने के लिए मैं डॉ. कपिल तिवारी और अशोक मिश्र का हृदय से आभारी हूँ। अक्षर विन्यास के लिए मिलिन्द और मिताली रत्नपारखी धन्यवादार्ह हैं।

बिलोटीपुरा,
उज्जैन 456006

डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित

संकेत

अव्य.	–	अव्यय
ए.व.	–	एक वचन
क्रि.	–	क्रिया
क्रि.वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुलिंग
ब.व.	–	बहु वचन
वि.	–	विशेषण
सं.	–	संज्ञा
सर्व.	–	सर्वनाम
स्त्री.	–	स्त्रीलिंग
मा.लो.	–	मालवी लोकगीत– टीकमचंद भावसार और डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित।
मो.वे.	–	मोती वेराणा – टीकमचंद भावसार।

मालवी का व्याकरण

लिपि – देवनागरी।

स्वर – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

व्यंजन – क, ख, ग, घ, च, छ, ज, झ, ट, ठ, ड, ड़, ढ, ण, त, थ, द, ध,न, प, फ, ब, भ, म, य, र, ल, ळ, व स, श,ह।

अनुनासिक – (ं) (ँ)

कारक

कर्ता	–	ने ए
कर्म	–	के, खे
करण/अपादान	–	से, ती
सम्प्रदान	–	सारू, वास्ते, कारणे
सम्बन्ध	–	का की, रा री, ना नी
अधिकरण	–	में, पर
सम्बोधन	–	ए ओ अरे

सर्वनाम

	एक वचन	बहुवचन
अन्यपुरुष	उ	वी
मध्यमपुरुष	तू, तम, थने	तम, तमारे, आपके, आपने
उत्तम पुरुष	म्हू, में	हम
निश्चय वाचक	यो/उ	इ/वी
प्रश्नवाचक	किने, कूण	किनाने, कणाने, कठे, कतरा
सम्बन्धवाचक	जो	
अनिश्चयवाचक	कोई	
सकलवाचक	सब/सगला	

मालवी क्रियापद प्रायः हिन्दी जैसा है, परन्तु वह ओकाराँत होता है।

एकवचन	बहुवचन
हे	हे
थो/थी	था/थी
गा	गा

उपसर्ग और प्रत्यय तद्भव रूप में भी प्राप्त होते हैं। अपजस में परकरमा (परिक्रमा) तद्भव है।

यह स्थूल रूप रेखा है। विस्तार के लिए देखें– मालवी और उपबोलियों का व्याकरण (प्र.च. जोशी)।

अ – वर्णमाला का प्रथम अक्षर।

अइ – आई। (नरा घर की अई। मो.वे. 79)

अईग्या – क्रि.– (लई ने अईग्या। मो.वे. 79)

अई ने – क्रि. आ-आ करके।

अँईयाड़ी – सर्व. – इस ओर, इधर।

अई लेस्याँ बई लेस्याँ – दोनों तरफ से, इधर और उधर दोनों तरफ से। (थारी अई लेस्यां बई लेस्यां दोई नाता रे। मा.लो. 171)

अँई–वँई – अव्य. – इधर-उधर, यहाँ-वहाँ।

अईयन–वईयन – स्त्री . दोनों बाहें।

अकड़ – स्त्री. अकड़, शेखी, नखरा, एँठ, हठ, ठिठुरना, मरोड़।

अकल – बुद्धि, अक्ल, समझ।

अक्कल – अकल, बुद्धि, समझ।(बिगर बुलावा कैसे जावाँ अक्कल मारी तुमारी। मा.लो. 684)

अकताण – उकताहट, ऊब जाना, (अइगी अकतण, मो. वे. 34)

अक्कल डाड़ – स्त्री. वह विशेष दाँत जो मनुष्य के वयस्क होने पर निकलता है।

अक्कलमंद – चि.– बुद्धिमान, विद्वान्।

अक्खर – पु.– अक्षर।

अक्खड़ – वि. – वह जो अपनी बात पर अड़ा रहे और किसी की न सुने। बिगड़ैल, झगड़ालू, जल्दी लड़ पड़ने वाला।

अक्खी – वि.– अक्षत, सम्पूर्ण।

अंका बंका – एक भक्त, भक्ति करने वाला, भगत।

अकारथ – क्रि.वि. – व्यर्थ, निष्फल, बेकार, बेमतलब।

अकारा – वि.– सुगन्धित, खुशबूदार।

अकाल – पु.–असमय, अकाल, बेवक्त, दुर्भिक्ष।

अकाल–मोत – क्रि.वि.–असमय मृत्यु हो जाना।

अकाल को टूट्यो – क्रि.वि.– अकाल या दुर्भिक्ष से टूट गया है शरीर जिसका ऐसा भूखा व्यक्ति, खाना ही जिसका प्रिय विषय है, ऐसा पेटू, पेटभरा।

'अ'

अकास – पु.स. – आकाश, नभ, आसमान।

अकेलो – पु.ए.व.– अकेला, जिसकेसाथ कोई न हो, एकाकी।

अक्रूर – वि. – दयालु, अक्रूरजी।

अकेलो-दुकेलो – क्रि.वि.– इक्का-दुक्का, कोई- कोई।

अखंड – वि. – खंडित नहीं , पूरा, समस्त।

अखत – अक्षत, चाँवल के अक्षत। (अखत का हमारे तिलक लिलाट। मा.लो. 103)

अक्खातीज – स्त्री. – अक्षय तृतीया।

अखबार – समाचार पत्र।

अखरोट – न. – एक मेवा।

अखाड़ो – पु. – वह स्थान जहाँ लोग व्यायाम करते हैं, साधुओं का स्थान।

अखूट – वि. – जो समाप्त न हो, कम न हो, अक्षय।

अखेजोत – स्त्री.स. – अक्षयज्योति, अखण्ड ज्योति, ज्योति जो बुझती नहीं।

अखेवट – पु.स. – अक्षयवट, सिद्धवट (उज्जैन) एवं प्रयागराज में (अक्षयवट) इस श्रेणी के कहे जाते हैं।

अंगरखो – पु. – कोट की तरह पहने जाने वाला एक प्रकार का पहनावा, अँगा।

अंगड़ई – स्त्री. – शरीर की वह क्रिया जिसमें धड़ और बाहें कुछ समय के लिये तनती या ऐंठती हैं, ऐसा प्रायः आलस्य के कारण, सोकर उठने पर या ज्वर आने से पहले होता है।

अंगण – पु.स. – आँगन, दालान।

अगस्त – पु.– अगस्त्य ऋषि।

अंगतू – पु. – निजी, प्रियपात्र, रिश्तेदार।

अग्गन – सु.सं. – अग्नि, आग, वि.– जलन।

अगन देव – पु.स. – अग्नि देवता।

अगनी – पु. – आगी, आग।

अगणे मास – पु.स.– अगहन मास, अगहन का महीना।

अगम – पु. – अज्ञात, वि.– गूढ़, अगम्य गुप्त, आगामी।

अगम – पछम – क्रि.वि. – आगा-पीछा, अगला-पिछला।

अग्गम – जहाँ तक कोई पहुँच न सके, अथाह, विकट, बहुत अधिक, आगामी।

अगर – सुगन्ध वाला एक पेड़, सुगन्धित वृक्ष जिसकी लकड़ी से भगवान् के झूले बनाए जाते हैं – पालने बनाए जाते हैं, यदि, आगे।
(अगर चन्दर का बल्या रे पालणा। मा.लो. 608)

अगरनी – स्त्री.– पुंसवन संस्कार, जो अग्रिम रूप से किया जाता है, मालवी में गर्भ के सातवें महीने में गोद भरने को अगरनी कहते हैं, गोद भराई रस्म, एक लोक संस्कार।
(ससुराजी का राज में अगरनी करावो जी राज। मा.लो. 17)

अगरबत्ती – स्त्री. स.– गूगल, चंदन, आदि सुगंधित द्रव्यों से बनाई गई काड़ी।

अगरेल – न.– अगर का तेल, अगर वृक्ष।

अगला – अनोखा, विचित्र।
(मेला बैठा चीरा पेरे पेंचा अगला ठाट। मा.लो. 529)

अगले – बगले – क्रि.वि. – इधर-उधर, आसपास।

अगवाड़ो – पु. – घर के आगे का भाग, सामने का हिस्सा।

अगवाड़े व्याणी गाय – घर के सामने गाय ने बच्चा दिया है।
(हो राजा अगवाड़े व्याणी रे गाय।)

अगवानी – स्त्री.– स्वागत, सत्कार करने के लिये आगे बढ़ना।

अंग – अंग, शरीर का भाग।

‘अ’

अंगरेज – पु. – इंग्लैंड देश का रहनेवाला आदमी।

अंगरेजी – पु. – जैसे अंगरेजी ढंग, खान-पान, स्त्री–इंग्लैंड देश या अंग्रेजों की भाषा।

अगाऊ – वि.– अग्रिम, पेशगी।

अगाड़ी – अव्य. – आगे की ओर, आगे, अग्रिम, सामने वाला, पहले-वाला, प्रथम।
(छोटा नेन दिया हाथी को रण में चले अगाड़ी। मा.लो. 696)

अँगोछो – पंचा, महीन तौलिया।
(खाँदे धरयो अँगोछो। मो.वे. 40)

अंगारो – पु.– आग का गोला, अग्नि पिण्ड, आग, लकड़ी का जलता हुआ खीरा।

अगास – पु. – आसमान, गगन।

अगाश्यो – पु. – आसमान में जाकर चलने या फूटनेवाली आतिशबाजी।

अगिनबोट – पु. – वह नाव जो इंजिन से चलती है। स्टीमर।

अंगिया – स्त्री – स्त्रियों के पहनने की एक प्रकार की छोटी कुरती, चोली, कंचुकी, अंगवस्त्र, अंगरखी।

अंगीठी – स्त्री. – बड़ी अंगीठी, लोहे, मिट्टी आदि का वह प्रसिद्ध पात्र जिसमें आग सुलगाते हैं।

अगुवई – स्त्री. – अगवानी।

अंगुरी – स्त्री. – हाथ या पैर की अंगुली।

अंगूठो चूसणो – पु.क्रि. – पराधीन होना, वश में होना, शिशुओं द्वारा हाथ या पैर का अंगूठा मुँह में लेकर चूसना।

अंगे – अव्य. – स्वयं, अपना, अपने लिये, निज के लिये, स्वयं द्वारा।

अंगे खावे – क्रि.वि. – स्वयं खाता है, स्वार्थी

अंगेरा – स.वि.– अंग का, सीने का, छाती का।

अंगे पधारो – पु.क्रि.ए.व.– स्वयं काम करो।

'अ'

अगोचर – वि. – जो देखा, सुना या समझा न जा सके।

अंगोछो – पु.सं. क्रि.– अंग पोंछना, गीला शरीर पोंछने का वस्त्र।

अंगोठी – स्त्री.– अँगूठी, मूँदरी, छल्ला, ऊँगलियों या अँगूठे में पहना जानेवाला आभूषण, मुद्रिका।

अगेला, अगोला – पु.– ईख या गन्ने का अगला भाग, सारहीन भाग।

अगन्यो मास – तीसरा महिना, गर्भ का तीसरा महिना। (म्हारा मारुजी अगन्यो मासज लागो! (आग्नायी = त्रेता, तीन) मा. लो. 4)

अघोर – वि. – अमंगल, डरावना, निर्भय, बेखबर, निश्चिन्त।

अचपरो – चंचल, शैतान, मस्ती करता।

अचंभो – अचरज, आश्चर्य चकित होना, आश्चर्यजनक। (उड़त विमान देखत भयो अचंभो। मा. लो. 684)

अच्छई – वि.– अच्छाई।

अच्छर – वि. – अक्षर।

अच्छेर – वि. – आधासेर, पुराने तौल से आठ छटाँक, एक सेर या सोलह छटाँक का आधा वजन, वजन करने या तौलने का बाट।

अचम्बो – पु.– अचम्भा, आश्चर्य, अचंभा।

अंचळ – पु.सं.– साड़ी या चादर का पल्ला, सीमान्त प्रदेश।

अचपलो – चंचल, शैतान।

अचूक – वि. – बिल्कुल ठीक, जो चूक नहीं करता, निर्दोष।

अचूंबो – वि. – अचम्भा, आश्चर्य, विस्मय।

अतातो–पछतातो – क्रि.वि.– पश्चात्ताप करता हुआ, पछताता हुआ।

अच्छी तरे – वि. – ठीक प्रकार से, भलीभाँति, उचित रीति से।

अछानी – क्रि.वि. – एक बारगी, सहसा, अकस्मात् , एकाएक, छिपी हुई नहीं, प्रकट।

अछूता – नया, ताजा, नवीन– जिसे अभी तक किसी ने छुआ हो। (फूलड़ा अछूता गौरी राखजो। मा.लो. 636)

अछूतो – वि. – जिसे अभी तक किसी ने छुआ न हो, जो काम में न लाया गया हो, नया, ताजा, नवीन।

अछेर – क्रि. – गाय, भैंस आदि पशुओं को जंगल में चरने के लिये घरों से छोड़ना, उछेरना, घेरना, हाँकना, छोड़ना।

अछेरूँ – क्रि. – बड़ी करूँ, लालन–पालन करना, छोड़ना, त्यागना, संवर्धन करना।

अजगर – पु.– अजगर, एक बड़ा सर्प जो खूब आहार करके पड़ा रहता है, सुख-दुःख को एक-सा मानने वाला, वि.– सुस्त, आलसी।

अंजनी नंदन – पु.– हनुमान्, श्रीरामचन्द्र के अनन्य सेवक।

अजब – वि. – अजीब, विलक्षण, अनोखा।

अजमान – स्त्री.– एक पौधा जिसके सुगन्धित बीज मसाले और दवा में काम आते हैं।

अजमाणो – क्रि.अ. – ठीक से परखना, नाप–जोख करना।

अजमाल – पु. – राजस्थान के लोक प्रसिद्ध पुरुष अजमालजी, देवपुरुष राम-देवजी के पिता।

अजमाणो – आजमाना, समय आने पर परीक्षा करना, तोलना, वापरना, ठीक से परखना।

अजमो – पु. – अजवाइन, औषधि एवम् मसाले के उपयोग में लाया जानेवाला एक तीखा-चरपरा पदार्थ।

'अ'

अजर-अमर – वि. – जो कभी बूढ़ा न हो, अविनाशी, परमात्मा, जो कभी मरता न हो।

अंजर–पंजर – पु. – शरीर या ढाँचे आदि के अंग या जोड़, हड्डियों के भिन्न-भिन्न टुकड़े।

अंजली – स्त्री. सं.– दोनों हथेलियों को मिलाने से बना हुआ गड्ढा, जिसमें भरकर कुछ दिया या लिया जाता है, अंजली भरकर पानी-पीना।

अंजान – अनजान, अपरिचित, नहीं जानना, नहीं पहचानना, बिना जान पहचान वाला।

अजस – पु. – अपयश, अपकीर्ति, बदनामी।

अजागल – वि.– बुद्धू, निर्धन, सुस्त, बेकार, घामड़, बावला, मूर्ख, बकरी के गले में लटकते हुए दो स्तन।

अजाण – वि. – अनाड़ी, अज्ञानी, अनजान।

अजियासुत – पु.सं. ए.व. – बकरी का बच्चा अर्थात् बकरा।

अजीरण – वि. – अपच, जो पचा न हो, ऐसा अन्न, जो खाने पर भी हजम न हुआ हो, जो जीर्ण न हो।

अजब–गरीब – वि. – अनोखा।

अजूबो – वि. – अचम्भा, आश्चर्य।

अजोद्या – अयोध्या, अवध, श्रीराम की जन्मभूमि। (चीरा तो अजोद्या से मंगाया। मा.लो. 401)

अटक – स्त्री.–रुकावट, बन्धन, कैद, रोक, क्रि.– गिरवी रखना, गोत्र।

अंट–शंट – क्रि.वि. – अनाप–शनाप।

अटकण मटकण – बच्चों का एक खेल, खिलोना। (दोई अटकण मटकण सोना का। (मा.लो. 115)

अटकणो – क्रि. – रुकना, अटकना, रुकावट पड़न। (अटकीर्‌यो हे रोड़ा। मो. वे. 48)

अटकाव – रुकावट।

अटल – वि. – अचल, स्थिर। (लाड़ी दादाजी का अटल दरवाजा। मा.लो. 407)

अटारी – वि.पु.– बड़ा मकान, भवन, अटारी, वि.–ऊँचा, उच्च।

अटाळो – वि. – ऐसी वस्तुओं का ढेर जो अधिकांश में उपयोग में न आती हों, स्थान घेरकर पड़ी हुई बिना काम की वस्तुएँ।

अंटी – स्त्री. सं.– कमर के पास की धोती की लपेट, जिसमें रुपये-पैसे बँधे हों।

अटोप – तरीका, अभ्यास।

अठारा – वि. – अठारह।

अठी – सर्व. – यहाँ पर।

अठे – सर्व. – यहाँ।

अट्ठो – वि.– आठ, ताश के आठ का अंकवाला पत्ता।

अड़चण – वि.–परेशानी, उलझन, तकलीफ, अटकाव।

अड़बी – वि. – अड़ना, रूठना, डटे रहना, हठ करना, जिद करना।

अड़बी – जिद, हठ, झगड़ा, टंटा, अड़बीला, बाधा, विघ्न, रुकावट, वैमनस्य।

अड़ – वि. – हठ करना, अड़ना।

अंड-बंड – वि.– बेसिर पैर।

अड़नो – भिड़ना, अड़ना, हठ करना अड़ करना, स्पर्श करना, छूना। (अड़ता अड़ती बइराँ बेठी। मो.वे.52 टस से मस न होना।)

अड़वायो – क्रि. – अड़ाया, सामने किया।

अडाण – पु. सं.– सिंचित भूमि।

अड़ियल टट्टू – वि.– हठीला, जिद्दी, अड़ने-वाला, अड़ेल टट्टू।

अड़ी सेर – ढाई सेर। (घी मेल्यो सेर अड़ाई। मा.लो. 3)

अडूसो – पु. अडूसा।

अंडो – पु. – अंडा।

अड्डो – पु. – अड्डा, अखाड़ा, यथा कुश्ती, जुए का अड्डा या ताश का अड्डा।

अड़ोस-पड़ोस – पु. – आसपास, करीब, निकट के रहने वाले, पड़ौसी।

अणके-वणके – सर्व. – इनके-उनके।

अणको – सर्व. – इनका, इसका।

अनगण्या – क्रि.वि.–अनगिनत, बिना गिनती के, अनन्त, अगणित, असंख्य।

अणचूक्यो – क्रि.वि.– इस दुःख में , इस रंज में।

अणमन्यो – वि.– उदास, सुस्त, अनमना।

अणमोल – व्यो.वि.– बेशकीमती, बिना मोल का, मोल–भाव किये बिना।

अण–वतळायो – वि. – अबोलो, बिना बोले, बिना कुछ कहे , बात न करते हुए।

अणसेंदी – वि. – बिन परिचित, असेंधा, अपरिचित, जान-पहचान वाला नहीं।

अणहद – नाद, खूब, असीम, अनहद नाद। (अणहद घुँघरु वाजीया। मा.लो. 708)

अणाँ – सर्व.ब.व.– इनको, इन सबको।

अंतड़ी – स्त्री.– आँत, आंत्र, शिरा, धमनी, नाड़ी, अंत्रिका।

अंतर – इत्र, फासला।

अंतकाल – पु. सं.– मृत्यु, मौत, अन्तिम समय।

अंतघणा – अव्य वि. –पर्याप्त, बहुत काफी।

अंत ने पार – अनंत, जिसकी कोई सीमा न हो, अनंत फल फूलों से भरा हुआ, धनाढ्य, अन्न धन से भरा हुआ। (नीम झगामग हुई रयो फूलड़ा को अन्त ने पार। मा.लो. 487)

अतरो – वि.– इतना अधिक, सोंध, इत्तो, इतरो।

अंतमणी – स्त्री.– अस्त होना, सूर्यास्त का समय, संध्या का समय।

अन्तर – इत्र, सुगंधित फूलेल, फासला, आँतरा, दूरी, दूर, अलग, जुदा, पृथक्। (अलस केरो तोल अंतर कर राखस्याँ जी। मा.लो. 599)

अंतरवासो – पु.सं.– दुल्हन-दूल्हे के बीच आड़ करने का वस्त्र, परदा, विवाह के समय की एक रीति – जिसमें ऐसा कपड़ा दुल्हन-दूल्हा के गठबन्धन के काम में लिया जाता है।

अंतरजामी – पु. – अन्तर्यामी, घट–घट की जानने वाला, ईश्वर, परमात्मा, सबके मन की जानने वाला और सबके मन में रहने वाला ईश्वर।

अंतरध्यान – वि. सं.– लुप्त, गायब।

अंतरपटो – पु. सं.– आड़ करने का वस्त्र, ओट, परदा, ढँकने वाली वस्तु, आवरण।

अंतरात्मा – पु. सं.– जीवात्मा, जीव, प्राण, अन्तःकरण, मन।

अंतरो – पु. – अन्तरा, किसी गीत के पहले पद या टेक को छोड़कर दूसरा पद या चरण, पहला चरण स्थायी कहलाता है।

अंतेघणा – अनन्त, अपार, असंख्य, बिना गिनती के। (माता धन छन लछमी अंते घणा। मा.लो. 602)

अतलस – विशेष प्रकार का बेस किमती रेशम जो चमकदार होता है। वह शेरवानी बनाने के काम में आता है।

अथमणा – क्रि. पु.– पश्चिम।

अथाणो – अचार।

अदकमास – अधिक मास, मलमास, पुरुषोत्तम मास। (काल भी पड्यो ने माँय अदक मास अईग्यो। मो.वे. 55)

अदक सरूप – अधिक सुन्दर, अधिक मनोहर, अधिक स्वरूप, जिसकी बनावट अधिक सुन्दर हो। (पेंचाँ को अदक सरूप हो इन्दर राजा। मा.लो. 615)

अदको – अच्छा, अधिक, बहुत।
भेरू, माता रे पाँव लगाड़स्याँ, एक वणज हम अदको सो करस्याँ।
मा.लो. 430)

अदगेली – आधी पागल, मूर्ख, बिन अकल की।
(नार मिली अदगेली म्हारा राजा, कुवाँरा क्यऊँ नी रईग्या राज। मा.लो. 158)

अदबद – अद्भुत, थुलथुल, भारी भरकम, असन्तुलित।
(धोती समाल रे धोती समाल अदबद गाँडीया धोती समाल। मा. लो. 442)

अदलो-बदलो – क्रि.वि.स्त्री. – कोई वस्तु लेकर बदले में कोई वस्तु देना, विनिमय।

अदबीच – अव्य. – मध्य।
(मेली गया रे संगवी मेलाँ अदबीच। मा.लो. 637)

अदवेंडो – आधा पागल, बेंडा।
(अदवेंड्या नावी कान केसा रे थारा सूपड़ा। मा.लो. 370)

अदावदी – बैर, दुश्मनी होना, मनमुटाव होना।

अंदाजो – पु. फा.– अनुमान, अटकल।

अंदारो – अंधेरा, अंधकार।
(भर भादवड़ा री रात अंदारी म्हारी माता बाई कामण गारा हो राज।
मा.लो. 413)

अदहन – आदण, भोजन पकाने के लिए पानी गरम रखना।

अदेड़ाणो – टकराना, दुर्घटना, तकरार होना, हाथापाई होना, लड़ना, भिड़ना।

अधच्छ – सं. वि. – अध्यक्ष, सभापति।

अधरम – अधर्म, दुराचार, धर्म के विरुद्ध कार्य, कुकर्म, बुरा काम।
(मीन मारकर भोग लगावे, अधरम जात केवाड़े। मा.लो. 688)

'अ'

अधरमी – नास्तिक, अधर्मी, विरुद्ध कर्म, पापी, दुराचारी, कुकर्मी।
(बाले जाले मसाणा में मेले असी अधरम नारी। मा.लो. 548)

अंधड़ – पु. – आँधी।

अंधो – वि. – अंधा।

अंधार – वि.पु. – अंधेरा, अन्धकार।

अधार – पु. – आधार, उधार।

अंधार कोटड़ी – स्त्री.– अंधेरी कोठरी, पेट।

अधेली – आधा आना, दो पैसों का सिक्का, अधन्नी।
(अधेली का पईसा ने पावला की कोड़ी। मा.लो. 704)

अधेलो – पु. – आधा पैसा, धैला

अनछेत्तर – पु. – अन्न सत्र, अन्न क्षेत्र, धर्मादा, सदावर्त।

अन्जाण – वि. – अज्ञान, मूर्ख, अनजान, ना समझ।

अन्ट – वि. – बैर, दुश्मनी।

अन्ट्या, अन्टिया – सं.ब.व. – लकुटरास का एक प्रकार, डण्डे, मालवी का अन्टिया नृत्य।

अन्टी – स्त्री. – कमर में खोंसने का वह पल्लू जिसमें रुपये-पैसे बाँध गाँठ लगाकर कमर में खोंस लिया जाता है, खेलने की गोली।

अनमनो – उदास, सुनमान, अस्वस्थ, अन्यमयस्क।
(काबो चरकली क्यऊँ अनमनी थारा वीराजी को व्याव।)

अनार – पटाखे की आतिश, दाड़िम फल, अनार दाने।
(खेलो नी अनार राईवर छोड़ो नी मेताब रे। मा.लो. 270)

अनीतो – उद्दण्ड, धमाल करना, अनुचित।
(ई काम अनीता करो। मो.वे. 40)

अपनाने – सं. – अपना बनाने, स्वीकार करके।

अपनोज – सर्व. वि. – अपना ही, स्वयं का ही।

अपनो–बिरानो – अपना पराया। (मो.वे. 80)

अपरम्पार – वि. – जिसका कोई पार न पा सके, अनन्त, अपार।

अपराँड्यो – क्रि.वि.–उलझाहुआ, उलझनपूर्ण, स्थिति, टेढ़ाकार्य।

अपराद – वि. – अपराध।

अपरेसन – चीरा लगाकर टाँके लगाना, चीर फाड़। (अबे अपरेसन वइग्यो। मो.वे. 45)

अपसगुन – पु. – अपशकुन, बुरे शकुन।

अफरा-तफरी – स्त्री. – उड़ाया जाना, इधर-उधर करना, गबन, गड़बड़ी करना।

अफ्वा – स्त्री. – उड़ती खबर।

अफीण – स्त्री. – अफीम।

अब – इस समय। (अब भी नी पीवे हे कोई। मो.वे. 84)

अबकारी – पु. – चुँगी, आबकारी, मादक कर विभाग।

अबके – इस बार, एश। (अबके पानी खूब पड़्यो। मो.वे. 84)

अबको – कठिन।

अबड़-छोत – अव्य. वि. – छूआछूत।

अबड्यो – वि.– भ्रष्ट, भ्रष्टाचरण करने वाला।

अबधू – वि. – अवधूत, योगी।

अब्बार – अव्य. – अभी।

अबरके – अव्य. – इस बार।

अबर्‍या-झबर्‍या – क्रि.वि. – अक्षय भण्डार, खजाना, अक्षय कोश।

अबलक – वि. – चितकबरे रंग का घोड़ा या बैल या कोई पशु, अबलक घोड़ा।

अबला – स्त्री. – औरत, स्त्री।

अबरा – अव्य. – अभी, इसी समय, तुरंत।

अंबारी – स्त्री. – हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला हौदा।

अबार – इस समय, अभी, इसी वक्त।

अंमिया, अंबिया – स्त्री. – छोटी कच्ची केरी।

अबी – अप. – अभी, इसी समय। (नी तो अबी होय। मो.वे. 59)

अबीरे – स्त्री. – अबीर, रोली।

अबीसेक – पु. सं. – जल से सींचना, छिड़काव, ऊपर से जल डालकर किया जाने वाला स्नान।

अबे – अव्य. – अभी, इसी समय।

अबोलो – बोलचाल न होना। (इन्दर राजा धरती अबोलो क्यूँ लियो। मा.लो. 615)

अमकार्‍या – पु.सं.– औंकारनाथ, कर्णाभूषण।

अम्बाड़ी – अम्बा वाड़ी, हाथी की पीठ पर कसा जाने वाला हौदा। (मकनो सो हाती ऊपर अम्बावाड़ी तो अनीशलालजी वाली ने बेठाओ। मा.लो. 577)

अम्बावाड़ी अजब बाणे– जिस पर बैठने का हौदा अनोखा हो। (पीठ तमारी मोटी गजानन्द अम्बावाड़ी अजब बणे हे जी।)

अम्बामाई – स्त्री. – अम्बामाता।

अम्बो मोरियो – पु. – आम पर बैठा मोर।

अम्मर – वि. – अमर, जो मरता नहीं। (भगवान तमारो जोड़ो अम्मर करेगा। मो.वे. 52)

अम्मर वेल – अमर बेल, आकाश बेल, नहीं मरने वाला, जिसका कभी नाश न हो जो लताएँ वृक्षों पर सदा छाँई रहती है।

अम्मरवाड़ी – स्त्री – गरबा की देवी।

अम्मल – वि. – अमल या अफीम।

अमरत धारा – वि. – अमृत धारा, अमृत वर्षा, एक औषधि विशेष।

अमरत – वि.– अमृत जिसे पीकर देवता अमर हो गये थे।

अमरित – वि. – अमृत।

अमरस – वि. – पके आम से निचोड़ा हुआ रस जिसमें दूध, शक्कर, इलायची आदि डाला जाता है।

अमरेस – वि. – अमर्ष।

अमली – स्त्री.– इमली।

अमलो – भीड़, राज्य कर्मचारी गण। (रात रा मेलाँ अमला में जयईजी ने चीरा बगस्या हो राज। मा.लो. 521)

अमल्याँ – स्त्री. ब. व. – इमलियाँ ।

अमवाने – सं. पु. – उद्यापन करने, स्त्रियों द्वारा व्रत की समाप्ति पर किया जाने वाला पूजनोपचार विधि।

अमानी – वि. – निरभिमान, घमंड रहित।

अम्मावस – स्त्री. – कृष्णपक्ष की अंतिम तिथि जिसमें रात को चन्द्रमा बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

अमीर – वि. – दौलतमंद, धनाढ्य, धनवान, सरदार।

अमीरी – धनाढ्य का दिखावा।

अमुक – वि. – वह जिसका नाम न लिया जाता हो, फलाँ।

अमेठणी – क्रि. – उमेठना।

अमेठनो – बँट देना, मरोड़ना, उमेठना। (कान के अमेठो हो। मो.वे. 30)

अयडाणो – चिल्लाना, जोर से आवाज लगाना, गला फाड़–फाड़ कर बोलना, झगड़े करना।

अयाँड़ी – सर्व. – इधर।

अर – अव्य. – और।

अरई ओ – ओर देना, बोना, बो देना, लगवा देना, बारीक फुँसियाँ, तिरपन में दाने डालकर बो देना।

अरक – पु. – अर्क, रस, सूर्य, इन्द्र, आक, आकड़ो।

अरखावणो – अनचाहा, अखरने वाला। (सासु के अरखावणो जी नीत उठ देवे गाल। मा.लो. 245)

अरच करच – टुकड़े या चूरा, गिरते निवाले। (काकीसा अरच करच सब वीणी खाता ओ। मा.लो. 205)

अरज करे – कहना, कह रहे हैं, अर्ज कर रहे। (उबा उबा सुसराजी अरज करे । मा.लो. 12)

अरड़ परड़ – निश्चिंत, न चिंता न फिकर, मोटा। (खाटलो छोड़ अरड़ परड़ गाँडिया खाटलो छोड़। मा.लो. 442)

अरण-करण – क्रि.वि.– वैवाहिक कार्य, आरण-कारण।

अरगला – स्त्री. – अर्गला, बंधन, साँकुल।

अरघ – पु. – अर्घ, दोनों हाथों की अंजलि में जल भरकर देवता को अर्पण करना।

अरचण – पु. – अर्चना करना, पूजा करना, वि.– तकलीफ, दुःख।

अरज – स्त्री. – विनय, निवेदन।

अरजण – पु. क्रि. – उपार्जन, पैदा करना, कमाना।

अरजी – स्त्री. – आवेदन पत्र, निवेदन।

अरथ – पु. – अर्थ, भावार्थ। (सासूजी म्हारा अरथ भण्डार।)

अरथी – स्त्री.वि. – अर्थी, धन की इच्छा करनेवाला, लालची, वह निसैनी, तरकटी या पालकी जिस पर रखकर मुरदे को श्मशाम ले जाया जाता है।

अरल खरल – कल कल बहता पानी, गहरा पानी, खल खल बजता हुआ बहता पानी, वेग से। (अरल खरल नदियाँ बहे। मा. लो. 545)

अरदली – पु. – अर्दली, चपरासी।

अरमो – अव्य. – निकट, पास, समीप।

अरवाड़े भरवाड़े – आगे से पीछे तक, आगे से जाना पीछे से निकलना।

अरवाणो – बिना जूते के।

अरवी – स्त्री. – तरकारी के काम का एक प्रसिद्ध कंद।

अरवो थान – खुब दूध आना, स्तर से खूब दूध उतरना।
(बाई वो हालरिया ने आवे अरवो थान, वऊ तम सुख आवे नींदड़ी। मा.लो. 42)

अरो – अव्य. – पास।

अलख – वि. – जो दिखाई न देवे।

अलगणी – स्त्री. – वस्त्र या वस्तुएँ टाँगने की रस्सी या डंडा विशेष।

अलगाणो – क्रि. – अलग करना।

अलगूँजो – पु.– बाजा।

अलझा – स्त्री. वि. – उलझे।

अलटो-पलटो – पु.स्त्री. – उलटफेर।

अलप झलप – अदृश्य, अर्न्तध्यान, लुप्त, गुप्त, अप्रकट, गायब, छिपा जाना, लोप होना।

अळद – स्त्री. – हल्दी।

अलल टप्पु – उटपटाँग, बिना ठिकाने का, बिना अन्दाज का।

अलस – अलसी, अलसी का वृक्ष, अलसी का तेल।(सायबा लाजो अलस केरो तेल। मा.लो. 599)

अलाप – आलाप, तान भरना।
(घर– घर अलाप जगायो हो राम।)

अल्यांग – सर्व. – इधर, यहाँ।

अल्लाणा, अल्ड़ाणो – वि. – चिल्लाना।

अलीजा – वि. – बहुत, अधिक।

अलूणो – वि. – फीका, नमक रहित।
(थारी गोरी बीना गोठ अलूणी। मा.लो. 587)

अलूंबा – वि.– उपालम्भ, उलाहना।

अलोप–जलोप – गायब हो जाना, अर्न्तध्यान हो जाना।
(ऊँके जुवाब दूँ इतरा में अलोप जलोप वईयो। मो.वे. 50)

अवगुण – दोष, दुर्गुण, हानि, अपकार।

अवटावणो – हैरान करना, औटाना, मन में घुटना, गुस्सा आना।

अवन्यासी – वि. – जिसका विनाश न होता हो, अविनाशी।

अवेरनो – एकत्र करना, इकठ्ठा करना, सम्हालना, समेटना।

अवरी – ओंधी, टेड़ी, उल्टी, प्रतिकूल।

अंडो – पु. – कलश, अण्डा।

अवारा – वि. – आवारा, व्यर्थ घूमने वाला।

अवळा – वि. – उल्टा, विपरीत।

अवळे – वि. – उल्टे, विपरीत।

अवसर मूँगा मोल को– अमूल्य समय, यह समय बड़ा अमूल्य है।
(धनवऊ जई बेठा सुसराजी री गोद अवसर मूँगा मोल को। मा.लो. 19)

अवेरा-हवेरा – क्रि.वि. – अबेर, विलंब, देरी देर-सबेर।

अवेरावे – क्रि. – कब्जे में आवे, वश में करे, नियंत्रण में लेने का भाव एकत्र करना।

अशीश – वि. – आशीष, आशीर्वाद।

ओशीशो – स.पं. – तकिया, सिरहाना, उपधान, सिर के नीचे लगाने का गद्दा।

असगुन – वि. – अपशकुन, अशुभ लक्षण।

असत – वि. – असत्य, झूठा, सत्ता रहित, खराब, बुरा, अस्तित्वविहीन।

अस्तुति – स्त्री. – प्रार्थना, गुणगान।

असनान – पु. – स्नान करना।

असबाब – पु. – साजो समान।

असमाल्यो जोगी – पु. – गोरखपंथी एक योगी का नाम, चमत्कार पूर्ण व्यक्ति।

असमान – आकाश, जो बराबर न हो, अतुल्य, आसमान।
(एक तो धरती ने दूजो असमान। मा.लो. 675)

असमानी-सुल्तानी – क्रि.वि. – देवी और राजाज्ञा से प्राप्त संकट।

असल – वि. पु. – असली।
(कामरु देस की असल कामणी, तो

मेरो बनो जादूगीर को। मा.लो. 387)

असवार – सं. पु. – सवार, सवारी करने वाला। (होय घोड़ी असवार सुसराजी लेवा आविया। मा.लो. 616)

असाई – अव्य – ऐसे ही, इसी प्रकार।

असाड़ – पु. – आषाढ़ मास।

असाड़ी – वि. – वह फसल जो आषाढ़ में बोई जाय, खरीफ की फसलें, स्त्री. आषाढी पूर्णिमा।

असामी – पु. – व्यक्ति, नौकर, जिससे लेनदेन हो।

असार – वि. – सारहीन, व्यर्थ।

असी – सर्व.– ऐसी।

असी-असी – क्रि. वि. – ऐसी ऐसी, इस इस प्रकार की, इस तरह की।

असीस – स्त्री.– आशीष, आशीर्वाद, शुभकामना।

असुर – पु. – राक्षस, दैत्य, नीच वृत्ति का पुरुष।

असुरो – क्रि. – सवार होकर, सवारी करके, विलम्ब से, देरी से। (असुरा क्यों पधार्‌या हो राज। मा.लो. 540)

असो – अव्य. – ऐसा। (असी बाताँ लागे। मो.वे. 45)

असोक – वि. पु. – अशोक का वृक्ष।

अस्पताल – दवाखाना, अस्पताल।

आ

आइंदा – भविष्य में, आगे आने वाला समय।

आँक – स्त्री. सं. – आटा छानने की चलनी, पु.– अंक, चिह्न, निशान, संख्या का चिह्न, अक्षर, अंग, हिस्सा, लकीर, बारीक छिद्रोंवाली चलनी।

आकड़ो – पु. – आँक या मदार का पौधा, अर्क, सूर्य, सं. – अंक संख्या, स्त्रियों की चाबी का छल्ला, पेंच। (आकड़ा की रोटी पोई । मा.लो. 687)

आँकड्यो – सं.पु.ए.व. – वृश्चिक, बिच्छू, बिच्छू का डंक, नोक, नोकिला सिरा, मुड़ा हुआ नुकीला भाग।

आँकणा – मूल्यांकन करना, तोलना, अनुमान लगाना, निशान लगाना।

आँक्याँ – स्त्री. – बंद आँखें, नेत्र, अनुमान, अंदाज।

आकरा – वि. – खरा, ठीक बजाया हुआ, तेज, कुरमुरा, तपा हुआ, उग्र, मुश्किल।

आक्खाई – वि.– सारा, सम्पूर्ण, साबूत, बिना टूटा हुआ।

आँकी-बाँकी – क्रि. वि. – टेढ़ी– मेढ़ी।

आँको – पु.– गाड़ी का धुरा, लट्ठा, दरवाजा या किसी भी वस्तु में आकर साड़ी या वस्त्र का फटना, आँका आना, छेद होना। (थारी साड़ी लागा आँका। मा. लो. 507)

आकोई – पु. वि. – पूरा, सम्पूर्ण।

आक्खो – वि. – पूरा।

आँख – आँखें, नैन, नयन, दृष्टि, नजर, ध्यान।

आँख – स्त्री. – चलनी, चलना, गाड़ी का धुरा।

आँख लागणी – नींद आ जाना, निद्रा आनी, सोना।

आखड़ी – प्रतिज्ञा, प्रण, मनौती, किसी वस्तु के न होने की प्रतिज्ञा, मन्नत, गायें, भैंसे आदि का समूह एक जगह इकट्ठा होकर एक साथ जंगल में चरने को जाना।

आखर – अव्य. – आखिरी, अंतिम, सं.– अक्षर, शब्द, अंततोगत्वा, आखिरकार।

आख खाउँ – क्रि. – दोनों हाथों की अँगुलियों को मुँह में डालकर नम्रता या दीनता बतलाना।

आखरकार – पु. – अन्ततोगत्वा, अन्ततः।

आखर में – पु. – अन्त में, आखिर में।

आखरी – वि. – अंतिम, स्त्री.– वह स्थान जहाँ

गाँव के पशु विश्राम करते हैं, अंतिम ठौर, ठिकाना, स्थान, आखिरी, कड़क, कठोर, ज्यादा सिकी हुई।

आखरी, आखरा – तेज तर्राट, तीखा स्वभाव, क्रूर, बहुत गुस्से वाले।

आखलो – वि. पु. – बधिया न किया हुआ बैल, साँड।

आखा – सारा पूरा।
(आखो कुवो भरईयो। मो.वे. 84)

आखाखाड़ू – आखड़मला, लड़ना, झगड़ना, बलवान, बलशाली।
(ढोर उजाड़ू आँख खाड़ू। मो.वे. 38)

आखा तीज – अक्षय तृतीया, क्षय नहीं होने वाला, अविनाशी, वैशाख शुक्ल तृतीया और उस दिन का पर्व।

आखी – पूरी, सारी, सब, समस्त, पूर्ण।
(आदी आदी सब खाई पन्दरमो आखी रे खाय।मा.लो. 541)

आग – स्त्री. सं. – अग्नि, ज्वाला, जलन, क्रोध।

आग्काडी – स्त्री. – दियासलाई, माचिस की तीली।

आँगण – पु. – आँगन, सहन, घर के अन्दर का सहन।
(बाई गजानंदजी रायाँरा आँगणा। मा.लो. 453)

आगपेटी, आगडाबी – स्त्री. – माचिस, दिया सिलाई की डिब्बी।

आग बोट – पु. – जहाज, पानी का जहाज।

आगमच – अव्य. – सर्वप्रथम, आगे आगे।

आँगल्याँ – स्त्री.ब.व. – अँगुलियाँ।

आँगरी – स्त्री. – अँगुली, अँगुल।

आँगल – सं.पु. अँगुल।

आँगली – स्त्री. – अँगुली, वि. – परेशान करने का भाव।
(गिणता गिणता घस गई जी आँगलियाँ री रेख। मो.लो. 618)

आग लागरी – वि. – आग जल रही, जलन हो रही।

आँगड्याँ – सं.ब.व. – अंग वस्त्र, अंगरखे।

आगली रेण – स्त्री. – रात्रि का प्रथम प्रहर।

आग्यो – पु.ए.व. – आ गया, चमकदार कीड़ा।

आँगणियो – पु. – आँगन।

आँगली – स्त्री. – उँगली।

आगलो – पु. – आगे का हिस्सा, आगे आने वाला।

आगा – पु. – आगे का हिस्सा, अगला, श्रेष्ठ, क्रि. – आएगा, आएगी।

आगाऊ – पु. – अग्रिम।

आग्गा जाव – यहाँ न ठहरो, हमेशा के लिये चले जाओ।

आगा बकलो – कोई चिंता नहीं, भले ही चिल्लाते रहो, कोई फर्क नहीं पड़ना।
(आगा बको, केता होगा। मो. वे. 80)

आगार – पु. – घर, महल।

आगास – आकाश।

आगासी – आसमान, आकाश।

आगे – आगे, पहले, सामने, सन्मुख।

आगो – छोड़ दो, रहने दो, आगे ईश्वर के भरोसे।
(आगो राम बुरे जो सई। मो. वे. 51)

आगो टार करनो – जैसे– तैसे काम को पूरा करना, निपटाना, काम में मन नहीं लगना, मन स्थिर न होना, इधर उधर मन लगना।

आच्छो – वि. – अच्छा, बढ़िया।

आचमनी – स्त्री. – छोटा चम्मच जिससे आचमन किया जाता है।

आँच – आग, अग्नि, ज्वाला ताप।

आँचल – पु. – आँचल, धोती दुपट्टा आदि के दोनों छोरों पर का भाग, पल्लू छोर, साड़ी या आढनी का वह भाग जो छाती पर रहता है, या कमर में खोंसा जाता है, स्तन के लिये सांकेतिक शब्द।

'आ'

आछी – वि. – अच्छी, ठीक, उत्तम।

आछी करी – क्रि.वि. – अच्छा किया, ठीक किया, अनाज आदि वस्तुओं की सफाई।

आज – आज, वर्तमान दिन, वर्तमान काल, इस समय, चल रहा दिन।

आज काल – क्रि.वि. – आजकल, इन दिनों , इस समय, वर्तमान में।

आजमाणो – क्रि. – परीक्षा करना।

आजीजी – क्रि.वि. – प्रार्थना, हाँ जी, चाटुकारिता।

आजू-बाजू – क्रि. वि. – दाँये-बाँये।

आँजना – आँख में काजल लगाना, एक जाति का नाम।

आँजा गुँजी – वह मनुष्य जिसे रात को दिखाई नहीं देता, रतौंधी।
(माता ए मेली आँजा गुँजी सासू ने रसोड़े बेठाड़ी।मा.लो. 557)

आटण – वि. – निशान चिह्न, दाग।

आँटा बँद – आँटेदार, मरोड़दार, लपेटदार, घमण्डी, झगड़ालू।
चीरा दई भेजूँ हो आँटा बंद।
मा.लो. 520)

आँटीलो – झगड़ालू, अभिमानी, अपनी बात पर दृढ़ रहने वाला, बदला लेने वाला, जबरदस्त।

आँट्या – पु.ब.व. – डण्डे।

आँट्यो – पु.ए.व.– डण्डा, लकड़ी, लाठी।

आट्यो पाट्यो – क्रि.वि. – बाल क्रीड़ा का एक प्रकार।

आँटी – वि. – बेर, उलझन।

आटो – पु. – आटा, अनाज का चूर्ण।

आँटो – पु. – स्वर्ण रजत वस्तुओं को गाँठने की क्रिया , आँटे डलवाने का भाव, बँट लगाने की क्रिया।

आटो-साटो – क्रि.वि. – विनिमय करना, अदला बदली।

आँटो-पाटो – क्रि.वि. – बाल क्रीडा का एक प्रकार, आट्या-पाट्या।

आँटे-हाटे – क्रि.वि. – अदला बदली, विनिमय, दो परिवारों में परस्पर बेटियों का विवाद।

आड़नो – पु. – अनुमान लगाना, अटकल, रोकना।

आड्याखाणो – क्रि.वि.– मुँह में हाथ की अँगुलियाँ लेकर दीनता प्रकट करना, हाथ जोड़ना।

आडत्यो – दलाली करने वाला, दलाल, बिचवाल, मध्यस्थ।

आडाँ – सं. – नदी, तालाब में तैरने वाले पक्षी।

आड़ी – स्त्री. – तरफ, ओर, वि. – कठिन, बुरी, कपड़ा, स्तम्भ के ऊपर की आड़ी लकड़ी, जाँच की, तिरछी।
अने देख्यो अका आड़ी आड़ा।
मो.वे. 50)

आड़ी देणी – किसी के काम में रुकावट डालना, द्वार बंद करना, विघ्न डालना, बाधा डालना, उलझन में डाल देना।

आड़ी वखत में – कठिनाई में, परेशानी में, बुरे समय में, दुर्दिन में।

आड़े – आड में रखदी, छिपाकर रखदी।

आड़ – वि. – पर्दा, दृष्टि से ओझल।

आड़ पट – वि. – एक तरफ से, क्रमबद्ध, सबको एक समान समझने का भाव।

आड़रे – पु. – अवधूत, योगी।

आड़े आणो – काम में आना, उपयोग में आना, संकट के समय साथ देना, रक्षा करना, उपयोगी साबित होना, मदद करना।

आण – वि. – सौगन्ध, शपथ, इज्जत, आन, आकर।
(कमर माय आण बुजेजी हो । मा.लो. 35)

आणे आई नार – पहली बार ससुराल आई अनुभव हीन स्त्री। (देराणी आणे आई नार, चिंता म्हारी कुण करे जी।)

आणंदी – स्त्री.वि. – प्रसन्न, रंगीला, आनंदित।

आणो – पु. – आमंत्रण, वधू को विवाह के

बाद पहली बार लाना।
(आणो आयो रे को सासरिया को जाणो रे। मा.लो. 708)

आँत – स्त्री. – नाड़ी, शिरा।

आँतड़ी – स्त्री. – आँत, आँत्र, शिरा।

आतंक – वि. – डर, धमक।

आतमघात – वि. – आत्महत्या, आत्मनाश।

आत्मरक्शा – पु. – स्वयं की रक्षा, सुरक्षा या बचाव।

आत्मा बेचनी – कृ. – मन विरुद्ध कार्य करना।

आँतरो – वि. – अंतर, छेटी, दूरी, जुती जमीन के बीच बिना जुता भाग।

आतिसबाजी – स्त्री. – बारुद, गंधक, सोरा आदि के योग से बनी आतिशबाजी।

आथमणा – स्त्री.–अस्त होना,डूबना, पश्चिम।
(माता ऊगता उजास बिखरे आथमणा सिंदूर। मा.लो. 644)

आद – वि. – सर्वप्रथम, आदि, प्राचीन, सार्वजनिक रूप से ग्राम की सेवा करने वाले ब्राह्मण, ढोली, नाई, चर्मकार आदि जातियों के लोगों को वर्ष भर में दिया जाने वाला इकट्ठा अनाज, दक्षिणा।

आदण – उबाल, दाल सब्जी के लिये बर्तन में चढ़ाया हुआ खौलता पानी।

आदमी – पु. – मनुष्य, पति।

आदर – वि. – सम्मान, सत्कार, प्रतिष्ठा, इज्जत।
(जाय खड़ी हे यज्ञ मण्डप में कोई नी नी आदर कीनो। मा.लो. 684)

आदरा – स्त्री. – आर्द्रा नक्षत्र।

आदा – वि. – आधा, अधूरा।

आदी – स्त्री.वि. – अर्द्ध, आधा, अभ्यस्त, व्यसनी।

आदेस – पु. – आज्ञा, आदेश।

आदु – पहला, आदि, प्रारम्भ में, शुरू में।
(आदु को लेणो ने मादु को देणो। मो.वे. 54)

आदो – स्त्री. – अदरक, पहिले, प्रथम, आधा, प्रारंभ।
(आदा को तो भंमर लायो। (मा.लो. 440)

आँदो – अंधा, नेत्रहीन।

आध, आद – वि. – ब्राह्मण आदि मंगल जातियों को उनके कार्यों के बदले में दी जाने वाली वस्तु, दान या दक्षिणा आदि, आधा, अर्द्ध, आधासमय या आधी वस्तु होने का भाव।

आधार – सहारा, आश्रय, बुनियाद, नींव।
वोई सेल्याँ वालो ने वोई मुरकी (वालो तो वोई म्हारो प्राण आधार। मा.लो. 580)

आधा सीसी – स्त्री. – आधे सर में दर्द होना, एक बीमारी या रोग, एक वनस्पति।

आधि-व्याधि – स्त्री.– मानसिक दुःख, शारीरिक तकलीफ।

आधीन – क्रि.वि. – अधिकार में, अधीन, नियंत्रण में।

आधो – पु. वि. – आधा, अर्द्ध।

आनठ – सौगन्ध, शपथ, दुहाई, आज्ञा, घोषणा, हुकूमत।
(थें नी छोड़ो तो थाँने म्हारा गला नी आन। मा.लो. 597)

आनबान – स्त्री.– सजधज, ठाठ-बाट, तड़क-भड़क, ठसक, अदा, वि. सौगंध, कसम, शपथ, देवता की दुहाई।

आन-मान – वि. – काल्पनिक।

आना – पु. – रुपये का सोलहवाँ भाग, पुरानी किसी वस्तु का सोलहवाँ भाग (एक आना)।

आनाकानी – टालम टोल करना, टालने के लिये किया जाने वाला बहाना, हाँ ना का भाव, आगे पीछे होना, किसी चीज को न देने के लिये किसी न किसी प्रकार

का बहाना बना करके टालना।

आनो – क्रि. – आना।

आनो जानो – (आना–जाना। मो.वे. 80)

आप – तुम का आदरार्थक शब्द।

आपणा – सर्व. – हम सबका।

आपणी – सर्व.सा. – अपनी, हम सबकी। भीत आपणी फोड़ीऱ्या। (मो.वे. 38)

आपत – स्त्री. – विपत्ति, संकट, आफत।

आपतकाल – पु.वि. – आपदा का समय, विपत्ति का समय, कठिन समय।

आपबीती – स्त्री. – वह बात या घटना जो स्वयं अपने ऊपर बीती हो। स्वयं पर घटित घटना।

आपसी – वि. – आपस का, पारस्परिक।

आपो आप – क्रि.वि.–अपने आप, अनायास, यों ही।

आफत – वि. – परेशानी, दिक्कत, आपदा, दुःख, तकलीफ, कष्ट।

आफरो – वि. – पेट फूलना।

आफू – स्त्री. – अफीम, अमल।
(कई आफू खाती तो म्हने केवती ए मारुणी। मा.लो. 570)

आब् – वि. – चमक, कान्ति, तेज, आभा, दीप्ति, कुँए को स्रोत, पानी।
(एक धरती ने दूजो आबजी सदा माई रंग रो वदावो। मा.लो. 450)

आबकारी – स्त्री.वि. – कलाली, नशीली वस्तुओं का कार्यालय।

आबदाणा – पु. – अन्न जल, दाना-पानी, खान-पान, जीविका।

आब्पासी – स्त्री. – सिंचाई, सिंचित भूमि।

आबरू – वि.– इज्जत, प्रतिष्ठा।

आबादी – स्त्री. – बस्ती, जनसंख्या, मर्दुमशुमारी।

आँबा – सं.पु. – आम्रवृक्ष, आम का झाड़।

आम्बा जाँबू – आम और जामुन– धन बहू को खाने का मन करता है।
(आम्बा जाँबूरी साद गोरी ने। मा.लो. 5)

आम्बा थाम्बा – आम के खम्बे।
(दोई आम्बा थाम्बा चाँदी का। मा.लो. 115)

आँबी हळद – स्त्री. – आँबी हल्दी, हल्दी का एक प्रकार।

आबी – गर्मी में हल्के पानी के बादल निकलना। तीन आबी निकलने के बाद पानी आ जाता है। वर्षा ऋतु का आरम्भ हो जाता है। आभा, चमक।

आबू – आबू पर्वत।

आभा बीजली – चमकती बिजली, बिजली की शोभा, चमकती बिजली के समान।
(नणदल आभा बीजली चमके चारुँ देस। मा.लो. 564)

आमण ढुमण – उदास, नाराज, हताश।

आमद-रफ्त – क्रि. – आना जाना।

आमदानी – स्त्री. – आय, आमदनी।

आमनो-सामनो – एक दूसरे के सामने आना, मुठभेड़ होना।

आमन्तरण – पु.– आह्वान, बुलाना, निमंत्रण, मुकाबला, भेंट, सामना।

आमरस – वि. – पके आमों को निचोड़कर बनाया गया रस विशेष।

आमली – इमली का वृक्ष या उसका फल, इमली।

आमळा – स्त्री.सं.ब.व. – पैर का आभूषण, आँवला।

आम्बो – पु. सं.–आम्रवृक्ष, आम का झाड़।

आमा सामा – आमने सामने, अरु बरु, रुबरु।
(आमा जो सामा बना मेलाँ चुनावो। मा.लो. 400)

आमी हळद – स्त्री. – आँबी हल्दी, हल्दी का एक प्रकार।

आमूँ सामूँ – क्रि.वि. – एक दूसरे के सम्मुख, आमने सामने।

आयमो – वि. – आदत, प्रकृति।

आयले सट – स्त्री. – स्त्रियों के पैरों के आभूषण जो

चाँदी के गोलाकार होते हैं। इनमें से एक को आयल तथा दूसरे को सट कहते हैं।

आयुरवेद – पु. – चिकित्सा शास्त्र।

आर्यो – क्रि. – आया, आ गया।

आर – पु. – लकड़ी के सिरे पर लगाई जानेवाली नुकीली कील, आर।

आरखाखोर – आलसी, कामचोर, निकम्मा।

आर्यी – ताक, आला, कड़ुवा फल, एक औषधि जो मनुष्य को लम्बा होने के लिये पिलाई जाती है।

आरण-कारण – क्रि.वि. – वैवाहिक कार्य।

आरत – वि. – दुःखी, परेशान, कष्टी।

आरती – स्त्री. – देवता की आरती करना, बोलना।

आरम – वि. – शुरुआत, प्रारम्भ।

आरम्या – आरम्भ करना, आरम्भ किया।
(सुरजजी जग आरम्या लज्जा तमारे हाथ हो। मा.लो. 172)

आरसी – पु. – शीशा, काँच।

आराम – पु. – आराम, विश्राम।

आरा – कर्णफूल, बैलगाड़ी के पहियों में लगने वाले उपकरण।
कान का आरा सूरजजी मोलवे के (सोवे म्हारी मोरी वऊ के कान। मा.लो. 299)

आरी – करवत।

आरे – अव्य. – पहिये के चक्र में लगने वाले लकड़ी, डंडे, आरे।

आरो – पु.सं. – कपड़े या खजूर या पलाश जड़ से बनाया गया गोलाकार टेका जिस पर बेपेंदे का बर्तन रखा जाता है, गोलाकार वस्तु, टेका, किसी वस्तु को लुढ़कन से बचाने के लिए टिकने का स्थान।

आरोगणो – क्रि. सं. – भोजन, खाना।

आरोप – वि.– इल्जाम, अभियोग आरोपित करना, अपराध कायम करना।

आल – स्त्री.– घीया नामक सब्जी, तुम्बे के आकार का एक फल जिसकी सब्जी बनाई जाती है।

आळगे – वि. – पशुओं का रवे आना, भोग की इच्छा करना।

आल्ड़माप – वि. – सरकारी नाप से कम या अधिक, बेहिसाब।

आलण – पु. – साग-सब्जी में मिलाया जाने वाला अनाज का दलिया या दीवार, चुनाई की मिट्टी में मिलाया जाने वाला भूसा-घास।

आल्यो – ताक, दिवाल के अन्दर सामान रखने के लिये बनाया गया आलिया।
(सासू सुसरा की आबरू के आल्या माय धर दी। मो.वे.53)

आळ्यो – पु. – ताक, वह स्थान जो दीवार में किन्हीं विशेष वस्तुओं या सामग्री सुरक्षित रखने के लिये बनाया जाता है।

आल गाल – छेड़छाड़, नाज नखरे करने वाली।
(थारे आल गाल पे नाचण नव टक्का। मा.लो. 441)

आल-भोले – वि. – खोये हुए मन की स्थिति विशेष, विस्मृति की दशा, विस्मरण प्रक्रिया।

आलमपर की गुजरी – आलमपुर की गुजरन।

आलस – सुस्ती आना, अलसाना, आलस आना।
(आलस मोड़ीर् या। मो.वे. 38)

आला लीला – हरे भरे।
(पार्वती के आलालीला गोर के सोना का टीला। मा.लो. 605)

आलियो – ताक, आला।
(आलिया में जालियो रे जीमे मेली बट्टी, हो उठ सवेरे देखता व्यईजी पीसे घट्टी। मा.लो. 163)

आली – स्त्री.– सखी, सहेली, मित्र, वि. – गीली।

आलीजा – वि. (अ.फा.) – देवता या राजा का सम्बोधन, रसिक, अलबेला, पति, प्रियतम, लोकगीतों का नायक।
(अब तो समझो म्हारा आलीजा तम आगी छोड़ो दारुड़ी। मा.लो. 568)

आले भोले – खोए हुए मन की स्थिति, विस्मृति की दशा, विस्मरण, अस्थिर मन।
(आलेभोलेमन जावा लागो। मा.लो. 15)

आलो – गीला, भीगा हुआ, नमी वाला।
(आला आला में सोईरे हरियाला बनड़ा, सूखा में तमने सुलायो। मा.लो. 282)

आव – क्रि. – आहो, आ जाओ, आय, आमदनी, आवक, आना, जल का उद्गम (अप् का तद्भव)।

आवट – वि. – चिढ़ना, कुढ़न, जलन।

आँव – वि. – आमवात, आँव।

आवक – क्रि. – आय, आमदनी।

आवणो – क्रि. – आगमन, आना।

आवड़ताँ – क्रि. – आते समय।

आवभगत – स्त्री.-स्वागत-सत्कार, मेहमानदारी।

आवळ, आमळ – स्त्री. – वह झिल्ली जिससे गर्भ के बच्चे लिपटे रहते हैं।

आँवळानाळ – स्त्री. – कमलनाल, आमळ।

आँवला – पु.ब.व. – आँवला, आमलक, स्त्रियों के पैरों का एक आभूषण विशेष जो चाँदी का बना होता है।

आवणख – क्रि. – आने के लिए।

आवण-जावण – क्रि.वि.–आवागमन, आना-जाना।

आवणो – क्रि. – आना।

आवर-सावर – क्रि.वि. – घर की उत्तम व्यवस्था या देखभाल।

आवाज – स्त्री. – शब्द, ध्वनि, नाद, बोली, वाणी।

आवियाजी – पु.क्रि. – आये हुए का आदरार्थ रूप, आये जी।
(पाँच वदावा म्हार आवीया। मा. लो. 482)

आवेगा – आएँगे, आएगा।
(बीज हज्जार को धन आवेगा। मो. वे. 79)

आस – वि. – आशा, उम्मीद।
(म्हे छोड़ी सबकी आस ए म्हारी चन्द्र गोरजा। (मा.लो. 592)

आँस – वि. – श्वास, साँस।

आसगुन – वि. – अपशकुन, बुरेशकुन, बुरे विचार।

आसतीन – स्त्री. – पहनने के कपड़े का वह भाग जो बाँह को ढकता है, बाँह।

आसन-भंग – वि. – घोड़े की पीठ पर भँवरी नामक दोष, धब्बा।

आसण देणो – क्रि. पु. – सत्कार के लिये आसन देना।

आसथा – वि.–विश्वास, उम्मीद, गर्भ, दिशा।

आस पूरणो – स्त्री. सं. – आशा पूरी करना।

आसमानी – संज्ञा – आकाश का, हल्का नीला रंग, आसमानी रंग, नीला रंग।

आसरो – सहारा, आश्रय, शरण, भरोसा, झोपड़ा, अंदाजा, अनुमान, प्रतीक्षा, उम्मीद, गर्भ, दिशा।
(पराया पुतर को म्हने कई आसरो। मा.लो. 648)

आसान – वि.– सरल।

आसार – पु. (अ.) – लक्षण, चिह्न।

आसावरी – स्त्री. – लोकदेवी, शराब की कल्पित देवी आसापरी, एक राग विशेष।

आसिस – स्त्री. – आशीर्वाद, आशीष।

आसीरवाद – स्त्री. – आशीर्वाद, आसीस, मंगलकामना, कुँआ।
(थारो आसीरवाद घटायो। मा. वे.45)

आँसू – वि. अश्रु, आँसू।

आसे आणो – क्रि.वि. – पसंद आना, मन को भाना, मन पसंद।

आसोज – पु. – क्वाँर मास, आश्विन मास।
(माजी मोटो मइनो आसोज थो। मा.लो. 661)

आसोपालो – पु. - आशोक जैसे वृक्ष के पत्ते।

आहा – अव्य. – आश्चर्य प्रकट करने वाला शब्द।

आहार – पु. – भोजन, खाना।

आज़ो – बरसात के दिनों में एक उड़ने वाला चमकीला कीड़ा, आगिया।

इ – मालवी एवं देवनागरी का स्वर।

इ – सर्व. – ये।

इकतारो – पु.– सितार की तरह का एक तार का बाजा।

इकरार – प्रतिज्ञा, वादा, अनुबंध।

इकरारनामो – पु. – अनुबन्ध-पत्र।

इकलोतो – अपने माता–पिता का एक मात्र पुत्र।

इंका – सर्व. – इनका।

इक्का दुक्का – वि. – कोई-कोई, एक-दो।

इँगला – स्त्री. – शरीर में इड़ा नाम की नाड़ी ।

इग्यारा – ग्यारह की संख्या।

इंच – स्त्री. – एक फुट का बारहवाँ हिस्सा।

इच्छा – न. – अभिलाषा, लालसा, चाह, आकांक्षा।

इच्छा भोजन – पु. – इच्छानुसार भोजन।

इज्जत – सम्मान।

इजहार – पु.अ. – जाहिर, प्रकट करना।

इजाजत – क्रि. – स्वीकृति आज्ञा।

इजाफो – वि. – बढ़ोत्री, अधिकता।

इजार – स्त्री. – पायजामा, सलवार।

इण – सर्व. – इन।

इंडा – पु. – अंडे।

इंतकाल – वि. – मृत्यु, अन्तिम समय, मौत अंतकाल।

इतर – पु. – इत्र, गंध, पुष्प सार।

इतरइ र्‌यो – क्रि. पु. – इठला रहा, इतरा रहा।

इतरा – वि. – इतना, इतना अधिक, इठलाना।

इतराक में – दे. – इतने में, इस बीच में। (इतराक में म्हारी पेचाण को एक छोरो अइग्यो। मो.वे. 50)

इतराणो – इतराना, फूलना, गर्व करना, इठलाना, अपने को बहुत बड़ा व बुद्धिमान समझना, अपनी बढ़ाई करना, सिर चढ़ना। (इतरायते का तद्भव)

इतरो – इतना।

इतरूँ – वि. – इस तरह।

इत्तल्ला – सूचना, समाचार, खबर।

इत्ता – वि. – इतना, इतना अधिक।

इंदर, इन्दर – पु. – राजा इन्द्र, इन्द्रदेव।

इंदारो – अंधकार।

इंधारो – वि. – अंधकार।

इन – सर्व.ब.व. – इन।

इनके – सर्व. – इनको, इन्हें। (इनके जब तक नी हेड़ो। मो.वे. 84)

इनी – सर्व.– इसी, इसे।

इन्दर – पु. – इन्द्रदेव, मेघ–घटा, स्वामी, ऊँचा, श्रेष्ठ। (इन्दरजी आप बरसो ने धरती नीबजे। मा.लो. 615)

इन्दरगढ – इन्द्रपुरी, इन्द्रगढ़, राजा इन्द्र का स्थान, इन्द्र की नगरी, देवताओं की नगरी, एक बस्ती जो कोटा के पास है। (नोबत वाजे इन्दरगढ़ गाजे । मा.लो.पे. 174)

इन्दारो – वि. – अंधकार, अंधेरा। (हाँ रे हुँ कई करूँ दादा रात इंदारी। मा.लो. 509)

इन्द्रासण – पु. – इन्द्र का आसन।

इन्द्रापेली – स्त्री. – प्रातःकाल, सबेरे।

इन्द्री होण – स्त्री.ब.व. – इन्द्रियाँ ।

इनङ्, इनांग – सर्व. – इधर, अनांग।

इन्दर जव – पु. – इंद्रयव, यज्ञ के उपयोग में लाया जाने वाला अन्न, जव जौ दाने।

इन्दरजाल – पु. – जादूगरी।

इन्दराणी – स्त्री. – इन्द्र पत्नी, शची।

इन्द्रियाँ – स्त्री. सं. – वह अंग-शक्ति जिससे बाहरी विषयों का बोध होता हो।

‘इ’

इन्साफ – पु. – न्याय।

इन्सानियत – पु. – मानवता, मानवीय।

इना – ये।

इँपे – सर्व. – इस पर।

इफरात – वि. – अधिक।

इफारादी – वि. – बहुतायत से, पर्याप्त से भी अधिक, अधिकता।

इबादत – भक्ति, उपासना।

इबारत – स्त्री. – लेख।

इमरत – पु. – अमृत।

इमरती – स्त्री. – एक प्रकार की मिठाई।

इमारत – बड़ा व पक्का बहु मंजिला मकान, बहुत बड़ी हवेली, भवन।

इमारती – स्त्री. – इमारत या भवन के काम में आने वाली लकड़ी।

इमानदार – वि.– ईमान पर कायम रहने वाला।

इरादा – पु. – संकल्प, विचार।

इलम – वि. – जादू।

इल्लत – स्त्री. – झंझट।

इसनान – क्रि. – स्नान, नहाना।

इसक – प्रेम, मुहब्बत।

इसर – पु. –ईश्वर, परमात्मा, शंकर भगवान।

इसलाम – पु.अ. – मुसलमानी धर्म, इस्लाम।

इसारा – वि. – इशारा, इंगित, संकेत ।

इंसे – सर्व. – इससे, खटिया, पलंग के लम्बे डंडे।

ई

ई – सर्व – ये सब।

ईंका वस्ते, इंका वास्ते –सर्व.अव्य. – इनके लिये।

ईंतर – वि. – इत्र, सुगन्धित पदार्थ, इस तरह।

ईंट – स्त्री. – ढला हुआ, मिट्टी का चौकोर लंबा टुकड़ा जिसे जोड़कर दीवार बनाई जाती है।

‘ई’

ईजाद – स्त्री. – आविष्कार, खोज।

ईद – स्त्री.अ. – मुसलमानों का एक प्रसिद्ध त्योहार।

ई–दोई – सर्व.वि. – ये दोनों, इन दोनों।

ईन मीन ने हाड़ा तीन – इने गिने, अल्प, बहत थोड़े।

ईने – इनको, इसको, इसे, इन्हें। (कुण्डी रो धोवण धावण ईना हीरालालजी ने पाव। (मा.लो. 597)

ईमान – पु.अ.वि. – ईमानदारी, छल-कपट न करने की प्रवृत्ति, अच्छी नीयत।

ईमें – सर्व. – इसमें।

ईरछा – स्त्री. – ईर्ष्या, जलन, डाह।

ईश – पु. – स्वामी, मालिक, राजा, ईश्वर, शिव, ग्यारह की संख्या।

ईश्वर – पु. – क्लेश, कर्म विपाक, अलस पुरुष, परमेश्वर, भगवान्, मालिक, स्वामी।

ईस – स्त्री. – पलंग या खटिया की लम्बी वाली लकड़ी।

ईसवर – भोलेनाथ, शंकरजी, महादेव। (म्हे तो घर रे ईसवरजी री नार। मा.लो. 604)

ईसा – पु.अ. – ईसाई धर्म का प्रवर्त्तक।

ईंसे – सर्व. – इससे।

उ

उ – सर्व. – वह।

उँई याड़ी – उधर।

उकळनो – उबलना।

उकळो – वि. – पसीना।

उकल्ड़ी – वि. – धूरा, रोड़ी, वह स्थान जहाँ घर का कूड़ा-कर्कट तथा पशुओं का मल-मूत्र, घास आदि एकत्र किया जाता है।

उकडूँ – झुकना।

उक्तानो – क्रि. – ऊबना।

उक्सानो – क्रि. – उक्साना, उत्तेजित करना।

उँकारा – पु.– ओंकारनाथ, देवता, महादेव।

उँका – सर्व. – उसका।

उकारिया फूटे – क्रि.वि. – बेचैन होवे, परेशान होवे, हूक उठे।

उकालो फूट्यो – क्रि.वि. – उबाल आ गया, धरती से पानी निकलना।

उँकी – सर्व.स्त्री. – उसकी।

उखड़णो – क्रि. – जमी हुई या गड़ी हुई वस्तु का अपने स्थान से अलग हो जाना, उखड़ना, भागना।

उखड़लो – स्त्री.वि.–धूरा, रोड़ी, कचरा कूटा, गोबर आदि एकत्रित करने की जगह।

उखड़ल्ड़ो – स्त्री.वि. – धूरा, रोड़ी।

उखल्ड़ो – स्त्री.वि. – धूरा, रोड़ी।

उँखड़ो – स्त्री. – ऊँखली, धान कूटने का यन्त्र जोप्रायः पत्थर का बना होता है।

उखेला – पुराने दोष निकालना, उखाड़ना।

उगत – सूझ-बूझ।

उग्गड़णो – वि. – राचना, रंग देना, मेहंदी उगड़ना, खुलना।

उगणूँ – स्त्री. – पूर्व दिशा।

उँगण्यो – वि.– उँघने वाला, सुस्त, कामचोर, प्रमादी, आलसी।

उगनी उड़े – समझ।

उगणो, उगनो – अंकुरित होना, ऊगना, उदय या प्रकट होना, उपजना, उत्पन्न होना। (माता उगता उजास बिखरे। मा. लो. 644)

उगमणो – पूर्व दिशा, जिस दिशा में सूर्योदय होता है। (आमणी दिसा को चढ़ाव गिरधारी गेरी गेरी पड़े रे फूँवार। मा.लो. 620)

उगर-भागी – वि. – कर्महीन, भाग्यहीन, अभागा, दुर्भाग्यशाली।

उगऱ्यो – क्रि.वि.–शेष बचा, अवशिष्ट रहा।

उगरी गयो – वि. – बच गया, शेष रह गया।

उगलनो – क्रि. – मुँह से उगलना।

उग्यो, उगारे – क्रि. – उदित हुआ, निकला, प्रकट हुआ।

उगाई – वसूली।

उगाड़णो – क्रि. – खुला हुआ, नंगा, उगाड़ा, ढक्कन हटाना, बिना आवरण के।

उगाड़णो – क्रि. – खोलना। (एक नेन में काजल सार्यो दूजी आँख उगाड़ी जी। मा.लो. 224)

उगाड़ो – खोलो, खोलना, खोल दिया, खुला हुआ, खुला या नंगा, खुल गया। (पलक उगाड़ो न्यारी। मा.लो. 684)

उगारो – वि. – खरपतवार, व्यर्थ की ऊग आने वाली घास-पात।

उगालदान – पु. – पीकदान।

उगाल्यो – वि. – पशुओं के खाने के बाद उनके मुँह से निकला घास आदि।

उगियो – क्रि.– उदित हुआ, ऊगा, निकला।

उगेरनो – गीत आरंभ करना, गीत गाना, गीत गाना शुरू करना।

उगेसर – सूर्य, सूर्योदय, सौगन्ध के लिये प्रयोग।

उगो – प्रकट हुआ।

उग्गळ – फालतू, व्यर्थ।

उँह – अव्य. – अस्वीकार।

उघड़णो – क्रि. – खुलना।

उघाड़ – वि. – खुला, साफ।

उचक्को – पु.वि. – उठाईगीर।

उचकनो – क्रि. – उछलना, उचकना।

उचका – क्रि. – अचानक, उछला, ओचक।

उचाट – वि. – मन का न लगना, मन उचट जाना, विरक्ति, उदासीनता।

उच्चाटन – हटाना, अनमनापन, विरक्ति, मन उचट जाना।

उँचा-उँचा – अव्य. – ऊँचे।

उचापत – क्रि. – उत्पात, उधम।

उचारिया – क्रि. – उच्चारण किया, नाद किया, उच्चारित किया।

उच्छब – वि. – उत्सव।

उँचो–नीचो – क्रि.वि. – ऊँचा-नीचा।

उँचो–पूरो – ऊँचा।

उछंग – पु. – गोद।

उछेरी – स्त्री. – गाय-भैस-बकरी आदि को चराई के लिये जंगल में ले जाने के लिये रवाना करना, पाल पोस कर बड़ा करना।

उछल–कूद – स्त्री. – उछलना, कूदना।

उछागल होग्यो – पु.क्रि.– उऋण हो गया, भारमुक्त हो गया।

उछाळमाँ – क्रि. – बाटी को उछालते हुए घी देना, सिरनी बनाते समय उछालकर शकर की चासनी डालने की प्रक्रिया।

उछाळ – स्त्री.– उछलना, छलांग, चौकड़ी, कूदना।

उछेरे – क्रि. – परवरिश करे, बड़ा करे, पालन-पोषण करे, पशुओं को जंगल में रवाना करे।

उजड्ड – क्रि. – असभ्य, गँवार, उजड्ड।

उज्जड़ – वि. – उजाड़, वीरान, एकान्त, अकेलापन, सुनसान, मूर्ख, अनाड़ी, उद्दंड।

उजड़नो – उजड़ना, वीरान होना।

उजबक – पु.वि. – मूर्ख, बेवकूफ (तु.) एक जाति।

उजमणो – क्रि. – उद्यापन करना, व्रत की समाप्ति का अनुष्ठान।

उजमणाँ – क्रि.वि. – सुनार के द्वारा एक विशेष विधि से गहनों को उजालने की प्रक्रिया, उज्ज्वल करना, साफ या शुद्ध करना।

उजरको – जागरण।

उजरत – स्त्री. – पारिश्रमिक, मजदूरी।

उजरो – वि.–उजला, स्वच्छ, चमकीला। (उजला पंख दिया बुगला को। मा. लो. 696)

उजागर – वि.– प्रकट, जगजाहिर, प्रसिद्ध, विख्यात, प्रकाशित।

उजाड़ – वीरान, निर्जन स्थान, उजड़ा हुआ, वह स्थान जहाँ बस्ती न हो, वन, ध्वस्त, उखड़ना, नष्ट होना। (बड़े नेन दिया मृगनेनी को जोबन देत उजाड़। मा.लो. 696)

उजाड़े – क्रि.– बर्बाद करना, अधिक खर्च।

उजालनो – क्रि.– चमकाना, आभूषणों को साफ करना।

उजारो – वि. – उजाला, प्रकाश।

उजालो – वि. – प्रकाश, ज्योति।

उजास – वि.– प्रकाश, उजेला। (माता उगता उजास बिखरे। मा. लो. 644)

उजीण, उज्जीण – स्त्री.– उज्जयिनी, उज्जैन, अवन्तिका नगरी।

उज्जेण्यो – उज्जैन, उज्जयिनी, उज्जैन नगर, उज्जेण्या उज्जैन जिले का ग्राम। (उज्जेण्या में चाँद प्रकास्या हो राज। मा.लो. 524)

उठक-बैठक – क्रि.वि.– उठ-बैठ करना, उठना-बैठना, कान पकड़कर बैठक लगवाना।

उँट कटारी, उँट कटाली – स्त्री. – उँटकटारा, एक काँटेदार वन औषधि।

उटँगल – वि. – ऊँचा भाग, टीला, पहाड़ी बल्ड़ी।

उँटड़ो – पु. – ऊँट।

उँटाँ-खेती – स्त्री.वि. – बहुत सा फालतू धन, अनाज, अधिक आय, कृषि में अधिक उत्पादन होना।

उठईगीर – वि. – चोर, उचक्का, किसी वस्तु को उठाकर भागने वाला।

उठणो – क्रि. पु. – उठना, उठ जाना, समाप्त होना, उभरना।

उठ-बैठ – क्रि. – उठना-बैठना।

उठक-बैठक – क्रि. – व्यायाम के अन्तर्गत बैठक लगाना।

उठाण – पु.– उछाल, उत्पात, ऊँचा उठना, उठती हुई उम्र, बढ़ती आयु।

उठाणो – उठाना, खड़ा करना, सोते हुए को जगाना, लेना, ऊँचा करना, दूर करना, उठने में असमर्थ को सहारा देकर उठाना।

उठावणो – क्रि. – जगाना, अमल करना, श्राद्ध की प्रक्रिया, जैनों में तीसरे दिन का मृत श्राद्ध किया जाना।

उठी – सर्व – वहाँ।

उठे – सर्व – वहाँ।

उड़ई हावणो – उड़ाना, बर्बाद करना।

उड़ऊ – व्यर्थ खर्च करने वाला, अपव्ययी, धन की बरबादी, उड़ाना।

उड़कावणो – क्रि. – बन्द करना।

उड़क्यो हुओ – क्रि. – ढँका हुआ, लगा हुआ, बन्द।

उड़नो – उड़ना, उड़ी लगाना, भाग जाना। (उडत विमान देखत भयो अचम्भो। मा.लो. 684)

उँडा – वि. – गहरा, गम्भीर, विशाल हृदय, गहन। (रेती में पारस पीपल जीमें उँडा उँडा कुण्ड खणाया। मा. लो.70)

उँडा ओवरा – गहरे और बड़े मकान, कमरे के अंदर कमरे जिनमें अंधेरा रहता हो। (कणिपत मेल्या उँडा ओवरा। मा. लो. 97)

उड़त वाताँ – स्त्री. – उड़ती खबरें।

उड़द – पु.– एक प्रकार का दलहन, उरद।

उड़द्या – पु.वि. – उड़द, एक दलहना।

उड़धंगी – हुड़दंगी, शौरगुल, उधम, उत्पात, उछल कूद, अशिष्ट, होली के दूसरे दिन धूलेंडी पर मस्ती से रंग खेलना, नागा साधुओं की एक जमात। (धमड़ धमड़ वा फिरे उड़धंगी विको नाम। मा.लो. 542)

उड़न खटोलो – स्त्री.– आकाशयान, उड़ने वाला खटोला।

उड़रई गगना गेर – धूल का आकाश में उड़कर छा जाना। (गाड़ी जो ररकी रेत में रे वीरा उड़ रई गगना गेर। मा.लो. 350)

उड़स – वि.– बहुत खट्टा।

उड़ीलगई – क्रि.– उड़ी लगाई, गुलाँट खाई, शरीर को उलटा-पुलटा करने वाला व्यायाम।

उढ़कावणो – बन्द करना।

उण – सर्व.– उन।

उणाँने – सर्व.ब.व. – उन्होंने।

उणालो – पु. – गर्मी की ऋतु।

उणियरो – पु. – मुखाकृति , चेहरा, मुँह।

उणियारो, उण्यारो – वि. – चेहरे की हूबहू आकृति, आकृति, प्रकृति, मुख की झलक, मुख की आभा, चेहरे की बनावट। (वणी नायण ए लडको जायो म्हारा दादाजी रे उणीयारे। मा.लो. 510)

उणीये – सर्व. – उनके पास, उनको।

उतम – सर्वश्रेष्ठ।

उत्तम किर्या – स्त्री. – अन्त्येष्ठि, उत्तर संस्कार, श्राद्ध।

उत्तीरण – वि. – पास होना, पार गया हुआ, पारंगत, मुक्त।

उतपात – क्रि. – उपद्रव, लड़ाई-झगड़ा, कष्ट पहुँचाना।

उतपाती – स्त्री. – उत्पात करने वाला, झगड़ालू।

उत्पत्ती – उपज, पैदावार।

उतरण – स्त्री. – उतारी गई या निरस्त की गई वस्तु।

उतरणो – क्रि. – उतरना।

उतरई – स्त्री. – ऊपर से नीचे आने की क्रिया

या मजदूरी, उतार, नदी के पार उतारने का किराया, नीचे की ढलती हुई भूमि।

उत्तर – पु. – जवाब, किसी के प्रश्न करने पर दिया गया उत्तर। स्त्री. – उत्तर दिशा, उतर जाना।

उतरीच – स्त्री. – उतनी ही।

उतरी जाणो – पु. – उतर जाना।

उतापो – वि. – उत्पात।

उतार – पु. – उतरने की स्थिति।

उतारनो – क्रि. – उतारना, प्रतिलिपि करना, उतार दो, पंजीकरण, नकल करो, मालवी में किसी व्यक्ति विशेष या पशु आदि के बीमार हो जाने पर त्रिमार्ग मिलन स्थल पर कन्डे या उपले के उपर तैलदीप, काजल, सिन्दूर, नींबू की फाँके, उड़द आदि वस्तुएँ रखकर टोटका करना। एक प्रकार की तांत्रिक क्रिया, तांत्रिक उपचार, उतारा देने की क्रिया या भाव।

उतारो देणो – बलि देना, तांत्रिक उपचार करना।

उतारू – तैयार होना, तेज, शीघ्र। (घोड़ा चालो उतावरा कई दन थोड़ो घर दूर। मा.लो. 540)

उतावल – वि. – शीघ्रता, जल्दी। (बेसाक मइनो उत्तम कहिये। मा. लो. 679)

उतावलो – जल्दी करने वाला, फुर्तिला, जल्दबाज, जोशीला, चंचल, अस्थिर, बेकरार। (अलबेला नावी भारी तू आयो रे उतावलो। मा.लो. 370)

उथल-पुथल – क्रि.वि. – उलटा-पुलटा, उल्टा-सीधा।

उथलो, उथलो, उथरो – छिछला, उथला, निम्न स्तर का, स्तरहीन, कम गहरा।

उथापा – उलटपुलट करना, अव्यवस्थित करना, परिवर्तन, उल्टा-सीधा, क्रमभंग, क्रान्ति, उत्थापन करने वाला।

उथेलणो, उथेलनो – नीचे-ऊपर या इधर-उधर करना।

उदरीगी – भाग गई, बिगड़ गई, पेट रखाना, गर्भ रखाना।

उद्दी – स्त्री. – दीमक, बंबई।

उद्धुदशेर, उद्धुदसेर – वि. – उज्जैन शहर, उज्जयिनी, अवन्तिका नगरी।

उद्धार – पु. – मुक्ति, छुटकारा।

उदम – क्रि.वि. – परिश्रम, उधम, उपद्रव।

उदमी – उधमी, परिश्रमी।

उदमात – वि. – उधम।

उदमाती – वि. – उदमात करने वाला, झगड़ालू, शरारती, उपद्रवी, नटखट, उधमी।

उदय – पु.सं. – (वि.–उदित, उदीयमान) ऊपर आना, निकलना, प्रकटहोना।

उंदरकन्नी – सं. स्त्री. – एक प्रकार की खरपतवार, अधिक जड़न वाली लतायें, चूहे के कान जैसे पत्तों वाली वनस्पति।

उँदरा-उँदरी – सं. – चूहा-चुहिया।

उँदरायें – पु. – चूहे को।

उँदरी – स्त्री. – चुहिया।

उदरीगी – भाग गई, बिगड़ गई, पेट रखाना, गर्भ रखानो।

उँदरो – पु. – चूहा।

उदा उदा साळू – आसमानी रंग की साड़ी, नीले रंग की साड़ी। (उदा उदा साळू जे जरद किनारी। मा.लो. 577)

उदाम – वि.–उद्दाम, विशेषतः सीधा पहुँचाना।

उदार – वि.सं. – दाता, दानशील, बड़ा, श्रेष्ठ, ऊँचे दिल वाला, विचारों की संकीर्णता और दुराग्रह से दूर।

उदास – वि. – सुस्त, विरक्त, जिसका मन फीका हो गया हो।

उदासी – वि. – विरक्त या त्यागी पुरुष, सनातनधर्मी साधुओं का एक समुदाय, एक पंथ जो गुरुनानक के

पुत्र महात्मा श्रीचन्द्र का अनुयायी है। उदासीनता।
(दरवाजे पंडा लूटे यात्री भये उदासी।)

उदीयापुर – उदयपुर, राजस्थान का एक शहर। (उदीयापुर से सायबा सिल्ला मँगाव। मा.लो. 597)

उदेस – पु. – उद्देश्य।

उद्धम – पु.सं. – (वि.– उद्यमी) प्रमाण, प्रयत्न, उद्योग, मेहनत, पेशा, धन्धा, नौकरी या अन्य कोई कार्य।

उद्धार – मुक्ति, छुटकारा, निस्तार, सुधार तो केसे हो उद्धार। मा.वे.84)

उद्यापन – पु.सं. – किसी व्रत की समाप्ति पर की जाने वाली धार्मिक क्रिया।

उँदा – वि. – ओंधा, उलटा।

उँदायलो – कड़ेला, मिट्टी का ओंधा तवा।

उदारण – पु. – उदाहरण।

उदास – वि. – सुस्त।

उँदो-हूदो – क्रि.वि. – ओंधा-सीधा, उल्टा-सीधा।

उदे – पु.क्रि.– उदय होना, निकलना।

उदेपर – सं. – उदयपुर, राजस्थान का एक प्रसिद्ध शहर, अदेपर।

उदो – सं. पु. – उद्धवजी।

उधड़नो – क्रि.– खुलना, उघड़ना, सिलाई निकलना।

उधड़माप – पु.वि. – अन्दाज से।

उधली – स्त्री. – चरित्रहीन स्त्री।

उधल्यो – पु.ए.व. – चरित्रहीन मनुष्य।

उधार – पु. – उदरत, बाकी।

उधेड़नो – चीर-फाड़ करना।

उनंग – सर्व. – उधर।

उन्नो – गर्म।

उनमनो – वि.– उदास।

उन्माद – (वि.– उन्मादी) मस्तिष्क का वह रोग जिसमें मन और बुद्धि का सन्तुलन बिगड़ जाता है। पागलपन, विक्षिप्तता, विभ्रम।

उनमान – पु.– अनुमान।

उन्मुख – वि. – सामने मुख।

उनवा – एक मूत्र रोग, पेशाब में जलन होना।

उन्हालो, उनालो (रो) – वि. – गर्मी की ऋतु।

उनी – सर्व. – उस।

उनो – वि. – गर्म।

उन्नो – गर्म–गर्म, ताजा–ताजा, उबला हुआ पानी, गर्म पानी। (हाँ ओ दासी उना सा पाणी धराओ। मा.लो. 538)

उपकार – वि. – भलाई, हित, परहित, भला, अच्छा।

उपचार – पु. – व्यवहार।

उपड़ई – क्रि. – उखड़वाना, उपाड़ना।

उपज – स्त्री. – पैदावार।

उपजाऊ, उपजऊ – पु. – जिससे अच्छी उपज हो।

उपजात – पु. – किसी जाति का छोटा विभाग।

उपदेस – पु. सं. वि. – सीख, नसीहत।

उपन्नी – पछेड़ो, विवाह में फेरे के समय दुल्हन के ऊपर सफेद जो चादर ससुराल वालों की ओर से ओढ़ई जाती है। ऊपर से ओढ़ाने का वस्त्र, चादर, पछेड़ी, उपरनी।

उपमा – तुलना, मिलान, साहित्य का एक अलंकार।

उपरती – स्त्री.-ऊपर से, अलग से, पृथक् से।

उपयोग – पु.वि. – व्यवहार, इस्तेमाल।

उपला – पु. – जलाने के लिये सुखाया गया गोबर, कंडा, छाणा।

उपहार, उपार – पु. – भेंट, सौगात, इनाम।

उपाऊ, उपाव – वि. – उपाय, तरीका, उपसर्ग, तकलीफ।

उपाकरम – पु.अ. – विधिपूर्वक वेदों का अध्ययन, यज्ञोपवीत् संस्कार।

उपाड़णो – क्रि. – उखाड़ना।

उपाय – प्रयत्न, युक्ति, तरकीब।

उपास – पु.सं.– उपवास, भोजन न करना।

उपासी – वि.– उपवास करने वाला, उपासक।

उफ्फण, उफाण – पु. – उबाल आना, हवा में अनाज साफ करने की क्रिया या भाव।

उफणणो – अ. – उबलकर उठना, जोश खाना, हवा में किसी वस्तु को साफ करना।

उफर, उफरे – पु. – ऊपर, उँचा उठा हुआ, ऊपर।

उफाड़नो – क्रि. – उखाड़ना।

उफाण – वि. – उफनना, उबाल आना।

उबकई – वि. – वमन, कै, उल्टी।

उबक्यो – क्रि. – बाहर निकला, प्रकट हुआ।

उबग्या – वि. – घबरा गये, थक गये, विरक्ति।

उबट – पु. – मार्ग छोड़कर। (वाट छोड़ी ने बाई उबट मती चालजो।)

उबटन, उबटण – पु. – हल्दी-तेल व आटे का लेप करना, अभ्यंग, अंगराग।

उबथाल – वि. – तुरन्त, शीघ्र, जल्दी, वेग, तेजी।

उबदू – वि. – फालतू, बेकार, अतिरिक्त, निरूपयोगी, आवश्यकता से अधिक।

उबनो – क्रि. – उफन गया, ऊबना।

उबराणो – उफन जाना, उबरा जाना, बाहर निकल जाना, रस्सी का बट निकलना, उफान, उबाल, जोश, आवेश, क्रोध, छलकना। (नीर उबरातो आवे। मा.लो. 630)

उबल्या – क्रि. – उबले हुए।

उबाँक – स्त्री. – उल्टी, वमन, कै।

उबा उबा – खड़े – खड़े। (उबा– उबा देवर अरज करे।)

उबा-वरदादे – क्रि.वि. – खड़े रहकर प्रार्थना करे, प्रशंसा के गीत गावे।

उबारो – क्रि. – खड़े रहो, लकड़ी या कन्डे आदि चूल्हे में लगाकर आँच या गर्मी पैदा करना, लकड़ी या कन्डे चूल्हे में जलाना।

उबाल – क्रि. – उबलना, उबालना।

उबासी – स्त्री. – जमुहाई, जंभाई।

उमंग – स्त्री. वि. – उतना उत्साह। न. – उमंग, अभिलाषा, चाहत, इच्छा, उत्साह, उल्लास।

उमठ – वि. – राजपूतों की एक शाखा जिसके आधार पर मालवी की एक उपबोली उमठवाड़ी का प्रसार पूर्वोत्तर मालवा में हुआ।

उमठवाड़ी – स्त्री.– राजगढ़ जिले की मालवी की उपबोली।

उमड़णो – क्रि. – उमड़ना, धावा। (धरऊ दिसा से मेवाजी उमड़्या। मा.लो. 619)

उमरा – पु. – गूलर या उदुम्बर के फल।

उमराव – वि. – रईस, उच्चवर्ग के मनुष्य, राजदरबारी, सामन्त, धनी, जमींदार। (राज जमई रा मेलाँ में उमराव जमईसा रा मेलाँ में। मा.लो. 526)

उमस – स्त्री.क्रि. – उमसना, हवा न चलने पर चिपचिपी गर्मी।

उमसनो – पु. – मारने को हाथ उठाना, मारने दौड़ना।

उमेठणो – क्रि. – कान खींचना या मरोड़ना।

उम्दा – वि.-अच्छा, भला, ठीक, उत्तम।

उमा – स्त्री. – पार्वती।

उमारो – लकड़ी या कन्डे आदि चूल्हे में लगाकर आँच या गर्मी पैदा करना, चूल्हा जलाना।

उमाळो – वि.पु.– लहर, उछाल, मचली, आवेग, उबाल, जोर, जोश।

उम्मर – स्त्री. – वर्षों के विचार से जीवन के बीते हुए दिन, अवस्था, आयु, पूरा जीवनकाल।

उम्मीद – स्त्री. – उम्मेद, आशा, भरोसा।

उरद्या – पु.ब.व. – उड़द, माष।

उरस, उड़स – वि. – नीरस, बहुत खट्टा।

उरण – वि. – ऋण से मुक्ति।

उरज कुरज – दो बहनों के नाम, लोकगीतों में गाये जाते हैं। (उरज कुरज दोई बेनोली। मा. लो. 611)

उरवसी – स्त्री. – एक अप्सरा का नाम।

उरा बुलाणो – पास में बुलाना, नजदीक बुलाना। (किसन थाने राधा उरा बुलावे जी। मा.लो. 678)

उलट फेर – हेर फेर, परिवर्तन, अदल-बदल, जीवन की भली या बुरी दशा, उलट-पुलट करना, ओंधा करना।

उलार – उछलना, उछल कूद करना, पीछे की और बैल गाड़ी में अधिक वजन होने पर आगे से उठ जाना, भार अधिक होने के कारण पीछे की ओर उलटना, उलट देना।

उरेप – वि. – छल-छिद्र की बात, दोगली बात, बनावटी व्यंग्य, ताना, बदले का भाव।

उरफ – अव्य. – अर्थात्।

उरली, उल्ला – वि. – पर्याप्त, बहुत, काफी।

उलटी पड़्या – क्रि.वि. – उलटे पड़े, टूट पड़े, भीड़ लग गई।

उलचणो – क्रि. – उलीचना, पानी उलचकर बाहर फेंकना।

उलझणो – उलझने की क्रिया, अटकाव।

उलटा – विपरीत।

उलट–पुलट – क्रि.वि. – अदल–बदल करना, अव्यवस्था, गड़बड़ी।

उलट–सुळट – उल्टा-सीधा।

उलट–फेर – क्रि.वि.–परिवर्तन,अदल- बदल।

उलटी – स्त्री. – कै, वमन, कलाबाजी।

उलळनो – अ.– उछलना, नीचे- ऊपर होना, झपटना।

उलंगतो – क्रि. – उछलता हुआ, ऊपर से कूदकर जाता हुआ।

उल्ले पार – इस किनारे।

उलटी पड़ी – वि. – उमड़ पड़ना, बालक्रीड़ा का प्रकार।

उलटी – उलटना, उल्टा हो गया।

उलारो – उछल कूद, उलारा खाय।

उलार्‌यो – कुँए का पानी सिंचाई के लिये निकालकर समाप्त कर देना।

उलाल – उलटना।

उलीची, उलीच्यो – क्रि.– उलचा, उलीचा, निकाला, पानी उलीचने की क्रिया।

उलेटणो – पु. – उथेलना, रोटी पलटना।

उल्टी पाटी – विपरीत पट्टी,विपरीत कार्य करना, पलटना, गलत शिक्षा देना।

उल्थो – उल्टा, अनुवाद।

उवारनो – निछावर करना, न्यौछावर करना।

उस्तरो – पु. फा. – दाढ़ी व सिर के बाल साफ करने का नाई का छुरा।

उसलनो, उसल्यो – क्रि.वि. – उछलना।

उसारो – पु. – ओसारा।

उसाँस – वि. – निःश्वास, उल्टी श्वास लेना, लम्बी श्वाँस लेना, पछताने का ठण्डा श्वास।

उसीसो – पु. – तकिया, सिरहाना।

उँ–हूँ – अव्य. – नहीं, ऊहाँ।

उसूल – अ. – सिद्धान्त।

उस्ताज – पु. – गुरु, शिक्षक, अध्यापक।

उस्ताजी, उस्तादी – स्त्री. – शिक्षक की वृत्ति, दक्षता, निपुणता, चालाकी, धूर्तता।

'ऊ'

ऊ – सर्व.अ.पु.–वह,अव्य.– ऊँ हूँ।

ऊँई – सर्व. – उधर।

ऊँखरो – ओखली, ऊँखला।

ऊँघ – वि. – झपकी, अर्द्ध निद्रा।

ऊँघणो – झपकी लेना, नींद।

ऊँच- नीच – क्रि.वि. – ऊँचा-नीचा, जाति या व्यवहार में।

ऊँचो कुल – उच्च कुल, ऊँचे कुल, श्रेष्ठ कुल, कुलीन, खानदान, उच्च वंश, कुटुम्ब। (ऊँचा कुल में जनम लियो है। मा.लो. 568)

ऊँट – स्त्री. – ऊँटनी, रेगिस्तान में सवारी के लिए अत्यन्त उपयोगी पशु।

ऊँटकटारो – एक वनस्पति।

ऊठक–बेठक – क्रि.वि. – कान पकड़कर उठक-बैठक लगवाना, एक व्यायाम, मालवी-बाल क्रीड़ा का एक प्रकार।

ऊड्स – वि. – बेस्वाद, खट्टा।

ऊँदरो – चूहा, मूषक। (तमाश ऊपर तो ऊँदरो-ऊँदरो राजी हे। मो.वे.79)

ऊँखलो – पु. – काठ या पत्थर का वह गहरा बर्तन जिसमें धान आदि मूसल से कूटा जाता है। ओखली।

उज्जड़ – वि. – उजाड़, वीरान।

उजड़ – वि. – उजड़ना, वीरान होना।

ऊटपटाँग – वि. – अटपटा, टेड़ा–मेड़ा, बेढंगा, बेमेल।

ऊतालाँ – वि. – उतावला, चंचल, तेज, वेगवान, चपल।

ऊदबलाव – पु. – नेवले की जाति का एक जन्तु जो जल और स्थल दोनों में निवास करता है।

'ऊ'

ऊद्धम – पु. – उपद्रव, उत्पात।

ऊधमी – वि.– ऊधम करने वाला, उत्पाती, उपद्रवी।

ऊन – पु. सं. – ऊर्ण, भेड़, बकरी या ऊँट आदि के रोएँ जिनसे कम्बल, स्वेटर आदि गरम कपड़े बनाये जाते हैं।

ऊने – सर्व. – उसने, उसको, उसे। (ऊने भी कुली के जदे हाँक पाड़ी। मो.वे. 50)

ऊनो – वि.– गर्म, ताता, ताजा (सं. – ऊष्ण)

ऊप्परा – क्रि.वि. – (सं.– उपरि) ऊपर।

ऊबट – वि.– उबड़–खाबड़, नीति विरुद्ध या कुमार्ग, अपमार्ग।

ऊबड़–खाबड़ – वि. – ऊँचा–नीचा, जो समतल न हो, अटपटा।

ऊबना – अ. – उकताना, घबराना, अकुलाना।

ऊँबर – पु.– गूलर का वृक्ष।

ऊँबा बरदावे – क्रि. खड़े-खड़े प्रार्थना, स्तुति, प्रशंसा करें।

ऊँबी – स्त्री. – गेहूँ या जौ की बाली।

ऊबो – वि. – खड़ा, खड़ा हुआ, उठा हुआ। (ऊबी–ऊबी जोर से धरती पे पड़ी गई। मो.वे. 56)

ऊपर – वि. – ऊँचाई पर, ऊँचा, श्रेष्ठ, अतिरिक्त। (तमारा ऊपर तो ऊँदरो ऊँदरो राजी है। मो.वे 79)

ऊलझणो – वि. – फँसना, उलझना।

ऊसर – पु. – बंजर भूमि, अनुपजाऊ जमीन।

ऊसळनो – क्रि.पु. – निशान बनना, चिह्न बनाना।

ऊसाँस – वि. – निःश्वास, ठण्डी साँस छोड़ना, आह भरना।

ए – क्या?

एकलो – पु. – अकेला, एकाकी।

एक – एक, अकेला ।

एक आँख – एक चक्षु, एक आँख वाला, काणा, कौआ, शुक्राचार्य।

एक एक – एक के बाद एक, एक के बाद दूसरा, क्रम से, पंक्तिबद्ध, प्रत्येक।

एक छत्तर – एक तन्त्र, एकछत्र शासन।

एकज – एक ही, केवल एक।

एकजीव – अभिन्न, मिश्रित, मिला हुआ, एक रूप, एक जैसा।

एक जेसो – एक समान, एक जैसा, एक सरीखा, कोई फर्क नहीं ।

एक टंक – एक समय, एक बार।

एकन्त – वि. – एकान्त, निर्जन।

एक तरफा – एक पक्ष का, जिसमें पक्षपात किया गया हो।

एकता – स्त्री.सं. – सब मिलकर एक होना, समानता।

एकतान – वि.– तन्मय, लीन, एकाग्रचित्त, एक राग छेड़ना।

एकतारो – पु. – एक तार का वाद्य, इकतारा

एक दाँत – पु.सं.– एक दन्त, गणपति, गणेशजी।

एक दाण – वि.– एक बार।

एक मत – वि. – एक राय।

एक रंग्यो – वि. – एक रंग में रंगे हुए, एक विचारधारा वाले।

एक कली की लसण – लहसुन की एक जाति जिसके मूल में एक ही गाँठ होती है। ऊँची जाति का लहसुन जो औषधि के काम आती है।

एकलखुरा – अकेला रहने वाला, किसी का साथ नहीं चाहने वाला।

एकलो – पु.सं. – अकेला, इकलौता, एकाकी।
(जाऊँ तो एकली राम आऊँ तो एकली। मा.लो. 635)

एकवचन – पु.सं. – व्याकरण में एक वचन।

एक वड्यो – एक परत वाला, इकहरा, छरहरा बदन, दुबला– पतला, एक तरफ सीकी हुई चपाती।

एक सर – वि.– एक परत का, एक रस्सी में गूँथा हुआ, अकेला साधन।

एक साँ – वि.– तुल्य, समान, बराबर।

एक हत्तो – वि. – जो एक ही हाथ में हो।

एक हर्‌यो – वि.– इकहरा, एक परत का, बारीक, पतला।

एक हाते – एक व्यक्ति द्वारा संचालित, वह गाय भैंस जो नित्य दूहने वाले व्यक्ति से ही दुहाती हो, एक ही व्यक्ति से दुहाने की आदत, एक साथ।

एकहाते – एक साथ में, सब मिलकर के, सब साथ में।

एकांगी – वि. – अकेला ।

एकाड़ी – वि. – एक तरफ।
(एकाड़ी भूले वाण्या बामण्याजी। मा.लो. 607)

एकांतरो – पु. – एक दिन छोड़कर आने वाला ज्वर, विषम ज्वर।

एकांतवासो – पु. – निर्जन स्थान या अकेले में रहना।

एकादसी – स्त्री. – ग्यारस, एकादशी तिथि।

एकादो – एकाध, कोई-कोई, कोई एक।

एकांतरो – एक दिन के अन्तर में आने वाला ज्वर, एक दिन छोड़कर, इस क्रम से आने वाला ज्वर।

एकासणो – न.– दिन में केवल एक बार भोजन करने का व्रत, एकाशन। (एकासणा उपास भी तो। मो. वे. 45)

एकी-बेकी – विषम और सम संख्या, मुट्ठी में बंद किये गये दानों की सम या विषम संख्या बताने की हार-जीत का बच्चों का एक खेल, विवाह के अवसर पर दूल्हा–दुल्हन का खेल।

एको – सु.पु. – एकता।

एखल-सूल्ड़ो – वि. – अकेला रहने वाला।

एखलो – पु. – अकेला, एकाकी।

एखाड़ी – वि. – एक तरफ, एक ओर।

एठाण – न. – ग्राम का मुख्य स्थान जहाँ लोग बैठे मिल जाते हैं, ऐंठ जाना।

एड़ – स्त्री. – एड़ी, घोड़े को पाँव की एड़ी से हाँकना।

एड़ी – स्त्री.– पगतली का पिछला भाग, जूती या बूँट की ऐड़, पैर की एडी।
(पाँव की एड़ी धरती पे घीसे। मो. वे. 54)

एत्ता, इत्ता – वि. – इतना, इतना अधिक।

एती – वि. – इतनी।

एरन्ड्यो – पु. – अरण्ड, रेंडी, एरण्ड, एक अरेंड्यो।

एरावत – पु.सं. – इन्द्र का ऐरावत, हाथी।

एचली – पु. तु. – दूत, राजदूत।

एला – स्त्री. – इलायची।

एकठोई – वि. – इकट्ठा ही, एकजुट ही, थोक से।

एकतरफ्यो – वि. – एक तरफा।

एकन्दर – वि. – थोक में, कुल।

'ए'

एक पट – वि. – एक गुना।

एक बार – वि. – एक बार, एक समय।

एकलोज – वि. – अकेला ही।

एक सो – अव्य. – एक समान।

एकाड़ी – वि. – एक तरफ, एक ओर।

एकादो – वि. – एकाध।

एकल-सूल्डो – क्रि.वि. – अकेला रहने वाला।

एँचणो – सं. क्रि. – खींचना।

एँचकताणो – वि. – भैंगी आँखों वाला, भैंगा।

एँचाताणी – स्त्री. – खींचतान, इधर-उधर खींचना।

एँजी – अव्य. सम्बो.– अरे, एजी।

एँठ – स्त्री. – ऐंठना, अकड़, ठसक, घमण्ड।

एँठवाड्यो – वि. – जूठा भोजन करने वाला, जूठा खाने वाला।

एँठण – स्त्री.– ऐंठना, मरोड़ा बल, तनाव।

एँठो – क्रि.वि. – ऐंठने का या ठगने का कार्य करो, जूठन।

एँड – वि. – आवश्यकता, गर्ज।

एँडाल – वि. – घमण्डी, बाँका-तिरछा, टेढ़ा, मारनेवाला, उपद्रवी।

एतनो – अव्य. – इतना।

एतरोज – इतना ही, आपत्ति।

एदी – स्त्री. – गंदा, घृणास्पद, गन्दा रहने वाला, आलसी।

एन वखत – वि. – ठीक समय पर, ठीक मौके पर।

एब – पु. – दोष, अवगुण।

एबलो – दोष वाला, अवगुण, खामी, गलती, भूल, बुराई, गुनाह, दोषी,

अपराधी, कलंकित, लांछन वाला।

एयार – पु. – चालाक, धूर्त, धोखेबाज।

एयाश – वि. – बहुत ऐश या आराम करने वाला, लम्पट।

एरण – सं. – कान के बुन्दे, घड़ने की लोहे की चौकोर सिल्ली।

एरा गेरा – हर कोई, साधारण, अपरिचित, उचक्का, पराया, तुच्छ, हीन, आलतू – फालतू।

एरापत – पु. – ऐरावत नामक इन्द्र का हाथी।

एरे मेरे – आस पास, यहीं कहीं, नजदीक।

एलची – इलायची, इलायची का पेड़। (आँगण एलची जी हो !)

एलम – वि. – जादू।

एलवो – ग्वार पाठे का सुखाया हुआ रस, एलुआ।

एलान – घोषणा, मुनादी, डूँडी।

एवर में – बदले में, इस जगह, परिवर्तन, बदले में काम करने वाला व्यक्ति, बदला, बदली पर।

एवर – क्रि. – संग्रह, संकलन।

एवी – अव्य. – ऐसो।

एस – इस वर्ष, वर्तमान वर्ष, मौज मजा, ऐशो आराम, भोग विलास, ऐषमः का तद्भव।

एसड़ी – वि. – ऐसी।

एसी – अव्य. – इस प्रकार की।

एसो – ऐसा, इस प्रकार, ऐसा भी।

एकहर्‌यो – वि. – एक सर का, एक लड़ी वाला, इकहरा।

ओ – अव्य. – आदरणीय को बुलाने का सम्बोधन।

ओं – अव्य. – ओ ऽ (बुलाने का या सम्बोधन का स्वर) प्रणव शब्द।

ओक – स्त्री.– दोनों हाथों की अंजली।

ओकात – हैसियत, बिसात, ताकत।

ओंकार – पु.– परमात्मा, ओंकारनाथ, शिव।

ओख, ओटन – जिस तिथि या पर्व या त्योहार पर मनुष्य मर जाता है। उसके वहाँ उस तिथि का त्योहार, पर्व नहीं मनाया जाता, दोनों हाथ की अंजली से पानी पीना।

ओखद – औषध, औषधि, दवा, दवाई। (छेल भँवरजी को माथो दुखे ओखद बाँटू रे, दो दन रई जारे। मा. लो. 429)

ओखराँदो – गंदगी प्रेमी, झगड़ालू।

ओखली – स्त्री. – ऊखल।

ओगड़ाँदो – बहुत गंदा रहने वाला, शरीर पर फफूँद लगने वाला, ओधड़।

ओगण – अवगुण, बुराई।

ओगणा – वि. – वह चना या तुवर आदि दलहन जिसे पानी में भिगोने पर जो फूले नहीं, गुणरहित, दुर्गुण, गुणहीन, अवगुण।

ओगणो – वि. – बिना गला चना, तुवर आदि।

ओगन्या – वि. – कान के आभूषण।

ओगड़ – अवधूत, ओढ़।

ओगल्यो – बिना जान पहचान वाला मनुष्य, बिना जाना पहचाना, जिसको नहीं जानते, पता नहीं कौन।

ओगण्यो – रस्सी बनाने का यंत्र, स्त्रियों के कान के ऊपर के लोल में पहने जाने वाला सोने या चाँदी की एक लटकन। एक कान में ऐसे तीन तीन पहने जाते हैं।

ओगारो – पशुओं के खाने से बचा बिगड़ा हुआ घास, बिगड़ी हुई वस्तु, जुगाली।

ओगाल्या – अव्य.– दोनों समय, सुबह-शाम।

ओगुरो – वि. – गुरु रहित, अवगुरो।

ओचक – वि. – अचानक, अचंभित। (म्हारी सुती नगरी ओचकी रे बनड़ा।)

ओचकणो – डर जाना, चमक जाना। (सुती सी जोसण ओचकी ओ घोड़ी रा झाँझर वाजे। मा.लो. 189)

ओचकाईग्या – क्रि. – उचका गये, पार कर गये, अचंभित हो गये, आश्चर्य में पड़ गये, अचानक आ गये या चले गये।

ओछब – वि. – उत्सव, उमंग, आनंद का कार्यक्रम।

ओछाव – वि. – उछाह, उत्साह, उमंग, आनन्द।

ओछो – वि. – थोड़ा, ओछा, तुच्छ, छोटा, दरिद्र, छिछोरा, टुच्चापन। (ओछी जिन्दगी का मत वो गार बार। मा.लो. 648)

ओजको, ओडको – वि. – पुतला, भ्रमित करने वाला चेहरा, आकृति या मुखौटा।

ओजर – वि. – उज्र, आपत्ति।

ओजरको – वि. रात्रि जागरण, रतजगा।

ओजागर – पु. – प्रकट, प्रत्यक्ष, ओजागरी, स्त्री. – उजागर, प्रत्यक्ष में , उनींदे रहना, रात्रि जागरण वाली।

ओजीग्यो, ओजी गयो – वि. – हण्डी या पतीली आदि बर्तन में दाल, सब्जी, दलिया आदि सतह या पेंदे में बैठकर, गर्मी पाकर जलने से उत्पन्न गन्ध लग जाना। (तमारा लाडू फीका दाल ओजीगी मरोड़ घणी। मा.लो. 433)

ओझक – वि. – नींद में उझकना।

ओझो – पु. – भूत-प्रेत झाड़ने वाला व्यक्ति, सयाना, ओझा।

‘ओ’

ओट – स्त्री. – आड़।

ओटला – चबूतरा।

ओटलो – पु. – घर के बाहर कुछ ऊँचाई लिये बैठने की जगह या स्थान। ओटलो छोड़ रे ओटलो छोड़ (जीजी छिनाल का ओटलो छोड़। मा.लो. 497)

ओटण – क्रि. – ओटना, औटाना, लपेटना, ढककर छिपाना।

ओटणी – स्त्री. – कपास को चर्खी में रख रुई व बिनौले अलग करना।

ओटणी – स्त्री. – कपास ओटने की चरखी।

ओट्याँ बाँधी – स्त्री. – ओट बाँधने का कार्य किया, आड़ की, स्थान को लम्बाई में करके हाँकना।

ओठी – स्त्री. – अटक के लिये वस्तु, टिकाने की वस्तु।

ओठो – पु. – उपालंभ, उलाहना।

ओड़ – पु. – मकान बनाने वाली एक जाति जो अपने चमड़े की परवाल या थैली में पानी भरकर मिट्टी आदि की दीवारें आदि बनाते हैं, खारोल जाति।

ओड़न – स्त्री. – ओढ़ने का वस्त्र।

ओड़नो – पु. सं.– ओढ़ने की रंगाई इत्यादि।

ओड़नी – स्त्री. – साड़ी, धोती आदि वस्त्र।

ओड़वो – पशुओं के पानी पीने का कुंड, चाठ्या।

ओड़ा – आड़ी– टेड़ी बात करना, तुच्छ बोलना, जली कटी, तीखी। (म्हारी बाई से आड़ा बोलो थाँपे आवे रीस। मा.लो. 529)

ओढन तागा – ओढ़ने की क्रिया, आड़ करने की चीज।

ओढ़नो – क्रि.–रोकना, फैलाना, पसारना, अपने ऊपर लेना।

ओढ़नी – स्त्री. – स्त्रियों के लिये ओढ़ने की

साड़ी या धोती।

ओढ़ा-ओढ़ो करीने – स्त्री. – ओढ़ पहनकर, जल्दी से ओढ़ना।

ओढाऊँ – क्रि. – ओढ़ाने या ढँकने का उपक्रम।

ओदर – पु. – उदर, पेट, गर्भ।

ओप – वि. – उजास, झलक, चमक, आभा, जँचना।

ओपनो – क्रि. – अच्छा लगता, सुन्दर लगना, चमकाना।

ओब – सु. पु. – फसल की रक्षा के लिये काँटों या कंटकों की बाड़ या बागुड़ लगाने के काम आने वाला लकड़ी या यन्त्र जिसके निचले सिरे में लोहे का आवरण जड़ा होता है और जिससे जमीन में गढ़ा बनाया जाता है, वि. – आभा, कान्ति।

ओबार – सिंचाई के लिए पानी की नाली।

ओयड़ी – ओरी, कुटिया , झोपड़ी।

ओर – स्त्री.अव्य. – तरफ, दिशा, और, दूसरे।

ओरड़्यो – क्रि.– ओरने का कार्य हो चुका, बीजों को ओरने के यन्त्र से जमीन में डालने की क्रिया।

ओरई – स्त्री.– ओरने की मजदूरी।

ओरखल्या, ओरख्या – क्रि.– पहिचान लिया, पहिचाना, जान लिया, जाना।

ओरखती – स्त्री. – पहिचानती, जानती, समझती।

ओरखान – वि. – पहिचान, परिचय।

ओरज – अव्य. – और ही, अन्य ही।

ओरत – स्त्री. – स्त्री, महिला, नारी।

ओरती – ओर से, तरफ से, इनकी ओर से, उनकी ओर से, चारों ओर से, चारों तरफ से।
(बेगी चालूँ तो भीजे चारी ओर ती। मा.लो. 584)

ओरनो – उबलते हुए पानी में दाल आदि डालना, पीसने के लिये घट्टी के गाले में अनाज डालना, युद्ध में झोंकना, मर्यादा लाँघना, सीमा लाँघना।

ओरम्बो – उलाहना देना, उपालंभ, शिकायत करना।
(भेरुजी सुतार्यां री बेटी देवे ओलम्बो। मा.लो. 75)

ओरसियो – चन्दन घिसने का गोल पत्थर, चकलोटा।

ओरी, ओरई – स्त्री. – कच्ची बनी झोपड़ी, खेतों में बीज बोते समय माँगने वाले को दान या भेंट के रूप में दिया जाने वाला अन्न या अनाज।

ओरे – क्रि. – बीज बोने के लिए ओरने का कार्य करे, दूसरे कृषि कार्य।

ओरो – पहले घास फूँस और उसके ऊपर मिट्टी की छत डालना।

ओल, ओळ – पु. – कतार, पंक्ति, चूल्हे के पीछे का ताक, दो मुँह वाला चूल्हा, उपलों की पंक्ति, क्रम में रखने की क्रिया या भाव।

ओलना – क्रि. – आटे में पानी मिलाकर उसे गूँदना और पिण्ड बनाने की क्रिया , घोलना, मिट्टी में पानी मिलाकर गूँदने की क्रिया या भाव।

ओला–ओलो – क्रि.वि. – मकान में इधर से उधर तक प्रविष्ट होने या निकलने का लम्बा मार्ग, किसी कार्य में होने वाली ढील–पोल।

ओळखणो – क्रि. – पहिचानना।
(में म्हारा मारुजी ने ओलखिया हो बाई। मा.लो. 485)

ओलखान – वि.- पहिचान, जान–पहिचान, परिचय।

ओल्या – वि.ब.व. – कतारें, पंक्तियाँ।

ओलम्बो – पु. – उपालंभ, उलाहना।

(ओलम्बे ओलम्बे म्हारो घर भयो हो राज जमईसा। मा. लो. 517)

ओलाँग – उल्लंघन, फलाँग लगाना, कूदना, किसी के ऊपर से निकल जाना। (वीने उलांग वेरी तू आयो। मा.लो. 503)

ओलाड़नो – बूझाना, आग बुझाना, बुझा देना, चिमनी आदि बन्द कर देना।

ओलाद – संतान, वंश।

ओलूँडी – याद आना, याद सताना, ओळू।

ओवरा, ओवरी – पु. – कोठड़ी, मिट्टी के बने कच्चे घर, कोठे। (माता रेसाँ अबीश लाल जी रे ओवरे। मा.लो. 627)

ओस – शबनम।

ओसन – क्रि. – आटा या मिट्टी को पानी में गीला करके मिलाने की क्रिया या भाव।

ओसान – सुध-बुध, होश-हवास, याद, भान।

ओसण्यो – क्रि. – ओस लिया, मसल लिया, गूँद दिया, मिला दिया।

ओसर – वि. – मृत्यु भोज, मोसर या अन्य अवसर।

ओसरी – स्त्री. – बारी, अवसर, पारी।

ओसारी – मकान की दिवाल के सहारे खुली जगह में बनी हुई खोली, ओहरी, छोटा दालान, ओसरी, बरामदा।

ओसिंगर – उऋण।

ओसीसो – तकिया, सिरहाना।

ओस्यारी – आलसी, कामचोर, निकम्मी।

ओहदो – पु. – किसी विभाग में कार्यकर्ता का पद या स्थान।

ओहदेदार – पु. – पदाधिकारी।

ओनिंगर – उऋण।

कँई – सर्व. – क्या?

कऊ – वि. – क्या ? भूसा, बारीक या महीन वस्तु, धूलि, रोटी का बुरा।

कई देनो (णो) – क्रि. – कह देना। (आखा गाम में कई दीजो। मो.वे.78)

कइ्या – क्रि. – कह रहे।

कंकू – कुंकुम।

कऊँ – कहूँ।

कऊन माँ – कौन से माह में ?

कउवाँ कँई – कहूँगा क्या?

कंकड़ – पु. – कंकर, छोटा पत्थर।

कंकण – स्त्री. – कंगन, चूड़ी, कड़ा, हाथ का आभूषण।

कंकाल – पु. – अस्थि पंजर, हड्डियों का ढाँचा।

कंकाली – स्त्री. – महाकाली, एक लोक देवी, काली देवी।

कंकू – न. – कुंकुम, सिन्दूर, इंगुर, रोली। (ईकी माँग को कंकू परसीना से रलीग्यो। मो.वे. 54)

कंगन – पु. – कड़ा, हाथ का आभूषण, चूड़ा, कंगना।

कगार – पु. – किनारा, नदी के दोनों तट।

कंगाल – पु. – धनहीन, दरिद्र, गरीब, निर्धन।

कंगूरो – पु. – कोर, किनारा, मुण्डेर।

कंघी – स्त्री. – छोटी कंघी, बाल सँवारने का उपकरण।

कंघो – पु. – कंघा, लकड़ी, सींग या धातु की बनी हुई वह वस्तु जिससे सिर के बाल ओंछे जाते हैं।

कचकच – स्त्री. – व्यर्थ का विवाद, लड़ाई-झगड़ा, किचकिच।

कचकची – दाँतों को भींचकर क्रोध प्रकट करना।

कचड़घाण – वि. – कीचड़ ही कीचड़, कीच मच जाना। (छोरा की टूटी टाँगड़ी, छोरी को कचड़घाण। मा.लो. 328)

कंचन – पु. – कंचन, सोना, मालवी में स्त्री वाची शब्द, धन , सम्पत्ति।

कंचन दन उग्यो – पुत्र जन्म या पुत्र विवाह जैसे बधाई के मांगलिक प्रसंग।

कचनार – पु. – एक छोटा पेड़ जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं, जिनकी सब्जी बनती है।

कच-पक – क्रि.वि. – कच्चे-पक्के।

कच-पच – क्रि.वि.स्त्री. – थोड़े स्थान में बहुत सी चीजों या लोगों का होना, गिचपिच।

कचपचा – वि. – आधे कच्चे-आधे पक्के रसीले।

कचर-कचर – स्त्री. – फल के खाने का शब्द।

कचर-बचर – स्त्री.– छोटे-बड़े बच्चों का समूह।

कचरणो – क्रि. – खुजाना।

कचरो – पु. – कूड़ा करकट, रद्दी वस्तुएँ।

कचरो ओटो – कचरा छिपाना, कोने में इकट्ठा करना, कुलक्षण, कुलक्षिणी।

कचरो-कूटो – मु. – व्यर्थ की वस्तुएँ।

कचा-कच – क्रि.वि. – झगड़ा, वाद-विवाद, मारपीट।

कची-कची – वि. – कच्ची-कच्ची, जो पकी न हो।

कच्ची केद – स्त्री. – हवालात में होना।

कच्ची–केरी – स्त्री. – हरी केरी, कच्चा आम।

कचेरी – स्त्री. – कचहरी, न्यायालय, इजलास, कार्यालय।

कचेर्यां बेसंता – कचहरी में बैठे हुए।
(कचेर्यां बेसंता सुसराजी बोल्या।)

कच्चो-चिट्ठो – क्रि.वि. – ज्यों का त्यों कहा जाने वाला और भीतरी हाल का लेखा।

कच्चो माल – पु. – वह द्रव्य जिससे व्यवहार की चीजें बनती हों जैसे रुई, तिल, सनई आदि।

कचोरा – काँच की चूड़ी बनाने वाला तथा बेचने वाला कचोरा जाति का व्यक्ति, कचारा चूड़ियाँ।
(सनमन सोरा सात कचोरा। मा.लो. 605)

कचोरी – स्त्री. – कचौड़ी, मेदे की पूड़ी में मसाला भरकर बनाई हुई खाद्य वस्तु।

कचोलो – कुँए में से खींच कर पानी निकालने की डोल, पानी या रंग का बड़ा कढ़ाव, गंगाल (जंगाल), दुकड्या।
(रंग का गोरी बाई भर्या ओ कचोला। मा.लो. 583)

कछु नई – क्रि.वि. – कुछ नहीं , कुछ भी तो नहीं।

कछोट्यो – स्त्री. – कमर में खोंसा जाने वाला धोती या साड़ी का पल्लू।

कजरा – वि. – काजल, अंजन।

कजरीवन – पु. – कदली वन, वह वन जिसमें केले का पर्याप्त उत्पादन होता है।

कंजर – स्त्री. – कंजर, कंजरजाति का मनुष्य।

कंजरो – पु. – कंजर, कंजरजाति का मनुष्य।

कजली – स्त्री. – काजली, काजल, कालिख।

कजा – आफत, विपत्ति, मृत्यु।

कजाणाँ – ना मालूम।

कट-कट – स्त्री. – दाँतों के बजने का शब्द, लड़ाई-झगड़ा।

कटकटी खाणो – ठण्ड के कारण दाँतों का कंप-कंपाना। गुस्से में दाँत भींचकर (बंद कर) कहना, बोलना।

कटको – टुकड़ा।

कटघरो – पु. – लकड़ी या लोहे का चारों ओर से बन्द पींजरा।

कटणो – कट जाना, लड़ते हुए औरों को मारना।

कटने – क्रि.वि. – किधर, कहाँ, किस ओर, किधर का।

कट्यो – वि. – कटा हुआ, अपनी जेब से खर्च किया, कटी पूँछ वाला।

कट्टड़ – वि. – कट्टर, कठोर, अकड़ने वाला।

कट्टो – कत्ले आम, युद्ध, पिस्तोल, छोटा थैला।

कटाकट – स्त्री. – कटकट का शब्द, लड़ाई, वैमनस्य।

कटाछणी – स्त्री. – कटाकट, लड़ाई-झगड़ा।

कटार, कटारी – स्त्री.सं. – प्रायः एक बेंत का दुधारा छुरा या हथियार।

कटोरदान – पु. – रोटी रखने का एक पात्र, एक ढक्कनदार बर्तन जिसमें भोजन रखते हैं।

कटोरो – पु. – प्याला, कटोरा, चौड़े पेंदे का बर्तन।

कटे – सर्व. – कहाँ, कटना।

कठण – वि. – कठिन, मुश्किल।

कंठ – स.पु. – गला।

कंठाल्या – व्यापारी, क्रेता, हल्दी खरीदने वाले। (इ तो सगला कंठाल्या गुजरात सिदार्या। मा.लो. 372)

कठे – सर्व. – कहीं, कहाँ।

कठेड़ा – पु. – कटघरा, आड़।

कंठेरी – स्त्री. – कंठ की, गले की।

कंठी – स्त्री. – गले में धारण की जाने वाली माला, गले का आभूषण।

कठी – सर्व. – कहाँ।

कंठो – पु. – गले में पहनने का आभूषण, माला, गले का हार।

कड़ – स्त्री. – कम, किनारा। (नाचण हाले डोले कड़ मचकोड़े। मा. लो. 492)

कड़ई – स्त्री. – कढ़ाई।

कड़क – वि. – कठोर।

कड़कड़ाणो – क्रि. – कड़कना, गर्जन करना।

कड़की – वि. – हाथ तंग होना, पैसा पास में न होना, मजबूरी, विवशता, बिजली की कड़क होना।

कड़छी – स्त्री. – करछुल।

कडब, कड़बी – सं.स्त्री. – ज्वार-मक्का की पिंडी या कड़ब। (कालो खेत कडब को भारो। मा.लो.165, 546) कड़बाँ की कुटिया।

कड़वायलो – क्रि. – निकलवा लो, किसी वस्तु या अनाज वगैरह की मशीन या बखारी से निकलवाना।

कड़्लोपाणी – प्रसूता के लिये तैयार किया गया गुड़, घी, अजवाईन और हल्दी मिश्रित पानी, गर्म पानी, लोंग का उबला हुआ पानी।

कंड्यो – टोकनी, टोकरी, टिपारी, टिपारा।

कड्याँ भर – क्रि. – बच्चे को कमर पर बिठाकर घुमाना।

कडयाँ – स्त्री.सं. – पैरों का चाँदी का गहना।

कड़वो – वि. – कडुआ।

कड़वो तेल – वि. – घासलेट या मिट्टी का तेल, सरसों का तेल।

कड़ावा – क्रि. – गीत के बोल, कड़वक्क।

कड़ी – स्त्री. – हाथ-पाँव में पहनने का चाँदी का गोलाकार आभूषण विशेष, छाछ में बेसन का घोल बनाकर उबाली हुई कढ़ी, एक भोज्य पदार्थ।

कंडील – पु. – लालटेन, हरीकेन।

कड़ेली – स्त्री. – मिट्टी का तवा।

कड़ोलीम – वि. – कडुआ नीम।

कड़ोस्यो – क्रि. – खोंसा, धोती को कमर के इर्द-गिर्द लपेटा।

कण – सर्व. – किसे, किस, दाना, नग, अनाज के दाने, कौन। (तोडन वाला घरे नई वो बाई कण पर करूँ रे गुमान। मा.लो. 485)

कण कण ने तरसे – वि. – दाने-दाने को मोहताज।

कणका – सं.स्त्री. – अनाज के दाने, अन्नदेव।

कणमाँगण्या – पु. –भिखारी, माँगने वाले लोग।

कणिपत – सर्व. – किसकी, किसका, कैसे। (कणिपत सेवा हिंगलाज वउवड लो नी बीड़ो पान को। मा.लो. 97)

कणीकेरा – सर्व. – किसकी, किसका ?

कणी – स्त्री. – कनकी, कनी, दाना, चूरा, सर्व. – किसी, किस ?

कतई – अव्य. – बिल्कुल।

कतरनो – क्रि. – कैंची से काटना, कुतरना।
कतनी – सर्व. – कितनी।
कतन्नी – स्त्री. – कैंची, बाल या कपड़े काटने की कैंची।
कत्तो – सर्व. – कितना ?
कतनो – सर्व. – कितना ?
कतरण – स्त्री. – कतरी हुई वस्तु के छिलके, टुकड़े, कतरन।
कतरणी – स्त्री. – कैंची।
कतरातो – क्रि.वि. – कन्नी काटता रहे, दूरी बनाये रखता है, कतराता रहता है, दूर ही रहता है।
कतरी – स्त्री.क्रि.वि. – कितनी, क्रि. – कुतर दिया।
कत से सूत – कते हुए सूत के तार, तकली से सूत कातना, कच्चा सूत। (हाँ रे वाला जैसा कत से सूत। मा. लो. 535)
कत्तलखानो – पु. – बूचड़खाना, वधस्थल।
कत्ता की आवाज – स्त्री. – कौड़ियों की ध्वनि, कौड़ियों की खनक।
कत्थो – पु. – पान का, कत्था।
कंथ, कंत – पु. – पति, स्वामी, मालिक, ईश्वर।
कथक्कड़ – पु. – मौखिक रूप से कथा कहने वाला।
कथा – स्त्री. – वह जो कहा जाये, वार्ता, धर्म विषयक वार्ता, बात।
कंथा – स्त्री. – कहानी, किस्सा, हाल, हरि कीर्तन, वि. – गुदड़ा, फटे पुराने वस्त्र, कंबल।
कथा बारताँ – स्त्री.–व्रतादि के पौराणिक आख्यान।
कथीर – पु. – राँगा नामक धातु।
कथूड़ी, कथूली – स्त्री. – कबीट की सब्जी, कैथ।
कथे – क्रि. पु. – कहता है।
कद – न. – कब किस समय, माप, ऊँचाई। (इतरो कदी भी सोचो। मो.वे.40)
कदड़ी – स्त्री. – आटा गूँदने की मिट्टी की थाली या परात।
कद्दू – पु. – कोल्हा, काशीफल।

'क'

कदम – कदम्ब।
कदमचाल – क्रि. – एक पाँव उठाकर दूसरा रखने वाले घोड़ा-घोड़ी या मनुष्य की चाल।
कदर – वि. – इज्जत, प्रतिष्ठा।
कदरी – स्त्री. – कदड़ी, मिट्टी की बनी थाली, क्रि. – कब रही ?
कदली – पु. – केले का पेड़, केला।
कदलीवन – पु. – केले का पेड़ों का जंगल, कजरीवन।
कदाली – स्त्री.सं. – कुदाल, जमीन खोदने का औजार।
कदी – अव्य. – कभी किसी समय, कभी घोर अंधकार।
कदीका – स्त्री. – कभी के, कभी का।
कदीनी – क्रि.वि. – कभी नहीं।
कदे – अव्य. – कब, किस समय ?
कंदोरो, कंदोरा – स्त्री. – करधनी, कमर का आभूषण, मेखला, बंधन।
कनकटो – वि. – बूचा, कटे कान का।
कनखजूरो – पु. – एक जहरीला लम्बा छोटा कीड़ा जिसके बहुत से पैर होते हैं। वर्षा ऋतु का एक विशेष कीट।
कनगेट्यो – गिरगिट, रंग बदलने वाला प्राणी। (कनगेट्यो कपड़ा मोलवे, घोयरी चाली रे हाट। मा.लो. 317)
कनटोपो – पु. – वह टोपा, जिससे सिर और दोनों कान ढँक जाएँ।
कनपटी, कनपेटी – स्त्री. – कान और आँख के बीच का स्थान, कान के पास का भाग।
कनफड़ो – पु. – कान के पास का भाग, कालर, ढँकने के लिये बनाया जाता है, कालर, वि. – फटा हुआ कान।
कनफटो – पु. – गोरखपंथी साधु जो कान को चीर या फाड़कर काँच या बिल्लौर की मुद्राएँ धारण करता है, कनफटा।
कनस्तर – पु. – टीन का डिब्बा।

कन्नात – स्त्री. – मोटे कपड़े का पर्दा जिससे स्थान घेरा जाता है, कनात।
कन्यादान – पु. – विवाह में वर को दान के रूप में कन्या देने की रीति।
कन्यावर – विवाह में वर को कन्या समर्पण करने के बाद कन्यादान करने के बाद (उपवासी जनों की) भोजन करने की रीति।
कन्सूरो – वि. – दूसरे की बात कान लगाकर सुनने वाला, आहट लेने वाला, टोही।
कनाड़ा – पु. – किनारा, कनोड़ा।
कनाँ कँई – जाने क्या पता नहीं। (एसो कनाँ कँई। मो.वे. 79)
कनाँका – क्रि.वि. – न मालूम कहाँ, सर्व. – किनका।
कनाँ कून – पु. – न मालूम कौन ?
कनाँग – कहाँ।
कनारे – पु. – किनारे।
कनावड़ो – कन्नी काटने वाला, दबने वाला, किसी बात से दबकर कनावड़ काटने वाला।
कनीकी – सर्व. – किसकी।
कने – अव्य. – पास, निकट।
कनेयो – पु. – कन्हैया, श्रीकृष्ण।
कनेर – स्त्री. – एक प्रकार का पुष्प। लाल, सफेद और पीले रंग का मोहक पुष्प।
कंत – प्रिय, पति, स्वामी, प्रियवर।
कंप – क्रि. – काँपना, धूजना।
कप – प्याला।
कपट – वि. – छल, जाल।
कपटी – पु.वि. – छली, दगाबाज, छलिया, धोखेबाज, छल करने वाला, कपट रखने वाला। (तम नन्दलाल जनम का कपटी। मा.लो. 686)
कंदोई – मिठाई बनाने वाला हलवाई, रसोइया। (लई सक्कर कंदोई के चाल्या वो मेरी कोचलिया। मा.लो. 167)
कपड़-छन् – किसी वस्तु को कपड़े में छानना।

कपड़ा – क्रि. – कपड़े।
कपला गा – स्त्री. – कपिला या पिंगलवर्णी गाय।
कपसी – स्त्री. – कप-बशी, कप-प्लेट।
कपा – स्त्री. – कपास।
कपार – सं.पु. – ललाट, कपाल, भाग्य।
कपाल-किरिया – स्त्री. – शवदाह की एक रस्म या जल तर्पण।
कपाल – स्त्री. – मत्था, माथा, खप्पर, भिक्षा पात्र, भाग्य।
कपाशा – स्त्री.ब.व. – कपास के बीज, बिनौले।
कपूरबट्टी – स्त्री. – सफेद रंग का एक प्रसिद्ध सुगन्धित द्रव्य जो दाल चीनी की जाति के पेड़ों से निकलता है। इसकी बट्टी जलाकर भगवान् की आरती उतारी जाती है। औषधि में भी प्रयुक्त।
कफ – बलगम, श्लेष्म।
कफा – कपास।
कफ्फण, कफन – शव लपेटने का कपड़ा।
कब्जीयत – स्त्री. – मलावरोध।
कब्जो – पु. – कब्जा, अधिकार, अधीन करना, मूढ़ा, दस्ता, फाटक के कब्जे।
कबर – स्त्री. – कब्र।
कबर बिज्जू – पु.– नेवला, नेवले की जाति का एक जंगली जानवर।
कबरो – वि. – चितकबरा।
कबाड़ – पु. – निरस्त वस्तुएँ।
कबाड़्या – क्रि.वि. – तिकड़म से कोई वस्तु हस्तगत कर लेना, छाती की पसलियों के लिये मालवी शब्द।
कबाड़ी – वि. – लकड़ी, लोहे आदि हर किस्म की पुरानी वस्तुओं का लेनदेन करने वाला, कबाड़ी।
कबाण – पु. (अ) – कमान।
कबीट – कबीठ, कपित्थ। एक फलदार पेड़।
कबीर – पु. – एक प्रसिद्ध निर्गुणी भक्त कवि।
कबीरपंथी – वि. – कबीरदास के अनुयायी।

कबीला – पु. – समूह, झुण्ड, एक वंश का समुदाय।
कबूतर – पु. – कबूतर, कपोत।
कबूल – क्रि. अ. – स्वीकार, मंजूर।
कब्जो – अधिकार, कब्जा, स्वत्व, दरवाजे में पेंच से जड़ा जाने वाला एक उपकरण, स्त्रियों को सर्दी के मौसम में पहना जाने वाला एक वस्त्र।
कमई – स्त्री. – कमाया हुआ या अर्जित सम्पत्ति।
कमऊ – वि. – कमाने वाला, कमाई करने वाला, धंधा, व्यवसाय करने वाला, उद्यम से पैसा प्राप्त करना।
कमती – पु. – कम।
कम तौल का – वि.– कम वजन का, जिसका वजन कम हो।
कम्मर – स्त्री. – कटि, कमर।
कम्मर कसणो – क्रि. – सन्नद्ध या तैयार होना।
कमरकस – एक औषधि।
कमरबंदो – पु. – वह लम्बा कपड़ा जिससे कमर को बाँधते हैं। नाड़ा।
कम्मर पेटो – पु. – कमर बाँधने की वस्तु, पटका, पेटी, कमरपट्टा।
कमर कंदोरो – स.पु. – कमर में पहनने का कंदोरा या करधनी नामक आभूषण।
कमल – पु. – कमल, जलज।
कमाई – वि. – अर्जन, आय, कमाने का भाव।
कमाड़ – पु. – फाटक, दरवाजा, कपाट, द्वार।
कमाण – स्त्री. – धनुष।
कमाणो – क्रि. – उपार्जन करना, कमाना, नफा होना, कमाऊँ, आमदनी, व्यवसाय, उद्यम।
कमान – स्त्री. – कमानी, धनुष।
कमानो – क्रि. – धन अर्जित करना।
कमार – पु. – कुम्हार, कुम्भकार, प्रजापति, मिट्टी के बर्तन या खिलौने बनाने वाली जाति।
कमाल – वि. – आश्चर्यजनक, खूब।
कमावणो – क्रि. – कमाना, प्राप्त करना, अर्जित करना।
कमी – वि. – थोड़ा, कम, ओछा।
कमीण – वि. – निकृष्ट कार्य करने वाला, भिखारी के लिए एक मालवी सम्बोधन।
कँयाड़ी – किस तरफ, किधर। (कोई गयो कँयाड़ी ने कोई गयो कँई। मो.वे. 56)
क्याँए – सर्व. – कहाँ है?
क्यारा – पु. – क्यारा।
क्यो – पु. – कहा।
करइ रिया – पु. – करवा रहे।
करकरीया री वींटी – कंगूरे वाली अंगूठी, कंकड़ मिश्रित, महीन कंकड़, रेत, अच्छा सिका हुआ, खुरदुरा, करारा, करकरा। (हो म्हारे करकरीया री वींटी। मा.लो. 424)
करकरे – क्रि. – अकाल पड़े।
करकसा – वि. – कर्कशा, कठोर व अप्रिय मन वाली स्त्री, लड़ाकू स्त्री, झगड़ालू स्त्री।
कर काड्यो – क्रि. – कर दिया, करके निकाल दिया।
करच – वि. – टुकड़ा, या छिलका।
करज – वि. – कर्ज, कर्जा, ऋण।
करड़ – स्त्री. सं. – एक प्रकार की जंगली सब्जी जो प्रायः वर्षा ऋतु में खेतों में ऊग जाती है।
करण – पु.– दानी कर्ण, व्याकरण में एक कारक, कान।
करतब – क्रि. – काम, कार्य, करिश्मा।
करतार – ईश्वर, कर्ता, परमात्मा।
करताल – पु. – दोनों हथेलियों के परस्पर आघात से ताली बजाना, झाँझ या मंजीर।
करतूत – स्त्री. – करनी, कोई अच्छा या बुरा कर्म।
करते – पु. – करता।
करन – पु. – कर्ण, दानी कर्ण।

करनफूल – पु. – कान का आभूषण।

करनी – क्रि. – मनुष्य द्वारा किया गया कर्म, स्त्री. – एक औजार जिससे ईंटों की चुनाई की जाती है , कर्म, भाग्य।

करनो – करना, बनाना, रचना, (बुरा मनक को साथ नी करनो। मो. वे. 84)

करप – पु. – कलफ, चावल का माँड जो कपड़ों को कड़ा करने के लिये लगाया जाता है।

करपो – वि. – गँवार, नासमझ, कृषि का डोरा।

करम – पु.– कर्म,काम, भाग्य, तकदीर। (कागद वे तो वाँचँलू बाईसा करमनी वाँचो जाय। मा.लो. 470)

करम काणो करनो – एक ही बात बार बार कहना।

करमहीण – वि. – भाग्यहीन, दरिद्री।

करमदी – स्त्री. – करोंदे की झाड़ी, करोंदी, एक ग्राम नाम।

करमेतो – स्त्री. – छाछ की रवई या मथनी को पकड़ने वाला यंत्र, काम करने वाला।

करल्या राल्या – क्रि. – मुख शुद्धि करना।

करल्यो – क्रि. – कर लिया, कर चुका।

करवा – क्रि. – करने के लिये, पु. – कलश।

करवीर – पु. – कनेर का पेड़, तलवार, श्मशान।

करसाण – पु. – किसान, कृषक। (जदी ओ रेशम रा रेजा काँकड़ आया तो काँकड़ में करसाण्या वखाण्या।

करार – पु. – इकरार, पक्कीबात।)

करार नामो – पु. – इकरारनामा, दस्तावेजी स्टाम्प, वह दस्तावेज जिस पर कुछ शर्तें हों।

करी – बक्खर, कर दी।

करोड़ – वि. – क्रोड़, सौ लाख की संख्या।

करोत – स्त्री. – करवत, आरा।

करोती – स्त्री. – करवत, आरी।

कलंगी – मोर अथवा मुर्गे आदि पक्षियों के सिर की चोटी या फुनगी, कलंगी, पगड़ी, टोपी, साफा आदि में लगाया जाने वाला फुनगा, पगड़ी में लगाया जाने वाला एक विशेष शिरोभूषण। (मती अड़ वो तू मती अड़वो कलंगी तुरी वाली से । मा.लो. 449)

कलजुग – कलियुग, कलयुग वाला, कलयुग का समय, अधर्म का समय । (अणी हो कलजुग में गोरी कुण कुण वाला। मा.लो. 486)

कलन्दर – पु. – फकीर, मदारी।

कलदार – पु. – रुपया, सिक्का।

कलपणी – स्त्री. – कलपा लगाना, डोरा चलाना।

कलपणो – क्रि. – चिड़ना, विलाप करना, बिलखना।

कलम – स्त्री. – कूँची, तूलिका, लेखनी।

कल मसकण – स्त्री. – ड्राइवर, मिस्त्री।

कलस – पु. – कलश, मिट्टी का पात्र, लोटा।

कलस्यो – पु. – कलश, मिट्टी का पात्र,लोटा।

कला – न. – कला कौशल, गाने बजाने की विद्या, पुरुषों की प्रतिभा, नट विद्या, हुनर।

कलाप – वि. – विलाप, रुदन, कलपना।

कलाबत्तु – वि. – सलमा-सितारे जड़ना ।

कलार – पु.– कलवार, कलाल नामक शराब-विक्रय करने वाली एक जाति।

कलावे – वि. – बहकावे, छलने का कार्य करे।

कलालण – स्त्री. – दारू या शराब बेचने वाली स्त्री।

कलावंत – पु. – कलाकार, गुणी, गुणवंती।

कली – स्त्री. – कुली, कृषि यंत्र, बख्खर, मिट्टी की मटकी या घड़ा, घाघरे की कली, बिना खिला फूल।

कलींजड़ो – पु. – कुंजा पक्षी।

कल्ली – स्त्री. – राँगा, बरतन पर किया जाने

वाला राँगे का लेप, मुलम्मा, बाहरी चमक-दमक, तड़क-भड़क।

कलू, कळू – पु. – कलियुग।

कलेजो – पु. – हृदय, दिल, कालजा।

कुलेरी – कुँए में उगने वाली वनस्पति। (कुवा माय सी कलेरी रे तीखा तीखा पान। मा.लो. 136)

कलेवो – पु. – जलपान।

कलेवो – न. – नाश्ता, सिरावण, विवाह के अवसर पर बारात आने पर दूल्हे के लिये थाल भरकर मिठाइयाँ ले जाई जाती हैं। (देखो कुँवर कलेवो जीमे। मो.वे.36)

कलोता – पु. – मालवी राजपूतों की एक उपजाति।

कलो – पु. – मिट्टी या पीतल का बड़ा मटका।

कलो करनो – लड़ाई, झगड़ा, कलह, क्लेश, रोना धोना, खौलना, उबाल। (उठ सवेरे म्हाँसे कलो करे। मा. लो. 469)

कवड़ी – स्त्री. – कौड़ी।

कवल, कवला – पु. – कौर, ग्रास, निवाला, एक रोग, मकान के मध्य की दीवार का ऊपरी सिरा।

कँवर – पु. स्त्री. – कुँअर।

कँवर पटोली – आँचल में बच्चे को झेलना। (दूसरो वदावो म्हारी सासु ने दीजो, कँवर पटोली में झेलसी। मा. लो. 46)

कँवरे – न. – दरवाजे की बगल, दरवाजे का पार्श्वभाग, दरवाजे के कोने में।

कँवळे – कोने में, मुख्य द्वार के कोने से। (नणदल ओ कँवळे सातीपुड़ा माँड़ो।)

कुँवार – पु. – आसोज मास।

कवा, कवो – वि. – ग्रास, रोटी का कौर।

कंस – पु.– मथुरा का राजा कंस, काँसा धातु।

कसई – पु. – वधिक या उसका पारिश्रमिक।

कस्टी – वि. – कष्ट उठाने वाला, दु:खी।

कसणी – स्त्री. – कसने वाली वस्तु, चोली के बन्द, पजामे का नाड़ा, एक लोहे का छिद्रों वाला यन्त्र किसनी।

कस्तर – क्रि.वि. – किस तरह।

कस्तरे – क्रि.वि. – किस तरह।

कस्तूरी – स्त्री. – एक सुगन्धित द्रव्य जो एक प्रकार के मृग की नाभि से निकलता है।

कसनी – स्त्री.– घिसने का यन्त्र, किसनी।

कसन्या – स्त्री. – चोली के बन्द।

कसबा – पु. – परगने का मुख्य स्थान, बस्ती।

कसम – स्त्री. – सौगन्ध, शपथ।

कसमसाई – वि.– कसमसा करके, दिल आगा-पीछा करके, खुले दिल से जो काम नहीं किया जाता।

कसमस दूखे – धीरे– धीरे दर्द होना। (हो राजा कसमस दूखे पेट।)

कस्या – क्रि. – कस दिया, कस दिये।

कसरत – स्त्री. – व्यायाम।

कसर – कमी।

कसार – पु. – चीनी मिश्रित भुना हुआ आटा। (हथेल्या गुड़दा गण्या सो नख पर करूँ कसार। मा.लो. 559)

कसाँ – सर्व.– किस प्रकार, बन्द या डोरी।

कसावट – क्रि. – कसने की क्रिया, बन्धन में डालना, ढीला न छोड़ना।

कसी – स्त्री. – कैसी।

कसीदो – क्रि. – कपड़े पर कढ़ाई करना।

कसीबद – किस तरह से, कैसे, किस प्रकार, किस विधि। (मायली म्हारी कसी बद आवाँ ए म्हारी परणी करे लड़ाई रे। मा.लो.625)

कसूँबो – अफीम, अधिक मादकतार्थ पानी में

गला हुआ अफीम, अमला कसूँबा, कसूमल रंग, लाल रंग, लाल रंग से रंगा हुआ एक कपड़ा, ढाक वृक्ष, टेसू। (सुनो सुगना मारुजी कसूँबारी खेती राचन्द जणे करे। मा.लो. 471)

कसुमल – लाल रंग, लाल रंग का कपड़ा, कुसुम्भी, राई, कुसुम या कुसूंबी, कुसुम रंग। (हाँ रे वाला जसो कसुमल रंग एसो रंग राखजो जी म्हारा राज। मा. लो. पृ. 535)

कसूर – स्त्री. – अपराध।

कसेलो – वि. – जिसके स्वाद में कसाव हो, जैसे आँवला, हरड़ आदि।

कसूमी – वि.– कुसुम के रंग का, कुसुम्भी।

कसूमल – वि. – राई, कुसुम या कुसुमी, कुसुम्भी।

कसो – अव्य. – कैसा ?

कसोटी – वि. – परख, जाँच, परीक्षा।

कह रियो – क्रि. – कह रहा, बात कर रहा।

कहा-कही – स्त्री. – कहा-सुनी।

कहार – पु. – एक जाति जो पानी भरने या ढोने का काम करती है।

का

काई काटणो – सदा का निपटारा, काम निपटा देना।

काओ-संबो – अव्य. – क्यों ओ।

काँ – अव्य. – क्यों, क्योंकर, कहाँ ?

काँई – सर्व. – क्या, कौन-सा ?

काँईया – वि. – चालाक, धूर्त।

काँकड – जंगल, वन, गाँव की सीमा। (काँकड़ वच री पीपली रे वीरा जाराँ चढ़ जोऊँ थारी वाट। मा. लो. 352)

काकड़ी – स्त्री. – पपीता, ककड़ी, अरण्ड, ककड़ी, बालम ककड़ी, खीरा।

काँकण – स्त्री. – कंकण, कंगन, सूत्र जो दूल्हा-दुलहिन के हाथ में बाँधा जाता है।

काँकरी – स्त्री. – कंकरी , पत्थर के छोटे टुकड़े।

काका – पु. – काका।

काँकी – अव्य. – किस।

काकोजी – पु. – आदरार्थ, काका या चाचा के लिये सम्बोधन।

काँख – स्त्री. – कुक्षि, बगल, बाहु मूल ।

काग – पु. – कौआ।

कागच – पु. – कागज, पत्र।

कागद – पु. – कागज, चिट्ठी।

काकब – गन्ने के रस का विकार, एक रूप।

काँगरे – पु. – कंगूरे, सिरे।

काँगरा – पु.ब.व. – कंगूरे, सिरे।

कागलो – कौआ, काग। (आज संजा बाई घर को नोतो रे कागला। मा. लो. 127)

कागजी नींबू – पु. – महीन पतली झिल्ली वाला रसीला व छोटा नींबू।

काँग्श्यो – पु. – कंघा, बाल सँवारने की कंघी ।

काँगाँ – क्रि. – कहेंगे।

काच – स्त्री.– आरसी, दर्पण, शीशा, कुरते-कोट आदि के बटन के लिये घर बनाने की क्रिया, काच करना।

काच करना – साफ करना, हाथ साफ करना, पैसे उड़ा देना, जेब से किसी वस्तु का किसी के द्वारा गायब कर देना, जान से मार डालना।

काचड़ो – स्त्री.– घाघरे-लूगड़े या लहँगा-साड़ी को संयुक्त रूप से कमर में खोंसने की क्रिया या ढंग।

काचबा – पु. सं.– ठण्डा पानी रखने का चमड़े का बना पात्र।

काचबो – पु. – कछुआ।

काचरी – स्त्री. – बरसाती, डोचरी।

काचरो – पु. – फूटफल, डोचरा।

काचा – कच्चा, बिना पका, अपक्व, जिसे तैयार करने में कसर हो, कच्ची मिट्ट का बना, काचर, अशक्त, कमजोर, जो आँच पर पका न हो। काचा सूतर रा पालणा बाँद्या। मा.लो. 332)

काँचली, काँचळी – स्त्री. – कंचुकी, चोली।

काछड़ो – स्त्री. – कच्छ, धोती का वह भाग जो कमर के पिछले भाग में खोंसा जाता है।

काछबो – पु. – कछुआ, कच्छप।

काछी – एक जाति। (काछी रो घर म्हारा राईवर दूर बसेगा। मा.लो. 703)

काछोट्यो – वि. – साड़ी व लहँगे को सम्मिलित कर कमर में खोसना।

काज – क्रि. – काम, कारण।

काजबो – न. – कछुआ, धीरे–धीरे काम होना, धीमी गति का कार्य, कछुआ चाल।

काजर – वि.– काजल, कज्जल, अंजन।

काजल – वि. स्त्री. – काजल, अंजन।

काजल सारणो – काजल लगाकर, आँखों में काजल लगाना या आँजना। (कीड़ी चाली सासरे जी नो मण काजल सार। मा.लो. 542)

काजली – क्रि.स्त्री. – कालिख, बाती का गुल।

काँजी होद – पु.– सरकारी पशुघर जिसमें आवारा पशु बन्द करके रखे जाते हैं, खिड़क।

काजू – पु. – काजू का पेड़ या फल।

काझी – स्त्री. – कंजी, काँजी।

काट – क्रि. – काटना, काट करना, नकारना।

काटणो – क्रि. – काटना।

काँटा तोल – वि.– बराबर तौलना।

काँटली – अनाज के दाने में रह जाने वाले डंठल।

काँटारी, काँटाली – स्त्री. – कंटक या काँटेवाली झाड़ी, (कन्टारी-कन्टाली) एक वनौषधि।

काटा-काटी – स्त्री.वि. – कटाकटी, एक-दूसरे की बात।

काँटावारा – पु. – काँटा वाला।

काँटी – स्त्री. – तराजू, छोटी तुला।

काँटो – पु. – तराजू, तोलने का काँटा, वि. – कंटक, बिच्छू का डंक, नाक का गहना, बाधा। (काँटो हेड़ई कई दे पणिहारण। मा. लो. 567)

'का'

काँटो-बाट – पु. – तराजू-बाट।

काठ – स्त्री.सं.– सूखी लकड़ी।

काठ को घोड़ो – पु. – लकड़ी का घोड़ा।

काठा – वि.– कठोर, कड़ा, तगड़ा, मजबूत, कठिन, गाढ़ा।

काठी – स्त्री. – घोड़े या ऊँट आदि पशु की पीठ पर सवारी के बैठने की लकड़ी या वस्त्र की जीन। वि. – कठोर।

काठो – वि.पु. – कठोर, तगड़ा, कठिन, जिसका छिलका मोटा और कड़ा हो, कंजूस, मजबूत।

काड़ – सु.पु. – शिश्न, लिंग।

काड़्यो – क्रि. – निकाला, बाहर किया।

काड़ी – स्त्री. – तिनका, सलाई, अंजन शलाका, तिली, क्रि. – निकाली।

काँडी – स्त्री.वि. – सर्प विष उतारने के मंत्र, काँडी की वेल (मंत्रों का सिलसिला) वि. – जादुई छड़ी।

काड़ो – वि.पु. – अस्वस्थ व्यक्ति को दिया जाने वाला उबाला तरल पदार्थ, क्रि. – बाहर निकालो, दूर करो।

काड़णो – क्रि. – शुद्ध करना, बेलबूँटी निकालना या बनाना।

काड़ो – पु. – क्वाथ, काढ़ा।

काण-कायदो – क्रि.वि. – कायदा-कानून, मर्यादा रखना।

काणा – वि. – छिद्र, एकाक्षी, एक आँखवाला।

काणो – पु. – एक आँख वाला, एक नेत्र वाला।

कात – क्रि. – कताई, लकड़ी।

कातरो घोड़ो – पु. – लकड़ी का बना घोड़ा, खिलौना।

कात-कर्‌यावर – क्रि. – कामकाज, उत्तर संस्कार।

कातणो – क्रि. – कताई, चरखा, तकली आदि पर रुई या ऊन बँटकर धागे बनाने की क्रिया। (वा गड़ पर कातन जाय र म्हारा लाल। मा. लो. 571)

कातर – स्त्री. – कैंची, कतरनी।

कातरक मास – पु. स. – कार्तिक का महीना।

कातरणो – क्रि. – कतरना, काटना।

कातरी – स्त्री. – कतरनी, कैंची, क्रि. – कात रही, कताई।

कातल – पु. क्रि. – वधिक।

काती – अव्य. – किसलिये, क्यों ? क्रि. – कात लिया, स्त्री. – कार्तिक मास।

काथो – पु. – कत्था।

काँदरनो – पु. – परेशान होना।

कादो – वि. – कीचड़, कीच, पानी में गन्दगी का होना, गंदा पानी।

काँदो – प्याज, काँदा।

काँधा – पु. – काँधा, कंधे।

कान – पु. – कर्ण, कान।

कानड़ – पु. – एक कस्बा।

कानड़ा – पु.ब.व. – दोनों कान।

कानग्वाल्यो – पु. – कान गुवालिया।

कानदड़के – पु. – कान लगा कर, ध्यानपूर्वक।

कानटोपी – स्त्री. – कनटोप।

कानापूसी – स्त्री. – कान में धीमे-धीमे बतियाना।

कानामातर – स्त्री. – अक्षरों की मात्राएँ।

कानी कोड़ी – स्त्री. – फूटी या खराब कोड़ी, बहुत थोड़ा या नाममात्र का धन।

कानून-दाँ – वि. – कानून जानने वाला।

कानो – कान्हा, कन्हैया, कृष्ण। (वा मथरा की गुजरी रे तम गोकुल का कान रे। मा.लो. 666)

कापड़ो – पु. – कपड़ा या वस्त्र का टुकड़ा।

काँपणो – क्रि. – कंपित होना, काँपना।

कापी – सं. – कागज की पुस्तिका।

काँपे – अव्य. – कहाँ पर ?

काँपो – सं. – चमड़े या लकड़ी का टुकड़ा, छिलका, जिसे जूतों के तलों में रखा

काफर – वि. – मुसलमानों के अ नुसार उनसे भिन्न धर्म मानने वाला।

काफलो – पु. – यात्रियों का दल या समूह।

काफी – वि. – पर्याप्त, बहुत, यथेष्ट पूरा, सं. – एक पेय, कागजों की बनी पुस्तिका।

काबल्यत – वि. – योग्यता।

काबर – सं. – कबूतर जैसा एक पक्षी।

काबर्‌यो – वि. – चितकबरा।

काँबली – स्त्री. – कँबली।

काबली चणा – पु. – सफेद बड़ा चना।

काबा-करबला – सं. – मुसलमानों का धार्मिक स्थान।

काबिल – वि. – योग्य, लायक।

काबू – पु. – वश, नियंत्रण।

काँ – पु. – कहाँ ?

काम – कार्य, धंधा, व्यापार, व्यवसाय, उपयोग, जरूरत, कामदेव।

काम चलऊ – वि. – जिसमें किसी तरह काम चल सके।

कामचोर – वि. – काम से जी चुराने वाला।

कामटी – स्त्री. – कामचोर, धनुष।

कामड़ी – स्त्री. – पतली लकड़ी, बेंत।

कामणगारी – स्त्री. – विमोहित करने वाली स्त्री, वशीकरण जानने वाली स्त्री, मोहिनी।

कामण – वि. – वशीकरण मंत्र, मंत्र तंत्रादि का प्रयोग। (थे उड़द मूँग सब दललो सुवाग कामण करलो। मा.लो. 241)

कामणगारी – जादूगरनी, वश में करने वाली। (रेण तो इन्दारी बनड़ी कामणगारी, धोका में मत रीजो प्यारा बनड़ा जी। मा.लो. 253)

कामणी – स्त्री. – कामिनी, सुन्दरी।

कामदार – पु. – कर्मचारी, कला बत्तू के बेल बूँटे वाला कपड़ा।

कामदेव – पु. – प्रेम का देवता।

कामधेन – स्त्री. – एक पौराणिक गाय जिससे जो कुछ माँगा जाय वही मिलता है, सुरभि।

कामना – स्त्री. – इच्छा, साध।

कामळ – कम्बल, (हो दाई कामळ ओड़ो नी आप। मा.लो. 35)

कामलो – पु.– कंबल।

कामसास्तर – पु. – कामशास्त्र।

कामाठी – पु.– नौकर, भृत्य।

कायको – अव्य.– किसका। (कायन को तो रंग बनायो। मा.लो. 573)

कायदो – पु.– कायदा, शिष्टाचार, कानून, विधि, नियम।

कायथ – पु.– कायस्थ जाति का व्यक्ति।

कायथा – सं.– उज्जैन जिले का प्रसिद्ध ग्राम।

कायफल – पु.– एक दवाई।

कायम – वि.– स्थिर, टिकाऊ, अटल, दृढ़, मजबूत।

काया – पु.– शरीर, देह।

कायो करनो – परेशान करना, थकाना, तंग करना, उकता जाना।

क्याँ – अव्य. – कहाँ ?

क्यार – स्त्री. – क्यारी ?

कारकुन – पु.फा.– बाबू, लेखापाल।

कारखानो – पु.– किसी वस्तु को बनाने का स्थान।

कार – सीमांकन।

कारण – क्रि. वि. – प्रयोजन, हेतु।

कारणे – अव्य. प्रत्य.– के लिये।

कारट – पु.– मोटे कागज का तख्ता, कार्ड, चिट्ठी।

कार को टूट्यो – वि. – अकाल पीड़ित।

कार पड़ी गयो – क्रि. – अकाल पड़ गया।

कारबार – पु. – कामकाज, व्यापार, व्यापार-व्यवसाय।

कार, काल – वि. – अकाल, दूर करो।

कारस्तानी – वि. – करतूत, षडयन्त्र।

कारा करना – बुराइयाँ करना, चुगली करना। (सासू नणद का कारा करो ई लक्खण खोटा राज। मा.लो. 22)

कारागरी – वि.– शिल्प, हूनर।

कारी – काली, काले रंग की, कालिका देवी, श्यामल। (कोयल करदी कारी। मा.लो. 696)

कारी – न.– फटे हुए वस्त्र या बर्तन में जोड़ पेबंद, थेगला। (काँचरी में कारी लागी। मो.वे.47)

कारीगर – पु. – शिल्पकार, शिल्पी।

कारी रात – वि.स्त्री.– काल रात्रि, काली रात, अन्धकारपूर्ण रात्रि, अमावस्या।

कारू-कमीण – क्रि.वि. – कारीगर या कामगार जो अनाज के बदले कृषक के लिये वर्ष भर काम करते हैं।

कारो – वि. – काला, श्याम।

कारो पीरो – वि. – क्रोधित होना, काला-पीला होना।

कालका-माता – स्त्री. – काली देवी, कालिका देवी, दुर्गा का एक रूप।

काल – पु.– यमराज, मौत।

काल काटणो – मु.– समय बिताना।

कालचो – वि. – काले रंग का।

कालरात – स्त्री. – अन्धेरी और भयावनी रात।

कालजो – पु. – कलेजा।

कालिमा – वि. – कालिख।

काली – स्त्री.– कालिका।

काली तलई – स्त्री. – काले रंग की मिट्टी की थाली जिसमें पानी भरा हो।

काली दे – पु. – वृन्दावन में यमुना नदी का एक कुण्ड जिसमें कालिय नामक सर्प रहा करता था।

काली मरचाँ – स्त्री. – काली मिर्ची।

कालीसिंध – स्त्री. – मालवा की कालीसिन्ध नदी।

काली हाँडी – मिट्टी की काली हंडी—नये भवन के ऊपर टाँगी जाती है। और अर्थी के आगे चलने वाले के हाथ में रहती है। (काली—काली हाँडी ने चारा की कोरी। मा.लो. 704)

काले परसूँ – अव्य. – कलपरसों, अभी–अभी। (काले परसूँ काम पड्यो। मो. वे. 40)

कालो – वि.पु.– काला।

'का'

कालो कलूटो – वि. – बहुत काला।

कालो कट्ट – वि. – बिल्कुल काला।

कालो चोर – वि.पु. – बहुत बड़ा चोर जो पकड़ में न आए।

कालो जीरो – वि. – स्याह जीरा, कालोंजी।

कालो पाणी – अंदमान निकोबार द्वीप समूह जहाँ देश निकाले के कैदी भेजे जाते थे।

कालो बींछू – वि. – काला वृश्चिक।

कालो भमरो – वि. – काला भ्रमर।

कालो भुजंग – वि. – काला सर्प।

कालो लूण – वि. – काला नमक।

काँव–काँव – स्त्री. – कौए का शब्द।

कावड़ – स्त्री. – बाँस के डण्डे के दोनों सिरों पर लटकता वजन। (खाँदा री कावड़ झोला खाय। मा.लो. 630)

कावड़्या – पु. – कावड़ उठाने वाले, गंगाजी के पण्डे।

कावड़्यो – पु. – कावड़ रखने एवं ले जाने वाला व्यक्ति।

कावो देणो – पु. – चक्कर देना।

कास – स्त्री. – खाँसी, काँस नामक घास।

काँसट – बैल के गले की घण्टी। (काँसट बाजे ने घुघरा रुणझुण जी। मा. लो. 292)

काँसडो – पु.– एक प्रकार की घास जिसकी जड़ें जमीन में बहुत गहरे तक होती हैं।

काँस का बासन – स्त्री.– काँसी या कांसे के बर्तन।

कासम – वि.– शपथ, कसम, सौगन्ध।

काँसा – भोजन।

काँ – अव्य.– कहाँ से।

काँसो – सं. – भोजन की थाली।

काश्त – स्त्री. – कृषि, खेती।

काश्तकार – पु. – कृषक, खेती करने वाला।

कासी – स्त्री. – काशी।

किंका-किंका – सर्व. – किसके–किसके?

कितराँ – सर्व. – किस तरह?

कितरूँ – सर्व.– किस तरह?

'कि'

किताब – पु. – पुस्तक।

कित्तो – अव्य.– सर्व. कितना।

कित्तेक – अव्य.– कितने।

कितरोई – क्रि. वि.– कितने ही।

कितरी बार – क्रि.वि.– कितनी बार।

कित्तोई – अव्य.– कितना ही, चाहे जितना।

किनने, किन्ने – पु. – किसने?

किनारी – जरी का गोटा किनारी, कलाबत्तू, कारचोबी, कपड़े में सुनहरे तारों के बेल बूँटे। (उदा उदा सालू ने जरद किनारी। मा.लो. 577)

किनारो – स्त्री. – किनारा।

किफायती – वि. – किफायत वाली।

किमड़ी – बाँस की चीपट, किसी पौधे की डंडी, बारामासी की डंडी। (हरिया तो बासाँ की नारायण किमड़ी मंगावा। मा.लो. 674)

किमाड़ (कमाड़) – फाटक, दरवाजा, कपाट, द्वार। (ऊँची ऊँची मेडी ने लाल किमाड़ी। मा.लो. 577)

किम्मत – स्त्री. – मूल्य, कीमत।

किरकोल – वि. – फुटकर।

किरन – स्त्री.– किरण, सूर्य या चन्द्रमा की किरण।

किरणा – स्त्री. ब.व. – किरणें।

किरपा – स्त्री.– कृपा।

किर मिंजी – वि.– मटमैला लाल रंग।

किरसाण – पु. – किसान, कृषक।

किराणा – पु.– पंसारी की दुकान।

किल्लेदार – पु.– किले का प्रधान।

किल्ला बंदी – स्त्री.– मोर्चा बंदी।

किल्लत – स्त्री.– कमी, तंगी, कठिनाई।

किलाल – पु.– कलाल जाति का व्यक्ति।

किल्लाकोट – स्त्री.– किले की दीवार। मालवा में संजा के लिए बनाया जाने वाला किल्ला कोट।

किलोल – स्त्री.–अठखेलियाँ, क्रीड़ा करता हुआ।

किसन – पु.–श्रीकृष्ण।

किसणी – स्त्री. – कद्दू कस, लोहे की दाँतेदार किसनी।

किसान – पु.–कृषक खेती करने वाला खेतीहर, कर्षण।

किस्त – स्त्री. – कई बार करके ऋण चुकाने का ढंग, टुकड़े।

किस्तर – क्रि.वि. – कैसे, किस प्रकार, किस तरह, किस विधि से।
(उठाय भी किस्तर ? मो.वे. 50)

किस्मत – स्त्री.–भाग्य।

किस्सो – पु. – कहानी, वार्ता।

की

की – क्रि. – कही, कहा।

कींका – किस पर।

कीको – बच्चा, मालवी में बच्चे को कूका भी कहते हैं, किसका।
(जो रे कीका थने कड़ा खंगाली चावे। ईमें कीको दोस। मा.लो. 33, मो. 33)

कींकोड़ा – सब्जी बनाने के काम में आने वाला, बरसाती लता का एक फल। (करेला का काँकण की कोड़ा की नोगरी मूला की लम्बी चोंटी लायो म्हाराज। मा.लो. 440)

कीच – कीचड़।
(हो राजा आँगण मचियो कीच।)

कीचड़ – वि.– कीच, गंदगी।

कीजे – क्रि.– करजे।

कीजो – क्रि.– कहना।

कीट – सड़ना, लोहे में जंग लगना, मैल, लोहे का कीड़ा, कीड़ा।

कीड़ो – पु. – कीट।

कीड़ी – स्त्री. – चींटी। (कीड़ी चाली सासरे नो मण काजल सार। मा.लो. 542)

कीणो – पु. – भिक्षान्न।

कीमत – वि. – मूल्य।

कीर – पु.– तोता, कीर जाति, मछली पकड़ने और बेचने का धन्धा करने वाली कहार जाति।

कीरतन – पु.– गुणों या यश का वर्णन, भजन।

कीलो (खीलो) – पु. – खूँटा, खूँटी, लोहे का बड़ा कीला।

कीसमत – स्त्री. – भाग्य, भाग।

कु

कु – अव्यय, उपसर्ग–बुरा।

कुँआ – पु. – कूप, कुँआ, बावड़ी।

कुँआरी – स्त्री. – अविवाहिता।

कुई – छोटा कुँआ, कूप, कुड़ी।
(में काय कुई पर भूली म्हारा प्यारा नणदोईसा। मा.लो. 515)

कुकड़ो – मुर्गा।

कुकड़ी – सूत की लच्छी आँटी।
(कुकड़ो अठे बोलियो कुं कुं कुं। मा.लो. 495)

कुंकू – कुंकुम, कंकू।

कुचमात – वि. – छेड़छाड़, धूर्तता।

कुचर – खुजली।

कुचरणी – छेड़छाड़, किसी को तंग करना, चर्चा में निंदा, परेशान करना, खुजली चलना, खुरापात। (म्हारा घर में चार कतरनी दो ठोके दो करे कुचरनी। मा.लो.445)

कुचराँदो – वि.– बिना कारण छेड़छाड़ करने वाला।

कुचलणो – क्रि. – कुचलना, रोंदना।

कुचालिया – वि. – घर का सुनसान कोना या वातावरण।

कुँचा, कुँची – स्त्री. – मोरछल, चँवर नामक घास से बनी हुई झाड़ू, कूँची।

कुँचा कोल्यो – वि. – मालवी गाली, मृतक को अन्तिम संस्कार के समय घास–पिंडी लगाकर दिया जाने वाला कूँचा।

कुँचा बोणो – वि. – कूँचा को बोने का कार्य करने वाला। कूँचा फेरने वाला, एक मालवी गाली।

कुंजगली – स्त्री.– बगीचों में लताओं से छाई हुई पगडण्डी, छोटे-छोटे मार्ग।

कुंजड़ो – पु.– तरकारी बोने और बेचने वाली एक जाति।

कुजात – वि. – बुरी जाति, एक मालवी गाली।

कुटम – परिवार, खानदान, कुटुम्ब, परिवार, सारे परिवार के लोग। (म्हारे तो घरे प्रभु कुटम कबीला। मा.लो. 606)

कुट्टा – पु.– खरल बत्ते में किसी वस्तु को कूटकर बारीक या महीन किया गया चूर्ण जैसे तिल कुट्टा, मोमफली का कुट्टा आदि, कटी हुई वस्तु।

कुट्टी – स्त्री. – घास–फूस से बनी झोपड़ी या कुटिया, बच्चों द्वारा दाँत से हाथ की ऊँगली छूकर आपस में मनमुटाव करने की रीति, बारीक की गयी कड़ब।

कुटणो – क्रि.– कुटना, कुचलना।

कुटी – स्त्री. – कुटिया, मड़ैया, झोपड़ी, टापरी, टप्पर।

कुटीर – स्त्री. – छोटा-सा कक्ष या कुटिया, साधु-सन्तों की कुटीर।

कुटम – स्त्री. – कुटुम्ब, परिवार।

कुड़कणो – मन में कुड़ना।

कुड़छी – स्त्री. – करछुल, दाल-सब्जी देने का पात्र, कुर्सी।

कुंड – पु. – बनाया हुआ गड्ढा, हवन कुण्ड, छोटा जलाशय।

कुड़तो – पु.– कुरता।

कुंडल – पु. – कुंडल

कुंडलनी – स्त्री.– हठयोग में मूलाधार में सुषुम्ना नाड़ी के नीचे।

कुंडल्याँ – स्त्री. ब. व.– कृषि यन्त्रों के उपयोगी लोहे के बने कुंडल, कान में पहनने का एक आभूषण, कनफटे साधुओं द्वारा कान में धारण किये जाने वाले कुंडल, सूर्य या चन्द्र वलय, साँप की कुंडली।

कुंडा – पु. – गमला, पशुओं को दाना दिया जाने वाला पात्र।

कुंडाल्यो करनो – संकुचित बनाना, घेरना।

कुंडी – स्त्री. – छोटी कुंइया या कूप।

कुण्डीरो – मिट्टी का सकरे मुँह वाला बड़ा बर्तन, साँकुल या अर्गला। (कुण्डी रो धोवण धावण ईना हीरालाल जी ने पाव। मा.लो. 597)

कुंडो – पु.– मिट्टी का चौड़े मुँह का बड़ा बरतन।

कुड़णो – क्रि. – कुड़कुड़ाना, जलना, डालना।

कुडा – वि.– झूठा, कपटी, कुँआ , ईर्ष्या की।

कुण – अव्य. सर्व. – कौन।

कुतरो – पु.ए.व.– कुत्ता।

कुदणो – क्रि. – कूदना, फुदकना, उछल-कूद।

कुदरती – प्राकृतिक।

कुँदवई वेणो – रुक जाना।

कुन – कौन?

कुनकुनो – गुनगुना, हल्का ठण्डा, मंद– मंद गरम, हल्का गरम।

कुनबा – कुटुम्बी।

कुप्पो – सं.– बड़ी शीशी, डिब्बा। (फूसी ने कुप्पो वेणो।)

कुबजा – कंस की एक दासी का नाम। (हमको जोग भोग कुबजा को। मा.लो. 696)

कुब्बड़ – वि. – कूबड़।

कुबड़ा – वि. – कुबड़ा, टेड़ी कमर वाला, बाँस की लकड़ी जिसकी मूठ टेढ़ी होती है।

कुबड़ी – क्रि. – दण्ड।

कुब्बत – स्त्री.– ताकत, बल।

कुंभ/ कुँब – पु.– मिट्टी का बड़ा मटका, ज्योतिष के अनुसार एक राशि, एक पर्व जो बारह वर्षों में आता है।

कुमक – पु. – सेना की टुकड़ी।

कुमलाय – कुम्हलाना, मुरझाना। थें तो फुलड़ा जुँ रया कुमलाय।

कुमार – पु.स्त्री. – पाँच वर्ष की अवस्था का बालक, पुत्र या बेटा, कुम्हार, कुम्भकार। (खेल वो महाकाली माँय कुमार्या रा मड़ माय। मा. लो. 663)

कुमारण – स्त्री. – कुम्हार की स्त्री।

कुमारग – वि.– बुरा मार्ग।

कुमलाणो – मुरझाना।

कुया – पु. – कूप, कुँआ।

कुयोग – वि. – बुरा समय, बुरी दशा, बुरे ग्रहों की छाया, बुरी साइत, कुसमय, बुरी घड़ी।

कुरकुर – सम्बो. अव्य. – कुत्ते के बच्चे को बुलाने की ध्वनि।

कुरकी – स्त्री.– कुतिया, शासन द्वारा कब्जा करना।

कुरकुच्यो – पु. – कुत्ते का बहुत छोटा बच्चा, पिल्ला।

कुरड़ई – स्त्री. – गेहूँ या चावल को भिगो, पीस एवं मसाले मिलाकर सुखाने के बाद तलकर बनाया हुआ पदार्थ।

कुरछी – स्त्री. – कुर्सी , लकड़ी या लोहे का बना ऊँचा आसन, बैठक, करछुल, चमचा।

कुरतो – कुर्त्ता, कमीज।

कुरबानी – स्त्री. – बलिदान, बलि।

कुरमी – पु. – मालवा की कुल्मी या पाटीदार नामक खेतीहर जाति।

कुरमुरो – पु. – कुरमुरा, परमल।

कुराड़ा – कुल्हाड़ा, लकड़ी काटने का औजार।

कुराड़ी – स्त्री. – छोटे फल या धारदार औजार जिसे पतली लकड़ी आदि काटने का काम लिया जाता है।

कुरावण – वर्षा पूर्व की आर्द्र हवा।

कुरूप – वि.– विरूप, भद्दा, विकृत।

कुल्पा – पु.– फसल की दो कतारों के मध्य जिसमें कुल्पा नामक यन्त्र चलाकर खरपतवार नष्ट किया जाता है, डोरा।

कुलतारण – वि. – कुल को तारने या उद्धार करने वाला, सुपुत्र, लड़का।

कुलिंजन – पु. – एक पक्षी, पान की जड़।

कुल्हो – पु. – कूल्हा, चूतड़।

कुल – अव्य. – समस्त, सब, कुल गौत्र, कुटुम्ब। (कुँवर दीजो कुल मायजी। मा.लो. 683)

कुलड़ी – स्त्री. – मिट्टी का पात्र, कुल्हड़। (कोरी–कोरी कुलड़ी में काचो दई जमायो राज। मा.लो. 126)

कुल्ला – पु. – कुल्ले या मुख शुद्धि करने का भाव, गरारा। (केसर का कुल्ला करे। मा.लो. 592)

कुलबुलाणो – क्रि. – घबराना।

कुल लजावणो – कुल को लज्जित करने वाला, कुपुत्र, कुल की मर्यादा भंग करने वाला। (बिरज कुल हाय लजावे री। मा.लो. 678)

कुलवऊ – पुत्रवधू, कुल की बहू। (काँकी कुलवऊ का पूत। मा.लो. 626)

कुलाड़ी – स्त्री.– छोटे फाल वाली लोहे की कुल्हाड़ी।

कुलाड़ो – लकड़ी काटने का बड़े फाल वाला बढ़ई का औजार।

कुली – स्त्री. – बक्खर, कृषियन्त्र, बोझा ढोने वाला मजदूर।

कुलवंत – वि. – कुलीन, ऊँचे कुल का।

कुलाचार – पु. – वह आचार या रीति जो किसी वंश या कुल में परम्परा से होता आया हो।

कुवला, कुवलो – पु.– कुँआ, कूप।

कुवा – पु. – कूप, कुँआ , रोटी का कोर या ग्रास।

'कु'

कुवान – पु. – कूप, कुँआ।

कुँवर – पु. – दामाद, राजपूतों के लड़कों के लिये सम्बोधन, राजपुत्र, कुलपुत्र।

कुँवरी – स्त्री.– राजपूतों में लड़की (अनब्याही) के लिये सम्बोधन।

कुवलो – कुँआ, पक्का बना हुआ कूप। (माता एक ज रात कुवला सुती। मा.लो. 603)

कुवा – अव्य.– ग्रास, कौर।

कुँवार – पु. – आश्विन मास।

कुँवारो – पु. – अविवाहित।

कुँवारी – अविवाहित लड़की।

कुँवारा-कुँवारी – सं. – श्राद्ध पक्ष की कुँवारा पंचमी।

कुँवासी – विवाह के अवसर पर कुँवासी या बहन बेटियों को लाया जाता है। तिलक, आरती, चौकपाट बहन– बेटियाँ ही करती हैं। बधाने का कार्य, गाना, बजाना, नाचना कूदना। (करो म्हारी कुँवासी आरती जी। मा.लो. 207)

कुस्ती – स्त्री. – कुश्ती।

कुसल–मंगल – वि.– कुशलता, कुशलक्षेम, आनन्द-मंगल।

कुसम्यो – वि. – बुरा समय।

कुसाल – वि. – खराब वर्ष।

कू

कूका – पु.– लड़के के लिए सम्बोधन, जोरे कूका थने। (मा.लो.)

कूकी – स्त्री.– लड़की के लिए सम्बोधन।

कूकड़ा – पु.– मुर्गा।

कुकड़ी – स्त्री. – मुर्गी।

कूँक – कोंख।

कूँखे पुत्र – पुत्र कोंख में है, गर्भवती। (कुँखे पुत्र सरीरंग लागो।मा.लो. 5)

कूचकरणो – क्रि. – प्रस्थान करना, चले जाना।

कूचलणो – क्रि.– रौंदना, कुचलना, दबाना। (पाँव कुचाणो। मो.वे. 52)

'कू'

कूँची – स्त्री. – घास की बनी छोटी झाड़ू जिससे दीवारों पर पोता जाता है। रंग भरने की कलम, चाबी, कुंजी, दिवाल पर पोतने का मूंज का बना झाड़ू। (तालो दई कूँची क्यों नी लाया प्यारा बनड़ा। मा.लो.280)

कूँचो – पु. – घास या सनई के पौधों द्वारा चिता में अग्नि देने की क्रिया या भाव, हरी घास का छत्ता।

कूँजड़ो – साग सब्जी और फल बेचने वाला, झगड़ालू। (व्यईजी वाली ने कुँजड़ो बुलायो। मा.लो. 440)

कूड़ दे – उडेलना, डालना।

कूड़ा – निवाण, पु. – कूप।

कूड़ी – स्त्री. – कुंइया, छोटा कूप, वि. – व्यर्थ की, झूठी, बेकार, क्रि.– उँडेली, गिरा दी।

कूड़ी नाव – स्त्री. – फूटी नाव, फूटे पेंदे की नाव।

कूड़ो करकट – वि. – कचरा कूटा, बेकाम की वस्तुएँ, फालतू चीजें।

कूड़ो – क्रि.वि.– कचरा, व्यर्थ।

कूण – अव्य. सर्व. – कौन ?

कूतरो – पु.ए.व. – कुत्ता, श्वान।

कूदनो – क्रि. स्त्री. – कूदना।

कूपो – पु. – रेल का डिब्बा, तेल का डिब्बा या कनस्तर।

कूबड़ा – वि. – टेढ़े हत्ते वाली बेंत या लकड़ी जिसे अशक्त लोग हाथ में रखकर उसके सहारे चलते हैं।

कूबड़ी – स्त्री. – कुब्जा, झुकी कमर की स्त्री, हाथ की छड़ी।

कूमचो – पु. – इमली के बीज, चइयाँ।

कूँतणो – अंदाजी कीमत तय करना।

कें – कहाँ, किसे, कह।

केकई – स्त्री. – कैकेयी, दशरथ, पत्नी और भरत की माता।

केंकड़ो – पु. – पानी में रहने वाला एक छोटा जन्तु जिसके आठ पैर और दो पंजे होते हैं।

केक – अव्य. – कई, अनेक, बहुत।

केकी – मोर, जिसकी वाणी केका कहलाती है। (मोर मण्डपडे छाई गयो केकी गावे रे गीत। मा.लो. 317)

केगा – कहेंगे, कहकर, कहना, कह देना। (गुरु लो केगा के म्हारा चेला घरबारी। मा.लो. 649)

केंच – स्त्री. – केंच की फली, एक प्रकार की लता जिसके फलों पर रोएँ होते हैं जो शरीर पर लग जाने से खुजली हो जाती है, केंवच की फली।

केंचवो – पु. – गिंडोला, केंचुआ।

केंची – स्त्री. – कतरनी, कैंची, कपड़ा काटने का औजार, मिट्टी उत्खनन करने वाला गेंती नामक औजार, पुल आदि के निर्माण के लिए लोहे का बना केंचीनुमा जाल।

केटली – स्त्री.– चाय की केतली, एक बर्तन जिसमें चाय आदि बनाकर रखी जाती है।

केडो – पु.– ठप्पा, शान–शौकत, गाय का बछड़ा।

केड़ी – स्त्री.– गाय की बछिया।

केड़ो – गाय का बछड़ा।

केणो – क्रि. – कहना।

केतर – अव्य. – किस तरह।

केताँ केताँ – क्रि. – कहते–कहते।

केतान – वि. – कई, अनेक, बहुत, कितना ही।

केता थका – क्रि. पु. – कहते हुए।

केतो – अव्य. – या तो, क्रि. – कहता हुआ।

केतु – पु. – ध्वजा–पताका, नौ ग्रहों में से एक ग्रह।

केथ – कबीट।

केद – पु. – कैद करना, कैदखाना।

केदखाना – पु.– बन्दी गृह, जेलखाना, कारागार।

केदे – पु.क्रि. – कह दे।

केदो – क्रि. – कह दो।

केनावत – न. – कहावत, किम्वदंती। (केनावत जूनी है। मो.वे. 37)

केने – कहने।

केनो – क्रि. कहना।

कें – कहाँ।

केंपे – अव्य.– किस पर।

केबा – क्रि.– कहने।

केबा की बात – क्रि. – कहने की बात (जो करने की न हो)

केमण – क्रि.वि.– कितना मन पुराने 40 सेर का एक मन)

केर का पानड़ा – स्त्री.– केले के पत्ते।

केरा का पत्ता – स्त्री. – केले के पत्ते।

केरी – स्त्री.– आम की हरी कच्ची केरी, क्रि. – कह रही, सम्बन्ध कारक।

केल – स्त्री. – कदली वृक्ष।

केला – पु. – केले का फल।

केळयो – शरीर। (केल्या कु तेरे सालु सोवे। मा.लो. 578)

केलवे – क्रि.– परवरिश करे, बड़ा करे।

केलू – कवेलू, खपरेल, नालीदार कवेलू, अंग्रेजी कवेलू।

केल्ड़ो – पु. – गाय का बछड़ा।

केवईऱ्यो – क्रि. – कहलवा रहा।

केवड़ो – न. – केवड़ा, केतकी।

केवे – क्रि.– कहता है।

केवड़ो – स्त्री.– केसूड़ी, किंशुक पुष्प, पलाश, पुष्प, खाँकरे का फूल।

केवणो – क्रि.– कहना।

केवाणी – क्रि. स्त्री.– कहलाई।

केस – पु. – केश, बाल।

केसर – पु.– केशर।

केसवजी – पु. – श्रीकृष्ण।

केस वाँछ्या – क्रि. – बाल सँवारे, बाल काढ़े, कंघी की, बाल ओंछे।

केसर वाट – वि. – केसर जैसी।

केसरिया – प्रियतम, पति, प्रियवर, स्वामी, मालवी लोकगीतों में पति के लिये सम्बोधन।

केसूड़ी – स्त्री.– पलाश या किंशुक पुष्प।

केसऱ्यो मृग – पु. – कस्तूरी प्रदान करने वाला मृग।

केसी – अव्य.– कैसी।

केताँ – क्रि.वि.– कहते हुए।

केने वाली – स्त्री.– कहने वाली।

को

को – क्रि. – कहो।

कोइनी – क्रि.वि. – कोई नहीं, कुछ नहीं, अनिश्चित।

को-नी – क्रि. – कहोना, कोईनहीं, कुहनी।

कोई – अनिश्चित, अनेक में से कोई भी नहीं, एक भी नहीं। (अब भी नी पीवे हे कोई। मो.वे.84)

कोई तिरे को – क्रि.वि.– किसी प्रकार का, किसी तरह का।

कोंख – स्त्री.– कुक्षि, बगल, गोदी।

कोंच – स्त्री.– एक बेल जिसकी फलियाँ शाक बनाने के काम आती हैं। इसकी फलियों को शरीर में रगड़ दिया जाये तो खुजली चलने लगती है, केवाँच।

कोज वेणो – वि. – बिगड़ना, बीमार होना।

कोजागरी – सु. स्त्री.– क्वाँर की शरद पूर्णिमा।

कोजात – वि.– बुरी जाति, बुरा समाज।

कोट – पु.– ठण्ड में पहना जाने वाला एक पहनावा जो दोहरे एवं मोटे वस्त्र का बनाया जाता है। दुर्ग, गढ़, किला, साँझी का किल्लाकोट, प्राचीर। (निरमल कोट का तम। मा.लो. 270)

कोटड़ी – स्त्री.– कोठरी, छोटा कच्चा घर, राजस्थान का एक गाँव।

केसर्या – केसरिया कपड़ा, केसरिया भात, पति का सम्बोधन, केसरिया गोटा। (केसर्या में सुरत हमारी ए गेंदा बनी। मा.लो. 225)

कोट चडाचड़ देखणो – परकोटे पर चढ़कर देखना, घर के पीछे बाड़े में छोटी दिवाल पर चढ़कर देखना।

कोटा सेर – राजस्थान का प्रसिद्ध कोटा नामक शहर। (म्हारें कोटा की साड़ी बूँदी को लेंगो लेदोजी बना)

कोठड़ी – स्त्री. – कुटिया, छप्पर, घास-फूस व मिट्टी से बना कच्चा मकान।

कोठा, कोठे – पु.ब.व. – कमरे।

कोठार – पु. – भण्डार, बखारी।

कोठारी – पु.– भण्डारी।

कोठी – स्त्री.– बड़ा और पक्का मकान, हवेली, अनाज रखने की कोठी, बखार, भण्डार, होज, संग्रहालय, मिट्टी की बनी बड़ी कोठी।

कोड़ – वि.– कुष्ठ रोग।

कोड्याँ – कौड़ियाँ।

कोंडवाड़ो – स्त्री. – आवारा पशुओं को बन्द करने का बाड़ा।

कोड़ा – पु.– वह बँटे हुए सूत या चमड़े की डोर, जिससे जानवरों को चलाने के लिए मारते हैं, चाबुक।

कोड़ी – स्त्री.– बीस का समूह, एक पुराना प्रचलित सिक्का, बीस की संख्या, कोढ़ वाला व्यक्ति, बीसी।

कोण – सर्व.– कौन।

कोंतई – स्त्री. – कमी, त्रुटि, तंगी।

कोतक – वि. –कोतूहल, आश्चर्यजनक काम।

कोंतल लोक – पु.– मृत्यु लोक।

कोतल – झूल और रेशम से तथा मखमली

जीन से सजाया हुआ जुलूसी घोड़ा और सोने–चाँदी के गहने।

कोतवाल – पु. – नगर रक्षक।

कोथमीर – धनिया, हरा धनिया। (कोथमीर की काँचली लायो म्हारा राज। मा.लो. 440)

कोथरी – थैली, कमर में खोंसने की पैसे, तम्बाखू सुपारी व अन्य सामान रखने की छोटी थैली।

कोथलो – पु.– झोला, बोरा, भिक्षावृत्ति के लिये सिलवाया गया एक लम्बा-सा सूती थैला जिसके दोनों ओर मुँह होता है।

कोदरा – सं. – कोदों अनाज।

कोदों – पु. – एक प्रसिद्ध मोटा अनाज जो खेतों में अनायास ही ऊग जाता है।

कोनसी – क्रि. वि. – कौन–सी।

कोनी – अव्य.– नहीं, कोहनी।

कोंपलें – वि.– मुलायम तथा नर्म निकली हुई वृक्ष की शाखा, टहनी।

कोमल – वि. – मुलायम, नर्म।

कोमल कला – वि.– नृत्य, गान आदि सुकोमल कलाएँ।

कोमारग – वि. – कुमार्ग, बुरी तरह।

कोमूत – वि.– वर्णसंकर।

कोयल – स्त्री.– कोकिला, बहुत मधुर वाणी का काले रंग का पक्षी।

कोयलो – पु. – पत्थर या लकड़ी का बुझा हुआ काला टुकड़ा जो आग जलाने के काम आता है।

कोयलिया – स्त्री.– कोकिला, कोयल, मालवी स्त्रियों के सुकोमल कण्ठ से निकली हुई आवाज के लिये कोयलिया का उपमान।

कोर – स्त्री. – किनारा, सिरा, कोना, निवाला, कोल। (लाड़ी कोल्या जीमे रे। मा. लो. 205) गोटा, किनारी। (केसरिया कोर लगावो मा.लो. 96)

कोरव – पु.– कुरु वंश की सन्तान।

कोरा – वि.– रिक्त, खाली, सूखा, शुष्क।

कोरी – नई, अछूती, सिर्फ, मात्र, व्यर्थ की, बेमतलब की, थोथी, खाली, फालतू, फिजूल। (तमारी कोरी हो बड़ाई नन्दरामजी मरोड़ घणी। मा.लो. 433)

कोरो – वि. – रिक्त, खाली, जो काम में न लिया गया हो, नया। क्रि.वि. – केवल, सिर्फ।

कोल – वादा करना, इकरार करना, जबान देना, वायदा करना, बिना पकी मूँगफली के भुगने, (फली में वादाज घणा बेठा), निवाले, बोल। (आवण जावण कर गया जी कर गया कोल अनेक। मा.लो. 564, 618)

कोलक्खण – वि.– कुलक्षण, बुरे लक्षण।

कल्लू, कोलू, कोल्हू – बीजों का तेल निकालने या गन्ना पेरने का यन्त्र, चरखी, घाणी।

कोलर – पु.– कवेलू, खपरैल।

कोल्या, कोळ्या – वि. – रोटी के टुकड़े, ग्रास, कौर।

कोळा दफोऱ्या – वि.– दोपहर मध्य, ठीक दोपहर के बारह बजे।

कोस – पु.– दो मील, खजाना, वह ग्रंथ जिसमें शब्द और उनके अर्थ दिये गये हों। (ए माय उड़ जाती कोस पचास। मा.लो. 609)

कोसणो – वि. – बुरा कहना, दोष देना।

क्यारा – क्यारे, खेतों में सिंचाई के लिए छोटे-छोटे क्यारे बनाए जाते हैं। (जऊ ना जवारा ने कंकु का क्यारा। क्यारो पीतो पीतो आवे है । मा.लो. 601)

क्यऊँ – क्यों, किसलिये, क्या है। (आज क्यों भेला हुआ। मो.वे. 78)

क्योंके – क्यों कहता है, इसलिए। (क्योंके म्हने ठंडा पानी से भाटो पिघाल द्यो। मो.वे. 80)

ख – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला का व्यंजन।

खई – खाई, बड़ा, खंदक, किलो के चारों और रक्षार्थ परिसा, नहर। क्रि. – खा लिया।
(लोग चने खई जायगा। मो. वे. 79)

खई पी के – कृ. – खा-पी करके।

खऊ – वि. – अधिक खाने वाला।

खऊड़्यो – वि. – अधिक खाने वाला, जब तब खाने की ही बात करने वाला।

खऊवाँ – क्रि. – खाऊँगा।

खँक , खँख – वि. – निर्धन, दरिद्र, रंक।

खँकार – वि. – कफ।

खँकारनो – क्रि. – गले से शब्द करते हुए थूक या कफ बाहर करना।

खँकेड़ी, खँकेड़ा – पु. – लावा पक्षी।

खँकड्या, खँकेड्या – क्रि. – गिराये, झटके, हिलाये, झटकारे, किसी भी वस्तु को झटकारने या फटकारना।

खँकेड़ा–खँकेड़ी – क्रि.वि. – झटक-पटक कर, गिराकर साफ करना।

खग – पु. – पक्षी, चिड़िया।

खगरास – पु. – वह ग्रहण जिसमें सूर्य या चन्द्र का पूरा बिम्ब ढक जाए।

खँगारनो, खँगार – क्रि. – बर्तन को भीतर हाथ डालकर धोना या साफ करना।

खँगालणो, खँगालनो – क्रि. – बर्तन धोना या साफ करना।

खगाली – स्त्री. – स्त्रियों के गले का एक आभूषण।

खच्चर – पु.– गधी और घोड़े का संकर पशु।

खचाखच – वि. – कसकर भरा हुआ। क्रि.वि.– ठसा-ठस।

खंजर – पु.फा. – कटार, कटारी।

खंजरी – स्त्री.– डफली जैसा वाद्य।

खजानो – क्रि.– खजाना या कोष।

खजाल – वि.– खुजली, खुजलाना।

खजूर – पु.– खजूर का पेड़।

खजूरो – पु.– खजूर का फल।

खज्जी – वि.– काई, सेवार, कंजी।

खजीत – वि.– निश्चित, विश्वास के साथ, अवश्य।

खट, खट्ट – पु.वि.– जल्दी, शीघ्रता, त्वरित, उसी समय, उसी वक्त।

खटकणो – क्रि.– खटकना, सालना, तकलीफ देना, बुरा लगना।

खटखटाणो – क्रि.– खट-खट का शब्द करना, रह-रहकर हल्की पीड़ा होना।

खट कीड़ो – सं.– खटमल, जूँ आदि कीट।

खटको – क्रि.– आहट, खटका, आशंका, भय, डर।

खट-खट – क्रि.वि.– किचकिच, माथा पच्ची।

खटाखट – क्रि.वि.– जल्दी-जल्दी।

खटपट – स्त्री.– सेवा सुश्रुषा, परिश्रम, उद्योग, परिश्रम करने वाला, लड़ाई-झगड़ा, राड़।

खटकरम – क्रि.– अनुचित काम, इधर-उधर के काम।

खटास – वि.– खट्टापन।

खटराग – वि. – षड़राग (काम, क्रोध, मोह, मद, मत्सर, लोभ), झगड़ा, बखेड़ा, झंझट, घर गृहस्थी का उलझन।

खटलो – पु.– घरेलू सामग्री, परिवार।

खटाक – वि. – तुरन्त, जल्दी से।

खटाणो – क्रि.– किसी वस्तु का खट्टा हो जाना, काम में लगाना।

खटाया – वि.– खट्टा हो गया, खटाई में पड़ गया।

खटारो – वि.– टूटी या बिगड़ी हुई वस्तु।

खटावण – धीरज रखना, सहनशीलता, धैर्य रखना, सबुरी, इन्तजार।

खटिक – पु. – पशुवध करने वाला, माँस बेचने वाला, हिन्दू कसाई।

खटीको – आशंका।

खटूमड़ो – खट्टे पत्ते वाला एक पौधा जिसके पत्ते मोटे होते हैं, खट्टे स्वाद वाला।

खट्टो – खट्टापन।

खटोलो – पु.– छोटी खाट, बच्चों की खटिया।

खड़ – क्रि.– चने, मैथी आदि की पत्तियों को तोड़ने की क्रिया या भाव, एक प्रकार की पशुओं के पाँवों की बीमारी।

खड़ऊ – स्त्री.– खड़ाऊ, पाँव में पहनने की लकड़ी की बनी चरण पादुका।

खंडऊँ – क्रि.– खंडवाना, कुटवाना, कूटना।

खंड – पु.– टुकड़ा, भाग, हिस्सा।

खड़ खड़ खाजा – खाजे, मैदे के कड़क मीठे।
(खड़ खड़ खाजा की साद पुरावाँ जी।)

खड़ खड्यो – स्त्री.– पालकी, सवारी।

खड़खड़ाट – क्रि.वि. खटाखट, अत्यन्त अभाव।

खड़्यो – क्रि.– भिक्षावृत्ति का दोमुहा झोला।
(तीरथवासी रो खडीयो अदेवण्यो रे वीर। मा.लो. 641)

खड़चूँ – वि.– पशुओं के पाँव की एक बीमारी जिसमें कीड़े पड़ जाते हैं, खुराड़, खराड़।

खड्डो – पु.– गढ्डा।

खंड – कहीं–कहीं वर्षा का होना, टुकड़ा।

खंडाऊँ – क्रि.– कुटाऊँ, खंडवाऊँ।

खंडार – सं.– खण्डहर, खले में छिलके सहित साफ किये जाने वाले अनाज का ढेर, मात।
(आँबां री डाल दीवो बले काजल पड़े खंडार। मा.लो. 541)

खड़ा – क्रि. – खड़े रहना।

खड़िया / खड्यो – स्त्री.– भिक्षावृत्ति करने का थैला जो कन्धे पर दोनों ओर लटकाया जाता है। एक प्रकार की सफेद मिट्टी, पाण्डु मिट्टी।

खड़ी फसलाँ – स्त्री.– खड़ी फसलें।

खड़ी बोली – स्त्री.– हिन्दी।

खड़ू – पु.– श्याम पट्ट पर लिखने का चाक।

खंडेर – पु.– पुराने मकान के अवशेष।

खड़ा – क्रि.– खड़े रहना।

खंडेराव – पु.– गीत कथा हीड़ के पात्र का नाम।

खड़ो ज्वाप – पु.– साफ इन्कार करना, ठहरा या टिका हुआ, स्थिर, टका सा।

खणकनो – वि. – आवाज करना, बजना।

खण खण – क्षण क्षण, पल पल।
(आसूँ बहना आख्याँ खण खण मधु। मा.लो. 679)

खणानो – क्रि. – खोदना।

खणाँ कटे – क्रि.– नामालूम कहाँ ?

खणाया – खुदवाया, खुदवाना।
(उण्डा–उण्डा कुण्ड खणाया हो म्हारे गेरा गजानन आया। मा. लो. 71)

खतन्नाक – वि.– खतरनाक, खतरे से भरा।

खत्तम – वि.– जिसका अन्त हो गया हो, समाप्त।

खत-लिख्यो – क्रि.– पत्र लिखा।

खतरी – पु.– क्षत्रिय, पंजाब की एक जाति।

खतरो – पु.– डर, भय।

खता – स्त्री.– कसूर, अपराध, धोखा।

खंताँ–खंताँ – क्रि.वि.– खोदते–खोदते।

खतावणी – स्त्री.– खाते में लिखना।

खंती – स्त्री.– एक जाति जो जमीन खोदने का काम करती है, खाई लगना, जमीन का कुछ हिस्सा गहरा करना।

खंदक – स्त्री. – खाई, गहरा गड्ढा।

खदखदाँ – क्रि.– खदबदाना, जोर–जोर से उबलने की आवाज।

खदड़क चाल – क्रि.– चारों पैरों से कूदकर चलने वाले अश्व की चाल।

खदबद – क्रि.वि. – खदबद की आवाज, पानी में उबालने की आवाज।

खद्दड़ – पु. – हाथ से काते हुए सूत का हाथ से बुना हुआ कपड़ा, हथकरघा पर

बना वस्त्र, खादी, साटन आदि मोटा कपड़ा।

खदेड़णो – क्रि. – भगा देना।

खंदो – पु. – कंधा, खंदका, खाई, दो हाथों का बाँह मूल।

खन्न दणेको – क्रि.वि.– खनकती आवा वाला।

खनाँ काँ – क्रि. – नामालूम कहाँ।

खपणो – क्रि. – खपना, समा जाना।

खपच्ची – स्त्री. – बाँस की पतली तिली, कामठी।

खप्पड़, खप्पर – पु.– खपर, जिसके शरीर में देवी-देवता आते हैं व जलते मिट्टी के खप्पर को अपने हाथ में धारण करता है, भिक्षा पात्र, मरे प्राणियों की खोपड़ी से बना एक पात्र।

खपरा – पु. – कवेलू, मकान को ढँकने के उपयोग में आने वाली मिट्टी के खपरेल।

खपसूरत – वि. – खूबसूरत, सुन्दर।

खपानो – क्रि. – काम में लाना या लगाना, नष्ट करना, समाप्त करना, तंग करना।

खपेडा – न. – खपरेल, कवेलू।

खफाँ – वि. – अप्रसन्न, नाराज।

खबर – समाचार, वृत्तांत, खबर, संदेश, सूचना, जानकारी, देखभाल, निगरानी। (खबर सुनी जब सिव संकर ने। मा.लो. 684)

खबरदार – अव्य. – सावधान, चुप।

खबाएँ भी – पु.– खाने को भी, खाने के लिये भी।

खब्बो – स्कंध, कंधा, बाहु, स्कम्भ।

खमणो – सहन करना, बर्दास्त करना, परिणाम भोगना, शान्त रहना, नुक्सान उठाना, पानी में डालना।

खम्ब – खंभे।
(इ तो वणी रया चोंसट खंब चोरासी दीवा बेले। मा.लो. 327)

खम्मण – वि. – क्षमा, अपराध के लिए माफी।

खम्मा – वि. – क्षमा।

खम्मा घाणी – अपनो से बड़े सम्माननीय को किया जाने वाला अभिवादन, प्रणाम, आदर सूचक शब्द।

खमक्यो – वि. – क्रोध में आया, क्रोधित हुआ, गुस्सा किया, आवेश या जोश में आया, नाराज हुआ।

खमीर – पु.अ. – गूँथे हुए आटे या फल आदि का सड़ाव।

खमीरा – वि.अ. – (स्त्री. खमीरी) मैदा में दही व मीठा तेल मिलाकर सड़ाने से खमीर बनता है।

ख्याणी – सं. – कहानी, वार्ता, लोककथा

ख्यानत – स्त्री. अ. – धरोहर या अमानत में से रकम खर्चकर देना या काम में ले लेना।

ख्याल – वि. – मालवी में प्रचलित एक शेरो शायरी या राग-रागिनी, विचार, ध्यान, स्मृति, याद।

खर – पु.सं.स. – गधा, खच्चर।

खरचणो – क्रि.सं. – धन को खर्च करना, खर्चना, उपयोग में लाना।

खरचो – क्रि. – खर्च के लिये।

खरबूजो, खड़बूजो – पु. – ग्रीष्म का एक मधुर फल जो रेत में उपजता है।

खरड़ – पु. – पत्थर की कुंडी जिसमें चीजें कूटी जाती है, खल्ड़।

खरदरो – जो चिकना न हो, उबड़ खाबड़, खुरदुरा।

खरल्ड़ो – पु.– लम्बा पत्र।

खरदऱ्यो – पु.वि. – चंचल, चुलबुला, कुछ न कुछ हमेशा करते रहने वाला।

खर-दीमाग – वि.– गधे जैसा मस्तिष्क, कमजोर मस्तिष्क, मूर्खता से भरा हुआ मस्तिष्क।

खरपी – स्त्री. – निंदाई करने का यन्त्र, खुरपी।

खरबाण – क्रि.– खर्च करना (ओर कराँ पइयो खरबाण)

खऱाटो – वि.– नींद में गले व नाक से जोर की आवाज होना।

खर्रो, खरेरो – सं.पु. – अरहर के डंठलों से बनी झाड़ू, घोड़े के रोएँ साफ करने का दाँतों वाला कंघा।

खराद – स्त्री. – लकड़ी, धातु आदि की सतह चिकनी करने या धार बनाने का औजार।

खराब – बुरा।

खरावड़ो – गरज करवाने वाला।

खरी – खरी बात कहने वाला, स्पष्ट, सत्य, प्रामाणिक, सही।
(आपकी सेवा में खरी बात केवा में । मो.वे. 49)

खरी खोटी – न. – कटुबात, कड़वी किन्तु सच्ची बात।

खरो – वि. – विशुद्ध, सच्चा, ईमानदार, छल रहित, स्पष्ट भाषी, पक्का, सख्त, सही, कड़ा।

खरीद – स्त्री.फा.– मोल लेना, क्रय करना।

खरीददार – पु.फा.– क्रेता, ग्राहक।

खरीदणो – क्रि.– मोल लेना, क्रय करना।

खरीप – स्त्री. – वर्षा ऋतु की फसलें।

खल-खल – क्रि. – कल कल, पानी के बहने की आवाज खाँसने से कफ का गले में से आवाज करते हुए छूटना, खखार।

खली – पु.स्त्री.– तेल निकल जाने के बाद का सूखा खाद्य पदार्थ जो पशुओं तथा मुर्गे-मुर्गियों को खिलाया जाता है।

खलबत्तो – पु.– खरल और बट्टा।

खल्ल – स्त्री.– खरड़, खरल।

खलबली – स्त्री. – शोर, कुलबुलाहट, हलचल, घबराहट।

खलल पाडणो – अड़चन डालना, विघ्न होना, बाधा डालना, हानि, कमी पड़ना।

खलहलणो – खल खल की आवाज होना।
(खलहल खलहल नदी बहे गोरो लाड़ो न्हावा ने बेठो हो राज। मा.लो. 374)

'ख '

खल्लासी – पु. – कर्मचारी, नौकर, चपरासी।

खल्ड़ – वि. – सूखा पड़ना, अनावृष्टि, पत्थर का ऐसा पात्र जिसमें पत्थर के बत्ते से कूटने का काम लिया जाता है, हलचल, घबराहट, व्याकुलता।

खल्ड़ी – स्त्री. – फिसली, फिसलकर, गिर गया।

खलीफो – पु.अ. –अध्यक्ष।

खळो – स्त्री.– खलिहान, खेती की उपज संग्रहीत करने का स्थान।

खवड़ गया – क्रि.– खाने में आ गया, खिला गये।

खवाड़णो – क्रि. – खिलाना, खिलाया, खिला दिया।
(पान बीड़ा खवाया। मो.वे.79)

खवासजी – पु. सं.– नाई, राजाओं और रहीसों का खिदमतगार, नापित।

खस, खश – गढ़वाल प्रदेश, इत्र, एक प्रकार की घास जिससे इत्र बनाया जाता है। एक जाति।

खस- खस – पु. स्त्री. – अफीम के दाने , एक प्रकार की सुगन्धित घास की जड़ या गाँठ जिससे इत्र निकाला जाता है।

खसकणो – क्रि.– धीरे-धीरे, चले जाना, सरकना।

खसकाणा – क्रि.– दूर हटाना, अलग कर देना।

खसबू – वि.– खुशबू, सुगन्ध, गन्ध, बास।

खस्ता – वि. – बहुत थोड़े दबाव से टूट जाने वाली वस्तु, मोहन की वस्तु, पोसरी वस्तु।

खसम – पति, खाविंद, धणी, विंद, स्वामी, बालम।
(थारी माता खसम कर्‌या समझावत लागी वाट वो। मा.लो. 419)

खसरो – पु.अ.– पटवारी का खाता-बही जिसमें भूमि का नम्बर, रकबा, लगान आदि लिखा जाता है, एक बीमारी जिसमें खुजली हो जाती है।

'खा '

खा – क्रि.– खा ले।

खाई – नाला, खाई, खंदक, परिखा।

खाऊड़्यो – वि. – अधिक खाने वाला, पेटू, दूसरे का धन हड़प करने वाला, पेटभरा।

खाक – वि.– राख, भस्म।

खाँक – सं.– कुक्षि, बगल।

खाँक बलई – स्त्री. – बगल में हो जाने वाला एक फोड़ा, गिल्टी।

खाँकरो – पु.– पलाश वृक्ष, किंशुक।

खाख – वि.– राख, भस्मी।

खाँगणो – क्रि.– ठूँस-ठूँस कर भरना।

खाँगो – खाली, रिक्त, टेड़ा, बाँका,वक्र।

खाणो – स्त्री.– भोजन खाना।

खाँच – स्त्री. – संधि, जोड़, खींचकर बनाया चिह्न, निशान, लकड़ी में आई हुई दरार, सधवा नारी की कोहनी का चूड़ा।

खाँचो – पु.– दरार।

खाँचोट्यो – क्रि.वि. – लहंगा और धोती को मिलाकर विशेष प्रकार से कमर में खोसने की क्रिया ।

खाज – वि.– खुजली, चर्म रोग।

खाजरू – पु. – बकरा, अज।

खाजी, काजी – स्त्री. – कज्जी, काई, सेवार, मुस्लिम पण्डित।

खजेल्यो – वि. – खसरे का रोगी।

खाट – स्त्री. – खटिया, रस्सी बुनी हुई चारपाई, माची।
(खाटलो छोड़ रे। मा.लो. 497)

खाटली – स्त्री. – बच्चों के लिये बुनी गई छोटी खटिया, खटोला।

खाटला – स्त्री. – टूटी-फूटी खाट।

खाटो – स्त्री. – कढ़ी, खट्टी राबड़ी।
वि. – खट्टी वस्तु, खटाई।
(बेन भाणेज आवे तो छाछ मिले न खाटी। मा.लो. 700)

खाटो पड़ीग्यो – वि. – बुरा बन गया, मतभेद हो गया, बिगड़ जाना।

खाड़ – क्रि. – निकाल, बाहर कर, दूर भगा।

खाँड – क्रि. – बिना साफ की हुई चीनी, गुड़िया शकर, खाँडना।

खाँडणो – क्रि. – खूटना, किसी वस्तु को या ओखली में रखकर कूटना।

खाँड-खोपरो – पु. – शकर और खोपरा, मालवा में कुँवारी बारात में दूल्हा और दुलहिन को खिलाया जाने वाला खाँड–खोपरा और खाजा।

खाडा – पु. – गड्ढा, जूते, जूतियाँ ।
(तमारा खाड़ा हेड़ी लउँ ने म्हारी नथड़ी पेरई दउँ। मा.लो. 439)

खाँडा धार – तलवार की धार, खड्ग धार।
(गंगा माई रो मारग खाँडा धार। मा. लो. 628)

खाँड़ी – स्त्री. – होलिकोत्सव पर बच्चों केहाथ में दी जाने वाली लकड़ी की तलवार, वि. – जिसके सींग टूट गये हों ऐसी गाय या भैंस, खण्डित हुई।

खाँड़ो – पु. – गड्ढा, हानि।

खाँडो – पु. – तलवार, खड्ग, दुधारी तलवार, लकड़ी की बनी बालकों को दी जानेवाली तलवार या खाँडी।

खाण–पीण – स्त्री. – खाना-पीना।

खाणो – पु. – भोजन।

खातर – क्रि.–सेवा-सत्कार, लिये, वास्ते।

खातर जमा – स्त्री.अव्य. – मन का समाधान, भरोसा, इत्मीनान, तसल्ली।

खाँत – वि.– अभिलाषा, आकांक्षा,तीव्र इच्छा, लगन, जिज्ञासु, रसिक, शौकिन, उत्कंठा, उमंग, इच्छा पूरी करने वाला।
(हेडूँ खांत निकालूँ खूबी। मो.वे. 36)

खातरी – आदर, सत्कार, स्वागत, देखभाल,

भरोसा, खातिरदारी, आव-भगत।

खातरीबंद – वि.– विश्वसनीय, खात्री करने योग्य, प्रामाणिक।

खात्मो – पु.फा. – अन्त, समाप्त।

खातिर – स्त्री.– स्वागत सत्कार, सेवा-सत्कार, अव्य– वास्ते, लिए।

खातिरदारी – वि.फा.– आये हुए का सम्मान, आवभगत।

खाती – स्त्री.– मालवा की एक क्षत्रिय वंशीय जाति।
(बड़जो रे खाती का थारी बेल। मा. लो.452)

खाँतीला – आदर सत्कार, खातिर, स्वागत, देखभाग, ध्यान, खुशी जाहिर करना, मन की खुशी पूरी करना, न्योछावर होना।
(हो म्हारा खाँतीला जमईसा आपने गाळ गावाँ राज। मा.लो.529)

खातेदार – पु.– वह आसामी या खेतिहर जिसके नाम पर कोई जमीन जोतने बोने के लिये हो।

खाँतेती – स्त्री. – जान करके कोई कार्य करना, हो करके, जानबूझ करके।

खातो – पु.– किसी व्यक्ति, कार्य, विभाग आदि के आय-व्यय का लेखा-जोखा पुस्तक में रखना।

खातोबई – स्त्री.– खाता-बही, हिसाब-किताब की पुस्तक।

खातो-पीतो – वि. – सम्पन्न घर का, दूसरी स्त्री से सम्पर्क बनाने वाला, व्याभिचारी, धनी, पैसेवाला।

खाद – स्त्री. – सड़े गले खेत की उपज बढ़ाने के लिए डाला जाने वाला तत्त्व, उर्वरक।

खादो – क्रि.– खा लिया, खा चुके।

खाँदो – पु.– कंधा।

खान – पु. – खदान, खजान, खोदकर मिट्टी निकालना।

खानदानी – वि. – कुलीन, ऊँचा कुल।

खानण, खानन – वि.– गहरी मिट्टी वाली जमीन या खेत।

खाना तलासी – स्त्री. – कोई खोई या चुराई गई वस्तु किसी के घर ढूँढना, जमा तलाशी।

खानो दानो – क्रि.वि.– खाने पीने की सामग्री।

खाँप – वि. – ब्राह्मण आदि जातियों का गोत्रादि विभाग।

खाँपो – राड़े की जड़ का डंठल जो टूटा या कटा हो।

खापलडी – स्त्री. – बूढ़ी को गाली।

खापरो – वि. – बूढ़ा व्यक्ति।

खाँपो – राड़े का डंठल।

खाबलो – पु. – जारज सन्तान।

खाबा – क्रि. – खाने के लिये।

खाबू करे – क्रि. – खाता रहे, जिसे खाने का लालच हो।

खामी – वि. – कमी, त्रुटि।

खायड़ा – पु. ब. व. – जूते, जूतियाँ।

खायाँ का गाल – खाने वालों के गाल नहीं छिपते।

खार – वि. – क्षार, नमकीन वस्तु, वि. – ईर्ष्या, द्वेष, सं. – सज्जी, सनचूरा, लवण, छोटी नदी।

खारक – सं. – छुहारा, एक मेवा।

खारकिस्सो – वि. – ईर्ष्या-द्वेष की बातें।

खार-ग्यो – कृ.– नदी पर गया।

खारड़ा – सं. ब. वं. – देशी जूते।

खारस्यो – पु. – खाद बिखरने का दंतारी यंत्र जो लकड़ी या लोहे का बना दांतेदार होता है।

खारा – वि. – क्षारयुक्त, नमकीन, अधिक खार वाला, ।

खारे ग्यो – क्रि. – खाली, नाले पर शौचादि के लिए जाना।

खारी – स्त्री. – क्षार, नमक।

खारो मोरो चाखो – खारा फीका चखना। (खारो मोरो चाखो राँदो ई लक्खण खोटा रा।)

खारो मूँड़ो – वि. – खारा मुँह।

खारोल – पु. – मिट्टी की दीवाल बनाने वाली जाति।

खाल – स्त्री. – चमड़ा, त्वचा,नाला।

खालड़ी – स्त्री. – शरीर पर लटकता हुआ चमड़ा, सिकुड़न भरी त्वचा।

खाला – स्त्री. – मौसी, माँ की बहिन।

खाली – वि. – छोटा खाल, छोटा नाला, रिक्त स्थान, शून्य, रीता।

खाले – पु. – खाल या नाले पर शौच के लिए जाना।

खाव – क्रि. – खालो।

खाविंद – पति।

खावीग्या – पु. – खा गये।

खास – वि. – महत्त्वपूर्ण, प्रमुख, प्रधान, विशिष्ट।

खाँसणो – अ. क्रि. – खाँसी।

खासा – वि. – बढ़िया, अच्छा।

खि

खिंकोड़ा – पु.सं. – जंगली करेला, करेले की जाति का एक फल।

खिंचड़ गयो – क्रि.– खिंच गया, खिंचवा लिया।

खिचड़ी – स्त्री. – मूँग की दाल और चावल में डालकर पकाई गई खिचड़ी, लाप्सी, खाद्य पदार्थ।

खिचड्यो, खिंचड़ियो – पु. – खीचड़ी बनाने या खाने वाला।

खिजाणो – वि. – चिढ़ाना, खीजना, नाराज होना।

खिजाब – वि. – बालों को काले या लाल बना देने वाली मेहेंदी।

खिजणो – वि. – चिढ़ना।

खिड़क – स्त्री. – खिड़की, झरोका, उजालदान, आवारा मवेशी बन्द करने का सरकारी स्थान।

खिताब – पु. अ. – पदवी, उपाधि।

खिदमत – स्त्री.– सेवा, टहल, चाकरी।

खिदमतगार – पु. – छोटी सेवाएँ करने वाला, सेवक, टहलुआ।

खिनमे – वि. – क्षण में, त्वरित।

खिरग्यो, खिरीगयो – क्रि. – गिर गया, खिर गया, टूट गया।

खिरदार – वि. – तेजवान, तेजस्वी।

खिरनी – स्त्री. सं. –रेणा, एक मधुर फल, रायण।

खिरसाणो – पु.–खिसयाया हुआ, लज्जित हुआ।

खिलई रियो – क्रि. – खिला रहे, भोजन करवा रहे।

खिलक – पु. – शरीर।

खिलका – वि. – आभूषण के लिये हेय शब्द, लकड़ी के टुकड़े।

खिल्ला – सं. स्त्री. – बड़ी कील।

खिलाई – क्रि. – खेल खिलाना, भोजन करवाना, बच्चों को रखना।

खिलाई की हँगाई – मुहा. – खायगा तो ही टट्टी जावेगा, दूसरे को हम कुछ खिलावेंगे तो ही वह हमारे काम आ सकेगा।

खिलाणो – क्रि. – खेल खिलाना, भोजन करवाना, बच्चों को खिलाना।

खिलापत – वि. – विरुद्ध होना, खिलाफ जाना, प्रतिकूल।

खिलाफ – वि. फा. – विरुद्ध, प्रतिकूल, उल्टा।

खिल्ली – वि. – हँसी ठठ्ठा, दिल्लगी, मजाक।

खिलोणो – सं. पु. – खिलौने, बच्चों के खेलने की वस्तु।

खिसकणो – खिसकना, फिसलना। (माथा से खिसलीगी टिंकल की साड़ी। मो.वे. 54)

खिसाणो – वि. – शर्माना, लज्जित होना, संकुचित होना। (खिसाणो पड़ी ने जमराज पाछो भागीयो। मो.वे. 54)

खिस्यो – जेब। (खिस्या में धरी ने लई चालो। मा.लो. 589)

खी – क्रि. – कहीं।

खी के – कृ. – कहा कि।

खी-खी – क्रि.वि. – खी-खी करके, खिलखिला कर हँसना, बन्दर की आवाज।

खीचड़ी – स्त्री. – मूँग-चावल के मिश्रण में पकाई गई लाप्सी या पदार्थ।

खींचणो जाइन्या – क्रि. – खीचना।

खीज, खीझ – वि. – चिड़, चिड़चिड़ाहट

खींपचा – सं. – पतली लकड़ियाँ, बाँस की पतली चिपटें।

खीमड़ी – स्त्री. – बेंत, पतली लकड़ी।

खीर – स्त्री. – दूध में चावल डालकर पकाया गया खाद्य पदार्थ, क्षीर। (खीर सागर पे डेरा–क्षीर सागर पर पड़ाव डालना।

खीरल्हापसी – स्त्री. – क्षीरलप्सी।

खीरो – सं. – ककड़ी, आग का अंगारा।

खील – स्त्री. – कील, मुँहासा।

खील्याँ – स्त्री. ब. व. – कीलें, मुँहासे, गाड़ी के पहिये के सिरे पर लगाई जाने वाली कीलें, चिकल।

खीला, खीलो – स्त्री. – कीली, कीलें, सिटकनी।

खीसो – पु. – जेब।

खु

खुगीर – पु. फा. – वह ऊनी कपड़ा जो घोड़ों के चारजामे के नीचे रखा जाता है, जीन।

खुगालो – स्त्री.– हँसुली, गले का आभूषण।

खुजलानो – क्रि. – खुजली मिटाने के लिये अंग रगड़ना।

खुजली – स्त्री.– खुजलाहट, एक रोग जिसमें बहुत खुजलाता होती है।

खुटकी – स्त्री. – आशंका, खटका।

खुटाणो – क्रि. – समाप्त होना।

खुटीग्यो – खतम हो जाना, घट जाना, कम पड़ जाना, पूरा नहीं होना, समाप्त हो जाना।

खुटीताण – निश्चिंतता से सोना, आराम। (कई तू सूती खूँटी ताण। मा. लो. 570)

खुड़ची – स्त्री. – कुर्सी , घोड़े-बैल आदि पर सामान लादने का थैला, बड़ा चम्मच।

खुण्ड – पु. – कुण्डा, छोटा कूप।

खुण्यो – पु. – कोना, कोण।

खुतरा – पु.ब.व. – कुत्ते।

खुतरो – पु.ए.व. – कुत्ता।

खुद – पु. – स्वयं।

खुदरो – पु. – छुट्टा, फुटकर, वि.– खुदरा।

खुदड़क – क्रि. – घोड़े-घोड़ी की एक चाल जिसमें एक-एक पाँव आगे पीछे रखकर चलता है।

खुदा – पु.फा. – ईश्वर।

खुदाई – क्रि. – खोदे जाने की क्रिया या मजदूरी, ईश्वरत्व।

खुदाव – पु. – खोदने योग्य स्थान, नक्काशी।

खुदी – स्त्री. – स्वयं ही, क्रि.– खुदी हुई भूमि।

खुफिया – वि.फा. – गुप्त, छिपा हुआ।

खुन्नस – शत्रुता, द्वेष, क्रोध, बदला लेने की भावना।

खुमार – पु. – कुम्भकार, प्रजापति, कुम्हार, वि.– वह मदहोश जैसी मनःस्थिति जो मादक द्रव्य पीने के उपरान्त हो जाती है।

खुमारी – स्त्री. वि. – नशे के बाद की स्थिति, मदमाती, स्वाद, रस, लज्जत।

खुर – पु. – सींग वाले चौपायों के पैरों की खुरी।

खुरची – स्त्री. – कुर्सी, बैठक।

खुरपी – स्त्री. – खेतों की खरपतवार उखाड़ने का औजार, घास खोदने का एक औजार।

खुरमा – पु. – एक प्रकार की मिठाई या नमकीन बेसन जो आटे या बेसन को मीठा करके, उसके तिकोने टुकड़े काटकर,

तेल में तलकर बनाई जाती है।

खुर्राँट – वि. – अनुभवी, तजुरबेकार, चालाक।

खुर्री – पु. – पशुओं के शरीर पर फेरने का दाँतेदार कंघा।

खुरी – स्त्री. – पशुओं के पाँव की बीमारी जिसमें प्रायः कीड़े पड़ जाते हैं।

खुराक – स्त्री. – भोजन, खाना, औषधि की निर्देशित मात्रा, पौष्टिक खाद्य पदार्थ।

खुराड़ (खुरड़) – स्त्री. – पशुओं के पैरों की बीमारी जिसमें उनके पाँवों में कीड़े पड़ जाते हैं और इसके कारण वे चलने में असमर्थ हो जाते हैं।

खुरापात, खुराफात – स्त्री. वि. अ. – झगड़ा, बखेड़ा, लड़ाई-झगड़ा।

खुलणो – क्रि. – खुलना, बंधन छूटना, शोभित होना, आरम्भ होना, प्रचलित होना, आवरण हटना।

खुल्लम-खुल्ला – क्रि.वि. – प्रकट रूप में, खुले आम।

खुल्यो – पु. – जेब, खीसा, खुला हुआ भाग, अनावृत।

खुलासा – पु. – स्पष्टीकरण, स्पष्ट। वि. – खुला हुआ, अवरोध रहित, साफ।

खुलो मुंडो – बिना गूँघट के, बिना पर्दे के, पर्दा नहीं करना, घूँघट नहीं निकालना, बेशर्म, बेहया, आवरण हटाना।
(पावणा होन के सामे उबी खुलो मुँडो राखे। मा.लो. 548)

खुश – वि. – प्रसन्न, सन्तुष्ट।

खुश्क – वि. – सूखा, शुष्क, जिसमें रसिकता न हो, रूखा।

खुश्की – स्त्री. फा. – शुष्कता, नीरसता।

खुश्बू – वि. स्त्री. फा. – सुगन्ध।

खुशामद – वि.फा.– खुशामदी, लल्लू-चप्पू करना, चापलूसी करना, हाँजी-हाँजी करना, चाटुकारी, किसी को प्रसन्न करने के लिये झूठी प्रशंसा करना।

खुशाल – वि. – खुशहाल, सुखी, सब प्रकार से सम्पन्न और सुखी।

खुशालचंद – वि. – अललटप्पू, आवारा, छैला।

खुशाली – वि. – कुशल मंगल की स्थिति।

खू

खूँट – पु. – खूँटा, छोर, सिरा, कोना, हिस्सा।

खूट – वि. – चूकता, पूरा, समाप्त।

खूँटो – पु. – पशु या तम्बू की रस्सी आदि बाँधने के लिये गड़ी हुई कीली या खूँटा।

खट्टा-बरदारी – क्रि. वि. – चापलूसी, हाँजी- जी।

खूँटी-ए-पड़ी – क्रि. वि. – खूँटी पर रखी हुई, खूँटी पर टंगी हुई।

खूँटी-ताण – क्रि. वि. – बेफिक्र होकर सोना।

खूँटे बाँधनो – क्रि. – खूँटे से बाँधना, मजबूती से पकड़ना।

खूँटो – सं. पु.– खूँट, लकड़ी का कीला।

खूटो – पु. – समाप्त हुआ, बीत गया, खत्म हो गया।

खून – पु.फा. – रक्त, लहू।

खूब – बहुत, अति, जादा, अधिक।

खूब धुलई करी – क्रि. वि. – खूब धोया, पीटा, खूब मारा।

खूबसूरत – वि. फा. – सुन्दर।

खूबी – स्त्री. फा. – अच्छाई, विशेषता।

खमावे – क्रि. – विसर्जित करे, खमाना।

खूरचणो – पु.– रोटी उलटने का यंत्र, खोंचा।

खूणे खूणे – कोन–कोने में।
(खूणे खूणे कचरो ओटो ई लक्खण खोटा।)

खूसट – पु. – बूढ़ा, उल्लू पक्षी, शुष्क हृदय, अहमक, मूर्ख।

खे

खेंकड़ो – पु. – केकड़ा।

खेके – कृ. – कह करके।

खेंचताण – खींचतान, कम पड़ना, छोटी पड़ना, इधर–उधर से खींचकर ओढ़ना, दुलाई, दुसाला छोटा पड़ना, स्पर्धा।

खेंचणो – क्रि. – खींचना, घसीटना।

खेंचा-खेंची – क्रि.वि.–खींचा-खींची, खींचतान।

खेजड़ी – स्त्री. – एक काँटेदार वृक्ष जिसका फल पुष्टि के लिये पशुओं को खिलाया जाता है।

खेड़ा खरच – बारातियों द्वारा लड़की के यहाँ से लिया जाने वाला खर्च। लड़की के यहाँ से दिया जाने वाला मार्ग व्यय। बस्ती में होने वाला खर्च।

खेड़ापति – पु. – हनुमानजी (का विशेषण) (खेड़े-खेड़े चामन्डा थेपाणी= गाँव-गाँव में चामुण्डा माता स्थापित की गई।)

खेड़ो – पु. – देहात, गाँव, खेट।

खेणी – स्त्री. – कहानी, लोककथा, वार्ता, कही हुई बात, कथनी, कहनी।

खेत – पु. – क्षेत्र, कृषि, भूमि।

खेतर – पु. – श्मशान, क्षेत्र, खेत।

खेतां – क्रि. कहते हुए, भूमि में ।

खेतिहर – पु. – किसान, कृषक, खेती करने वाला।

खेप – किसी वस्तु या सामग्री का बोझा जो एक ही बार में लाया जाय।

खेपो – पु. – राड़े की फाँस, जो खेतों में ऊगी हुई होती है। वि.– उजड्ड मनुष्य।

खेबो – क्रि. – कहना, कथन।

खेम-खूसल – क्रि.वि. – कुशल-क्षेम, कुशल मंगल।

खेणी, ख्याणी – स्त्री. – कहानी, क्या, वार्ता।

खेर – अव्य. – ठीक है, सं. – काँटेदार वृक्ष जिसके सत्त्व से कत्था बनाया जाता है, अव्य– अस्तु, कुछ चिन्ता नहीं, पशु-जल का कुंड।

खेरात – वि. – दान-दक्षिणा, दान की वस्तु।

खेराणो – क्रि. – गिराने का कार्य।

खेल – न. – खेलना, नाटक, तमाशा, रम्मत, हँसी, खेलकूद, करतब।

खेलकणो – सं. – खिलौना।

खेलणो – क्रि. – खेलना, क्रीडा करना।

खेवटणो – निभाना, प्रेम से अपने अनुकूल बनाना।

खेवो – क्रि. – चलाओ, चालू करो, शुरू करो, प्रारम्भ करो।

खेंसो – क्रि. – खींचो।

खो

खो – क्रि. – कहो, खो-खो का खेल।

खोंक – स्त्री. – कोंख, बगल।

खोगाली – गले में पहनने का आभूषण। (हो जी पुणा तेरे को खँगरालो। मा. लो. 151)

खोगीर भरती – वि. – खोगीर, व्यर्थ में कुछ तो भी भरकर लेना, ऐसे व्यक्ति जो किसी काम के नहीं हों।

खोंच – वि. – त्रुटि, कमी।

खोंचो – पु. – करदुल, साग-सब्जी आदि हिलाने या चलाने का यंत्र, सामान बेचने वाला का खोंचा।

खोज – क्रि. – ढूँढना, खोज करना, वि.– नाश, नष्ट होना, समाप्त होना, शोध करना।

खोज खेना – वि. – नाश करना, नष्ट होने का शाप देना।

खोजी – वि. – खोज करने वाला, ढूँढने या शोध करने वाला।

खोट – वि. – ऐब, बुराई।

खोटी – खराब, भली नहीं, बुरे लक्षण वाली, बदचलन, दुर्गुणी, जिसमें खोट हो, कपटी, विश्वासघातिन, दोष, बुराई। (परपुरस ने उबी ताके एसी बइराँ खोटी। मा.लो. 548)

खोटी वेणो – प्रतीक्षा करना, रुके रहना, परेशान होना, अनावश्यक रुकना, देर होना।

खोटो – पु. – खोट वाला, ऐब वाला, बुरा

व्यक्ति, खराब या विकृत वस्तु।

खोड़ – पु. – ऐब, बुराई।

खोड़वाल – पु.वि. – बुराई या ऐब।

खोड़्या – वि. – खजूर के पत्ते, साँझी गीत का ब्राह्मण।

खोड़ मोड़नी – पु. वि. – ऐब या बुराई को नष्ट करना।

खोड़लो – ऐब देखने वाला, एबला, दोष देखने वाला, बदमाश, हेरान करने वाला, अमंगलकारी, नुक्ताचीनी करने वाला, व्यर्थ नुकसान करने वाला।

खोड़ो – खोट वाला, लंगड़ा, खजूर के पत्ते।

खोडो खबाड़ो – अनाज के गोदाम में हर प्रकार का अनाज बोरों में भरा जाता है। उनमें से बिखर करके सारे गोदाम में हर प्रकार का अनाज मिश्रित हो जाता है। उसे इकट्ठा करके साफ किया जाता है। कहते हैं कि खेती वारा के खोड़ा तीज पेट भरई जाय।

खोणो – क्रि. – खोना या नष्ट करना।

खोती – स्त्री. – खेती।

खोतो मेलतो – क्रि. वि. – खोना-रखना।

खोद – क्रि. – खोदना, खनन करना।

खोदरो – कन्दरा, गहरी खाई।

खोदाणो – खुदवाना, खोदना, नक्काशी करना। (सुसराजी खोदाया कुवा बावड़ी। मा.लो. 568)

खोनो – क्रि. – खो देना, गँवाना।

खोब – भूमिगत अन्नकोष, (आँगन गंगा जमना खोबाँ मा.लो. 49।)

खोयरो – स्त्री. – गुफा, खोह।

खोया – सं. – मावा, दूध की मिठाई। क्रि.– खो दिया, गुमा दिया।

खोया-खोया – वि. – विचारों में लीन, तल्लीन।

खोर – स्त्री. – कवेलू या खपरेल का पिसा हुआ आटा, सिर पर लगाने का बुरका, कृषि यन्त्र में लगी मिट्टी।

खोरण – शीतला माता की पूजन के बाद मूर्तियाँ धोकर वह पानी लेना और पूरे घर में उसको छींटना और चेचक वाले बच्चों को उससे नहलाना, और वह पानी पिलाना।

खोरा – वि. – सड़ा हुआ नारियल, खारी गंध युक्त वस्तु, खराब स्त्री, स्त्री की साड़ी में वस्तु झेलने का आँचल (खोला), खोटा नारियल।

खोल – क्रि. – खोलना, अनावृत्त करना, पु. – आवरण, गिलाफ, मोटी चादर।

खोल्ड़ा – वि. – दुर्भाग्यशाली।

खोल्या झेल – आँचल में झेलना, गोदी में झेलना। (सासुजी ए लियो खोल्याँ झेल। मा.लो. 712)

खोल्लो – क्षुद्रक, खुल्लक, अभागा।

खोली – स्त्री. – गिलाफ, आवरण, रजाई का आवरण या खोली, खोल दी।

खोलो भर्‌यो – क्रि.वि. – गोद भराई की रस्म पूरी की।

खोवणो – क्रि. – गुम होना।

खोवाड़ील्या – क्रि. – छुड़ा लिया, छीन लिया।

खोवा – पु. – मावा।

खोसणो – क्रि.– छीनना, किसी वस्तु को स्थिर रखने के लिए उसका कुछ भाग दूसरी वस्तु में अटकाना, घुसेड़ना, फँसाना। (डाँडी डाँडी खोसा राख्याँ, मा. लो. 34)

खोह – स्त्री. – गुफा, कन्दरा, गहरा गड्ढा।

ख्याली – खिलाड़ी, खयाल में खोए हुए, खेल के गीत, ख्याल रखना, ध्यान रखना, स्वप्न। (धन रा ख्याली लाल रालोंरे जाजम। मा.लो. 482)

ग – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला का वर्ण।

गई गुजरी – बीती हुई, भूतकाल, निकृष्ट।

गऊ – गाय, धेनु।
(गऊ रा जाया ओ धोरी हल हाँके। मा.लो. 450)

गऊँ – पु. – गेहूँ, गोधूम, गउँ, गाने का कार्य करूँ।

गऊंडा – सं. – गेहूँ।
(गऊँड़ा की लाज धणी मालक राखे। म्हारा गऊँड़ा में गेरू लागा। मा.लो. 660)

गंकर – स्त्री.– गाँकरी, बाटी, एक मालवी खाद्य पदार्थ।

गक्खड़ – वि. – देहाती, ग्रामीण, मूर्ख, नासमझ, असभ्य, उत्तरी अफगानिस्तान की एक जाति।

गंग – स्त्री.– गंगा नदी, गंग कवि।

गगन मंडळ – पु.– आकाश, आसमान।

गगरा – पु.ब.व. – घड़े।

गगरो – पु.ए.व. – गगरा, घड़ा।

गगर्याँ – स्त्री.– गगरियाँ, मटकियाँ, घड़े।

गंगा-जमनी – स्त्री.– गंगा और यमुना के पानी का मिला-जुला रूप, दो रंगा, मिश्रित।

गंगाजल्या – वि. –सिंधिया का कोष, खजाना, गंगाजल का पात्र।

गंगोत्री – स्त्री.– गंगा नदी के उद्गम का तीर्थ।

गंगासागर – पु.– गंगा नदी समुद्र में मिलती है वहाँ का तीर्थ, एक टोटींदार पानी की झारी या बड़ा गंगाल नामक पात्र।

गंगोज – पु.– गंगाजी का उत्सव करना, मालवी लोक–प्रथा के अन्तर्गत मोसर, श्राद्ध दिवस या उत्सव गंगाजी की शोभायात्रा निकाली जाती है। इसके उपरान्त प्रीतिभोज दिया जाता है।

गचको – वि. – धक्का, दचका।

गच्च – वि. – तृप्त, तरमाल।

गचण – वि. – कीचड़, कीच।

गच्चम–गच्च – क्रि.वि.– भरपूर।

गच्ची – स्त्री.– अटारी, छत, मकान का सबसे ऊपर का खुला-पक्का हिस्सा।

गज – तीन फुट का एक माप, बन्दूक भरने की छड़, हाथी, श्रेष्ठ, उत्तम।
(आज नव गज धरती दल चड़्यो जी। मा.लो. 451)

गंज – वि. – ढेर, ढेरी, पर्याप्त, काफी, बहुत, खल्वाट, गंजा।

गजकरणी – स्त्री. – हाथी, हाथी जैसे कान वाला, बड़े कान का, पेट में पानी–कपड़ा आदि भरकर उतारने या फिर से बाहर निकालने की क्रिया, धोती क्रिया।

गजर घंटो – पु.– पहर-पहर का समयसूचक घंटा ध्वनि, बहुत सवेरे के समय घंटा बजना।

गजदंत – पु. – हाथी दाँत।

गजरा – पु.ब.व.– फूलों से बना गजरा या हार, कोड़ियों का गजरा जो पशुओं के गले में पहनाया जाता है।

गजरो – पु.– गजरा, कंगन, फूलों व धातु से बना कलाई का आभूषण।

गजर-धम्म – वि. – प्रभात का समय, बहुत सवेरे, तड़के।

गज-मोत्याँ को हार – पद – हाथी दाँत खचित मोतियों की माला, एक आभूषण।

गजानन – पु.– गजानन्द, गणपति, हाथी के मुख वाले।

गंजी – स्त्री. – जाँघिया, विधिपूर्वक घास का ढेर जमाना, गंजे सिर वाली स्त्री।

गंजेड़ी – पु.वि.– गाँजा पीने वाला।

गंजो – वि.– खल्वाट, जिसके सिर पर बाल न हों।

गटकणो – क्रि.–निगलना, हड़पना, पेट में उतारना।

गट गट – निगलना, मुँह में उतारा, गटकना, गटागट निकालना।
(म्हे तो गट गट लियो रे उतार घी को मालपुवो। मा.लो. 560)

गटरगूँ – स्त्री.– कबूतर की आवाज, बोली।

गटर गेंगण्या – छोटे से, बौने जैसा मनुष्य, पशु।
(नानी गाय गटर गेंगणी रे सो सो पूला खाय। मा.लो. 136)

गटरमाला – स्त्री.– बड़े दानों की माला, घटरमाला, कनेर के बीजों से बनी माला।

गटागट – स्त्री.– निगलने या घोंटने से होने वाला शब्द, वि.– चटपट, शीघ्र।

गट्टा – पु. – हथेली और पहुँचे के बीच का जोड़, टुकड़े, सिलाई।

गट्ठड़ – पु.– बड़ी गठरी, किसी वस्तु या लकड़ी आदि का बोझा जो सिर पर रखा जाता है।

गट्ठो – पु.– गट्ठर, भारी बोझ, बँधा हुआ बोझ।

गँठकटो – वि. – जेबकतरा, गाँठ काटने वाला।

गँठड़ी – स्त्री.– पोटली, गठरी, छोटी गाँठ वाला बोझा, बँधी पोटली।

गठणो – क्रि.– वस्तुओं को मिलाकर एक करना, जुड़ना, सटना।

गँठीली – वि.– गठा हुआ, सुदृढ़, मजबूत, दृढ़, बहुत गाँठों वाला।

गड़ – पु.– किला, गढ़।
(वा गड़ पर कातन जाए। मा. लो. 57)

गंडकड़ो – पु.– मालवी में एक गाली, कुत्ते के लिये हेय शब्द।

गड़कावणो, गड़खाद्यो – क्रि.– गिराना, लुड़काना।

गड़ गड़ करनो – सारे दिन गिड़ गिड़ाते रहना, बड़बड़ाना, बोलते ही रहना।
(रसोड़ो करंता ढाँकणी फूटी, सासूजी ने गड़गड़ लीदी हो राज। मा.लो. 557)

गड़गन्यो – पु.– पहिया, बच्चों के खेलने का धातु का बना पहिया।

गड़गी – पु.– पंजा के ऊपर की हड्डी तक, टखने, घीपात्र।

गड़णो, गड़नो – वि.– चूभना, शरीर में धँसना, खुरदरा लगना, दर्द करना, दुखना।
(जो नी पकड़े पति की बाँय तो गड़ जावे धरती माय। मा.लो. 484)

गड़बड़ – वि.– गड़बड़ी होना, ऊँचा–नीचा, खराब, बुरा।

गड़बड़ानो – क्रि.– भूल करना, चूकना।

गंडमाला – स्त्री.– घेंघा रोग, गले में फोड़ा।

गड्डी – स्त्री.– ताश, नोट आदि की गड्डी, पुलिंदा।

गडरियो – पु.– भेड़–बकरी चराने वाला, गडरिया।

गड़ लंक – लंका का किला, लंका का महल। (राजा रावण मारिया ने जीतिया गड़ लंक। मा.लो. 654)

गड़ल्यो – पु.– प्रिय व्यक्ति द्वारा गाये जाने वाले लोकगीत, दशहरे के बाद बालकों द्वारा गाये जाने वाले गुड़ल्ये के गीत, गड़गड़ाहट।

गड़वी – पु.सं. – ज्योतिषी, छोटा पात्र, पानी का टोंटीदार लोटा, गंगाजी का साथी।

गड़ा – वि. – गड्ढा, खोह, ओले, बर्फ के टुकड़े।

गंडा – वि. – पुराने हिसाब की प्रणाली।

गडार – स्त्री. – गाड़ी की करवट, गाड़ी के पहियों के मार्ग।

गड्ली – स्त्री. – पानी पीने का छोटा पात्र, छोटा लोटा, बच्चों को पानी पिलाने का टोंटीदार पात्र।

गंडियो – मूर्ख, गेला, आधा पागल, पागल जैसी हरकत करना, जनखा।
(पागड़ी समाल रे पागड़ी समाल

व्यईजी गंडिया पागड़ी समाल। मा.लो. 497)

गंडोलो – वि.– गंदा, खराब, गन्दगी से युक्त कीड़ा।

गड़पत – पु.– किलेदार, सरदार, राजा, गढ़पति।

गड़ा – सं.– गड्ढा, क्रि. – घड़ने का काम किया।

गड़ी – छोटा दुर्ग, किला, राज भवन, राजमहल, कोट।

गणका – स्त्री.– वेश्या, रण्डी, आभूषण।

गणगोर – सं.– शिव-पार्वती, मालवी नारियों का व्रत, अनुष्ठान पर्व, गणगौर पूजन।

गणना, गणनो – पु.– गिनती करना, गिनना, हिसाब लगाना, समझना, किसी को कुछ महत्त्व का समझना, महत्त्व देना। (गणता गणता धस गयी म्हारी आँगलियाँ की रेख। मा. लो. 564)

गणमा – क्रि.– गिने हुए, गिनती लगाई हुई।

गणेस – पु.– गणपति, गजानन्द, गणेश। (गलगच करे ही गणेस। मा. लो. 672)

गणेश कीलो – पु. – वह कीला जो गाड़ी की पेटी और आँका के बीच में लगाया जाता है, मोटा कीला।

गण्डकड़ो – कुत्ता। (आड़ो गण्डकड़ो फरीगयो कुदी नव गज कोट। मा.लो. 317)

गण्याँ – सं.ब.व.– एक प्रकार की मोटी पूरी जो लकड़ी के छापे पर दबाव देकर बनाई जाती है।

गण्याँ-गरगळा – स्त्री.– पूरी-भजिया।

गणिंदा खाईर्‌या, – क्रि.– उलट-पुलट हो रहे, लोट।

गतराड़ो – रीति रिवाज, प्रथा, नियम, परिपाटी, अपने जीते जी मृतक श्राद्ध कर देना।

गतवणादी
गतवणावी – क्रि.वि.– हालत कर दी, दशा बना दी, हुलिया बिगाड दिया।

गतागम – समझ, सूझ।

गता-मता – क्रि.वि.– अन्त मति सो गति, मरते समय का मानसिक भाव।

गती गरास – क्रि.वि.– मृतक श्राद्ध में भोजन करने के पूर्व मृतक के नाम पर निकाला जाने वाला प्रथम ग्रास, कौर।

गंद – वि.– गन्ध, वास, सुवास, दुर्गन्ध, चन्दन या रोली का गन्ध जो मूर्ति को लगाया जाता है।

गंदगी – स्त्री. फा.– गन्दापन।

गच्ची – स्त्री.– पक्के मकान के ऊपर की खुली छत।

गदगदणो – वि.– गर्मी से ऊबना, बुलबुले छोड़ना, खराब होना, विकृत होना, सड़ जाना।

गदड़ो – गधा। (बारा बेंत ब्याणी गदड़ी। मो. वे. 46)

गदा मस्ती – शरारत, उधम, धक्का मुक्की, बहुत मस्ती करना।

गंदीड़ो – दुर्गन्धित मैला, बदबूदार, गंधवाला।

गद्दो – पु.– गधा, गादी।

गदेलो – पु. – बिस्तर या गादी।

गंदो – वि. – गंदा, खराब।

गद्दे गाल – वि. – सर्वथा निषेध के लिए मालवी गाली।

गंदलो – वि. – गंदा, विकृत, खराब।

गदराणो – वि. – जवानी के समय अंगों का भर जाना, फल आदि का पक जाना, गदेदार होना।

गद्दार – वि. – विद्रोही, देशद्रोही, देश का दुश्मन।

गदबदी – स्त्री. – बिगड़ गई, सड़ गई, बुलबुले उठने लगे, विकृत या खराब हो गई।

गद्दी – स्त्री. – छोटा गद्दा, घोड़े, ऊँट आदि की पीठ पर बिछाने की जीन, बड़ी

पदवी, राजसिंहासन।

गंदवाली – वि. – गन्धयुक्त, सुगन्धित।

गदा-पच्चीसी – क्रि.वि. – धमाल करना, उधम या मस्ती करना।

गदेलो – पु.ए.व. – मोटा गद्दा, गादी।

गन्द – पु. – गन्ध, तिलक।

गन्दक – पु. – गन्धक, रसायन।

गदडो – पु. – गधा, एक गाली।

गनगोर, गणगोर – स्त्री.– चैत्र शुक्ल पक्ष तृतीया को मालवी स्त्रियों द्वारा किया जाने वाला गौरी पूजन का सौभाग्य प्रदाता व्रत, अनुष्ठान।

गन्न-गन्न – क्रि.वि. – चक्की चलने की आवाज या ध्वनि।

गनीमत – स्त्री. – विकट अवस्था में भी संतोष रखने का भाव, जो हुआ उतना ही ठीक।

गप, गप्प – स्त्री. – इधर-उधर की बात, किंवदन्ती, फालतू बातचीत, काल्पनिक बात।

गप्प हुइके – क्रि.वि. – गले में उतार करके, गटकाना, मुँह में निगलकर।

गप्पाश्टक – क्रि. – गपशप, वार्तालाप, बातचीत, काल्पनिक बातें।

गप्पी – क्रि.–गप हाँकने वाला, बढ़-चढ़कर बातें बनाने वाला, काल्पनिक किस्से गढ़कर सुनाने वाला।

गपोड़ा – पु. – मिथ्या बातें, कपोल कल्पना, मनघड़न्त किस्सा।

गपोड़्यो – क्रि. – गप्पी, गप्प हाँकने वाला।

गफ-कपड़ो – वि.– गाढ़ा कपड़ा, मोटा कपड़ा, ऐसा कपड़ा जिसमें से पानी बाहर निकलना कठिन हो।

गफलत – वि. – बेखबर, असावधानी।

गफलावे – क्रि.– भुलावे, भरमावे, बहलावे।

गबरू – वि.– मोटा ताजा।

गबन – वि.– दूसरे का धन अनुचित रूप से हड़पना, चुराना।

गबुर्या – कपड़े, वस्त्र।

गबोरो – रुकावट, बाधा, खयानत, गबन, घोटाला।

गब्बर – वि.– घमण्डी, पैसे वाला, धनवान, अहंकारी, कट्टर।

गमकोनी – क्रि.वि. – मालूम नहीं, जानकारी नहीं।

गमखोर – वि. – सहिष्णु, सहनशील।

गम-गता – क्रि.वि. – बीती घटनाएँ, कथा-कहानी, पुरानी स्मृतियाँ।

गमचा, गमचो – गँवार, मूर्ख, कंधे का उत्तरीय।

गमछा, गमछो – सं. – कन्धे का वस्त्र, उत्तरीय, दुपट्टा।

गमड़ेलो – पु. – ग्रामीण, गँवई।

गमनो – पु. – गँवार, बुद्धू।

गमपड़ी – मालूम हुआ, विदित हुआ, जानकारी मिली, स्पष्ट हुआ।

गमलो – पु. – फूलों के पौधे लगाने का मिट्टी का पात्र, गमला।

गमाणो – खोना, गुमाना।

गमी – स्त्री. – मृत्यु।

गर्मी – पु. – गर्मी का मौसम, उष्णता, गर्म।

गमी जाणाँ – गुम या खो जाना।

गयो वित्यो – निकम्मा, गया-गुजरा, कुछ काम का नहीं।

ग्याजी, गयाजी – सं. – पिण्डदान करने का तीर्थ।

ग्यान – वि. – ज्ञान, विद्या, जानकारी।

ग्याब – स्त्री. – समय से पूर्व ही अविकसित बालक या बछड़े का जन्म।

ग्याबण – स्त्री. – पशुओं का गर्भ धारण करना।

ग्याब-फेंकना – क्रि.वि. – गर्भ गिरना, गाभ फेंकना।

गया-गुजर्या – वि. – निष्कृष्ट, खराब, कमजोर, निम्न स्तर का, हीन।

ग्यारस – स्त्री. – एकादशी, ग्यारस माता नामक लोकदेवी।

गयो, ग्यो – क्रि. पु. – गया, चला गया।

गरकोल्यो – क्रि. – छोटा सा घर, दड़बानुमा घर।

गरगल्या – क्रि.वि. – गुदगुदी।

गरनो – वि.– गलना, भीगना, पानी छानने का कपड़ा।

गरगला – स्त्री.– भजिया।

गरज – स्त्री.– बादल आदि का गर्जन, आशय, गर्ज, मतलब, प्रयोजन, इच्छा, आवश्यकता। (थारी गरजे जोशी जगाया हे। राज म्हने भर दो लाल तमाखुड़ी।)

गरजऊ – वि.– गर्ज करने वाला इच्छुक, जिसे गरज या आवश्यकता हो गरज बावली – स्त्री.– गरज बहुत बुरी होती है, गर्ज पगली होती है।

गरजणो – क्रि.– दहाड़ना, गर्जना करना, गम्भीर और जोर का शब्द करना, जोर-जोर से बोलना, गरजने वाला। (गाजो नी गरज्यो ए मेरी माई मेवलो। मा.लो. 373)

गरजमन्द – जिसे गरज या आवश्यकता हो, इच्छुक।

गरजी – वि.– गरजमन्द।

गरजो – क्रि.– गर्जना की, लड़ाई करने लगा।

गरड़-गाजे – क्रि.वि.–बादलों की गड़गड़ाहट की आवाज के साथ गर्जना करना।

गरद – स्त्री.– धूल, बादलों का कोहरा।

गरद–छहरी – स्त्री.– आकाश में धूलि के बवण्डर के साथ वर्षा करने वाले बादलों का छा जाना, वर्षा पूर्व की गर्द।

गरदन – स्त्री.– गला।

गरदी – वि.– उधम, धींगा मस्ती, धूल या बादलों की गरदी, जमघट।

गरदनाँ उड़ीरी – स्त्री.– चीलें मण्डरा रहीं, गिद्ध मण्डरा रहे, किसी लाश के ऊपर चीलों का मण्डराना।

गरधनाँ – स्त्री. ब.व.– गिद्ध पक्षी, चीलें।

गरनाया – क्रि.– आवाज की ध्वनि हुई।

गरनाल – स्त्री.– बहुत चौड़े मुँह की तोप।

गरनो – पानी छानने का कपड़ा, उदिया तो पुर से सायबा गरणो मँगाव।

गरब – पु.– गर्भ, वि.– गर्व, घमण्ड।

गरबपात – क्रि.वि. – गर्भ गिरना। (गरब करी ने राधा मेलाँ चड्या। मा.लो. 702)

गरबवंती, गरभवंती – स्त्री.– गर्भवती, गर्भिणी।

गरबा – पु.– नवरात्र उत्सव, दुर्गादेवी के नाम पर किया जाने वाला लोकोत्सव, गरबा के गीत।

गरबीणी – स्त्री.– गर्भवती।

गरबीलो – पु.– घमण्डी, गर्बीली, पलाश की जड़, मादा पशुओं का गर्भधारण करना।

गरबवास – पु. – गर्भ में निवास, गर्भ में रहना।

गरबेल – स्त्री.– गिलोय, एक लता।

गरभपात – वि.– गर्भ का असमय में ही गिर जाना।

गरम – वि.– गर्म, उबला हुआ।

गरमई – वि.– गर्मी आना, ओढ़ने या धूप सेंकने से गर्म होना, पैसे से, पुत्रवान् होने या अन्य कारणों से गर्मी होना।

गरम मुसालो – वि. – गर्म मसाला या खड़ा मसाला।

गऱ्यार – वि.– सुस्त, अधिक खा लेने से चल न सकने वाला, चलने में धीमा।

गलियार – स्त्री.– गलियारा।

गरवो, गरवा – पु.– नाली, गटर, गन्दा नाला।

गराकी – स्त्री. – ग्राहकी, बिक्री।

गरामो – पशु के गले की रस्सी।

गरास – पु.–ग्रास, कौर, निवाला, किसी वस्तु का खण्ड।

गरास्या – अरावली पहाड़ों में रहने वाली एक जाति, चोर, लुटेरे, बागी, विद्रोही। (पेलो तो फेरो फरे रे गरास्या दादाजी

देसी बई ने दायजो। मा.लो 418)

गरी – स्त्री.– नारियल के फल का गूदा, नारियल की गिरी, बादाम की गिरी, गुरवाली वस्तु, गली, घास की गंजी।

गरी घोघड़ी को – पतली गरदन वाला, दुबला पतला, कृशकाय।

गरीब – वि.– निर्धन।

गरीब नवाज – वि.– गरीबों पर दया करने वाले परमात्मा, ईश्वर, दयालु, दया करने वाला खुदा।

गरीबी – वि.– दीनता, दरिद्रता, निर्धनता

गरु – पु.वि.– भारी, वजनी, गुरु, गौरवशाली, बृहस्पति।

गरुड़जी – पु.– एक प्रकार का पक्षी, पक्षियों का राजा, विष्णु का वाहन, गरुड़पुराण, जिसके नाम पर बना।

गरुड़ ध्वजा – पु.– गरुड़जी की ध्वजा, गरुड़ ध्वज, विष्णु।

गरेबान – पु. – कुर्ते आदि का वह भाग जो गर्दन के चारों ओर रहता हो, गला, कालर।

गरे–गरे – क्रि.वि. – गले–गले तक।

गरो – पु. गला।

गल – गलना, खाना, अंटी खेलने का गड्ढा।

गलगच – गले-गले तक भरा हुआ, भरपूर, तृप्त, पूर्ण, छक, मदमस्त, खिला-पिलाकर तृप्त करना। ने गलगच करे हो गणेश। मा.लो. 672)

गल–गळा – पु.– भजिया, एक खाद्यान्न, मीठा भजिया।

गलगल्यो – दीनता दिखाना।

गल घोंटू – वि.– पशुओं के गला घुटने की बीमारी, गले का रोग।

गलछट चूरमो – वि.– गले को घी से तर करने वाला रोटी या बाटी का चूरा।

गलछरी – स्त्री.– गले का एक आभूषण, बजट्टी, गलसरी।

गलणो – स्त्री.– पानी छानने का वस्त्र, क्रि. गलना, नीचे पड़ना, टपकना, थक जाना, घटना, दबना या कोमल हो जाना।

गळत – वि.– अशुद्ध, मिथ्या, झूठ, अमान्य।

गलत्यो – वि.– अधिक पानी गिरने से निस्तार वाली जमीन में गलकर नष्ट हो जाने वाली फसल।

गलगाल – गले के नीचे लगने वाला तकिया।

गलनो – स्त्री.– पानी छानने का वस्त्र, गल जाना।

गलपड़ा, गलफड़ा – सं.– गले का पट्टा, जोत, बैल आदि पशुओं के गले के नीचे लटकने वाला मांसल भाग, सास्ना, गलकम्बल।

गलपट्टो – पु.– गले का पट्टा या जोत, गुलुबन्द, रुमाल।

गलफाँस – पु. – बैलों के गले का फंदा या जोत, गले में डाला जाने वाला फाँसी का फँदा।

गलफा – स्त्री.– गाल भर जाना, पान या कोई वस्तु दबाने से गाल का फूलना।

गलफोड़ो – वि. – गले में फोड़ा होना, घेंघा नामक रोग, पशुओं की गले सम्बन्धी बीमारी।

गलत्यो – वि. – पानी में गल जाने वाला, जिस खेत में पानी भरा रहता है और उसका निकास ठीक से नहीं होने से फसल गल जाती हो।

गल्लो – पु. – अन्न, अनाज, रेजगारी का संदूक, गोलक।

गळवा – क्रि. – निगलने, गलने के लिये, गलने की क्रिया या भाव।

गले उतरी – स्त्री. – बात को समझा, बात समझ में आई।

गलामो – गले की रस्सी।

गले पड़्यो – जबरदस्ती पीछे पड़ना, हठ करना, निर्लज्जता।

गलो काटणो – हत्या करना, दर्जी द्वारा गले का कपड़े को काटा जाना।

गँवई – वि. – ग्रामीण।

गवई – पु. – साक्ष्य, गवाही देने वाला गवाह।

गँवड़ेल्यो – वि. – ग्राम का निवासी, गँवार।

गवरजा – स्त्री. – पार्वती, गौरी।

गवरी के नंद – पु. – गणपति, गणेश, गजानन्द, लम्बोदर।

गँवार – गाँव का अनपढ़ व्यक्ति, मूर्ख मनुष्य, ग्रामीण।
गेला गोरी मूरख गँवार। मा.लो. 616)

ग्वाँर पाठो – पु. – घृतकुमारी, ग्वारपाठा, एक औषधीय वनस्पति।

गवा – पु.फा. – साध्य, गवाही।

ग्वाल्यो – पु.ए.व. – ग्वाल, गोप, चरवाहा।

ग्वाली – स्त्री. – ग्वाल की चराई, चराने की मजदूरी।

गवेयो – पु. – गाने वाला गवैया।

गसत – पु.फा. – गश्त, टहलना, घूमना, भ्रमण।

गस्ती, गसती – वि. – घूमने वाला, चौकीदार, सिपाही, पहरेदार।

गल सोहे – वि. – गले में शोभा प्रदान करे, गले को सुन्दर बना दे।

गहला – नशा, चक्कर, सिर घूमना, गर्व का नशा, भोजन का नशा।
गरब गहेली गुजरी। मा.लो. 685)

गा

गा – स्त्री.–गाय, गौ, गौ माता, गोधन। क्रि. – गाना।

गाई – स्त्री. – गाय, गाने का भाव।

गाँकर – पु. – बाटी।
(म्हारा छोरा पालने झुलावो के गुड़ गाँकर दऊँगा। मा.लो. 493)

गाँकऱ्याँ – स्त्री.ब. व. – बाटियाँ।

गागड़्याँ, गाँगड़िया – स्त्री. ब. व. – डलियाँ, गुड़ या मिट्टी के छोटे-छोटे टुकड़े, टुकड़ा।

गागर – स्त्री. – गगरी, मटकी।

गागरियाँ – स्त्री.ब.व. – गगरियाँ, मटकियाँ।

गागरी – स्त्री. – गगरी।

गाछा – एक जाति जो छबड़ी टोकरी-टोकरे बनाने का काम करती है। (गाछा दीदा छबड़ा माली घरे जाए रे भई। मा.लो. 135)

गाज – स्त्री. – गर्जना करना, बिजली का कड़कना या गाजना।

गाजबीज – स्त्री. – एक लोकदेवी।

गाजणो – क्रि. – गरजना, रंजना, कष्ट पहुँचाना, जोर-जोर की आवाज करना।
(गाजो नी गरज्यो। मा.लो. 373)

गाजर – स्त्री. – एक मीठा जमी कंद।

गाजऱ्यो – क्रि. – गरज रहा, गर्जना कर रहा, वि. – मोटा ताजा, सब कुछ सुनने व सहन करने वाला, एक मालवी गाली या विशेषण।

गाजा-बाजा – पु. – धूमधाम, हो-हल्ला, डंका बजाना।

गाँजो – पु. – गाँजा, भाँग की तरह का एक पौधा जिसकी कलियों का धुआँ नशा करने वालों को नशा देता है।

गाजो-गाजा – क्रि.वि. – गरजा-गरजा, गर्जना करने लगा, बादलों की आकाश में गड़गड़ाहट सुनाई देना।

गाँठ – स्त्री. – गठान, गंडा, गुमड़ा,रुई की गाँठ, हल्दी, अदरक, बाँस या गन्ने की गाँठ, गिरह गाँठ, अंटी, उलझन, आँटी पड़ना, सूजन।

गाठण, गाँठणो – क्रि. – गूँथना, पिरोना, गठान लगाना, उलझन, आँटी पड़ना, सूजन, रस्सी-कपड़े आदि को मरोड़कर बनाया बंधन।

गाँठ-जोड़णा – क्रि. – गठबंधन करना, वर-वधू के वस्त्रों में भाँवर के समय गठान लगाने

की क्रिया या रस्म।

गाँठ गोभी – स्त्री. – गोभी की एक जाति, किस्म जिसकी जड़ में बड़ी गोल गाँठ होती है, एक सब्जी या तरकारी।

गाँठ्या गऊँ – गठीले गेहूँ, हृष्टपृष्ट, गेहूँ, मालवी गेहूँ। (गाँठ्या गऊँ का जीमणा रे संगवी। मा.लो. 626)

गाड़ – क्रि. – गाड़ना, जमीन में दबाना, वि. गाढ़ा, कट्ठा मन, मजबूती, विश्वास।

गाड़णो – क्रि. – गाड़ना, जमी दोज करना, रोपना, दफनाना।

गाँड – सं.ब.व. – मल द्वार।

गाडर – स्त्री. – भेड़, पक्के मकान की छत पर लगाई जाने वाली लोहे की गर्डर।

गाडरो – पु.– भेड़, नर गाडर।

गाडऱ्यो – पु. – भेड़ चराने वाला, चरवाहा, गड़रिया।

गाडऱ्यो ल्वार गाड़ोलिया लुहार –पु.– लुहार का काम करने वाली एक जाति जिसे राजपूतों का वंशज माना गया है। यह घुमक्कड़ जाति सपरिवार कहीं भी डेरा डालकर लोहे का सामान बनाकर बेचती है।

गाड़वा – क्रि. – गाड़ने, दफनाने हेतु।

गाड़ा – पु. – गाड़ा, पहिये का घेरा, बड़ा घेरा।

गाड़ा मारुजी – गर्विला पुरुष, स्वाभिमानी व्यक्ति, रसिक पुरुष, दूल्हा, दामाद। (थाकाँ तो वीराजी म्हारी नथड़ी रो मोल, गाड़ा मारुजी हो राज। मा.लो. 483)

गाड़ी – स्त्री.– बैलगाड़ी, रथ, तोपगाड़ी, एक जगह से दूसरी जगह सामान या आदमियों को पहुँचाने वाला यान।

गाड़ीवान – पु. – गाड़ी चालक, गाड़ी चलाने वाला।

गाँडू – वि. – कुकर्म करने वाला मनुष्य तथा ऐसे ही मनुष्यों के लिये मालवी गाली।

गाड़ो – क्रि. – गाड़ने का कार्य करें, मजबूत, सशक्त, बड़ी गाड़ी।

गाढ़ी निंदरा – वि. – प्रगाढ़ नींद, निश्चिंत होकर सोना।

गाणो – क्रि. – गाना, अलापना, गान, गीत, गायन करना।

गाँड्यो – पागल, मालवी व गुजराती गाली। (पागड़ी समाल रे पागड़ी समाल व्यईजी गाँडिया पागड़ी समाल। मा.लो. 442)

गाँती – ओढ़ने का कपड़ा गले में बाँधना।

गादल – मूली के बीच का भाग, नरम, गूदा। (मूला वचलो रे वाने गादल भावे। मा.लो. 435)

गाँसी – स्त्री. – घूँघट का पल्ला, साड़ी के पल्लू का वह भाग जो सिर के पास होकर कमर में खीसा जाता है। (गाती को पल्लो यो तो हेड़ियो हीड़।)

गाबड़ – गरदन, ग्रीवा।

गाथा – वि. – गाकर कही जाने वाली गीत कथा, एक सुदीर्थ कथा काव्य, स्तुति, वृतान्त, छोटे-छोटे पदों में विस्तारपूर्वक कही जाने वाली गीत कथा, जिसमें सत्य घटनाओं, धार्मिक या वीरता आदि तत्त्वों की कथा हो।

गादी – स्त्री.–गदेला, गद्दी धर्माचार्यों की।

गानो, गाणो – क्रि. – नियमानुसार या अलाप के साथ ध्वनि निकालना, मधुर ध्वनि करना, विस्तार से कहना।

गाफिल – वि. – गफलत, बेसुध, बेखबरी।

गाब, गाबण – वि. – गर्भवती, ग्याबिन, गर्भ धारण किया हुआ पशु।

गाबल्ड़ी, गाबड़ी – स्त्री. – गर्दन, गला। गाबल्ड़ी पकड़ी ली।

गाबा – वि. फटे पुराने वस्त्र।

गाबो – वि. – चढ़स की नाड़ी या मोटी रस्सी

के अन्दर डाली जाने वाली रस्सी, गाथ, बड़ी रस्सी के मध्य भाग में एक और रस्सी डालना हंडोर।

गाभो – वि. – गूदा, गिरी, हृदय, मध्य भाग।

गाम – पु. – ग्राम, गाँव, छोटी सी बस्ती।

गामड़ो – पु.ए.व. – ग्राम, देहात।

गाय – स्त्री. – धेनु। इसे लोक देवी या गौ माता भी कहते हैं (के दूध मायको नीतर के गाय को) कजली गाय, कामधेनु, ग्याबिन होने पर ही गाय कही जाती है।

गायक – पु. – गाने वाला, गवैया, स्त्री. – गायिका।

गायगोठ – स्त्री. – गौशाला, वह स्थान जहाँ गायों को बाँधा जाता है।

गायटो – स्त्री. – ज्वार, गेहँ, चना आदि की फसल फैला कर बैलों के पैरों से गाकर कुचलवाकर अन्न निकालना।

गायंतरी – स्त्री. – गायत्री।

गाया, गायो – क्रि. – गाया, गाने का कार्य किया, गायन किया, सूखी फसल पर बैल चलाना।

गार – पु. – ओले, मृत लाश, वि. – मृत देह, गहरा गड्ढा, गुफा, कंदरा, मिट्टी, गारा, गालि। ओछी जिन्दगी का मत वो गार बारा। मा.लो. 648)

गारद – स्त्री. – सिपाहियों का वह दल जो रक्षा के लिये नियत होता है। पहरा, चौकी।

गारद वईग्यो – क्रि.वि. – गायब हो गया, नष्ट हो गया, चला गया।

गाऱ्यो – क्रि. पु. – गा रहा, गाना गा रहा।

गारा की चड़ी – स्त्री. – मिट्टी की चिड़िया, खिलौना।

गारा, गारो – पु. – मिट्टी, ईटों का मसाला, मृत शरीर, माटी।

गारा की गाड़ी – स्त्री. – मिट्टी का बना बच्चों का खिलौना, मृच्छकटिक, गाड़ी की शक्ल में बना मिट्टी का खिलौना।

गारुड़्यो – पु. – सपेरा, जादूगर, मंत्र से सर्प काटे का उपचार करने वाला।

गाल – स्त्री. – गाली, दुर्वचन, निन्दा, कपोल।

गाली – स्त्री. – गाली-गलौच, अपशब्द।

गालगाई – स्त्री. – मालवी रीति-रिवाज में जँवाई या समधी के आने पर गाल गाने का रीति-रिवाज, गालगीत।

गालन – वि. – सड़ा-गला कचरा कूड़ा जो प्रायः पशुओं के खाने के बाद या उनके पैरों से कुचल दिया जाता है।

गालनो – क्रि. – गलाना, सड़ाना, गीला करना।

गालो – क्रि. – गलाओ, नष्ट करो, साफ करो, चक्की में अनाज डालने का परिमाण, औसत या अन्तर।

गालफा – पु. – गले के कल्ले, गले का काग।

गावो – क्रि. – गाने का कार्य करो, गाना शुरू करो।

गावाँना – क्रि.ब.व. – गावेंगे, गुम करवाना।

गाहनो – सं. – डूबकर थाह लेना, पार पाना, धान आदि के डंठल झाड़कर अनाज पृथक् करना, मथना।

गाँश्यो – स्त्री. – घोड़े की पीठ पर बिछाया जाने वाला वस्त्र विशेष।

गि

गिच-पिच, गिचर-पिचर – वि. – जो स्पष्ट या ठीक क्रम से न हो, कोई कार्य स्पष्ट रूप से न किया जाना।

गिचगिचो – क्रि. – चिपचिपा, मुलायम।

गिज-गिजो – वि. – ऐसा गीला और मुलायम पदार्थ जो खाने में अच्छा न लगे, लिजलिजा पदार्थ।

गिटर-पिटर – स्त्री. – निरर्थक बोलना, गिट पिट करना, कानाफूसी करना, कुछ भी बोलते या बतियाते रहना।

गिट्टी – स्त्री. – धागे की गिट्टी, लपेटा हुआ

धागा, पत्थर के छोटे-छोटे टुकड़े जो प्रायः सड़क बनाने के काम आते हैं ।

गिट्टो – स्त्री. – पैरों में तात्कालिक शून्यता आना, पत्थर की बड़ी गिट्टी।

गिट्ट्यो – वि. – ठिगना, नाटा, छोटे कद वाला।

गिड़ – वि. – कान के टाप्स या कर्णाभूषणों के पीछे से लगाया जाने वाला धागे या धातु का बना पेंच।

गिड़गिड़ाणो – स्त्री.– गिड़गिड़ाना, दया की पुकार।

गिंडोला – पु. – एक प्रकार की कृमि जो मिट्टी की तह में पाई जाती है । इनका प्रमुख खाद्य मिट्टी ही है । ठोस मिट्टी को खाकर ये कृमि उसे उपजाऊ बनाते हैं । कृषकों के लिये उपयोगी कृमि।

गिड्डी – स्त्री.– नोट, रुपये, पत्तल, दोना, ताश आदि का समूह या गड्डी।

गिद, गिद्द – पु. – एक प्रसिद्ध मांसाहारी पक्षी, गिद्ध।

गिन्दू – पु. गेंद, कन्दुक।

गिन्ती – स्त्री.– गिनना।

गिननो – गिनना, गिनती करना।

गियो – पु. – गया।

गिरगट – पु. – गिरगिट, छिपकली, की जाति का एक विषैला जन्तु।

गिरजा – स्त्री.– पार्वती, गिरिजा, गिरने का आदेश ।

गिरद – वि. – आसमान में गर्दी, आसपास, चारों ओर।

गिरदावर – पु.– राजस्व अधिकारी, पटवारी का वरिष्ठ अधिकारी।

गिरधारी – पु.– श्रीकृष्ण गिरि को धारण करने वाले, गिरिराजधरण।

गिरण – वि.– ग्रहण।

गिरनो – गिरना, पतन होना, मंदी।

गिरफ्तार – वि.फा.– पकड़ा हुआ, बंदी बनाना।

गिरेबान – पु. – गर्दन, अपने आप में झाँकना या देखना, अपने को देखना, गला।

'गि'

गिरमट – पु. – लकड़ी या लोहे का बना घन नुमा औजार जिससे मकान की नींव को ठोककर जमाया जाता है। लकड़ी या लोहे में छेद करने का बरमा, गिरमिट।

गिरवी – वि.– बन्धक, रेहन।

गिरावट – स्त्री. – गिरने की क्रिया या ढंग।

गिरिराजधरण – पु. – भगवान श्रीकृष्ण।

गिरी – पु. पर्वत, पहाड़, शैल गिरी, गिरी, किसी वस्तु के भीतर का गुदा, बीज।

गिरी-गिरी – वि.– ग्लानि, क्षोभ, दुःख, पीड़ा।

गिरीग्यो – पु.– गिर पड़ा, गिर गया, ऊपर से नीचे आ गया।

गिरीस – पु.– हिमालय पर्वत, शिव।

गिरो – वि. – गिरोह, दल, समूह, झुण्ड, क्रि. – गिर जाओ (आदेश)।

गिलगी – स्त्री.– निगल गई।

गिल्लट – पु.– एक प्रकार की धातु, चाँदी सी सफेद, बहुत हल्की और कम मूल्य की धातु।

गिलबिली – स्त्री.– गिलगिली या गिचगिची वस्तु, भीतर से गीली और रसदार वस्तु, लिजलिजी होना।

गिल्लीडंडा – सं.– गुल्ली और डंडा, बाल क्रीड़ा के उपकरण।

गिल्टी – स्त्री.–ग्रन्थि, शरीर में गाँठ, मेद, बड़ी फुँसी या फोड़ा।

गिलास – पु.– ग्लास, बर्तन।
(मारूजी गिलासाँ मंगाव।)

गिलेरी – स्त्री.– गिलहरी।

गिलोरी – स्त्री.– पान की गिलोरी, कत्था-चूना-सुपारी-लोंग-जर्दा आदि डालकर खाये जाने वाले पान की लुगदी।

गिलोय – स्त्री.– एक लता जो बड़ी कड़वी होती है, एक औषधि।

गिवाँर – वि. – गँवार, अपढ़, मूर्ख।

गी – क्रि. स्त्री. – गई, जा चुकी।

गीच – वि.– की कीचड़।

गीचड़ – स्त्री. वि.– कीचड़, कीच।

गीजड़, गीजड़ाँ – स्त्री. आँखों में कीचड़ या मैल, आँखों की विकृति , तकलीफ।

गीजड़्यो – वि. जिसकी आँखों में हमेशा कीचड़ या मैल आता रहता हो।

गीत – स्त्री. स्वर-ताल में गीत गाना, गायन करना, स्वर-ताल में निबद्ध रचना।

गीता, गीताजी – स्त्री. – भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन के विषाद के समय दिया गया उपदेश, हिन्दू धर्मावलम्बियों का धार्मिक आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथ भगवद्गीता।

गीदड़ – पु.– सियार, कुत्ते की तरह का एक जंगली पशु, श्रृंगाल।

गीदड़यो – वि.– गीदड़ जैसा, गीदड़ के समान चुस्त और चालाक व्यक्ति।

गीदड़-भपकी – गीदड़ जैसी आवाज से डराना, धमकाना, थोथी भपकी देना।

गीदणो – आदत पड़ना, पड़ी हुई आदत नहीं छूटती।

गीदाड़्यो – क्रि. – किसी को भी किसी कार्य के लिये आदी कर देना।

गीदूँ – पु.–गेंद, कंदुक।

गीरी हालत – वि. गई गुजरी स्थिति, दयनीय स्थिति।

गीलटो – वि.– बहुत बड़ा फोड़ा, बड़ी गाँठ।

गीली – वि.– गीला हो जाना, गलना।

गीलो – वि. भीगा हुआ, पानी से तर।

गु

गुग्गल – पु. एक पेड़ जिसका गोंद सुगन्ध के लिये जलाते हैं, गूगल।

गुँगो – वि. गूँगा, जो बोल न सके, गाड़ी के सामने उसे ठहराने वाली पेंदे की लकड़ी विशेष – यह या तो टेढ़ी होती है या दो टाँगों वाली होती है। गाड़ी खड़ी करने की घोड़ी या ऊँटड़ों नामक लकड़ी, दुइयाँ।

गुगल – गुग्गल।

गुग्गो – पु.– घुघ्घु, उल्लू।

गुचकणो – चूँट लेना, चिमटी भरना, नोंचना। (म्हारी छोरी ने रोवाड़ी तो गाल गुचकी लऊँगा। मा. लो. 493)

गुच्छो – पु.– एक ही स्थान पर लगे हुए अनेक फूलों का समूह, गुच्छ, तालियों का गुच्छा या झब्बा आदि।

गुचाद्यो – क्रि. – चुभो दिया, पैनी वस्तु चुभाना।

गुंजन – पु.– भोरों की गुँजार, भनभनाहट, कोमल या मधुर।

गुजर, गुज्जर – पु. – मालवा में निवास करने वाली क्षत्रियवंशी गूजर जाति, क्रि. निर्वाह, पहुँच, प्रवेश, गति, पैठ।

गुजरणो – क्रि.– बीतना, जाना, पास निकल जाना, मर जाना, देवलोक जाना।

गुजर–बसर – क्रि– भरण–पोषण, पालन–पोषण, निर्वाह, गुजारा।

गुजरात – पु.– गुर्जर प्रदेश, वि. गुजराती सं., मालवा का पड़ौसी प्रान्त।

गुंज गली – गन्ने की कतार। (कीका गूँज गली को भावे। मा.लो. 33)

गुंजा – पु.– चिरबोटी, घुँघची, यह फल एक रत्ती के तौल का होता है।

गुजारिश – स्त्री.– प्रार्थना, निवेदन।

गुजारो – पु.– गुजर–बसर, निर्वाह, गुजारा।

गुट – वि.– समूह, गुट, दल।

गुटबाजी – स्त्री. पार्टीबाजी, गुटबन्दी, संगठन।

गुटका – पु. छोटी पुस्तक, मूल पुस्तक, रामायण या गीता का गुटका, पानी को गले के नीचे उतारना।

गुटकी, गुटको – वि.– गुटखा, जर्दा–तम्बाकू में

सुपारी, कत्था आदि मिलाकर तैयार किया गया खाने का गुटखा। टुकड़ा।

गुट्टो – वि.– टुकड़ा, पत्थर व ईंट का टुकड़ा।

गुट्टी – स्त्री.– छोटे कद की स्त्री, लकड़ी या महिला, धागे की गिट्टी।

गुटर गूँ – वि.– कबूतर की आवाज, ध्वनि।

गुठला – पु.– गुठली, गाँठ।

गुठली – स्त्री.– गुठली या बीज।

गुठलो – वि. गाँठ, गोलाकार वस्तु, गूबड़, गिल्टी, छाला,किसी कार्य में विघ्न पड़ गया, विवाद हो गया, बाधा खड़ी हो गई।
(गुठला उठी ग्या, गुठला पड़ीग्या।

गुंडई – वि.– स्त्री. गुंडापन, अकारण लोगों से झगड़ना या मारपीट करना।

गुड़ – पु.– गन्ने के रस का गुड़।

गुड़-गुड़ – पु. – गुड़-गुड़ की ध्वनि।

गुड़कानो – क्रि. नीचे डालना, लढ़काना, गुड़कना।

गुड़गम, गुरगम – वि.– तिकड़म, उल्लू सीधा करना।

गुड़ गोबर – किये कराये पर पानी फिरना, सब कुछ बिगड़ जाना, नष्ट भ्रष्ट होना, काम बिगड़ना।

गुड़गुड़ी – स्त्री.– छोटा हुक्का।

गुड़गुड़्यो – पु.– बड़ा हुक्का।

गुड़-गुड़ – स्त्री.– हुक्का पीने की आवाज, ध्वनि।

गुड़दा – गदगदी, मोटी, गुदेदार।
(हथेल्या गुड़दा गण्या सो में नख पर करूँ कसार। मा.लो. 559)

गुड़ली, गुडूली – स्त्री.– छोटा लोटा, बच्चों को पानी पीने का नली वाला छोटा लोटा या गड्डी।

गुड्डा – पु.– पुतला, छोटा बालक, बच्चों का खिलौना या कपड़े का पुतला।

गुड़िया शकर – स्त्री.– देशी शकर, गुड़ से बनी बिना साफ की हुई शकर।

गुड़धानी – स्त्री.– भूने गेहूँ में गुड़ मिलाकर बनाई गई खाद्य वस्तु।

गुड़ी – स्त्री.– पतंग, क्रि.– उल्टी उड़ी लगाने का व्यायाम।

गुड़ी पड़नो – गाँठ पड़ना, मन में मेल आना, शत्रुता होना, मन में आँटी पड़ना।

गुड़ीपड़्वा – स्त्री.–चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा।

गुण – अच्छाई, खूबी, विशेषता।

गुण से गुँथी नाव – गुणों से भरपूर नाव, गुणों की खान, गुणों से भरी जीवन नौका।

गुण चोर – वि.– गुणों की चोरी करने वाला, गुणग्राही, गुणों को छिपाकर अवगुण सामने रखने वाला, निर्गुणी।

गुणत्याँ – स्त्री.– गधे की पीठ का थैला, बोरी।

गुणपति – वि. गुणों का भण्डार, गुणों के स्वामी, परमात्मा।

गुणकारी – वि. – गुण या फायदा देने वाली वस्तु, लाभदायक।

गुणो – पु.– गणित में एक संख्या को दूसरी संख्या में गुणा करने की पद्धति।

गुणो करनो – पु.– अनुमान लगाना, मान करना, सोचना, गिनना।

गुणनो – पु.– गुणा करना गुणग्रहण।

गुणवंत – वि.– गुणवान्, गुणी।

गुणी – वि.– गुणवान्।

गुत्थम गुत्था – पु.– उलझाव, फँसाव, हाथापाई, भिड़ जाना, पहलवानी के दाव-पेंच।

गुत्थी – वि.– उलझन, समस्या, गुँथने से बनी हुई गाँठ।

गुँथमा – वि.– गूँथकर बनाया हुआ, गुँथा हुआ।

गुँथाव – क्रि. वि.– गुँथवाओ।

गुदगल्या पाड़नो – क्रि. – गुदगुदी करना।

गुदगुदी – स्त्री.– गुदगुदी।

गुद्दो – स्त्री.– हाथ में पहुँचे का गुदगदा या मांसल भाग, मक्का, घूँसा।

गुदगुदो – वि.– गुदेदार, माँसल, मुलायम।

गुदगुदानो – वि.– गुदगुदी करना।

गुदगुदावणी – स्त्री.– मध्यमा या बीच की अंगुली।

गुदड़िया – स्त्री. वि. फटी पुरानी गादी, फटे-पुराने वस्त्र।

गुद्दड़ी – स्त्री – फटे पुराने टुकड़ों को जोड़कर बनाया हुआ बिछोना या ओढ़ना, कंथा, कथरी।

गुदनो – पु.– गोदना या गुदवाना।

गुंदी – एक वृक्ष जिसमें फल लगभग चने जितने बड़े, मीठे और लसदार होते हैं। गोंदी, छोटे लिसोड़ा वाला वृक्ष।

गुदली खीर – वि. स्त्री.– मीठी खीर, क्षीर।

गुदा – स्त्री.– मलद्वार, गुह्य द्वार।

गुना – वि.–गुणा करने की क्रिया, कसूर, पाप, एक नगर।

गुनो – पु. –पाप, पातक, अपराध, कसूर।

गुपत – वि.– गुह्य, गुप्त, गूढ़।

गुपतदान – पु.– गुप्तदान।

गुपतनाथ – पु.– महादेव, माचलपुर के लोक प्रसिद्ध देवता, गुप्तेश्वर महादेव

गुप्पा अंधारा – वि.– घोर अंधकार, घना अंधेरा।

गुपत – वि.– गुप्त, गोपनीय, छिपा हुआ, अप्रकट।

गुपचुप – वि.– चुपचाप, शान्त, चुपके से।

गुपत गुन्डा – पु.वि.– छिपा हुआ शैतान, गुन्डा।

गुफा – स्त्री.– जमीन या पहाड़ की खोह, कंदरा, गुहा।

गुफा बल्ड़ो – पु.– आगर का तीर्थस्थल।

गुबार – वि.– गाँठ, शरीर के किसी भाग में निकलने वाला फोड़ा या भेद, मन में दीर्घकाल तक बैठी बात कह देना।

गुमड़ा – वि.– फोड़े फुंसी, गाँठ, गिल्टी।

गुमणो – क्रि.– खो जाना, भटक जाना, नष्ट हो जाना।

गुमान – घमण्ड, अभिमान, गर्व, मिजाज, अहंकारी, गर्विला, गुमानवाला, स्वाभिमानी।
(कण पर करूँरे गुमान। मा.लो. 485)

गुमान का साँते – क्रि. वि.– गर्व के साथ, घमण्ड के साथ।

गुमानो – क्रि.– गँवाना, खो देना, नष्ट कर देना।

गुमानी – घमण्डी, क्रि. – खोनी।

गुमास्तो – पु.–मुनीम, कारिन्दा, आड़तिया।

गुम्बद – शिखर।

गुर – पु. वि.– गूढ तत्त्व, सारयुक्त, सं.– गुड़ गूदा।

गुरु – विद्या देने वाला गुरु।

गुरमाया – क्रि.– बहकावे में आया।

गुऱ्या – स्त्री.– माला के दाने, मनका।

गुर्र्याँ करे – क्रि. वि.– गुर्राने लगे, गुर्रावे।

गुराई – वि. स्त्री.– गौर वर्ण, गोरापन।

गुरीरो – वि.– गुड़ का मीठा पानी, उत्तम, बढ़िया, स्त्रियों को जच्चा में दिया जाने वाला गुड़, अजवाइन, धृत का उबला पानी।

गुरु – वि.– बड़े आकार का, भारी, वजनी, बृहस्पति ग्रह, आचार्य, कला सिखाने वाला, उस्ताद, दीर्घ मात्रा चिह्न।

गुरु पत्नी – स्त्री.– गुरु माता, गुरु की पत्नी, पढ़ाने वाली स्त्री, शिक्षिका।

गुरुकुल – पु.– वह स्थान जहाँ गुरु विद्यार्थियों को अपने पास रखकर शिक्षा देता हो, गुरु का घराना।

गुरगम – वि.– गुरु या शिक्षक के द्वारा प्रदत्त ज्ञान।

गुड़गम – तिकड़म से किया जाने वाला कार्य।

गुरजर – पु. – गुजरात देश, गुर्जर ब्राह्मण, गूजर जाति।

गरडम – दिखाया।

गुरु दक्षिणा – पु. – गुरु को दी जाने वाली भेंट, दक्षिणा।

गुरु मंतर – पु. – वह मंत्र जो कोई किसी को अपना शिष्य बनाने के समय दिया

जाता हो।

गुरुमुख – वि. – जिसने गुरु से धार्मिक दीक्षा ली हो, गुरुमुखी नामक पंजाबी लिपि।

गुल – पु. बत्ती का गुल,गुलाब का फूल,

गुलक्यारी – फूलों की छोटी-छोटी क्यारियाँ। कतारबद्ध फूलों की क्यारी। (सीसरी पागाँ संवारी भोला संगवी गंगा रे धोरे गुलक्यारी।)

गुलकंद – पु.– चीनी मिलाकर धूप में सिझाई हुई गुलाब के फूलों की पंखुड़ियाँ, गुलुकंद।

गुलबंद – पु.–गला व कान ढँकने का वस्त्र विशेष।

गुला-गुला – पु.– भजिया, नमकीन तथा मीठा भजिया।

गुलछर्‍रा – वि.–स्वच्छन्दतापूर्वक और अनुचित रीति से किया जाने वाला भोग विलास, खान-पान, राग-रंग आदि।

गुलजार – पु. फा.– बाग बगीचा, हरा-भरा संसार, आनन्द और शोभायुक्त स्थान, अमन-चमन।

गुलनार – पु.फा.– अनार का फूल, गहरे लाल रंग का पुष्प, यौवन के रंग में रंगी युवती, लाल एवं मद भरे नेत्रों वाली युवती, तरुणी।

गुलबाँसी – स्त्री.– गुलबाँसी रंग।

गुलरा – सं. पु.– गूलर के फल।

गुलसरी – सं.– गले का आभूषण।

गुलसारी – सं.– गुलबाँसी रंग की साड़ी या धोती।

गुलक्यारी – स्त्री.– गुलाब के फूलों की क्यारी।

गुलशन – पु. – बगीचा, बाग, उपवन।

गुलसन पट्टी – स्त्री. – पैरों का आभूषण।

गुलाब – पु.फा.– एक कंटीला पौधा जिसमें सुगंधित गुलाबी फूल खिलते हैं।

गुलाब जाम्बू, गुलाम जामू – पु. – एक प्रकार की मिठाई जो मावा से बनाई जाकर चीनी की चासनी में डाली जाती है।

'गु'

गुलाबी – वि. – गुलाब के रंग का, गुलाब सम्बन्धी, थोड़ा या कम यथा गुलाबी ठंड।

गुलाल – पु.– गुलाबी चूर्ण।

गुल्ली डंडा – पु.– लड़कों का एक प्रसिद्ध खेल जो गुल्ली और एक डंडे से खेला जाता है।

गुड़बैल – स्त्री.– गिलोय।

गुवा – पु.– रास्ता, मार्ग, गाँव के पास का पशुओं का सार्वजनिक ठीया। (गुवा मांय की पीपली रेवीरा)।

गुवाड़ी – घिरा हुआ क्षेत्र। (वणी लच्छू की लाड़ी ए आखी गुवाड़ी भेली कर दी। मा.वे. 53)

गुवाल – पु.– चरवाहा, पशु-पालक।

गुवाल्यो – पु.– चरवाहा, ग्वाल, गोप। (गुवाल्या वखाण्या। मा.लो.457)

गुस्सो – वि. – क्रोध, कोप।

गुसाई – पु.–गोस्वामी, गोसाँई, जितेन्द्रिय।

गुह – पु. – शहद।

गुहो – स्त्री.– रास्ता, मार्ग, खोह, गुफा, कंदरा।

गू

गू – वि.– पाखाना, विष्टा, टट्टी, गंदली, चिड़िया की बीट, मैला।

गूह – स्त्री. – शहद, पुष्पसार।

गूँगो – वि.– जिसमें बोलने की शक्ति न हो, गाड़ी को खड़ी करने का टेका, मूक।

गूजर – पु.– अहीरों की एक जाति, मालवा का एक आदिम वंशी जाति।

गूदो – पु. – फल के अन्दर का कोमल खाद्यांश, मिगी, गिरी।

गूढ़ – वि.– गुप्त, रहस्यमय।

गूबड़ो – वि.– शरीर के किसी अंग पर निकला फोड़ा, गूबड़, गिल्टी।

गूबर – पु. – गोबर, गाय का भैंस की विष्टा।

गूमड़ो – वि.– फोड़ा, गूबड़ या गिलटी।

गूयो – पु.– रास्ता, मार्ग, संकरा रास्ता, गाँव की गली।

गूल्यो – वि. – गंदा रहने वाला व्यक्ति, घृणित व्यक्ति।

गूलर – सं.– उदुम्बर, गूलर पेड़।

गूलरो, गूलरा – पु.– गूलर का फल।

गे

गेगाणो – क्रि.– चीख मारकर बोलना, रोना या चिल्लाना, गिड़गिड़ाना।

गेंगो – वि.– पतली, राबड़ी, लप्सी, अधिक पतली वस्तु।

गेंगो घोल्यो – क्रि.वि.– पतली राबड़ी बनाई, किसी खाद्य पदार्थ में पानी की जरूरत से अधिक मात्रा का होना। लड़ाई-झगड़े का किस्सा छेड़ना।

गेंडो – पु.– गेंडा, वि.– गेडें जैसी गर्दन एवं कीचड़ आदि में लोटकर गंदा रहने वाला व्यक्ति, मूर्ख।

गेणा – पु.– जेवर, रहन, बंधक, गहना, आभूषण।
(गेणला तो सोनी देसरा लावजो । मा.लो. 386)

गेणे – वि.– गिरवी, रहन, बंधक।
(भाबज रा भँमर गेणें मेलणे रे वीरा राखो बेन्या बाई री सोब। मा. लो. 354)

गेंती – सं. स्त्री.– मिट्टी पत्थर आदि खोदने का औजार।

गेंद – सं.– गेंद, कन्दुक।

गेंदा – सं.– गेंदा या हजारे का फूल।
(ए गेंदा बनी मती जाओ जमना पाणी। मा.लो. 225)

गेंदो – पु.– पीले रंग का एक फूल, गें दा।

गेर – होलिका पर्व पर सामूहिक रूप से फाग गाली-मस्ती मनाती, गुलाल अबीर व पिचकारी से रंग में सराबोर करती बालक, युवा एवं वृद्धों की भीड़, समूह क्रि. – गेरना, हाँकना, चलाना, दूसरा, अन्य, धूल।

गेर चड़नो – नशा आना।

गेरनो – क्रि.– गेरना, गिराना, पटकना, पशुओं को हाँकना, चलाना, जोतना।

गेर् या – पु.– फाग गाने वाले गेर में सम्मिलित व्यक्ति । होलिका दहन के लिये लकड़ी, कन्डे एकत्र करने वाले एवं फाग गाने वाले व्यक्तियों का समूह।
(रोडू काका थारो भरोसे गेर्या लइ गया। मा.लो. 57)

गेरवाजबी – वि.– अनुचित, गलत, जो वाजिब न हो।

गेरा – वि.– मजबूत, गहरा, उँडा, पैसे वाला, क्रि. – गेर दिया, हाँक दिया, चल दिया।

गेरिया – क्रि. – गेरा, हाँका, चलाया।

गेरी – वि.– गहरी, डंडी, पैसे वाली।
(भाँगाँ गेरी गावो रे। मा.लो. 594)

गेरू – पु.– एक प्रकार की लाल मिट्टी, गैरिक, गेहूँ का रंग।

गेरो – क्रि.– उछेरो, हाँको, वि. – गहरा, अभिन्न, गहन, गम्भीर।
(गेरो परवार। मा.लो. 345)

गेरो-गोटी – पु. अभिन्न मित्र, प्रिय मित्र, दोस्त, साथी।

गेल – स्त्री.– रास्ता, मार्ग, गली।
(म्हारी गेल आपने राखी । मा.लो. 686)

गेलचोदो, गेल्यो – एक मालवी गाली, मूर्ख, अज्ञानी।

गेल सप्पो – वि.– पगला, अज्ञानी, मूर्ख, बेवकूफ।

गेला – नासमझ, पागल, मूर्ख।
(गेला पियूजी तम बावला, लाडूड़ा लागे दाय रे।)

गेली राँडको – स्त्री.– एक मालवी गाली, मूर्ख या पगली स्त्री से उत्पन्न।

गेले – अव्य.– से, साथ संग, मार्ग में । (गेले गेले मूँ फरूँ ने जोऊँपीयर वाट)।

गेलो – सं.–पागल, छोटा रास्ता, मार्ग (वाके नीचे गेले नीकले रे कँवर।)

गेहना – स्त्री. आभूषण, गहने।

गेहना गाँठा – स्त्री.–गहने।

गेहरइ र्‌यो – वि.– गहरा रहता है, गहन रहता है, गम्भीर रहता है, घनीभूत।

गो

गो – सं.–स्त्री. –गाय।

गोकळ, गोकल – पु.–ब्रजभूमि का गाँव, गौ का समूह, गौशाला।

गोख – सं. –गर्दन, गला, गोखड़ा, झरोखा।

गोखताँ – वि.– बिलखते हुए, रटते हुए।

गोखरू – स्त्री.–हाथ की कलाई का आभूषण, पाँव की कीलें, गोखरू का काँटा।

गोखड़ा – स्त्री.– झरोका, खिड़की, गवाक्ष, छज्जा, अटारी, चूले के पीछे समान रखने का स्थान।

गोंगा – वि.– नाक की गन्दगी।

गोगा – पु. –गोगा देव, एक अवदान, लोक देवता।

गोचर – स्त्री.–चरागाह, गाय आदि पशुओं के चरने का स्थान, चरनोई।

गोचो – वि.– गच्चीखाना, निर्धारित पथ से विलग होना, अलग होना, पथ भ्रष्ट होना, लक्ष्य भेद न कर पाना।

गोट – पु.– प्रीति भोज, मित्र मण्डली द्वारा किसी बाग-बगीचे में समवेत रूप में की जाने वाली पार्टी या भोजन।

गोटी – स्त्री.– मित्र, बच्चों के खेलने की काँच आदि की गोली।

गोटो – पु. – चाँदी सोने या अन्य पदार्थ से बनी झिलमिलाती धारी या फाल जो साड़ी के किनारों पर लगाया जाता है।

गोठ – स्त्री.– गोशाला, गोष्ठी, सैर, प्रीति भोज। (रायवर गोठ कराँगा। मा.लो. 703)।

गोठणां – सहेलियाँ, सखी। (आज म्हारे सब कोई आवो के वा मेरी गोठनीयाँ। मा.लो. 52)

गोठीड़ा – मित्र, साथी। (गोठगोठीड़ा खईगया। मा.लो. 541)

गोड़, गोल – वि.–मीठा, गुड़, मधुर, प्यारा, वृक्ष, वृक्ष का तना, ज्वार या मक्का सम्पूर्ण पौधा, प्रारम्भ, प्रारम्भिक स्थान उत्पत्ति स्थान। (गोड़ उगेरो।)

गोड़ई – स्त्री. –गोड़ना या उसकी मजदूरी।

गोड़ा – सं. पु.– तने के पास, घुटने।

गोड़ो – पु.– पैर का घुटना। (घेवर गोड़ा नीचे। मा.लो. 3)।

गोणो – वि. – गौना, विवाह के पश्चात् मालवा में आणा लाने की प्रथा है। आणा के बाद गूणा या गौना करने की रस्म वधू पक्ष के लोगों द्वारा सम्पादित की जाती है। इसमें लड़की को विदाई में उपहार दिये जाते हैं तथा वर पक्ष को भी कुछ भेंट दी जाती है।

गोत – पु. –गौत्र, परिवार, कुटुम्ब, कुनबा, जाति, रिश्तेदार, कुल, वंश, खानदान।

गोतनिया – पु. –सगोत्री, अपने ही गौत्र का।

गौतम – पु. –गौतम ऋषि।

गौतमी – स्त्री. –गौतम ऋषि की पत्नी अहल्या।

गोतरज – गोत्र, गोत्र सम्बन्धी गीत जो रतजगे में गाया जाता है। (गोतरजजी रा डेरा हरिया बागाँ में दीदा। (मा.लो.85)

गोतवाला – पु. – गोत भाई, गोती भाई, भाई, बन्धु, रिश्तेदार।

गोता – वि. –डुबकी, धक्का, झोंका, भटकना।

गोतिड़ो – विवाह की एक रस्म।

गोती – पु. – गौत्र का भाई, बहिन, अपने ही गौत्र या कुल का भाई, भाई बन्धु।

गोतीड़ो – विवाह में स्त्रियाँ कुम्हार के यहाँ से मिट्टी का बड़ा मंगल कलश लेने जाना, गोत्र की स्त्रियों द्वारा गोतीड़ा उठाकर लाना। (ई कुण गोतीड़ो परणावे गोती म्हारा गोत का रे। मा.लो. 339)

गोतो – पु. – डुबकी लगाना, गोता लगाना।

गोद – स्त्री. – क्रोड़, गोद या अंक।

गोदड़ा – पु.ब.व. – ओढ़ने की वजनदार रजाई।

गोदड़ी – स्त्री – गुदड़ी, कथरी, फटे-पुराने वस्त्रों से बना बिछाने या ओढ़ने का वस्त्र, हल्की गादी, घोड़े-घोड़ी की पीठ पर बिछाई जाने वाली गादी, हल्का बिछोना।

गोदड़ो – स्त्री. – फटा पुराना, भारी वजनवाला ओढ़ने का वस्त्र।

गोदड़्यो लींबू – पु. – बहुत मोटे छिलके एवं आकार का नीबू जो खाने के काम आता है। इसका अचार नहीं डाला जाता।

गोदणो – क्रि. – गुदवाना शरीर पर चित्रकारी करवाना, छेदना, चुभाना, गड़ाना।

गोद भरावे – क्रि. – वैवाहिक लोकाचार जिसमें वधू की गोद भरने की रस्म की जाती है। प्रायः रुपया-खोपरा बाटकी एवं बताशे आदि वधू की गोदी में रखे जाते हैं, भारी पग होने पर भी गोद भरते हैं।

गोद लेणो – दत्तक रखना।

गोदान – विधिवत संकल्प करके ब्राह्मण को गोदान करने की क्रिया, गऊदान।

गोदा – क्रि. – गोद दिया, शरीर पर या किसी वस्तु विशेष पर चित्रकारी अंकित की गई।

गोदाम – पु. – वह स्थान जहाँ विक्रय का बहुत सा माल एकत्रित करके रखा जाता है, भण्डार गृह।

गोधन – पु. – गौएँ, गौरूपी धन, गायों से प्राप्त मल, मूत्र, बछड़ा, बछड़ी आदि धन।

'गो'

गोन्यो – पु. – गाय का बछड़ा।

गोनी – स्त्री. – गाय की बछिया।

गोप – स्त्री. – रेशमी धागा, चरवाहा।

गोप ग्वाल – पु. – चरवाहे, गाय के गुवाल।

गोपाल कृष्ण – पु.– बाल कृष्ण, श्रीकृष्ण का नाम।

गोपी – स्त्री. – गोपिका, गोप की पुत्री, ग्वाले की लड़की।

गोपी किसन – सं. पु. – श्रीकृष्ण।

गोपी गार, गोपी चंदण – स्त्री. – एक प्रकार की सफेद या पाण्डुर मिट्टी जिसका तिलक मस्तक पर लगाया जाता है।

गोफण – पु. – छींके की तरह का वह जाल जिसमें पत्थर, ढेले आदि रखकर शत्रुओं, जानवरों, पक्षियों आदि पर फेंका जाता है, बँटा हुआ मोटा डोरा।

गोफण्यो भाटो – पु. – गोफन में रखकर फेंके जाने लायक गोल पत्थर।

गोबर – पु. – गाय का मल या विष्टा।

गोबरधन – पु. – श्रीकृष्ण का एक नाम, गोवर्धन, एक पर्वत, गोबर रूपी धन, जिसकी खाद से प्रचुर धान्य का उत्पादन होता है।

गोबर्‌यो वींछु – पु. – गोबर की तरह मटमैले रंग का एक वृश्चिक जिसके डंक मार देने पर विष अधिक नहीं चढ़ता, बिच्छू।

गोबी – स्त्री. – एक प्रकार की सब्जी, यह दो प्रकार की होती है – गाँठ गोभी (पत्ता गोभी) तथा फूल गोभी।

गोमती – स्त्री. – एक नदी।

गोमाता – स्त्री. – दूध देने वाली गाय।

गोमुख – स्त्री.– गाय का मुँह, शंकर भगवान के अभिषेक का वह जल जो गोमुखी गंगा के द्वारा बाहर निकलता रहता है, गंगा का उद्गम स्थान।

गोयरे – सं. – गाँव केकिनारे, गाँव के निकट का मार्ग।

गोयरो – सं.पु. – गोयरा, गोह, गाँव के निकट का मार्ग।

गोयली – स्त्री. – गोइली, मादा गोह।

गोयो – गाँव के पास, गाँव के नजदीक, गाँव के किनारे, ग्राम वीथी, गाँव के निकट का मार्ग। (रामदेवजी का घोडिला जद गोया में आया।)

गोर, गोल – सं. – गुड़, गन्ने से बनाया गया ठोस मीठा पदार्थ।

गोरखनाथ – पु. – एक अवधूत योगी, जिन्होंने भर्तृहरि को योग मार्ग में दीक्षित किया था। इन्होंने अपना गोरख पंथ चलाया था।

गोरखधंधो – पु. – घर गृहस्थी का जंजाल या कार्य, रहस्य कर्म।

गोर की गाँगड़ी – स्त्री. – गुड़ की डली। (गोर गाँकर दऊँगा। मा.लो.493)

गोरजा – गौरी, पार्वती। (म्हारी चन्द्र गोरजा। मा. लो. 592)

गोरजी – पु. गुरुजी, श्राद्ध कर्म करवाने वाला ब्राह्मण, गरुड़ा, ब्राह्मण।

गोर बाँटणो – क्रि. – गुड़ बँटवाना, कोई धार्मिक या सामाजिक रस्म में प्रसाद स्वरूप गुड़ वितरण करने की प्रथा।

गोर बेसन्या – क्रि.वि. – गोबर के बने आभूषण, जो होलिकादेवी को पहिनाये जाते हैं।

गोरल – गौरी, पार्वती, गिरजा, उमा। (आओ वो गोरल म्हारे पामणा। मा.लो. 604)

गोरवाणी – घी में सिके हुए गेहूँ के आटे की गुड़ के पानी में औटाकर बनाई जाने वाली पतली राब, मीठी राब, गलवाणी।

गोरस – दूध, दही आदि।

गोरा – पु. – एक लोकदेवता, गोराजी-कालाजी, गोरा-बादल। वि. – गौर वर्ण वाला अंग्रेज।

गोरांदे राणी – गौरी, पार्वती, गणगोर, उमा, गौर वर्ण वाली स्त्री।

गोरी – स्त्री. – पार्वती, पत्नी के लिये विशेषण, गौर वर्ण की सुन्दरी।

गोरी देके – क्रि. वि. – लीप करके, गोबर से जमीन को लीपना, मुँह पर पानी पोतना।

गोरेधन पुजाय – क्रि. – गोवर्धन पूजते हैं, गोवर्धन पूजा की जाती है या पूजे जाते हैं।

गोर गट्ट – वि. – अत्यन्त गौर वर्ण।

गोलाई – वि. – गोलाकार।

गोल – सं. – गुड़, सोने की अँगूठी, गोलाकार।

गोलक – सं. – गुल्लक, पैसे रखने का डिब्बा, अंटी खेलने का गड्ढा।

गोल वणइने – क्रि.वि. – समूह बनाकर, मतैक्य या गुट बना करके, गोलाकार करके।

गोला-बांदी – पु.वि. – राजपूत राजाओं या जागीरदारों-जमींदारों की वे सन्तानें जो परम्परा से दास जीवन व्यतीत करती थीं तथा इन्हीं से उनके यहाँ जो सन्तानें उत्पन्न होती थीं। कालान्तर में वही गोला-बाँदी कहलाती रहीं। दासियों से उत्पन्न जारज सन्तानें, एक जाति। ऊधर-उधर अपना चारित्रिक पतन करवा लेने वाले युवक-युवती, निकृष्ट, निम्न स्तर के नर नारी।

गोली देवा, गौरी देवा – क्रि. स्त्री. – लीपना या लिपाई, गोली देने के लिए।

गोलो – वि. – बदमाश, गुण्डा, नारियल का गोला या गिरी।

गोवाड़ी – स्त्री. – गुवाड़, गुवाड़ा, एक बड़े परकोटे के अन्दर बसी हुई बस्ती, जिसमें सगोत्री भाई-बन्धु अलग-अलग घर बनाकर निवास करते हैं।

गोवाणो – वि.– रुकना, थमना, ठहरना, असंमजस में पड़ना, उलझन में समय की बर्बादी।

गोवीऱ्यो – वि. – रोक रहा, परेशान कर रहा, दबा रहा, दखल दे रहा।

गोस, गोश – पु. – माँस।

गोसाई – वि. – गुसाई जाति का साधु, गोस्वामी।

गोइली – क्रि.– लीपना, साफ-स्वच्छता।

ग्या – गये

ग्यान – जानकारी, विशेष ज्ञान।

ग्यारस – एकादशी, (ग्यारस उबी आँगणे । मा.लो. 681)

ग्यारा – ग्यारह।

ग्राह – मगरमच्छ। (गज ओर ग्राह लड़े जल भीतर। मा.लो.689)

घ

घ – क वर्ग का व्यंजन।

घंट – पु. – घंटा, गला, वह घड़ा जो मृतक की क्रिया में पीपल पर लटकाया जाता है।

घटको – पु. – गटकना या गले में उतारना, घूँट लेना, इकाई, अंग, हिस्सा।

घटणो – वि. – कम होना, घटना, कमी, घटना घटित होना। (घट्या वद्या में थाँका छोरा छोरी लाव। मा.लो. 366)

घटना-घटी – क्रि.वि. –क्रिया या कांड हुआ, घटना घटित हुई।

घटती – स्त्री. – कमी, न्यूनता।

घटती-बढ़ती – क्रि.वि. – कमी-बेशी, कम-ज्यादा, उतार-चढ़ाव।

घट-बढ़ – स्त्री. – कम या अधिक होना।

घट-भंजन – वि. – घोड़े के गले की भँवरी नामक एब या दोष।

घंट-भीतर बेठ – क्रि.वि. – हृदय में बैठना।

घट में – पु. – हृदय में।

घटाणो – क्रि. – कम करना, बाकी निकालना।

घटाटोप – बादलों के उमड़ने से हुई छाया या अंधेरा, आकाश में छाई हुई बादलों की घटा, घनघोर घटा टोप।

घंटी – स्त्री. – पीतल का छोटा लोटा, बजाने की घंटी, जो शाला या मंदिर में बजाने के उपयोग में आती है।

घटुल्यो – छोटी घट्टी, जिसमें दालें– दलिया दला जाता है। छोटी हाथ चक्की।

घंटो – पु. – धातु का प्रसिद्ध बाजा, घड़ियाल, साठ मिनिट का समय।

घट्टो – क्रि. – रगड़ से चिह्न बन गया, हाथ चक्की, चूना पीसने का घट्टा।

घड़ – स्त्री. – घड़ने का कार्य, घड़ना, बनाना, निर्माण करना, केले के फलों का गुच्छा या घड़।

घड़त – बनावट, कारीगरी, शिल्प बनाना, आकार देना, घड़ाई, देवी-देवता के चाँदी सोने की मूर्ति। (गेणा तो सोनी देस रा लावणो, गेणला री घड़त हजारी। मा. लो.386)

घड़-घड़ – क्रि. वि. अव्य. – गड़गड़ाता हुआ।

घड़इलो – क्रि. – घड़वा लो, बनवा लो, निर्माण करवाओ।

घड़णो – क्रि. – घड़ना, निर्माण करना, बनाना, घड़ई का काम। (कुमार का रे वासण घड़नो छोड़ दे। मा.लो. 178)

घड़ल्यो – पु. – कुमारी कन्याओं के द्वारा गाये जाने वाले घड़ल्या के लोकगीत।

घड़ाजो – क्रि. – बनवाजो, बनवाना, निर्माण करवाना।

घड़ातो – पु. – घड़वाता हुआ, निर्माण करवाता हुआ।

घड़ानो – क्रि. – घड़वाना, बनवाना।

घड़ाणो – बनवाना, घड़वाना, आकार देना, घड़ने का काम, घड़ने का पारिश्रमिक। (आवेगा बाइजी रा वीरा लावेगा घड़ाय। मा.लो. 483)

घड़ियक – वि. – एकाध घड़ी के लिए,

अल्पसमय के लिए।
(घेड़ीयक घोड़ला थोबजो रे सायर बनडा। मा.लो. 423)

घड़ियाल – काँसे की झालर, मगर।

घड़ी नी सरे – एक घड़ी के लिये भी रहा न जाये, जिसके बिना कोई कार्य पूर्ण न हो सके।

घड़ी – स्त्री. – वस्त्र आदि को मोड़ना या घड़ी करना, समय बताने वाली घड़ी, कुछ समय, अवसर, परत, तह, साड़ी के थान की पट्टी, 24 मिनिट की अवधि।
(ने मरणतोल वइगी उनीज घड़ी। मो.वे. 54)

घड़ीक – थोड़ी सी देर, एक घड़ी भर के लिये, कुछ समय के लिये।
(सिर बदनामी दे गया जी घडीये नी बेठा पास। मा.लो. 618)

घड़ी भर – स्त्री. – थोड़े समय के लिये।

घड़ी वदताँ पलवदे – स्त्री. – घड़ी में बढ़ता हो तो पल में बढ़ जावे, शीघ्र बढ़ने का भाव।

घड़ीसाज – पु. – घड़ी की मरम्मत करने वाला, घड़ी दुरुस्त करने वाला।

घड़ी-घड़ी – अव्य. – बार-बार, बारम्बार, लगातार, निरन्तर।

घड़्ल्या – स्त्री.ब.व. – मिट्टी के घड़े, छोटी हाथ चक्की।

घडुकणो – डकारना, जोश, आतंक, दहाड़, वीर ध्वनि, अभिमान, डंक मारना, डराना।
(सूर्या साँड घडुकियो सींगड़ा बीच उकी पूछड़ी। मा.लो. 543)

घडुल्यो – स्त्री.ए.व. – मिट्टी का घड़ा, छोटी हाथ चक्की।
(सोना रो घुड़ल्यो। मा.लो.642)

घड़ो – क्रि. – घड़ने या बनाने का कार्य। स्त्री. – मिट्टी या धातु का घड़ा।

घड़ो भराणो – क्रि. – घड़े का पानी से भरा होना, पाप या अपराध बढ़ जाना।

घड़्याँ घटनी – शरीर छोड़ने की तैयारी, मरणशील, मरणासन।

घणचक्कर – कोई भी कार्य करने के लिये अधिक मेहनत करना, बार बार लिये अधिक मेहनत करना, बार बार आना जाना, आधा पागल हो जाना, एक ही कार्य के लिये कितनी ही बार चक्कर लगाना।
(घन चक्कर ऊँचा दरवाजा। मो. वे.40)

घणा – बहुत, खूब, अधिक।
(लम्बा लापर होजी घणा गुमान। मा.लो. 542)

घणी खम्मा – बड़ों को किया जाने वाला प्रणाम, सम्मानित पुरुषों को किया जाने वाला अभिवादन।
(थाने घणी खमा हो म्हारा दऊजी क्यँऊ हो पड़्या। मा.लो.315)

घबराणो – क्रि. – घबराना, घबराहट, हड़बड़ाना, व्याकुल होना।

घमड़ घमड़ – झूमना, चक्कर लगाना, फिरना, गोलाकार में घूमना, घट्टी चलाना, घड़ घड़ बोलना।
(घमड़–घमड़ वा उड़ धंगी वीको नाम। मा.लो. 542)

घमंड – घमंड, अहंकार, गर्व, अभिमान।
(चेत चंडी, कोन हे घमंडी। मो.वे.57)

घमसाण – भीड़।
(घोड़ा री घमसाण, काका रो भतीजो मामा रो भाणेज लाड़ो घर आवसी। मा.लो. 209)

घर – मकान, निजी आवास।
(सब सखियन तो पोंच गई घर। मा.लो. 686)

घरकुल्यो – अवदशा को प्राप्त हुआ घर, बरबाद होना, बुरे दिन आना।

घरबारी – घरवाला, संसारी, गृहस्थी। (गुरु तो केगा के म्हारा चेल घरबारी। मा.लो. 649)

घराणो – घराना, कुल, वंश। (माजना से डराँ हाँ, घराणो भी लाजे। मो.वे.55)

घरे – न. – घर घर पर, घर में। (तमारो एक फोटू म्हारा घरे लग्यो हे। मो.वे. 50)

घरवाली – ना. – पत्नी, घर की मालकिन।

घरोरी – छिपकली, दिवारों पर रेंगने वाला एक जंतु।

घा

घाईघप्पो – अनसुना तथा उपेक्षा करने वाला।

घाई पकड़नो – एक ही रट लगाना, बार बार एक ही बात को बोलना, एक के पीछे पड़ जाना।

घाघरा – पेटीकोट, लहँगा, घाघरा। (आगरा को घाघरो परणपुर की छींट। मा.लो.पृ.483)

घाट – बंधेज का लुगड़ा, साड़ी, चूँदड़, ओढ़ना, ओढ़नी, जलाशय का बँधा हुआ किनारा, तट, तीर, पर्वत का तंग व दुर्गम मार्ग, दली हुई मक्का या बाजरी का छाछ में पका कर बनाया हुआ खाद्य। (घणी ओ मनोरी सायबा घाट रंगायो तो जेपूर जाय बंदायो। मा.लो. 475)

घाटड़ी – चूनरी, चूनड़। (धनने माथे मोड़ी ने ओड़ी धारड़ी जी।)

घाटी – उतार चढाव वाला स्थान, दो पर्वतों के बीच का तंग मार्ग, पहाड़ी का उतार चढ़ाव। (केत कबिरा सुणो भई सादू आगे हे जम की घाटी। मा. लो. 700)

घाण – न. – एक बार, एक दफा, विशेषतः जो खाद्य सामग्री एक बार में तला जाय, पीसा जाय, पकाया जाय, खाद्य पकाने की एक इकाई।

घाणी – तेल निकालने का यंत्र कोल्हू।

घापा चौदस – गेला, मूर्ख, घोटाला।

घालणो – क्रि. – डालना, रखना, चलाना, मिलाना।

घाल दूँवा – क्रि. – रख दूँगा, डाल दूँगा। स्त्री. – समागम, एक मालवी गाली।

घालमेल – क्रि.वि. – खिचड़ी, गड़बड़ी, धाँधली।

घाव – वि. – शरीर में व्रण होना, गड्ढा होना, चोंट, क्षत।

घास – स्त्री. – तृण, घास।

घास को पूलो – पु. – घास का पूला, घास का बण्डल।

घासलेट – सं. – मिट्टी का तेल, केरोसिन।

घि/घी

घिसणो – क्रि. – रगड़ना, घिसना। (चिकणी सिल्ला देखी एड़ी मती घसणो।)

घी – पु.सं. – घृत।

घी झारो – पु. – झारे से घी देने या परसना। घी देना।

घीया, घीयो – स्त्री. – एक बेल के फल जिसकी सब्जी बनती है, कद्दू या लौकी वर्ग की सब्जी।

घीरत – पु. – घृत।

घीलोड़ी – घी का छोटा पात्र।

घु

घुग्गू, घुग्घु – पु. – उल्लू, उलूक, मूर्ख।

घुँघची – स्त्री. – गुंजा, लाल चरमू, रत्ती भर का तोल।

घुँघटो – स्त्री. – घूँघट, पर्दा, ओट।

घुटको – वि. – घूँट।

'घु'

घुटणो – सं. – घुटना, मन ही मन चिंता।

घुट्यो, घुटायो – क्रि.वि. – घुटा हुआ, अनुभवी।

घुड़दौड़ – स्त्री. – घोड़ों की वह दौड़ जिनके लिये हारजीत रखी जाती है।

घुड़साल – स्त्री. – अश्वशाला, अस्तबल।

घुंडी – बटन, कुर्ते में लगने वाला घुंडी जोड़ा, मन में आँटी रखने वाला, दिल में मेल रखना, गाँठ।
(जमईजी दिल की घुँडी खोलो। मा.लो. 542)

घुँदावण – क्रि. – पाँव से गूँदना या दबाना, मिलाना।
(तीसरी सखी मिल कियो विचार कीच घूंदे सो जीवे क्यूं। मा.लो. 484)

घुन्नो – वि. – क्रोध, द्वेष आदि भाव मन ही मन रखने वाला व्यक्ति, अधिकतर चुप रहने वाला।

घुमाव – पु. – चक्कर, मोड़।

घुलजो – क्रि. – मिल जाना, घुलना।

घुब्बो – वि. – फोड़ा, गाँठ, शरीर का फूला हुआ भाग।

घुमट – सं. – गुंबद, शिखर।

घुमाव – पु. – चक्कर, मोड़।

घुरकाणो – डराना, डाटना, धमकाना, गुर्राहट, गुस्सा।
(अब तो सासूजी घुरक्या खाय। मा. लो. 588)

घुर-घुर – क्रि.वि. – गुर्राने की ध्वनि, नींद में नाक बजना।

घुलणो – क्रि. – मिल जाना, घुल जाना।

घुल्यो – शिशु का प्रेम, दवाई, जन्मघुटी।
(बालोत्या से घुल्यो छाय्यो। मो. वे. 34)

घुसणो – क्रि. – प्रविष्ट होना, अंदर जाना, धँसना, तह तक पहुँचना।

घुसेड़णो – क्रि. – प्रविष्ट करना, अन्दर डालना।

'घू'

घूँघट – वि. – पर्दा, ओट, चेहड़ा, छेड़ा।

घूघरी – सूरज पूजन में गेहूँ की घूघरी बनाई जाती है।
(म्हारे रूपा वरणी घूघरी। मा. लो.49)

घूँट – पु. – पानी को गले के नीचे उतारना, घूँट लेना।

घूमर – झुण्ड, समूह, स्त्रियों का एक गोलाकार नृत्य, घूमर का एक लोकगीत।
(सोदागर वीरा घणी रे घूमर से म्हारे आवीयो। मा.लो. 345)

घूरो – वि. – घूरा, रोड़ी, कचरा कूड़ा गोबर आदि एकत्र करने का स्थान, खाद का गड्ढा।

घूँस/घूस – वि. – रिश्वत।

घे

घेंघो – वि. – पतली राबड़ी।

घेघरा – पु. – नुकती दाने, मोती चूर, एक मिठाई, चने की फली।

घेर – क्रि. – फैलाव, घेराव, मण्डल, हाता।

घेर घुमेर – गहरा, अभिन्न, गहन, गम्भीर, घुमावदार।
(डूँगर वायो वालरो जमइजी उगो घेर घुमेर। मा.लो. 545)

घेरणो – क्रि. – घेराव करना, गेरना, उछेरना।

घेराणो – वि. – घिर जाना, चंगुल में फँसना।

घेंरी – स्त्री. – बोवनी के समय अनाज को मिट्टी से ढँकने के लिए नाई यंत्र के पीछे लगाई जाने वाली पत्तों की या लकड़ी की घेरी।

घेरे पड़्यो – क्रि.पु. – पीछे पड़ा।

घेरो – पु. – घेरना, परिधि ढकना, ढपली, घेराव।

घेरदार – वि. – घुमावदार।

घेवर – सं. – एक मालवी मिठाई।

घेंसीचीने – कृ. – खींच करके, तान कर के।

घोक – क्रि. – याद कर, रट, मौखिक याद करना, कण्ठस्थ करना।

घोटणो – क्रि. – घोटना, रगड़ना, रटना।

घोटाणो – घुटवाना, घुटवा रहे, पिसवा रहे, रगड़वाना।

घोटालो – वि. – अव्यवस्था, गबन, घपला, गड़बड़ी।

घोड़ूला/घोड़िला – सं. – घोड़े, घोड़ी चढ़ई के लोकगीत। (घोड़ला फेरताँ जेठजी। मा. लो. 82)

घोड़ी – स्त्री. – घाड़े की मादा, पालना, ऊँची तिपाई या चोपाई। (फूफासा तो घोड़ी मँगाई। मा. लो. 271)

घोड़ी चड़ई – क्रि. – विवाह के समय वर का घोड़ी पर चढ़कर कन्या पक्ष के यहाँ जाना, इस अवसल्र पर गाये जाने वाले मालवी गीत, वैवाहिक रस्म।

घोड़ो – पु. – अश्व, शतरंज का घोड़ा, बंदूक का घोड़ा। (सूरज जी घोड़े लदे। मा. लो.316)

घोतणो – किसी बात के लिये या किसी काम के लिये बार बार कहना, काम के लिये बार बार टोंकना।

घोतो – लकड़ी या हात की हल्की चोंट, तीक्ष्ण वस्तु से लगना, चुभना, रोक, अड़चन। (घोतो लागो काणी में। मो. वे. 49)

घोयरी – घूस, गोह। (कनगेट्यो कपड़ा मोलवे घोयरी चाली रे हाट। मा.लो. 317)

घोरनो – क्रि. – सोते समय गले से आवाज निकलना, खर्राटे भरना।

घोरावणो – नींद की अवस्था में जोर से खर्राटे खींचना, खर्राटे लेना, जोर से ढोल या नगाड़ा बजाना। (माता ढोल घोरावे वाजा वाजणी। मा.लो. 99)

घोल – क्रि. – घोलना, पतला करना।

घोलन – स्त्री. – घुला हुआ आटा, बेसन आदि का मिश्रण।

घोलणो – घोलना, मिलाना, पतला करना, लीपन, आटा बेसन का मिश्रण, लेपन। (सासूजी ए घोलियो केसर लीपणो ए मारुणी। मा.लो. 570)

घोळो – सं. पु. – घोंसला, चिड़ियों के द्वारा अंडे देने के लिये बनाया गया घोंसला।

घोंसलो – पु. – घोंसला, नीड़।

घोंसी – पु. – अहीर, ग्वाले।

घोहटी – नेवले की जाति का या उसके समान एक बड़ा जन्तु गोह, गोह बहुत ताकतवर जन्तु होता है, इसको मार कर बैलों को खिलाया जाता है, ताकि बैल शक्तिशाली हों।

च

च – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला के च वर्ग का अक्षर।

च – अव्य. – ही (निश्चय वाचक) ओर।

चइजे – क्रि. – चाहिये।

चइये – क्रि. – चाहिये।

चइरी – क्रि. – माँग हो रही, इच्छा हो रही, चाह रही।

चइरियो – क्रि. – चाह रहा, इच्छा कर रहा।

चउदस – वि. – चौदस।

चऊँ – चाहता हूँ, इच्छा है।

चकचूँदी – स्त्री. – चकाचौंध, चुँधियाना।

चक – पु. – सारा, पूरा, एक स्वामी की सब भूमि को एक ही स्थान पर होना।

चक-चक करनो – क्रि.वि. – झगड़ रहा, लड़ रहा, चिकचिक कर रहा, विवाद।

चकचकाट – क्रि. – उजला, साफ सुथरा, चमकदार।

चकती – स्त्री. – गोल कतरन।

चकपक – वि. – साफ सुथरा, स्वच्छ, लिपा-पुता।
चकबंदी – स्त्री. – भूमि को कई भागों को एकत्र करना, आसपास के कई खेतों को मिलाकर एक चक बनाना।
चकमक – स्त्री. – एक प्रकार का पत्थर जिस पर चोंट पड़ने पर आग निकलती है, चकमक का पत्थर।
चकमो – वि. – भुलावा, धोखा।
चक्या – क्रि. – चखा हुआ, जिस वस्तु को चख लिया हो।
चक्कर – क्रि. – फेरा, झंझट, गाड़ी का पहिया, पीछे-पीछे घूमना, परिक्रमा।
चक्कर-काटणो – क्रि. – चक्कर लगाना।
चक्करव्यू – वि. – भूल-भुलैया, चक्रव्यूह जिसमें अभिमन्यु फँस गया था, सेना का जमावड़ा।
चकराणो – क्रि. – चकरा जाना, चकित होना।
चकरी – स्त्री. – एक प्रकार की छोटी चक्की, खिलौना जो हाथ से घुमाने पर घूमता है, भँवरी।
चकलो – पु. – पत्थर या लकड़ी का बना गोल पाटा जिस पर रोटी, पूरी आदि बेलते हैं, नगरवधू निवास।
चक्को – सं. पु. – चाक, दही का चक्का, गुड़ का चाका।
चक्की – स्त्री. – आटा चक्की, बेसन की बनी एक प्रकार की मिठाई चक्की।
चकता, चकत्ता – पु. – रक्त विकार के कारण शरीर पर पड़ने वाला दाग।
चकलाघर – सं. – नगरवधू निवास, वेश्यालय, रण्डीघर।
चकल्यो – पु.– मिट्टी का छोटा घड़ा, मटका।
चकवा – पु.सं. – चक्रवाक, सुरखाब पक्षी।
चकवी – स्त्री. – मादा चकवा, मादा सुरखाब।
चकवे – पु. – चक्रवर्ती , समग्र संसार।
चकवेराज – पु. – चक्रवर्ती राजा।
चकाचक – वि. – स्वादिष्ट एवं घी में तर माल, चटकीला, मजेदार।
चकोर – पु. – एक प्रकार का तीतर पक्षी, जो चन्द्रमा का प्रेमी होता है। वह अंगार खानेवाला माना जाता है।
चख – क्रि. – चखना, चखो, किसी वस्तु का स्वाद देखने के लिये उसका थोड़ा अंश मुँह में लेकर चखना, स्वाद-परीक्षा।
चख-चख – स्त्री. – तकरार, कलह।
चखने वस्ते – क्रि. – चखने के लिये, आनन्द उठाने के लिये।
चख्यो – क्रि. – चख लिया, स्वाद ले लिया।
चखल्यो – पु. – मटका, घड़ा, क्रि. – चखने का कार्य कर लिया।
चखी हुई – स्त्री. – किसी खाद्य पदार्थ का स्वाद लिया हुआ, जूठी, चखा हुआ, जूठा किया हुआ।
चग – स्त्री. – माथे की लट, सिर के बालों को पृथक्–पृथक् समूह में काटना, सिर की लटें, मनौती के रखे हुए बाल।
चंग – स्त्री. – डफ की तरह का वाद्य, एक बाजा।
चगदो – वि. – चूर्ण, चूरा, बारीक, महीन, कचूमर।
चगल्यवेड़ – चुलबुलापन, छेड़खानी।
चगल, चगली – चबाना, धीमे-धीमे चबाना।
चगा – सं. – मनौती के बाल रखना, बालों की लटें।
चगाबोल – क्रि. वि. – जाल में फँसना, चंगुल या कब्जे में आना।
चंगा, चंगो – पु. वि. – स्वस्थ, निरोग, बढ़िया, अच्छा, भला।
चगे – क्रि. – दूर हटे, दूर रहे, दूर होवे, अलग रहे।
चंगेड़ली – पूजा की सिगड़ी।
चंगेरे – क्रि. – बनावे।

चंगेरी – वि. – प्रसन्न।

चगो – पु. – माथे की लट, क्रि. – दूर हटो, खिसको, चुगो।

चघलणो – पु.पि. – चगलना, चबाना।

चंचलई – स्त्री. वि. – चंचलता, चपलता।

चचा – पु. – चाचा, काका।

चची – स्त्री. – चाची, काकी।

चंचू – स्त्री. – चोंच।

चचू, चचया – पु. – चाचा या काका के लिये प्रिय सम्बोधन।

चचूंम्बो – वि. – अनोखी या आश्चर्यजनक चीज।

चट – वि. – शीघ्र, तुरन्त, जल्द, त्वरित, क्रि. – चाटना, चट करना, सब खा जाना।

चटई – स्त्री. – बिछाने की चटाई, सादड़ी, क्रि. – चटवा दी।

चंट – वि. – तेज, चालाक, चुस्त, धूर्त।

चटक – सं. – नारियल की गिरी का टुकड़ा, चिड़िया, बिना बाल का सिर।

चटकचाला – ठिठोली करना, हँसी मजाक करना, छेड़ना, छेड़छाड़।

चटक चाँदणी – स्त्री. – चमकती चाँदनी रात, खिली हुई चाँदनी।

चटकणो – क्रि. – टूटना, चमकना, दर्द करना।

चटकदार – वि. – भड़कीला, स्वादिष्ट, चटपटा, तड़क भड़क वाला।

चटकन – वि. – चटकना, टूटना, कोई कार्य तुरन्त होना, झट।

चटक-मटक – स्त्री. वि. – बनाव, श्रृंगार, नाज-नखरा।

चटका-करीर्‌यो – पु. – व्यर्थ के काम कर रहा, छेड़छाड़ कर रहा।

चटका, चटको – वि. – धींगामस्ती, उद्यमी, पीड़ा, दर्द।

चटको – नं. – इतराना, नखरे करना, डंक लगना, चूभना।

चटको चाल्यो – क्रि.वि. – दर्द होने लगा, तकलीफ होने लगी, पीड़ा शुरू हुई, फोड़े आदि का चटकना।

चटपट – वि. – तुरन्त, शीघ्र, उसी समय।

चटपटी – स्त्री. – जायकेदार, मसालेदार।

चटसार – स्त्री. – पाठशाला, मदरसा।

चटणी – स्त्री. – चटपटी वस्तु।

चट्या – सं. – एक आभूषण, एक चिड़िया के लिये प्रतीक शब्द।

चट्टा, चट्टो – स्वादिष्ट व्यंजन को ही खाने वाला, चटोरा जिसे स्वादिष्ट चीजें ही खाने-पीने की लत हो, स्वाद लोलुप।

चट्ट्यो – पु. – लाठी, लठ, लकड़ी का डण्डा।

चटाक – पु. – मारने, गिराने या टूटने का शब्द।

चटा-पटा – क्रि.वि. – सिर के बाल काढ़ने का तरीका।

चटाक-फटाक – पु. – तुरन्त, शीघ्र।

चटापड़नो – छाला या फफोला पड़ जाना, शरीर पर चकत्ते हो जाना।

चट्टा-बट्टा – पु. – एक प्रकार का काठ का खिलौना, वे गोले जो बाजीगर झोले में से निकालकर तमाशा दिखाते हैं। एक ही किस्म के परस्पर पूरक व्यक्ति।

चटिया, चट्या – सं. – एक आभूषण, अँगूठी।

चट्टी आँगली – स्त्री. – कनिष्ठिका, अँगुली, दुकान। (चट्टी बनिया लूट ओर लूटे फिरंगी। मा.लो. 688)

चट्टोराल्यो – क्रि. – माँग करी, बालों में कंघी की, बाल सँवारे।

चट्टो टाल्यो – बालों का विभाजन करना, थोड़े थोड़े बाल अलग अलग करना। (बेन्या बारे जणी मिल चट्टो टाल्यो तो तेरे जणी मिल गुंथ्यो। मा. लो. 348)

चट्टो – वि. – बहुत बढ़िया खाद्य पदार्थ सेवन करने की ही जिसकी लत पड़ गई हो ऐसा चट्टा व्यक्ति, चटोरा, बार–बार खाने वाला।

चटोकड़ो – वि. – चटोरा, चट्टा, बढ़िया पकवान

खाने वाला, अच्छे पकवान का सेवन करने वाला।

चट्ठा पड़ना – क्रि. – चाठे पड़ने, दाग होना, धब्बे होना।

चड़क्ली – स्त्री. – चिड़िया।

चड़ग्यो, चड़ग्या – क्रि.पु. – चढ़ गये, चढ़ गया, ऊपर चढ़ना,। वि. – चिड़ जाना।

चड़ छूटवा लागी – क्रि. – चिड़ होने लगी।

चड़चड़ो – क्रि.वि. – चिड़चिड़ा होना, क्रोधित होना।

चड़चड़णो – क्रि.वि. – चिड़चिड़ापन होना, तड़तड़ाना।

चंडी – स्त्री. – दुर्गा, कर्कशा, दुष्ट स्त्री।

चड़णो – ऊपर होना या करना, नीचे से ऊपर को जाना, चढ़ना, सेवन किये हुए पदार्थ से पेट चढ़ना, पेट फूलना, सवार होना, नदी तालाब आदि के पानी का बढ़ना, तवा, भगोना, डेक्ची आदि को चूल्हे पर चढ़ाना, मोल-भाव बढ़ना, जोश में आना, हमला करना, सवार होना, कर्ज होना।
(खाता तो वा खई गई नाना को चढ्यो पेट। मा.लो. 560)

चड़ता चूरमा – वि. – घी-शक्कर मिश्रित रोटी या बाटी का चूरमा।

चड़वारा – पु. – चढ़स चलाने या हाँकने वाला कृषक, किसान।

चड़स – स्त्री. – चरसी, चमड़े का मटकेनुमा पात्र जिसके एक ओर सूँड या मुँह होता है। इसमें पानी भरकर कुँए से बाहर निकालकर फसल को पानी पिलाया जाता है।

चड़ाणो – चढ़ाना, अर्पण करना, भेंट करना।
(चरण चढ़ावाँ वो पंथवारी माता फूलड़ा। मा.लो. 628)

चड़ाव – ऊँचाई का मार्ग, चढ़ाई, नदी के पानी का बढ़ाव, ज्वार।

(तो तीसरी मंजल का चड़ाव पे से पड़ी। मो.वे. 54)

चल्डावणी, चल्ड़ावनी –क्रि.वि. – चिढ़ाने की वस्तु, चिड़ाने के लिये कहे गये शब्द या गाली आदि।

चड़ावणो – चढ़ावना, नीचे से ऊपर की ओर ले जाना, दूल्हे को तेल हल्दी लगाना, चढ़ाना।
(गोरा लाड़ा ने तेल चड़ावत वई। मा.लो.368)

चंडाल – वि. – चाण्डाल, अति क्रोधी व्यक्ति, कसाई।

चंडाली, छूटी – क्रि.वि. – क्रोध उत्पन्न हुआ, क्रोध आया।

चड़ाव, छड़ाव – स्त्री.सं. – सीढ़ियाँ, पाये, पैर, जीना, उज्जैन का द्वादशवर्षीय प्रसिद्ध सिंहस्थ मेला।

चड़ावो – क्रि. – भेंट या दान की वस्तु, विवाह की रस्म में वर की ओर से वधू को दी जाने वाली भेंट।

चंडी – चंडिका देवी, दुर्गा, कर्कशा स्त्री, महाकाली।
(चेत चंडी, कोन हे घमंडी। मो.वे.57)

चड़ी – स्त्री. सं. – चिड़िया।

चड़ी गई – स्त्री. – चढ़ गई, ऊपर चढ़ी।

चड़ीगी – स्त्री. – चढ़ गई, ऊपर चढ़ी।

चड़ी ने पड़ी – चढ़े सो पड़े।

चड़ीयें – स्त्री. – चिड़िया को।

चंडू – पु. – अफीम का वह भाग जो नशे के लिये तमाखू की तरह पीते हैं।

चंडू खाने की गप – नशे की धुन में नशेबाजों द्वारा गप्प हाँकना।

चड़ो – पु. – चिड़ा।

चड़ोतरी – क्रि. – भेंट, चढ़ावे की वस्तु।

चड़ – क्रि. – चढ़ाई, आक्रमण, हमला, चड़स।

चड़नो, चड़णो – क्रि. – चिड़ना, ऊँचा होना, अकड़ना, चढ़ना।

चड़ायो – क्रि. – चढ़ाया, भेंट किया, ऊपर चढ़ा।

चड़ावो – वि. – भेंट की वस्तुएँ।

चड्डी गाँवणी – धौंस जमाना।

चण – वि. – थोड़ी सी वस्तु, कण, अन्न के दाने।

चणगट – चाँटा, थप्पड़ मारना।

चण्यारी-छाणियाँ – स्त्री. – टोकरी में कण्डे उठाये स्त्री की आकृति।

चण्यारी-पण्यारी – स्त्री. – कण्डे याने छाणा की छणियारी एवं पानी भरने वाली पनिहारी– इन दो मेहनतकश स्त्रियों का शिल्प उमठवाड़ी क्षेत्र जिला राजगढ़ के माचलपुर कस्बे में शिल्प कला के उत्कृष्ट नमूने हैं। इस कस्बे की पहाड़ी पर बनी ये शिल्प कृतियाँ पुरातत्त्व की धरोहर है। कहते हैं गागोरनी के जागीरदार ने अपनी तोप के निशाने से इसका कुछ भाग तोड़ दिया था।

चण चुगे – थोड़ा आहार करना।

चण-चण – क्रि.वि. – बहुत कमी, तंगी।

चणा – सं.ब.व. – चने।

चतर, चत्तर – वि. – चतुर, पटु।
(चत्तर भारा भायला। मा. लो. 618)

चतरई – वि. – चतुराई, पटुता।
(सीता बिना म्हारी सूनी रसोई कोन करे चतरई। मा.लो. 695)

चट-पट – क्रि.वि. – तत्काल।

चतरभुज – वि. – चार भुजाओं वाले, विष्णु।

चतुरसीमा – क्रि.वि. – खेत के चारों ओर की सीमाबंदी।

चंत – चित्त।
(कंवर चंत धरणी तो आछा आछा घोड़ला वेंचाय राम रघुवंशी घोड़ी। मा.लो.185)

चंते चढ्यो – चित्त में चढ़ा हुआ।

चंत धरणी – चित्त पर चढ़ना, चित्त में धारण करना। कँवर चंत धरणी तो ई कुण खरचेला दाम राम रघुवंशी घोड़ी। मा.लो. 185)

चतरई – चतुराई, सफाई, पवित्रता, चतुरता, चालाकी, होशियारी, सावधानी।
(झगमग रजरी पेरण री चतरई हो राज। मा.लो. 518)

चंदण – सं. पु. – चन्दन का पेड़।

चंदरकला – वि. – चन्द्र की कला।

चंदर – सं. पु. – चन्द्रमा।

चंदरमा – पु. – चन्द्रमा।

चंदरगरण – क्रि.वि. – चन्द्रग्रहण।

चंदरमुखी – स्त्री.वि. – चन्द्रमा के समान सुन्दर मुखवाली।

चंदरहार – वि.–चन्द्रहार, गले का आभूषण।

चंदा – पु. – चंदा, चन्द्रमा, जनता से धन एकत्र करना।

चंदा मामो – पु. – बच्चों को बहलाने के लिये चन्द्रमा का वाचक शब्द।

चंदावदणी – चन्द्रमुखी, चन्द्रमा के समान मुख वाली, चन्द्रवदना।
(चंदावदनी ओ टीको लोड़ी रो म्हारी मारुणी। मा.लो. 446)

चंदी – घोड़े-घोड़ी को दिया जाने वाला चना आदि अनाज।

चंदीया – जली रोटी, दाग वाली रोटी, चाँदकी, दाग वाले चन्द्र के समान, सूखी रोटी।
(ये चंदीया ये चंदीया भँवरलालजी के घर की ये चंदीया। मा. लो. 428)

चंदो – पु. – चन्द्रमा, चंदा करना।

चनगट – हाथ की कलाई का एक आभूषण जिसमें एक नीलम व एक सोने के दाने के क्रम से पाँच– पाँच होते हैं, पोंची।
(म्हे पेराँ ओ केसरिया चनगट म्हे पेराँ पण हाँजी म्हारी मारुणी ओ गेणो। मा.लो. 446)

चना – पु.सं. – चने, बूँटे, छोला।

चनीक – वि. – थोड़ा, स्वल्प।

चंपई – वि. – चंपा के फूल के रंग जैसा, पीला।

चपटी – वि. – चपटे नाक वाली, समतल।

चपत – हल्की थप्पड़, चोट या हानि।

चंपत – वि. – गायब, अदृश्य।

चपर-चपर – क्रि.वि.– बीच-बीच में बोलना।

चप्पल, चम्पल – स्त्री. – दो तीन बद्दी वाली खुली जूती।

चपरास – स्त्री. – चौकीदार का बिल्ला।

चपरासी – नौकर।

चंपाकली – स्त्री. – चंपा की कलियाँ, गले का आभूषण।

चपाती – सं. स्त्री. – रोटी, पतला फुल्का।

चंपी – क्रि. – अंग-मर्दन, सिर की मालिश।

चबदणो – क्रि. – दबाना।

चबद्दी – क्रि. – दबा दी।

चबर-चबर – क्रि.वि. – बोलते रहने वाला।

चंबल – स्त्री. – मालवा की एक नदी।

चबल्लो – वि. – बातूनी।

चबलावे – वि. – मूर्ख बनाना।

चबाणो – चबाना, खाना चबा चबा कर खाना, दाँतों से कुचल ना, काटना। (पाका सा पान कलाई को चुनो चाबेगा श्री भगवान। मा.लो. 606)

चबीणो – सु.पु. – चबाने की खाद्य वस्तुएँ।

चबूतरो – पु. – चोंतरा या ओटला।

चबोली रानी – वि.स्त्री. – अधिक बोलने वाली रानी, बातूनी, लोककथा की प्रमुख पात्र पाताल की सुन्दरी जिसने राजा विक्रमादित्य से विवाह किया और छल करके सन्तान उत्पन्न की थी।

चमक चाँदणी – क्रि.वि. – चमकती चाँदनी।

चमकणो – क्रि. – चमक जाना, डर जाना, चौंकना, चमकना, संदेह करना, संदेह होना, प्रकाशित होना, झिझकना, ऐश्वर्य बढ़ना। (देराणी ने लागो बड़ो चमको। मा.लो. 551)

'च'

चमचमाट – वि. – जगमगाहट, चमकीला।

चम्मड़ छोल – वि. – चमड़ा निकालने वाला।

चमचो – सं. पु. – चम्मच, हाँ में हाँ मिलाने वाला व्यक्ति, जी हूजूरी करने वाला, चमचागीरी करना। (नणद बिजली म्हने चमचा से मारी। मा.लो. 555)

चमनी – स्त्री. – चिमनी।

चरई – क्रि. – पशुओं के चरने या चराने का काम। (सब सखियन की गाय चराई। मा.लो. 686)

चरक – क्रि.– थोड़ी–थोड़ी पतली दस्त आना, आयुर्वेद का एक ग्रन्थकार।

चरकंड – भोजन में नखरे करने वाला।

चरकला – चीड़े, चिड़िया। (काकाजी खेत चरकला चुगी गया। मा.लो. 496)

चरको – वि. – चरखा, तेज मसाले, चरकना, बुरा लगना।

चरखी – स्त्री. – गन्ना पेरने का यन्त्र, कपास आदि ओटने का यन्त्र।

चरखो – पु. – सूत बनाने का यन्त्र, हाथ करघा।

चरण – सं. – पैर, पाँव, छंद की एक पंक्ति।

चरणो – क्रि. – चरना, चराई का कार्य करना, चुगना, खाना।

चरण पखारना – क्रि. – चरण धोना, पाँव धोना।

चरनो – चरना, पशु का विचरते हुए घास खाना।

चरपरी – चरकी, तीखी, तेज, अधिक बोलने वाला। (पीपलामूल लागे चरपरी। मा. लो.42)

चरबी – वि. – मज्जा, चर्बी।

चरर-मरर, चल्ड-मल्ड – पु. – कड़ी या चिमड़ी वस्तु के दबने या मुड़ने का शब्द, बींछू वाले जूते

के बजने की ध्वनि।

चरवा – क्रि. – चरने के लिये, सं. – मटका, गगरा।

चरवा वालो – क्रि. – चरने वाला पशु, खाने वाला।

चरवी, चरवो – सं. – बटलोई, धातु का हंडा।

चरवेता – क्रि. – चलते हुए, चलते रहने वाले।

चरवे हो फुँको – प्रसूता का लोंग का गरम पानी। (जुग जुग जीवजो जेठाणी हमारी, चरवे हो फुँको चड़ा विया। मा.लो.46)

चराचर – वि. – चर और अचर, चेतन और जड़, चल-अचल।

चरावा-जातो – पु. – चराने जाता।

चरित्तर – पु. – चरित्र, करतब, काम, बुरा या अच्छा चरित्र या कार्य, छलपूर्ण आचरण।

चरु – पु. – हवन के लिये पकाया हुआ अन्न, छोटा लोटा, ताम्रपात्र। क्रि. – कुल्ला करना।

चरे – चरना, चलते पशु का घास खाना।

चरो – क्रि.– चरने का काम करो, खाओ।

चलई रियो – क्रि. – चला रहा।

चलके – चमकना, चमके, प्रकाशित होना, ऐश्वर्य बढ़ना, कीर्ति पाना। (म्हारो चूड़ो चलके। मा.लो. 598)

चलक्या – वि. – चमकना, प्रकाशित होना, चलकना। (भाबज रो चलक्यो चुडलो रे म्हारा भतिजा रा झगल्या झूल। मा. लो. 351)

चल दिया, चलद्या – क्रि. – चल दिये, चल दिया।

चलन – पु. – चलने का भाव, प्रचलन, भाव, प्रचलन, प्रथा, रिवाज, बर्ताव, व्यवहार।

चलनो – क्रि.वि. – चलना।

चलनी – स्त्री. – छाननी, आटा छानने का यन्त्र।

चलबल्या – पु.वि. – चिबल्ला, नटखट।

चलाऊ – वि. – ठोस, स्थायी, मजबूत, टिकाऊ, चलने वाला।

चलाक – वि. – चालाक, धूर्त, चालबाज।

चलाकी – वि. – चालाकी, चालबाजी, धूर्तता।

चला चली – क्रि.वि. – सांसारिक आवागमन, जन्म लेना और मरना।

चलावणी – पु. – भाट, गंगा गुरु, ब्राह्मण आदि को दक्षिणा देकर, भोजन करवाकर भेजने की रस्म।

चलावणो – मूर्ख बनाना, उल्लू बनाना, बेवकूफ बनाना, चला रहा।

चवदस – वि. – 14वीं तिथि।

चवन्नी – वि. – चार आने का सिक्का, रुपये का चौथाई भाग।

चवखण्ड्यो – वि. – चारों ओर से बँधा हुआ बाड़ा, मकान या महल।

चँवर – पु. – पशुओं की पूँछ के बालों से बनाया, मक्खी या मच्छर भगाने का पंखा या व्यंजन।

चँवरा, चँवरो – पु.सं. – चँवले (एक प्रकार का दलहन), चौपाल।

चँवर्‍या पूँछ को – क्रि.वि. – सफेद-काले अधिक बालों की पूँछ वाला पशु या बैल, मिश्रित बालों से बना पंखा, चँवर।

चँवर्‍याँ – सं.स्त्री. – विवाह मण्डप के लिये लाये गये मिट्टी के घड़े।

चँवरयाँ की मटकी – स्त्री. – लग्न मण्डप की मटकी।

चँवरी – स्त्री. – चंवर, पंखा, व्यंजन, कतारों में स्थिर की गई मटकियों का समूह, इसमें चूड़ी उतार मटकियाँ चुनी जाती हैं। (धरम करो तो चँवर्‍याँ में करजो पाछे झूठी वाताँ जी। मा.लो. 422)

चँवरी फेरा – स्त्री. – लग्न के समय चारों ओर रखी चँवरी व अग्निकुण्ड के वरवधू द्वारा चक्कर लगाना।

चवलई – स्त्री. – चौलाई की सब्जी, चँवला दलहन के दाने।

चव्वो – वि. – चार की संख्या।

चश्मदीद – वि.फा. – आँखों देखा।

चश्को / चस्को – पु. – आदत, लत।

चहलकदमी – स्त्री. क्रि. – धीरे-धीरे टहलना।

चहेतो – वि. – प्यारा, प्रिय।

चा

चा – स्त्री. – चाय, चाह।

चाक – सं. – चक्र-कील पर घूमने वाला चक्राकार पत्थर जिस पर कुम्हार बर्तन बनाता है, पहिया, खड्डू, खड़िया, मिट्टी से बनी लेखनी।

चाकर – पु. – नौकर, सेवक, चाकरी या सेवा करने वाला, भृत्य।

चाकरी – वि. – सेवा-सुश्रुषा, नौकरी। (नईं छूटे राणाजी की चाकरी वो कुरजन। मा.लो. 611)

चाका – पु. – चाक, चक्र, पहिया।

चाकी – स्त्री. – चक्की, अनाज पीसने की हाथ चक्की, घट्टी, गुड़ की चौकोर या गोल भेली (डली)।

चाकू – पु. – छुरी, चक्की।

चाको – पु. – चाक, चक्र, गुड़ जमाने के लिये मिट्टी का बनाया हुआ परात जैसा चाका, जिसमें गुड़ की चाशनी ठण्डी की जाती है।

चाखणो – क्रि. – चखना, स्वाद लेना। (जूता में जलेबी लागी हमने तोड़ी ने तमने चाखी। मा.लो. 542)

चाँग – सं. – एक डफ वाद्य, खंजड़ी।

चाचरो उगाड़ो – खुला सिर, सिर पर पल्लू न होना।

चाचा – पु. – काका, पिता के छोटे भाई।

चाची – स्त्री. – काकी, काका या चाचा की स्त्री।

चाचो – पु. – चाचा, काका।

चाँचोड़ा चेड़ना – चुभने वाली बात कहना, चूभती बात कहना।

चाछ – स्त्री. – छाछ, मठा।

चाट – वि. – चट्टान, काले एवं कठोर पत्थर की चट्टान, स्त्री. – पानी-बताशा, कचौड़ी-समोसा आदि चाटदार खट-मीठे खाद्य पदार्थ।

चाटणो – स्त्री. – पशुओं का तरल खाद्य-पेय, जीभ से रगड़कर चाटने की वस्तुएँ, लेह्य।

चाँटा – पु. – थप्पड़।

चाठ – वि. – कठोर, काला पत्थर, चट्टान।

चाड़ी – स्त्री. – मिट्टी की हंडिया, दोहनी, मटकी।

चाणपण्याँ – वि. – हँसी-ठ्ठा।

चाण्णो – पु. – चलना, बड़े छिद्रों वाली वह वस्तु जिससे आटा, मिट्टी या रेती छानने का काम लिया जाता है।

चाती – स्त्री. – धातु या चमड़े का गोल या चौकोर टुकड़ा, मालवी में बाल क्रीड़ा का प्रकार। आती पाती चामड़ा की चाती।

चातुर – चतुर, होशियार, बुद्धिमान, चतुराई, निपुण, व्यवहार कुशल। (चातुर चुम्मो दे गई बेवईजी मूरख मसले हाथ। मा.लो. 541)

चातो – वि. – चाहता।

चाँद – पु. –चन्द्रमा, नारी का शिरोभूषण।

चाँदका – स्त्री.ब.व. – रोटियाँ, छोटी रोटी।

चाँदकी – स्त्री. – छोटी रोटी।

चाँद-तारा – पु. – चाँद और तारे वाला बूँटीदार कपड़ा।

चाँद-सूरज – पु. – चन्द्रमा और सूर्य।

चाँदणी – स्त्री. – चन्द्रप्रभा, चन्द्र प्रकाश। (चाँदा थारी चाँदणी-सती पलँग बिछाय।)

चाँद्याँ – स्त्री. ब. व.–छोटी रोटियाँ, चाँदी।

चाँदा पे – स्त्री. – घर के मध्य की दीवार का सिरा, रेखागणित के काम आने वाला चाँदा नामक उपकरण।

चाँदरो – पु. – चादर, बिछाने या ओढ़ने का वस्त्र।

चाँदी होणी – काम बनना, लाभ होना, फायदा मिलना।

चाँदे – पु.– घर के मध्य की ऊँची दीवार का सिरा।

चाँदी – स्त्री. – श्वेत धातु, गणित हल करने का उपकरण, घर के मध्य की ऊँची दीवार का अन्तिम सिरा जिस पर लकड़ी का आड़ा रखा जाता है, चाँदी धातु।

चानपण्याँ – क्रि.वि. – हँसी-ठठ्ठा, हँसी-मजाक।

चान्याँ बेड़ – क्रि.वि. – हँ सी मजाक, हँसी–ठठ्ठा।

चान्यो – पु. – नासमझ, अज्ञानी, मूर्ख।

चाप – पु. – धनुष।

चापक – स्त्री. – चाबुक।

चापका, चापको – स्त्री. – चाबुक।

चाँप – स्त्री. – धनुष की कमान, बंदूक का घोड़ा, गठ्ठर बाँधने का यन्त्र।

चापटो – वि. – चपटा, दबा हुआ।

चापड़ा, चापड़ो – वि. – गेहूँ, जुवार आदि अनाजों के आटे से निकला हुआ चोकर, भूसी या छिलका, एक बस्ती का नाम।

चापलूस – वि. – खुशामदी, चापलूसी करने वाला।

चापलूसी – स्त्री.वि. – खुशामद।

चाँपलो – पैर पंजे ठीक न होने से गति में अन्तर।

चाँपा – स्त्री. – चम्पा का वृक्ष, चम्पा का फूल, चाँप।

चाँपाकली – स्त्री. – चंपा की कली।

चाबका – स्त्री. – चाबुक, कश।
(इन्दर चबका। मा.लो.615)

चाबणो – क्रि. – चबाना, चबा-चबाकर खाना।

चाबी – स्त्री. – कुंजी, ताली, बाजे के सुर की पट्टी, क्रि. – चबाई।

चाम – पु. – चमड़ा खाल।

चामचड़ी – स्त्री. – छोटी चिड़िया।

चामड़ी – स्त्री. – चमड़ी, खाल।

चामड़ो – पु. – चमड़ा, खाल।

चामर – पु. – चँवर, बालों से बना पंखा जिससे मक्खी, मच्छर भगाये जाते हैं।

चाय – स्त्री. – चाय की पत्ती, चाहना, इच्छा करना।

चायनी – स्त्री. – नहीं चाहिये।

चारण – पु. – राजाओं एवं बड़े आदमियों का यशोगान या कीर्ति का बखान करने वाली जाति।

चारणो – पु. – चलना, चराना, चराई का कार्य करना, छलना।

चारनी – स्त्री. – चलनी, छलनी, आटा छानने का यन्त्र।

चार पगो – पु. – पशु, चौपाया।

चार पट्टाराणी – पहेली – पूर्व प्रचलित रानी छाप चार चवन्नी या एक रुपया।

चारपई, चारपाई – स्त्री. – खटिया, खाट, पलंग, रस्सी से बुनी खटिया।

चारा, चारो – पु. – घास, चारा।

चारा की कोरी – घास का पूले का भाग।
(काली हाँडी ने चारा की कोरी। मा.लो. 704)

चारी आड़ी – वि. – चारों तरफ।

चारी – स्त्री.क्रि. – चराई, चारों।

चारी खूण्याँ – पु. – चारों कोने, चौकोर, चारों कोनों पर।

चारी मेर, चारूँ मेर – अव्य. – चौतरफा, चारों ओर।

चारे लागणो – अन्य काम में लग जाना, नींद का न आना, उकसाना, किसी भी बात में आ जाना।

चारो – क्रि. – उपाय, युक्ति, तरकीब, घास।
(ओर र कई चारो नी व्हे।)

चारोली – स्त्री. – चिंरोजी, अचार, एक मेवा।

चाल – क्रि. – चल, चलने की क्रिया या गति, चलने का ढंग, आचरण, व्यवहार-बर्ताव, रीति, युक्ति, परिपाटी, छल-कपट, धूर्तता, तरकीब, शतरंज,

ताश या चोसर आदि की चाल, चाल–चलन, ढंग, तर्ज।

चाल चलऊ – क्रि.वि. – अस्थायी कर्म जिससे कमा चालू हो जाए।

चालक – पु. – चलाने वाला, संचालन करने वाला, संचालक।

चालणो – क्रि. – चलना, स्त्री. – आटा छानने का यन्त्र, विदा कराके घर ले आना। (चालणो तो वाट को, फेर व्हे तो, छो व्हेतो।) चलना तो रास्ते का अच्छा, फिर चाहे चक्कर ही क्यों न खाना पड़े।

चालणी – ना. – छाननी, छलनी, चलनी। (चालणी में दूध काढ़े। मो.वे.48)

चालबा – क्रि. – चलने के लिये।

चालबाज – वि. – चालाकी करने वाला।

चाल्या-चाल्या – क्रि.वि. – चले-चले, चलते-चलते।

चालाक – वि. – चालबाज, धूर्त।

चालाकी – स्त्री. – चालबाजी, धूर्तता, मक्कारी।

चाला – वि. – छेड़छाड़, परेशान करना।

चालान – क्रि. – चलना, जाना, पुलिस द्वारा आपराधिक कर्म के लिये कोर्ट या न्यायालय में अपराधी को प्रस्तुत करना, कोई रकम चालान द्वारा खजाने में जमा करवाना।

चालीसो – वि. – चालीस दिन में निकाला जानेवाला मोहर्रम या ताबूत विशेष, चालीस पद्यों वाला काव्य यथा हनुमान् चालीसा, समूह।

चालूँ – क्रि. – चलूँ, चलने का उपक्रम करूँ।

चालू – वि. – चलत, प्रचलित, सामान्य, चतुर, आरम्भ, चलती हाल में खुला, गतिमान।

चाले – चलना, हलचल। (हिवड़ा में चाले हिलोल रसिया। मा.लो. 574)

चाले लागी – स्त्री. – बातों में लगना, इधर-उधर के कार्यों में मन रमना।

चालो – वि. – भूत– प्रेत बाधा, भूत– प्रेत डायन चुड़ैल आदि की बाधा से शरीर की विकृति, चलो। (घरतो चालो आपणा। मा. लो.616)

चाव – वि. – चाह, वासना, शौक, आदत, रस।

चावणो – क्रि. – चबाना, चाबना, चबा चबा कर खाना।

चाँस – स्त्री. – हल या नाई यन्त्र से खेत में कतारें बनाना, चाँस लगाना, खेत में पंक्तियाँ।

चासणी, चासनी – स्त्री. – शकर या गुड़ आदि में पानी डालकर मिठाई के लिये चासनी तैयार करना।

चि

चिक-चिक – विवाद करना।

चिकट, चिकटो – वि. – चीठा रहने वाला, तेल की चिकनाई में सना हुआ।

चिकणी – चिकनी वस्तु, पत्थर आदि चिकना, कंजूसी, चिकनाई वाली वस्तु। (चिकणी सिल्ला देखी एड़ी मती घसजो। मा.लो. 600)

चिकल – गाड़ी के पहिये की रोक का कीला, जो धरेण में लगता है।

चिकत्ती – चिकती, चमड़े या कागज का टुकड़ा।

चिकणो – वि. – चिकना।

चिन्दा, चिन्दी – वि. – फटे पुराने वस्त्रों के या कागज के टुकड़े।

चिकनई – वि. स्त्री. – चिकनाई, स्नेहयुक्त, चिकनापन।

चिखली, चिकली – स्त्री. – चिड़िया, चिरैया, उड़ने वाली छोटी चिड़िया, एक बस्ती।

चिकार – आवाज।

चिकित्सक – पु. – चिकित्सा करने वाला, वैद्य।

चिखली – स्त्री. – चिरक ली, चिरैया, छोटी चिड़िया।

चिंचड, चिंचड़ो – पु. – एक जंगली पौधा जो दवा के काम आता है, अपामार्ग, लट, जीरा, उल्टी सीधी रेखा।

चिटकणी – स्त्री. – अटकनी, द्वार बन्द करने की चिटकनी।

चिटकल्या – वि. – छेड़छाड़, परेशान करना।

चिटुकला – वि. – चुटकुले, हँसी मजाक की बात।

चिट्ठी – स्त्री. – पत्र चिट्ठी, मृत्यु का सूचना पत्र।

चिंटी – स्त्री. – चिऊँटी, च्यूँटी।

चिठड़ो – स्त्री. – मृतक के उत्तर संस्कार के लिये रिश्तेदारों को भेजी जाने वाली चिट्ठी।

चिड़नो – क्रि. – चिड़ना, नाराज होना।

चिड़ावणो – क्रि. – चिढ़ाना, नाराज करना, खिजाना, उपहास करना, झुँझलाना, कुढ़ना।

चिड़ी – स्त्री. – चिड़िया, क्रि.स्त्री. – चिड़ गई।

चिड़िया – स्त्री. – चिड़िया।

चिड़ीखानो – पु. – चिड़ियाघर।

चिड़ी गयो – क्रि. – चिढ़ गया, खीज गया।

चिड़ीमार – पु. – बहेलिया, पक्षियों का शिकारी।

चित्त – वि. – सीधा, स्त्री.– मन, चित्त।
(चित्त से उतरिया। मा.लो.487)

चित चितायो – चित्रों की चित्रित।
(चित चितायो कुलड़ो रे गाड़्यो हे डेयल माय। मा.लो. 40)

चित्ता – वि. – सीधा।

चित्तल – पु. – चीतल, चित्र, मृग।

चितपुट – क्रि.वि. – सीधा उल्टा।

चितकबरो – चितकबरा, कई रंगों का।

चित्तोड़ – पु. – राजपुताने का प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगर, चित्तौड़ गढ़।
(गढ़ तो चित्तौड़ की ओर सब गढ़ैया। ताल तो भोपाल को और सब तलैया।)

'चि'

चितरई गयो – क्रि.वि. – चित्रित किया गया, बन गया, निर्मित हो गया, चित्रावण, उकेरा।

चित्तर – पु. – चित्र, किसी वस्तु की प्रतिकृति, फोटो तस्वीर।

चितरकूट – पु. – एक प्रसिद्ध पर्वत, जिस पर वनवास के समय राम ने बहुत दिनों तक निवास किया था, कामदगिरि।

चितराम – पु. – चित्रकारी की हुई, उकेरे गये चित्र।

चितरा – स्त्री. – नक्षत्र।

चितरावण – सं.क्रि. – माँडणा, अल्पना, राँगोली, तस्वीर बनाना, भित्ति चित्र।

चितराणो – वि. – पहिचानना।

चितवन – वि. – आँखें।

चितरी हुई भीत – क्रि.वि. – चित्रों से भरी हुई भित्ति।

चिंता – वि. – फिक्र।

चिता – स्त्री.– चुनी हुई लकड़ियों का ढेर जिस पर मुरदे को जलाया जाता है।

चिंतारणो – क्रि.– याद करना, स्मरण करना।

चितारियो बुलावाँ – चित्रकार बुलाएँ, चित्रकार को बुलाना, चित्रकार।
(गोरी थारा मंदरिये चितारियो बुलावाँ।)

चित्तो – वि. – सीधा।

चितराम कोर्‌या – क्रि. – चित्र बनाये।

चितावल – स्त्री. – एक प्रकार का सर्प।

चितावल का पेट में उफाण आवे –पहेली चढ़स, नाड़ी, भँवर, ताकल्या एवं हंडोर के संयुक्त क्रियाशील होने से उत्पन्न ध्वनि।

चिथड़ा, चिथरा – वि. – फटे पुराने वस्त्र।

चिंदा, चिंदी – वि. – फटे पुराने वस्त्रों के टुकड़े, कपड़े की कतरन।
(धोबी दीदा चिंदा, चिंदा दीदा दरजी घर। मा.लो.114)

चिपकाणो – क्रि. – चिपकाना।

चिंप्यो – पु. – चिमटा, आग पकड़ने का यंत्र।

चिपर चिपर करे – क्रि.वि. – बीच– बीच में बोलना, मुँह मारना।

चिबल्लो, चिबिल्ली – वि. – चिलबिला, चिलबिली, बीच बीच में बोलने वाला, अधिक बोलने या बात काटने वाला, बातूनी।

चिमड्यो – वि. – जिसकी आँखे चुँधियाती हों, आँखें बन्द या झपक करके बात करने वाला, कंजूस।

चिम्मड़ – वि. – कंजूस।

चिमटी – किसी वस्तु को पकड़ने का दो उँगलियों और अंगूठे का एक सम्पुट, छोटी वस्तु को पकड़ने के लिये चिमटे के जैसा एक छोटा औजार।
(चिमटी दाब पतासा फोड़ूँ, फेर बोले तो कमर तोड़ूँ, खिचड़ी रंदावाँ। मा.लो. 434)

चिमटी रा चुँट्या – चिमटी से तोड़े हुए, उँगलियों और अंगुठे का एक सम्पुट।
(चिमटी रा चुँट्या जाँबू परथ नी भावे। मा.लो. 15)

चिमटो – पु. – चिमटा, आग पकड़ने का यंत्र।

चिमणो, चिमनी – स्त्री. – चिमनी, दीपक जिसमें मिट्टी का तेल जलाया जाता है।

चिमलाणो – क्रि. – मुरझना, कुम्हलाना।

चियाँ – स्त्री. – इमली बीज की बनाई गई दाल जिससे चोसर या चंगपो नामक खेल खेला जाता है।

चिरकली, चिरकलो – स्त्री. पु. सं. – चिड़िया, चिड़ा।

चिरंजीव – पु. – पुत्र, अमर, स्थायी।

चिराल – क्रि. – चिरवा लो।

चिरावणो – चिरवाना, चीरने का काम करवाना, हाथी दाँत व लाख की चूड़ी खेराद पर उतरवाना।
(पीयू म्हारा रे बइयाँ ने चुड़ला चीरावणो। मा.लो. 447)

चिल्ड्यो – पु. – चिढ़ गया, चिढ़ा।

चिलम् – स्त्री. – काली तम्बाखू या जर्दा पीने की मिट्टी या धातु की बनी नलिका।

चिल्लर – स्त्री. – रुपये के खुल्ले पैसे, रेजगारी, फुटकर पैसे।

चिल्लर-मिल्लर – क्रि.वि. – बाल बच्चों के समूह के लिए संकेत शब्द।

चिल्लाणो – क्रि. – चीखना, चिल्लाना, जोर जोर से बोलना।
(जोर से चिल्लाणो। मो.वे.52)

चिवड़ो – पु. – चिवड़ा, चूड़ा चबैना, चाँवल को पकाकर बनाया हुआ चिवड़ा।

ची

चीगटो – चिकनाई, चिकना, स्निग्धता, चिकनापन।
(इ तो सीदेसर जी पूछे वालरीया गोरी चुनड चीगट काँ करीया। मा.लो.पृ.368)

चीकल – सं.पु. – गाड़ी के पहिये की आड़ या रोक हेतु लगाई जाने वाली लोहे की कील।

चीको – वि. – नव प्रसूता गाय या भैंस का निकाला हुआ दूध, ब्याही गाय का पहला दूध।
(भेंस जणी ने पाड़ो पेट में चीको गयो गुजरात गाड़ा मारुजी। मा.लो.541)

चीख – वि. स्त्री. – चिल्लाहट।

चीखणाँ – क्रि. – चीखना, चिल्लाना।

चीखली – स्त्री. – एक ग्राम का नाम।

चीज – स्त्री. – वस्तु पदार्थ, अलंकार, गहना।

चीज बसत – स्त्री. – चीजें , वस्तुएँ, सामान, माला असबाब।

चीजाँ – स्त्री. ब.व. – वस्तुएँ सामग्रियाँ।

चींटी – स्त्री. – चिऊंटी, च्यूंटी, कीट।

चींटो – पु. – कीट, मकोड़ा, गुड़ में लगने वाला बड़ा चींटा।

चींठड़ो – स्त्री. – मृतक श्राद्ध की सूचना देने वाली चिट्ठी।

चीठी – स्त्री. – चिट्ठी पत्री, कागज।

चीठो – वि. – चीठा, चमड़े जैसी चीठी वस्तु, वि. – कंजूस।

चीण – स्त्री. – वस्त्र की ओठ बाँधने वाली गडारी, चुन्नर, गोंट बाँधने का कपड़ा, पायजामे या पेटीकोट के सिरे की वह जगह जिसमें नाड़ा डाला जाता है, नेफा, चीन देश।

चीतर्यो – चित्रों से अलंकृत करना। (घड्यो रे घड़ायो बाजोट जावद जाई चीतर्यो। मा.लो. 182)

चीत्कार – पु. – चिंघाड़, चिल्लाहट।

चींतना, चींतणो – क्रि. – मन में सोचना, विचार करना, चिन्ता करना।

चींत्यो – पु. – विचार किया, सोचा मन में याद किया।

चीतल – पु. – जंगली जानवर।

चीतारणो – क्रि. – स्मरण करना, किसी को याद करना।

चींतू – वि. – स्मरण करूँ, याद करूँ, विचार करूँ, सोचूँ।

चींतेअई, चींतेआवी – स्त्री. – याद आई, स्मरण हुआ, याद आया।

चीतो – पु. – सीधा, चित्त।

चीथड़ो – वि. – फटा वस्त्र।

चीनी – वि. – चीन देश का रहने वाला, शक्कर, रेशमी वस्त्र।

चीपड़ो – मिचमिचा, गीजड़ वाला। (व्यइजी का नावी आँख केसी थारी चीपड्यो। मा.लो. 370)

चींप्यो – पु. – चिमटा, आग पकड़ने का यंत्र, चिंप्रिया। (सासूजी म्हने चिंप्या से मारी। मा. लो. 555)

चीबड़ो – खड़ी ज्वार की हरी कड़बी का पशु आहार।

'ची'

चीबड़ी – स्त्री. – ज्वार की खड़ी हुई हरी कड़बी।

चीबल्लो – वि. – चुलबुला, चंचल।

चीमटो – पु. – आग पकड़ने का चिमटा।

चीमड़्यो – वि. – चीठा, कंजूस।

चीयाँ – पु. – इमली के बीज को फोड़कर बनाई हुई सार, जिससे चंग पो खेली जाती है।

चीर – वस्त्र, कपड़ा, लता, दरार। (नीर देखी ने बाई चीर मती धोवजो। मा.लो.600)

चीरा – स्त्री. – रेशमी साड़ी, पगड़ी, पाग, साफा, लीरा, चीर-फाड़, टुकड़ा। (चीरा दई भेजूँ राज। मा.लो. 520)

चीरेला – वि. – सुन्दर वस्त्र।

चीरो – पु. – चीरकर बनाया गया घाव, पगड़ी।

चीलगाड़ी – वायुयान, हवाई जहाज।

चीलड़े गोर – वि. – चिपचिपा गुड़, मीठा गुड़।

चीलर – स्त्री. – शाजापुर नगर की नदी।

चीलरिया – पु. – छोटे–छोटे नाले।

चीस – पीड़ा, दर्द, कराह, चीखना।

चुकल्यो – मिट्टी का छोटा कलश, चुकली।

चुकाणो – सं. – चूकता करना, बाकी न रखना, निपटाना।

चुका चुकी – स्त्री. – बहानेबाजी।

चुँखणो – क्रि. – चूसना।

चुँख्यो – क्रि.– चूस लिया गया, चूसा हुआ।

चुगनो, चुगणो – क्रि. – चुगना, चुनना, बीन बीन कर खाना।

चुग्गो – वि. – कमर में खोसने का चाबी का गुच्छा, चुगी जाने वाली वस्तु।

चुगली – स्त्री. – शिकायत, किसी की बात परोक्ष में किसी से कही जाए। क्रि. – चुगने का कार्य कर चुकी।

चुटइयो, चुटिया – स्त्री. – शिखा, चोटी, वेणी।

चुड़ला – स्त्री. – चूड़ा।

चुड़ेल – स्त्री. – भूतनी, डायन, कर्कशा, कुदृष्टि वाली।
(दिखवा में चुड़ेल। मो.वे.54)
चुदक्कड़ – वि.– कुलटा स्त्री, मालवी गाली।
चुनड़ी, चुनरी – स्त्री. – चुनरी, राजस्थानी साड़ी।
चुनई – क्रि.– चुनना या उसकी मजदूरी।
चुनाणो – चुनना, एक के ऊपर एक रखकर चुनने का काम।
(आमा सामा तो बना मेल चुनावो। मा.लो. 400)
चुनावनी – मतदान।
चुपचाप – वि. – चुप होना।
चुपड़नो – क्रि. – लेप करना।
चुप्पी – वि. – मौन चुप।
चुमकारणे, चुचकारणे – क्रि. – प्रेमपूर्वक चूमने का शब्द करना, दुलारना, प्यार से चुंबन देना, पुचकारना।
चुमली (री) – स्त्री. – गागर के नीचे सिर पर रखने की वस्त्र, छाल आदि को लपेटकर गोलाकार बनाई गयी, गंडुली।
चुम्मो – चुम्बन, चुम्बन देना, चूमना, प्यार करना।
(चातुर चुम्मो देगई जी। मा. लो. 541)
चुयो – वि. – पानी की बूँदें छत से टपकीं।
चुराई गयो – क्रि. – चकना चूर हो गया, चूरा हो गया, चोर ले गया।
चुरणो – वि. – मसलना, चूरना।
चुरमो – वि. – चूरमा, चूरा हुआ भोजन।
चुराणो – वि. – चोरी करना।
चुल्लू – वि. – गहरी की हुई हथेली, थोड़ा स्वल्प, अल्प।
चुवणो – वर्षा का पानी खपरैल या छाजे से टपकना या रिसना, टपकना।
चुवा – पु. – चूहे, टपका, पानी की टपकन।
चुवाण – वि. – चौहान वंश।
चुवो-चुवो – क्रि.वि. – प्रफुल्लित होना।
चुसणी – स्त्री. – मुँह में डालकर चूसने का खिलौना, छोटे बच्चों को दूध पिलाने की शीशी।
चुस्ती – वि. – फुर्ती, तेजी, कसावट।
चुहिया, चुईया – स्त्री. – चूहा।

चू

चूक – स्त्री. – भूलने या चूकने की क्रिया या भाव, गलती होना, भूल, विस्मरण होना।
चूकणो – क्रि. – भूलना, चूकना, विस्मरण होना, असावधानी, गलती करना।
चूँख – स्त्री. – चूसना।
चूँखणो – क्रि. – चूसना।
चूँच – स्त्री. – चोंच, चंचु।
चूँटणो – तोड़ना, चूनना।
(चट चट चुटुली मोगरो। जणी री गुँथुँ वरमाल। मा.लो.234)
चूठ्यो – वि. – जूठा, जूठन।
चूड्याँ – स्त्री.ब.व. – चूडियाँ।
चूड़ला – स्त्री. – चूड़ियाँ, हाथी दाँत का बना चूड़ा, खाँच।
चूड़िलो – स्त्री. – चूड़ामणि।
चूड़ी चटकना – क्रि. वि. – टूटना।
चूँदड़ी – स्त्री. – चुनरी, राजस्थानी साड़ी, बिन्दी की छाप की साड़ी।
चून – सं. – आटा।
चूनो – सं. – चूना, कलाई करने की वस्तु, पत्थर को भट्टी में जलाकर बनाया गया सफेद क्षार।
चूमणो – चूमना, चुंबन करना।
(भाभी को हाथ पकड्यो हथेली के चूमी। मो.वे.56)
चूमली, चूमड़ली – स्त्री. – सिर पर वजन को हल्का करने के लिये वजन के नीचे लगाई जाने वाली कपड़े आदि की बनी हुई गोल आधार, गडूली।
चूयो – क्रि. – वर्षा का पानी खपरैल या छाजन

से टपकना या रिसना।

चूर – वि. – चूरा, धूलि।

चूरमो – घी, गुड़ या चीनी के साथ बाटे आदि को चूर करके बनाया हुआ चूरमा, मधुरान्न, आटे या रवे की एक मिठाई। (बाटी लागो दाग चूरमो कायो रईग्यो रे। मा.लो. 559)

चूरी, चूरो – स्त्री. – चूरी हुई वस्तु, बारीक रवा, चूर्ण।

चूरण – पु. – चूर्ण।

चूल – पु. – बड़ा चूल्हा या भट्टी जिस पर गुड़ तैयार किया जाता है।

चूला में जाणो – नष्ट भ्रष्ट होना।

चूलो – नं. – चूल्हा, मिट्टी व ईंटे आदि की बनी छोटी भट्टी जिसमें लकड़ियाँ और कंडे जलाकर उस पर भोजन बनाया जाता है।
(पण घर घर हे गारा का चूला। मो. वे.40)

चूसणो – क्रि. – चूसना, कोई चीज मुँह में लेकर उसका रस पीना।

चे

चें-चें – पु. – चिड़ियों के चहचहाने की आवाज, बकवास।

चेक – पु. – एक प्रकार का कपड़ा, धनादेश।

चेचक – स्त्री. – शीतला माता की बीमारी।

चेचक का दाग – स्त्री. – शीतला रोग में शरीर-मुख आदि पर पड़ जाने वाले व्रणों के धब्बे या दाग।

चेजारो – मकान, महल बनाने वाला व्यक्ति, कारीगर, मिस्त्री, राजगीर।
(बड़जो रे चेजारा थारी वेल, सोना को सूरज उग्योजी म्हारा राज। मा.लो. 452)

चेड़ा, चेड़ो – वि. – चिड़चिड़ा, चेहड़ा, घूँघट, पर्दा, ओट।

चेत – पु. – चैत्रमास, सावधान या जागरुक होना।

चेताणो – पु.क्रि. – भड़काना, जलाना, धधकाना, जागृत करना, सावधान करना।

चेत्यो – पु.वि. – चेत गया, जागृत हो गया, जल उठा।

चेतन – वि. – जागृत।

चेतना – क्रि. – होश।

चेताड़नो – क्रि. – सावधान करना, चेता देना।

चेनपटा – न. – लक्षणा हावभाव, सुख, लड़। लाड़ी की चेनपटा देखी ने डरी। (मो.वे.54)

चेंटनो – चिपकना।

चेंप्यो – वि. – झेंप, झेंप गया, लज्जित हुआ, थोपना।

चेंयाँ – सं. – इमली के बीजों से बनी दाल।

चेरनो – नजर लगना, नजर जाना, नजर बैठ जाना।

चेरो – पु. – चेला, शिष्य, दास, तराजू का पलड़ा, नजर लगाओ।

चेवड़ो – वि. – घूँघट, पर्दा, ओट, आड़।

चेहड़ा – वि. – घूँघट, पर्दा, ओट, आड़।

चोइटा – वि. – चोर, चोट्टा।

चोक – वि. – चोकोर स्थान, खुली जगह। (कावड़ धर दो चोक में रे वीर। मा.लो. 640)

चोकड़ी – स्त्री. – चार का समूह।

चोकन्नो – वि. – सावधान, होशियार, उछलना, चोकस।

चोकस – वि.–होशियार, सावधान, चौक्ष। (उबाई ने कराँ चोकसी। मो. वे.42)

चोका – पु. – घर का वह स्थान जहाँ रसोई बनाई जाती है।
(चोके बेठो तो। मा.लो.22)

चोकी – स्त्री. – गारद, पहरा, पड़ाव, चार पायों की बैठक।

चौकीदार – पु. – पहरा देने वाला, चौकी की

रखवाली करने वाला, बस्ती का रक्षक।

चोको – पु.– रसोई घर, ताश का चौका।

चोकोर – वि. – चतुष्कोण, चार कोनों वाला।

चोखा – सं. – चांवल, अच्छा, बढ़िया या उत्तम, शुद्ध, निर्मल। (हाँ रे वा चोखा से तो चूरी मोटी। मा.लो. 509)

चोखो सम्यो – वि. – अच्छा समय, उत्तम या बढ़िया समय।

चोगड़ताँ – वि. – चारों ओर।

चोगड़्यो – वि. – चोघड़िया, पंचांग के आधार पर अच्छे –बुरे समय की सारणी।

चोगणो – वि. – चौगुना, चार गुना।

चोगान – पु.– मैदान, चौकोर, खुल जगह।

चोघड़्यो – वि. – चौघड़िया, चार घटी का समय, दिनरात में 16 चौघड़िये होते हैं और एक चौघड़िया लगभग डेढ़ घण्टे का होता है।

चोचला, चोचल्या – वि. – दिखावा, ढोंग, नखरे।

चोज – लिहाज, संकोच, मर्यादा का ख्याल।

चोंट – पु. – पत्थर, आघात।

चोट्टो – वि. – चोर।

चोंट्यो – वि. – चिपका, मुट्ठी भर चने के छोड़।

चांटाणो – क्रि. – चिपकाना।

चोटी पट्टावाली – स्त्री. –श्रृंगार प्रिय स्त्री।

चोंटी पाड़णो – क्रि.– चोंटी गूँथना, वेणी बनाना।

चोंटी लइके – कृ. – चोंटी ले करके, चोंटी पकड़ करके।

चोड़ – वि. – चढ़ाव, घाटी की चढ़ाई, किसी को उठाव चढ़ाव देना।

चोड़ अईयो, चोड़ अइगयो– क्रि. – चढ़ाई का स्थान आ गया, चढ़ाव आ गया, घाटी की चढ़ाई आ गई।

चोंड़ू – चढ़ाना, चढ़ा देना, अर्पित कर देना, अर्पण कर देना।

चोड़े चोगान – खुले आम, सर्व साधारण में, सबके सामने, चौगान में।

चोड़े धाड़े – वि. – सामने, सम्मुख।

चोड़्यो – चढ़ाया, भेंट किया, अर्पण किया। (बीने धान देवरे चोड्यो। मा. लो.मे.79)

चोत माता – स्त्री. – चौथ माता, चतुर्थी की लोक देवी।

चोत्तर – वि. – चहत्तर।

चोंतरो – पु. – चबूतरा, चोकोर बना ऊँचा स्थान। (पूजापो चढ़ावाँ वो पंथवारी माता चोंतरे। मा.लो. 628)

चोथ – पु. – चतुर्थी।

चोथ लेणो – क्रि. – दण्ड वसूल करना, कर लेना।

चोथे पण – वि. – बुढ़ापा।

चोथिया रोग – वि. – वृद्धावस्था में होने वाली व्याधियाँ।

चोद – क्रि. – रतिक्रिया, संभोग।

चोदणो – क्रि. – रतिक्रिया करना, सम्भोग करना।

चोदा बिद्या – वि. – चौदह विद्या, चार वेद, छः वेदांग तथा मीमांसा, न्याय, इतिहास और पुराण।

चोधरी – नं.– पटेल, चौधरी, किसी जाति या समाज का मुखिया। (नवापुरा का चोधरी हे। मो. वे.55)

चोंप – स्त्री. – लोहे की कील, नाक का लोंग, नारी आभूषण की लटकन।

चोप पु. – चौपे, रोपा, जमीन में रोपने के पौधे, दाँतों पर लगा सोना। (चोंप बिना गोरी रो मुख सूनो। मा.लो.474)

चोपड़ – पु. – एक खेल, चोपड़ पाँसा।

चोपड़ा – क्रि. – चुपड़ने का कार्य करो। सं. स्त्री. – बावड़ी, वापी, चोकोर बँधा हुआ कुआ, लकड़ी का खानेदार डिब्बा जिसमें हल्दी, कुंकुम, अक्षत और धागा रखा जाता है, लीपना, पोतना।

चोपड़ भाँत – क्रि.वि. – चोकोर, संजा का एक अंकन।

चोपा – स्त्री. – सार्वजनिक स्थान, पंचायत घर, चौपाल।

चोपो – पु. – रोपाई के पौधे।

चोंपो – पशु समूह, झुण्ड, चोंप लगा, पौधा रोपना।
(हरी थी मन भरी थी लाख चोंपा जड़ी थी। मा.लो. 546)

चोफूला – सं.पु. – पानदान, बटुआ।

चोफेर – वि. – चारों ओर।

चोबदार – पु. – ड्योढ़ीवान, रक्षक, छड़ी वाला, द्वारपाल।

चोमख दीवलो – वि. – चार मुँहवाला दीपक या समई।

चोमासो – वि. – चतुर्मास, वर्षा ऋतु के चार मास।

चोयड़ो – कमर में लचक आ जाना।

चोयरो – पु. – चँवरा, सार्वजनिक स्थान, चौपाल।

चोर – पु. – चोरी करने वाला।

चोरड़ो – पु. – चोरी करने वाला चोर।

चोराणो – वि. – चोरी चला गया माल, चोरी गई वस्तु।

चोराया – वि. – चौराहा, चारों ओर से निकलने वाले रास्ते।

चोरासी जोनी – वि. – चौरासी योनियाँ।

चोरो – क्रि. – चोरी करो। सं. – चौराहा, सार्वजनिक स्थान।

चोलटो – चोर, चोट्टा, लूट खसोट करना, लुटेरा।
(देखो सगा रो नावी चोलटो। मा.लो. 370)

चोल्ड़ा – वि.ब.व. – चोर।

चोलो – वि. – वेश, मूर्ति को तेल सिन्दूर मिश्रित लेप लगाना, मूर्ति की खोल।

चोसर – स्त्री. – चौपड़, चार सर का हार।
(कंठी तो चोसर भोत हजारी। मा.लो.386)

चोस्टी माता – स्त्री. – सुसनेर में स्थित चोंसठ देवी, उज्जैन में स्थित चोंसठ जोगणी देवी।

छ – मालवी एवं देवनागरी में च वर्ग का व्यंजन।

छइजाणो – क्रि. – छा जाना, फैल जाना।

छक – तृप्त। भरा हुआ, नशे में मस्त।

छकड़ो – स्त्री.– छोटी गाड़ी, शकट।
(हाती घोड़ा पालकी म्याना छकड़ा से जान बुलाओ। मा.लो. 408)

छकल्यो – पु.– मिट्टी का छोटा मटका।

छक्को पंजो – क्रि. वि.– चालाकी, छल-कपट, इधर-उधर के काम।

छकनो – क्रि.– खा-पीकर तृप्त होना।

छकित – वि.– चकित।

छकियार – वि. – छका हुआ, छाक, तृप्त।

छछूंदर – स्त्री.– चूहे की तरह का एक जीव।

छछोरपणो – वि. –छिछोरापन, हल्कापन।

छज्जो – सं.पु.– ऊपरी मंजिल के बाहर निकला हुआ हिस्सा, गैलरी, छज्जा।

छट्, छट्ट – वि.– माह के दोनों पक्षों का छठवाँ दिन, षष्टी।

छँटई – क्रि.– छाँटना या अलग-अलग करना।

छट्टो अंक – वि.– छठवाँ अंक।

छटकणो – क्रि.– छिटकना, दूर होना, अलग होना।

छँटनो – वि.– छाँटना या पृथक्-पृथक् करना।

छटमो – वि. – छटा, छाँटना।

छटा – वि.– झाँकी, शोभा।

छटाँग – वि.– पुराने तोल का बाट जो पाँच रुपये या सेर का सोलहवाँ भाग वजन का होता था।
(सवा छटाँक शकर की डली। मा. लो. 484)

छटाल – स्त्री.– घण्टी, बजाने की घण्टी।

छटी – वि.– बालक के जन्म से छठे दिन होने वाला संस्कार।

छटी जगे – क्रि.– जन्म से छठे दिन किया जाने वाला संस्कार।

छँटेल – वि.– छँटा हुआ बदमाश, चुना हुआ धूर्त, चालाक।

छड़ – वि.– पशुओं की जिह्वा में लगने वाला छड़ नामक एक रोग जिसमें नसें फूल जाती है। इन्हें चाकू से छील कर दूषित रक्त निकाल दिया जाता है। स्त्री.– चरसी, क्रि. चढ़ना।

छड़कनो – क्रि.– छिड़क देना, छींट देना।

छड़-तोड़नी – स्त्री.– पशुओं की जिह्वा में लगी छड़ नामक बीमारी को चाकू से तोड़कर बाहर निकालने की क्रिया।

छड़वाले – पु.– चड़स चलाने वाला कृषक, नौकर या हाली।

छड़ाव – स्त्री.– सीढ़ियाँ, पेड़ियाँ, जीना, उज्जैन का सिंहस्थ मेला।

छड़ी – स्त्री. – बैलों के सिर का मोर पंखी मुकुट, बेंत, साँटी, कीमची।

छड़ी छटाँग – वि.– ऐसी स्त्री जिसके बाल बच्चे न होते हों, एकाकी स्त्री।

छड़ी बाजे – क्रि. वि – लकड़ी से पीटे, बेंत से पीटे।

छड़ो – वि.पु.– अकेला व्यक्ति, क्रि.– चढ़ो।

छण – वि.– क्षण, कुछ समय।

छणकेगा – क्रि.– छिड़काव करेगा, पानी छिड़केगा, चमकना, नाराज होना।

छणमाँ अइजा – क्रि.वि. – एक क्षण में आ जाओ, तुरन्त आओ।

छणवाया – क्रि.– छानवा लिये, छँटनी कर दी, निकलवा दिये।

छणाणो – क्रि. – छटनी करवाना।

छणियार – उपले बिनने वाली।
(हो राजा पूछे पाणी री पणियार छाणा री छणियार। मा.लो. 35)

छणीकनो – क्रि.– नाक का बहाव साफ करना।

छत – स्त्री.– चूने पत्थर, आदि से बनी हुई घर की छत, घर के ऊपर का ढँका हुआ भाग, चँदोवा, पटाव।

छतो – वि. – प्रत्यक्ष, प्रकट, होता हुआ, फिर भी, तो भी, रहते हुए।

छत्तर – पु. – छत्र, छाता, छतरी, क्षेत्र चाँदी की बनी छतरी जो देवता की प्रतिमा के सिर के ऊपर लटकाई जाती है।

छतरंगी – स्त्री. – सतरंगी, दरी, जाजम, फर्श।

छतरी – स्त्री.– छाता, क्षत्रिय।

छत्तर-छाया – पु. – शरण में, आश्रय में, वरदहस्त, कृपा दृष्टि तले, छत्र छाया में।

छत्तरधारी – पु.– छत्र को धारण करने वाले राजा-महाराजा।

छत्रपति – पु.– राजा।

छत्तीस – वि.– छत्तीस।

छत्तीस को आँकड़ो – वि.– आपस में विरोध, दुश्मनी, शत्रुता।

छदरमत – वि.– शाबाशी देना, खूब किया।

छंदगारी – कुटिला, छल-कपट करने वाली, नखरे वाली, ऊपर का प्रेम दिखाने वाली, अनिश्चित मन वाली।
(जावा दो छंदगारी नार। मा.लो. 595)

छदाम – वि.– फूटी कौड़ी, पुराना सिक्का, पुराने पैसे का चौथाई भाग।

छंदी – धूर्त स्त्री, छल-कपट करने वाली, कपटी, बाजूबंद के नीचे लटकने वाला छंद।
(काहो छंदी बऊ मसलासा बोल्या। मा.लो. 430)

छन – पु.– क्षण।

छनको – बुरा लगना, मिर्ची लगना, गुस्सा आना, उलाहना देना, थनक-थनक करना। (सासुजी ने दीयो बड़ो छनको। मा.लो. 551)

छनन-छन्न – पु.– गर्म हुए तवे, बढ़ाई या बर्तन में पानी की गूँदें गिरने से उत्पन्न ध्वनि, झनकार।

छनियारी – स्त्री.– कण्डे बीनने वाली स्त्री, कंडे थापने वाली स्त्री।

छनीक – वि.– थोड़ी सी, स्वल्प।

छप-छप – क्रि. वि. – पानी पर कुछ फटकारने का शब्द, नाव चलने का शब्द।

छपई – स्त्री.– छपाई, छपवाने का कार्य, मुद्रण।

छपका लगाया – क्रि.– छापे लगाये, चिह्नित किया, हाथ के पंजे की छाप लगाना।

छपग्या – क्रि.– छापे लगाये, चिह्नित किया, हाथ के पंजे की छाप लगाना, छाप गये।

छप्पन भोग – वि. छप्पन प्रकार के खाद्य पदार्थ या व्यंजन।

छपर, छप्पर – सं. पु. – छाजन, छपरी, ढक्ना, ढक्कन, घर की फूस आदि की छाजन।

छपर खट – स्त्री.– पलंग या खाट के ऊपर लगाई जाने वाली मसहरी, मच्छरदानी।

छपरी – स्त्री.– नम्बरदार, पटेलों आदि के द्वारा निर्मित समाज के अतिथियों व भाई-बन्धुओं के लिये सार्वजनिक रूप से बैठने का स्थान, बैठक, चौपाल।

छपा-छपी – क्रि. वि.– लुका छिपी का खेल।

छप्पर फाड़ देणो – अनायास या अकस्मात धन प्राप्त होना।

छपीग्यो – क्रि.– छिप गया।

छब – सुन्दरता, सबसे अलग।
(छींक भवानी ने भँमर सोवे, टीका री छब न्यारी। मा.लो. 101)

छबक छिनाल – बड़ी कुलटा, व्याभिचारिणी, किसी को देख-देख कर मटकना।
(तीन मईना की डावड़ी लिकली छबक छिनाल। मा.लो. 543)

छबल्यो – स्त्री.ए.व.– हाथ की गुँथी हुई खजूर वृक्ष के पत्तों से बनी टोकरी।

छबल्या – स्त्री. ब.व. – टोकरियाँ।

छबग्या – क्रि.– छप गये, छिप गये।

छबीलो – वि. – सुन्दर, सजाधजा।
अब तो आलस छोड़ छबीला। मा. वे. 38)

छम्म – स्त्री.– घुँघरू की आवाज।

छम्-छम् – स्त्री. – नूपुर या घुँघरू की ध्वनि या आवाज।
(गोप्याँ नाचे छमकछम। मा.लो. 666)

छमक उजाला – वि.– लुका छिपी करने वाला प्रकाश।

छमख-दीवलो – पु. वि. – छः मुँह वाला दीपक, समई।

छमछरी – वार्षिक मरण तिथि सम्वत्सरी, सांवत्सरिक श्राद्ध, जैनों का पर्यूषण पर्व, पुण्यतिथि।

छमा – स्त्री.– क्षमा।

छमासी – स्त्री.– मृत्यु के उपरान्त छः महीने बाद किया जाने वाला श्राद्ध।

छरकले – स्त्री.– चिड़ा, पक्षी।

छरकली – स्त्री.– चिड़िया, पक्षी।

छरपलो – पु.– डोड़े से अफीम एकत्र करने का औजार।

छलकणो – क्रि.– बरतन हिलने से किसी तरल पदार्थ का बर्तन से उछलकर बाहर गिरना।

छल-कपट – वि.– चालबाजी और धूर्तता का व्यवहार, धोखेबाजी।

छल-छल जेर – कपट, धोखा, छल का छलछलाता विष, जहर, विष की छुरी।
(ऊपर से सुन्दर घणी जी कई सो कई भीतर छल-छल जेर। मा. लो. 549)

छल-छंद – पु.वि.– धूर्तता, चालबाजी, कपट।

छल छिद्दर – वि.– धूर्तता, धोखेबाजी।

छलंगी – शिखर, कलंगी, वृक्ष के सबसे ऊपर की डाल, ऊपर का तना। (अणी लीम्बडली रा लाम्बा तीखा पान छलंग्याँ पर सूरज उगीयो जी। मा.लो. 303)

छलणो – क्रि.– छलना, धोखे में डालना, भुलावे में डालने की क्रिया।

छल्ला – स्त्री. – अँगूठी, मूँदड़ी।

छल्लो-भोलो – सं. – नवरात्र के लोकगीत, छल्ला गीत।

छल्लो – सं. – मालवी दोहे (छल्लो भोलो कीने गायो रे गायो बामण बीर), अँगूठी।

छलाँग लगाणो – क्रि. – उछलकर कहीं पहुँचना, कुदान, फलाँग।

छलिया – वि. – छल करने वाला, कपटी, छली।

छवइ गयो – क्रि. – छा गया, छाने का कार्य हो चुका।

छा

छा – छाछ, छाच, तक्र, मट्ठा।

छाई – छाया करना, ढकना, घर की छत को घास-पूस या खपरैल से ढँकना। (ओलम्बे ओलम्बे म्हारो घर भऱ्यो कागद छाई म्हारी छाण हो। मा. लो. 470)

छाकटो – वि. – धूर्त, चालाक, छटा हुआ।

छाँगणो – वृक्ष की बढ़ी हुई शाखाओं को काटकर छोटा करना, काटना, छाँगना।

छागल – स्त्री.– कपड़े या चमड़े की बनी ठंडे पानी की सुराही।

छाच – स्त्री.– छाछ, तक्र, मट्ठा।

छाचरो-पलो – स्त्री.– छाछ रखने का पात्र, पली, नाप।

छाछ-राबड़ी – स्त्री.– छाछ में बनी मक्का के दलिये की राबड़ी नामक खाद्य पदार्थ।

छाज – पु.– गेहूँ के साबुत डंठलों गुँथाई करके मकान की छत पर छाजन तैयार किया जाता है।

छाजन – पु. – छवाई, छप्पर, कपड़ा, छाने की वस्तु।

छाँट – क्रि.– देवता के स्थान पर पवित्र जल का छींटा डालना, पानी से छिटकाव करना, छाँटना, चुनकर अलग की गई वस्तु।

छाटण – स्त्री.– मोटा वस्त्र सूती मोटा वस्त्र।

छाँटणो – क्रि.– चुनना, छाँटकर अलग करना, पृथक् करना।

छाँट पड़े – बुरा लगे, दूरी रहे।

छाँट डालनो – क्रि. – देवता के स्थान पर पवित्र पानी से छींटे डालना।

छाँटमा – वि. – छटे हुए, चुने हुए, पके हुए, बिखरे हुए।

छाँटा – स्त्री. – पानी के छींटे, फुहार।

छाँटा – क्रि. – छाँटने या चुनने का कार्य करना।

छाँटी – स्त्री. – अरहर की सँटी, हाथ का बुना मोटा वस्त्र, क्रि. –चुन लिया, छाँट ली।

छाँटो – पु. – पानी की बूँद, चुन लो, प्रमुख रूप में बोई गई फसल में दूसरी किस्म के बीज का अल्पमात्रा में मिश्रण करना, अच्छी या काम में आने वाली चीजें चुनना, दूर या अलग करना, साफ करना, मिश्रण करना, छींट देना।

छाँड़ो – पु.– चाँस, कतार, पंक्तियों में बोना।

छाण – क्रि.– जाँच, निर्णय, छानना, उत्तम बात की परीक्षा, परख करना। (कागद छाई म्हारी छाणा मा.लो. 517)

छाण-छणायो – क्रि. वि.– किसी बात का सार निकलवाया, परीक्षा ली।

छाणनो – आटा, पानी आदि को चलनी या कपड़े से छानना, निकालना। (बालोत्या से घुल्यो छाण्यो। मा.वे. 34)।

छाण पियाँ जल – जल को छानकर पीना चाहिये, सार-सार ग्रहण करना चाहिये, उत्तम वस्तु का संग्रहण।

छाणा – सं. ब. व.– कंडे, उपले, छाया करना, छानने का कार्य करे। (आखा गाम का छाणा लाया, तो नी सीजी भाजी। मा.लो. 561)

छाणियां – क्रि.–ढूँढा, हटाया, ढूँढ निकाला।

छाता – स्त्री. – छतरी, मधुमक्खियों द्वारा निर्मित शहद का छत्ता, भमरी का छत्ता।

छाता-छाता – क्रि.वि.– आवश्यकतानुकूल, जरूरी, अनिवार्य।

छाती – स्त्री. – वक्षस्थल, हृदय, स्तन, हिम्मत।

(टाटी तोड़ नजारा मान्या छाती फाटी रे दो दन रई जा रे। मा.लो. 429)

छाती कल्ड़ी करणो – विपत्ति का सामना करना।

छाती कुट्टो – अधिक परिश्रम और लाभ कम। व्यर्थ का परिश्रम, मगजमारी, लड़ाई, झगड़ा, कलह, काम का बोझ, परेशानी।

छाती छोलनो – दुःखदायी, परेशान करना, कष्ट देना, दुःखी करना।

छाती फाटणो – छाती फटना, दिल दुखना।

छाती बारनो – मगजमारी, लड़ाई-झगड़ा, कलह, परेशान करना।

छाती ठोकणो – दावे के साथ कहना, हिम्मत रखना।

छातो – पु.– वर्षा से बचाव की छतरी।

छाद – पु.– छाज, छाजन, गेहूँ के डंठलों का समूह।

छादरी – स्त्री.– सादड़ी, चटाई, दरी, फर्श।

छाननो – क्रि.– चूर्ण या तरल पदार्थ को महीन कपड़े या चलनी में निकालना। छान-छान किसी की मत मान। भंग की बूंटी छानते समय भंगेड़ियों द्वारा बोली जाने वाली उक्तियाँ।

छाँना – वि. – चुप, शान्त, ढकना, आच्छादित करना।
(छानी रे चुपकी रे बोले मती रे नार थारां वीराजी ने जाणाँ। मा.लो. 358)

छाने – छिपे हुए, गुप्त रीति से, चुपचाप, चोरी से, छिपकर, शांत।

छाना बाना – विवाह आदि में दूल्हे-दुल्हन का छाना-बाना निकालना।

छाप – स्त्री.– ढेर मालपुआ की छाप, विपुल मात्रा में किसी वस्तु का होना, छापा लगाना, छापने से पड़ा हुआ निशान, चिह्न, मुद्रा, अंक, मुहर, सील।

छापको – सं.– चाबुक, कशा, कोड़ा।

छाप्या – क्रि.– छापे, मुद्रित किया।

'छा'

छापखानो – पु.– छपाई घर।

छापणो – क्रि.– छापना, छपाई का कार्य करना।

छापरी – न. – डाबरा पानी से भरा हुआ, गड्ढा।

छापा चोंटाया – क्रि. – छाप लगा दी, छाप चिपका दी।

छापो मार्‌यो – क्रि.– किसी को ढूँढने के लिए पुलिस या अधिकारी द्वारा छापा मारना।

छाब – पु.– छाबना, मालपुआ नामक मिष्ठान्न का छाब जो झारे पर एकत्र किये होते हैं, पत्तल, टोकरी।
(मेवा की छाबाँ साथाँ में। मा. लो. 526)

छाबड़ी – टोकरी, डलिया, बाँस की टोकरी।
(या तो हाताँ में दूँ रे लगनाँ छाबड़ी। मा.लो. 404)

छाबणो – क्रि.– छाबना, छबाई करना।

छावानाँ – क्रि.ब.व.– छावेंगे, छाया करेंगे।

छाय – वि.– चाहिये, सं. स्त्री.– चाय।

छायड़ा – पु.– चाँस, कतारें, पंक्तियाँ, कतार में बोना।

छाय़ड़ो – पु.ए.व.– चाँस, कतार, पंक्ति।

छाया – स्त्री.– प्रतिबिम्ब, छाया, छाट, वृक्ष की छाया, पवन आवेश।
(तेजाजी पे आवे ठण्डी छाया। मा.लो. 655)

छार छार हुईग्या – क्रि. वि.– टूक–टूक हो गये, टुकड़े हो गये, क्षार क्षार हो गया, बिखर गया, क्षत-विक्षत हो गये।

छारोली – स्त्री.– चारोली, अचार, एक मेवा।

छाल – सं. – किसी वृक्ष की छाल, वल्कल।

छालर – स्त्री. सं. – गाय का एक नाम।

छालरमाता – मालवा में गाई जाने वाली छालर माता की हीड़ उसमें छालर नामक गाय की महिमा एवं कार्यों की प्रशस्ति होती है।

छालर का जाया – पु. - बैल, वृषभ, बछड़ा।

छाला – पु.– शरीर की चमड़ी छाला या फफोला, चर्म। जैसे मृग छाला।

छलिया – पु.– सुपारी, क्रि. – छवाने या आच्छादित करना, छोटी कटोरी, छलने वाला।

छाँव – स्त्री.– छाया, प्रतिच्छाया।

छावणी – स्त्री.– सैनिकों का अड्डा, आच्छादित करना, डेरा।

छावे – वि.– चाहिये, चाह।

छास – सं.– मट्ठा, तक्र, छाच, खटाई।

छाँस – सं.– चाँस, पंक्ति, कतार।

छि

छिः – अव्यय – बच्चों के पाखाना, अरे-अरे।

छिंगन – वि. –संगीन, मजबूत, ठोस, फौलादी।

छिछोर बुद – वि. – बच्चों की सी बुद्धि, सारल्य।

छिटकणो – क्रि. – छींटना , छींटे डालना, खेतों में बीज आदि छिटककर बोने की क्रिया , छिड़काव करना, इधर-उधर फैलाना, बिखेरना।

छिटकाव – क्रि. – छिटकना, बीज-पानी आदि छींटने की क्रिया।

छिड़काव – क्रि.– छिटकना, बीज-पानी आदि छींटने की क्रिया ।

छिड़काव – क्रि.– छींटने की क्रिया या भाव।

छिणकनो – सं.– जोर से श्वाँस निकालकर नाक की तरलता साफ करना।

छिणी – सं.– लोहे का एक औजार, छेनी, लोहा काटने का धारदार शस्त्र।

छिंतरा – वि. फटे-पुराने वस्त्र।

छितरा – वि.– छितराया हुआ, दूर-दूर गिराये हुए।

छिद्दर – वि.पु.– छेद, छिद्र, दोष।

छिंदवाड़ – पु.– कंडे थापने एवं सुरक्षित रखने के लिये बनाया गया स्थान विशेष।

छिंदा–छिंदी – वि.– फटे पुराने वस्त्रों या कागजों की कतरनें।

छिलनो – क्रि. छीन लेना।

छिनाल – वि. स्त्री.– व्याभिचारिणी स्त्री, व्याभिचारिणी का पुत्र, कुलटा, छिनाल का मूत, एक गाली। (जीजी छिनाल का। मा. लो. 442)

छिनी – स्त्री.– लोहे की छैनी।

छिपड़के – कृ.– छिपा करके।

छिपकली – कृ.– छिपा करके, गुप्त रखकर।

छिपगी – स्त्री.– छिप गई, दुबक गई, गायब हो गई।

छिप्यो – पु.– छिज गया, दुबक गया।

छिपा-छिपी – क्रि.– लुका-छिपी का खेल, आँख मिचौनी, मालवी बाल-क्रीड़ा का प्रकार।

छिपाड़्यो – क्रि.– छिपा लिया, दबा लिया, छिपाकर रख लिया, ढँक लिया।

छिपाती हुई – स्त्री. – आड़ में लेती हुई, ओट में लेती हुई।

छियाँ – सं. – इमली के बीजों की दाल।

छिरकोटो – प. – चकलोटा, चकला, पटिया।

छिर–छिर करे – क्रि.वि. – बकरी या बिल्ली को भगाने का शब्द।

छिल – सं. – चील पक्षी, छिलना।

छिलको – सं. पु. – छिलका।

छिलपो – सं. पु. – वृक्ष की ऊपरी परत, त्वचा, लकड़ी का छोड़ा या ऊपरी मोटी पर्त।

छी

छीः – अव्य. – छी-छी का शब्द, छींकने का शब्द।

छींक – छींकना।

छीकणो – छींकना, छींक एक देवी का नाम। (अणी वेला में कोई मत छींको। मो. वे. 35)

छींकविणा – विवाह के समय का एक मन्त्र।

छींको – छींका, सिकहर, सीका, टाँगने का एक छींका जिस पर वस्तु सुरक्षित रह सके।

छींट – स्त्री.- महीन बूँद, जल कण, छींट या

बुँदीदार वस्त्र या साड़ी। (आगरा को घाघरो परणपुर की छींट। मा.लो. 483)

छीटतो हुवो – पु.– छींटता हुआ, छींटे देता हुआ, पानी के छींटे मारता हुआ।

छींटा – पु.– द्रव पदार्थ।

छीणी – स्त्री.– लोहा काटने का एक धारदार अस्त्र।

छींतरा – वि.– फटे-पुराने वस्त्र। (छींतरा का झींतरा उड़ीऱ्या-कपड़े फटकर तार-तार हो गये।)

छीलणो – क्रि. – छीलना, छिलका उतारन।

छू/छू

छुट-पुट – क्रि.वि. – इक्का-दुक्का, कोई- कोई।

छुट्टो – वि.– जो बँधा हुआ न हो, खुला और अलग, एकाकी, अकेला।

छुतो हुवो – पु.– स्पर्श करता हुआ, छूता हुआ।

छुनन-छुनन – क्रि.वि.– गर्म तवे पर गिरने वाली पानी की बूँ दों की आवाज या ध्वनि, पेंजनी के बजने का शब्द।

छुन–मुन – क्रि.वि. – शान्त, चुपचाप, पैंजनी के बजने का शब्द।

छुरी – स्त्री.– काटने का चाकू या औजार।

छुरो – पु.– बड़े फाल वाला लम्बा चाकू या छुरा।

छुल्लकजी – सु.पु.– जैनियों के साधुओं का एक प्रकार।

छुल्लो – पु. सं.– चूल्हा।

छुवारा – पु.ब.व.– खारक, एक सूखा मेवा जो खजूर का फल कहलाता है।

छुवो – क्रि.– स्पर्श करो।

छू – अव्य.– कुत्ते को बहकाने या लड़ाने की ध्वनि।

छूटना – खुलना, बन्धन से अलग होना, हाथ में से किसी वस्तु का गिरना, चिपकी हुई चीज का अलग होना, छूटना, मुक्त होना, शेष रहना, इजाजत मिलना, प्रसव होना। (इना डोडले दस गाँठा रे लाड़ा दोड़लो नी छूटे। मा.लो. 455)

छूत – वि. – छूत की बीमारी।

छूतो हवा – क्रि. पु. – स्पर्श करता हुआ।

छूनो, छूणो – क्रि. – छूना, स्पर्श करना।

छूमंतर – वि. – गायब हो जाना, चले जाना, रफा-दफा हो जाना।

छूमली – स्त्री.– कपड़े, रूई या रस्सी की बुनी हुई गोलाकार गडरी को सिर पर रखे हुए बोझ के नीचे लगाई जाती है।

छूल – सं.– बड़ा चूल्हा, भट्टी।

छूल्लो – सं.– बड़ा चूल्हा, भट्टी।

छूणो – क्रि.– स्पर्श।

छे

छेको – वि.– अवकाश, रुकना, कुछ समय देना, दूरी, छोटी, पार करना।

छेकोद्यो – क्रि.– अवकाश दिया। जैसे कुछ समय के लिये वर्षा का थम जाना।

छेंट – वि. – चिपकना।

छेटी – स्त्री. – दूरी, फासला, छेटी पड़ी गई।

छेंटी – स्त्री. – चिपक गई, चिपकी।

छेटो – छेटी, दूरी, फासला।

छेड़खानी – ना. – छेड़खानी, छेड़छाड़, छेड़ने का काम, छेड़ना, तंग करना, बदमाशी करना।

छेड़छाड़ – क्रि.वि.– परेशान करना, छेड़ना, गुण्डागर्दी।

छेड़णो – क्रि.– तंग करना, छेड़ना, चिढ़ाना, खिजाना, किसी कार्य, गायन या विवाद आदि को शुरू करना।

(पूछताछ करने के छोरा के छेड़्यो। मो.वे. 55)

छेड़ा – वि. – घूँघट, ओट।

छेड़ो – पु. – घूँघट, ओट, लज्जा, आड़। (छेड़ा पे सूरज उग्यो। मा. लो. 452)

छेड़ो काड़्यो – क्रि. – घूँ घट लिया, पर्दा किया, आड़ली।

छेड़ो लागणो – माँ का दूध पीते बच्चे को बहुत दस्त लगते हैं और उसमें बदबू आती है। (बच्चे को छेड़ा या छेरा लग गया। मा.लो. 77)

छेड़ावाली – स्त्री.– घूँघट वाली, पर्दे वाली।

छेणी – स्त्री.– छैनी।

छेद – क्रि.– छिद्र, छेदना।

छेदो – क्रि.– छेदने या छिद्र बनाने का काम करना।

छेमण – वि.– छः मन या तौल, एक माणी वजन, पुराना एक मन का तोल 40 सेर का होता था।

छेमासी – मृत्यु के छः महिने बाद होने वाला श्राद्ध तथा भोजन।

छेमास्यो – पु.– छः माह में उत्पन्न होने वाला बच्चा।

छेर – क्रि.– छेरना, पतला पाखाना आना।

छेरो – वि. – चेहरा, मुखाकृति, पतली दस्त।

छेल – वि. – छैला।

छेलभँवरजी – छबिवान पुरुष, पति। (छेलभँवरजी को पाड़ो मर्‍यो खाड़ो पड़्चो रे, दो दन रई जा रे। मा. लो. 429)

छेलो – वि.– छैल-छबीला, बना-ठना, अन्तिम। (छेलो ने पेलो।)

छेवट – अंत, अन्ततः, आखिरकार, आखिर में।

छेवड़ो – वि. – घूँघट, पर्दा, ओट।

छेवड़ी काड़्यो – क्रि. घूँघट लिया, पर्दा किया।

छो

छो – अव्य. – छह, चाहे जो भी हो, होने दो, गाँव नाम।

छोकरो – पु. – लड़का।

छोकरी – स्त्री. – लड़की।

छोंकणो – क्रि. – बघार देना।

छोखा – सं. – चांवल, अच्छा, चौक्ष।

छोगा – सं. – सिर के बालों की लटें, घोड़े की गर्दन के बाल, सिर का आभूषण जो चाँदी का बना होता है।

छोगा मोरड़ी – नथनी, मोर वाली नथ, बेसर। (मुखड़े तो छोगा मोरड़ी। मा.लो. 460)

छोगो – कलंगी, पगड़ी या साफे में उठा हुआ तुर्रे के समान छोर, सिरपेंच, लटकन, पेंच की झूमर। (नजर भर छोगो राज मोती प्यारा लागे। मा.लो.520)

छोटपणो – बचपन।

छोट्यो – वि. – सबसे छोटा।

छोटी – छोटी, लघु, छोटे कद वाली, सबसे छोटी, कम, थोड़ी, ओछी, न्यून, क्षुद्र, कम उम्र।

छोटो रावलो – छोटा घर, छोटा राजमहल, छोटा रावला, गढ़, कोट, हवेली।

छोड़ – पु. – चढ़ाई, चढ़ाव, क्रि. – छोड़ना अलग करना, सं. – हरे चने का पौधा तथा उसका फल, वि. – दीपावली पर की जाने वाली गौ-क्रीड़ा। इसमें शृंगारित गाय के सम्मुख तिकोने डण्डे पर लपेटा हुआ चमड़ा लगाया जाता है। ढोल बजने एवं फराके छोड़ने से गाय चमकती है और अपने नुकीले सींगों से उस छोड़ नामक आकृति को

बेध डालती है। इसे छोड़ क्रीड़ा कहा जाता है।

छोड़-उतार – क्रि.वि. – चढ़ाव-उतार, घाटी की चढ़ाई और उतराई, ऊँची-नीची घाटी।

छोड़णो – क्रि. – छोड़ना, मुक्त करना, माफ करना, त्यागना, साथ न देना।

छोड़द्यो – क्रि. – चढ़ा दिया, छोड़ दिया, उठाव-चढ़ाव देना।

छोड़ईली – क्रि. – छुड़ा ली गई, छुड़वा ली।

छोड़ा काड़ी लीदा – क्रि. – घूँघट निकाल लिया, पर्दा कर लिया।

छोड़ाणो – छुड़वा दिया, छुड़वाना, छुड़वाया, अलग करवाना, त्यागना।
(प्रभु थाने गज को फंद छोड़ायो। मा.लो. 689)

छोड़ो – खोलना, छोड़ देना, छोड़ दो, खोल दो, त्याग देना, अलग कर देना।
(छोड़ो ओ पोटली करो सिंगणार। मा.लो..583)

छोत – स्त्री. – चौथ माता, लोकदेवी बच्चों के गले में पहनाया जाने वाला आभूषण का टोटका, छुआछूत।

छोमण – वि. - छः मन, एक मन 40 सेर का होता था।

छो–महन्या – वि.- छः मास का समय छः माह।

छोमख–दीवलो – वि. - छः मुँह वाला दीपक, पीतल की समई।

छोर – पु.- किनारा, आखरी सीमा, सीमान्त प्रदेश।

छोरा – पु.ब.व. - लड़के।

छोरा–छोरी – पु.ब.व. - लड़के–लड़की।

छोरो – पु. - लड़का।

छोलदारी – स्त्री. - तंबू।

छोलदो – क्रि. - छीलना।

छोलनो – क्रि. - छीलना।

ज – मालवी एवं देवनागरी में च वर्ग का अक्षर।

जइके – कृ. – जा करके।

जइने – कृ.– जा करके।

जई – क्रि.क्रि. – जा रही, जाती हूँ, जा रही हूँ।

जईरी – क्रि.क्रि.– जा रही, जाती हूँ, जा रही हूँ।

जँई – जहाँ, जिधर।
(जँई हाँका वँई जाय। मा.लो. 79)

जऊ – पु.– जौ नामक अन्न के दाने।
(जउना जवारा ने कंकु का क्यारा। मा.लो. 601)

जकड़ – स्त्री.– जकड़ना, कसना।
(जकड़ बादूँ सायबाजी म्हारा राज। मा.लो. 623)

जक – क्रि.– सबर, शान्ति।

जख्खड़ – वि.– वृद्ध।

जख्म – वि.– घाव, चोंट।

जखीरो – पु.– ढेर, समूह।

जग – पु.– जगत्, संसार।

जंग – पु.– युद्ध।

जगऊँ – क्रि.– जगाऊँ, जगा दूँ।

जंगजटा – वि.– युद्ध की जटाएँ, युद्ध की विभीषिका।

जगणो – क्रि. – जग जाना, जाग्रत होना, सोकर उठना, नींद खुलना, जगना।

जगदंबा – स्त्री.– अंबा माता, पार्वती।

जगन्नाथ – पु.– पुरी के लोक प्रसिद्ध देव।

जगजाहर – वि.– मशहूर।

जगमग – वि.– जगमग, जगमग दीवलो।

जगन – पु.– यज्ञ।

जंग – युद्ध, लड़ाई, मोर्चा।
(मामा कंस ने मारिया मथुरा में मचियो जंग। मा.लो. 654)।

जंगल – पु.– जंगल, वन।

जंगाल – दो कड़ों वाला बड़ा तसला। ताँबे के

जंग जैसा एक रंग, ताँबे का काट या जंग, जंगाल, नगाड़ा, सेना का दाहिना भाग।

जगर–मगर – क्रि.वि.– जगमगाहट, प्रकाश।

जंगी – वि. – बहुत बड़ा, मोटा, दीर्घकाय, बजने वाले वाद्य यन्त्र, लड़ाई से सम्बन्ध रखने वाला, फौजी, सैनिक। (वागाँमें वाजा जंगी ढोल। मा.लो. 350)

जंगी ढोल – बड़े-बड़े ढोल बड़ा नगाड़ा, नौबत। (वागाँमें बाजा जंगी ढोला मा.लो. 350)

जगरो – क्रि.– बाटी या भुट्टे सेंकने के लिये लकड़ी, कण्डों या उपलों के ढेर में आग लगाना।

जगजगाट – वि.– जगमग करना, चमकना।

जगो जग – क्रि. वि.- चमकीला, जगमग, जगह जगह पर।

जगाणो – क्रि.– सोये हुए को जगाना।

जगीस – इच्छा, अभिलाषा, कीर्ति, यश, युद्ध, बड़ा यज्ञ, जगदीश। (जगीस वदावो जी म्हारे आवीयो। मा.लो. 481)

जंगी – वि.– बहुत बड़ा, मोटा, दीर्घकाय। (बाजा जंगी ढोल)।

जगे – सं. – स्थान, जगह, जगता रहे, सोवे नहीं।

जगेजगे – क्रि.वि.– स्थान-स्थान पर, जगह-जगह पर, भिन्न-भिन्न स्थानों पर।

जगे–पे – सं.– स्थान पर।

जँचई लियो – क्रि.–जँचवा लिया, जाँच करवा ली।

जचकी – स्त्री.– जच्चा या प्रसूता।

जच्चा – स्त्री.– प्रसूता स्त्री।

जच्चाखानो – ना.– जच्चाखाना, प्रसूतिगृह। (जच्चाखानो जइरी हूँ। मो.वे.46)

जजमान – पु.– यजमान।

जंजाल – वि. पु.– उलझन।

जंजीर – स्त्री.– लोहे की साँकल, लड़, साँकल की तरह गूँथी हुई चैन, कड़ियों की लड़ी, बड़ी।

जटने – क्रि.वि. – जिधर, जहाँ।

जटा – स्त्री. -लट के रूप में गूँथे हुए सिर के बहुत बड़े–बड़े बाल, जूट, पटसन, बड़े–बड़े उलझे हुए बाल, वट वृक्ष की जटाएँ, जड़ें। (खबर सुनी जब सिव संकर ने तो जटा जमीन पर डाली। मा.लो. 684)

जटाऊ – वि.– जटा वाला बूटा, वट वृक्ष।

जटाजूट – पु.– जटा या लम्बे बालों का समूह, शिव की जटाएँ।

जटामासी – स्त्री.– एक प्रकार का पौधा जिससे औषधि बनाई जाती है, एक सुगन्धित वनस्पति।

जटाल्या – वि.– बड़े–बड़े बालों वाला।

जटा वाँछणी – क्रि.– बाल सँवारना, बालों में कंघी करना।

जटे – क्रि.वि.– जहाँ।

जठर – पु.– पेट।

जठराग्नि – स्त्री.- पेट, अन्न पचाने वाली गर्मी।

जठे – क्रि.वि. – जिधर, जहाँ।

जड़ – वि. - कन्द जिसमें चेतना न हो, चेष्टाहीन, स्तब्ध, वृक्ष की जड़, मूल रूप बंकनाल, वह नाल जिसमें बच्चे जन्म लेते हैं।

जड़णो – लगाना, लगा देना, लगाए, बंद करना। (ताला तो जड़िया प्रेम का जी। मा.लो. 616)

जड़सली – स्त्री.– जड़ी–बूटी, जड़ वाली औषधि।

जड़ाऊ – वि.– जिस पर नगीने जड़े हों।

जड़ाव – पु. - जड़ा हुआ, जड़ाऊ काम। नारेलाँ रो जड़ियो रे जड़ाव। मा. लो. 485)

जड़ी – स्त्री.– वनस्पति की वह जड़ जो औषधि के काम आती हो, वर्ष भर जीने वाला गन्ने का पौधा।

जड़ियो – जड़ाई का काम करने वाला, आभूषणों में रत्न व हीरों को जड़ने वाला। (नारेलाँ रो जड़ियो रे जड़ाव। मा. लो. 485)

जड़ल्या – जन्म के साथ वाले बाल। (खोल्या माय जडूल्या पूत रातड़ली रंग चूंदड़ी। मा.लो. 290)

जण – सर्व.– जिनके।

जणा ए – सं.– मनुष्यों जनों को।

जणानी – क्रि. - प्रकट करी, प्रत्यक्ष हुई, मालूम हुई।

जणी – क्रि.– पैदा करी, स्त्री के लिये सम्बोधन।

जणी बनाँ – अव्य.-जिसके बिना, जिसके बगैर, जिसे छोड़कर।

जणे – अव्य. - मानो।

जणे करो – मत, निषेध, जब, जिस समय। (कसूँबा री खेती राचन्द जणे करो। मा.लो. 471)

जतन – पु.– यत्न, प्रयत्न।

जतना – सर्व.– जितना।

जतनो – सर्व.– जितना।

जताना – सं.– बतलाना, दर्शाना, मालूम करवाना

जंतर – पु.– कल, यन्त्र, तान्त्रिक, यन्त्र, टोटका की वस्तु।

जंतर–मंतर – पु.– यन्त्र, मन्त्र, टोना–टोटका, जादू–टोना।

जतरी – सर्व.– जितनी।

जंतरी – स्त्री.– यंत्री, पंचांग, तिथिपत्र, यंत्र किया, जादूगर।

जत्थो – पु.– झुण्ड, समूह।

जती – पु.– यति।

जदे / जदि – क्रि. वि.– जब।

जन्नी – स्त्री. माता। जननी।

जनम – जन्म, उत्पत्ति, जीवन, जिन्दगी। (ऊँचा कुल में जनम लियो हे। मा.लो. 568)

जनमत – पु.– लोकमत।

जनमदाता – पु.– जन्मदाता, पिता, बाप।

जनम घुट्टी – स्त्री.– पौष्टिक औषधियों का बना हुआ वह पेय जो बच्चों को जन्म के स मय से एक–दो वर्ष तक पिलाया जाता है।

जनखो – वि.– हिजड़ा, नपुंसक, नामर्द।

जनगणना – स्त्री.– मनुष्यों की गणना, मर्दुम शुमारी।

जनगी – स्त्री.– जिंदगी, जीवन।

जनतन्तरी – पु. – लोकतंत्री।

जनता – स्त्री.– जन का भाव, प्रजा।

जननो – सं.– जन्म देना, उत्पन्न करना।

जनभासा – स्त्री.– देशी भाषा, लोकभाषा।

जनमेलो पूत – पुत्र जन्म होना। (हो दाई जो म्हारे जनमेलो पूत।

जनवासो – सं.– बारात के लोगों के ठहरने का स्थान।

जनसेवक – पु.– लोक सेवक, जनता की सेवा करने वाला व्यक्ति।

जनेऊ – पु.– यज्ञोपवीत, जनेऊ।

जनपद कल्याणी – स्त्री.– नगरवधू, गणिका, वैश्या, नगर का कल्याण करने वाली।

जनम कुंडली – स्त्री.– वह चक्र जिसमें किसी के जन्म समय के ग्रहों की स्थिति लिखी रहती है।

जनपद बोली – स्त्री.– जनपद की बोली, क्षेत्रीय बोली, स्थानीय बोली।

जन मदन – पु.– किसी के जन्म लेने का दिन।

जनमपत्री – स्त्री.– वह पत्र या खर्रा जिसमें किसी के जीवनकाल के ग्रहों की स्थितियाँ और उनके फलों का उल्लेख रहता है।

जनमभूम – स्त्री.– जन्मभूमि, मातृभूमि।

जनमेजय – पु.– राजा परीक्षित के पुत्र।

जनम्या – पु.– पैदा हुए, जन्म लिया।

जनमी गयो – पु.– जन्म ले लिया।

जनस – पु.– वस्तु, सामग्री, चीज।

जनसे – सर्व.– जिनसे।

जनानखानो – स्त्री.– नारी निवास, अन्तःपुर।

जनावर – पु.– जानवर, पशु।

जनी – क्रि. स्त्री.– पैदा किया, सहेली का सम्बोधन।

जणी – स्त्री.– सबको उत्पन्न करने वाली प्रकृति, जन्मदात्री माता, अनुचरी, स्त्रीद्र।

जने, जणे – अव्य.– जैसे।

जनोई – स्त्री.– उपनयन, यज्ञोपवीत।

जप – पु.– जाप, चुप (जपीजा) किसी मंत्र, नाम या वाक्य का बार–बार उच्चारण करना।

जपत – वि.– जप्त किया, अटकाया हुआ।

जप तप – पु.– जप और पाठ आदि, पूजा-पाठ।

जप्ती – स्त्री.– कुर्की, अपने अधीन करना।

जपना – क्रि.– जप करना, चुप रहना।

जपमाला – स्त्री. सं.– वह माला जिसे हाथ में रखकर जप करते हैं।

जपीजा – पु.– शान्त हो जा, चुप हो जा, सो जा, ठहर जा, रुक जा।

जबड़ो, जाबड़ो – पु.–मुँह, जबड़ा।

जबर, जबरा – बड़ा, मोटा, ताकतवर, बलशाली। (जबर–वंछाड़्या। (केश–बड़े-बड़े, बाल ओंछे या सँवारे, केश सज्जा की।

जबरजस्ती, जबरदस्ती – वि. स्त्री. - बलपूर्वक, ताकत से, बलात्, हठपूर्वक।

जबान – स्त्री.– जीभ, जिव्हा।

जबानी – वि.– मौखिक, कण्ठगत, जबानी जमा–खर्च, वह बात जो मौखिक हो पर लिखित न हो, बातों की लफ्फाजी, मौखिक बात– जिसका कोई महत्त्व न हो।

जवाब – जवाब, उत्तर, मुकाबला, प्रतिकार, जवाब देने वाला।

जबावदार – पु.वि.– उत्तरदायी, प्रामाणिक व्यक्ति।

जबी – अव्य.– जब ही।

जमई – पु.– जामाता, क्रि.- जमादी, धौल–धप्प जम्हाई, ऊबासी करी। (रतन जमाई म्हारे आवता हो राज। मा.लो. 468)।

जमइ लेणो – क्रि.– जमा लेना।

जमणो – क्रि.– जमा होना, इकट्ठा होना, भोजन करना, खाना खाना, जीमना, अरोगना, जम या स्थिर हो जाना, ठोस हो जाना। (जीमो भोलानाथ म्हारा शंकर अमली। मा.लो. 687)

जम्मात – स्त्री.– साधुओं का डेरा, जमाव, कक्षा, श्रेणी, दरजा, मनुष्यों का समूह।

जम्या – स्त्री.– पृथ्वी, सृष्टि।

जम्या को – सं.– संसार का , पृथ्वी का, जमाने का।

जमदूत यम – यमदूत, यमराज। (आगे जम की घाटी। (मा.लो. 700)

जमराज – न. – यमों का राजा, यमराज धर्म राज जो मृत प्राणियों का लेखा देखते हैं। यमलोक का राजा। (खिसाणो पड़ी ने जमराज पाछो भागीग्यो, मो.वे. 54)

जमपुरी – स्त्री.– यमपुरी, यमलोक।

जमराबीज – स्त्री. -होली के बाद की द्वितीया, यम द्वितीया।

जमरा की जड बालनो – यम द्वितीय के दिन बनाये जाने वाले तेल पकवान, भजीये, यम द्वितीया के दिन किट्ट लगे पात्रों को अग्नि ताप देकर साफ करना।

जमरो – यम द्वितीया, होली के बाद की द्वितीया, यम, यमराज, यम द्वितीया के दिन तेल पकवान बनाने की प्रथा।

जमा – वि.– संग्रह, एकत्र, इकट्ठा, मूलधन, पूँजी।

जमानत – स्त्री.– किसी व्यक्ति या कार्य की वह जिम्मेदारी जो अग्रिम रूप में कुछ

लिखकर अथवा कुछ रुपये जमा करके अपने ऊपर ली जाती है।

जमानत नामो – पु.– वह कागज जो किसी की जमानत करते समय लिखा जाता है।

जमानारो – पु.– जमाने का, संसार भर का।

जमानो – न. - काल, समय, अवसर, मौका, मुद्दत, वर्ष, संसार, दुनिया, साल। (आज जमानो कैसो अईग्यो। मो.वे. 41) कुछ भी जमा देना।

जमाबंदी – स्त्री.– पटवारी का वह खाता जिसमें आसामियों के लगान की रकमें लिखी रहती हैं, चकबंदी।

जमारो – पु. – जीवन, जिंदगी, सम्पूर्ण आयु, उम्र भर। (रेंट्यों चलावाँ काताँ सूत जमारो काटाँ बापक्याँजी। मा.लो. 623)

जमाल घोटो – पु.– रेचक,जमाल घोटा।

जमाव जमणो – क्रि.– जमावड़ा।

जमींदोज – वि.– जमीन में गाड़ना, पृथ्वी में उतार देना, धरती में मिलाना, दफन करना, मार गिराना।

जमीन – स्त्री. फा.– पृथ्वी।

जमीन पकड़े – क्रि.वि. – जमीन पकड़ लेना, जमीन पर लेट जाना।

जमींदार – पु.फा.– वह जो अंग्रेजी शासन में जमीन का मालिक होता था और किसानों को लगान पर जोतने, बोने के लिये खेत देता था।

जमींदारी – स्त्री. फा.– जमींदार की जमीन, जमींदार का पद।

ज्यूँ गाड़ी का पेड़ा – पद.– पहिया।

ज्योतिरलिंग – पु.– शिव के द्वादश ज्योतिर्लिंग।

जर – पु.वि.– धन–दौलत, बुढ़ापा।

जरजर कंता – वि.– फटे पुराने वस्त्र।

जरकड़ो – पु.ए.व. – भेड़िया, रोज।

जरकसी – वि.– जरी का बना वस्त्र।

जरणी, जरनी – सं.– जननी, माता।

(भूल्या ने वाट वतावाँ म्हारी जरणी। मा.लो. 629)

जरत – क्रि.– जलता है।

जरद – जर्दा, गहरा गुलाबी, कवच, घोड़ा। (उदा उदा स्गलू ने जरद किनारी। मा.लो. 577)

जरदो – स्त्री.– तम्बाखू, सुरती, जर्दा।

जरात – वि.– समूह, इकट्ठे, जमींदार की भूमि।

जराती – जमींदार का भूमि संयोजक।

जरा – थोड़ा। (खायो जरासो मालपुवो। मा.लो. 560)

जरियो – पु.– जरिया।

जरी – अव्य.– गोटा, किनारी, वह कपड़ा जिसमें सोने-चाँदी का काम हो, कलाबतू, कपड़े में सुनहरे तारों का बेल बूँटे आदि का काम, कारचोबी। (माथे जिनके पाग जरी की। मो. वे. 35)

जरीब – स्त्री.फा.– भूमि नापने की जंजीर।

जरूर – वि.– अवश्य।

जलदी – वि.– शीघ्र, जल्दी।

जलनो, जलणो – क्रि.– जलना, कुढ़ना, ईर्ष्या करना।

जलमा – प्रसूति के बाद जलाशय पर जाकर प्रथम बार जल पूजा करना। जलवा पूजन उत्सव, पनघट पूजन। (म्हारे आज जलमा की रात हो रसिया। मा.लो. 48)

जलाबा – क्रि.– जलाने हेतु।

जलीरिया – क्रि.– जल रहे।

जल–बली के – कृ.– जल भुन कर।

जलहल – इन्द्र, जलधर, बादल, वर्षा, जलाशय।

जलोक – पानी का कीड़ा, खून चूसने वाला कीड़ा, जोक, एग्जिमा वाले रोग पर इसे लगाया जाता है।

जव – पु.– जौ (अन्न), यव।

जवँई सा – पु.– जमाई सा.।

जवतल – जौ और तिल, यज्ञ, हवन में काम आने वाली सामग्री, जौ का आटा, तिल खाने के काम में आता है। तिल का तेल निकलता है।
अणी मंडप जवतल से चाव (पलाणो अबीराजी साँडड़ीजी । मा. लो. 326)

जवान – पु.– जवान, नौजवान, युवा, सैनिक, सिपाही।

जवानी – स्त्री. - यौवन, तरुणाई, जवानी को जोस।

जवाब – क्रि.– उत्तर।

जवाँ–मरद – वि.– युवा मर्द।

जवार, जुआर, ज्वार – स्त्री.–अनाज, समुद्र का तूफान।

जवारा – पु.– गेहूँ के ऊगे हुए दाने, जौया गेहूँ के नये निकले हुए अंकुर।
जउना जवारा ने कंकु का क्यारा। मा.लो. 601)

जवासा – पु.–वनस्पति।

जस – अव्य.– जैसे, वि.- यश।
(जस जीतो म्हारी नणद वदावणा।)

जसा – अव्य. – जैसा।

जसाई – अव्य.– जैसे ही।

जसाँ तसाँ – अव्य– जैसे-तैसे।

जसो–जसो – अव्य.– जैसा–जैसा।

जसोदा – स्त्री. - यशोदा।

जसोबी – क्रि.वि.– जैसा भी।

जा

जा – क्रि.– चला जा।

जाँ – सर्व.– जहाँ ।

जाइके – कृ.– जाकर के।

जाइऱ्या – क्रि.ब.व.– जा रहे।

जाइ पड़ेगा – क्रि.– जा पड़ेंगे।

जाऊँ – क्रि.वि.– जाता हूँ।

जाका – सर्व.– जिसका।

जाके – कृ.– जा करके।

जाग – सं. स्त्री.– जगह, जमीन, स्थान, क्रि. - जगना, निद्रा से उठना।

जाग्यो – जगना, उठना, नींद को त्यागना, सोकर उठना, चेतन होना, सावधान होना, सजग होना, जाग्रत, उत्पन्न होना।
(म्हारा कुँवर जाग्या था परभात। मा.लो. 504)

जागती – स्त्री. पु.– जागती जुई, जगती हुई।

जागतो – पु.– जगता हुआ।

जागरण – पु.– जागना, किसी उत्सव या पर्व पर रात भर जागकर भजन कीर्तन करते जगना।

जाँग – स्त्री.– जँघा, जाँघ।

जागा – स्त्री.– जगह, जमीन, स्थान।

जागीर – स्त्री.– जमीन–जायदाद।

जागीरदार – पु.– जागीर का स्वामी।

जाँघ्यौ – पु.– जाँघों में पहनने का पहनावा, जाँघिया, अधोवस्त्र।

जाचक – पु. - याचक।

जाँचनो – क्रि.– जाँच करना, परीक्षा लेना।

जाँचीऱ्यो – पु.– जाँच कर रहा, परीक्षण कर रहा।

जाजम – स्त्री.– फर्श पर बिछाने की छपी हुई चादर।
(जाजम दीदी झपलाय। मा.लो. 398)

जाजे – क्रि.– जाना।

जाँझ – स्त्री.– झाँझ, बजाने के पीतल के तासे।

जाट – सं.– एक क्षत्रिय जाति।

जाड़ – वि.– जाड़ा, मोटाई।

जाड़ो – वि.– मोटा, तगड़ा, भारी, दृढ़।

जाड़ी – स्त्री.– तगड़ी, मोटी।

जाड़ी जसोदा – स्त्री.– संजा का एक अंकन, मोटी यशोदा।

जाण – वि.– जानकार।

जाण जुगारा – वशीकरण, जानकार, जानने वाला, समझ, ज्ञान।
(माता बाई जाण जुगारा जी म्हारा दादाजी ने बस में कीदा हो राज। मा.लो. 413)

जाणजो – जानना, पहचानना, जानो, परिचय करना, मिलना।
(लागी होय सो जाणजो म्हारा भई। मा. लो. 697)

जाणणो – क्रि.– जानना, समझना।

जाणतो – क्रि. पु.- जानता, जानकार, ज्ञानी, बुद्धिमान।

जाणकार – वि.पु.– जिसे सब प्रकार की जानकारी हो।

जाणार – वि.– जाने वाली वस्तु।

जाणीग्यो – क्रि.– जान गया, समझ गया।

जाणेताँ – क्रि.– जानता, जानते।

जाणे – अव्य. – जिस तरह जैसे कि, मानो, जानना।
(जाणे गिन-गिन पाँव उठाया। मा. वे. 35)

जाणो – क्रि.– जाना, गुम होना, बीत जाना, बिगड़ जाना।

जात – पु. – जाति, वर्ग विशेष।

जात–जलावा – पु.– जाति का जुलाहा।

जातबार – वि.– जाति से बहिष्कृत।

जात भई – पु.– जाति बन्धु।

जात–पाँत – स्त्री.– जाति और उपजाति की पंक्ति, जाति–पाँति।

जातऱ्या – पु.– जात्रा करवाने वाले, यात्री।

जातरी – स्त्री.– यात्री।

जाताँड़ – क्रि.– जाते ही, जाता होतो जाओ, जाना हो तो चले जाओ।

जादा – वि. फा.– अधिक, बहुत, ज्यादा।

जादू – पु.– इन्द्रजाल, तिलस्म, वह अद्भुत खेल या कृत्य जिसका रहस्य दर्शकों को समझ में न आवे।

जादूगर – पु.– वह जो जादू के खेल करता है।

जादेज – वि.– अधिक ही, बहुत ही।

जाँ देखूँ वाँ – क्रि.वि.– जहाँ देखूँ वहीं।

जान – वि.– जीवन, जिंदगी, स्त्री.- दूल्हे की बारात, सं.- जानीवासे–वह डेरा जहाँ बारात ठहराई जाना है, जनवासो।
(केसरिया वर री जान । मा. लो. 384)

जानकी – स्त्री.– सीता, मैथिली।

जाननो – सं.क्रि.– जानना, ज्ञान प्राप्त करना, समझना।

जान पे – क्रि.वि.– परिचय, जिससे पूर्व का परिचय हो।

जान्या पेचाण्याँ – क्रि. वि. – जाने-पहचाने, परिचित।

जानवर – पु.– पशु, प्राणी।

जानी दस्मण – वि.– जान का दुश्मन, जान का ग्राहक, शत्रु।

जानीलो – क्रि.– जान लो, समझ लो, पहचान लो, ध्यान में रखो।

जाने कीज बात है – जाने का ही प्रश्न है।

जाँपे – क्रि.– जिस पर।

जापतो – पक्का बन्दोबस्त, जाब्ता, सम्हाल, सावधानी, रक्षा, निगरानी, रक्षा का प्रबन्ध, धूप तैयार करना, धूप देना, कंडे की धूप तैयार करना।

जापो – पु.– प्रसूति, जच्चा को बच्चा होना।

जाफळ – पु.– जायफल।

जाबर – वि. – बड़ा, अपने से अधिक बलशाली या ताकवर, जबरदस्त।

जाबड़ो – पु.ए.व.– जबड़ा।

जाबा – क्रि.– जाने के लिये।

जामन – पु.– दूध जमाने के लिये उसमें डाला गया खट्टा पदार्थ – इमली, छाच, दही, नींबू आदि।

जामण – जननी, माँ, माता।
(कुणसो वीरो लेवा जाय वो जामण म्हारी। मा.लो. 609)

जामुण, जाम्बू – पु.– एक प्रसिद्ध फल, जामुन, एक सदाबहार पेड़ जिसके फल बैंगनी या काले होते हैं।

जामण जाई – स्त्री. - सगी बहन, सहोदरा।

पंचाँ में राखाँ चारी सोब जामण जाई चूँदड़ लावाँ। मा.लो. 352)

जामा – वागे, पोशाख।

जाम्फल – पु.– अमरूद, जामफल।

जाम्बू – पु.– जामुन।

जामुणिया – सं.ब.व.– जामुन।

जाय – न. – जाना, प्रस्थाना करना, गमन करना, रवाना होना।

जायको – वि.– स्वाद।

जायगो – क्रि.– जायेगा।

जायजो – पु. – जाँच पड़ताल।

जायपत्री – स्त्री.– जावित्री।

जायफल – पु.– जायफल।

जाया, जायो – क्रि. – पैदा हुआ, उत्पन्न हुआ।

जा्यो – क्रि.पु.ब.व. – जा रहा।

जाँ – जहाँ भी,जा–रांड पाणी– मालवी गाली।

जाल – वि.– फंदा, किसी पक्षी आदि को फँसाने की जाली विशेष, मकड़ी का जाला, वि.- छल, फरेब, षडयन्त्र।

जाल – पु.– ज्वाला, आग।

जाली – वि.– नकली।

जाले–जाल – क्रि.वि.– जंगल–जंगल, झाड़ी–झाड़ी, वन–वन में।

जालो – पु.– मकड़ी आदि का जाला।

जाल्याँ – जाली, जालीदार। (पेंचा निरखो नी जाल्याँ झाँको राँगडिया जमईजी। मा.लो. 517)

जाव – क्रि.– जाओ।

जावड़ताँ – क्रि.– जाते समय, जाती बेर।

जावणाँ – क्रि.– जाना।

जावंतरी – स्त्री.– जायपत्री।

जावताँ – क्रि.– जाते समय।

जावरियो – जावरा, रतलाम जिले का कस्बा, जा रहा।

जवानाँ – क्रि.ब.व.– जावेंगे।

जावु पड़ेगा – क्रि.– जाना पड़ेगा।

जिंको – सर्व.– जिसका।

जिगर – पु. – कलेजा, मन, हिम्मत, दिल।

जिजाजी – पु.– बहनोईजी, बहिन के पति।

जितनो – सर्व.–जीतना।

जितणो – सर्व. – जीतना।

जिद – स्त्री. – हठ, अड़।

जिद्दी – वि.– जिद या हठ करने वाला।

जिन – पु.– जैनियों के तीर्थंकर।

जिनगी – पु. – जिंदगी, जीवन, आयु।

जिना – स्त्री.– सीढ़ी, जाना।

जिनावर – स्त्री.– जानवर।

जिनि बखत – क्रि.वि.– जिस वक्त, जिस समय।

जिबान – स्त्री.– जिव्हा, जीभ।

जिठानी, जिठाणी – स्त्री. - जेठ की पत्नी।

जिणरा – सर्व.– जिनका।

जिबड़ी – स्त्री.– जीभ, जिव्हा।

जिभड़ली – स्त्री.– जीभ, जिव्हा।

जिमणो – क्रि. – भोजन करना, दाहिना।

जिम्या – क्रि.– भोजन किया, खाना खाया।

जिमाड़ो – क्रि.– भोजन करवाओ।

जिम्ना – क्रि.– दाहिना।

जिम्मा – पु.– दायित्व।

जिमें – सर्व.– जिसमें।

जियरो – पु.– जी, मन, हृदय, जीव।

जिरे – स्त्री.– हुज्जत, तकरार, पूछताछ।

जिरो – सं.– जीरा, छोंक लगाने का मसाला, एक पौधा जिसके सु गन्धित छोटे फल सुखाकर मसाले के काम में लाये जाते हैं।

जिस्म – पु.– शरीर, देह।

जी

जी – पु.– मन, आदरसूचक शब्द, प्रत्यय।

जींको – सर्व.– जिसका, जिनका।

जीमे – क्रि.– भोजन करे, खाना खावे।

जी–जीयें – क्रि. कृ. – माँ को, बहिन को, बाई को।

जीजोजी – पु.– बड़ी बहिन का पति, जीजा, बहनाई।

जीजी – स्त्री.– बड़ी बहन, माँ, माता।

जीत – विजय, जीत, जय, फतह।

जीतणो – क्रि.– जीतना, विजय प्राप्त करना।

जीते जी – क्रि.वि.– जीवित अवस्था में।

जीत्या – क्रि.वि.– जीवित अवस्था में।

जीत्या – क्रि. पु.– जीत गये, विजय हुई।

जीन – स्त्री.– घोड़े की पीठ पर रखने वाली गादी, जीन।

जीने – सर्व. – जिसने।

जीप – स्त्री.– छोटी मोटर।

जीब – स्त्री.– जबान, जिव्हा, जीभ। (थारी जीबड़ी में डसे कालो नाग। मा.लो. 567)

जीबड़्ली – स्त्री. जीभ, जिव्हा, जबान।

जीमणो – क्रि.– भोज करना, दायाँ।

जीमण – पु. - भोजन।

जीयो – क्रि.– जीवित रहो।

जीर्‌यो – क्रि.– जी रहा।

जीरावण – स्त्री.– एक जायकेदार पदार्थ जिसे चटनी के समान खाया जाता है।

जीव – प्राण, प्राणी।

जीव जंत – पु.– पशु–पक्षी और कीड़े मकोड़े आदि प्राणी।

जीवड़ो – आत्मा, मन, जीव, जी। (करो म्हारा जीवड़ा एकादशी। मा. लो. 681)

जीवणो – जीना, साँस चलना, जीवित रहना।

जीव तोड़ – अत्यधिक परिश्रम जी तोड़ मेहनत करना, कठिन परिश्रम करना।

जीवनी – स्त्री.– जीवन चरित्र, जीवन सम्बन्धी।

जीवता रो – आशिर्वाद. जीवित रहो, दीर्घायु हो।

जीवती – स्त्री.– जीवित।

जीव दईद्‌यो – क्रि.– प्राण गँवा बैठे, जीवन दे दिया, जीवन अर्पित कर दिया।

जीवन जड़ी – स्त्री.–संजीवनी बूटी, प्राणदायिनी औषधि।

जीव देणो – क्रि.– जान देना, आत्महत्या करना, प्रेम या सहयोग देना।

जीवहत्या – स्त्री.– प्राणियों का वध।

जीवन बूटी – संजीवनी बूटी।

जीव घाली के – क्रि.– कष्ट करके, मन लगाकर। जीव ठकाणे आयो–जीव स्थिर हुआ, मन शान्त हुआ।

जीवतो – पु.– जिन्दा, जीवित।

जीवात्मा – पु.– चेतना, प्राणी।

जींसे – सर्व.– जिससे।

जु

जुआँ – पैसे से खेला जाने वाला खेल, जुआँ, द्यूत, सट्टा, बालों का कीड़ा। (खेलतो थो जूँआ। मा.वे. 80)।

जुआड़ी, ज्वाँडी – पु.– जुआ खेलने वाला।

जुआन – पु.– जवान, युवा।

जुकती – वि.– युक्ति, तरकीब।

जुग – पु.– युग, जोड़।

जुगत कर – क्रि. – युक्ति करो, यत्न करो, प्रयत्न करो।

जुगाड़ – वि.– प्रयत्न, युक्ति।

जुजाजी – क्रि.– युद्ध किया।

जुझाणा – युद्ध में मारा जाने वाला, जूझ गये, मर गए, वे जुझार कहलाए, वीर गति को प्राप्त होना। (घोड़ी रा जाया झीणां रण में जुझाणा। मा.लो. 473)

जुझारजी – सं.- पूर्वज, जो युद्ध में मारे गये, लोक देवता, जूझने वाला, धीर योद्धा, बहादुर, युद्धकार।

जुझारू – क्रि. – जूझने वाला, मर मिटने वाला, युद्ध करना, सिर कट जाने के बाद धड़ से लड़ना।

जुझे – क्रि.– युद्ध करे।

जुटना – क्रि. – किसी भी काम में लग जाना,

जुटाना, जुगाड़ करना।

जुट्टो – वि.– जुट, संगठन, समूह, गड्डी, एका।

जुठणियाँ – कान के झूमर, झेले, एरिंग। (जुठाणिया घड़ाओ बाईसा रा वीर। मा.लो. 514)

जुड़मा – वि.– गर्भ काल से ही सटे या जुड़े हुए बच्चे होना।

जुड़ाई – स्त्री.– जोड़ने का कार्य करना, जुड़ाई करना, ईंट–पत्थर आदि को जोड़कर मकान आदि बनाना।

जुतना – क्रि.– बैल, घोड़े आदि का हल, गाड़ी आदि में जुतना।

जुते – क्रि.– जोते हुए। जूते।

जुदा – वि.– अलग, भिन्न।

जुना – वि.– पुराना, प्राचीन।

जुप्या – मचान के पटाव में लगने वाले डंडे।

जुम्मा – पु.– शुक्रवार का दिन।

जुरमाना – पु.– अपराधी से दण्ड में कुछ धन लेना।

जुलम – वि.–अत्याचार,अपराध, अन्याय।

जुल्फाँ – स्त्री. फा.– सिर के बड़े–बड़े बाल जो पीछे या इधर–उधर लटके रखते हैं।

जुलाब,जल्लाब – वि. - रेचक, दस्त, दस्त लगाने वाली वस्तु।

जुलाहो – पु.– जुलाहा, कपड़े बुनने वाला।

जुवाब – क्रि.– उत्तर, जवाब।

जुवार – जुहार, प्रणाम, अभिवादन करना, जुहारना। (गोयरा से लटक जुवार म्हारा राज। मा.लो. 468)

जुवों – पु.– जुआ, जूड़ा।

जू

जूँ – अव्य.– ज्यूँ जैसे, स्त्री.- सिर के बालों में होने वाला एक छोटा कीड़ा।

जुँआ घर – पु.– वह स्थान जहाँ बैठकर लोग जुआ खेलते हैं, द्यूतशाला, जुआखाना।

जुवारी – विवाह के बाद बड़ों के द्वारा दूल्हे को पहली बार दी जाने वाली भेंट, सीख, विदाई, रवानगी, जुआड़ी, सीख देकर विदा करना।

जूजाजी – क्रि.– युद्ध किया।

जूझणो – क्रि.– लड़ना, लड़कर मर जाना, युद्ध करना।

जूझे – क्रि.– युद्ध करे, लड़े।

जूट – पु.– जटा की गाँठ, जूड़ा, सन।

जूड़ा – सं.– गाड़ी का जुआ, वेणी, बन्धन।

जूड़ी – स्त्री.-हल का जुआ, वि.-मलेरिया ताप, स्त्री. गाड़ी की जुड़ी जिसमें बैल जोते जाते हैं।

जूड़ी ताप – वि.– मलेरिया ज्वर, ठण्ड देकर आने वाला बुखार।

जुड़ी फडारणो – क्रि.वि.– पापड़ सुखाना।

जूड़ो – पु.– गाड़ी के आगे की वह लकड़ी जो बैलों के कन्धे पर रखी जाती है, घट्टी का हत्था जिसे पकड़कर वह चलाई जाती है, लकड़ी की हत्ती (हत्ता हाथ में रखने का डांडा) मालवी में इसके लिये हातो या हत्तो शब्द भी व्यवहृत होता है, बालों का जूड़ा। (धोरीडा ए मेल्या जोतर जूड़ा। मा. लो. 620)

जूता, जूतो – पु. खायड़ा, खायड़ी, मोजड़ी, चप्पल, जूते।

जून – पु. – जून का महीना, जूना, पुराना, समय, वक्त।

जूना रूख – वि.– पुराना, वृक्ष, वृद्ध, बूढ़े।

जूनी – वि.– पुरानी, प्राचीन।

जे

जेटालजी – वि. – दुष्ट प्रकृति का मनुष्य।

जेठ – पु. -ज्येष्ठ, पति का बड़ा भाई। (लोड्यो देवर पीसे पोवे जेठ भरेगा पाणी हो राज। मा.लो. 413)

जेठानी, जेठाणी – स्त्री.– ज्येष्ठ पत्नी, जिठानी।

जेमती – स्त्री.– लम्पट, मालवी गाली,

चरित्रहीन स्त्री, हीड़ की एक नायिका।

जेमां – वि.– लम्पट या दुष्ट प्रकृति की स्त्री, एक मालवी गाली।

जेमें – अव्य.– जिसमें।

जेर – वि.– जहर, विष।

जेरखइने – कृ.– जहर या विष खा करके।

जेरबाज – सं.– स्त्रियों के स्तन या गले पर होने वाला गिल्टी रोग विशेष फोड़ा।

जेर से भऱ्यो – वि.– जहर भरा, जहरीला, विष भर।

जेरी कोचलो – वि.– एक विषैला फल।

जेल – पु.–बंदीगृह, जेलखाना, हवालात।

जेलखानो – पु.– जेलखाना, हवालात।

जेलू – स्त्री. वि.– लम्पट स्त्री, स्त्री के लिये गाली।
(म्हारा राइवर का उबा दुखे पाँव तू कर वो जेलू आरती। मा. लो. 415)

जेवर – वि.– आभूषण, गहना।

जेहर – वि.– जहर, विष।

ज्यों – अव्य. – जैसे ही।

जो

जोई ने – ढूँढकर, देखकर, परखकर।

जोंक – स्त्री. – खून चूसने वाला कीड़ा।

जोखम – स्त्री.– धन, रुपया, सम्हालने में खतरे की वस्तु।

जोखिम – स्त्री.– महत्त्वपूर्ण वस्तु , खतरा।

जोग – पु.– योग के लायक, योग्य (जोग लिखी गाम कायरा से अमुक की राम राम) पत्र का प्रारम्भिक शब्द जोग लिखी, संयोग, योग।

जोगण – स्त्री.– योग धारण करने वाली स्त्री।

जोगणी – स्त्री.– योगिनी, योग रमाने वाली, संन्यासिनी।

जोगी – पु.– योगी, योग रमाने वाला।

जोगीड़ा – पु.– साधु जो सारंगी पर भजन गाकर भीख माँगते हैं।

जोगीड़ो – पु.– बना हुआ या कपटी योगी।

पाखण्डी, बहुत सामान्य योगी या साधु।

जोगो – योग्य।
(जीजाजी वीणे फूल हो म्हारा रायवर जोगी सेवरो जी। मा.लो. 196)

जोड़ का – वि.– बराबरी का, जोड़ी का।

जोड़–ढीला पड़्या – शरीर की हड्डियों के जोड़ शिथिल पड़ गये, ढीले पड़ गये।

जोड़णो – क्रि.– जोड़ना, योग करना, जोड़ने की क्रिया या भाव।

जोड़ा – स्त्री.– जोड़, सन्धि, युग्म।

जोड़ा–जोड़ी – क्रि.वि.– जोड़ने का कार्य करना।

जोड़ी – स्त्री. - एक ही प्रकार की दो वस्तुएँ, जोड़ा।

जोड़े – वि. – बगल में, निकट, नजदीक, साथ में, संग, बराबर, सदृश।
(म्हारा जोड़े बईराँ देखी। मा.वे. 52)

जोड़ो – क्रि. जोड़ने का आदेश, किसी का युग्म जोड़ा।(जोड़ो-जोगती-जमी) जा-वर-वधू का जोड़ा संयोग से ही जमता है।

जोणो – क्रि. – प्रतीक्षा करना, तलाश करना, ढूँढना, राह देखना, इन्तजार करना, देखना, ताकना।

जोतणो – क्रि.– जोतना, सं.- गाड़ी, कोल्हू हल आदि में चलाने के लिये इनके आगे-पीछे घोड़े-बैल आदि बाँधना।

जोत – सं. स्त्री.– देवस्थान में सतत रूप से जलते रहने वाले दीपक की ज्योति, प्रकाश, उजाला, बैलों के गले का फन्दा।

जोतई – क्रि.– बैलों का हल–बक्खर में जोतने का काम, खेत जोतना या हाँकना।

जोतर – बैलों को जब गाड़ी में जोते जाते हैं तो उनको गले में जोत बाँधे जाते हैं।
(धोरीडा ए मेल्या जोतर जूडा। मा. लो. 620)

जोत सरीखी – वि.– ज्योति जैसी, प्रकाशवान।

जोत सवाई – क्रि. – ज्योति सतत बढ़ती है (स्त्री.) जोतना।

'जो'

जोत्या, जोतिया – क्रि.– हल में बैलों को जोता गया।

जोद – पुत्र, बेटा, योद्धा, शूरवीर, युवा, जवान, बलशाली, मजबूत। (महल चिणाव फलाना जीरा जोद सेना रो सूरज उग्योजी। मा.लो. 452)।

जोधा, जोधो – वि.– योद्धा, वीर, बहादुर।

जोनी – पु.– योनि, शरीर, जन्म।

जोबन – वि.– यौवन, जवानी, युवावस्था।

जोरकरो – वि.– किसी में ताकत लगाना।

जोर जुलम – जबरदस्ती, जुल्म, अत्याचार, बलात्कार।

जोरदार – वि.फा.– जिसमें बहुत जोर या बल हो, जोर वाला, बलवान।

जोर-जबरई – क्रि.वि.– जबरदस्ती, बलपूर्वक, ताकत से।

जोरावर – शक्तिवान, बहादुर, शूरवीर, साहसी, उत्साही। (तो मोरत रे वेराँ लई लीणो रे जोरावर। मा.लो. 703)

जोराबरी – वि.– जबरदस्ती, बलात् , अपने दमखम पर, बलात्कार।

जोरा जोरी – क्रि.वि. स्त्री.– जबरदस्ती, अपने दम पर, बलात्।

जोरू – स्त्री.– पत्नी, स्त्री।

जोवणो – जलाना, दीपक लगाना, प्रज्ज्वलित करना, ज्योत जलाना, खोजना। (सींगडा बी रंगसु ने दिवला बी जोवसु। मा.लो.670)

जोणो – देखना, खोजना।

जोवाँ – देखना, इन्तजार करना, प्रतीक्षा करना। (पीपली रे वीरा जाँ चढ़ जोऊँ वाट। मा.लो.352)

जोवे वाट – क्रि.– राह देखे।

जोस – वि. – उत्साह, उमंग, आवेश, बल।

जोसी – सं.– ज्योतिषी।

जोहार – पु.– जुहार, अभिवादन, झुककर प्रणाम करना।

'झ'

झ – च वर्ग का अक्षर।

झँई – स्त्री. – परछाई, छाया।

झक झोलनो – बारीक जाली (नेट की) चुनरी, पतली चुनरी, झीनी-झीनी, महीन, जोर से हिलाना, झटका मारना। (झक झोलना में डील देखाय। मा.लो. 550)

झक मारनो – क्रि. – मछली मारना, कुछ भी कार्य न करने वाले के लिये एक मालवी गाली, निठल्ले।

झक्की – वि. – सनकी।

झकार, झणकार – वि. – ध्वनि, आवाज।

झकाझक – क्रि.वि. – बढ़िया, सुन्दर, साफ-स्वच्छ, उजला।

झकोलणो – क्रि. – किसी वस्तु यथा मटका या गगरा आदि को अन्दर से हाथ डालकर झकोलना, झकोला देकर घड़े में पानी भरना, जोर से हिलाना। (दई झकोर भऱ्यो बेवड़ो।)

झखाड़ – पु. – घनी।

झगड़णो – क्रि. – लड़ाई करना, झगड़ना।

झगड़ो – क्रि. – झगड़ा, लड़ाई, किसी बात पर होने वाली कहासुनी या विवाद।

झगड़ालू – वि. – बात-बात पर झगड़ा करने वाला, कलहप्रिय, लड़ाकू।

झगमग – क्रि.वि. – जगमग, जगमगाहट।

झगाझोल – प्रकाशमान, जगमगाहट, आभा, चमकीला, क्रांति। (झूमणा री लागी झगाझोल हो। मा.लो. 713)

झगल्यो – नं. – बच्चों के पहनने का ढीला कुर्ता। (झगल्या ने झूल। मो.वे.34)

झगामग – प्रकाशमान, अनेक दीपकों वाला प्रकाश, चमक, जगमग होना। (नीम झगामग हुई रयो फुलड़ा को अन्त ने पार। मा.लो. 487)

झझक – स्त्री. – झिझक।

झट – तत्काल, शीघ्र, झटपट।

झटकणो – क्रि. – फटकारना, झटका देना, इस प्रकार हिलाना कि गिर पड़े, झटका देकर कोई वस्तु छीनना, जोर से झटकाना, एँठना।

झटकारनो – क्रि. – झटकारना, फटकारना।

झटका से – क्रि. – एक ही झटके से।

झटको – क्रि. – पशु वध के लिये तलवार का झटका देना, वार करना, अचानक बड़ी हानि से आहत होना।

झटपट – अव्य. – बहुत शीघ्र, तुरन्त, तत्काल।

झटुल्यो – वि. – तुच्छ, अप्रतिष्ठित।

झड़ – बारिश की झड़ी, लगातार वर्षा होना, पानी की झड़ी लगना।
(भादव की झड़ लागी हो राज। मा.लो. 622)

झड़ जामली – जड़ जामुन।
(आमली झड़ जामली जीका लाम्बा तीखा पान। मा.लो. 614)

झड़णो – किसी फल का पक कर नीचे गिर जाना, झड़जाना, झड़कर गिरना, नष्ट हो जाना, मर जाना।
(पाका तो पान गोरी म्हारी झड़ी गया। मा.लो. 711)

झड़प – स्त्री. – थोड़ी कहासुनी, सामान्य झगड़ा, तकरार।

झड़्यो – गिरना।

झड़ बेर, झड़ बेरी – स्त्री. – जंगली छोटी काँटेदार बेरी व फल।

झडामड़ – झरना, लगातार होने वाली वर्षा, लम्बे समय तक बरसते रहना।
(म्हारी काकी ती मिलता म्हारा नेण झड़ामण लागा। मा.लो. 361)

झड़ी – स्त्री. – किसी चीज से लगातार कुछ झड़ने की क्रिया, बरसात की झड़ी।

झनकनो – झन-झन की आवाज।

झनझनाट – क्रि. – झींझनी आ जाना।

झपकी – स्त्री. – पलक गिरने भर का समय, नींद का झोंका।

झपट्टो – पु. – झपट्टा मारना, लपककर किसी वस्तु को लेना, वेग,जोर, झपट।

झपलाय – बिछाना, पानी से छिटकाव करना, पानी में धोना।
(जाजम दीदी झपलाय, ढोलो ने मारुणी खेले सोयटा जी म्हारा राज। मा.लो.398)

झबरो – वि. – बड़े बालों वाला कुत्ता।

झबलक दिवलो – जगमगाता दीपक।
(आँख तमारी मोटी गजानन्द झबलक दिवलो बळे हे जी।)

झबलो – स्त्री. – झुग्गा, झुगला, बच्चे का फ्राक।

झब्बू – स्त्री. – ताश का एक खेल।

झबको – पु. – गुच्छा, झुमका।

झबूके – क्रि. – हवा से हिलना, लहराना, डुबाना।
(केळ झबूके बारने जी।)

झबरकणो – फहराना, दिखाना, चमकना, खूब प्रकाश मान, तेज प्रकाश देने वाला।
(पान झाल झबरका ले। मा.लो. 557)

झबर्‍यो – क्रि. – बड़े-बड़े बिखरे बालों वाला कुत्ता या आदमी।

झबलक – वि. – हिनहिनाती घोड़ी के लिये विशेषण।

झुबकतो – झुकता हुआ, डूबता हुआ।

झबिया – भुजबंद की लूम।
(बइयाँ को तेरे बाजूबँद सोवे झबिया रतन जड़ावो ए। मा.लो. 226)

झमके – वि. – तुरन्त, शीघ्र, त्वरित।

झमको – नाचना, चाच की एक गति, तीव्र गति का नाच, पायल या घूँघरू की झनकार, ठमक।

(म्हे तारा री रमझोला झमका ती आऊँ रे। मा.लो. 563)

झम्म से – वि. – तुरन्त, शीघ्र, जल्दी।

झमाक से – वि. – तुरन्त, शीघ्र।

झमेलो – पु. – बखेड़ा, झंझट, झगड़ा, भीड़-भाड़।

झर – स्त्री.सं. – पानी का झरना, स्रोत, समूह, लगातार, वृष्टि, पानी की झरप।

झरझर – स्त्री. – जल के बहने या बरसने या हवा चलने की ध्वनि।

झरण, झरनो, झरणो – सं. – झरना, सोता।

झरप – स्त्री.– पानी की रिसन या रिसाव।

झरमर – वर्षा की फुहार, बूँदा बूँदी, वर्षा की ध्वनि, जगमगाना (झरमर आरती)।

झरियाँ – स्त्री. – नदी में खोदकर बनाई गई पानी की झरियाँ, कम गहरे किन्तु चोकोर पक्की बनाई गई पानी की झरी या वापी। (झरमर झालाजी री आन। मा. लो. 597)

झरी – स्त्री. – पानी का चौकोर खुदा हुआ तथा बँधा हुआ झरा, नदी में खोदकर बनाई हुई पानी की झरी।

झरो – क्रि. – सोता, झरने का काम करो।

झरोको – स्त्री. - गवाक्ष, खिड़की, वातायन, झरोखा, गोख।
वागाँ में खेलाँ वगिचा में खेलाँ (खेलाँ झरोका के बीच। मा. लो. 578)

झल्डो, झल्ड़को – वि. – लकीर, फटा हुआ वस्त्र का टुकड़ा, दरार पड़ी हुई, चिह्न बने हुए।

झलक – न. – झलकना, हल्का सा दृश्य।

झलकणो – क्रि. – झलकना, छबकना, झलकी देना, थोड़ा सा दिखाई देना, चमकना, कुछ-कुछ प्रकट होना, आभास होना।

झल्लाणो – क्रि. – क्रुद्ध या खिन्न होकर बोलना, खीजना।

झँजोड़णो – क्रि. – झँझोड़ना, हिलाना, झकझोरना, झटका देना।
(कुली का हाथ में से पेटी झँझूकी। मो.वे.50)

झा

झाँकणो – क्रि. – लुक-छिपकर देखना।

झाँकरो – वि. – काँटेदार झाड़ी, पतली तथा जलाऊ लकड़ियों का समूह।

झाँकी – दर्शन, अवलोकन, छबि, भगवान के डोल निकालना, भगवान की पालकी फूलों से सजाकर प्रकाशित करके उसमें भगवान को बिठाकर शहर में गाजे बाजे के साथ निकालना, झाँकर देखना, दृष्टि डाल करके।
(साँवरो श्रीरंग झाँकी करो साधु आरती। मा.लो. 654)

झाज – पु. – जहाज।

झाँझ – स्त्री. – मंजीरे की तरह के गोलाकार पीतल के टुकड़ों का जोड़ा जो पूजन आदि के समय बाजाया जाता है, बजने की करताल, पैरों का आभूषण, बजाने का वाद्य।

झाँझर – स्त्री. – पैंजनी, पैर का आभूषण।

झाँझरियो, झाँझरिया – सं. – पैरों का आभूषण, झाँझरी, घूघरी, चाँदी की घूघरमाल।

झाँझरी – स्त्री. - झाँझ, करताल, बजाने का वाद्य, पैरों का आभूषण।

झाँझा – मजबूत, टिकाऊ।
(लाला जड्या हो झाँझा लोवा रा। मा.लो. 332)

झाँट – तुच्छ, मूत्रेंद्रिय के आसपास के बाल।
(वा तो काले बाबाजी रो झाँट मेरे लाल। मा.लो. 571)

झाड़, झाड़को – पु. –वृक्ष,पेड़, झाड़,डाँट-डपट।

झाड़ की डाल – स्त्री. – वृक्ष की शाखा, डाली।

झाड़न – स्त्री. – बुहारी, झाडू।

झाड़णो – क्रि. – बुहारना, झाडू देना। मंत्र पढ़ते हुए हाथ फेरना और फूँक मारना, झाड़ने की क्रिया, टोना, झान्नी डालना। (कोई जाण के बुलाव, अच्छो झाड़वा सरीको। मो.वे.56)

झाड़ी – सं. – वृक्ष कुंज।

झाडू, बुहारी,झाडू व्वारी– स्त्री. – झाड़न या बुहारी।

झाड़ेग्यो, झाड़ोग्यो – क्रि.पु. – पाखाने जाना।

झाड़ो – पु. – मल, गू, पाखाना।

झापट – पु. – थप्पड़, तमाचा।

झापड़ – पु. – थप्पड़, तमाचा, मुँह पर हाथ से मारना।

झाबरी – अधिक बालों की पूँछ वाली, सिंचाई के लिए पानी का मध्यस्थान जहाँ पानी एकत्र कर आगे ले जाया जाता है।

झाबऱ्यो – वि. – झबरे बालों वाला कुत्ता, शेर आदि।

झामरी – झबरे बालों वाली, शेरनी, कुतिया आदि। (धोला घोड़ा की झामरी पूँछ। मा. लो.546)

झार – वि. – अग्नि की लपट, ज्वाला।

झारनो – क्रि. – थोड़े थोड़े पानी की धार देना, गरम पानी की धार से धोना या सेक करना, छिड़कना, झालना, झालन लगाना, टाँका लगाना, (घासलेट झारीऱ्या हो। मो.वे.41)

झारी – स्त्री. – पानी रखने का एक प्रकार का लम्बा टोंटीदार बर्तन, कढ़ाई से तली हुई वस्तुएँ निकालने की झारी, चाय छानने की झारी, किसी पात्र में पानी झारना।

झारो – पु. – नमकीन आदि तले हुए पकवानों को कढ़ाई में से बाहर निकालने का साधन, जालीदार टोटी का पात्र। (ऊपर घी को झारो। मा. लो. 127)

झाल, झाल – पु. – ज्वाला, आग की लपट, क्रोध, कान के झेले, कानों का एक गहना। (कानाँ ने झाल छड़ावजोजी।)

झालज – सं. – गले का आभूषण।

झालाँ – वि. – ज्वाला, लपटें।

झालना, झालनो – क्रि. – धातु की चीजों को टाँका लगाकर जोड़ना।

झालर – स्त्री. – किसी चीज के किनारे पर शोभा के लिये बनाया या लगाया हुआ गोटे आदि का किनारा, मन्दिर में भगवान् की आरती के समय बजाई जाने वाली पीतल की घण्टी या झालर (झालर वाजे घड़ावल बाजी) मुनिजी का मून छुट्या) सिर के बालों , विशेषकर चेहरे के ऊपरी भाग के बालों के ऊपर लगाई जाने वाली स्वर्ण पट्टी, झालर या लड़ी। (झालर वाजा वाजीया। मा.लो.656)

झालर मोगर – दूधारु गाय।

झालरी – स्त्री. – झालर, चौड़ी किनारे या गोट।

झालरो – वि. – गले का आभूषण, जो प्रायः छाती तक लटकता है।

झाला – बगीचे में गणगोर को ले जाकर महिलाएँ झाले देती हैं। महिलाएँ पंक्तिबद्ध हो आँचल फैलाकर एक दूसरे से जुड़ जाती है और कनिष्ठा अँगुली को परस्पर पकडकर आँचल उछालते हुए नृत्य करती है। (नन्दलाल थारी नजर म्हारा झाला। मा.लो. 590)

झाली – क्रोधी, गुस्से वाली, ज्वाला, आवेश, झल्लाहट, विवाहगीतों की नायिका, झाला राना की पत्नी। (झाली पर वार्या ताणणाजी म्हारा राज। मा.लो. 534)

झालो – वि. – इशारा, तीज के झाले। (झाला से समजाऊँ माता छालरी)

झाँई – न. – मंद प्रकाश, प्रतिबिम्ब, परछाई, झलक, चमड़ी में पड़ने वाला कालापन।

झाँकणो – क्रि. – झुककर देखना, आड़ में छिपकर कुछ देखना, झाँकना। (पण म्हने उनी बई आड़ी झाँक्यो। मो.वे.50)

झि/झी

झिकणो – वि.–झींकना, परेशान होना, रोना।

झिंगार झारी – स्त्री. – टोटीदार पानी परसने का पात्र।

झिड़कणो – क्रि. – दुत्कारना, डाँटना, फटकारना।

झिड़की – स्त्री. – डाँट-फटकारना।

झिझक – संकोच, हिचक, लज्जाजनित संकोच, भय।

झिंतरी – स्त्री. – बिखरे बालों वाली।

झिलमिल – वि. – चमकदार, कला बत्तू की झिलमिलाती वस्तु, पुराने घरों के जाले।

झींकणो – क्रि. – झींकना, रोना, परेशान होना, कूड़ना।

झींख – वि. – कुढ़न, कुढ़ना, झींकना।

झींगुर – पु. – छोटा बरसाती कीड़ा जो बहुत तेज आवाज में झी-झी की आवाज करता है।

झीण-खगीरे – पु. – घोड़े-घोड़ी की पीठ पर कसा जाने वाला सामान।

झीण – वि. – क्षीण, कमजोर, बारीक, महीन, झीना।

झीणा मारुजी – दुबला पतला पुरुष, कृश, बारीक, महीन, सुरीला। (थारा तो वीराजी म्हारी नथड़ी रो मोल, झीणा मारुजी हो राज, मुखड़ा रो माँडण सायबा नथ लाजो राज। मा.लो. 483)

झीणो – स्त्री. – पतला, महीन, बारीक, झीना। (लछमणजी री घोड़ी झीणा फूल हो गंगा का वासी। (मा. लो. 641)

झींतरा – फटे हुए तार तार बिखरे हुए, बिखरे बाल, कपड़े के तार–तार बिखर जाना।

झींतरी – स्त्री. – बिखरे बालों वाली, फटे-पुराने वस्त्रों वाली। (माय बोड़ी ने बेटी झींतरी। मा.लो.541)

झींतर्‍यो – पु. – बिखरे या छितरे बालों वाला।

झीन, झीण – पु. – अंग्रेजी शब्द जिनिंग फैक्ट्री से बना झीन, झीण या जीण शब्द।

झील – स्त्री. – लम्बा-चौड़ा प्राकृतिक जलाशय या तालाब।

झु

झुकणो – क्रि. – झुकना, प्रणाम करना, नम्र होना।

झुगलो – स्त्री. – बच्चों का फ्राक, झुग्गा।

झुमणो – झुमके, कानों का एक गहना, झेला। (झुमणा रतन जड़ाव। मा.लो. 17)

झुग्गो-टोपी – स्त्री. – बच्चों के पहनने का झगला-टोपी।

झुण्ड – वि.पु. – समूह।

झुनझुनो – पु. – खिलौना जिसे हिलाने से झुनझुन की आवाज होती है।

झुमका, झुमको – सं. – झुमका, चाबी का गुच्छा, कान में पहनने का गहना।

झुर झुर झाँकणो – झुक- झुक देखना, झाँकना। वी चाँद सूरज जी झुर झुर झाँके म्हारा राज। मा.लो.115)

झुरझुरी – स्त्री. – कँपकँपी।

झुरनो – किसी के वियोग में रोना, दुख या चिंता से क्षीण होना, कलपना, विकल होना, रुदन करना।

झुलसणो – वि. – अधिक गरमी या जलने से

किसी चीज के ऊपरी भाग का सूख या जलकर जाना।

झुलाणो – क्रि. – झुलाना, किसी को झूलने में प्रवृत्त करना, झूले देना।

झू

झूठो – वि. – असत्य, मिथ्या, झूठा, झूठा बोलने वाला, नकली, बनावटी। (बीती बाताँ बोलूँ पिया इमे कोनी झूठ। मो.वे. 32)

झूठ – वि. – असत्य।

झूठ-मूठ – क्रि.बि. – बिना किसी आधार के, यों ही, व्यर्थ में।

झूठेड़ारी झूठ – क्रि.वि. – असत्य बोलने वालों का झूठ।

झूठी-मूठी – क्रि.वि. – काल्पनिक, असत्य, झूठ।

झूड़नो – क्रि. – डंडे से पीटना, ठोकना, मारना, जोर की पिटाई करना, झकझोरना।

झूमणो – क्रि. – झूमना, लिपटना, कान का गहरा, बार-बार आगे-पीछे, नीचे-ऊपर या इधर-उधर हिलना।

झूमर – पु. – सिर पर पहनने का एक गहना, झुमका, समूह बनाकर नृत्य-गीत करना। (म्हारा माथा को झूमर झोला खाय रे हठीला बना।)

झूल – स्त्री. – शोभा के लिये चौपायों की पीठ पर बोझा आदि के लिए डाला जाने वाला कपड़ा, झूला, गहना।

झूलो – पु. – दोला, हिंडोला, पेड़ पर लटकाई जाने वाली रस्सियों या रस्से से बनाया दोला, जिस पर बैठकर या खड़े होकर स्त्री-पुरुष झूलते हैं।

झे

झेलनो – झेलना।

झेलो – पकड़ना, हाथ में लेना, थामना, जिम्मेवार, उत्तरदायी। (बाईजी करी रया आड़ी टेड़ी बात ओ रुपारा बाईजी झेलो नी ओलम्बो। मा.लो. 471)

झोंकण – सं. – भट्टी में झोंकी जाने वाली लकड़ी, कोयला, कचरा कूटा आदि वस्तुएँ।

झोंकीद्यो – पु. – झोंक दिया।

झोंकीऱ्यो – पु. – झोंक रहा, भट्टी में झोकण डाल रहा, बातें बना रहा।

झोंका – पु. – झूला, हिंडोला, हिलोर, लहर।

झोंको – पु. – हवा का झोंका, इधर-उधर हिलने की क्रिया।

झोंटो – पु. – सिर के बड़े-बड़े बालों का समूह, तेल-कंघे से रहित बाल।

झोंटी – पहली बार ग्याबन गाय या भैंस।

झोंप – पु. – दलहन को पानी में निकालकर एक जगह एकत्रित करना तथा उस पर कपड़ों आदि का बोझ डालकर गर्मी देना।

झोंपड़ी – स्त्री. – फूस की टपरिया, झोपड़ा।

झोंपड़ो – पु. – घास-फूस से निर्मित झोपड़ा, पर्णशाला।

झोरी – स्त्री. – बच्चों को सुलाने के लिये छोटा झूला।

झोरो – पु. – झोला, बाजार से सामग्री लाने का कपड़े का थैला।

झोल – पु. – तरकारी आदि का गाढ़ा रस, धातु पर किया गया मुलम्मा।

झोलणो – पु. – झोला, थैला।

झोलदार – वि. – जिसमें झोल या रस हो, रसयुक्त साग सब्जी, जिस पर गिलट या चाँदी-सोने का पानी चढ़ाया गया हो ऐसा गहना।

झोला खाय – क्रि.वि. – इधर-उधर लहराना, झोके खाना।

ट – ट वर्ग का अक्षर।

टउको – व्यंग करना, किसी को बात की चोंट देना। कोई कथा भागवत कहता हो जो हाँ-हाँ, हरे-हरे कहना। मोर या कोयल की आवाज। (टीला दे टउका दे राणी। मा.लो. 605)

टक – स्त्री.– टकटकी, स्थिर दृष्टि, निर्मिमेष देखना, ताकना।

टंक – पु. – समय, वक्त, पत्थर घड़ने की टाँकी, छेनी, छेणी। (टंक लावे ने टंक खावे–दोनों जून अनाज लाना और दोनों जून खा लेना), निर्धनता, गरीबी।

टकटक – क्रि.वि.– टुकुर–टुकुर देखना, टक–टक की ध्वनि, एकटक।

टकणो, टकनो – क्रि.– टिकना, ठहरना, टखना, घुटना।

टंकणो – क्रि.– टाँका जाना, टाँकना, सीवन कर्म।

टक्यो – क्रि.– ठहरा, टिका।

टक्कर – क्रि.– टकराना।

टकराणो – पु.– टकरा जाना, अचानक मिलना।

टकलो, टकल्यो – वि.– गंजा, खल्वाट।

टकसाल – स्त्री.– सिक्के ढालने का कारखाना।

टका – पु.– एक तोले की तोल, ताँबे का पुराना सिक्का। (टका को ज्वाप– दो टूक उत्तर।)

टंकाणो – पु.– टाँकों से जोड़ लगवाना, सिलवाना, छैनी से घट्टी या चक्की टँकवाना या टाँकना।

टंकार – स्त्री. सं.– (क्रिया टंकारणो) तार आदि पर ऊँगली के आघात से होती ध्वनि, धनुष की डोरी से टंकार की ध्वनि उत्पन्न करना।

टकी गया – क्रि.– टिक गये, ठहर गये, रह गये।

टके – क्रि.– टिके, ठहरे, रहे। (पग टके तो बालक घर आवे।)

टके सेर – क्रि.वि.– दो पैसे का सेर भर, दो पैसे सेर।

टको – पु.– एक तोला का तौल, ताँबे का पुराना सिक्का।

टक्को – पैसा, टका, दो पैसे, दो पैसों का एक सिक्का, अधन्ना, रुपया-पैसा, कोड़ी। (थारे आल गाल के ये नाचण नव टक्का। मा.लो. 441)

टंगणो – टँग जाना, लटकना।

टगर–मगर – क्रि.वि.– इधर–उधर देखना, देखते ही रहना, टकटकी। (सासू नणदल टगर-मगर देखे। मा.लो. 413)।

टगी – वि.– हठी, जिद।

टटक – क्रि.– टटका, मारने को दौड़ना, आक्रामक मुद्रा।

टटक ध्यान – वि.– बगुले जैसा ध्यान, एक ओर दृष्टि स्थिर करना।

टटकी – क्रि.वि.– टूट पड़ना, मारने को दौड़ी।

टटूँबातो – क्रि.वि.– इधर–उधर धक्के खाता या भटकता हुआ।

टट्टी – स्त्री.– टाटी, बाँस की पट्टियों का बना छोटा हल्का टट्टर, पाखाना।

टट्टू – पु.– छोटा घोड़ा।

टट्‌ड़ी – स्त्री.– छोटी घोड़ी।

टटोलणो – क्रि.– मालूम करने के लिये ऊँगलियों से छूकर अंदाज लगाना। संदेह निवारण।

टड्डा – स्त्री.–भुजबन्ध, भुजा का आभूषण।

टणका – पैर में पहनने का चाँदी का आभूषण, सट, व्यंग्य कसना।

टंडीरो – पुराना, खटाला, टूटा-फूटा।

टन–टन् – स्त्री.–घण्टा बजने की आवाज या ध्वनि।

टना–टन – स्त्री.– लगातार होने वाला टन–टन।

टना टन – स्त्री.– टन–टन का शब्द, कलदार रुपया बजाना।

टना चोदी को – वि.– एक मालवी गाली।

टप – स्त्री.– टपकना, बूँदों के गिरने की आवाज।

टप–टप – क्रि.वि.– छत के खपरैल में से कहीं–कहीं से पानी की बूँदें टपकने की ध्वनि या आवाज।

टपकणो – क्रि.– टपकना, बूँद–बूँद गिरने का शब्द।

टपको – पु. – बूँद।

टपरी – स्त्री.– घास–फूस का बना टप्पर, घास–फूस की झोपड़ी।

टप्पो – वि.– गेंद का टप्पा खाना या उछलना, भटकना।

टपाटप – क्रि.– लगातार पनी टपकने का शब्द।

टमटम – स्त्री.– ऊँचे पहियों की घोड़ा बघ्घी, ताँगा।

टमको – वि.–उजाला, दीपक का प्रकाश।

टमाटर – पु.– टमाटर, एक सब्जी।

टरकणो – क्रि.– टलना, दूर हटना।

टरकानो – क्रि.– कुछ भी बहाना करके दूर भगा देना।

टर्राणो – क्रि.– मेंढक की टर्र–टर्र की ध्वनि।

टल्लो – क्रि.– टालना, टालने के लिये कुछ भी बहाना करना, देरी करना।

टसकणो – क्रि. – टसकना , कराहना, रोने की धीमी ध्वनि।

टहलणो – क्रि.– टहलना, घूमना।

टा

टाँकण – स्त्री.– निर्धारित दण्ड की रकम का भुगतान करना।

टांकणो – क्रि.– सुई–डोरे से किसी वस्तु को जोड़ना, टाँकना, अफीम के फलों को टाँकने की क्रिया , किसी वस्तु को खूँटी पर लटकाना, उपाय कर देना।

टाँकर – पु.– उपालम्भ, शिकायत, चुभती हुई बात।

टाँकर देणो – क्रि.वि.– उपालम्भ के रूप में बात करना, कहकर कोई बात जताना।

टाँका – पु.– फटे हुए कपड़ों में टाँका लगाना, उसे जोड़ना या सीवन करना, धातु से निर्मित वस्तु में धातु का ही टाँका लगाना या झालना।

टाँकी – स्त्री.– पत्थर गढ़ने या काटने की छेनी।

टाँके – क्रि.– टाँकने की कहना, टाँके ल गाना, चार माशे की तौल।

टाँके तोलूँ – क्रि.वि.– तराजू पर तोलना। (टाँके तो लूँ तो टका भऱ्यो–रण में तोलूँ तो मण पचास – राजपूत शौर्य का बखान – यदि राजपूत को तराजू में तोलें तो वजन बहुत कम निकलता है किन्तु युद्ध में उसी का फिर से वजन किया जाये तो पचास मन हो जाता है।)

टाँको – पु.– वह वस्तु जो दो चीजों को जोड़कर एक करती हो, धातु जोड़ने का मसाला, सीवन, सिलाई, वि.-शंका, टाँका, संदेह, मिश्रण, टेक्स।

टाँको पड़्यो – वि.– शंका हुई, संदेह हुआ।

टाँग – स्त्री.– पैर। (टाँग तले काडणो–किसी को कुछ न समझना।)

टाँगड़ी – स्त्री– टाँग।

टाँगाँ – स्त्री.– दोनों टाँगें, क्रि. -लटकाना।

टाँगाँ टोली करणो – पैर में पैर फँसाकर गिराना, टाँग पकड़कर खींचना।

टाँगा फाड़ी नें जण्यो – अपने भाग्य को कोसना।

टाँगाँ फेरे – पाँव से सहायता न करना, मुँह फेर लेना।

टाँगा फेंके – सीधा न रहना।

टाँच – क्रि.– कोट, कुरते आदि में दर्जी द्वारा बटन लगाये जाने की क्रिया या भाव।

टाँचणो – क्रि.– घट्टी या पत्थर की वस्तु बनाने के लिये टाँची से टाँचना, कोंचना, शत्रु को ठिकाने लगाना।

टाट / टाटलो – खल्वाट, जिसके बाल झड़ गये हों।

टाटक–टोटक – वि.– टोना-टोटका, जंत्र-मंत्र करना।

टाटड़ो – टाट का मोटा कपड़ा या बोरा।

टाटलो – वि.– गंजा, खल्वाट।

टाटी – स्त्री.– टट्टी, बाँस या पतली लकड़ी से बनी दरवाजानुमा टाटी। (टाटी आड़े नार मारणो– किसी छोटे की आड़ लेकर बड़ा काम कर डालना, आड़ में शिकार करना।)

टाटो – पु.– टाट का वस्त्र, बोरा।

टाँड – स्त्री.– लकड़ी या दीवार पर अतिरिक्त फर्सी, पटिये इत्यादि लगाकर बनाया गया अतिरिक्त स्थान।

टाँडा – पु.– व्यापार की वस्तुओं से लदे हुए पशुओं का झुण्ड– जो व्यापारी लेकर चलते हैं, भारवाहक पशुओं का समूह।

टाड़ी – स्त्री.– कण्डे या लकड़ी की राख (भस्मी) उपले या लकड़ी की जलने के बाद बची हुई भस्मी या राख। (टाड़ी में लोटे–किसी मृतक का श्राद्ध न करने का उपालंभ, मृतक की अस्थियों को राख में दबा होना, मृतक का राख में दबा होना।)

टाणी – वि.–चमत्कार, ईश्वर की मर्जी या भाग भरोसे कार्य हो जाना, (टाणी लगना।)

टाणी करनी – इलाज कर देना, चमका देना।

टाणी लागणो – चमत्कारिक लाभ हो जाना चाहे वह किसी भी रूप में ही।

टाप – स्त्री.– घोड़े के पाँव का प्रहार।

टापको – वि.– उत्तम, श्रेष्ठ, बढ़िया।

टापतो रईग्यो – क्रि.ब.व.– देखते रह गये।

टापतो रेणो – पु.– देखता रह जाना।

टाप मारी री – क्रि.वि.– घोड़ी या गधी द्वारा टाँगे फेंकना।

टापरी – स्त्री.– टपरिया, टप्पर, घास-फूस का मकान, कुटिया।

टापरो – पु.– घास-फूस के छाजन से बना मकान, कच्चा घर। (घणा लोगाँ का बिक्या टापरा। मा.लो. 568)।

टापला – खजूर के पेड़ की जड़ को चीरना और उसे कूटकर उसके मूँछे तैयार करना, बैल- गाय- भैंस के बछड़े के मुँह के बन्धन बनाना।

टापीर्‌यो – क्रि.– देख रहा, मुँह बाये खड़ा रहा।

टापू – न. – पानी के बीच में बना स्थान, बाटी जैसी रोटी, द्वीप। (फँस्या पेट में टापू। मा.वे. 84)

टाबर – पु.सं.– बालक, बच्चे। (टाबर रोवे। मा.लो. 548)

टाबराँ – पु.सं.ब.व.– बालकगण।

टारे नी टरे – टालने पर भी नहीं टलता।

टाल – सं.– वह स्थान जहाँ पर लकड़ी, कोयला, दूध आदि सामग्री रखी व बेची जाती है, क्रि.- टालना, मना करना।

टालणो – क्रि.– टालना, मना करना, बहाना करके टालना।

टालरी – न. – जिसके बाल झड़ गए हो, वह सिर का भाग, गंजा।

टाँगणो – टाँगना, लटकाना, टाँग दिया, टँगा हुआ, लटका हुआ। (कठे गया इनका टाँगण हार। मा. लो. 677)

टाँगेड़ा – भैंस, महिषी।

टाल-मटोल – स्त्री.– आनाकानी, आगा-पीछा, केवल टालने के लिये किया जाने वाला बहाना, हाँ ना का भाव।

टालाटूली – स्त्री. – आगा-पीछा करना, आनाकानी करना, टालमटोल करना।

टि

टिकड़म – वि.– किसी भी तरीके से या कोई युक्ति भिड़ाकर अपना काम करवा लेना।

टिक-टिक – वि.–घड़ी की आवाज, टिटहरी नामक जलचर पक्षी के बोलने की ध्वनि।

टिकऊ – वि.– टिकने योग्य, स्थायी।

टिकड़म लगाना – क्रि.– अपना कार्य किसी भी भाँ ति से कर लेना।

टिक्की – स्त्री.– टीकी-बिंदी, बिंदिया, रबर या चमड़े से काटी गई गोल वस्तु।

टिकड़ी – स्त्री.– छोटा गोल पैसा, गोल वस्तु, बच्चों की आतिशबाजी, टिकिया।

टिकणो – क्रि.– ठहरना, खड़े रहना, टिक जाना।

टिकली – स्त्री– छोटी टिकिया, बिन्दी।

टिक्कड़ – मोटी रोटी, ज्वार या मक्का की दलदार रोटी।

टिकस – पु.– टिकट, वह कागज का पुर्जा जिसमें अन्य विवरण के साथ दाम प्राप्ति का उल्लेख भी हो।

टिकाणो – क्रि.– टिकाना रखना।

टिका दो – क्रि.– मार दो, दे डालो, ठहरा दो, टेका लगा दो, सहारा दे दो।

टिकाव – क्रि.– ठहराओ, मारो-पीटो।

टिकी – स्त्री.– ठहरी हुई, रुकी हुई।

टीको – न.– तिलक, राज्य तिलक, सगाई की एक रस्म, राजाओं में सगाई, सम्बन्ध करने की एक रीति, स्त्रियों के ललाट का एक शिरोभूषण, पशु के ललाट पर भिन्न रंग के बालों का चिह्न, मँगनी। (सासुजी काडीऱ्या टीको। मा. वे. 35)

टिगस – पु.– टिकिट।

टिटेरी – स्त्री.– टिटहरी, एक जलचर पक्षी जो टिट्-टिट् की आवाज करता है।

टिटोड़ी – टिटहरी।

टिड्डी – स्त्री.– एक कीट जो अपने विशाल समूह में रहता है तथा खेती वनस्पति खाकर नष्ट कर डालता है।

टिड्डी दल – वि.– कीट पक्षी का बहुत बड़ा समूह।

टिपई – स्त्री.– सीमेंट या चूने से दीवार आदि की मरम्मत करना, टीप लगाना, तीन लकड़ियों पर पटिया कसकर बनाया गया वह आसन जिस पर खड़े होकर किसान अनाज उफनता है, तरवायो। क्रि. परीक्षा में टीपने या नकल करने की प्रवृत्ति।

टिपारो – पु.– बाँस की खपच्ची का बना बड़ा टोकरा या सन्दूक।

टिलड़ी – स्त्री.– माथे पर लगाने की बिन्दी या तिलक।

टिव-टिव – वि.– तोते की आवाज।

टी

टीकी मेंदी – स्त्री.– सिर की बिन्दी एवं हाथ-पाँव का शृँगार करने वाली मेहंदी, स्त्रियों का शृँगार प्रसाधन।

टीकी – स्त्री.– तिलक, (बिन्दी टीकी दे मेलाँ चड़ी बिन काजर की रेख।)

टीको – पु.– तिलक, चंदन, केशर आदि से मस्तक या बाहों आदि पर सम्प्रदाय विशेष का चिह्न लगाने की क्रिया या भाव, सिर का आभूषण।

टींचो – क्रि.– खरोंच, पत्थर आदि की लगने से शरीर के किसी भाग में घाव हो जाना। (टींचो पाड़णो– घाव करना।)

टींटोड़ी – स्त्री.– टिंटोड़ी नामक पक्षी।

टींडक्या – पु.– जलाऊ लकड़ी, झाड़-झंकाड़ से एकत्र की गई जलाऊ पतली लकड़ियाँ।

टीड़ पड़ी – स्त्री.– भीड़ पड़ी, संकट में पड़ा, तकलीफ आई।

टीन – पु. -धातु की चद्दर, लोहे का पतरा, डिब्बा।

टीपणो – पु.–पंचांग, क्रि.- नकल करना।

टीपार्या – टोकरी। (टीपार्या डाड़म दाख दुपट्टा रा पल्ले खोपरो।)

टीमर्योन्हार – पु.वि.– चितकबरा शेर।

टीली-मेंदी – स्त्री.– स्त्रियों की शृंगारिक वस्तुएँ बिंदी एवं मेहंदी।
(हंजा टीली बिना सूनो रे लिलाड़। मा.लो. 474)

टीलो – पु.– तिलक, किसी पत्थर का कुछ उभरा हुआ भू-भाग, डूह, टीला, रूँडी।

टीलो काड़ दूवाँ – क्रि.– सिर फोड़ देने की धमकी, तिलक निकाल दूँगा।

टीस – वि.– कसक, पीड़ा, दर्द।

टु

टुकड़ो – न.– भाग, हिस्सा, खंड, टुकड़ा।

टुकड़यो – वि.– दूसरों के यहाँ रोटी के टुकड़ों पर पलने वाला। (टुकड्यो कँईको– अकर्मण्य व्यक्ति।

टुकड़ा तोड़ – पु.– अकर्मण्य व्यक्ति, दूसरों का दिया अन्न खाकर रहने वाला, परभृत, पराश्रित।

टुकड़ी – स्त्री.– जमीन का छोटा हिस्सा, क्षेत्रफल में छोटा खेत, जमीन का एक खण्ड, सुपारी आदि के टुकड़े या टुकड़ी, ऐसी महिला जो अकर्मण्य हो और केवल रोटी के टुकड़ों पर पलती हो।

टुच्चा – वि.– ओछा, तुच्छ।

टुच्चापणो – क्रि. वि.- ओछापन, ओछी हरकत, तुच्छ बात मुँह पर ले आना।

टुटपुँजो – वि.– जिसके पास बहुत थोड़ी पूँजी हो, कम पूँजी वाला।

टुंडा – वि.– अडंगा, पीछे पड़ना, तुर्रा-किलंगी नामक मालवी लोक विधा, मध्यस्थता करने वाला टुन्डा नामक पक्ष।

टुंडो करणो – क्रि.–अडंगा लगाना, परेशान करना, आफत में डालना, पीछे पड़ना।

टुल्लर – वि.– झुण्ड, समूह।

टुवाल – टावेल, अंगोछा।

टुस्सो – वि.– ठेस, रोक।

टुस्सो लगाणो – क्रि.वि.– ठेस लगाना, धक्का लगाना, रोक लगाना।

टू

टूक – क्रि.– टुकड़ा।

टूँग – सं.– ललचाना।

टूँगीर्‌यो – पु.– ललचा रहा, टूँग रहा।
इ तो मेरे बेठा काकीसा टुँगी रया रे। मा.लो. 205)

टूँगे – वि.– ललचावे, मुँह देखे।

टूँच – स्त्री.– चोंच, पक्षी का मुँह, नोक, सिरा।

टूटजो – क्रि.– टूटमान होना, कृपा दृष्टि होना, टूट जाना।

टूटीफाटी – फटी टूटी, दो टूक होना, दरकना, विदीर्ण होना, फटना, चीरना।
(फाटी टूटी मचली पड़ी रे बजार में। मा.लो. दूसरा भाग)।

टूटफूट – न. – टूट–फूट, खंडन, टूटा–फूटा।

टूटमान – न. – कृपा, कपावान्, ईश्वर की कृपा हुई।
(म्हारे भी तो टूटमान की हे रात राणी। मा.वे. 46)

टूटयो – क्रि.– टूट गया।

टूँटू – वि. - टूँटे हाथ या पैर वाला, एक प्रकार की चिड़ावनी।

टूटे – क्रि.– टूटता है।

टे

टेक – सं.– चढ़ाव-उतार, तुर्रा किलंगी या लावणी की टेक, ठहरना, रुकना।
(राम राखे टेक। मा.वे. 34)

टेक राखणी – क्रि.– इज्जत रखना, लाज रखना।

टेकणी, टेकणो – स्त्री.– टेका या सहारे की वस्तु, सहारा लेना या देना।

टेकरी, टेकड़ी – स्त्री.– पहाड़ी जैसी ऊँची जगह, डूँगरी।

टेकनो – क्रि.– टिकाना।
टेका, टेको – क्रि.– आधार, स्थिर रहने वाली वस्तु, सहारा, सहारा दो, टिका दो।
टेके – पु.– टिका दे।
टेगड़ो – पु.ए.व.– कुत्ता।
टेंट – स्त्री.– धोती की गाँठ जो कमर पर पड़ती है।
टेंटें – स्त्री.– तोते की बोली, व्यर्थ की बकवास।
टेड़ो-मेड़ो – क्रि. वि. – टेढ़ा तिरछा। (आड़ो टेड़ो वेतो जाय।)
टेड़ी खीर – वि.– मुश्किल काम।
टेड़ो पड़णो – क्रि.– विपरीत जाना।
टेड़ो – वि.– जो बीच में इधर उधर झुका या घूमा हुआ हो, जो सीधा न हो, वक्र, कुटिल, तिरछा, मुश्किल।
टेणपा से – पु.– लकड़ियों से, डंडे से।
टेणपो – पु.ए.व.– लकड़ी या डंडा, छोटा सा।
टेप – पु.– किसी ध्वनि, आवाज या बातचीत आदि को रिकार्ड करने वाला यंत्र।
टेपा – वि.– गाँव के गँवई व्यक्ति, उज्जयिनी में 1 अप्रैल को प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला टेपा सम्मेलन।
टेपो – वि.–ग्रामीण, भीलों द्वारा मारु कुम्हार का सम्बोधन।
टेबल – स्त्री.– मेज।
टेम – स्त्री.– समय।
टेर – वि.– तिरछापन, बुलाने का ऊँचा स्वर, आवाज देना, पुकार। (गज की टेर सुनी रघुनंदन। मा. लो. 689)
टेर काड़ी – क्रि.वि.– बैलों द्वारा जुए को अपने कंधे से नीचे गिराना।
टेरमो – न. – अंगुली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह मुड़ती है। अंगुली के दो गाँठों के बीच का भाग।
टेलणो – क्रि.– टहलना, घूमना।
टेलनो – टहलना, घूमना, भ्रमण करना। (ई तो साला बनेवी तो टेलवा ने जाय। मा.लो. 519)
टेलावीर्‌यो – पु.– टहला रहा, बहला रहा।
टेव – वि.– आदत, बान, अभ्यास।
टेवो – न.– संक्षिप्त जन्म कुण्डली, जन्मपत्री, जन्माक्षर।
टेसण – न. – मुसाफिरों के बैठने-उतरने के लिये रेलगाड़ी के ठहरने का स्थान, स्टेशन। (रेल को टेसण अइग्यो। मो. वे. 45)
टेसू – पु.– पलाश पुष्प, किंशुक पुष्प, अभिमान।
टेसू बहाना – पु.– आँसू बहाना, रोना।
टेणका-टेणकी – छोटे बच्चे जो बड़ा काम नहीं कर सकते।

टो

टोंक – सं.– टोंक, मालवा का एक शहर, काम में बाधा डालना।
टोंक टोड़ा – पु.– राजस्थान का एक शहर, गीत कथाओं की एक रूढ़ि।
टोंकनो, टाकणो – सं.–अटकाव, बाघा की बाढ़, एतराज।
टोकर्‌या – वि.–कान का एक आभूषण, कचरा कूटा फेंकने की टोकरियाँ।
टोकर्‌याँ – वि.–टोंकरह, मना कर रहे, घंटी, घंटा।
टोकरो – पु.– टोकरा।
टोंका टोंकी – वि.– मना करना, रोकना।
टोंच – स्त्री.– सुइये से गड्ढा करके धागा पिरोना, किसी के मर्म पर चोंट लगाना, (टोंचा लगाना, सिलाई का टाँका। टोंचा मारणो।) क्रि. वि.– जली कटी बात कहना, कोसना, ताने मारना।
टोंचनो – क्रि.– खटकना, अखरना।
टोंचो – पु.– रसोई के काम में आने वाला उपकरण, खोंचा।

टोटको – पु.– देवी बाधा दूर करने के लिये वह प्रयोग जो किसी अलौकिक शक्ति या भूतनी पर विश्वास करके किया जाय।

टोटा – वि.– कमी, अभाव। (टोटा का घर में रोटी की राड़–अभावों से भरी गृहस्थी में रोटी के टुकड़े के लिए झगड़ा होना।

टोंटा – स्त्री.– नल की टोंटी, कारतूस।

टोड़ – पु.– कुँए के थाले में पनघट की पट्टी जिसे मालवी में टोड़याँ या टोड़ा पट्टी कहते हैं।)

टोड़ियाँ – स्त्री.– ऊँट।

टोड़ी – स्त्री.– कुँए के थाले में लगने वाला छेददार पत्थर, महुए के फल।

टोणो – वि.– टोना या टोटका करना।

टोप – स्त्री. – टोपी, टोपा, सिर ढाँकने का परिधान।

टोपा – स्त्री.– छोटे बच्चों के सिर ढँकने का वस्त्र।

टोपली – स्त्री.– टोकरी, डलिया।

टोपलो – पु.– बड़ा टोकरा।(टोपलो मेल्यो– सिर पर वजन रखा, पैसे या कर्तव्य सम्बन्धी भार रखना का भाव।)

टोपी – स्त्री.– सिर पर पहना जाने वाला परिधान (टोपी पेरई–ठग लिया, ठगना।)

टोपो – पु.– बड़ी टोपी, वि.- ग्रामीण अनपढ़ व्यक्ति, भोला या गँवार व्यक्ति।

टोबली – स्त्री.- टोकरी।

टोरक्यो हलाणो – घण्टी बजाना, घण्टाल बजाना, गरुड़ घण्टाल बजाना, आरती के समय पुजारी द्वारा बजाई जाने वाली छोटी घण्टी।

टोरनी – स्त्री.– लड़की।

टोरो – समूह, झुण्ड।

टोरया पालटी – पु.– बच्चों का समूह।

टोर्‌या पटेली – क्रि.वि.– बच्चों को पटेली या मुखिया का अधिकार देना, जिसके घर में मुखिया का कर्तव्य तथा अधिकार बच्चों को सौंप दिया गया हो।

टोर्‌यो – पु.– लड़का, (बालक के लिये हेय सम्बोधन)।

टोल – सं.– पत्थर, गोल पत्थर।

टोलम्याँ – सं.ब.व.– महुए के फल, टोली का ढेर।

टोला – सं.– पत्थर या ईंट आदि के टुकड़े, ऊँची पहाड़ी पर स्थित बस्ती।

टोली – वि.– समूह, मण्डली, झुण्ड।

ठ

ठ – ट वर्ग का अक्षर।

ठकठक – स्त्री.– खटखट की आवाज।

ठक्को लागो – क्रि. – पता चला, ठिकाने लगा।

ठकरई – स्त्री.– ठाकुर के अधिकार, पद का भाव, सरदारी, बड़प्पन, रोब, हुकूमत।

ठकराणी – स्त्री.–ठाकुर की पत्नी, रानी, स्वामिनी।

ठकाणा की हादरी – स्त्री.– बड़े घर का बिछोना, ठिकाने की सादड़ी, खजूर के काँटेदार पत्तों से गुँथी हुई चटाई।

ठकाणे – सं.– ठिकाने।

ठकाणे लगाणो – पु.– जान से मारना, खत्म करना, ठिकाने पर पहुँचा देना।

ठको – पता न चलना।

ठग-ठाकर – क्रि.वि.– ठगाने वाला अनुभवी व्यक्ति।

ठगनो, ठगणो – क्रि.– धोखा देकर किसी का माल हड़प लेना, चतुराई से दूसरे का धन हड़प लेना, छलना, ठगना।

ठगणो – क्रि. – ठग लेना। (सेर भर दूद सवा घड़ो पाणी ठगिया नगर का लोग वो अहीर की। मा. लो. 44)

ठग विद्या – क्रि.वि.– ठगने की विद्या, धूर्तता, ठगोरी विद्या, ठगने की कला।

ठगाणो – क्रि.– ठगा जाना, ठगने वालों के चक्कर में आ जाना।

ठगी – स्त्री.– धूर्तता, चालबाजी, ठगने की क्रिया।

ठगो – स्त्री.– ठगने वाली स्त्री।

ठगोरो – पु.– ठगने वाला पुरुष, ठग।

ठट्‌टो – वि.–परिहास, हँसी मजाक, दिल्लगी। (धूमकरे वो ठट्टाबाजी करे करे पनघट पे। मा.लो. 585)

ठठ – पु.– बहुत सी वस्तुओं या व्यक्तियों का समूह।

ठठका ठठ – क्रि. वि.– झुण्ड के झुण्ड।

ठठरी – स्त्री.– हड्डियों का ढाँचा।

ठठाना – क्रि.–जोर से हँसना, मारना पीटना।

ठठरो – पु.क्रि. – पंजर, पींजरा।

ठठेरो – पु.– बरतन बनाने वाल कसेरा।

ठठोली – स्त्री.– हँसी, दिल्लगी।

ठंड – स्त्री.– शीत, सरदी।

ठंड उडयो – गुनगुना पानी, हल्का गर्म।

ठंडई – स्त्री.– ठंडाई, एक पेय जिसमें पोस्ता दाना, भंग, गुलाब की पँखुड़ियाँ आदि अनेक वस्तुएँ डालकर ठंडाई बनाई जाती है। एक ठंडा पेय, ठंड का मौसम।

ठंडक – स्त्री. वि.– ठंडापन, शीत, सरदी, जाड़ा।

ठंडो – पु. - ठंडा, चुप होना, शान्त होना, सुस्त, बासी, मर गया।

ठंडोगार – बहुत ठंडा।

ठणकनो – क्रि.– ठनके करना, बच्चे का किसी वस्तु के लिए ठसके करना, रुक- रुक कर दर्द करना, कराहना।

ठणको – वि.– तीव्र वेदना, टीस, पीड़ा, कसक, शंका होना।

ठणठन, ठनाठन – क्रि.वि.– कलदार की खनक, ठन-ठन, खन-खन।

ठनठनगोपाल – निर्धन मनुष्य, ठानना, किसी से झगड़ा होना, बिगाड़ होना।

ठन्नाठन – क्रि. वि.– रुपये पैसे की आवाज, कलदार की खनक।

ठप, ठप्प – पु.– ठपकारना, थपकी देना, ठप करना, रोकना।

ठप्पो – पु.– ठप्पा, लकड़ी या धातु का वह खंड जिस पर कोई आकृति, बेलबूँटे या रबर के खुदे अक्षर चिपकाये गये हों और किसी दूसरी वस्तु पर रंगों में डुबोकर छापा गया हो, साँचा, मुहर, छापा, ठाठबाठ, ठप्पा।

ठपकणो – क्रि.– थपकी देना, थपकारना।

ठपकारणो – क्रि.– थपकी देकर किसी बालक को सुलाना, किसी को मारना-पीटना।

ठपको – ठेस।

ठमक – पु.– गर्व पूर्ण चेष्टा करना।

ठमको – वि.– नखरा, लटका। भाभी थारो प्यारो लागे ठमको। मा. लो. 551)

ठमकारो – क्रि. - ठमका देना, नाच नचाना व तब तक खाते रहना।

ठमको लगाणो, ठुमको लगाणो –क्रि.– नाचना, नृत्य का उपक्रम करना, ठुमका लगाना।

ठर्‍रो – वि.– महुए की शराब, देशी मदिरा।

ठस्स, ठस – वि.–कड़ा, गफ, मजबूत, आलसी, मूर्ख, मंदबुद्धि, सुस्त, ठस बुद्धि का, बुद्धिहीन, ठोस।

ठसक – वि–. नाज-नखरा, अकड़, गर्व।

ठसको – वि.– सूखी खाँसी का ठसका, झुरझुरी, बीमार आदमी का ठसका, नखरा।

ठसकेदार, ठसके बाज –वि.– शानदार, नखरेबाज, ठप्पे वाला।

ठसाठस – क्रि.वि.– खचाखच, ठूँस-ठूँस कर, खूब कसकर भरा हुआ।

ठहाको – क्रि.– जोर की हँसी, अट्टाहास।

'ठा'

ठाकर – पु.– ठाकुर, देवता, देवमूर्ति, जमीदार, क्षत्रियों की उपाधि, ईश्वर, नाइयों की उपाधि।

ठाकुरजी – वि. – ईश्वर, भगवान की मूर्ति।

ठाकुरद्वारा – सं.– देवस्थान।

ठाठ / ठाट – पु.– सजावट, ठप्पा, ठिकाना, स्थान।

ठाटनी – वि.– टप्पा, सजधज, शृंगार।

ठाठबाट – क्रि.वि.– सजावट, आडम्बर।

ठाड़ाँ – वि.– ठंड लगना।

ठाड़ – स्त्री.– गाड़ी में जूड़ी बाँधने की सनई नारियल या रबर की रस्सी।

ठाड़वाजी – क्रि. – ठंड लगी, शीत लगी।

ठाण – पु.– अस्तबल, घुडसाल, घोड़े के लिए रूढ़ शब्द, पशु बाँधने का स्थान। (जसी म्हारी गायाँ की या ठाण। मा.लो. 685)

ठापो – पु.– ठप्पा लगाने का यंत्र, सील, मुहर, ठापा।

ठाम – पु.– स्थान, जगह।

ठामड़ा – पु.– बर्तन, भाँडे, घरेलू सामान।

ठालोबुलानो – वि. – असमर्थ और निर्धन, भाग्यहीन, अभागा, बदनसीब, निकम्मा, नालायक, जिसका कोई काम न हो, बिना परिवार का।

ठावा – वि.– प्रसिद्ध, लोक प्रसिद्ध।

ठावो – पु.– जगजाहिर, लोकप्रसिद्ध। (ठावा घर को पामणो–कुलीन घराने का मेहमान।)

ठाँसणो – क्रि.– ठूँसना, ठूँस-ठाँस भरना।

ठाँसील्यो – क्रि.– ठाँस-ठाँस कर खा लिया, पेट भर लिया।

ठाँसो – क्रि.- ठूँस लो, खा लो।

ठि

ठिंकरी – स्त्री.– मिट्टी के बर्तन के छोटे टुकड़े।

ठिकाणो – पु.– ठिकाना, स्थान, जगह, प्रसिद्ध घर, ठौर।

'ठि'

ठिकाणेदार – पु.– जागीरदार, ठिकाने का मालिक या स्वामी, वह जिसे रियासत की ओर से ठिकाना या जागीर मिली हो।

ठिगनो, ठिंगणो – वि.– नाटे कद का, छोटे कद का।

ठिठकणो – क्रि.–चलते-चलते रुकना, ठहरना।

ठिठोली – मसखरी, ठट्ठा, खिल्ली, हँसी मजाक, दिल्लगी।

ठियो – पु.– स्थान, बैठने की जगह।

ठिरी गयो – वि.– ठिठुर गया, ठहर गया।

ठी

ठीक – वि.– उचित, योग्य।

ठीकर्‌यो – वि.– ठीक रहा, अच्छा रहा। वह भूमि या खेत जहाँ कभी बसी रहने के कारण मिट्टी के बर्तन के टुकड़े अधिक हों, गाँव के पास का खेत, पुरातत्वीय महत्व का स्थान।

ठींकरा – पु.– मिट्टी के टूटे फूटे बर्तन।

ठीकज कियो – क्रि.वि.– ठीक ही किया, अच्छा किया।

ठींगणो – वि.– नाटे कद का, छोटे कद का।

ठीबड़ो – फूटा हुआ मिट्टी का बर्तन, टूटे हुए मिट्टी के घड़े आदि के नीचे का भाग का बड़ा टुकड़ा, कर्प।

ठीमर – वि.– गम्भीर, शान्त, धीर, धैर्यवान्, अधिक नहीं बोलने वाला।

ठीयो – पु.– स्थान विशेष जगह, ठहरने का स्थान, अड्डा, आधार।

ठु

ठुकना – क्रि.– ठोका जाना।

ठुड्डी – स्त्री.– ठोड़ी, चिबुक।

ठुमकणो – क्रि.– ठुमक-ठुमक कर चलना, फुदकते चलना, बच्चों का उमंग में आकर थोड़ी-थोड़ी दूर तक पैर पटक कर चलना, डगमगाकर चलना, नाचने का उपक्रम।

ठुमकी – स्त्री.–ठुमकने या रुक-रुक कर चलना।

ठुमरी – वि.– एक राग विशेष।

ठुमकी दी – क्रि.– थोड़े समय के लिये नृत्य किया।

ठुमको द्यो – क्रि.– थोड़ा सा नाच किया।

ठुस्सो द्यो, ठुस्सो मार्‌यो – क्रि. वि.– बनते काम में गतिरोध पैदा किया, आड़ लगाई, काम बिगाड़ा, कोहनी से धीरे से मारना और इशारा करना।

ठुस्सम ठुस्स – क्रि.वि.– पूरा भरा हुआ, किसी कोठी या डिब्बे इत्यादि में किसी वस्तु को ठूँस-ठूँस कर भरना।

ठू/ठे

ठूँसणो – क्रि.– खूब कसकर पेट भरना।

ठूँस्यो – क्रि.– जबरन गले उतारा, ठूँस दिया।

ठूँस-ठूँस कर खाया – क्रि.वि. – जबरन खाया, खूब खाया, जबरदस्ती गले उतारा, रुचि से अधिक खाना।

ठेका – क्रि.– तबले के साथ बजाई जाने वाली गत, सहारे की वस्तु, अड्डा, किसी इकट्ठी सामग्री को तोल कर न लेना, किन्तु उस समस्त वस्तु को इकट्ठा सीधे भाव करके ले लेना, शराब की दुकान, इकट्ठा काम का सौदा।

ठेको – क्रि.– ठेका देना, ताल से बजाना, ठेका लिया, थोक में लिया, कलाली की दुकान।

ठेगड़ो – पु.ए.व.– कुत्ता।

ठेंगो वताड़नो – क्रि.वि.– अँगूठा बता देना, कार्य पूर्ण नहीं करना, धोखा देना।

ठेंच – वि.– ठेंस, ठोकर।

ठेचर-कूट – वि.–आलसी या आवश्यकता होने पर भी हाँ हूँ कहकर काम न करने वाला।

ठेट तक – अव्य. – अन्त तक, आखिर तक, लक्ष्य, पूर्ण होने तक, मुकाम तक, दूर का बोधक, सीमा तक।

ठेठ – वि.– निरा, बिल्कुल।

ठेपो – वि.– पानी का रेला, बहाव।

ठेरनो – क्रि.– ठहरना, रुकना।

ठेरजा – क्रि.– ठहर जाओ, रुक जाओ।

ठेर्‌यो – क्रि.– ठहरा, रुका।

ठेरो – क्रि.– सहारा, रुको, ठहरो। (पीया सेरो तो माँडू माणक चोक। मा.लो. 621)

ठेल – स्त्री.– पशुओं के पानी पीने की जगह, पानी का हौज।

ठेलना – क्रि.– धक्का देना।

ठेस – स्त्री.– हल्का आघात, मन दुःखाना।

ठेहर-ठेहर – क्रि.वि. – रुक-रुक, ठहर- ठहर।

ठो

ठोकणो – क्रि.– मारना, पीटना, ठोंकना, थपथपाना। (म्हारा घर में चार कढ़ाई दो ठोके दो करे लड़ाई। मा.लो. 445)

ठोकपीट – क्रि. वि.– ठोकना पीटना, किसी बर्तन आदि को ठोक पीट कर सीधा करना, मारपीट करना।

ठोका ठोकी – क्रि.वि.– मारापीटी, मारपीट।

ठोकर – किसी वस्तु से पंजा टकराना।

ठोकराणो – ठोकर लग जाना, ठुकरा देना, ठोकर लग जाना, पैर से मारी जाने वाली टक्कर, जोर का धक्का।

ठोकर्या भेरू – मुख्य द्वार के मध्य के भैरव।

ठोकी दी – क्रि.– मार दी, पीट दिया।

ठोटी – अपढ़, मूर्ख, जड़, बुद्धू।

ठोड़ – सर्वथा, स्थान।

ठोड़ी – स्त्री.– चिबुक, मुँह के जबड़े की हड्डी। (ठोड़ी मारन्हाकूँगा, ठोड़ मार दूँगा) क्रि. - वि. जान से मार देने की धमकी।

ठोर – पु.– स्थान, जगह।

ठोर ठिकाणो – क्रि.वि.- स्थान, जगह। (ठोर न ठिकाणो–जिसके रहने घर हो न स्थान।)

ठोंसा – क्रि.– ठूँस लिया, ठूँसना।

'ड'

ड – वर्णमाला में ट वर्ग का व्यंजन।

डंक – पु.– जहरीला काँटा – जिसे प्राणी जीवों के शरीर में धँसाकर जहर पहुँचाते हैं।

डकद्यो – पु.क्रि. – कै, उल्टी वमन।

डकरायो, डकाऱ्यो – क्रि.वि.– बैलों के हुँकारने की आवाज, साँड के डकारने की ध्वनि।

डकार – क्रि.–डकार।

डकारणो – क्रि.– डकारना।

डकी दियो, डकी द्यो – क्रि.वि.– डक दिया, उल्टी कै या वमन करना।

डकेत – पु.– डाका डालने वाले, डाकू।

डंको – पु.– एक प्रकार का बड़ा नगाड़ा जो लकड़ी के डंके से बजाया जाता है, लकड़ी का बना हुआ डंका, नगाड़े पर चोट करने वाली लकड़ी।
(वणी ढोली के एकज डंको।)

डखर-डखर – जल्दी-जल्दी पीना या खाना।

डखरवाणो – साग, सब्जी, दाल, भाजी आदि में आवश्यकता से ज्यादा पानी पड़ गया हो।

डग – पु.– पैर, कदम, मालवा से सटा राजस्थान का प्रसिद्ध कस्बा जहाँ कायावर्णेश्वर महादेव मन्दिर है।

डगणो – क्रि.– डिगना, अपने स्थान से हटना, लड़खड़ाना।

डगमगाणो – विचलित होना, डाँवाडोल होना, संशय होना, आशंका होना, हिलना, डगमगाना।

डगर – पु.– राह, रास्ता।

डंगर – पु.– चौपाया, पशु।

डगमगईऱ्या – क्रि.वि.– डगमगा रहे।

डगला, डगल्या – पु.– खेजड़ा वृक्ष की मेद, गठान या गाँठें, जिनकी प्रायः सब्जी बनाई जाती है। पशुओं का आहार, अंगरखा।
(डगलो सीवाव। मा.लो. 317)।

'ड'

डगमग – क्रि.वि.– डगमगाना।

डगाई सके – क्रि.– डिगा सके, हटा सके, दूर कर सके, मन विचलित कर सके।

डगुपचु – विचलित, अनिश्चय, आशंकित, अस्थिरता, अनिश्चितता, संशय, पेशोपेच।

डचक डुच्चा – ठूँस-ठूँस कर खाना, निवाले पर निवाले खाना, मुँह पूरा भर लेना और फिर डचके खाना।
(साला जीमे ने बनेबी डचक डुचा खाय। मा.लो. 519)

डचकणो – पटकना, गिरा देना, दचीकना, नुकसान पहुँचाना, धक्का देना।
म्हारा छोरा ने रोवाड़्यो तो डेली में डचकी दऊँगा। मा.लो. 493)

डचको – वि.– दचका, धक्का, धक्का देना, गिरा देना, दचीकना, गिराना, उल्टी या कै होना।
(डेरी में डचकेगी। मा.लो.108)

डट – वि.– पूरी तरह डटे रहना, स्थिर रहना, अडिग।

डटना – क्रि.– अपनी जगह पर अड़ना, ठहरना।

डटेजनी – क्रि.वि.– हटता ही नहीं , डरता ही नहीं, अस्थिर नहीं होता।

डंठल – पु.– छोटे पौधों की शाखाएँ, डंठल, डाँखरे।

डंड–कमंडल छूटा – डण्डा और कमण्डल छूट जाना, दण्ड कमण्डल गिरवाना, लंगोट छूट जाना, असाधु हो जाना, आचरण भ्रष्ट होना।

डंडवत – पु.– दण्डवत, प्रणाम, चरणों में प्रणाम करना।

डण्डा – पु.– सोंटा, लट्ठ, लकड़ी।

डड़ियल – वि.– दाढ़ी वाला।

डंडी – स्त्री.– तराजू की डंडी, छोटी लम्बी पतली तराजू की डंडी।

डंडीमार – वि.– बनिया, व्यापारी, डंडी मारकर तौलने वाला, कम–ज्यादा तौलने वाला।

डंड्यो, डंडिया – वि.– दण्डित किया, दण्ड किया, जुर्माना किया।

डंडो – पु.– डंडा, सोंटा, लकड़ी।

डपट – स्त्री.– झिड़की, घुड़की।

डपोर संख – वि.– मूर्ख।

डफोर – ढपोर, मूर्ख, जड़, डफोल।

डफ – स्त्री.– चमड़े का, वाद्य, चंग।

डफली – स्त्री.– चंग, बाजा।

डबक डोल्या – डूबना, उतरना, आकस्मिक भय, आतंक, पानी में डूबने या गिरने की स्थिति।
(ई तो साला न्हावे हो बनेवी डबक डोल्या खाय। मा.लो. 519)

डबको पड़नो – न.– आकस्मिक भय होना, आतंकित होना, चकित होना, आश्चर्य होना।

डब्बो – पु.– डिब्बा।

डबरो – पु.– पानी भरा छिछला गढ़।

डबल्या – सं.– छोटे-छोटे डिब्बे, डिब्बी या खिलौने।

डबूचा – रोटी रखने का पात्र।

डब्बू – वि.– दब्बू, डरपोक।

डबोड़ो – क्रि. वि. - दबा दिया, दाब दिया, दबाना।

डमरू – पु.– डुगडुगी।

डमडम – क्रि.वि.– डमरू की ध्वनि या आवाज, डम-डम की ध्वनि।

ड्योढ़ी – वि.– डेढ़ गुनी वस्तु (सं.) देहरी, दरवाजे की रुकावट, आवास और मुख्य द्वार के बीच का खुला क्षेत्र।

ड्योढ़ो – वि.– डेढ़ गुना, ड्योढ़ा, एक और आधा।

डर – वि.– भय।

डरई धमकई – क्रि.– डराना, धमकाना।

डरफ – वि.– डर।

डरनो – डरना, भय लगना, भयभीत होना।
(डरपो मती म्हे म्हाके घरे जास्याँ। मा.लो. 576)

डरफाणो – क्रि.– डराना, भयभीत करना, डर बतलाना।

डरावणो – वि.– जिसे देखकर डर लगे, भयानक, भयंकर।

डलो – पु.– मोटा बड़ा टुकड़ा, खण्ड, मिट्टी का ढेला।

डली – स्त्री.– मिट्टी या मिठाई आदि वस्तुओं का छोटा टुकड़ा या खण्ड।

डल्लो – पु. – डला, किसी वस्तु का मोटा गोल टुकड़ा या खण्ड, गुड़ का डल्ला।

डस्टर – सं.– वह कपड़ा या वस्तु जो पटिया अथवा बोर्ड पर लिखे हुए को मिटाने का काम करता है।

डसणो – क्रि.– दशन, डस लेना।

डंभोल्यो – ज्वार, मक्का आदि पौधों का छिलका उतरा हुआ सूखा डंठल।
(डंकोल्या को डागरो मोपत चड़ियो नी जाय। मा.लो. 564)

डा

डाक – पु.– पत्र पत्रिका पहुँचाने की व्यवस्था।

डाकण – न.– जिसकी नजर लगे ऐसी स्त्री, डायन, डाकिन, भूत विद्या जानने वाली स्त्री।
(ईके तो कोई डाकण लगी हे। मो. वे. 54)

डाका – पु.– डकैती।

डाकी – वि.– डाका डालने वाला, डाकू, बहुत बड़ा, बहुभोजी।
(ससरो डाकी जीमण बेठो नईं परेन्डे पाणीजी। (मा.लो. 561)

डाको – पु.– डकैती, बटमारी, राहजनी, लूटमार, धाड़ा।

डाकिणी – स्त्री.– डायन।

डाकोतरो बामण – क्रि.वि.– अब्राह्मण वर्ग का पिण्ड दान करवाने वाला ब्राह्मण, गुरु, गोरजी या गरुड़ा ब्राह्मण, शनि का पुजारी।

डाक्खानो – पु.– पोस्ट ऑफिस।

डाक्यो – न.– डाकिया, चिट्ठी–पत्र आदि घर–घर जाकर बाँटने वाला। डाक बाँटने वाला, डाक ले जाने वाला, रति के लिए पशु का हावी होना।

डागदर – पु.– डाक्टर, चिकित्सक।

डागरो – खेतों पर बनाया जाने वाला मचान जहाँ से पक्षियों को गोफण द्वारा भगाया जाता है।
(डंकोल्या को डागरो मोपत चडियो नी जाय। (मा.लो. 564)

डागल – बड़ा, चौड़ा, खेतों पर चार खम्बे गाढ़कर उसके ऊपर झोपड़ी बनाना है या केवल खम्बों पर आड़ी लकड़ी बाँधकर उसके ऊपर कड़ब बिछाकर छत तैयार करना, मचान।
(हो चंदा थारी चाँदणी डागल घाली खाट। मा.लो. 392)

डाग्गाड़ी – स्त्री.– वह गाड़ी या मोटर जिससे डाक जाती है।

डाँग – पु.– लकड़ी या लठ्ठ, लाठी, मोटा डंडा, पहाड़ का किनारा, डाँग प्रदेश। (डाँग मार्‌या दोनी व्हे–जैसे पानी को लकड़ी से पीटने पर भी वह अलग नहीं होता वैसे ही भाई-बन्धु के रिश्ते भी अलग नहीं होते। लड़ाई झगड़ा कलह होने पर भी वे रिश्ते की डोर से जुड़े रहते हैं।)

डाग बंगलो – पु.– वह सरकारी मकान जो अधिकारियों के ठहराने के लिये बनाया जाता है, डाक बंगला।

डाँगर – पु.– पशु, चौपाया।

'डा'

डागली – स्त्री.– मचान, मंच।

डागलो – स्त्री.– मचान, मंच।

डाटनो – क्रि.– डाँटना, डराना, छिपाना, डाँट–डपट करना, अधिकार में रखना, वश में रखना।

डाड़ख्यो – पु.– मजदूर, नौकर।

डाँड – वि.– दण्ड, दण्ड की रकम, लम्बी लकड़ी।

डाड़खी – स्त्री.– मजदूरी।

डाड़ पाड़ी के – क्रि.वि.– चिल्ला करके, दहाड़े मारकर।

डाड़म – पु.– दाड़िम, अनार।

डाडस – वि. – धैर्य।

डाँडा – खपरेल वाले घर में आड़े खड़े डंडे लगे होते हैं।
(ऊँचा कई देखो रा डाँडा कई गीणो रा। मा.लो. 520)

डाँडाँ करे, डाड़ाँ पाड़े – क्रि. जोर-जोर से चिल्लावे, रोवे।

डाँडी – स्त्री.– डंडी, चारपाई की लकड़ी, कृषि यंत्रों की लकड़ी की डंडी, एक प्रकार की पालकी जिसमें पर्दानशीन स्त्रियाँ, अपंग आदि को बिठाया जाता है, कंधे पर ले जाई जाने वाली पालकी या अर्थी की लकड़ी, तराजू की डंडी, ग्वाले की डंडी।

डाँडे डाँडे – मकान के छत की लकड़ी, डाँडी, डँडी, जुप्ये।
(डाँडे डाँडे बाँदू लोड़ी सोक। मा. लो. 623)

डाड़ी रो – पु.– दाड़ी वाला।

डाड़ – पु.–दाढ़।

डाब – कुश।

डाबी – क्रि. वि.– बाईं ओर, डिब्बी।

डाबा हेड़िया – क्रि.– डिब्बे खोले।

डाबो – बाँया वाम, बाँई ओर का, विरुद्ध, प्रतिकूल, डिब्बा।
(डाबे कँवले मेलूँ कुण्डो ओर माँगे तो तोडूँ मुंडो। मा.लो. 434)

'डा'

डाबे हात मोर पचास – बाएँ हाथ में पचास मोहर नेग (दस्तूर) बख्शिश।
(आपतो जीमणा से करो बेन्या आरतीजी थारे डाबे हात मोर पचास। मा.लो. 463)

डालडा– एक प्रकार का कृत्रिम घी,

डाम – वि.– दाँव देना, मनुष्यों की बीमारी पर शरीर के उस भाग को गर्म लोहे से दागना, चिह्न।

डामिस – वि.– दोगला, धोखेबाज, दगाबाज।

डार – स्त्री.– डाली, शाखा, क्रि. डालना।

डाल – स्त्री.– डाली, शाखा।
(तीन मईना की डावड़ी लिकली छबक छिनाल गाड़ा मारुजी । मा.लो. 543)

डालणो – क्रि.– डालना, किसी चीज में गिराना या छोड़ना, उंडेलना।

डाव – वि.– दगा, धोखा, दाँव पेंच, खेल में चाल।

डावपेंच – क्रि. वि.– दाँवपेंच।

डावड़ा – पु. ब. व.– लड़का, बालक।

डावड़ी – स्त्री.– लड़की, बालिका।

डावला, डावलो – वि.– कपटी, धोखेबाज,।

डावाँ – पु.– बायाँ।

डाँस – पु.– मच्छर।

डि/डी

डिगी री – क्रि.– हिल रही, हट रही, दूर हो रही।

डिग्गी – स्त्री.– डुग्गी।

डींकर – पु.– मेंढक।

डींग – स्त्री.– शेखी बघारना, बड़प्पन जताना।

डींडू – डेंडू, कपास के फल या पानी का सर्प।

डींग रो – पशु के गले या बेवन तिरपन (नाई बोने की) पीछे लटकती लकड़ी।

डील – शरीर, देह, कद।
(छोरा छोरी उब्बा डीले चढ़े। मा. वे. 48)

डील डोल – क्रि.वि.– व्यक्तित्व, शरीर की आकृति।

'डी'

डीले आवे – क्रि.वि.– किसी मनुष्य के शरीर में किसी देवी-देवता के प्रविष्ट हो जाने पर उसके द्वार काँपना- घूमना आदि क्रियाएँ करना।

डु/डू

डुग्गी – स्त्री. – डुगडुगी, बजाने का एक वाद्य।

डुँडाला – वि.– गणपति, बड़े पेट वाला।

डूबणो – क्रि.– डूबना।

डूमड़ो – पु.वि.– ढोली, गर्मी की वर्षा।

डूमड़ा – पु.ब.व.– ढोली, दमामी।

डूम डल्ड – वि.–ढोली जाति को एक गाली।

डूँगर – टीला, डूँगरी, छोटी पहाड़ी, आबादी, बस्ती, पहाड़ी पर रहने वाले लोग, पर्वतीय प्रदेश, पहाड़ी भूमि, मगरा।
(डूँगर वायो वालरो। मा.लो. 545)।

डे

डेंगो – पु.– अँगूठा, एक प्रकार का ज्वर।

डेंडक – स्त्री.– मेढक।

डेंड़को – पु.– मेंढक।

डेड़ – वि.– पूरा एक और उसका आधा।

डेढ़ फँसली को – वि.– दुबला पतला।

डेढ़ो – वि.– ड्योढ़ा, डेढ़ गुना, तिरछा।

डेमड़ो – पु.– मचान, मंच।

डेरी – डेली, देहली, दरवाजे में।
(धरम उबो डेली माय। मा.लो. 681)।

डेरो – पु.– स्थान या ठहरने की जगह, पड़ाव, शिविर, खेमा।
डेरा तो दीजो हरिया वाग में । मा.लो. 626)

डेल – पु.– बड़ी डलिया, झाबा, देहरी, दरवाजा की चौखट के पास का स्थान, देर, अवकाश।

डो

डेलची – कुँए में से पानी निकालने की नेज से

बँधी हुई बालटी।

डोक्यो – पु. - मुँह, ओट से मुँह निकालना। (डेली में बेठा भावज मुंडो मचकोड़े कणी का बुलाया बाई आया हो राज। मा.लो. 55)

डोकरो – वि.– वृद्ध, बूढ़ा, वयोवृद्ध, मेधावान, प्रौढ़, वृद्ध पुरुष।

डोंगर – पु.– डूँगर, पहाड़ी।

डोंगी – स्त्री.– छोटी नाव।

डोचरो – न.– फूट, इसका उत्पादन बरसात में होता है, बरसाती फल।

डोजो – गड्ढा, छिद्र, छेद।

डोड़लो – काँकड़ डोड़ा, विवाह में मण्डप दूल्हा–दुल्हन को बाँधा जाता है। विवाह पूर्ण होने पर वर-वधू के और वधू के छोड़ देती है। यह वर-वधू के विवाह का प्रतीक होता है। (थारे डोडले दस गाँठा रे लाड़ा डोडलो नी छूटे। मा.लो. 455)

डोड़ी – स्त्री.– अफीम के डोड़े छोटा फल, राजस्थान का एक गाँव।

डोड़ा एलची – ईलायची के डोड़े, इलायची। (बाग लगायो डोडा एलची। मा. लो. 659)

डोंडी पीटणो – क्रि. – शासकीय सूचना देने के लिये बाजा बजाकर सूचना से लोगों को अवगत करवाना।

डोड़ो – वह फल जिसमें दाने हों, अफीम का डोड़ा।

डोड़ो पूगो – क्रि.– किसी के सामने से न जाकर टेढ़ा-तिरछा मार्ग काटकर जाना।

डोबणो – न. – पानी से भरा हुआ गड्ढा।

डोबलो – पु.– दुर्बल, चलने में असमर्थ होना।

डोबी – भैंस, बूढ़ी भैंस, मूर्ख, आलसी सुस्त।

डोबो – मूर्ख, बिना अकल का, अशक्त, वृद्ध।

डोर – स्त्री.– रस्सी, डोरी।

डोरी – स्त्री.– पतली रस्सी।

डोरो – पु.– धागा, सुई का धागा, कृषि यंत्र जो दो कतारों के बीच पौधों को हवा देने व खरपतवार नष्ट करने के लिये चलाया जाता है, गले का आभूषण।

डोल – पु.– लकड़ी का बना वह विमान, जिसमें भगवान की मूर्ति रखकर बाजार में घुमाया जाता है, डोलना, घुमाना।

डोल ग्यारस – स्त्री.– देव उठनी एकादशी, इसी दिन भगवान की मूर्तियों को डोल में बिठाकर साज सज्जा एवं ढोल ढमाके के साथ नदी तट पर पूजा आरती के लिये जे लाया जाता है, फूल डौल।

डोलची – स्त्री.– कपड़े या धातु की वह थैली जिससे पानी खींचा जाता है।

डोलणो – क्रि.– टहलना।

डोला – वि.– आँखों की पुतलियों में तैरने वाले लाल डोरे, नयन, नेत्र, पालकी, हिंडोला।

डोलीऱ्या – क्रि.ब .व.– घूम रहे, भटक रहे, फिर रहे।

डोले – क्रि.– घूमें , भ्रमण करें।

डोलो – पु.– डोला, विमान, रथ, पालकी।

ढ

ढ – ट वर्ग का अक्षर।

ढंक – क्रि.– ढँकना, छिपाना।

ढँकणो, ढँकनो – सं.– ढक्कन, डाट।

ढक्कण, ढक्कन – पु.– ढाँकने की वस्तु, ढकना।

ढँकेलणो – क्रि.– धक्के देकर गिराना, धक्का देना।

ढकोसला – पाखंड, ढोंग, बनावटीपन।

ढगलो – ढेर, राशि, पुंज।

ढप – ढपली, ढप, चंग। (ढप कायको बजावे बालम रसिया। मा.लो. 574)

ढपोल संख – जो कहे बहुत पर करे कुछ भी नहीं, डींग हाँकने वाला, गप्पी, ढपोर शंख, जड़ मनुष्य, कुछ काम नहीं आना।

ढँग – पु.– तरीका, शैली, ढब, रीति।

ढबणो – पु.– कोई काम करने का तरीका, रीति, प्रकार, तरह, रुकना।

ढबर्‌यो – पु.– तोंदवाला।

ढब्बू – वि.– ढब्बू, दबने वाला, अनपढ़, तुन्दिल।

ढमकाणो – ढोल बजाना, ढमकाना। (तम ढोलकड़ी ढमकाजो म्हे वारी जाऊँ रे। मा.लो. 563)

ढमाढम – क्रि.वि.– ढोल की आवाज।

ढ्योढ़ा – वि.– एक और आधे का योग।

ढलनो – क्रि. – ढलना अस्त होने की स्थिति में आना।

ढलकाणो – क्रि. – छलकाना, ढुलकाना, बिखेरना, गिराना।

ढलक्या – क्रि.ब.व.– ढुलक, गये।

ढलमल नीर – क्रि.वि.– ढुलकता हुआ पानी, बहता हुआ नीर।

ढल्यो – क्रि.– ढला हुआ, बिछा हुआ।

ढल्काणो – क्रि.– ढुलकाना, औंधा करना, गगरे से पानी गिराना।

ढर्‌रो – पु.– रीति या ढंग।

ढलमाँ, ढलवाँ – वि.– ढाल या उतार।

ढलावाँ – क्रि.– बिछावें , बिछाने का कार्य करें।

ढलकाणो – क्रि.– ढालना, बिछाना।

ढल्ड़ाणो – क्रि.– किसी दीवार, मकान आदि को गिराना।

ढसूका फोड़े – क्रि.वि.–धीमे- धीमे रोना, रुदन करना।

ढसराँद – वि.– मिर्च आदि के आग में गिर जाने पर उससे उड़ने वाली तेज गंध।

ढँक – न. –ढँकी हुई, ढँक जाना, ढकना। (या लच्छू की लाड़ी आदी ढँकी थी। मो.वे. 54)

ढँग – न.– तरीका, रीति, चाल ढाल, बर्ताव, आसार, लक्षण, रंग- ढंग, दशा, हाल।

ढँढार – पेट, उदर, जठर, बड़ा पेट जिसमें सब समा जाए, सब पच जाए।

ढा

ढाँक – क्रि.–ढाँकना, ढक्कन लगाना (सं.) पलाश, खाँकरा, वि. -सर्प विष उतारने के लिये कांडी मंत्र की साधना में थाली वाद्य बजाना।

ढाकणी – स्त्री.– ढक्कन।

ढाँकणो, ढाँकनो – क्रि.– ढँकना, किसी वस्तु का मुँह बन्द करना।

ढाक – पु.– पलाश, खाँकरा।

ढाँचो – पु. – ढाँचा, ठठरी।

ढाड़ – स्त्री. – चिल्लाहट, चिंघाड़, दहाड़।

ढाँडा – पु.– पशु, जानवर।

ढाढ़स – पु.– ढाढस, तसल्ली।

ढाँपणो – क्रि.– ढाँकना, ओढ़ाना, सहेज कर रखना।

ढाप्लावेड – ढोंग, पाखंड, बनावटी रोना धोना।

ढाबणो – क्रि.– छिपाना, पकड़कर रखना।

ढाबीने बोली – क्रि.स्त्री.– धीरे से बोली।

ढार – पु.– ढाल, उतार।

ढारा-ढारी – क्रि.वि. –चरित्र प्रधान मालवी लोकनाट्य।

ढारस – पु.– ढाढस, आश्वासन।

ढाल – स्त्री.– तलवार का वार झेलने व रक्षा का उपकरण, मध्यस्थ सहारा। (थाली परात ढाल कराय। मा. लो. 350)

ढालणो – बिछाना, लगाना, खाट बिछाना, आँसू गिराना, गलाने से पुनःठोस बन जाने वाले पदार्थ को गले हुए रूप में आकृति देने के निमित्त साँचे में उँड़ेलना। (म्हेढोल्योकठेढालाँराज। मा. लो. 566)

'ढा'

ढालूँ – क्रि.– बिछाऊँ, उतार वाला मार्ग, ढलुवा मार्ग।

ढाँकण – वि. - रक्षक, शरण में रखने वाला, माता-पिता, गुरुजन, ढक्कन, संरक्षक।

ढाँकणो – ढँकनी, छोटा ढक्कन, घुटने के ऊपर की गोल हड्डी का टिकला, घुटने की ढँकनी।
(रसोड़ा करंता ढाँकणी फूटी। मा.लो. 557)

ढाँकणो – ढँकना, ढक्कन, ढाँकना, बंद करना, ढँकने की वस्तु, शीशी आदि का ढक्कन लगाना।
(एलो वेवाणजी ढाँचो भर ढाँकणो बेटी ने दुख मत दीजो। मा.लो. 557)

ढाँचो – कोई चीज बनाने के पहले उसके अंगों को जोड़कर तैयार किया हुआ ढाँचा, ठंठरी मिट्टी के बर्तन गधे पर ले जाने का जालीदार ढाँचा।
(रातम रात ढाँकणी का ढाँचा भरी लाया हो राज। मा.लो. 557)

ढि/ढी

ढिंडोरा – पु.– वह बोल जिसे ढोल पीटकर सबके सामने सुनाया जाता है, डुगडुगी, डोंडी।

ढिटई – स्त्री.– ढीट, धृष्टता।

ढिबरी – स्त्री.– मिट्टी का तेल जलाने के लिये डिबिया के आकार का दीपक।

ढींगर – पु.– हट्टा कट्टा, उपपति, यार।

ढीट – वि.– धृष्ट, बेअदब।

ढीमर – पु.– मछली पकड़ने वाली जाति।

ढील – स्त्री.– ढिलाई, देरी।

ढील देणी – क्रि.– देरी करना, ढीला छोड़ना।

ढीला पड़ीग्या – वि.– ढीले हो गये, शिथिल।

ढीलो – वि.– जो कसा या तना हुआ न हो, सुस्त, आलसी, शिथिल।
(ढीली बाँदूँ तोडी सोक। मा. लो. 62)

'ढु'

ढुकणो – क्रि.– ढोकना, प्रणाम करना।

ढुकाना – क्रि.– किसी बच्चे आदि को देवता के सामने ढुकवाना या प्रणाम करवाना, मानता, मनोबल करना।

ढुँढणो – ढूँढना, तलाश करना, खोजना।
(दूसरा ढूँढेगा घर वास। मा.लो. 649)

ढुँढाला – वि.– बड़े पेट वाला, गणपति, गणेश।

ढुमल्यो – कागज का गला कर उसकी लुगदी से बनाया हुआ जंगाल की आकृति वाला तगारा या टोकरा टोकरी जिसमें अनाज वगैरह भरा जाता है। उस पर रंग रोगन से चित्रकारी भी की जाती है।

ढुरकनो – क्रि.– ढुलकना, ढुलना, नीचे गिरना, निकलना।

ढुलनो – क्रि.– ढुलना, लुढ़कना, गिरना, किसी बर्तन में से पानी आदि द्रव पदार्थ को गिराना, चँवर को ऊपर हिलाना, पंखे से हवा करना।

ढुलमुल – क्रि. वि.– इधर-उधर रुड़कने वाला, बेपेंदे का।

ढू/ढे

ढूँड – क्रि.–तलाश, खोज, होली पर नवजात का एक संस्कार।

ढूँढी – स्त्री.– नाभि।

ढेटी – ठिठाई, धृष्टता।
(ढेडाँ रो जित्यो रे ढेराँ री हार गई। मा.लो. 443)

ढेबरी – स्त्री.- चिमनी, दीपक।

ढेबर्‍यो – वि.– बड़े पेट वाला, अधिक खाने वाला।

ढेर/ ढेरो – वि.– बहुत से वस्तुओं का ढेर या समूह, गंज, पर्याप्त, रस्सी कातने का यंत्र, भेंगापन, तिरछी आँख, फिरकी।

ढेर्‍या, ढेर्‍यो – वि.– ढेरा, तिरछा देखने वाला।

ढेलड़ा – पु. – मिट्टी या पत्थर के ढेले, खेलने की गुड़िया।
(कोठी पे पड्या बाई रा ढेलड़ा। मा.लो. 425)

ढेलो – पु.– मिट्टी का टुकड़ा।

ढो

ढोक – स्त्री.–नमस्कार, प्रणाम, झुकना।

ढोकला – स्त्री.– पानी में उकाला गया बाटीनुमा खाद्य।

ढोकणो – क्रि.– ढोक देना, प्रणाम करना।

ढोंग – वि.– ढकोसला, पाखंड।

ढोंगी – वि.– ढोंग करने वाला, पाखंडी।

ढोटो – पु.– कोहनी की मार।

ढोर – पु.– चौपाया, पशु, मूर्ख, बिखेरना।

ढोरनो, ढोरणो – क्रि.– ढरकाना,लुढ़ककर बिखेरना।

ढोल – पु.– ढोल।

ढोलक / ढोलकी – छोटा ढोल।

ढोलक्यो – ढोलक बजाने वाला।
(तम ढोलकड़ी ढमकाजो म्हें वारी जाऊँरे। मा.लो. 563)

ढोली – पु.– ढोल बजाने वाला, दमामी।

ढोला – पु.– एक नायक राजकुमार ढोला, दुर्लभ, दुल्हा–दुल्हन।

ढोल्यो – क्रि.– ढोल दिया, उड़ेल दिया, गिरा दिया, सं.- पलंग, खाट, खटिया।

ढोलणहार – पु.– ढोलने वाला, गिराने वाला।

ढोलण – स्त्री.– ढोली की स्त्री।

ढोलणो – चँवर को ऊपर हिलाना, चँवर डुलाना, हवा करना, पंखा झेलना, उढ़ेलना, किसी बर्तन में से पदार्थ को गिराना।
(हूँ तो वाव ढोलूँगा पंखो लई ने। मा.लो. 528)

ढोलक्यो – पु.– ढोलक बजाने वाला।

ढोलकिया – पु.– ढोलक बजाने वाला।

ढोलकी – स्त्री.– ढोल का छोटा रूप ढोलक।

ढोलीड़ो – ढोल बजाने वाला, ढोल बजाने वाली एक जाति।
(थारी आरती में ढोलीड़ा रो नेग तू कर वो नाचण आरती। मा.लो. 415)

ढोलो – नरवर गढ़ का एक प्रसिद्ध राजकुमार जिसका मालवणी और मारवणी के साथ विवाह हुआ था, मालवी लोकगीतों का नायक, ढोला। पति, दूल्हा, मूर्ख व्यक्ति।
(हो नायकजी हो ढोलाजी कणी बद लूटी या वणजारी। मा.लो. 713)

त

त – त वर्ग का अक्षर।

तई में – स्त्री.– कढ़ाई में, ताई में।

तकतो – पु.– तख्त, तखता। तखत, लकड़ी से बना पलंग, देखता।

तकदीर – स्त्री. अ. – भाग्य, किस्मत।

तकना – क्रि.– देखना।

तक्यो – पु.– तकिया।

तकरार – स्त्री.– लड़ाई-झगड़ा, हुज्जत।

तकली – स्त्री.– सूत कातने का छोटा यन्त्र।

तकलीप – स्त्री. – कष्ट, क्लेश, दुःख, विपत्ति, संकट।

तकाबी – स्त्री. अ.– वह धन जो किसानों को खेती के लिये सरकार की ओर से उधार दिया जाता है।

तक्छक – पु. – तक्षक नाग जिसने राजा परीक्षित को काटा था।

तकिया – पु.– सिरहाना, तकिया।

तकीऱ्यो – क्रि.– देख रहा, तक रहा, अवलोकन कर रहा, ताक रहा।

तखती सी – स्त्री.– छोटा तख्ता, पटिया, पर्दे के लिये बनाई गई तख्ती।

तखलीफ – वि. – दुःख, परेशानी।

तंगई – स्त्री.– तंग हाल, तंग करता हुआ, सं.

-घोड़े के जीन की पट्टी, तंग या पड़तंग होना, संकीर्णता, सकरापन, कसर, कमी।

तंग–पायड़ा – पु.– घोड़े के दोनों ओर पाँव रखने के पैर दान और उसका बन्धन।

तगाद–कोनी – अव्य.– तक नहीं।

तगार – पु.– तैयार माल, वह स्थान जहाँ इमारत के लिये चूना, गारा आदि साना जाता है, तगारा।

तगारी – स्त्री.– लोहे या टीन का पात्र।

तगारो – स्त्री. – बड़ी तगारी।

तंगी – स्त्री.– कमी, न्यूनता।

तजणो – क्रि. – त्यागना, छोड़ना, क्षीण होना, कृश होना।

तजबीज – स्त्री. – तरकीब, उपाय, युक्ति।

तजरबेकार – पु.– अनुभवी, जिसे सांसारिक बातों का तजुर्बा हो।

तट – सं.– किनारा।

तट्ट से – क्रि.वि. – जल्दी से, तुरन्त।

तड़ – ना. – पक्ष, दल, समूह, संगठन, गुट, जाति का उप विभाग, सामने का पक्ष, मुकाबले का दल, शत्रु।

तड़कणो – क्रि.अ.– चटकना, टूटना, तड़ शब्द के साथ फटना, फूटना या टूटना (तिड़कण लागा बोदा बाँस। मा.लो. 735)

तड़क–भड़क – स्त्री.– ठाट-बाट, चमक-दमक।

तड़को – पु.– धूप, बघार, छोंक। (चेत मइने तड़को काना मधुबन बन आवरी राधा। मा.लो. 679)

तड़तड़ाणो – क्रि.अ. -चटकना, चटपटाना, तड़तड़ाना, तड़तड़ शब्द होना या करना।

तड़ तड़ तोडूँ ताजणा– पीटते–पीटते चाबुक तोड़ना।

तड़फणो – अ.– छटपटाना।

तड़फ्यो – पु.– बेहाल हुआ, तड़फन हुई, तड़फड़ाया, तड़फा।

तड़फड़ाट – स्त्री.– छटपटाहट, तड़फ।

तड़बंदी – स्त्री.– दलबंदी, गुटबंदी।

तड़ाकसे – स्त्री.– जल्दी से, तुरन्त, चटपट, शीघ्र, फौरन, उसी समय।

तड़ातड़ – क्रि. वि.–तड़-तड़ ध्वनि पीटना।

तड़ातड़ी – जल्दी–जल्दी, उतावली,भागदौड़, धमाचौकड़ी, झटपट, लगातार, अतिशीघ्र, ऊपरा-ऊपरी, तेजी से, जोर से।

तड़ीग्या – क्रि. – तड़ गये, चटक गये, फट गये, दरार पड़ गई, गायब हो गये।

तड़ी मारी – क्रि. – बिना पूछे गायब हो गये, भाग गये, तड़ी मार गये।

तड़ींगा – क्रि.वि.– लातें फेंकना, पशुओं द्वारा लातें फेंकना या रस्सी तुड़वाने का प्रयत्न करना।

तणावो – क्रि.– तनी बँधी, चोली या तम्बू आदि को तानने या कसने के लिये उसकी रस्सियों को किसी मजबूत खूँटे या अन्य सहायक उपकरण के साथ खींचकर बाँधना। संगवी तम्बूड़ा तणावो । मा.लो. 626)

तणी – स्त्री.– रस्सी, तनी हुई रस्सी, बँधी हुई रस्सी, विवाह मण्डप बाँधने की डोरी।

ततइयो – पु.– लाल, पीला या काले रंग का भ्रमर, काटने वाला जहरीला कीट, बर्र।

ततब–ग्यान – क्रि.वि.– तत्त्वज्ञान, दर्शन।

तदबीर – पु.– तजबीज, युक्ति, उपाय।

तदबो – पु.– सामग्री।

तनन–तनन करनो – क्रि.वि.– क्रोध के कारण बक-झक करना, चिल्लाना।

तनखा – पु.– वेतन, तनख्वाह।

तन्तु – पु.– सूत, धागा, डोरा, ताँत का डोरा।

तन्तर – पु.– कला, ढंग, तन्त्र, जादू टोना।

तनाजो – पु.– झगड़ा, तकरार, मनमुटाव।

तन्नाट – वि.– तप जाना, तपकर लाल हो

जाना, तैयार होना।

तनाव – पु. – खिंचाव, आपस में मनमुटाव, तनने की क्रिया या भाव।

तनो – पु.– वृक्ष का वह नीचे वाला भाग जिसमें डालियाँ नहीं होतीं, पेड़ का धड़।

तना–तनी – क्रि.वि.– लड़ाई झगड़ा, खींचतान।

तप – पु.– तपस्या, कठोर व्रत।

तपणो – प्रताप, तेजस्वी, बढ़ना, दिन दुना तेज बढ़ना।
(राणी को राज तपतो जाय। मा. लो. 605)

तप–तप्यो – क्रि.वि.– तपस्या की, तापा।

तपर्‌या – क्रि.– तप रहे, तपस्या कर रहे, ताप रहे, गर्मी हो रही।

तपलची – पु.– तबला बजाने वाला उस्ताद, तबला वादक।

तपसी – क्रि.वि.–तपस्वी।
(ईना तपसी रे हाथा। मा. लो.232)

तपसील – पु. – ब्यौरा।

तपाइणो – क्रि.– गर्म करना।

तपास – क्रि.– जाँच, परीक्षा, खोज।

तपीऱ्या – क्रि.– तप रहे, तप कर रहे, तपस्या में लीन रहना।

तपेली – स्त्री.– पतीला, देगची, भगोनी।

तपेलो – पु.– तप का प्रभाव या शक्ति, भगोना।

तबका – पु.– समूह, वर्ग समूह।

तबदील – वि.– बदला हुआ, परिवर्तित।

तबलो – पु.– ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा।

तबाक – स्त्री.– खाना खाने की बड़ी थाली।

तबादलो – पु.– स्थान परिवर्तन, बदला जाना।

तबा – वि.– पूरी तरह से चौपट, नष्ट, बरबाद, परेशान।

तबाई – स्त्री.– नाश, बरबादी।

तंबाला खाणो – क्रि.वि.– चक्कर आना, अचेत होना।

तबीयत – स्त्री.– चित्त, मन।

तम्बू – पु.– डेरा, खेमा, कपड़े का बना अस्थायी मकान।
संगवी तंबूड़ा तणावो। मा.लो. 626)

तम्बूरो – पु.– तानपुरा।

तबेलो – पु.– घोड़े, गधे, गाड़ियाँ आदि रखने का स्थान विशेष, अस्तबल।

तमंचो – पु.– छोटी बन्दूक, पिस्तौल।

तम – सर्व.– तुम।

तमक – स्त्री. – जोश, आवेश।

तमण्यो – वि.– गले का आभूषण।

तमगो – पु.– पद का बिल्ला।

तमतमाणो – अ.क्रि. (सं. ताम्र.)– धूप या क्रोध आदि से लाल हो जाना।

तमने – सर्व. – तुमने।

तमस – वि. – गर्मी , ऊमस, वायु की अल्पता से गर्मी का बढ़ जाना।

तमुनेज – सर्व.– तुमको ही।

तमु – सर्व. – तुमसे।

तमन्ना – स्त्री.– कामना, इच्छा।

तमाकूड़ी, तमाखूड़ी – स्त्री.– तम्बाखू।
(खाडी तमाखू। मा.लो. 687)

तमाचो – झापड़।

तमाल पत्तर – स्त्री.– तम्बाखू के पत्ते।

तमासो – पु.– खेल, नाट्य प्रदर्शन, अनोखी बात, स्वांग भरना, नकल उतारना, गम्मत करना।

तमासगिरी – वि.– तमाशबीन, दर्शक।

तमीज – स्त्री. अ.– भले और बुरे का ज्ञान या परख, विवेक।

तमी पीवो – क्रि.वि.– तुम ही पीलो।

तमोगुण – वि.– तम गुण, क्रोध, क्रूर आदि।

तमोगुणी – वि.– तामसी प्रवृत्ति वाला मनुष्य, क्रोधी या क्रूर व्यक्ति।

तरक – वि.– तर्क, अटकल, अनुमान।

तरकलो – वि.– घास का तिनका, तृण।

तरकारी – स्त्री.– सब्जी, साग–भाजी।

तरकस – पु.– तरकश।

तरकीब – स्त्री.– युक्ति, उपाय।

तरछी, तरछूँ – वि.– तिरछा, टेढ़ा, टेढ़ापन, बाँका।

तरग्यो – क्रि.– पार हो गया, वैकुण्ठ को गया।

तरगस – सं.– तरकश। (लावो रे तरगस। मा.लो. 416)

तरतो – पु.– तैरता।

तरनो – क्रि.– तैरना।

तरप – वि.– पानी का भूमि से रिसाव, तरफ, ओर।

तरपत – वि.– तृप्त, सन्तुष्ट।

तरपण – वि.– तर्पण, श्राद्ध की अंजुलि देना।

तरपी लागो – क्रि.वि.– प्यास लगी।

तरफ – अव्य.– ओर, बाजू।

तरफदारी – स्त्री.– पक्ष का समर्थन, पक्षपात।

तरफड़नो – वि.– तड़फना।

तरबा लाग्यो – क्रि.– तैरने लगा।

तरबूजो – पु.– तरबूज।

तरबंगी – वि.– त्रिभंगी, श्रीकृष्ण, टेढ़ी-तिरछी।

तरबेणी – वि.– त्रिवेणी, जहाँ दो नदियों का संगम होता हो।

तरबूकरे – क्रि. – तैरता रहे।

तरम, तरम धन्यो – वि.– फोड़ा–फुन्सी आदि में कीटाणुओं का प्रवेश, कीड़े पड़ने लगना।

तर–माल – वि.– तरीयुक्त माल, तरीयुक्त पकवान, पुष्टिकारक भोजन, बढ़िया पकवान।

तरमाँगल – वि.– बहुत प्रकार के बाजों का बजना, जोर-जोर से बाजे बजाना।

तरमो – न. – तिनका, तृण, चारा, घास।

तरवर – पु.– वृक्ष।

तरवार – पु.– तलवार, खड्ग।

तरवायो – पु.– लकड़ी का बना तिपाया जो ऊँचाई के लिये होता है। इस पर खड़े रहकर अनाज उफनते हैं।

तरवा लागो – क्रि.– तैरने लगा।

तरस – वि.– प्यास, दया।

तरस अई गई – क्रि.वि.– दया आ गई, रहम आ गया, प्यास हो आई।

तरसणो – क्रि. – तरसना, ललचाना, लालसा।

तरसाणो – क्रि.– ऐसा काम करना जिससे कोई तरसे, त्रस्त या पीड़ित करना।

तरस खइने – कृ. – दया करके।

तरसगयो – पु.– अतृप्त रहा, तरसा, इच्छा पूर्ण न हुई, अभाव रहा।

तरसे – क्रि.– व्याकुल रहे, लालायित रहे।

तरसी गयो – पु. - ललचाता रहा, अतृप्त, प्यासा रहा, तरस गया।

तरस्यो – प्यासा, तेरस, तृषा, दया, करुणा, अनुकंपा, उत्कृष्ट इच्छा, लालसा।

तरास – वि.– दुःख, तकलीफ, संत्रास, तराशना।

तराश्यो – क्रि.– काट–छाँटकर किसी वस्तु को सही आकार प्रकार देना, व्यवस्थित करना, तराशना।

तराजू – स्त्री.– काँटा, तुला, कोई वस्तु तौलने का उपकरण।

तराई दे – क्रि. – तिरने दे, तिरवा दे, तैरने दे।

तरिया संग – स्त्री.– स्त्री का साथ।

तरीचट्टो – वि.– तरी-तरी चाटने वाला, दूध के ऊपर आने वाली तरी या मलाई चाटने वाला, स्वार्थी।

तरीको – पु.– विधि, ढंग, रीति, व्यवहार, उपाय।

तरीग्यो – क्रि. पु.– उद्धार हो गया।

तरे–तरे से – क्रि.वि.– तरह–तरह से, भिन्न-भिन्न प्रकार से।

तरोई – स्त्री.– तोरी नामक सब्जी।

तरो – क्रि.– तैरो।

तरोताजा – वि.– साफ–सुथरा।

तळतळ्यो – वि.– झकपक।

तलई – स्त्री.– तलैया, छोटा तालाब।

तल, तलो – पु.– नीचे का भाग,पेंदा, जूते का

तला, सात पातालों में से प्रथम सतह, हथेली। (तलभर ताला-रज भर कूँची-ज्ञानरूपी छोटे से ताले की सूक्ष्म ज्ञानरूपी पतली–सी चाबी।)

तलक – अव्य.– पर्यन्त, सर्वोत्तम। (श्रेष्ठ तिलक तलक वछोरी। मा. लो. 397)

तलघर – पु.– तहखाना, जमीन के नीचे बना मकान।

तलणो – क्रि.– गर्म घी या तेल में डालकर पकाना।

तलतलावे – क्रि.वि.– कुढ़न पैदा करे, परेशान करे, मन दुःखावे, हाथ लगावे, बेचैन करे।

तलमलीग्यो – क्रि.वि.– छटपटाया, बेचैनी हुई, पीड़ा हुई।

तलफ्यो – वि.– तड़फा, परेशान हुआ।

तलफ – वि.– सनक, नशे की तीव्र इच्छा।

तलब – तीव्र आकांक्षा, उत्कट अभिलाषा।

तल हंकरांत – तिल खाने और दान करने का मकर संक्रान्ति पर्व, दान पुण्य करने का विशेष पर्व।

तलाब – सं.– तालाब।

तलास्यो – क्रि.– तलाश किया, ढूँढा।

तल्लावारी – वि.– ऊँची पदवी, ऊँचे किस्म के पल्लू वाली पगड़ी।

तल्लास – क्रि.– खोज, तलाश करना।

तलवानो – पु.– गवाहों को तलब करने के लिये अदालत में जमा किया जाने वाला व्यय।

तलवो – तुलआ, पगतली।

तलवार चाटीऱ्या – क्रि.वि.– खेत रहे, मर गये, तलवार से कट गये।

तलवा चाटीऱ्या – क्रि.वि.– चापलूसी या चाटुकारी कर रहे।

तल्लाक – पु. – विधि या नियम के अनुसार पति-पत्नी का सम्बन्ध-विच्छेद होना।

तलास – स्त्री.– पता लगाना, अनुसन्धान, खोज।

तलाव – स्त्री.– तालाब, जलाशय।

तले – वि.– नीचे।

तलेटी – स्त्री.– तलहटी, तराई, निचली भूमि।

तलो, तली – पु.– जूते के नीचे का चमड़ा।

तल्लो – पु.– मंजिल, ऊपर-नीचे के विचार से मकान के स्तर, कपड़े का अस्तर।

तवई – स्त्री.– तवी, तई, कढ़ाई।

तवा – तवा, रोटी बनाने का लोहे क पात्र।

तवा कर – क्रि.– परेशान करे, तंग करे।

तवाखीर – स्त्री.– तवाशीर, तवाखीर, एक औषधि।

तबा पे गाँड भड़ीक-भड़ीक के मारणो – कितने ही प्रयत्न कर लेने पर भी नुकसान कर पाने की चेतावनी।

तवा वईग्यो – वि.– बर्बाद या परेशान हो गया।

तवा पर बूँद – क्रि.वि.– तुरन्त समाप्त होने वाला पदार्थ। (तवा पे की थारी ने हात पे की म्हारी तवा की तेरी और हात की मेरी– सीधे के हकदार होना। बिना परिश्रम किये उपलब्धि करना।)

तस – वि.– प्यास।

तसतरी, तस्तरी – स्त्री.– तश्तरी।

तस्दीक – स्त्री.– प्रमाणीकरण, गवाही, सचाई।

तसली – स्त्री.– तश्तरी, रकाबी।

तसबीर – पु.– फोटू, प्रतिकृति, तस्वीर।

तसलो – पु.– तसली, तश्तरी।

तसाणो – पु.– प्यासा।

तसाँ – अव्य.– तैसे।

तहखानो – पु.– तलघर।

ता

ताक – स्त्री.– ताकने की क्रिया या भाव, आला, अवलोकन, टकटकी।

ताकड़ी – तराजू।

ताकणो – क्रि.– ताक-झाँक करना, अवसर की प्रतीक्षा। (परपुरस ने उबीताके। मा. लो. 548)

ताकत, ताकद – स्त्री.– बल, शक्ति, सामर्थ्य।

ताक्यो – क्रि.– देखा, झाँका।

ताकाजी – पु. – तक्षक नाग, तखाजी महाराज।

ताकीद – स्त्री.– आदेश।

ताखा – पु. – तक्षक नाग।

तागत – वि.– ताकत, शक्ति, सामर्थ्य।

तागो – पु.– धागा, डोरा।

ताँगो – स्त्री.– ताँगा, बग्घी, इक्का गाड़ी।

ताच, ताछ – वि.– शकर की चासनी बनाते समय वस्तु के आधार पर उसका परीक्षण करना।

ताज – पु.– राजमुकुट, मुकुट, मुरगे के सिर की चोटी या कलंगी, शिखा, आगरे का ताजमहल।

ताजगी – स्त्री.– ताजापन।

ताजणो, ताजणा – पु.– चाबुक, कशा, व्यंग।
(आई सायबा ने रीस गोरी ने मार्या ताजणा जी म्हारा राज।
मा.लो. 623)।

ताजो – वि.– ताजा, बिल्कुल नया।

ताजिया, ताज्या – सं.पु.– मुहर्रम।

ताजूब – अचम्भा, आश्चर्य।

ताड़ – पु.– ताड़ का वृक्ष।

ताड़णो – क्रि. भगाना, भगा देना, निकाल (देना, लताड़ना, प्रहार मारना।
नी ताड़ो तो वाग उजाड़े। मा. वे. 37)

ताड़ी – स्त्री.– ताड़ का नशीला रस जो मद्य की तरह पिया जाता है।

ताण – वि.– तनाव, खिंचाव।

ताणनो /ताण्णो – क्रि.– खींचना, तानना।

ताणो – पु.– ताना, तनाव।

ताँत – स्त्री.– तंतु, धागा, तार।

ताँतण्या – स्त्री. ब.व.– भ्रमरी, बर्र का समूह।

तातो, ताती – वि.– तपा, गर्म, तातो सो पाणी।

ताँत्यो – पु.– बर्र, भ्रमर।

तादाद – स्त्री.– संख्या, गिनती।

तांदूल – तन्दूल, चांवल, भात।
(सुदामा का तांदूल रुचि भोग लगायो। मा.लो. 689)

'ता'

तानकी – स्त्री.– सिर के मध्य कोमल भाग।

तान – स्त्री.– राग अलापना।

तानो – व्यंगपूर्ण चुभने वाली बात, उपालंभ, उलाहने।
(बेन्या थारी भाबज म्हारे मसला वो मारे ने ताना दई दई बोले। मा. लो. 348)

तानासाई – पु.– एकशाही।

ताप – पु.स.– ज्वर, बुखार, शारीरिक या मानसिक कष्ट।

तापण – क्रि.– तापने का ईंधन, घास-फूस, लकड़ी, कण्डे आदि।

तापणो – क्रि.– तापना, गर्म होना।

तापस, तपसी – पु.– तप करने वाला, तपस्वी।

ताब – पु.– हिम्मत, ताकत।

ताबड़तोब – क्रि.वि.– लगातार, निरन्तर, तुरन्त, तत्काल, शीघ्र, त्वरित।

ताबीज – पु.– वह जन्त्र–मन्त्र या कवच जो किसी संपुट में बन्द करके पहनाया जाता है।

ताबूत – पु.– वह सन्दूक जिसमें लाश रखते हैं, मुहर्रम का ताजिया।

ताबेदार – वि.– आज्ञाकारी।

ताँबेसर – वि. – एक पौधा जिसके पत्ते ललाई वाले होते हैं ।

ताँबड्या – वि.– लाल रंग का।

ताँबो – पु.– ताँबा नामक धातु।

ताम्बा केरी तोलड़ी – ताम्बे की डेक्ची, भगोनी।
(बाई वो ताम्बा केरी तोलडी मंगाओ। मा.लो. 49)

ताम–झाम – पु.– एक प्रकार की छोटी खुली पालकी, विभिन्न प्रकार के उपकरण या सामग्री।

तामलोट – पु.– ताँबे का बना हुआ लोटा, ताम्रपात्र।

तामसी – वि.– तमोगुणी।

तायफो – पु.– वैश्या और उसके समाज की मण्डली, भव्य आयोजन या सामग्री।

तार – तरंग, संगीत का एक सप्तक, तारा, तागा, सूत, टेलीग्राम, चाशनी को जाँचते समय बनने वाले तंतु, ताँत, धागा, ताम्बे का तार, लोहे का तार। (भाँगडली रा तार में ए बेन लोट्यो भूली जावद माय। मा.लो. 594)

तारद – शौचघर, शौचालय, संडास।

तारनो, तारणो – पु.क्रि.– तारना, पार लगाना, डूबते को बचाना, सद्गति या मोक्ष, उबारना, बचाना।

तारपीन – पु.– चीड़ का तेल जो मालिश आदि में औषधि के काम आता है।

तारा – पु.– तारे, हरिशचन्द्र की पत्नी, आँख की पुतली या हीरा, क्रि. -उद्धार किया, पार किया।

तारा मण्डल – पु.– तारों से भरा आसमान।

तारीख – स्त्री.वि.– महीने का हर एक दिन, 24 घण्टों का समय, नियत तिथि।

तारीफ – वि.– स्तुति, प्रशंसा।

ताल – पु.– करतल, हथेली, करतल ध्वनि, ताली बजाना, तालाब।

तालमखाना – पु. -एक पौधा जिनके गोल तथा चिकने सफेद बीज खाये जाते हैं ।

तालवो – पु.– तालू, तालवा।

ताला बेली, थाला बेली – स्त्री.– तलफ लगना, जी-घबराना, व्यग्र होना।

ताली – हथेलियों का परस्पर आघात, करतल ध्वनि, दोनों हाथों को एक-दूसरे से मारने पर आने वाली आवाज। (झाँके ताल्याँ दई दई ने। मो .वे. 38)

तालीम – पु.– शिक्षा।

तालूँ – पु.– ताला।

तालूड़ी – स्त्री.– गिलहरी।

ताल्लुकेदार – ग्राम का जमींदार।

तालो – पु.सं.– ताला।

ताव – पु.क्रि.– क्रोध, बुखार।

तावड़ो – धूप, सूर्य का प्रकाश, घाम, सूर्यताप, उष्णता, जलन, गर्मी।

तावणी – स्त्री.– गर्मी देना, अफीम एकत्र करने का पात्र।

तावान – पु.फा.– किसी क्षति की पूर्ति के लिये दिया जाने वाला धन।

तावील्यो – क्रि.– गर्म कर लिया।

तासली – स्त्री.– तश्तरी।

तासीर – स्त्री.– असर, प्रभाव।

ति

तिकड़म – पु.– जोड़ तोड़।

तिकड़ी – वि.– तीन का समूह।

तिगणो – वि.– तीन गुना, तिहरा।

तिजवर – पु.– तीसरी बार विवाह करने वाला वर।

तिजोरी – स्त्री.– कोषागार, मजबूत लोहे की आल्मारी जिसमें धन रखा जाता है।

तित्तर – स्त्री. – एक उड़ने वाला पक्षी, तीतर।

तितली – स्त्री.– एक उड़ने वाला सुन्दर पतंगा जो फूलों पर मण्डराता है।

तिताल – वि.– तीन ताल, तबले की थाप का प्रकार।

तिथि – स्त्री.– चांद्र मास का दिन।

तिथि पतरा – पु.– पंचांग।

तिनको – पु.ए.व.– तिनका, तृण।

तिनने – सर्व.– उन्होंने।

तिपई – वि.– तीन पाँव वाली तिपाई।

तिमण्यो – वि.– गले का स्वर्ण आभूषण।

तिरगुन – वि.– सत, रज, तम नामक प्रकृति के तीन गुण।

तिरछूँ – वि.– टेढ़ापन, तिरछापन।

तिरंदाज – वि.– तीर चलाने वाला।

तिरपट – वि.– त्रेपन, तिरछा देखने वाला भेंगा।

तिरवेणी – त्रिवेणी, संगम। (थारा संगवी तिरवेणी में न्हाय रया। मा.लो. 634)

तिरसठ – वि.– त्रैसठ।

तिरिया – स्त्री.– पत्नी, स्त्री।
(नी खेले तिरिया से होली। मा. लो. 583)

तिरिया चरित्तर – स्त्री.– स्त्री का चरित्र।

तिल – पु.सं.– एक तिलहन।

तिलकुट्टो – पु.– कूटे तिलों की मीठी टिकिया तथा लड्डू।

तिलपपड़ी – स्त्री.– तिल की बनाई गई मीठी पपड़ी।

तिलड़ी – स्त्री.– तीन लड़ों वाला, गले का हार।

तिल–तिल करी ने – थोड़ा–थोड़ा करके,(तिल रखवा की जगा नी हे–जरा–सी भी जगह खाली न रहना।)

तिलंगो – पु.- भारतीय सैनिक, देशी सिपाही।

तिलक – पु. चन्दन–केसर आदि से मस्तक, बाहु आदि पर लगाया जानेवाला चिह्न, टीका, राज्याभिषेक।

तिलस्मी – पु.– जादू, इन्द्रजाल।

तिलांजली – स्त्री.– किसी के मरने पर ऊँगली भरकर जल देना और तिल लेकर उसके नाम से छोड़ना, सदा के लिये परित्याग का संकल्प लेना।

तिल्ली – स्त्री.– पसलियों के नीचे का अवयव।

तिवड़ो – वि.– तीन समूह में, दलहन प्रकार का अनाज।

तिसना – स्त्री.– तृष्णा, लालसा।

तिसरा – वि.– तीसरा, मृतक तीसरे दिन किया जाने वाला श्राद्ध कर्म, तीसरा दिन सारी उठाने का दिन।

तिसलगी, तिसलागी– स्त्री. वि.–प्यास लगी, तृषित हुआ।

तिसालु – प्यासी, तृष्णालु, तद्भव, तृषा, प्यास।
(जमईजी हो राज म्हारी बाई घणी हे तिसालू। मा.लो. 525)

ती

ती – सर्व.– मालवी कारक प्रत्ययों में अपादान चिह्नतः का तद्भव जैसे उणती, उणांती, म्हारती आदि (उनसे, मुझसे)

तीखी, तीखो – वि.– तेज धार वाला, तीक्ष्ण।

तीज – स्त्री.- तीसरी तिथि।
(अबके तो तीज पे जी आवे केलागड़ से नल सुल्तान। मा. लो. 607)

तीजाँ – स्त्री.– मालवा का प्रसिद्ध त्योहार जिसमें दूल्हा अपनी ससुराल में यह पर्व मनाने जाता है।

तीजा – पु. -मुसलमानों में किसी के मरने पर तीसरे दिन का कृत्य करने की प्रथा।

तीजो – वि.– हिन्दुओं में मृतक श्राद्ध के रूप में तीस दिन सारी सोरना या मृतक की हड्डियों के फूल एकत्रकर कुछ धार्मिक रस्में की जाती हैं।

तीनपगो – वि.– तीन पाँव वाली।

तीन भवन – त्रिभुवन, तीन लोक, स्वर्ग, मृत्यु और पाताल नामक तीन लोक।
(जन्म्या है तीन भवन का नाथ। मा.लो. 676)

तीन पाँच करनो – रोब जमाना, अभिमान की बातें करना, अभिमान करना,चालाकी या चालाकी की बातें करना।

तीमारदारी – क्रि.– सेवा-सुश्रुषा।

तीरंदाज – पु.फा.– तीरंदाज, तीर चलाने वाला।

तीर – पु.–नदी का किनारा, कूल, तट, स्थान, जगह, पास, निकट, बाण, शर।

तीरथ–जातरा – स्त्री.– तीर्थस्थान की यात्रा।

तीली – स्त्री.–माचिस की काड़ी, दियासलाई, क्रोशिये के सरिये, अंजन शलाका।

तीसमारखाँ – वि. – शेखी बघारने वाला, बड़बोला, बातूनी।

तु

तुच्छ – क्रि.वि.– तुच्छ या हेय।

तुताड़ी – स्त्री.– तुरही, वाद्य।

तुमड़ी – आल, लौकी, घीया, पेट, पेट के लिये प्रतिमात्मक शब्द, तुम्बे के आकार का एक फल।
(अगवाड़े वाई तुमड़ी जीकी पछवाड़े वेल। मा.लो. 542)

तुमारा – सर्व.– तुम्हारा।

तुमीं – सर्व.– तुम ही।

तुम्बो – पु.– लकड़ी की तुम्बी, तुम्बी नामक फल को सुखाकर बनाया गया तुम्बा।

तुरप चाल – क्रि.वि.– ताश के पत्तों में प्रधान पत्ता।

तुरो – वि.– कसैला।

तुर्रो – वि.– लावणी गाने का एक ढंग, मालवा में प्रचलित तुर्रा–किलंगी नामक संवादात्मक एवं गेय विधा।
(अणी तुर्रे वो अणी तुर्रे वो चम्पालालजी अडी रया। मा. लो. 449)

तुरही – स्त्री.– फूँक से बजाया जाने वाला एक वाद्य।

तुलनो – क्रि.– स्वयं को तौला जाना।

तुसार – फुहार, बूँदाबाँदी, झरमर झरमर।
(पाणी पड़े रे तुसार इना घर में। मा. लो. 26)

तू

तूफान मचायो – क्रि.वि.– तूफान खड़ा कर दिया, तूफान मचा दिया, हंगामा किया।

तूमड़ी – स्त्री.– कड़वी लौकी, कडुआ फल।

तुलछी – स्त्री.– तुलसी पत्र।

तूतम्बो – वि.– परेशान करने वाला कार्य।

तूर – सं. स्त्री.– अरहर, एक बाजा, तुरही, नगाड़ा, (माता आगे वाजे तूर)।

तूरा – वि. - फीका।

तूहीम – वि.- तुझी में, तुझ में है।

ते

ते – वि. - प्यास, सर्व. - वे सब, ते, तस।

तेगा – सं.– तलवार।

तेणा – वि.– प्यासा।

तेज – पु.– कान्ति, चमक।

तेजपात – पु.– दाल चीनी की जाति के एक पेड़ का पत्ता जो तरकारी में मसाले की तरह डाला जाता है।

तेजाब – पु.फा.– (वि.- तेजाबी) क्षारका वह तरल और अम्ल सर जो दाहक होता है।

तेजा धोल्या – सं.– मालवी में प्रचलित तेजाजी की गीत कथा।

तेजी – स्त्री. फा. वि.– घोड़ी, चमक, जल्दी, शीघ्रता, महँगी।
(इन्दर चढ़वा री तेजी सवा लाख की। मा.लो. 615)

तेड़णो – क्रि. – आमन्त्रित करना, न्यौता देना, बुलाना।
(म्हारी जान भली रे तेड़ाव। मा. लो. 408)

तेरमो – क्रि. वि.– मृतक का तेरहवें का श्राद्ध दिवस।

तेराक – वि.– तैरने वाला।

तेरो – सर्व.– तुम्हारा।

तेल – पु.– बीजों का रस।

तेलबान – क्रि.वि.– दूल्हे या दुलहिन के शरीर पर हल्दी, बेसन और तेल का मिश्रण मलने की एक रीति, अंग मर्दन का उपक्रम।

तेली – तेली (साहू)। जाति जो तेल निकालने का काम करती है।
(तेली की घाणी। मो.वे. 78)

तेवड़ – ना. – व्यंजन , विविध प्रकार की मिठाइयाँ और नमकीन, तीन परत वाला, छत्तीस तरह के पकवान।

तो

तो – अव्य. – तो, तब, उस स्थिति में।

तेवार – पु.– त्योहार।

तोकणो – उठाना।

तोटको – वि.– टोटका, तोड़गा।

तोटो – वि.– हानि, घाटा।

तोड़ – वि.– उपाय, सूझ, जोड़, तोड़ने की क्रिया या भाव।

तोड़णो – किसी पदार्थ के खण्ड या टुकड़े करना, अंग को मूल वस्तु से जुदा करना।

तोड़-फोड़ – क्रि.वि.– किसी चीज को तोड़ फोड़कर नष्ट करना।

तोड़ा – पु.– सोने-चाँदी की लच्छेदार और चौड़ी जंजीर जो हाथों, पैरों या गले में पहनी जाती है।

तोड़ा – पैरों की पायल। झाँझर, पायजेब, लच्छेदार और चौड़ी पैर की जंजीर। (पगल्या में तोड़ा पेरो म्हारी भाबज। मा.लो. 630)

तोड़ा सिलग्या – कड़ा बिन्द का जलना या चमकना। (बनाजी थाँके खाँदे या नकासी बन्दूक तोड़ा तो सिलग्या जान रा रे बनड़ा। मा.लो. 391)

तोड़ी – स्त्री.– तोड़ी नामक एक राग, क्रि.- तोड़ दी।

तोड़ो, तोड़ा – क्रि.– तोड़ डाला, पैर का एक आभूषण, टुकड़ा, तोड़ने की क्रिया, गिने हुए सिक्कों की थैली।

तोतलो – पु.वि.– हकलाना या तुतलाना।

तोता परी – स्त्री. एक प्रकार का प्रसिद्ध आम्र फल, परियों में से एक प्रसिद्ध परी का नाम।

तोंद – स्त्री.– फूला हुआ पेट।

तोंदल – वि.– बड़ी तोंद वाला।

तोप/ तोब – स्त्री.– एक प्रसिद्ध अस्त्र जिसमें गोला रखकर युद्ध के समय शत्रुओं पर छोड़ा जाता है, गरनाल, गले में सूजन।

तोपखानो – पु.– वह स्थान जहाँ तोपें रखी जाती हैं।

तोपची – पु.– गोलंदाज, तोप चलाने वाला।

तोफान – वि.– तूफान।

तोफो – पु.– उपहार, तोहफा।

तोबरा, तोबरो, तोबड़ो – पु.– मुहरें रखने का बटुआ, घोड़े-घोड़ी की चंदी भरने का थैला जो चंदी भरकर घोड़े के मुँ ह पर लटकाया जाता है।

तोबा – स्त्री.– भविष्य में कोई बुरा कार्य न करने की प्रतिज्ञा।

तोमत – पु.– दूल्हा इस द्वाराचार पर विजय प्राप्त करने के पश्चात् ही गृह–प्रवेश हो, आक्षेप।

तोरी – स्त्री.– तोरई, तुरई सब्जी।

तोल – स्त्री.– तोलना, वजन। (तोलूँतो तोला तीस री। मा. लो. 350)

तोल्यो – पु.– पानी पीने के लिये मिट्टी का पात्र, लोटानुमा मिट्टी का बर्तन, क्रि.- तोला गया।

तोलिया – सं.– शरीर पोंछने का वस्त्र, अंगोछा।

तोला – पु.– बाहर माशे की तौल या इस तौल का बाट, क्रि. - तोलने का कार्य किया, गोपन अंग।

तोसे भरोसे – आत्मनिर्भर।

त्यागणो – छोड़ दिये। त्याग दिये, छोड़ देना। (दुर्योधन के मेवा त्यागे। मा.लो. 689)

थ

थ – त वर्ग का वर्ण।

थई–थई – क्रि.वि.–थिरक–थिरक कर नाचना।

थट्टो – वि.–हँसी–मजाक, हँसी–ठट्ठा।

थगत वेणो – आश्चर्यचकित होना, चकित रह जाना (स्थगित का तद्भव)।

थड़ी करनो – न. – शिशु का बिना सहारे पाँवों पर खड़े होने का प्रयत्न। घुटने चलने वाले बच्चे का खड़े होने का प्रयत्न करना।

थतेड़नो – क्रि.- मोटा लेप करना, अधिक लेप लगाना।

थन – पु.– दूध देने वाले पशुओं के स्तन।

थपकानो – क्रि.– थपकी देना।

थपकी – स्त्री.– थपकी देना।

थपथपी – स्त्री. – थपकी देना।

थप्पड़ – पु.– तमाचा।

थपेड़णो – पु.– हथेली की थपकी से चपटा

करना, थपथपाना।

थपेड़ा – क्रि.– पानी की बौछार, धक्का।

थप–थप – क्रि.वि.– बूँ दें गिरने की आवाज, थपकी देकर सुलाना ।

थप्पी – एक के ऊपर एक रखकर बनाया हुआ गंज, करीने से रखी हुई वस्तुओं का स्तर वाला ढेर।

थम – पु.– रुक, ठहर।

थमणो – क्रि.– ठहरना, बन्द हो जाना।

थमाणो – दे देना, थमाना।

थर – स्त्री. वि. - स्तर, परत।

थर–थर काँपे – क्रि.वि.– थर-थर काँपना या धूजना, शरीर का प्रकंपन, कंपकंपी।

थरथराट – स्त्री.– थरथराना।

थरहर – काँपना, धूजना, थर्राना, थरथराहट, कंपकंपी, भय, ठण्डी से काँपना, कंपन। (माता बाई कामण करवा लागा म्हारो थरहर जीवड़ो काँपे हो राज। मा.लो. 413)

थल – स्त्री.– जमीन, भूमि।

था

था – सर्व.– तुम, आप सब, भूतकाल, वाचक।

थाकणो – क्रि.– थक जाना, क्लान्त होना।

थाँसे / थाकसे – सर्व.– तुम सबसे, आप सबसे।

थाँका – सर्व. ब. व. – आप सबका।

थाँको – सर्व.– आपका, तुम्हारा।

थाग – वि.– सुराग, पता, गहराई। (कुवो वे तो थाग लूँ। मा. लो.470)

थाग्यो – क्रि.– देखा, थाह ली, टटोला, नापा।

थागली – स्त्री.– इच्छा पूर्ति की।

थाणा – रोपना, चोपना, थाना। (आँगण दो मोगरा रा थाणां, जीमे मोगरो ओ लेर्यां लेसी। मा.लो. 297)

थाता – स्त्री.– जमा पूँजी, धरोहर, अमानत।

थाँती – सर्व.– आपसे, तुमसे।

थाँतो – सर्व .– तुम तो, आप तो।

थान – पु.– पशुओं के बँधने का स्थान विशष, डेरा, जगह, निवास, स्थान, इसी का एक रूप ठाण, स्तन, छाती। (माता बाई बोल्या म्हारा थान की लज्जा राखजो। मा.लो. 660)

थानक – देवताओं का स्थान, दिवालों पर सिन्दूर से त्रिशूल, देवी-देवताओं के चित्र, पदचिह्न आदि बनाए जाते हैं।

थाणेदार, थानेदार – पु.– पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी।

थाने – तुम्हें।

थानो, थाणो – पु. - पुलिस कार्यालय।

थाप – पु. थापी, रचना की, निर्णय किया, स्थापना।

थापड़ – पु. झापड़, थप्पड़। (उल्टा थापड़ मारे राज। मा. लो. 126)

थापी – स्त्री. – कुम्हार का वह यन्त्र जिससे पीटकर वह बर्तन को आकृति देता है।

थापो – पु.– दीवार आदि पर लगाई जानेवाली पंजों की छाप, खलिहान में अनाज का ढेर लगाना या थापा देना, खाँचे से अंकित चिह्न, ढेर, राशि।

थाँबो – पु.– स्तम्भ, थंबा।

थामनो – क्रि.– पकड़ना, रोकना, सहारा देना।

थारो – क्रि.– तेरा।

थाँरो – सर्व.– तुम सबका, आप सबका।

थाला – पु.– कुँए का वह स्थान जहाँ चरसी या ऐंजिन का पानी आकर गिरता है।

थाली बाजी – क्रि.वि.– लोक प्रथा में पुत्र जन्म पर थाल बजाकर सूचना दी जाती है।

थालो – पु. – कुँए की सिंचाई हेतु बनाया गया ऊपरी स्थान जहाँ पानी गिरता है, थाला।

थावर – वि.– स्थावर, सं.- शनिवार, शनिश्चर। थावर्‍यो हल वइग्यो।

(लाड़ली आपरे कारणे नत का थावर न्हाया हो राज। मा.लो. 456)

थाँ – सर्व. – तुम, आप।

थाँका – तुम्हारे, आपके।

थांकी – तुम्हारी, तुम्हारे ,तुम।

थांरो – तेरा, तेरी।
(छूट गयो रे छूट गयो रे थाँका धरम से छूट गयो रे। मा.लो. 497)

थाँपर – तुम पर, आप पर, तुम्हारे पर, आपके ऊपर।
(म्हारी बई से आड़ा बोलो थांपर आवे रीस। मा.लो. 529)

थाँसू – सर्व.– तुमसे।

थि/थी

थिगली – स्त्री.– पेबन्द, थेगली, कपड़े, चमड़े आदि का छेद बन्द करने के लिये ऊपर से लगाया जाने वाला टुकड़ा, चकती।

थिरकणो – क्रि –धीरे-धीरे नाचना।

थीं – सर्व.– आप, तुम सब।

थु/थू

थु–थु करणो – अव्य.– धिक्कारना।

थुमली-थामली – स्त्री.–स्तम्भ, थम्बा, दो मुँह वाला छोटा खंभा, सहारा।

थुरमो – स्त्री.– पानी की छागल, चमड़े का बना ठण्डे पानी का पात्र।

थुल–थुल – क्रि.वि.– मोटे पेट वाला।

थुल्ली – दलिया।
(लोंगा रा भात मरच की थुल्ली। मा.लो. 147)

थू – अव्य – थूँकने की आवाज। सर्व.– तू, तुम।

थू-थू करे – अव्य– बुरा कहे, धिक्कारे।

थूँक – वि.– मुँह की राल।

थूँकतड़ा दन – थूकते-थूकते दिन निकल गया, बार-बार थूकने की इच्छा होना।
(थूंकतड़ा दन जावा लागो।)

थूँका-थूँकी – क्रि.वि.– थूकना।

थूँकेड़ा उड़ावणा – न.ब.व.– जबानी लड़ाई, बोला चाली, लड़ाई-झगड़ा, बेकार की बातें करना।

थूर – सं.– काँटेदार पौधा, थूहर।

थूरना, थूरनो – क्रि.वि.– अनिच्छापूर्वक भोजन करना, जबरन खाना।

थूली, थूल्ली – स्त्री.– गेहूँ का दलिया, लापसी।

थे/थो

थें – तुम।

थेंई – सर्व.– तुम सब ही।

थेंगरो – वि.– पेबन्द, थगला, चकती।

थेपड़ा – वि.– हथेली के देकर आकार, बनाना।

थेपणा थेपी – क्रि.वि.– स्थापना की, कार्यारम्भ किया।

थेलो – पु.– बड़ा थेला, बड़ा झोला, बोरा।

थो – था।
(आज दसेरा को मोरत थो। मो. वे. 79)

थोक – वि.– इकट्ठा

थोक भाव – वि.– इकट्ठा भाव, इकट्ठी वस्तु का भाव।

थोड़ा–घणा – क्रि.वि.– थोड़े बहुत, कम- ज्यादा।

थोथरो, थोथरी – वि.– मुँह के लिये विशेषण, चढ़ा हुआ या सूजा हुआ मुँह, फूला हुआ मुँह।

थोड़ाक – वि.– थोड़ा सा, जरा-सा, स्वल्प।

थोबड़ो – फूला हुआ मुँह।

थोपनो – पु.– मत्थे मढ़ना, झूठा अभियोग लगाना।

थोबणो – क्रि. – रोकना, रुकवाना, सहारा, टेका, आश्रय,अटकाना, ठहरो।
(घड़ियक घोड़ला थोबजो रे सायर बनड़ा। मा.लो. 423)

द – त वर्ग का व्यंजन।

दई – क्रि.– दी।

दई अऊँ – क्रि.– दे आऊँ।

दईं – स्त्री.– दधि, दही। (लुट लुट दईं खाय बिरज में। मा. लो. 679)

दइयाँ – स्त्री.– गाड़ी का धरा उठाने के आधारदण्ड, टेका।

दऊँ – क्रि. – दूँ, दे दूँ।

दकड़्यो – पु.– पीतल का ऊँचे किनारे का बड़ा बर्तन।

दक्खण – स्त्री.– दक्षिण दिशा।

दखद्यो – क्रि.– दुःख दिया, तकलीफ दी।

दख्ख – वि.– दुःख।

दखणाँ – स्त्री.– दक्षिणा, भेंट।

दखणी – वि.– दक्षिणी।

दखणी चीर – क्रि.वि.– दक्षिण भारत का बना वस्त्र। (जेठानी को दखणी रा चीर, के वा मेरी गोठणीयाँ। मा.लो.52)

दखल – पु.– हस्तक्षेप।

दगड़ – पु.– भाटा, पत्थर। दगड़ चौथ– गणेश चतुर्थी, इस दिन रात में चाँद देखने से चोरी का आरोप न लगे इसलिये दूसरों के घरों के खपरेलों पर पत्थर फेंकते हैं।

दंग – वि.फा.– विस्मित, चकित।

दंगई – वि.– दंगा करने वाला, उपद्रवी।

दगदगो – पु. – डर, भय, आशंका, सन्देह।

दगणो – क्रि.– दागा या चिह्नित किया जाना।

दंगल – पु.फा.– पहलवानों की कुश्ती।

दगाबाज – वि.– धोखेबाज, छली।

दगा – पु.– लड्डू बनाने के लिए आटे का गोल पिंड बनाना।

दगी – क्रि.वि.– धोखा, छल-कपट।

दंगो – पु.– उपद्रव।

दगो – क्रि.– धोखा।

दचीकणो – क्रि.– नीचे गिरा देना, भड़ीक देना, पटकना।

दंड – पु.– दण्ड, डाँड, अर्थदण्ड, लाठी, डण्डा, डण्डे की तरह कोई चीज जैसे भुजदण्ड।

दंड भरणो – पु.– दूसरे का नुकसान, धन देकर पूरा करना।

दंड सेणो – पु.– हानि या घाटा सहना।

दंडोत करणो – पु. – सामने झुकना, प्रणाम करना।

दंडकवन – पु. – दण्डकारण्य।

दंड परनाम – पु. – दण्डवत प्रणाम, सादर अभिवादन।

दंड पेलणो – क्रि. – दण्ड बैठक लगाना।

दड़बे दाखिल – क्रि.वि.– अपने-अपने स्थान पर चले जाना, अपना स्थान ग्रहण करना, जहाँ से आया वहीं पहुँचा देना, घर में प्रविष्ट होना।

दड़बड़ दौड़ – क्रि.वि. – शीघ्रता या त्वरित गति से दौड़ना।

दड़–दाँदड़ – क्रि.वि.– उबड़-खाबड़ स्थान।

दड़–दड़ – क्रि.वि.– दनादन, शीघ्रता से।

दड़ियल – वि.– दाढ़ी वाला।

दड़ी – चीथड़े से बनाई हुई गेंद, छोटी गेंद, गोला।

दंडी – पु.– वह जो दंड धारण करता हो, संन्यासी।

दड़ो – पु.– जमीन का टुकड़ा, बड़ा पत्थर, मोटा आदमी, बड़ी गेंद।

दंडोत – पु.– दण्ड के समान सीधे पृथ्वी पर लेटकर किया जाने वाला नमस्कार।

दंत – पु.– पशु आहार, चंदीदाना, दत-दाना।

दंतकड़ी-भिड़ईगी – क्रि.वि.– दाँत भिच गये।

दंताल्यो – पु.वि. – बड़कदंता, बड़े दाँत वाला, दंतारी, खारस्यो।

दंतोन – स्त्री.– दाँत माँजना, दाँत साफ करना, दाँत साफ करने का ब्रश या नीम या

बबूल की टहनी, दातून।

दद्दो – वि.– देना।

दद्दू – वि.– किसी वयोवृद्ध के लिये विशेषण।

दन – पु.– दिन।

दन दी वाण – क्रि. वि.– बाल सूर्य का उदय होना।

दनन्– दनन् – क्रि.वि.– दनदनाते हुए।

दनरिया – पु.– दिन रहा, कई दिनों तक रहे।

दनलटियो, दनलट्यो– क्रि.वि. – दिन ढलना, सन्ध्या का समय हुआ।

दनवाँ – पु.– सूर्योदय।

दनाँत्याँ – क्रि.वि.– दिन अस्त होने पर, सूर्यास्त के समय।

दनादन – वि.– बंदूक की गोली चलने की आवाज या ध्वनि, दनदनाते हुए।

दनूँगाँ – पु.– प्रातःकाल हेने पर।

दपटणो – क्रि.– डाँटना या डपटना।

दपेटी – स्त्री.– दुपट्टा, अंगोछा।

दफन – पु.– मृतक को जमीन में गाड़ना।

दफड़ो – पु.– एक वाद्य, बाजा।

दफ्तर – पु. फा.– कार्यालय, बस्ता।

दफा होणो – क्रि.– निकलना, चले जाना, भाग जाना।

दफोर – दोपहर, मध्याह्न, दूसरा पहर। (सोय सवेरे उठे दफोरे। मा.लो. 546)

दफोरी – स्त्री.– दोपहर का समय।

दफोऱ्या – दोपहर में किया जाने वाला अल्पाहार, दूसरे पहर का भोजन।

दब – वि.– दबाव, डर, भय, दबदबा।

दबड़के – क्रि.– दबा करके, छिपा करके, चुप करके, घुड़का करके।

दबणो – क्रि.– दबना, झुकना।

दबरी – स्त्री.– दब रही।

दब–दबी – क्रि.पु.– धाक, रोब, आतंक, रोब, रोबदाब, रुआब।

दब्योड़ो – पु.– दबा हुआ, डरा हुआ।

दबोचणो – क्रि.– दबाना, नीचे गिराना।

दबोड़ो – क्रि.– दबाना।

दम – ताकत या बल। (दम खींचणो-श्वास लेना। दम तोड़णो-मर जाना, श्वाँस टूटना। दम फूलणो - अधिक परिश्रम से श्वाँस का जोर-जोर से चलना।)

दम घुटणो – मुहा.– श्वाँस रूकना।

दम मारनो – मुहा.– दम लगाना।

दम लेणो – श्वाँस व्यवस्थित करना।

दम लगाणो – गांजे, तमाखू आदि का धुआँ अन्दर खींचना।

दमकणो – क्रि.– चमकना, प्रकाशित होना।

दमकल – स्त्री.– जलगाड़ी।

दम्पक – वि.– फूल जाना।

दमखम – वि.पु.– दृढ़ता, मजबूती।

दमड़ी – स्त्री.– पैसे का चौथा भाग, छदाम। (म्हारा ठोडू काका आदी दमड़ी रो लाजे हिंगलू। मा.लो. 575)

दमणी – स्त्री.– छोटी गाड़ी।

दमदार – वि.– जिसमें पूरा दम या जीवन शक्ति हो, मजबूत, दृढ़।

दम-दमा – वि. – श्वास या दमे की बीमारी।

दमदिलायो – क्रि. – दिलासा दिया, धैर्य बँधाया।

दम साध्यो – क्रि.– श्वास रोकी, हिम्मत करी।

दम्पट्टी – स्त्री.– झाँसे में आना, झाँसा देना, दम बुत्ता, चमका देना।

दमामी – पु.– ढोली, ढोल बजाने वाली जाति।

दमेंत कुँवर – स्त्री. – दमयन्ती कुँवरी, राजा नल की पत्नी।

दमेन्ती – स्त्री.– दमयन्ती, विदर्भ के राजा भीमसेन की कन्या जो राजा नल को ब्याही थी।

दमायो – पु.– नगाड़ा, बड़ा ढोल।

दमो – पु. फा.– एक रोग जिसमें साँस बहुत कष्टपूर्वक और कुछ जोर से चलती है।

दया – वि.– करुणा, तरस, अनुकम्पा, कृपा। (दया बालू पूत हो। मा. लो. 685)

दयाथो – दे आया, दे दिया, देकर आ गया। (नणदल घर दयायो घूघरी । मा. लो.49)

दयालु – वि.– कृपालु।

दयावणो – जिसे देखकर दया उत्पन्न हो, दयनीय, दया पात्र।

दयावंत – वि.– दयालु, मेहरबान।

द्यो – क्रि.– दिया।

दर – पु.– मुकाम, मूल्य, दरवाजा, गुफा, गुड्ढा, कंदरा, गुड्डा, बिल, दरार।

दरगा – सं. फा.– पीरों का स्थान, मकबरा।

दरखत – पु.– पेड़, झाड़।

दरखास – प्रार्थना पत्र।

दरजी – पु.– कपड़े सीने वाला, दर्जी। इन्दोर्या का दरजी ए सीव्यो ठीका (ठीक हारा मरूजी हो राज। मा. लो. पृ. 483)

दरजो – दर्जा, अधिकार, कोटि, कक्षा, श्रेणी, ओहदा, पद।

दरड़ – पु.– झरना, सोता।

दरद – पु.– तकलीफ, दर्द।

दरदरो – वि. – जो मोटा पीसा, दला या कूटा हुआ हो, मोटा चूर्ण।

दरनो – सं. स्त्री. – दलिया, दरदरा आटा।

दरपण – न. – दर्पण, आईना, शीशा, काँच।

दरपणो – क्रि.– डरना, भयग्रस्त होना।

दरबो – पु.– मुर्गे-मुर्गियों का बंद स्थान विशेष, पक्षियों के लिये बनाया गया पींजरा विशेष।

दरबान – पु.– द्वारपाल, ड्योढ़ीवान।

दर बदर – क्रि.वि.– बेघरबार हो जाना।

दरबार – पु.– राजसभा।

दरबारी – सभासद।

दरपण – पु.– शीशा, काँच।

दरम्यान – पु.फा.– मध्य बीच। क्रि.वि.– बीच, मध्य में।

दरवज्जो – पु.– दरवाजा, द्वार, फाटक, किंवाड़, कपाट।

दरवेस – पु. फा.– साधु, फकीर, पहुँचा हुआ व्यक्ति।

दरसण – पु.– दर्शन, देखना, तत्त्व ज्ञान। (राम थारे दरसन को। मा. लो. 683)

दरसणो – वि.– दिखाई देना।

दरसाणो – क्रि.– दिखाना, बताना, प्रकट करना।

दराँता, दराँती, दराँतो – पु.स्त्री.– हँसिया, घास-पात काटने का एक औजार।

दराज – वि.फा.– टेबल आदि का वह खाना जो बाहर खींचा जाता है।

दरार – स्त्री.– खाली जगह, सन्धि।

दरिया – वि.– बड़ा नद। (चीरा पेरो रे बना दरिया पार चलाँगा। मा.लो. 262)

दरियाई चीरा – समुद्र की लहरों के समान पगड़ी, समुद्र पार से नौका द्वारा आयात। (दरियाई चीरा म्हारा सुसरा सास लावजोनी। मा.लो. 344)

दरियाव – पु.– नदी, समुद्र।

दरियादिल – वि.– उदार हृदय वाला।

दरिद्दर – वि.– गरीब, कंगाल।

दरिद्र नारायण – वि.– धनहीन, कंगाल।

दरी – सखी, सहेली, मोटे सूत से बनी हुई सतरंजी, दरी, फर्श। (कावो दरी कँई व्यो। मो.वे. 53)

दरीखानो – पु.– बैठने का कक्ष।

दरोगो – पु.– दरोगा, पुलिस का बड़ा सिपाही, थानेदार।

दरो, दर्रो – पु.फा.– दो पहाड़ों के मध्य की जगह या संकरा मार्ग, राजस्थान का एक गाँव।

दरोब, दरोबड़ी – पु. स्त्री.– दूर्वा, दूब।

दल उलट्यो – बारात लेकर जाना, सेना, समूह।

(सामी साँज रो दल उलट्यो बनो बनी परणवा जाय रे। मा.लो. 206)

दलदार – वि.– गूदेदार, मोटी परत का।

दलणो – क्रि.– मोटा पीसना।

दल–बादल – पु. – भारी सेना।

दल्यो – पु. – मोटा या दरदरा पिसा अन्न।

दलदूवाँ – क्रि.– टुकड़े कर दूँगा, परेशान कर दूँगा।

दलान – पु.– दालान।

दलाल – पु. – दलाली करने वाला।

दलाली – वि. – व्यापार में मध्यस्तता करवाने वाला, आढ़त।

दलित – वि.– रोंधा हुआ, कुचला हुआ, शोषित।

दवई – दवाई।

दवड़ी – स्त्री. क्रि. – दोड़ी।

दवा दारू – क्रि.वि.– दवाई।

दवाखानो – घु.– औषधालय,चिकित्सालय।

दवा देगा – स्त्री.– दुवा देगा।

दवात – स्त्री.– मासपात्र, स्याही रखने का पात्र।

दसखत – पु.– हस्ताक्षर।

दसनामी – पु.– संन्यासियों के दस भेद, तीर्थ, आश्रम, वन, सागर, अरण्य, गिरि, पर्वत, सरस्वती, भारती, पुरी।

दस्सम – वि.– दसवीं तिथि।

दसरथ – पु.– राजा दशरथ, राम के पिता।

दसमी – वि.– दसवीं तिथि, स्त्री. –दूध में मले गये आटे से बनाई हुई रोटी।

दससीस – पु.– रावण।

दस्त – पु.– पतला पाखाना।

दस्तो – पु.– चौबीस कागजों का समूह या दस्ता।

दस्तावेज – पु.– प्रलेख।

दस्तावर – वि.– टट्टी या पाखाना लगाने वाली रेचक वस्तु जैसे एरंडबीज, थूहर का दूध, हरड़ आदि।

दस्तूर – वि.– रीति रिवाज, प्रथा, लिपिक का नेग।

दसा – स्त्री.– अवस्था, हालत, मालवी नारियों द्वारा चैत्र शुक्ल पक्ष की दसवीं तिथि को मनाया जाने वाला लौकिक व्रत पर्व।

दसामाता – स्त्री.– दशा की देवी, लोक देवी।

दसेरो – न.– दशहरा, दस सेर का तोल। (आज दसेरा को मोरत थो। मो. वे. 74)

दहई – स्त्री.– दस का मान या भाव।

दहसत – वि.– डर, आशंका।

दहाड़ – क्रि.– गर्जना, घोर आवाज या ध्वनि।

दहेज – पु.– दायजा,दिया जाने वाला दहेज या उपहार।

दंदोड़ा – दाफड़, मच्छर आदि के काटने से चमड़ी में होने वाला चकता, पित्ती उछलना।

दाई – स्त्री.– धाय, धात्री, जच्चा, जनवाने वाली स्त्री।

दाख – स्त्री.– सूखे हुए अँगूर, मुनक्का, किशमिश।

दाखल – वि. फा.– प्रविष्ट, घुसा या पैठा हुआ।

दाखलो – पु.– प्रवेश, भर्ती, प्रमाण-पत्र।

दाग – पु. – दाह संस्कार, धब्बा, निशान, चिह्न।
(बामण्या दाल ओजगी ने बाटी लागो दाग। मा.लो. 559)

दा

दागणो – क्रि.– जलाना, किसी प्रकार का दाग या चिह्न लगाना।

दागिना – पु. – वस्तु, गहना या घरेलू सामग्री के पृथक्-पृथक् बँधे हुए गट्ठर।

दागाँ – क्रि.ब.व.– देंगे।

दाँगी – सं.–मालवा में बसने वाली एक जाति।

दागी – वि. – कलंकित, लांछित, जिस पर दाग या धब्बा लगा हो।

दाजणो – जलना, जला हुआ।

(सुसराजी दाजे म्हारो चन्द्रबदन दोई होट। मा.लो. 42)

दाड़म – पु. – अनार पेड़ और फल।

दाड़ – स्त्री.– दाड़।

दाड़की – दैनिक मजदूरी।

दाड़क्यो – मजदूर, नौकर-चाकर,बैलदार।

दाड़ी – स्त्री.– दाड़ी।

दाँडी – स्त्री.– डंडी, पालकी, अलगनी, लम्बी सीधी लकड़ी।

दाँडी मारणो – क्रि. वि.– तोलते समय तराजू की डंडी मारना, कम या अधिक तौल करना।

दाण – पु.– समय, बार।

दाणका – पु.– दिन की, समय की।

दाणाँ – पु.– अनाज के कण, मालवी में अफीम के पोस्ता दाने, बुजुर्ग या वयोवृद्ध व्यक्ति का विशेषण।

दाणा पानी – पु.– अन्न जल।

दाणा माँगण्यो – वि.– भिक्षावृत्ति करने वाला।

दाणेदार – वि.– जिसमें या जिस पर दाने या रवे हों।

दाँत – पु.– मुँह मे रहने वाले दाँत।

दाँतकड़ी – मजाक, लोकनिन्दा।

दातण – स्त्री.– दंत मंजन, दतून, दाँत माँजना। (केसरिया ओ दातण करलो नी। मा.लो. 446)

दाँतलो, दाँतर्यो – वि.– बड़क दन्ता, बड़े-बड़े दाँतों वाला, सं. - हँसिया, दराँती।

दाँताकीच्ची – कलह, झगड़ा, बोलचाल, विवाद, दाँत भिड़ जाना, दाँत नहीं खुलना।

दाँत खोतरणो – क्रि.– दाँतों को कुरेदना, दाँतों को सलाई से खुतरना या उसमें छिपे अन्न कण निकालना। (दाँत्या पीसणो। मुहा.- दाँत किटकिटाना, क्रोध प्रकट करना।)

दाँत पाड़णो – दाँत उखाड़ना, क्रोध में ऐसे शब्द कहना।

दाँत बिचकाणो – दाँत निपोरना, उपहास करना।

'दा'

दाँत काड़ीर्‌यो – क्रि.– हँस रहा, प्रसन्न हो रहा।

दाँतरो – सं.– हँसिया, दराँता।

दाँतर्यो – मुँह से निकले या बड़े दाँत वाला।

दाता – पु.– पिता के लिये सम्बोधन, वि. दानशील, देने वाला, वह जो प्रायः दान देता हो।

दाँता कलपा – पु.– कुलपनी या करपा के औजार, कृषि यंत्र, बक्खर में लगाये जाने वाले लोहे के डंडे जिसमें पास या फाल वाली पत्ती लगती है।

दाँताखीची – ऊपर-नीचे की दंतपंक्ति फँस जाना।

दाँता पास – क्रि. वि.– डोरे-बक्खर लोहे के डंडे और चौड़े फाल की पत्ती कृषि के लिये उपयोगी उपकरण।

दाँती – स्त्री.– हँसिया, दराँती, दाँतेदार कंघी।

दातुन झारी, दातण झारी –स्त्री.– दंत मंजन एवं पानी की झारी।

दाँत्या तल्ड़इर्‌यो – क्रि.वि.– मरा पड़ा, दाँत बाहर निकले हुए।

दातरी – स्त्री.– मिट्टी की थाली।

दाँतेड़ो – हँसिया।

दाथरी – स्त्री.– मिट्टी की थाली।

दाँथलो – पु.ए.व.– हँसिया।

दाद – पु.– चर्म रोग, वाहवाही।

दाद देणो – वि.– वाहवाही करना, दाद देना, प्रशंसा करना।

दादा – पु.– भाई या पिता के लिये मालवी सम्बोधन, बड़ों के लिए आदर सूचक शब्द, वि.- दादागिरी करने वाला। (दादा बाबा करणो– मुहा. -चापलूसी करना।)

दादागिरी – गुंडागिरी।

दानकी – स्त्री.– मजदूरी, पारिश्रमिक।

दानक्यो लाड़ो – पु.– मजदूर वर्ग का दूल्हा, पारिश्रमिक तय करके बनाया गया दूल्हा या भाड़े का लाड़ा, किराये का दूल्हा।

दान देणो – क्रि.– दान देना।

'दा'

दान धरम – क्रि. वि.– पुण्य प्राप्ति के लिये दान देना।

दान पत्तर – पु.– दान पत्र।

दानवीर – पु.– वह जो प्रायः बहुत अधिक दान देता हो, दानी।

दानी को मूत – वि. –एक मालवी गाली, व्यंग्य।

दानो – वि.– बुढ़ापा, वृद्धावस्था, वृद्ध, बूढ़ा।

दापो – क्रि.वि.– वैवाहिक रस्में पूर्ण करवाने वाले ब्राह्मण, नाई, ढोली आदि जातियों के लोगों को दिया जाने वाला पारिश्रमिक।

दाब – पु.– दबाव, वजन, भार, दूर्वा।

दाबणो – क्रि.– दबाना, गाड़ना, परास्त करना।
(चिमटी दाब पतासा फोडूँ, फेर बोले तो कमर तोडूँ, खिचड़ी रंदावां। मा.लो. 434)

दाव दपट – वि.– डाँट फटकार।

दाबद्यो – क्रि.– दबा दिया, छिपा दिया।

दाबा छापी – क्रि.वि.– घूँस देकर चुप करना, दबाव देकर छिपाना।

दाबीली – स्त्री – दबाली, छिपा ली, गुप्त रखी

दाबी रख्यो – पु.– दबा रखा, छिपा रखा।

दाम – पु.– धन, मूल्य, रूपया पैसा, दाँव, बाजी, चाल।

दामण – अनाज के भुट्टों पर बैल चलाना।

दामणी – स्त्री.–अनाज के भुट्टों पर बैल चलाते समय उपयोग में ली जाने वाली रस्सी।

दामणो – बन्धन, घोड़े के पैरों को बाँधना, पशुओं के पैर बाँ धने की रस्सी का टुकड़ा, नेतरा, बँधन में डालने वाला, कैद करना।

दामद्यो – क्रि.–अपनी पारी दी, अपने हिस्से में आया दाँव दिया।

दाय आणो – पसन्द आना, अच्छा लगना, मर्जी, इच्छा, अभिरुचि।
(घोड़ले चड़ी ने बाई रा राईवर आया वी म्हारी कमला बाई रे दाये आया। मा.लो. 212)

दायचो – पु.– दहेज।
(पाँचमों फेरो फरे रे गरास्यो फुफाजी देसी बई ने दायजो। मा.लो. 418)

दायर – वि. – अभियोग आदि लगाना।

दायरो – पु.– गोल घेरा, कुंडल।

दायों – वि.– दाहिना।

दायो, दाया – वि.– परेशानी, बोझ, झमेला।

दार – दाल, दलहनों को दलकर बनाई गई दाल।
(रुपया रुपया म्हारी दार। मा.लो. 616)

दारावती – स्त्री.– द्वारका।

दारी – स्त्री.– दासी, लौंडी, वैश्या, दारिका, स्त्री द्वारा स्त्री को गाली।
(दारी में तो भेराजी वाली ने वरजी थी। मा.लो. 449)

दारू को काम – क्रि.– आतिशबाजी।

दारू – पु.– मद्य, शराब, बारूद।

दारू कुट्टो, दारूड्यो– पु.– शराबी।

दारे अड़िया – क्रि. वि.– द्वार पर अड़े।

दारो मदार – पु.– आश्रय, ठहराव, निर्भरता।

दाल – स्त्री.– दलहनों को दलकर बनाई गई दाल।

दाल ओजीगी – दाल जल गई, जलने की गंध आने लगी, ज्यादा आँच लगने से दाल जलना।
(बामण्या दाल ओजगी रे। मा.लो. 559)

दाल्यो – पु.– दाल परोसने के लिये मिट्टी की हंडिया के एक ओर छिद्र किया पात्र।

दालदर – वि.पु.– दरिद्रता, निर्धनता, गरीबी।

दालिद्दर, दालद्री – वि.–दलिद्री, धनहीन,अकर्मण्य, जिसके पास रुपया पैसा न हो।

दावत – स्त्री.– भोज, बुलावा, निमंत्रण, आमंत्रण।

दावदो – क्रि.– दाम दो, बाजी लौटाओ।

दावेदार – पु.– दावा करने वाला, अपना हक जताने वाला।

दावेलो – छल कपट, सुयोग, चालाकी, मौका, अवसर, दाव, मौका देखकर आक्रमण करना।

दावो – वि.– दावा, अभियोग।

दावो तोड्णो – क्रि.वि.– समझौता कराना।

दास – पु.सं.– गुलाम, सेवक, दासता, अपनी सेवा कराने के लिये मूल्य देकर लिया हुआ व्यक्ति, चाकर।

दास्तान – वि.– हालचाल।

दासी पुत्तर – पु.– दासी पुत्र, अनौरस संतति।

दासी – पु.– वह पट्टी, फर्सी या पत्थर जो दरवाजे की चौखट के ऊपर तथा नीचे रखा जाता है, दास नारी।

दाह – वि.– जलना, संताप।

दाह करम – पु. – दागना, दाह संस्कार करना।

दि

दिखई – स्त्री.– दिखलाई, मालवी लोक प्रथा में दुल्हन का प्रथम बार मुँह देखा जाता है तब उसे उपहार स्वरूप रुपया गहनादि भेंट किया जाता है।

दिखऊ – स्त्री.– दिखावटी, बनावटी।

दिखावणी – स्त्री.– नव वधू का प्रथम बार मुँह देखने पर दी जाने वाली भेंट, एक लौकिक रस्म।

दिखावो – वि. – आडम्बर, ढोंग, बनावटी-पन, दिखावा, प्रदर्शन।

दिग् विजयी – वि.– दसों दशाओं को जीतने वाला।

दिन आथमनो – क्रि. वि. – सूर्यास्त का समय, संध्या।

दिमागदार – वि.– अच्छी बुद्धि वाला।

दियो – क्रि.– दिया, सं. - दीपक।

दिलगेरी – चिंतित, उदास, चुपचाप, गमगीन। (बना क्यों रे खड़ो रे दिलगेरी से। मा.लो. 390)

दिलड़ा – पु.– दिल, हृदय, वक्ष।

दिल दरयाव – जो बड़े हृदय वाला हो, उदार प्रवृत्ति का, दानशील, गम्भीर, अच्छे मन वाला।

दिलासो – पु. – आश्वासन, तसल्ली, ढाढस।

दिल्लगी – स्त्री.– दिल बहलाने या लगाने की क्रिया या भाव, परिहास।

दिली – दिल्ली, देहली शहर, इतिहास प्रसिद्ध भारत की राजधानी का नगर। (गेंदाजी दिली रा दरवाजे नोबत वाजे राज। मा.लो. पृ. 566)

दिवड़लो – पु.– दीपक।

दिवली – स्त्री.– छोटा दीपक।

दिवलो – पु.– दीपक, दिया।

दिवाड़ी – क्रि.– दिलवाई।

दिवाण – पु.– मुनीम, सचिव, प्रधानमंत्री।

दिवाली – स्त्री.– दीपावली, दीपोत्सव।

दिवालो – वि.– घर की सम्पत्ति का नष्ट हो जाना।

दिवाल्यो – वि.– जिसका दिवाला निकल गया हो, कंगाल।

दिवाल दास्यो – वि.– जिसका दिवाला निकल गया हो, कंगाल।

दिवासो – हरियाली अमावस, श्रावण महींने की अमावस। उस दिन उज्जैन में अनन्तनारायण के दर्शन किये जाते हैं। मक्का व ज्वार की धानी चढ़ाई जाती है। बच्चे धानी मुक्का खेलते हैं। (राखी दिवासो अई गयो। (मा.लो. 613)

दिसा – दिशा, दिशाओं के कोण।

दिसा जंगल – जंगल में शौच जाना।

दिसावर – पु.– विदेश, परदेश।

दिसासूल – पु.– दिशा शूल।

दिसे – क्रि.– दीखे, दिखाई दे।

दीखणो – क्रि. – दिखना, दिखाई देना, देखा, देखा हुआ, दिख रहा।

दीतवार – पु.– रविवार, इतवार।

दीदा – क्रि.– दिया, दे दिया।

दीदार – पु. – दर्शन, देखना।

दीदो – पु.– दे दिया, दे चुका।

दीधा – क्रि.– दिया।

दीन – वि.– गरीब, नम्र।

दीनबंध – पु.– परमात्मा, दीनों का सहायक।

दीना – क्रि.– दिया, दे दिया।

दीनानाथ – पु.– ईश्वर, स्वामी।

दीप – क्रि.– दीपक, दीया।

दीप की लो – क्रि. वि.– दीपक की बाती।

दीप दान – पु.– देवता के सामने दीपक का दान करना, दीप प्रज्ज्वलित करना।

दी

दीपमाला – स्त्री.– दीपमालिका, दीपों की पंक्ति।

दीमक – स्त्री.– उद्दी, वाल्मीक।

दीयड़ी – स्त्री.–पुत्री।
(गोरी बड़ा भई की दीय । मा. लो.616)

दीवड़ी – दीये, दीपक, दीया, निरांजनी, छोटा दीया, छोटा दीपक।
(म्हारा तो घर माय दीवड़ी। मा. लो. 606)

दीया सलई – स्त्री.– माचिस की तिली, काड़ी, सलाई, दीप शलाका।

दीयो – पु. – दीपक।

दीवट – स्त्री. – दीपक की बाती, बत्ती।

दीवड़ – स्त्री. – एक विषैला सर्प।

दीवड़ी – वि. – सफेद-काला मिश्रित रंग वाली वस्तु, पशु आदि।

दीवलो – पु. – दीपक।
(कुल को दीवलो। मा.लो. 467)

दीवलो हंजोयो – क्रि. – दीप जलाया, दीपक प्रज्जवलित किया।

दीवान – प्रधानामात्य, राजा के दरबार में दीवान का पद, दीवान का काम, पतंग।
(तू तो राज दीवान जी रा कुकड़ा नचीत बोल। (मा.लो. 438)

दीवानी – वि. – दीवान का काम, दीवानी अदालत, पागल।
(रीसे बलता लोग म्हारे हरस दीवानी केवे। मो.वे. 80)

दीवालो – वि. – सम्पत्ति का नष्ट होना, दिवाला निकलना।

दीवा बल्या – क्रि. वि. – दीपक जले।

दीवो बूजी गयो – क्रि.वि. – दीपक बुझ गया, दीपक बन्द हो गया।

दीवो संजोवो – क्रि.वि. – दीपक जलाओ ।

दी दियो – क्रि. – दिया, दे दिया।

दीवो – पु. – दीपक, दीया।

दीसे – क्रि. – दिखाई देवे।

दु

दु – वि. – दो का संक्षिप्त रूप।

दुअन्नी – स्त्री.वि. – दो आना।

दुआ – वि. – प्रार्थना, पुकार।

दुआँ – क्रि. – दोहन करें , दुहें।

दुआरका का नाथ – द्वारकाधीश, श्रीकृष्ण।

दुई – वि. – दो, द्वि।

दुकड्यो – कागज की कुट्टी तैयार करके जंघाल (गंगाल) नुमा दुकड्ये बनाए जाते हैं। वह धान, आटा आदि भरने के काम में लिये जाते हैं और मजबूत होते हैं।

दुक्ख्यारो – वि. – दुःखी।

दुकान – क्रि. – दुकान।

दुकाल – वि. – अकाल, दुर्भिक्ष।

दुकेलो – वि. – दो होना।

दुखड़ली – वि. – दुःख, तकलीफ।

दुखड़ो – वि. – दुःख, तकलीफ, कष्ट।

दुखणो – क्रि. – पीड़ा, दर्द होना।

दुख पोंचाणो – क्रि. – दुःख देना, कष्ट देना।

दुख पोंचावे – क्रि.वि. – पीड़ा देवे, दुःख देवे, कष्ट देवे।

दुजभांत – भेदभाव, भेद रखना, दुराव, भेदभाव रखना।

दुणा – दुगना, दो गुना, दुना, दोहरा।
(गाल गावाँ रीत की ने दुणा करस्यां लाड़। मा.लो.529)

दुणा लाड़ – दुगना प्यार, दोगुना लाड़, दुगना स्नेह, अति दुलार, बहुत प्यारा।
(माता रा दुणा दुणा लाड़। मा.लो.712)

दुतरफा – वि. – दोनों ओर से।

दुतो – चुगलखोर, इधर से उधर बात करने वाला, झगड़ा कराने वाला, कुटनी, दूत।
(सासु सपूता नणदल दूता, दूता ने बायर काड़ो। मा.लो. 238)

दुदा परवालूं पांय – दूध से पैर धोना।
(भेंस दुवाडूँ साजन बाखड़ी हो सैंया दुदा परवालूँ पांय। मा. लो.141)

दुद्या – दुध, मावा, आकाशी रंग, दुदिया रंग, नीला रंग।
(मालीड़ा रा बेटा थारी दुकानाँ समाल मारुणी मंगावे दुद्या पेड़ा। मा.लो. 522)

दुँधरो – बड़े पेट वाला गणपती, गणेश, गजानन्द, लम्बोदर।

दुधड़लो – क्रि.वि. – दूध।

दूधारी – वि. – दोहरी धारवाला खाँडा, दुधारी तलवार, खड्ग।

दुधारू – वि. – दूध देने वाला पशु।

दुधालू – वि. – सफेद अरबी के पत्ते, दूध देने वाला पशु।

दुधिया भाँग – स्त्री. – दूध में छनी हुई भंग।

दुनाली – स्त्री.– दो नाल वाली, बन्दूक।

दुनिया – संसार, सारा जगत, विश्व।
(इन्दरजी दुनिया में होवे सुकाल। मा.लो. 615)

दुफेर्‍याँ – स्त्री. – दोपहरी में।

दुफेर – स्त्री. – दोपहरी, मध्याह्न, दो फेर वाली बन्दूक।

दुबलो – वि.– कमजोर, अशक्त, कृशकाय।

दुबारा – वि. – दो बार, फिर से, शराब की एक किस्म।

दुबारो – पीछे का द्वार।

दुमड़ी – तोंद, पूँछ।

दुम दबाणो – वि. – पूँछ दबाना, पिछवाड़ा।

दुरग – पु. – दुर्ग, किला।

दुरगण – वि. – दुर्गुण, बुरी आदतें।

दुरगत – वि. – बुरी गति, बुरी हालत, बुरी दशा।

दुरंगी – स्त्री.वि. – दो रंग का, दो रंग वाला, दो मुहा, दोगला, घड़ी की गति।

दुरदन – वि. – बुरे दिन, बुरी साइत, बुरी घड़ी, बुरा समय, बादल वाला दिन।

दुरगा – स्त्री. – काली, भवानी, रणचण्डी आदि देवियाँ, नौ वर्ष की कन्या।

दुरगा उत्सव – पु. – दुर्गा देवी के नाम पर किया जाने वाला नवरात्र का उत्सव, गरबा।

दुरजण – वि. – दुष्ट व्यक्ति, बुरा व्यक्ति।

दुरलभ – वि. – कठिन, कठिनाई से प्राप्त होने वाली वस्तु।

दुराचारणी – वि.स्त्री. – दुराचारिणी, दुश्चरित्र स्त्री, बुरे आचार-विचार वाली।

दुराचारी – पु.वि. – बुरे आचार–विचार वाला मनुष्य।

दुस्ट – पु. – बुरा, दुष्ट।

दुलइया – बना, दूल्हा, पति, लोकगीतों का नायक।
(लाडली पुछे सुनो रे दुलइयाँ तो

कायरे कारण आया हो राज। (मा. लो. 374)

दुलई – स्त्री. – रजाई, दुलाई, ओढ़ने का लिहाफ।

दुल्लड – वि. – दो लड़ों वाली माला।

दुल्हण – स्त्री. – नववधू, दुलहिन।

दुल्हा – पु. – दूल्हा, वर।

दुवा – स्त्री. – प्रार्थना।

दुवाँ – क्रि. – दूध दुहने की क्रिया या भाव, दुहें।

दुवापर – पु. – द्वापर।

दुवार – पु. – दरवाजा, फाटक।

दुवे – क्रि. – दुहने का कार्य करे।

दुसकरम – वि. – दुष्कर्म, बुरे काम।

दुसमन – न. – शत्रु, बेरी, दुश्मन। (दुश्मन माथे चढ़ी गया। मो. वे.37)

दुसमणी – स्त्री.वि. – दुश्मनी, शत्रुता, बैर।

दुहई देणो – दुहाई देना, अपने बचाव के लिये किसी को पुकारना।

दुहइयो – वि. – दूध दुहने वाला।

दुहरई – क्रि. – दुहरा करके, पुनरावृत्ति करके।

दुहवार – वि. – दो बार सवा सेर, ढाई सेर।

दुहरायो – क्रि. – दुहराया, पुनरावृत्ति की।

दुहाय लो – क्रि. – दुहने का कार्य करवा लो।

दुकान – पु. – दुकान, वह स्थान जहाँ घर किराना वस्तुएँ मिलती हैं।

दुकानदार – पु. – दुकान चलाने वाला, व्यापारी।

दू

दूज – न. – पक्ष का दूसरा दिन, द्वितीया यम द्वितीया, भाई दूज, बीज। (पड़वा भी दूज है। मो.वे.80)

दूजी – स्त्री. – दूसरी।

दूजी आड़ी – दूसरी तरफ, दूसरी ओर, दाई ओर। (दूजी आड़ी मुगल पठान। मा.लो. 607)

दूजो – पु. – दूसरा।

दूड़्यो – क्रि. – दौड़ा, भागा।

दूणी – स्त्री. – दूध दोहने की मटकी, दोहनी, दुगनी। (म्हाँ मे ताकत दूणी है। मो. वे. 37)

दूणो – वि. – दुगना, द्विगुणित।

दूत – पु. – संदेशवाहक, हलकारो।

दूतड़ली – स्त्री. – दूती।

दूतारी – इधर की बात उधर करने वाली, चुगलखोर, चुगली करने वाली, झगड़ा करने वाली स्त्री, संदेशवाहक। (गेंदाजी सासू सपूता नणदल दूतारा। मा.लो. 566)

दूतारो – चुगलखोर, धूर्त, झगड़ा करने वाला। (बाईसा दूतारा ओजी नणदोईसा। मा.लो. 515)

दूती बुलई – स्त्री.– दूती या दासी बुलवाना।

दूँद/ दूँदड़ी – स्त्री. – नाभि, डूँठी, पेट के लिये एक विशेषण यथा दूँदाला गणपति, दूध।

दूद पूत – पुत्र-पौत्रादी की वंश बेली, गाय-भैंस, धन-धान्य, पुत्र-परिवार, जनधन।

दूँदा, दूँधाँ – वि. – दूध जैसा सफेद, दूध से।

दूदारु – दूधारु, दूध देने वाला पशु, गाय, भैंस, बकरी आदि। (हो देवजी जेसी म्हारी दूदारु गाय हो। मा.लो. 685)

दूदिया खोपरो – नरियल, कच्चा नारियल, दूद से भरी हुई चटक। (आँगण बवाओ दुदिया खोपरो। मा.लो. 13)

दूधकी सेड़ सरीखी – दूध की धारा के समान श्वेत और निर्मल।

दूधड़लो – पु. – दूध।

दूना – वि. – दुगना, दोनों पत्तों के बने हुए दोने।

दूब – स्त्री. – दूर्वा, हरी दरोब।

दूर – वि. – दूरी, विस्तार।

दूरबीन – स्त्री. – वह यंत्र जिससे दूर की वस्तुएँ पास में बड़ी और स्पष्ट दिखाई देती हैं।

दूरा दूरा रेणो – क्रि.वि. – दूर– दूर ही रहना।

दूरा धरी – वि. – दूर रखी हुई।

दूलो – पु. – दूल्हा, वर।

दूसरा भई से – दूसरा।

दूसरी जगा, दूसरी जगे – स्त्री. – दूसरा स्थान।

दूसित हुईगी – क्रि.वि. – खराब हो गई, विकृत हो गई, गंदी हो गई।

दूँ – वि. – देना, देता हूँ, दे रहा हूँ।

दे – पु. – शरीर बदन, तन, देह, देने का आदेश।

दे

देकची – स्त्री. – एक पात्र जिसमें दाल सब्जी आदि बनाई जाती है।

देके – दे करके।

देखई री – क्रि. – दिखाई दे रही, देखने में आ रही।

देखणो – देखना, विचार करना।

देखत भूली – क्रि. वि. – देखकर भी भूलने योग्य वस्तु, भूल भुलैया।

देख्यूँ – क्रि. – देखा।

देखूँ – क्रि. – देखता हुआ, अवलोकन करता हुआ।

देखाड़ो – क्रि. – दिखलाना, बतलाना दिखलाओ।

देखा देखी – क्रि.वि. – एक दूसरे को देखकर कार्य करना, होड़ा होड़ी।

देखो तो सई – क्रि.वि. – देख तो लो।

देगची – स्त्री. – दाल, सब्जी आदि बनाने का पात्र, छोटा पतीला।

देणो – क्रि. – देना, प्रदान करना, सौंपना, हवाले करना, प्रहार करना, ऋण, कर्जा। (काहु को लेणो ने मादु को देणो। मो.वे.54)

देत – दैत्य, राक्षस, असुर। (भोपाजी का माथा पे बड़ा देत की छाया। मो.वे. 56)

देनीय – वि. – दया के योग्य, दयनीय।

देफाड़ी – क्रि. – मार दी, मारा।

देबा सारू – क्रि. – मारने के लिये, देने के लिए।

देबा वालो – क्रि.पु. – देने वाला।

देबूकरे – क्रि.पु. – देता रहे, देता रहता है।

देयण – वि. – घोड़े घोड़ी की एब।

देर – विलम्ब।

देरख्या – क्रि. – दे रखे।

देर – स्त्री. –अधिक समय, अतिकाल।

देराड़ी – स्त्री. – जाति वंशगत इष्ट वस्तु यथा कोई वृक्ष, फल आदि।

देराणी – स्त्री. – देवरानी, देवर की पत्नी।

देव – पु. – देवता, ईश्वर, भाग्य, देवनारायण। (ओ देवजी तमारा मंदर को कईं देखणो। मा.लो. 685)

देवगण – पु. – देवताओं, देवों।

देवगत – स्त्री. – ईश्वर गति, ईश्वर की इच्छा से मृत्यु होना।

देवकन्या – स्त्री. – देवता की कन्या, देव मन्दिर को समर्पित बाला।

देव कारज – पु. – देवताओं के लिये किया जाने वाला काम।

देवक्याँ – पु. – देवताओं के यहाँ।

देवघर – पु. – देव मन्दिर, पूजा स्थल। बिहार में वह स्थान जहाँ द्वादश ज्योतिर्लिंग महादेव का प्रसिद्ध मंदिर है।

देवत – पु. – देवता, ईश्वर।

देव दीवारी – देव मंदिरों में विशेष प्रकार से मनाया जाने वाला दीपोत्सव कार्तिक पूर्णिमा का पर्व।

देवनदी – स्त्री. – गंगाजी।

देवनागरी – लिपि।

देवनारायण – पु. – बगड़ावत गूजरों, सोंधियों एवं कृषि कर्मी जातियों में मान्य, ऐतिहासिक महापुरुष।

देव मंदर में – पु. – देवस्थान में, देवता के मंदिर में।
देवयोग – पु. - भाग्य से, किस्मत से।
देवयोनि – स्त्री. – अप्सरा, यक्ष, गंधर्व, किन्नर, देवरूप आदि।
देव उठनी – पु. – कार्तिक शुक्ल एकादशी।
देवर – पति का छोटा भाई। (लोड़्ये देवर पीसे पोवे। मा. लो. 413)
देवरा – पु. – देवस्थान, मंदिर, थानक।
देवरो – पु. – मंदिर, देवस्थान, थानक। (ओ गुजरण तमारे बुलावे देवरो। मा.लो. 685)
देवरिषी – पु. – देवर्षि।
देवल – पु. – मंदिर, देवरा, थानक। (बासक सिधार्या देवल माय। मा. लो. 655)
देवली – स्त्री. – देवनारायण छोटा मंदिर या प्रतिमा, देवनारायण।
देवलो – देव स्थान, मंदिर, देवी-देवता का स्थान, धानक, देवरा, देवनारायण का मंदिर। (बीतो वासक सिधार्या देवल माय। मा.लो. 655)
देवलोक – पु. – स्वर्ग।
देव्याँ – स्त्री.ब.व. – देवियाँ।
देवा – क्रि. – देने के लिय, पु. – देवता, देवनारायण।
देवाडणो – दिलाना, दिलवाने में सहायता करना, दिलवा देना, दिलवाने का प्रयत्न करना। (आणी प्याली रो अरथ वतावे गांव देवाड़ूँ तीस। मा.लो. 546)
देवाड़ो – क्रि. – दिलवाओ, दिलवाने में सहायता करो।
देवतिणाँ – स्त्री.ब.व. – देवियाँ, देवी देवता।
देवा वाते – क्रि. – देने के लिये।
देवाले – पु. – स्वर्ग, मंदिर, देवालय।
देवी – स्त्री. – देव पत्नी।
देवी सरखी – स्त्री. – दैवी जैसी।
देवो – क्रि. – दो, देओ, देव।
देस – न. – देश, मुल्क, राष्ट्र, स्थान।
देसदिसावर – पु. – देश देशान्तर, देश विदेश।
देसद्रोही – वि. – राष्ट्र के साथ विश्वासघात करने वाला, राष्ट्रद्रोही।
देस निकालो – क्रि.वि. – देश के बाहर कर देना, देश निष्कासन का दण्ड।
देस भगत – वि. – देश भक्त, राष्ट्र के प्रति समर्पण और प्रेम की भावना रखने वाला।
देसावर – पु. – विदेश, दूसरा देश, परदेश।
देसावरिया – पु. – विदेश, परदेश, दूसरे देश से।
देसी – स्त्री. – देश का, अपने ही देश में बनी वस्तु।
देस्याँ – देंगे, प्रदान करना, सौंपना, हवाले करना। (अपनी जोड़ी रो सगो जोई ने देस्याँ। मा.लो. 421)
देह – शरीर। (देह भसम कर डाली। मा. लो. 684)

दो

दो – वि. – नदी में ऐसा स्थान जहाँ पानी गहरा हो, बहुत उँडा या गहरा जल, देना, दो संख्या।
दों – वि. – आग, अग्नि, ज्वाला।
दोई – वि. – दोनों।
दोईजणा – वि. – दोनों मनुष्य, दोनों प्राणी।
दोई टेम – वि. – दोनों समय।
दोगलो – विश्वासघाती, धोखेबाज।
दोचणो – क्रि. – दचकना, पटकना।
दौड़ – क्रि. – दौड़ना, भागना। (दौड़ा दौड़ मचीगि। मो.वे. 55)
दोडी – स्त्री. – डोंडी, डंका पीटकर लोगों को सूचना देना, ढिंढोरा पीटना, चिल्ला चिल्लाकर अपनी बात कहना।
दोड़तो फर्‌यो – क्रि. – दौड़ता फिरा, इधर उधर दौड़ता रहा।
दोड़ाँ – क्रि.ब.व. – दौड़ें, दौड़ने का काम करें।

'दो'

दोणी, दूणी – सं. – दोहनी, दूध दुहने की मटकी, वि. – दुगनी, द्विगुणित।

दोतरफा – वि. – दोनों ओर, दोमुंहा।

दोनूँ – वि. – दोनों।

दोने – पु. – पत्तों की कटोरी।

दोपहर – पु. – दोपहरी, दोपहर।

दोपेरी, दोफोरी – दुपहरी, दोपहर का समय।

दो मुँहो – वि. – जिसके दोनों ओर मुँह हो, कहना कुछ और करना कुछ, दोगली बात करने वाला।

दोयक – वि.– दो, दो की संख्या, दो एक। (उनने अइके दोयक, पिचकारी ल गई। मो.वे.56)

दोयतो – नाती, (दौहित्र का तद्भव), लड़की का लड़का, भानजा।

दो रंगो – वि. – दो रंगों वाला, दुरंगी।

दोरे फर्‌या/ दोरे फर्‌यो– पु. – पीछे पड़ गया, भिड़ गया, झगड़ने को उतारू।

दोरे वइगी – क्रि.वि. – पीछे पड़ गयी।

दोरो – वि. – चक्कर, दौरा, भ्रमण, मिरगी का दौरा।

दोल, दोलाँ – वि. – कंटक, काँटे, शूल।

दोलत – पु. – धन, सम्पत्ति, ऐश्वर्य।

दोलतखानो – पु. – निवास स्थान, घर।

दोले – वि. – पीछे, साथ।

दोले होगी – स्त्री.वि. – पीछे पड़ गई, पीछे हो गई।

दोवड़ – स्त्री. – दो पल्लों की चादर, कंबल, दोहरी वस्तु, दोहरा वस्त्र, दो मुही सर्प। (नी तो दोवड़ गोठ गाड़ा मारुजी। मा.लो. 541)

दोवड़ाँ – स्त्री. – दोहरी वस्तु यथा रस्सी, वस्त्र आदि।

दोवड़ता – वि. – दुहरा, दोसरा, दो सर वाला।

दोवड़ती – स्त्री. – दुहरती, चुभाती, फिराती, दो बार कहती।

दोस – वि. – दोष, पाप, भूल, अपराध। (करम को दोस। मो.48)

दोह – नदी का गहरा पानी।

'ध'

ध – त वर्ग का चौथा वर्ण।

धकणो – क्रि.– निभना, चलेगा।

धकधक – क्रि.वि.– धड़कन की आवाज।

धकधकाणो – क्रि.वि.–धकधकाना, धकधक करना, हृदय का धड़कना, आग का जलना।

धक्कम पेल – क्रि.वि.– धक्का धूम करना।

धक्को – वि.– धक्का, टक्कर।

धकधोरा – वि.– स्पष्ट रूप से किसी भी बीच का अंकुरित होकर जमीन से बाहर निकलना, दिखाई देना, अनाज अंकुरित होकर जमीन से बाहर दिखाई देना।

धक्कम धक्का – पु.– भीड़ में एक दूसरे को धक्का देना, धकापेल।

धक्का मुक्की – स्त्री.– एक दूसरे को धकेलना या धकेलने के लिये मुक्का मारना, घूंसा देकर आगे बढ़ाना।

धका पेल – क्रि.वि.– धक्का देना, धक्का देकर आगे की ओर ठेलना।

धकेलणो – क्रि.– धक्का देना, ढकेलना।

धचको – वि.– दचका, धक्का।

धज – स्त्री.– सजावट के लिये रंग– बिरंगे कागजों की बन्दनवार लगाना, ध्वजा, पताका, सजावट।

धजा – स्त्री.– ध्वजा, झण्डे झण्डी।

धजी – स्त्री.– धज्जी, लीरी, चिन्दी।

धड़ – सं.– कबंध, शरीर का धड़।

धड़कणो – क्रि. धड़कना, हृदय में कम्पन उत्पन्न होना।

धडंग – वि. नंगा।

धड़को – वि.– धड़का होना, धड़कनो, डर, आशंका, आघात, भमाका, धड़कन।

धड़धड़ातो – क्रि.वि.– धड़- धड़ की आवाज करते हुए आने या जाने की क्रिया या भाव, पैरों को बजाते हुए चलना।

धड़को – वि.– धमाका, विस्फोट।

धड़ाधड़ – क्रि.वि.– धड़ल्ले से, धड़ाके से, जल्दी- जल्दी चलने की आवाज, शीघ्रता से।

धड़ाम – क्रि.वि.– कूदने या गिरने का शब्द।

धड़ी – वि.– पाँच सेर का पुराना और उसका बाट।

धड़ी खाण्यो – क्रि.वि.– धड़ी भर या 5 सेर खाने वाला।

धणकती – स्त्री.– फूलों से लदी हुई, फूलों से खिली हुई।

धणी – स्त्री.– पति, स्वामी, छोटी हरी धनियाँ या धना नामक मसाले की वस्तु।

धणो – स्त्री.– धनिया, मसाले की वस्तु।

धत् , धत्तेरेकी – अव्य.– धिक्कारने का शब्द या आवाज।

धता बतइदी – मुहा.– काम से मुकर गया।

धूतरो – पु.– एक पौधा जिसके फलों के बीज बहुत विषैले होते हैं ।

धंधक धोरी – क्रि.वि.– सदा बहुधंधी व्यक्ति।

धधकणो – क्रि.– अग्नि का प्रज्जवलित होना, आग का धधकना।

धंधो – पु. – उद्योग, व्यवसाय, काम-धाम, काम धन्धे , जंजाल।

धन – वि.– पैसा, सम्पत्ति।

धन उलेची – क्रि.वि.– धन खर्च करके, पैसा बर्बाद करके।

धन खीर – पोस्ता दाना और चावल को मिलाकर बनाई गई खीर, क्षीर।

धनगर – पु.– गड़रिया।

धन्तर – वि.– होशियार, चतुर, श्रीमंत।

धन्तर वेद – पु.– होशियार या चतुर वैद्य, धान्त्र।

धनधान – पु.–बहुत बड़ा अमीर, धनधान्य, रुपया पैसा।

धन्ने माता राबड़ी – मक्का के दलिये की छाछ में उबालकर बनाई जाने वाली रबड़ी की प्रशंसा।

धनवंत – वि.– धनवान, धनाढ्य।

धनतेरस – वि.– दीपावली के प्रारम्भिक दिन, लक्ष्मी पूजन या गोपूजन का दिन।

धन भाग – वि.– भाग्य को धन्य है।

धनरेखा – स्त्री.– मानव की हथेली पर पड़ने वाली एक रेखा।

धनुस – पु.– धनुष, कमान।

धनुसजग्य – जनक का धनुर्यज्ञ।

धनवाद – पु.– आभार, धन्यवाद।

धन्नासेठ – वि.पु.– बहुत अमीर आदमी।

धनेर्‌या – पु.– अनाज को लगने वाले कीट।

धन्दा पाणी – क्रि.वि.– काम धाम, काम धन्धा।

धप – वि.– आंच, गर्मी , उष्णता, किसी के सिर, पीठ आदि पर हाथ के पंजे को गहरा बनाकर धप लगाने की क्रिया या भाव।

धपकी दी – क्रि.वि.– हाथ को पोचा करके पीठ आदि पर देने की क्रिया या भाव, हाथ से मारा, हाथ से सहलाया।

धपकी – सं.– एक डफ नामक वाद्य, बाजा।

धब – वि.– आंच, गर्मी, दबाव।

धब्बाती पाणी पीदो – पद – अंजुलि में भरकर पानी लिया।

धब्बो – पु.– किसी तल पर पड़ा हुआ भद्दा दाग, कलंक, लांछन।

धबो दो एक – क्रि.वि.– एक दो बार अंजुरी या खोबा भरकर, एक दो अंजुलि भर करके।

धबोक – वि.– थोड़ा सा, स्वल्प, एक हाथ की हथेली में जितनी वस्तु आवे उतना।

धमक – वि.– डरी, भय, आशंका।

धमकई – वि.– डरा करके।

धमकाय – क्रि.– धमका करके, डरा करके, भयभीत करके।

धमकाणो – क्रि. – धमकाना, भयभीत करना।

धमचक – क्रि.वि. धमा चौकड़ी, धमाल पट्टी, उत्पात या लड़ाई झगड़ा करना।

धम्मण – पु.– चमड़े का बना यंत्र जिससे निकलने वाली वायु के वेग से भट्टी आँच तेज होती है।

धमणो – स्त्री.– नाड़ी, शिखा, ढँकी हुई छोटी बैलगाड़ी, धमने की मशीन, सारे शरीर में रक्त पहुँचाने वाली शिराएँ।

धमवा वालो – वि.– धमने का कार्य करने वाला।

धमाको – पु.– भारी वस्तु के गिरने का शब्द, तोप बंदूक, छूटने का धमाका।

धमाल पट्टी – वि.– धक्का धूम करना, अंधेर गर्दी।

धमीको – वि.– धमाका, जोर से धमाके की आवाज होना।

धमेड़ा – छाती कूटना।

धरऊ – सं.– उत्तर दिशा (धरऊ दिसातीं उमगी बादली री माता)।

धरड़ – वि.– जल प्रपात।

धरण – स्त्री.– पृथ्वी, जमीन, भूमि, धारण करना, पहिनना।

धरणीधर – पु.– पृथ्वी को धारण करने वाले, शेषनाग।

धरण्यो – जार उपपति।

धरणी – रखैल

धरती – धरती, पृथ्वी।

धरधरी वेराँ – गोधूली का समय।

धरने – क्रि. रखने।

धरम पतनी – स्त्री.– धर्मपत्नी, स्त्री, ब्याहता स्त्री।

धरम साला – स्त्री.– धर्मशाला, यात्रियों के ठहरने का स्थान, सराय।

धरपकड़ – स्त्री.– एक साथ गिरफ्तारियाँ करना, अपराधियों को पकड़ने की क्रिया।

धरम – वि.– धर्म।

धरम में – वि.– निःशुल्क।

धरम धक्का – क्रि.वि.– व्यर्थ का परिश्रम।

धरम काँटो – पु.– बिल्कुल ठीक तौलने का तराजू।

धरमी – वि.– धर्मात्मा।

धरम धजा – क्रि.वि.– अपने धर्म पंथ का झंडा उठाना।

धरमल्यो – वि.– बिना परिश्रम की खाने वाला।

धरम सास्तर – पु.– धर्मशास्त्र।

'ध'

धरम पिता – पु.– धर्म से बना हुआ पिता।

धरम राज – पु.– धर्मराज, युधिष्ठिर।

धरवत – वि.– धरोहर, थाती।

धरव – पु.– उत्तर।

धरवत धरी – क्रि.वि.– अमानत रखी, थाती सोंपी।

धरसूँडा – पु. – गाड़ी का टेका, एक लकड़ी विशेष जिस पर गाड़ी को टिकाया जाता है।

धराणी – स्त्री.– मालकिन, स्वामिनी, गृहपत्नी, पत्नी।

धराऊ – पु.– उत्तर दिशा।

धराऊँ – क्रि.– रखवा लूँ, रखूँ।

धरो – सं.– गाड़ी के आधार वाली लकड़ी।

धरोवर – वि.– अमानत, धाती।

धवरी – वि.– सफेद रंग की गाय, श्वेत।

धवाड़ा – क्रि.– स्तनपान कराने, दूध पिलाने के लिये।

धसको – क्रि.– धसकना, मन को धक्का लगना।

धसकणो – क्रि. – धंसना, भीतर घुसना, नीचे बैठना।

धसराँद – वि.– मिर्च मसाले जलने पर उठने वाली तीव्र गंध।

धँसनो – क्रि.– भीतर घुसना, प्रविष्ट होना।

धँसी गयो – क्रि.– धँस गया, फँस गया, प्रविष्ट हो गया।

धा

धाक – पु. – आतंक, दबाव।

धाँगड़ धिंगा – क्रि.वि.– धींगा मस्ती, एक जाति।

धागो – पु.– धागा, डोरा, तागा।

धांधली – वि.स्त्री.– उपद्रव, उत्पात।

धांस – स्त्री.– सुंघनी, मिर्च आदि की उग्र गंध।

धाडस – क्रि.– हिम्मत, धैर्य, तसल्ली, आश्वस्त।

धाड़ – स्त्री.– दहाड़, गर्जना, अधिक बच्चों का समूह होने पर व्यंग्य में कहा जाने वाला शब्द कटकधाड़।

धाड़ धाड़ – क्रि.वि.– किसी बंदूक चलने की आवाज, संकट आ पड़ना।

धाड़ो – पु. – डाका।

धात पड़णो – पु.–वीर्य, शुक्र, चमकीला खनिज, बरतन, गहने आदि बनाई जाने वाली धातु।

धातो जाय – क्रि.– दूध पीता हुआ जाए।

धाँदली – वि.स्त्री.– गड़बड़ी, घोटाला।

धान – पु.– धान्य, अन्न या अनाज।

धाप – पु.– तृप्ति, पेट भरना।

धापणो, धापनां – क्रि. तुष्टिपूर्वक पेट भर जाना।

धाप धाप खावे – क्रि. – पेट भरके भोजन करे, प्रेमपूर्वक भोजन करे।

धाप्यो – पु. – पेट भर गया।

धापी के नी धापी – करवा चतुर्थी पर कच्चे दूध में पानी का मिश्रण करके अपने देवर द्वारा भौजाई से प्रश्न पूछते जाना और भौजाई द्वारा यह कथन कि पानी से धाप गई किन्तु सुहाग से नहीं धापी। सौभाग्य कामना का प्रतीक व्रत।

धापी ने – कृ.–तृप्त हो करके, पेट भर करके।

धाम – पु.– मकान, घर, निवास स्थान, चारों धाम।

धाम धूम – क्रि.वि.– चहल पहल, आमोद प्रमोद, भाग दौड़।

धामणो – पु. – एक प्रकार का जहरीला सर्प जो बहुत तेज दौड़ता है, एक बहिन।

धामा चौकड़ी – क्रि.वि.– उछल कूद, उधम करना।

धामा – वि.– एक चौथे किनारों वाला पीतल का बड़ा पात्र।

धामो – वि.– उपद्रव, लड़ाई झगड़ा।

धायो ढेड़ – वि. – तृप्त या सम्पन्न किन्तु ओछापन जतलाने वाले व्यक्ति।

धार – पु.– शस्त्र की धार, बहाव।

धार भरणो – क्रि.– पैना करना, धार कराना।

धाररूपी बान – क्रि.वि.– धारणा की, विचार किया।

धारण करणो – क्रि.– ओढ़ना, पहिनना।

धारा – स्त्री.– पानी की धारा, जलधारा। क्रि. – धारण किया, धारणा की या मन में संकल्प लिया।

धारी – स्त्री.– रेखा, किनारी, धोती या साड़ी का छोर।

धारो – पु.– धारण करो, अपनाओ, संकल्प लो।

धाव – क्रि.– बच्चों को दूध पिलाने का शब्द, दौड़ना।

धावाँ – क्रि.– ध्यावें, स्मरण करें, याद करें, दौड़ें, दूध पिये।

धाँस – स्त्री.– सुंघनी, मिर्च आदि की उग्र गंध।

धि/धी

धिंगा मस्ती – क्रि.वि.– उधम करना, हाथापाई करना।

धिंगो – वि.– उद्यमी, शोर गुल करने वाला।

धिमो – वि.– शांत स्वभाव का, ठंडे मन से काम करने वाला।

धींगड़ो – वि.– मोटा, पुष्ट, युवा को बिगड़ेल होने के लिये क्रोध में कहा गया शब्द।

धीणे – गर्भवती।

धीमो – वि.– धीमे कार्य करने वाला, मंद गति।

धीर – वि.– धीरज, धैर्य।

धीरज – वि.– धैर्य, शान्ति।

धीरज धारण – क्रि.वि.– धैर्य धारण करके, धीरज रख करके।

धु

धुओं – पु.– धुँआ, लकड़ी कंडे आदि को सुलगाने पर उनसे निकलने वाला धुँआ।

धुआँडों – पु.–धुँआ, धूम।

धुणी – स्त्री.– धूनी।

धुणो – क्रि.– धोना, धोने का डंडा, धुनना।

धुत्कारणो – क्रि.– दुत्कारना, तिरस्कार करना।

'धु'

धुतारो – वि.– ठग, धूर्त।

धुन्द – वि.– धुंधली दृष्टि, धुंध का जाना, अस्पष्ट दिखना।

धुन्ध – वि.– एक नेत्र रोग, अस्पष्ट दिखाई देना।

धुन्धुकारो – वि.– अन्धकार से भरी हुई समग्र सृष्टि।

धुन – वि.– बिना आगा पीछा सोचे काम करते रहने की धुन या लगन।

धुनकी – स्त्री.– धुनियों की वह कमान जिससे वे रूई धुनते हैं।

धुनकणो – क्रि.– धुनना, रुई धुनना।

धुन लागगी – स्त्री. वि.– किसी भी कार्य को करते समय धुन लग जाना या एकाग्रचित्त होकर कोई कार्य करना।

धुप्पस – स्त्री.– किसी को डराने या धोखा देने के लिये किया जाने वाला काम, धोस।

धुर् धसाणी – क्रि.वि.– धूलि धूसरित, नष्ट भ्रष्ट।

धरो – स्त्री.– गाड़ी का जुआ, धुरा, धूल।

धुलई – स्त्री.– धुलवाना, कपड़े धोना, धोने का काम, क्रि. -किसी को पीटना या मारना।

धुलेंडी – स्त्री.– होलिका दहन का दूसरा दिन, रंग गुलाल अबीर से होली खेलना।

धुवण – स्त्री.– चांवल का धोवन, धोवन का पानी।

धू

धूजणो – वि.– हिलना या काँपना, कंपन होना।

धूताई – स्त्री.– धूर्तता।

धूंधलो – वि.– अस्पष्ट, धुँधला, जो ठीक से दिखाई न दे।

धूनी – स्त्री.– गूगल आदि ग्रंथ द्रव्य जलाकर किया जाने वाला धूप।

धूणो – क्रि.– धोना, धोने का डंडा, धूनी जिसमें हमेशा अग्नि जलती रहती है।

धूप – वि.– लोबान का धूप या धुँआं, गंध, द्रव्य जलाकर निकाला हुआ धुँआ।

धूपबत्ती – स्त्री.–अगरबत्ती, उदबत्ती, धूपबत्ती।

'धू'

धूपाड़ो – पु.– वह मिट्टी या धातु का बना पात्र विशेष, जिसमें लोबान, चटक, धूत, उदबसी आदि डालकर धूप किया जाता है।

धूम धड़ाको – क्रि.वि.– धूमधाम।

धूमधाम – स्त्री.– बहुत अधिक तैयारी, ठाठबाट समारोह।

धूयो – क्रि.– कपड़े आदि धोने की क्रिय।

धूरो – पु.– गाड़ी का जुआ, आंका, धुरा, धूल, मिट्टी की रज, गर्द।

धूरा में लोटे – क्रि.– धूल में लोटना।

धूल, धूलो – पु. –धूलि, धूर, धूला, धूलि, मिट्टी की खै या रज।

धूल धोयो – वि.– धूलि में स्नान किया हुआ, धूल में सना हुआ।

धे/धो

धेनन – स्त्री.– गायें।

धेलो – वि.– पैसे का चौथाई भाग, पुराना सिक्का।

धोई दिया – क्रि.– धो रहे, साफ कर रहे।

धोक – क्रि.– प्रणाम, पाँव पड़ना, प्रणाम।

धोंकणी – स्त्री. - बाँस या धातु की बनी आग सुलगाने की नली, धम्मन, हवा का पंखा।

धोकणो – क्रि.– प्रणाम करना, दूल्हा दूलहिन का देव मंदिर में धोकने ले जाना।

धोती – स्त्री.– अधोवस्त्र, कमर से घुटनों तक शरीर में लपेटकर पहना जाने वाला वस्त्र।

धोनो – क्रि.– पानी में साफ करना, धोना।

धोवण – स्त्री.– धोबी की स्त्री।

धोबी – पु.– कपड़ा धोकर प्रेस करने वाली एक जाति, रजक।

धोबी घाटो – पु.– वह घाट जहाँ धोबी या धोबिन कपड़े धोया करते हैं।

'धो'

धोबातीं पीदो – दोनों हाथों की अंजुरी में जल लेकर पीने की क्रिया या भाव, धोबे से पानी पीना।

धोबी पछाड़ – मुहा.– धोबी द्वारा किसी सिल पर पछीलटकर कपड़े धोने का ढंग, धोबी जैसा पछीटना, एक तरह का व्यायाम।

धोरा – वि.– सफेद, श्वेत, साफ स्वच्छ बैल।

धीरे धीरे – क्रि.वि.– पास-पास, निकट ध्वनि के सहारे।

धोरो – सिंचाई की नाली।

धोल धप्प – क्रि.वि.– बच्चों का एक खेल, किसी के सिर या शरीर पर हाथ की देना, धोल धप्प करना, मारा पीटी।

धोलीसार – स्त्री.– चावल, मालवा में नाथ पंथियों के प्रभाव स्वरूप कांचली एवं कूंडा पंथ प्रचलित रहा। इस पंथ के लोगों द्वारा देवी पूजा के लिये शुक्ल पक्ष की चौदस या पूर्णिमा को चावल पकाकर देवी को भोग लगाया जाता है। इसी को धोली सार कहा जाताहै।

धोली करे सकाल – पहेली सफेद बादल में सूर्यास्त होने पर अकाल नहीं होता। अर्थात् खूब वर्षा होती है। एक शकुन विचार।

धोलो – पु.–श्वेत, सफेद, बैल, धवल, उजला।

धोवण – क्रि.– चावल आदि वस्तुओं को धोने के उपरान्त बचा हुआ शेष पानी, धोवन का जल।

धोवणो – पु.सं.– कपड़े धोने का डंडा, धोवना।

धोंस – वि. स्त्री.– धमकी, घुड़की, धाक, झाँसा पट्टी।

धोंसो – पु.– नगाड़ा, डंका, हमला, धोंस।

धोहरो – सं.– बैल, वृषभ।

धोहरी – सं.– गाय, गौमाता, बैल।

'न'

न – त वर्ग का व्यंजन।

नंई – नहीं।

नऊ – वि.– नौ की संख्या।

नकटो – वि.पु. –नाक कटा।

नकबजनी – क्रि.– चोरी, सेंधमारी।

नकटी बूची – वि.– एक गाली, नाक-कान रहित स्त्री. - बेहया, निर्लज्ज।

नकल्याँ – वि.– चाबुक से, कशा से, नाखून से।

नकलोई – वि.– नाक से खून बहना।

नकल – स्त्री.– अनुकरण, देखा-देखी।

नकल नवीस – पु. – वह जो दूसरों के लेखों की नकल करता हो।

नकशो – पु.– नक्शा, मानचित्र।

नकसी – नक्काशीदार, चित्रकारी, रंगसाजी, बदनामी, अपकीर्ति, लोकनिन्दा, जिस पर बेलबूटे बने हों। (बनाजी थांके खोद या नकसी बंदूक। मा.लो. 391)

नकसीर – नाक में से निकलने वाला रक्त, खून, नाक से खून निकलने का रोग।

नकसो – पु.– मानचित्र, प्रारूप, गर्व, अकड़।

नकसोड़ा – सं.– नाक का अग्रभाग, हवा के लिये नाक के अग्र भाग में बने हुए छिद्र या सुर, नक्कारखानो।

नकाब – स्त्री. – चेहरा छिपाने के लिये उस पर डाला गया पर्दा, बुर्का।

नकारो – वि.– इन्कार करना, मना करना।

नक्की – स्त्री.– बिल्कुल ठीक, निश्चित।

नकेचक – कोई भी काम बाकी नहीं रखना, पूरा साफ-सफाई से कार्य करना।

नकेल – स्त्री.– नाक में नथ डालना, रस्सी डालना, लगाम या अंकुश लगाना।

नक्खा – डोड़ा चीरने का यंत्र, अफीम टाँकने का औजार।

नख – पु.– नाखून।

नख गड़ई के – कृ. – नाखून चुभोकर, नाखून गड़ा करके।

नख छोल्या चोखा – वि.– महीन या पतले किस्म के चावल। (पीया ठेरो तो रादूँ नख-छोल्या भात। मा.लो. 622)

नखत्तर – पु.– नक्षत्र, (सत्ताईस होते हैं।)

नख दिये रस जाय – क्रि.– नाखून लग जाने पर खून बहने लगता है या रस द्रवित होने लगता है, नाजुक, सुकोमल।

नख देणो – मुहा.– गला घोंटना।

नखराली – स्त्री.– नखरीली, बनाव श्रृंगार करने वाली, नखरैल।

नख सिख गेणो – सिर से पैर तक के गहने, आभूषण, सिर से पैर तक के गहनों से लदी हुई, पहने हुए। (नख सिख गेणा पर अबीर ओर कंकु उड़ावे री। मा.लो. 678)

नक्खी – स्त्री. वि.– पक्की, सितार, बजाने वाली नखी, पशुओं के नाखून।

नखी दई – क्रि.– नाखून देकर, नख चुभोकर।

नखतरी – स्त्री.– नक्षत्री।

नखेतर – पु.– नक्षत्र।

नखेतरी – बुरे नक्षत्र वाला, बदमाश।

नखोरा – वि.– अच्छी किस्म की जमीन, गहरी मिट्टी वाली भूमि, विशुद्ध, नवीनखोर।

नग – पु.– अँगूठी आदि का नग, नगीना

नगदरणो – निंदा करना, अनादर करना, स्वीकार नहीं करना, किसी की अच्छी वस्तु को भी भला-बुरा कहना, दोष निकालना, किसी में ऐसा दोष बताना जो वास्तव में न हो।

नगदी – क्रि. वि.– नगद या सिक्के के रूप में, रोकड़ा धन।

नग परकैया – वि.– हीरे या नग की परीक्षा करने वाला, जौहरी।

नग नीबजा – क्रि.वि.– हीरा पैदा हुआ, हीरे के रूप में बैल, लड़का पैदा हुआ।

नंगल ग्या, नंगल ग्यो– क्रि.– निगल गया, गले में उतार लिया।

नंग धडंग – वि.– नंगा, दिगम्बर, बिना वस्त्र का।

नगर – पु.– शहर।

नंगा-पुंगा – वि.– नग्न रहने वाला।

नगाड़ा, नगारो, नगाड़ो –पु.– डुगडुगी या बड़ा बाजा, धोंसा, नगाड़ा।

नगारची – पु.– नगाड़ा बजाने वाला।

नगीनो – न.– नग, रत्न, नगीना।

नगे – स्त्री.– निगाह, दृष्टि।

नगे राखणो – ध्यान रखना, रखवाली करना, निगरानी रखना, निगाह रखना, दृष्टि रखना।

नंगो – वि.– नग्न, वस्त्रहीन, दिगम्बर, निर्लज्ज।

नंगो नाच – पु.– निर्लज्जतापूर्वक।

नचइयो – पु.– नाचने वाला, नर्तक।

नचाणो – क्रि.– किसी को नाचने में प्रवृत्त करना, नचवाना।

नचावणी – स्त्री. - नाचने वाले को दिया जाने वाला पुरस्कार या पारिश्रमिक।

नचावे – क्रि.– नचवाता, नचाता।

नचीत – निश्चिंत, बेफिक्र, चिन्तारहित, निर्बाध, बेखटके। (वा तो न्हाई धोई सूती नचीत रे। मा.लो. 575)

नज – वि. - खास, प्रमुख।

नजर करणो – भेंट करना।

नजर लागी – वि.– नजर लग गई, टोना कर दिया।

नजर – स्त्री.– दृष्टि, निगाह।

नजराँ – आँखें, पलकें, दृष्टि, लक्ष्य। (नजराँ वतई दो तमारा वीर। मा. लो. 630)

नजरां देख्यां पाप – क्रि.वि.– दृष्टि से देखने का पाप, आँखों देखा पाप या दोष।

नजनाम – पु.– प्रमुख नाम, खास नाम, ईश्वर का जाप।

नजर निकम्मी – स्त्री.– कमजोर दृष्टि।

नजर से न्यारा – पद.– दृष्टि से ओझल।

नजर को खेल – वि.– जादू, इन्द्रजाल, जादू का खेल।

नजर टेक – पु.– नजरबन्द, अवरोध।
नजरागी – स्त्री.– नजर लग गई, दृष्टि फिर गई, जादू के वशीभूत हो गई।
नजराँ – वि.– जो देखने की अच्छी, बुरी, महंगी या सस्ती चीज पहिचान लेवे, नजरों में आने वाली किसी भी प्रकार की वस्तु।
नजराणो – क्रि.– भेंट, उपहार, तोहफा।
नजरानी देख्या – क्रि. वि.– दो आँखों से देख न पाया।
नजराँ उघाड़नी – स्त्री.– पलकें खोलनी, आँखें खोलनी।
नजारा – नजरें, इशारा, आँखों के सामने, प्रत्यक्ष देखा दृश्य।
(टाटी तोड़ नजारा मार्‍या, छाती फाटी रे दो दन रईजा रे। मा.लो. 429)
नजीक – अव्य. – पास, निकट, नजदीक, आसपास, समीप।
नजीर – पु.– उदाहरण, दृष्टान्त।
नजूल – पु.– नगर की वह भूमि जो सरकार के अधिकार में चली गई हो।
नटई वईगी – क्रि.वि.– इन्कार हो गया।
नट – पु. – नाट्य या अभिनय करने वाला मनुष्य, नाटक का पात्र, खेल तमाशा बताने वाली एक जाति, मना करना।
नटखट – वि.– नटखटी, चालाक।
नटणो – क्रि.– इन्कार करना, निषेध करना, मना करना।
(घूँघट रा पट खोलताँ नाचण झट नट गई रे। मा.लो. 511)
नटड़ी, नटनी – स्त्री.– नट की स्त्री, नर्तकी, अभिनेत्री।
नट्या, नट्यो – पु.क्रि.– इन्कार किया, मना किया।
नटराज – पु.वि. – महादेव, शिव।
नटी गयो, नटी ग्यो – पु.– इन्कार कर दिया, मना कर दिया।
नणंद – स्त्री.– पति की बहन।
नणदड़ी – स्त्री.– ननद, पति की बहिन।
नणदल – स्त्री.– ननद, पति की बहिन।
नणदल बई – स्त्री.– ननद बाई, नणदल, पति की बहिन।
ननदोई, नणदोई – पु.– ननद के पति।
नत – स्त्री. अव्य.– नित्य, सं. - नथ।
(म्हे नी जाणाँ म्हारी भावजओराज नींद जाई आपरा नणदोई ने पूछो।)
नत्थी – स्त्री. - चस्पा, संलग्न करना।
नतर – क्रि.– निचुड़ने की क्रिया या भाव, निचोना, पानी का किसी कपड़े से नितरना या रिसना।
नतरेल – स्त्री.– नातरे वाली या दूसरी बार विवाह करने वाली स्त्री।
नतरेली – स्त्री.– नातरे वाली स्त्री।
नतरेल्यो – पु.– नातरे वाली स्त्री से उत्पन्न सन्तान, एक गाली।
नथ – स्त्री.– नाक का आभूषण।
(म्हारी नथ झलक। मा. लो.598)
नथड़ी – स्त्री.– नथ।
नथनी – स्त्री.– नाक का आभूषण।
नंद किसोर – पु.– नंदकिशोर, श्रीकृष्ण।
नंदन – पु.– स्वर्ग में इन्द्र का उपवन, बगीचा।
नंदराणी – स्त्री.– नंदजी की पत्नी, यशोदा, श्रीकृष्ण की माता।
नंदलाल – पु.– श्रीकृष्ण।
नद – पु.– बड़ी नदी जिसका नाम पुल्लिंगवाची हो यथा - सोन, ब्रह्मपुत्र, सिन्धु आदि।
नदारत – वि.– गायब, लुप्त।
नंदिनी – स्त्री.– एक गाय का नाम।
नदी – स्त्री.– दरिया, बहने वाली नदी।
नद्दी – स्त्री.– नदी, सरिता।
(घर की बइरा ने नत को मारे पकड़-पकड़ ने चोंटी। मा.लो. 568)
नंदीगण – पु. – नंदिकेश्वर, महादेव के मंदिर में मूर्ति के सामने बिठाई जाने वाली नंदी या वृषभ की प्रतिमा।
नंदी बैल – पु.– गर्दन हिलाना, सिखाया हुआ बैल।
नन्ना कोटे – प्रातःकाल बिना खाए-पीये।

नन्नो – क्रि.वि.– नहीं -नहीं का भाव दिखाना।

नपई – स्त्री.– नपवाना, नापवाली, नापने का पुरस्कार।

नपती – स्त्री.– नाप करना, नाप करवाना, सीमांकन करवाना, नापने का कार्य।

नपाण्यो दूध – वि.– बिना पानी का शुद्ध दूध।

नपुंसक – वि.– हिजड़ा।

नफापरो – रोते-रोते थकना।

नफीस – वि.– अच्छा, बढ़िया।

नफो – वि.– लाभ, मुनाफा।

नफो नुक्सान – क्रि.वि.– लाभ-हानि।

नबज – स्त्री.– नाड़ी, नब्ज, नस।

नंबर – वि.– क्रमांक, संख्या।

नंबरदार – पु.– गाँव का वह अधिकारी जो मालगुजारी वसूल करता है, मुखिया, पटेल।

नंबरी माल – वि.– बढ़िया माल, बढ़िया वस्तु या चीज।

नंबरी चोर – पु.– बहुत बड़ा और प्रसिद्ध चोर जिसका उल्लेख पुलिस के अभिलेखों में विशेष रूप से रखा जाता है।

नभ – सं.पु.– आकाश।

नभाव – निर्वाह।

नमाणो – कृ.– झुकना।

नमक हराम – वि.– कृतघ्न, किसी का दिया अन्न खाकर उसी से द्रोह।

नमण, नमन – वि.– झुकना, प्रणाम करना, विनय करना, वि. - नौमन (पुराना तौल।

नम्मण – वि.– अधिक झुकना, तराजू में नमी वस्तु देना या लेना।

नमनो, नमणो – क्रि.– झुकना, प्रणाम करना।

नमस्कार – क्रि.– आदरपूर्वक अभिवादन करना, प्रणाम करना।

नमती तौले – क्रि.– अधिक तौलना, नमती तौलना, नींद के झोंके आना।

नम नम लागे पाँव – झुक- झुक्कर पैरों पड़ना, प्रणाम करना।

नमाज – क्रि.– मुसलमानों द्वारा ईश्वर की प्रार्थना करना।

नमाणो – क्रि.– झुकाना, दबाकर अपने अधीन करना।

नमावणो – क्रि.– नमाना, झुकाना।

नमूनो – पु.– बानगी।

नमोन्यो – सं.– निमोनिया नामक ज्वर।

नमोन्या मसले – क्रि.वि.– हाँ जी जी करना, चाटुकारी करना।

नमो नारायण – क्रि.– जिसके पास कुछ भी सम्पत्ति न बची हो, निर्धन, निराकार, साधु, नारायण भगवान को नमस्कार।

न्यउनी – वि.– बिल्कुल नहीं , थोड़ा सा भी नहीं।

न्याणा, न्याणो – क्रि.– अफीम के डोड़ों से रस निकालने की क्रिया।

न्याव – क्रि.– न्याय।

नयो – वि.– नया, नवीन।

नर – पु. – मानव, पुरुष, मनुष्य।

नरक – पु.– नर्क, शैतान का स्थान।

नर जायो – पु.– मनुष्य से उत्पन्न।

नरकवासो – क्रि.वि. – बुरी दशा, नर्क में निवास।

नरखंट निराहार – वि.– शुद्ध रूप से उपवास करने वाला, बिल्कुल आहार न करने वाला।

नरखणवारो – पु.– निरखने वाला, देखने वाला।

नरखावारो – पु.– देखने वाला, निरखने वाला।

नरखो – क्रि.– देखो, अवलोकन करो, निरखे। (साँडड़ली ने पाव नरखो निरावो रे नागर वेलड़ी। मा.लो. 326)

नरने – वि.– निराहार, प्रातः बिना खाये पिये।

नरबदा – नर्मदा नदी, स्त्री का नाम। (नरबदा रंग से भरी । मा.लो. 572)

नरबस – वि.– नाश, वंशहीन।

नरबस खायो – क्रि.वि.– एक गाली।

नरबूक – वि.– बिल्कुल, सब कुछ, समस्त।

नरबे नाम, नरभे नाम– पु.– निर्भय नाम, परमात्मा का नाम।

नरम – नर्म, मुलायम, कोमल, आसान, विनम्र, गीला, पिचपिचा, धीमा, सुस्त, निर्बल।

नरमल – वि.– निर्मल, स्वच्छ।

नरमल बोदरी – निर्मल व भोली, शीतला माता में एक बोदरी माता होती है। (घमोरी के समान सारे शरीर पर होती है।) (सीली सीतला ए माय नरमल बोदरी ए माय। मा.लो.199)

नरमई – वि.– नम्रता, विनम्रता।

नरमाणो – क्रि.वि.– नरम पड़ना, नम्र होना।

नरम हुईके – कृ.– नम्र हो करके, विनम्र हो करके।

नरस – वि. – नर्स, नीरस। (म्हारा हाल-चाल भी नरसबई के सुनऊँगा। मो.वे. 47)

नराणा – पु.– नारायण, उज्जैन जिले का तीर्थ।

नराद – वि.– बहुत।

नरा दनाँ में – क्रि.वि.– बहुत दिनों में।

नरी – स्त्री.– बहुत-सी, बकरे का चमड़ा।

नरेटी – पु.– नरेश, नारियल की रस्सी।

नरो – वि.– बहुत-सा।

नळ – पु.– पानी का नल, बड़ी आँत का ऊपरी भाग, पोली नली, टोंटी, राजा का नाम।

नला – पु.–पैर की हड्डियों के लिये संज्ञा।

नळा भाँगी दूँवाँ – क्रि.– हड्डियाँ तोड़ दूँगा।

नली, नलो – स्त्री.– गले की अन्न की नलिका।

नव – वि. – नौ, नया, नौ की संख्या। (हम नव लावां। मो.वे. 48)

नव, कोड़ी – वि.– नौ कोड़ी, 9 गुना 20 बराबर है 180 की संख्या। (नब गज धरती दल चड़्यो।) पुत्र विवाह की प्रसन्नता से पृथ्वी का स्तर बढ़ गया है। अति प्रसन्नता, ज्यादा खुशी। (आज म्हारे केसरिया परण पदारियाजी आज म्हारे नव गज धरती दल चड्योजी।)

'न'

नव नवायो – थोड़ा गरम, हल्का, गरम, गुनगुना, नहाने के लिये हल्का गरम पानी।

नवरंगी खाट – वि.– नौ रंगों वाली खाट, नौ रंगों वाली रस्सी से तैयार की गई खटिया, चारपाई।

नवरो – वि.– फालतू, निठल्ला।

नवल – नया, नवीन, ताजा, मनोहर, सुन्दर, नवयुवा। (थारी साँवली सूरत पे वारी नवलिया वेपारी। (मा.लो. 690)

नवल्यो – पु.– नवल, नेवला।

नवमो – वि.– नौवाँ।

नवसर – वि.– नौ लड़ी वाला हार।

नंदलाल – बाबा नन्द के लाल श्रीकृष्ण, कान्हा, मुरलीधर। (तम नन्दलाल जनम का कपटी। मा.लो. 686)

नवा – नया।

नवाड़ – स्त्री.– निवार, निवाड़ पट्टी, पलंग की निवार।

नवी – स्त्री.– नयी। (पाँच वदावा म्हारे आविया मारुजी पाँचाँरी नवी नवी भाँत। मा.लो. 482)

नवसर्यो – नौ लड़ी वाला हार, नौलख हार। (राय हो वीराजी आपरा चोक में हो राज टूट्यो म्हारो नवसर्यो हार म्हारा राज। मा.लो. 467)

नवी गा – वि.– नई गाय।

नवी नवादी – वि.– नई नवेली, नवयौवना।

नवी पदवी – वि.– नई उपाधि।

नवेड़ो – क्रि.– छुटकारा दिलवाओ, निपटारा करो।

नवेद – सं.– नैवेद्य, प्रसाद, भोग।

नवेलिया – पु.– नेवला, वि. - नई-नई।
नवो – वि.– नया, नवीन।
नवो नखोर – बिल्कुल नया।
नस – स्त्री. – नाड़ी, शिरा, शरीर में तंतु के रूप में वह नली जो पेशी को किसी कड़े स्थान से जोड़ती है।
नसरगंड – वि.– सब कुछ सुनकर प्रतिक्रिया न करने वाला, (नसरगंडी आदरी।)
नसेड़ो – वि. – निसल्ला, कामचोर, हठी, निर्लज्ज, ढीठ, धूर्त। (नसेड़ा की कमर पे उगी गयो झाड़। मा.वे. 53)
नसो – स्त्री.– मद, नशा।
नसोड़ा, नकसोड़ा – पु.– नाक का अग्र भाग।
नहर – स्त्री.– सिंचाई के लिये निकाली गई पानी की नाली या खाई।
न्हाणो – क्रि.– भागना, स्नान करना।
न्हवाड़ी – क्रि.– नहलाना, स्नान करवाया, भगाकर।
न्हाकी दी – क्रि.– पटक दी, गिरा दी, डाल दी।
न्हाटो – पु.– भागा।
न्हायो – क्रि.– नहाया, स्नान किया।
न्हार – पु. –शेर।
न्हाल्डो – क्रि.– देखा, अवलोकन किया।
न्हार कल्ड़काँ करे – क्रि.वि.– शेर गुर्राता है।
न्हाण – स्त्री.– होली उत्सव के बाद की त्रयोदशी को मनाया जाने वाला उत्सव विशेष।

ना

नाँ – अव्य.– नहीं , नाही।
नाई – पु.– अनाज बोने की कृषि यन्त्र, बीज वपन यन्त्र, हजामत बनाने वाला नाई।
नाईक – पु.– अगुआ, मुखिया, नायक, जमादार।
नाऊ – पु.– नाई।
नाउन – स्त्री.– नाई की स्त्री।
नाक – स्त्री.– नासिका।
ना करणो – क्रि.– इन्कार करना।
नाक नाथी – क्रि.– नाक में नकेल डाली, वश में किया।
नाकादम – क्रि. वि.– परेशान करना।
नाकाबंदी – स्त्री.– किसी को घेरने या पकड़ने के लिये किसी स्थान के आने जाने के मार्ग को रोकना।
नाकादार, नाकेदार – पु. – नाके का अधिकारी, नाके पर रहने वाला।
नाको – पु.– रास्ते का सिरा, मुहाना, नगर या दुर्ग का प्रवेश द्वार, छेद सुई को नाको।
नाखने वाला – क्रि. – डालने वाला, गिराने वाला।
नाखी – क्रि.– गिरा दी, पटक दी।
नाखी देगा – क्रि.– डाल देगा, गिरा देगा, पटक देगा।
नाखुस – वि.– अप्रसन्न, नाराज।
नाखून – पु.– नख।
नागराज – पु.– नागदेव।
नागकन्या – स्त्री.– नाग जाति की कन्या।
नागकेसर – वि.– नाग केशर।
नागपास – पु.– नागपाश नामक फंदा।
नागफणी – स्त्री.– थूहर।
नाग–यग्य – पु.– एक यज्ञ जिसमें जनमेजय ने नागों का या नाग जाति का विनाश किया था।
नागड़ो – वि.– नंगा, नंग धडंग, धनहीन।
नागर मोथो – पु.– नागर मोथा, एक जड़ी-बूटी।
नागरवेल – पान की बेल, ताम्बुल लता, तांबुल। सीस चढावां नागरवेल। मा.लो. 628)
नागराज – पु.– शेषनाग, ऐरावत।
नागरो – पु. – हल के मुँह पर लगाई जाने वाली लकड़ी, चवड़ा।
नागरिक – पु. – नगर का रहने वाला, शहरी।
नां गलना – स्त्री.– वह रस्सी जिससे चढ़स से लकड़ी की माची बाँधी जाती है।

नाग लोक – पु. - पाताल।

नागा – पु.– लंघन, कमी, एक प्रसिद्ध शैव सम्प्रदाय, इसमें साधु प्रायः नंगे रहते हैं। आसाम के पूर्व की एक जंगली जाति।

नागी – स्त्री.– नंगी।

नागो – वि.– नंगा, नग्न, रिक्त।

नागो नाच – वि.– नंगा नृत्य।

नाच – स्त्री.– नृत्य।

नाचण – न. – नाचने वाली, नाज नखरों वाली स्त्री, नखरीली, वैश्या, गायिका, विवाहादि में गाये जाने वाले समधिन सम्बन्धी गाली और व्यंग के लोकगीतों की एक नायिका।
(वा तो नाचण घर में सूती आड़ी दीदी टाटी रे। मा.लो. 429)

नाचणो – नृत्य करना, प्रसन्न हो इधर–उधर उछलना–कूदना।

नाज – पु.– नखरा, अनाज।

नाजक – वि.– नाजुक, मुलायम, नम, कमजोर।

नाजर – पु.– निरीक्षक, देखभाल करने वाला, लिपिकों का अधिकारी।

नाटक – पु.सं.–नाटक, स्वाँग, खिलवाड़, अभिनय, दृश्य काव्य।

नाटकाँ करे – पु.– अभिनय करे, स्वाँग भरे।

नाड़ – पु.– गर्दन, ग्रीवा।

नाड़की – स्त्री.– गर्दन, ग्रीवा, गला।

नाड़ी – स्त्री. – नाड़ी, धमनी, फीता, चढ़स खींचने की मोटी नाड़ी या रस्सी।

नातरा – स्त्री.– विधवा स्त्री को फिर से नाता जोड़कर अपने घर में सम्मान सहित बिठा लेने की रस्म, इसमें उसके माता–पिता–भाई की सहमति भी होती है। नात्रा प्रायः रात्रि को ही लाया जाता है और यह रिवाज अपेक्षाकृत मालवा की पिछड़ी जातियों में प्रचलित है। पुनर्विवाह का एक पारम्परिक मान्य प्रकार।

नाता – पु.– सम्बन्ध, रिश्ता।

नाती – स्त्री.– लड़की का लड़का, दोहित्र।

नातो – पु.– रिश्ता, सम्बन्ध।

नातो लाणो – पु.– नातरा लाना।

नाथ – स्त्री.– नाक में पिरोने की रस्सी, नाथना, नकेल, पु. - स्वामी, प्रभु, मालिक, पति, गोरखपंथी साधुओं की उपाधि।

नाथड़ली – स्त्री.– नाक की नकेल।

नाथाँ – स्त्री.ब.व.– नाक की नकेल।

नाथ्यो – क्रि.– नाक में नकेल डाली।

नाद – पु.–शब्द, आवाज, संगीत, नाज, घमण्ड, नखरे।
(नवरा नाद कन्या नागा ने। मो. वे. 42)

नाँद – पु.– पशु आहार रखने वाली वस्तु, पत्थर आदि का वह पात्र जिसमें पशुओं को खाने के लिये आहार रखा जाता है। गन्ने का रस एकत्र करने का बर्तन, मिट्टी का गमला।

नादणो – पु.– रिश्ता, सम्बन्ध, एक गाँव।

नाद – क्रि.– ध्वनि।

नाँदरी – स्त्री.– इधर–उधर चुगली करने वाली स्त्री।

नादान – वि.– नासमझ, मूर्ख, छोटी उम्र।
(रसीयो लीपटे नादान। मा.लो. 594)

नादारी – स्त्री.– निर्धनता, गरीबी।

नानक – पु.–सिक्ख सम्प्रदाय के संस्थापक और आदि गुरु।

नाँद्यो – पु.– नंदीगण, ऐसे मनुष्य के लिये विशेषण जो आवारा घूमता हो एवं निठल्ला हो।

नानपणो – पु.– बचपन।
(नानपणो जो मोटपणो।)

नानकी – छोटी, छोटी सोतन, बालिका।

(नानकी तो के के म्हारं कडीयाँ घड़ई दो। मा.लो. 582)

नानणवन – एक विशेष प्रकार का कपास होता है और उसकी ही रुई से जनेऊ बनती है।

नाना – वि.– अनेक प्रकार के, तरह–तरह के, अनेक, बहुत छोटा।

नाना-नाना – क्रि.– वि. छोटे–छोटे, माता के पिता।

नाना–दाना – पु.– छोटे और वृद्ध।

नानी – स्त्री.– बालिका, छोटी।

नानी सीक – वि.– छोटी–सी।

नानी – स्त्री.– माता की माता।

नानी बाई – सं.– नरसी भक्त के माहेरा की नायिका, छोटी।

नानेरा – पु.– नाना का घर।

नान्हा – पु.– छोटा।

ना–नू करनो – क्रि.वि.– टालमटोल करना।

नानो – क्रि .वि.– छोटा सा।

नाप – स्त्री.– माप।

नापना – क्रि.– लम्बाई, चौड़ाई, ऊँचाई या गहराई का हिसाब लगाना।

नापसंद – वि.– अमान्य, अनचाहा, अप्रिय।

नापास – वि.– जो पास या उत्तीर्ण न हुआ हो, अनुत्तीर्ण।

नापुत्र्यो – वि.– बाँझ, जिसे पुत्र-पुत्री या औलाद न हो।

नाबालिग – वि.– जो अभी पूरा जवान न हुआ हो, अल्पवयस्क।

नाभि – स्त्री.– गर्भनाल का स्थल, डूँठी, पहिये या चक्र का मध्य भाग।

नाम – पु.– संज्ञा।

नामक – वि.– नाम से प्रसिद्ध, नाम वाला।

नामकरण – पु.– बालक के जन्म के 12 वें दिन नामकरण संस्कार करना।

नाम कमई – क्रि.वि.– नाम कमाना, यश अर्जित करना।

नाम डुब्यो – यश का नाश हुआ, नामोनिशान न रहा, मटियामेट मिल गया।

नामंजूर – वि.– अस्वीकार।

नाम रखणो – क्रि.– नामकरण संस्कार करने की प्रथा, नाम रखना।

नाम धातु – क्रि.वि.– संज्ञा से बनी क्रिया।

नामधारी राजो – पु.– नाम के वास्ते बना हुआ राजा, नाममात्र का राजा।

नामरासी – स्त्री.– एक–दूसरे के विचार के ऐसे दो व्यक्ति जो एक ही नाम के हों।

नामरदी – स्त्री.वि.– कायरता, कमजोरी, अशक्तता।

नामी गरामी – लोक प्रसिद्ध नाम, ख्याति प्राप्त, यश प्राप्त, ऊँचा नाम, प्रसिद्ध।

नामो – नाम, नामे करना, पट्टा लिखना, लिखाना।
थारी साड़ी लागा नामा मा. लो. 507)

नामो निसाण – क्रि .वि.–नामोनिशान,वि.-मटियामेट, जिसका केवल नाम ही बचा हो।

नामोस हुओ – वि.– नाम निकला, नाम की ख्याति हुई।

नामोसी – वि.– अच्छे या बुरे कामों से ख्याति। (पाँच उठे तो पचास उठावजो नामोसी मत लाजो रे राईवर, नामोसी मत लाजो। मा.लो. 386)

नाम पाणो – वि.– प्रसिद्धि पाना, यश प्राप्त करना।

नामीक छेटी – वि.– थोड़ा–सा फासला, थोड़ी–सी दूरी।

नाम लेवा – पु.– नाम लेने या स्मरण करने वाला, औलाद।

नायक – आचार्य, पति, श्रेष्ठ पुरुष, किसी नाटक, काव्य आदि का मुख्य पात्र, नायक जाति का मनुष्य।
(हाँ हो नायकजी हो ढोलाजी कणी बद लुटी या वणजारी। मा. लो. 713)

नायकड़ो – पु.- नायक, नायक नामक जाति का मनुष्य।

नायण – नायक जाति की स्त्री, नायक की पत्नी।

(नायण ने भेजी रखवालेरे। मा. लो. 496)

नार – चढ़ाव, सीढ़ी, जीना, स्त्री, औरत, पत्नी। (घर की सुन्दर नार। मा. लो.549)

नारक्यो – पु.– गाय का बछड़ा जिसकी उम्र तीन वर्ष की हो और जिसे बधिया न किया गया हो, नार्यो।

नारंगी – स्त्री.– संतरा।

नार – स्त्री.– नारी पु. शेर, नाला।

नारद – पु.– ब्रह्मा के पुत्र, देवर्षि नारद।

नारदो – गन्दे पानी का नाला, मलमूत्र बहाव का स्थान।
तम बेठो हो नारदा रे मुंडे सूरज भले उगीयो। (मा.लो. पृ. 286)

नाररी – स्त्री.– देख रही, निहार रही।

नाराज – वि.– अप्रसन्न, रूष्ट, खफा।

नाराण – पु.– नारायण, विष्णु।

नारी – स्त्री.– औरत।

नारू – पु. – नहरूआ नामक रोग।

नारेल, नारेल – पु.– नारियल।

नारेला – पु.– नारियल।

नारो/नार्यो – पु.– देखना, सामंद में एक वर्ष तक चलने वाला बैल।
(आँटा बंद छोगा रा नीचा कईं नारो हो नजर भर नारो। मा.लो. 520, 728)

नाल्ड़ो – पु.– शेर।

नाल – स्त्री.– कमलनाल, कुमुद आदि फूलों की डण्डी, पौधे का डंठल, चढ़ावा, पशुओं को दवा आदि पिलाने के लिये तैयार की गई बाँस की पोली नलिका, नाला, गटर, सुनारों की फूँकनी, आँवलनाल, नाड़ा, गेहूँ–जौ आदि का डंठल, बंदूक की नाल, सीढ़ीदार चढ़ाव, सोपान।

नाल वई – क्रि.– गर्जना की, आवाज हुई।

नाळवो – पु.– पशुलिंग।

नालायक – वि. –अयोग्य, जो लायक या पात्र न हो।

नालिस – स्त्री.– न्यायालय में या किसी बड़े के सामने किसी के विरुद्ध फरियाद, अभियोग।

नाली – स्त्री.– जल बहने का छोटा नाला, गटर।

नालो – पु.– सोता, झरना।

नाँव – सु.– नाम (काँई छे थारो नाँवरी)।

नाव – स्त्री. –नौका।

नाँवण – स्त्री.– नाई की स्त्री।

नावली – स्त्री.– जिस यन्त्र से बीज वपन किया जाता है, नाई।

नावी – पु.– नाई।

नासका – स्त्री.– सूँघनी, पिसा हुआ जर्दा जिसमें चूना- लोंग व जायफल मिला होता है।

नास्ता – पु.– जलपान की वस्तु।

ना सजाय – वि.– अभिशाप देना, अभिशाप के शब्द, नाश हो।

नासपीटो – वि.– एक मालवी गाली, सर्वनाश होने का भाव, अभिशाप।

नास्तिक – पु.– अनीश्वरवादी।

नासूर – वि.– घाव से पीव बहना, वह छोटा घाव जिससे बार–बार मवाद निकलता रहता हो, नाड़ी, व्रण।

नाहीं – अव्यय–नहीं, कभी नहीं का भाव, मनाही।

नि

नि – अव्यय–नहीं ही, कभी नहीं का भाव।

निकम्मो – वि.– जो कोई काम न करता हो।

निकलवई के – क्रि.- निकलवा करके।

निकलनो – क्रि.– निकलना, बाहर आना या जाना।

निका – पु.अ.– मुसलमानी विधि अनुसार होने वाला विवाह।

निकाल – पु.– निकास, निर्णय, सुनवाई।

निकाला – क्रि. – निकालने का मार्ग या रास्ता।

निकाल्यो – निकाल दिया, निकाल देना, निकाल बाहर कर देना।
(सुई का नाका में हत्थी निकाल द्यो। मो.वे. 70)।

निखट्टू – वि.– जो कुछ कमाता न हो।

निखालस – वि.– स्पष्ट, विशुद्ध।

निगराणी – स्त्री.– निरीक्षण, देखरेख।

निगा – स्त्री.– दृष्टि।

निगाह – स्त्री.– दृष्टि।

निगे नी आवे – क्रि.– दिखाई न देवे।

निंगोरनो – मना करना, कामचोर, बन्धन में से सिर निकाल देना, निकालना।

निच्छे – वि.– निश्चय, अवश्य।

निचई – वि.– नीचापन, नीचे की ओर का, नीचता।

निचलो – वि.– नीचे वाला, नीचे का।

निचोई दूँ – क्रि.– निचोड़ दूँ, निचोड़ने का कार्य करना।

निचो के – कृ.– निचो करके, निचोड़ने का कार्य करना।

निचोड़ – निचोड़ना, कथन का सारांश, खुलासा, तत्व, सार, निष्कर्ष, परिणाम, वह अंश जो निचोड़ने से निकले।

निचोणो – निचोड़ना, निचोड़ देना, निचोड़ने का कार्य करना, नितार कर, रस निकालकर के।
(चतर थारा भायला पचरंग्यो निचोयों जी राज। मा.लो. 618)

निछावर – स्त्री.– मंगलकामना हेतु उसके सिर के ऊपर से कोई वस्तु घुमाकर दान करना।

निजात – वि.– छुटकारा।

निडर – वि.– जिसे किसी का डर न हो, निर्भय।

नित – अव्य.– नित्य।

नित करम – पु.– नित्य के काम।

निंदई – स्त्री.– निराई, गुड़ाई, नींदने की क्रिया।

निंदरा, निदरा – स्त्री.– नींद, सोना, निन्दा, बुराई।

निंदा करण्यो – वि.– बुराई या निंदा करने वाला, निंदक।

निदान – पु.– आखिरकार, अन्त परिणाम।

निंदा – स्त्री.– बुराई।

निंदा वानी – स्त्री.– निंदा वाली बोली, निंदा करने वाली भाषा।

निंदाड़णो – निंदाई-गुड़ाई करवाना।
(म्हारा रूपाला खुरपी निंदाडूँ आँबा आमली।)

निंदाणो – क्रि.– निंदवाना, कृषि की खरपतवार उखाड़ना।

निंदालू – वि.– अधिक सोने या शयन करने वाला व्यक्ति।

निंदिया – वि.– नींद, शयन, निद्रा।

निधन – पु.– विनाश, मृत्यु।

निपज – पु.– उपज, पैदावार, उत्पाद क्रि.- उपजना, उत्पन्न होना, पैदा होना।

निपजणो – क्रि.– उत्पन्न होना।

निपट – अव्य. – बिल्कुल, केवल।

निपटणो – क्रि. – निपटना, निवृत्त होना, फारिग होना।

निपटाणो – क्रि.– पूरा करना, समाप्त करना, निपटाना।

निपटारो – पु.– निपटारा, समाप्ति, फैसला।

निपुतऱ्यो – पु. – वंशहीन, पुत्रहीन,सन्तान-रहित, निःसन्तान।

निबजी – क्रि.– उत्पन्न हुई।

निबाणो – क्रि.– निर्वाह करना, निभाना।

निबेगी – पु.– निर्वाह होगा, निभ जाएगा।

निबेड़ो – पु.– छुटकारा, पूरा करो।

निबोरी – स्त्री.– नीम का फल।

निभणो – क्रि.– निभना, निर्वाह होना।

निभाव – वि.– निर्वाह।

निभावणो – क्रि.– सफल बनाना, निभाव करना।

निमाड़ो – कच्ची ईंटे, मिट्टी के बर्तन पकाने का कुम्हार का भट्टा, आँवा।

निम्बू – पु.– नींबू।

निमित – वि.– निमित्त, हेतु, बहाना।

नियम – पु.– रीति, कायदा।

निरच्छर – वि.– अनपढ़, अपढ़, गँवार, अक्षर ज्ञान रहित।

निरखो – क्रि.– देखो।

निरगुन – वि.– गुणरहित, निराकार, परमात्मा।

निरतकला – वि.– नृत्यकला।

निरदई – वि. निर्दयी, दया रहित, कठोर हृदय, ममताहीन।

निरधार – पु. – बिना आधार के, आधार रहित।

निरणे, निरने – पु.– निर्णय, प्रातःकाल बिना खाये–पीये।

निरफल्या – वि.– निष्फल, व्यर्थ, बेकार।

निरबे निवास – निश्चिंतता होना, किसी बात की भी चिंता न होना, बेफिक्र।

निरमोई – वि.–निर्मोही, मोह या ममता-रहित, कठोर हृदय, वीतराग।

निरस – वि.– रसहीन।

निराकरण – निर्णय।

निराव – पशु को घास डालना।
(साँडड़ली ने पावो नरखो दूद निरावो रे नागर बेलड़ी जी। मा.लो. 326)

निरास – वि.– आशारहित, निराश, ना उम्मीद, निराश होने का भाव।

निरासत – स्त्री.– आशारहित।

निराहार – वि.– बिना भोजन, उपवास।

निरोगी – वि.– रोगरहित, स्वस्थ, चंगा।

निरलज्ज – वि.– बेशर्म, लज्जारहित।

निरलेप – वि.– निर्लिप्त।

निरलोभ – वि.– जिसे लोभ न हो।

निरवाह – पु.– निबाह।

निरांजन – स्त्री.– आरती।

निवरो – वि.– फालतू, खाली, बेकाम, बेकार, फारिग, निवृत्त, निष्क्रिय।

निवारो – दूर करना, हटाना, निवारण करना, छोड़ना, रोकना।
(म्हारी आवागमन निवारो व्यास गुरुजी मा.लो. 653)।

निवास – पु.– रहने का स्थान, आवास।

निवालो – पु.– भोजन का ग्रास, कौर।

निस्फल – वि.– व्यर्थ, विफल।

निसरणी – न.– निसेनी, लकड़ी या लोहे की की सीढ़ी।

निसर्या – क्रि.– निकले।

निसल्लो – वि. – जिद्दी, हठी, निर्लज्ज, कामचोर, ढीठ, बेशर्म।

निसाण, निसान – पु.– चिह्न, पहिचान, निशाना, पताका, नगाड़ा।
(मथुरा रा वाजा हो बाजीया, गोकुल में घोर्या हे निसाण। मा.लो. 38)

निसाणी, निसानी – स्त्री. स्मृति, चिह्न।

निसाणो, निसानो – पु.– निशाना लगाना, निशाना, औजारों की धार बनाने का पत्थर या सिल विशेष।

निसास – वि.– निःश्वास।

निहारतो – क्रि.– देखता हुआ।

निहाल – वि.– न्योछावर।

निहेणी – निसन्नी, सीढी।

नी

नी – अव्य. – नहीं, मना करना, नहीं तो, कोई नहीं।
(नी तो कंई तमारा सामे बुद्धू बना। मो.वे. 53)

नीका – अच्छा, अच्छा लगना।
बुवारो लिकारो वउवड़ लागो थें नीका।

नी तेजरी – न एकांतरा, (एक दिन छोड़कर आने वाला बुखार)

नीबजऊ – जिसमें अधिक उपज हो, उर्वर, उन्नत खेती।

नीबजणो – पैदावार होना, उपजना, अधिक अनाज पैदा होना, उत्पन्न होना, उत्पादन होना।
(इन्दरजी आप वरसो तो धरती नीबजे। मा.लो. 615)

नी बणे – सम्भव नहीं है, नहीं करना है।
(ऐसो तो हमारा से नी बणे, जाओ गोरी अपणा मेल। मा.लो. पृ.62)

नीबजे – उपज पैदावार, उत्पादन, परिपक्क करना, उन्नत खेती।
(हल्दी गांठ गठीली हल्दी भोत रंगीली नीबजे ओ बालू रेत में। मा.लो. 372)

नीर – पानी, जल, कांति, आभा, शोभा। (आसपास बरसे हे रुमझुम नीर। मा.लो. 607)

नीरकंच – कंचन जैसा स्वच्छ, काच के समान स्वच्छ जल।

नीरखनो – देखना, परखना, निहारना।

नीं द – निद्रा, सोने की अवस्था, शयन करना, आराम करना, विश्राम करना।
(नींदाँ में क्यों जगाई हो राज। मा. लो. 540)

नु/ने

नुकतो – न.– मंगल श्राद्ध, मृत्यु भोज, नैमित्तिक भोज, अवसर, मौका, मृत्यु के बारहवें दिन बनाया जाने वाला भोजन।

नुगरा – कृतघ्न।
(हो राजा नुगरी हालरी री माय।)

नेऊ – वि.– नब्बे, नब्बे की संख्या।

नेग – न.– उत्सव के अवसर पर दिया जाने वाला उपहार, पुरस्कार, बख्शिश, दस्तूर।
(सुसराजी दो म्हारी वरद को नेग वरद हम भरी लाया जी। मा. लो.338)

नेज – पानी खिंचने की रस्सी, डोल में बँधी रस्सी।
(धणी थारे नीचे मसूर की नेज। मा. लो. 656)

नेजो – पु.– भाला, बरछी, होली के बाद मनाया जाने वाला एक लोकोत्सव, जिसमें स्त्रियाँ गोल घेरे में घिरे पुरुषों को लकड़ियों से पीटती हैं तथा पुरुष लकड़ी के सहारे अपना बचाव करते हैं, विश्वास, आस्था।
(नेजो ढाली दीजो। मा.लो.657)

नेछावर – स्त्री.– निछावर, न्यौछावर, वारना।

नेठू, नेठूज – अव्य.– बिल्कुल, सब कुछ।

नेड़ो – अव्य.– पास, निकट।

नेण – स्त्री.– गाड़ी या सामंद के जूड़े को सन्तुलित व मजबूती प्रदान करने वाली रस्सी, सं.- आँखें, नेत्र।

नेतणों – रवई, मथनी की रस्सी।

नेतरो – बिलोना या बिलोने की रस्सी, नेती अंगोछा।
(दारी मेल्यो परेन्डे हेटे बाँगड़ छेल भँवरजी को नेतणो। मा.लो. 502)

नेतो – पु.– अगुआ, मुखिया, नायक, छाछ के मटके के मुँ ह पर लगने वाली लकड़ी या यन्त्र, माकड़ी।

नेती – स्त्री.– मथानी की रस्सी।

नेन – नयन, आँखें, भौंहे, नेत्र।
(बड़े नेन दिया मृगनेनी को। मा. लो. 696)

नेनाँ – स्त्री.– आँखें, नेत्र।

नेफो – पु. फा.– पाजामे, लहंगे, तकिये आदि की वह जगह जिसमें रस्सी या डोरी पिरोई जाती है।

नेम – पु.– नियम, रीति, व्रत।
(नेम धरम माता। मा.लो. 676)

नेमणूक – स्त्री.– वार्षिक वेतन के रूप में मंदिर के पुजारी, महंत, फकीर आदि को दिया जाने वाला अनाज, धन आदि।

नेमत – स्त्री.– न्यामत, दुर्लभ।

नेर – वि.– तिरछापन, टेढ़ापन, नहर।

नेर काड़ी – क्रि.– तिरछापन दूर किया, नहर निकाली।

नेरनी – काँटा निकालने का औजार।
(नावी दीदी नेरनी गाछा घरे जाए रे भई। मा.लो.135)

नेवतो – न.– छपरे की किनारी जिसमें होकर बरसात का पानी नीचे टपकता है,

छपरे से पानी का टपकना, ओलती में से पानी गिरना।
(ऊ नेपता सरीको। मो.वे. 55)

नेरो – पु.– नेहरे के अन्दर, बाड़े में।

नेवरी – स्त्री.– पैरों का आभूषण।

नेवेद – पु.– देवप्रसाद, ठाकुरजी का भोग।

नेवल्यो – पु.– नेवला, गिलहरी की जाति का एक जन्तु जो साँप को भी मार डालता है।

नेजा – पु. – हुक्का पीने की लचीली नली।

नेय्या – स्त्री.– नाव, नौका।

नो

नो – वि.– नौ की संख्या।

नोकल्याँ – स्त्री.– खाल, नाला।

नोकर – न.– नौकर, सेवक, चाकर, नौकरी करने वाला।
(घर को सब काम काज नोकर करे। मो.वे. 55)

नोकरी – स्त्री.– काम।

नो खण्ड – नौ खण्ड।

नो गिरे – पु.–सूर्य, चंद्र, भौम, गुरु, शुक्र, शनि, राहू और केतु ये ज्योतिष के नौ ग्रह हैं।
(नागा को नो गिरे बलवान। मो. वे. 37)

नोगरी – हाथ के पहुँचे का एक गहना, नौ कोठों में, नौ गृहों के नौ रत्नोंवाला पहुँचे में पहना जाने वाला एक गहना, नवगृही।
(कींकोंड़ा की नोगरी मूला की लम्बी चोंटी लायो म्हाराज। मा. लो. 440)

नोचणो – क्रि.– बाल उखाड़ने की चिमटी, केश लुंचन, उखाड़ना।

नोट – पु.– कागजी मुद्रा।

नोटिस – स्त्री.– चेतावनी, सूचना, नोटिस।

नोतणो – न्यौता देना, निमंत्रण करना, मनुहार करना, बुलाना।
(बेन भाणेज नी नोतिया। मा. लो. 681)

नोतो – न.– न्यौता, निमंत्रण, आमंत्रण।
(आज कणी कणी घर को नोतो रे कागला। मा.लो.127)

नोदन – वि.– नौ दिन।

नोधा–भगती – स्त्री.– भक्ति के नौ प्रकार-श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन,अर्चना, वंदना, संख्य, दास्य और आत्म-निवेदन।

नोन – पु.– लवण, नमक।

नोफत – स्त्री.– बड़ा नगाड़ा, नौबत।

नोबत – स्त्री. फा.– नगाड़ा, बारी, पारी।
(दीली रा दर बाजे नोबत बाजे। मा.लो. 566)

नोमख – वि.– नौ मुँह का या समई।

नो मण – नौ मण, पुराने तोल से चालीस सेर का एक मन।
(नो मण पीग्यो भांग। मा.लो. 687)

न्यारा – वि.– भिन्न, अलग, निराला।

न्याल – निहाल, न्यौछावर।

नो रतन – पु.– नवरत्न।

नोरताँ – नवरात्र, नये दिन, नवदुर्गा, क्वार सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के दिवस, जिसमें नवदुर्गा का पूजन होता है। मालवा एवं गुजरात का एक लोकोत्सव।
(माता देवी ना आया नोरताँ ए माय। मा.लो. 661)

नो रस – वि. –श्रृँगार, हास्य, वीर, वीभत्स, रोद्र, भयानक, अद्भुत, शांत, करुण।

नोरा – गरज, आग्रह, बाड़े वाला पशुघर।

'नो'

नोरात्र – पु. – चैत्र सुदी प्रतिपदा से नवमी तक के दिवस, जिसमें नवदुर्गा का व्रत और पूजन हाता है। मालवा एवं गुजरात का एक लोकोत्सव, नवरात्र।

नोलख – वि.– नौ लाख।

नोळी – कमर में बाँधने की कपड़े की थैली जिसमें रुपये भरे रहते हैं। बसनी। (हाथ भरे की नोली लाजो जदी म्हारा खेड़े आजो रे। मा.लो. 386)

नोल्यो – पु.– नेवला।

नोवां – वि.– नौवाँ, ना का।

नो सर – वि.– नौ लड़ियों वाला हार।

न्यारी – अनोखी, अलग, नियारी, जुदा, भिन्न, निराली। पलक उगाड़ो न्यारी।

न्यालदेजी – निहाल देव, एक राजकुमार, निहाल करना, दूसरों का भला करना। (बीच माय झूले जी अरे कँवरी मानो न्यालदे जी। मा.लो. 607)

न्याल वेणो – निहाल होना, न्योछावर होना।

न्हाटणो – भागना, भाग जाना, चले जाना, गुम हो जाना। (थारी माता जाय न्हाटी, म्हारा दादाजी लावे पाछी। मा.लो. 420)

न्हाणो – नहाना, स्नान करना, भागना। (लाड़ली आपरे कारणे नत का थावर न्हाया हो राज। मा.लो. 456)

न्हाया – नहाना, स्नान करना, डुबकी लगाना। (गंगा नी न्हाया नी गोमती। मा. लो. 681)

न्हार – न.– शेर, सिंह, नाहर। (माता नइ खाइ म्हने बन रा न्हार। मा.लो. 603)

'प'

प – प वर्ग का अक्षर।

पइ – स्त्री. – पुराने नाप का एक बर्तन। मिली, प्राप्त हुई, पहिया।

पइके – क्रि. – प्राप्त करके, पा करके।

पइड़ो – पु.सं. – पहिया, चक्र।

पइया – पु. – पैसे, पहिया, चक्र।

पइयो – पु. – पैसा, पहिया, चक्र।

पइसा – वि. – पैसा, सिक्का।

पकड़ – क्रि. – कुश्ती का एक दांव, गिरफ्त।

पकड़णो – क्रि. – पकड़ना, थामना, रोकना, तक की बात पकड़ना।

पकड़ापाती – क्रि.वि. – बाल क्रीड़ा का एक प्रकार।

पकवान – वि. – पका हुआ अन्न, पकवान्न।

पक्को – वि. – पक्का, पका हुआ, घुटा हुआ, गठीला, दृढ़, स्थिर, पक्की बात।

पक्को रंग – वि. – चौसर में लाल और पीली गोटियाँ, पक्का रंग, काला रंग।

पकाणो – क्रि. – पकाना।

पकोड़ा – पु. – बेसन का बने भजिया।

पखवाड़ो – पु. – पन्द्रह दिन का पक्ष।

पखाण – पु. – पत्थर।

पखाल – स्त्री. – मशक, मसक, पानी का थैला।

पखावज – स्त्री. – मृदंग।

पखारनो – क्रि. – धोना।

पखालनो – क्रि. – प्रक्षालन करना, धोना।

पंखो – पु. – पंखा, व्यंजन।

पग – पु. – पैर, पाँव।

पग उल्ला वेणा पग फोरा वेणा – पैरों की स्फूर्ति के लिये पैरों में हलचल होना।

पगड़ा – पु.ब.व. – पैर।

पगड़ी बंद – क्रि.पु. – पगड़ी बाँधने वाले, स्वजाति के मनुष्य।

पगड़ी बदल – पु. – एक दूसरे से पगड़ी बदलने वाले, पगड़ी बदल भाई।

पगडंडी – स्त्री. – पैदल रास्ता, पगडंडी मार्ग।

पंगत – स्त्री. – पंक्ति, पाँत, कतार, एक साथ भोजन करने वालों की कतार या पंक्ति।

पगतली/पगथरी – स्त्री. – तलुवा, पैर का तला।
पग पावड़ी – खड़ऊ। (गुणा भई हात चंट्यो ने पग पावड़ी। मा. लो. 203)
पगफेरो – आगमन, प्रथम पदार्पण।
पगरनी – स्त्री. – पद चिह्न, पैरों के निशान, पैरों में पहनी जाने वाली जूतियाँ और उनके जमीन पर बने हुए चिह्न।
पगरवो – स्त्री.– पद चिह्न, पैरों के निशान।
पगल्या – पु. – पदचिह्न, पैरों के निशान जो प्रायः किसी की स्मृति के फलस्वरूप शिला पर अंकित किये जाते हैं। (पगल्या रा माँडण। मा.लो. 74)
पगरखी – स्त्री. – जूते।
पगरमा – स्त्री. – पाँव के चिह्न, पद चिह्न।
पगार – पु. – वेतन, तनख्वाह।
पगाँ पगाँ – क्रि.वि. – पैदल।
पलागणो – क्रि.वि. – चरण स्पर्श करना।
पगाँ पड़ी – क्रि. – पैरों में गिरी, चरणावत हुए।
पंगेरी – स्त्री. – ज्वार के डंडे का एक टुकड़ा या हिस्सा, गन्ने का टुकड़ा।
पघरई – वि. – पर्याप्त वस्तु होना, चाही गई वस्तु का पर्याप्त मात्रा में संग्रह होना।
पघरमा – स्त्री. – पाँवों के निशान, पद चिह्न।
पघलई – वि. – पर्याप्त धन या वस्तु का होना, सरस हृदय होना,
क्रि– पिघलाया।
पंच – वि. – पाँच की संख्या या अंक, समुदाय, समाज, जनता, लोग, कुछ आदमियों का चुना हुआ दल जो झगड़ा या मामला निपटाने के लिये नियत हो, जिसका निर्णय दोनों पक्षों को मान्य हो, न्याय करने वाला समाज, पंचगण।
पंचक – पु. – धनिष्ठा से रेवती तक पाँच नक्षत्र जो ज्योतिष में अशुभ माने जाते हैं।
पंचकन्या – स्त्री. – अहिल्या, द्रौपदी, कुंती, तारा और मंदोदरी ये पाँच स्त्रियाँ, जो सदा कन्या के समान मानी जाती हैं।
पचड़ो – वि. – बखेड़ा, प्रपंच, झंझट।
पंचकोसी – पु. – पंचक्रोशी, पाँच कोस के घेरे में काशी या उज्जयिनी की परिक्रमा।
पंच गंगा – स्त्री. – गंगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा, इन पाँच नदियों का समूह या संगम।
पंच गव्य – पु. – गौ से प्राप्त होने वाले ये पाँच द्रव्य, दूध, दही, घी, गोबर और मूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते हैं।
पंच गोड़ – सारस्वत, कान्यकुब्ज , गौड़, मैथिल और उत्कल इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।
पंच तत्त्व – पु. – पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश, पंच भूत।
पंचत्व – पु. – मृत्यु, मौत।
पंचदेव – पु. – आदित्य, रुद्र, विष्णु, गणेश और देवी ये पाँच देव।
पंच द्रविड़ – पु. – महाराष्ट्र, तैलंग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड़ इन पाँच प्रकार के ब्राह्मणों का वर्ग।
पंच नद – पु. – सतलज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम ये पाँच नदियाँ जो सिन्धु में गिरती हैं। पंजाब प्रदेश।
पंचनामो – पु. – वह कागज जो वादी और प्रतिवादी अपना झगड़ा निपटाने के लिये पंच के समय लिखते हैं।
पंच पकवान – वि. – बढ़िया, भोजन, पाँच प्रकार के व्यंजन।
पच पेले – पु. – बालक के जन्म पर दिये जाने वाले वस्त्र।
पंच प्राण – पु. – शरीर में रहने वाले ये पंच प्राण- प्राण, अपान, उदान, व्यान और समान।
पंचमी – हर पक्ष की पाँचवीं तिथि।
पंचायत – स्त्री. – किसी विवाद या झगड़े का

निपटारा करने के लिये चुने हुए लोगों का समाज या दल।

पंचायती – वि. – पंचायत सम्बन्धी, साझे का।

पंचाली – स्त्री. – पांचाल देश की स्त्री, द्रोपदी।

पचणो – क्रि. – पचना, पचा जाना, हजम करना, पकना, परेशान होना।

पचन – क्रि. – पचने की क्रिया।

पचाण – वि. – जान पहिचान।

पंचो – स्त्री.– पाँच हाथ का वस्त्र, अंगोछा या धोती।

पंचांग – पु. – तिथि वार, ग्रह, नक्षत्र, योग और करण आदि पाँच का मेल।

पचाण – वि. – पहिचान।

पचरंगी – वि. – पाँच रंगों से बनी हुई पगड़ी आदि।

पचड़ो – वि. – प्रपंच।

पचेड़ी – स्त्री. – पाँच हाथ लम्बी धोती या अंगोछा या चादर।

पचोर – पाँच।

पचोल – वि. – पाँच का समूह।

पछवाड़ो – अव्य. – पीछे की ओर, पीछे का भाग, घर का पिछला भाग, पीछे, पिछे का बाड़ा।
पछवाड़े पडे पछगंवो जोग माया। मा.लो. 664)

पछताणो – पछताना, पश्चाताप करना, पछतावा, अफसोस।
(माता कोशल्या करे आरती केकई मन पछताई। मा.लो. 695)

पछाड़णो – क्रि. – पटकना, गिराना।

पछाड़ी – वि. – घर का पिछला हिस्सा, पीछे।

पछाण – वि. – पहिचान।

पछी आजो – क्रि. – फिर से आना।

पंछीड़ा – पु. – पक्षीगण।

पछेड़ी – चादर, पाँच हाथ का वस्त्र।

पछेताणा – क्रि. – पछताना, पश्चात्ताप करना।

पछाड़ – वि. – गिराना, पछाड़ना, मूर्छित होकर जमीन पर गिर पड़ना।

पट – पु. – वस्त्र, कपड़ा, दरवाजे का पर्दा, कपाट।

पटकणी – क्रि. – गिराना, पछाड़ना।
(परोड़ा रा पटक्या रे वाने पापड़ भावे। मा.लो. 435)

पटकना – क्रि. – गिराना, पछाड़ना।

पटना – क्रि. – जमीन को समतल करना, गड्डे आदि पूरना, लेनदेन चुकाना, बिहार का एक शहर।

पटमंजो – पु. – पट्टी धोने वाला।

पट्टा, पट्टो – पु. – जमीन जायदाद का प्रमाण पत्र, बाल काढ़ना।

पटराणी – स्त्री. –राजा प्रधान या पहली विवाहिता स्त्री।

पटलन – स्त्री. सं. – ग्राम प्रधान की स्त्री, पटेल की पत्नी।

पटवा – पु. – गहनों में मनकों का दाना पिरोने वाली जाति।
(पटवा रो बेटो। मा.लो. 589)

पटसार, पटसाल – स्त्री. – बरांडा, पाठशाला, विद्यालय।
(बंदई दूँ पटसाल। मा. लो. 56)

पटेल – पं. – ग्राम प्रधान, तोजी वसूल करने वाला अधिकारी।
(पटेली पे। मो.वे. 38)

पटाइल्यो – क्रि. – अपने पक्ष में कर लिया।

पटापट – क्रि. वि. – शीघ्र, तुरन्त।

पटाका – पु. – पट या पटाक शब्द से छूटने वाली गोली के आकार की आतिशबाजी, तमाचा, थप्पड़।

पटायो – वश में करना।

पटाव – पु. – पाटने की क्रिया या भाव, पाट कर, समतल या ऊँचा किया हुआ अंश या स्थान। छत का पटाव।

पटावणो – प्रलोभन देना, झूठा आश्वासन देना, फुसलाना।

पटा लकड़ी – स्त्री. – एक क्रीड़ा, लकड़ी पर लकड़ी का वार झेलना।

पट्टाबाज – पु. – पटा खेलने वाला, पठैत।

पटियो – स्त्री. – पटिया, पाटा।

पट्टी – स्त्री. – तख्ती या पट्टी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते हैं, पाटी, पटिया, तख्ती, पाठ, सबक, उपदेश, बुरी नियत से दी जाने वाली सलाह, लकड़ी का गज, चमड़े आदि की लम्बी धज्जी।

पटेल्या – पु. – पटेल की, ग्राम प्रधान की।

पटोली – वस्त्र, पट्ट।

पठार – पु. – लकड़ी या पत्थर का पाटा, जमीन समतल करने वाला कृषि उपकरण, बरांडा।

पट्ठा – मोटा पत्ता, गँवार पाठा, उल्लू का पट्ठा।

पड़ – वि. – स्तर, पुट, गिरना।

पड़गी – स्त्री. – पेंदी, धरिया, क्रि. – गिर गयी।

पड़ग्या – क्रि. – गिर गये, पढ़ गये।

पड़छणो – बारात लेकर वर वधू के दरवाजे पर पहुँचता है तो सास उसे बधाती है और विवाह मंडम में ले जाती है, दूल्हे को सम्मानित करना। (लावो रे सीस री काँगसी इना वर ने पड़छो रे। मा.लो. 416)

पड़छंग – प्रतिध्वनि, आवाज, आवाज गुंजना, स्वर, सुर। पछवाड़े पड़े पड़छंग वो जोगमाया गरबो रमे। मा.लो. 664)

पड़छो – नतीजा, रसोई बनाने का बड़ा कढ़ावा, देवी देवता की शक्ति, सच्चा प्रमाण। (ऊब थने पड़छो वतऊँ रे लाल। मा.लो.78)

पड़जी – बदले में, एवज में।

पड़ पो बारा – क्रि.वि. – चौपड़ के पाँसे गिराने की कला।

पंडतई – स्त्री. – पंडिताई, पंडित का कार्य, पूजा पाठ।

पड़ता दन – उतरती स्थिति, अवदशा, पतन, अवनति, वृद्धावस्था, बुढापा, गिरते दिन।

पड़दो – न. – आड़ करने के लिये लटकाया हुआ कपड़ा, परदा, आड़, ओट, छिपाव, कान की झिल्ली।

पड़्या लक्खण – क्रि.वि. – पड़ी हुई आदतें।

पड़्यो – वि. – पड़ा हुआ, पड़ा, रखा हुआ, रखा है, गिरना। (आखो नाम पड़्यो। मो.वे.80)

पंडत – पु.– पंडित, पंडिताई करने वाला ब्राह्मण, विद्वान्।

पंड भरणो – क्रि. – मृतक श्राद्ध करना।

पडंगा – वि. – फाँका, भूकमरी।

पडताल – वि. – जाँच, परखना।

पड़त – वि.– बंजर जमीन, परती जमीन।

पड़दी – स्त्री.– एकहरी ईंट से बनी दीवार।

पड़ती – स्त्री. – जोतने बोने योग्य वह जमीन जो कुछ समय से खाली पड़ी हो, जोती बोई न गई हो, पड़ी हुई या बंजर जमीन।

पंडव – पु. – पांडव।

पड़लो – वर पक्ष वाले वधू के लिये कपड़े, जेवर, मेवा, मेहेंदी, चूड़ी आदि मांगलिक वस्तुएँ लेकर उसके घर जाते हैं। (बना रे पड़ला रो मीसरु हजार। मा.लो. 406)

पड़वा – न. – प्रतिपदा, एकम तिथि, प्रत्येक (पक्ष की पहली तिथि। पड़वा भी दूज हे। मो.वे.80)

पड़वाण – अति वर्षा से धरती से जल फूटकर निकल कर बहना।

पड़स – आड़, परदा या पड़। (सूरज उगो हो केवड़ा री या पडस के वाणोल्या भले ऊगीयो। मा.लो. 286)

पंडाल – पु. – सभा, मंडप।
पड़ाणो दोगा – क्रि.वि. – पढ़ाना।
पड़िया – स्त्री. – पाड़ी, भैंस की बछिया।
पड़ियार – पु.सं. – प्रतिहार, मालवा के सों धियों का एक गौत्र।
पड़ीगी आँटी – वि. – उलझन पड़ गई।
पड़ी ने चढे – क्रि.वि. – जो गिरता है वह चढ़ता है, गिरकर ही ऊपर चढ़ता है।
पड़ेत्यो – बंजर जमीन, वह जमीन जो पड़त ही पड़ी हो, खाली पड़ी हो, जोती बोई न गई हो।
पंडेरी – स्त्री. – पानी के घड़े रखने का स्थान।
पड़ोसी – पु. – आसपास का समीपवर्ती स्थान।
पड़ोसी – पु. – पड़ोस में रहने वाला।
पड़ोसण – स्त्री. – पड़ोस में रहने वाली स्त्री।
पड़नो – क्रि. – पढ़ाई करना।
पड़इयो – पु. – पढ़ने वाला, दिन रात पढ़ने लिखने वाला।
पण – अव्य.–परन्तु, पर, प्रण, प्रतिज्ञा। (पण हाँजी। मा.लो. 446)
पणियार – स्त्री. – पानी भरकर ले जाने वाली स्त्री।
पणियारी, पनियारी – स्त्री. – पानी भरने वाली स्त्री।
पणी, पनी – स्त्री. – जूती, जूतियाँ।
पणो – कच्ची हरी केरी को उबालकर शकर जीरा काला नमक काली मिर्च मसाला डालकर पानी के साथ तैयार किया गया पाचक रस, पानक रस गर्मी में पीने से लू नहीं लगती है।
पत – वि. – विश्वास। (जावो जी जावो मेरे अंगना से में पत राखुँ तुमारी। मा.लो. 579)
पत करणो – क्रि. – स्वीकार करना, मान लेना।
पतंग – पु. – पक्षी, चिड़िया, शलभ, टिड्डी, सूर्य, हवा में उड़ने वाला कागज का प्रसिद्ध खिलौना, गुड़ी।
पतन – पु. – गिरना।

‘प’

पतर – पु. – पत्थर, पतरा।
पत्तर – स्त्री. – पत्ता, पत्र।
पतर दैवत – पु. – पत्थर के देवता।
पतरा – पु. – टीन के चद्दर, लोहे का पत्रा।
पतरी – स्त्री. – चिट्ठी, खत, कोई छोटा लेख, पत्रिका।
पतरो – पु. – टीन का चद्दर।
पत्तो – पु. – पत्ता।
पतरिका – स्त्री. – पत्रिका।
पत्तल – स्त्री. – पत्तों की थाली।
पतली – वि. – महीन, बारीक।
पतली पेमा – स्त्री. – दुबली या क्षीणकाय स्त्री, संजा की एक आकृति।
पतलून – स्त्री. – अंग्रेजी ढंग का मोटे कपड़े का पायजामा।
पता – पु. – किसी ठोर ठिकाने का नाम पता, ठिकाना या स्थान सूचित करने वाली वह बात जिससे किसी तक पहुँच या किसी को पा सकें।
पतासा, पतासो – पु. – बताशे, शकर की चाशनी से बनाया गया पदार्थ।
पतिवरता – वि. – जो स्त्री अपने पति में अनन्य अनुराग व श्रद्धा रखती हो। (पतिव्रत नार पुत्र बिन तरसे। मा. लो. 696)
पतीलो – स्त्री. – तांबे या पीतल से निर्मित बटलोई, तपेली।
पतोड़ – पु. – बेसन के घोल से बना पदार्थ जिसे थाली में जमाकर बघारी छाच में डाला जाता है।
पत्तो – पत्ता।
पथ, पंथ – पु. – फिरका, सम्प्रदाय, मार्ग, रास्ता।
पथर्‍यो – पु. – घोड़े-घोड़ी की पीठ पर बिछाने की गादी, छोटी गादी जिसे फटे पुराने कपड़ों से बनाया जाता है, बिछाना।
पथराणो – क्रि.वि. – पत्थर की तरह कड़ा हो

जाना, नीरस या कठोर हो जाना, स्तब्ध।

पथरी – स्त्री.– पेट की बिमारी जिसमें पत्थर जैसा बन जाता है।

पथाय – पु. – गोबर के उपले थापना।

पंथी, पंथीड़ो – पु. – यात्री, गुरु भाई, पंथ का अनुयायी, मुसाफिर।

परथी – पृथ्वी। (परथी सब रस खाय।)

पद – पु. – पाँव, उपाधि।

पदक – पु. – तमगा।

पदम – पद्म कमल, राजसी चिह्न, पैरों के म ध्य का गढ़ा। (पाँय पदम बाजे घुघरा ए माय। मा.लो. 661)

पदम तलई – स्त्री. – पद्म कमल, राजसी चिह्न, पैरों के मध्य का गढ़ा।

पदमणी – स्त्री. – पदमिनी, लक्ष्मी।

पदमाराणी – लक्ष्मी, वासकि नाग की पत्नी।

पदवी – स्त्री. – अधिकार, उपाधि, प्रतिष्ठा सूचक पद, खिताब, पद।

पदमा – स्त्री.–लक्ष्मी, वासुकि नाग की पत्नी।

पद पखारनो – क्रि. – पाद प्रक्षालन करना, चरण धोना।

पद्दत – वि. – पद्धति, ढंग।

पदर लट्ठ – वि. – कहीं भी मिल जाने वाला, ढुलमुल।

पदराओ – क्रि. – स्थापित करो, रखो।

पंदरा – वि. – पंद्रह।

पद्य – पु. – नियमित मात्राओं एवं छन्दों वाली रचना।

पदाड्यो – क्रि. – दौड़ाया, भगाया।

पदाणो – क्रि. – बहुत तंग या परेशान करना।

पदारणो – आना, जाना, आगमन, पधारना, पधारिये।
(आज म्हारा केसरिया परण पदारिया। मा.लो. 451)

पदोकड़ो – पु.वि. – हर कहीं अपान वायु त्यागने वाला।

पधरावणी – स्त्री. – किसी देवता की स्थापना किसी को आदरपूर्वक लाकर अपने यहाँ बिठाना।

पधारनो, पधारणो – क्रि. – किसी आदरणीय का आना या जाना।

पन – अव्य. – परन्तु, लेकिन।

पनघट – पु. – पानी भरने का घाट।

पनचक्की – स्त्री. – पानी के वेग से चलने वाली चक्की या कल।

पनवा लागी – वि. – पत्तों वाली फसलों के कारण उनसे गिरने वाले पत्तों की खाद से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ना, विवाह करने लगी।

पनवाड़ी – पु. – विभिन्न पकवानों से सजे हुए थाल, विविध प्रकार के उत्तम कोटि के भोजन के थाल, पान या ताम्बूल की लता का बगीचा।

पन्सारी – पु. – गंधी, समान या जड़ी बूटी बचेने वाला, परचूनी व्यापारी।

पनहियाँ – स्त्री. – जूतियाँ, मोजड़ियाँ।

पन्नाई – क्रि. – विवाह किया।

पनातल – स्त्री. – ढाक या वटवृक्ष के पत्तों से बनाई गई थालीनुमा पत्तल।

पनाल – पु. – गन्दा पानी बहने की मोरी, गटर, नाली।

पनाह, पना – स्त्री.फा. – रक्षा, शरण।

पना – स्त्री. – कच्ची हरी केरी को आग में भूनकर शकर जीरा आदि के साथ पानी में तैयार किया गया पाचक रस, पानक रस।

पनियाँ भरायलो – क्रि. – पानी भरवा लो।

पनी – स्त्री. – जूती, मोजड़ी।

पन्नी – स्त्री. – राँगे या पीतल का पतला चीरा हुआ महीन झिल्लीदार पतरा, विवाहिता।

पन्नो – पु. – पृष्ठ, एक मणि।

पपइयो – पपीहा, एक पक्षी, वर्षा और बसंत में सुरीली ध्वनि में बोलने वाला एक पक्षी, चातक।
(भायला म्हारा बागाँ आओजी फूलड़ा वीणूँ एकली रे पपइयो बोल्यो जी। मा.लो. 625)

पपोटा – पु. – बच्चों का बाजा, आँख के ऊपर की पलक, पोटा।

पमणई – आतिथ्य, मेहमानगिरी।

पयो – पैसा, सिक्का, धन, दौलत।
(फूटी हांडी खोटो पयो। मा. लो. 649)

प्यारो – वि. – प्यारा, प्रेमी, जिसे लोग बहुत चाहते या पसन्द करते हों।

प्याली – स्त्री. – पहेली, पारसी, कटोरी, बाटकी।

प्यालो – स्त्री. – कटोरा, प्याला।

पर – वि. – अपने से भिन्न, दूसरा, पराया, पीछे या बाद का परवर्ती।

परथ – पड़े या गिरे हुए, अधिक पके हुए।
(जाँबू परथ नी भावे।)

परकट्या – वि. – जिसके पंख या पर कट गये हों, प्रकट हुए।

परकार – पु. – प्रकार, तरह, वृत्त या गोलाई करने का एक उपकरण।

परकासा – पु. – प्रकाश, उजेला।

परकासो – क्रि. – प्रकट करो, स्पष्ट करो, उजागर करो, प्रकाशित करो।
(नेम धरम माता थारो परकासी दीजो। मा.लो.676)

परखइया – पु. – परखने वाला, जौहरी, परीक्षा करने वाला।

परखणो – क्रि. सं. – परीक्षण, पहचानना।
(पथरणो आगो सरके जुँ जुँ व्याण रुप्या परखे। मा.लो. 511)

परख्यो – क्रि. – जाँच की, परीक्षण किया, परीक्षा की।

'प'

परखाऊँ – क्रि. – परीक्षा करवा दूँ, दे दूँ।

परखाणो – देना।

परगट – वि. – प्रत्यक्ष, प्रकट।

परगट्या – पु. – प्रकट हुए, प्रत्यक्ष हुए, सामने आये।

परगणो – तहसील स्थल या अनुभाग।

परगाँव – पु. – दूसरा गाँव।

परगास – पु. – प्रकाश, प्रकट।

परचकरी – वि. – दिग्विजयी, सम्राट।

परचार – वि. – प्रचार।

परची – स्त्री. – कागज की पर्ची।

परचूनी – स्त्री. – आटा दाल आदि राशन सामग्री।

परचो – पु. – परचा।

परछई – स्त्री. – प्रतिच्छाया, छाया।

परछन – स्त्री. – विवाह की एक रीति जिसमें स्त्रियाँ द्वारा पर वर के आने के समय उसका ऊपर मूसल बट्टा घूमाती हैं, वैवाहिक लोकाचार।

परजा – स्त्री. – प्रजा।

परजात – स्त्री. – दूसरी जाति।

परजापत – पु. – प्रजापति, कुम्हार जाति, ब्रह्मा।

परजीवी – पु.सं. – जो दूसरे के सहारे हो।

परण – सं. – ब्याह, विवाह, प्रण, प्रतिज्ञा।

परणना – क्रि. – व्याहना, विवाह करना।

परणे – क्रि. – शादी करे, विवाह करे।

परत – स्त्री. – स्तर।

परतन्तर – वि. – पराधीन, दूसरे के वश में।

परताँ खोली – क्रि. वि. – घड़ी या तह को खोलना।

परदा – पु. – पर्दा, आड़, ओट।

परदादा – पु. – दादा का बाप, प्रपितामह।

परदानसीन – वि. – पर्दे में रहने वाली, पराये मर्दों के सामने न आने वाली स्त्री।

परदेस – पु. – दूसरा देश, विदेश।

परदेसी – पु. – विदेशी, दूसरे देश का।

परदो – पु. – आड़ करने के लिये लटकाया

हुआ कपड़ा, चिक आदि पट।

परदोस – वि. – प्रदोष का व्रत, प्रदोषकाल का एक व्रत, महादेव या शंकर के नाम पर किया जाने वाला व्रत, दूसरे का दोष।

परधान – वि. – प्रधान मुखिया।

परन कुट्टी – स्त्री. – पर्णकुटी, पत्तों से बनी हुई कुटिया, घासफूस की कुटीर।

परनवा – क्रि. – विवाह रचने के लिए।

परनालाँ – वि. – जोर की धार, धारा, गटर या नाला। (नेवार्या की परनालाँ।)

परनारी – परस्त्री, दूसरी औरत, अन्य स्त्री, सोत, सौतन। (भँवर परनारी मत कीजो। मा.लो. 549)

परनाला – पु. – पनाला, नाला।

परनियाँ – क्रि. – विवाह हो चुका।

परनी – स्त्री. – विवाहित स्त्री।

परनूँगा – क्रि.पु. – विवाह करूँगा।

परने – क्रि. – शादी करे, विवाह करे।

परन्यो बींद – पु. – विवाहित पति।

परपंच – वि. – प्रपंच, झगड़ा फसाद।

परंपरा – पु. – परम्परा, पुराने समय से।

परपुरस – पु.– अन्य पुरुष, पति के अतिरिक्त, (पर पुरास जे ऊबी ताके। मा.लो.548)

परपोतो – पु. – पुत्र के पुत्र का पुत्र, पोते का लड़का।

परब – पु. – पर्व, त्योहार।

परवत – पु. – पहाड़, पर्वत। (परवत झुकीरया। मा.लो.632)

परबस – वि. – दूसरे के आधीन, परवश, पराधीन।

परबरम – पु. – निर्गुण और निराकार ब्रह्म।

परबारो – अव्य. – बिना किसी की मारफत या मध्यस्थ के, बिना किसी की सिफारिश के, बिना कहे, बिना पूछे, अपने आप, परोक्ष में।

परबीण – क्रि. – प्रवीण, चतुर।

परभारो – वि. – दूसरे के द्वारा।

परभात – क्रि.वि. – प्रातः काल, सवेरा। (सूरजमलजी जाग्या था परभात। मा. लो. 504)

परभू – पु. – प्रभु, स्वामी, परमात्मा।

परभोगी – वि. – दूसरे के द्वारा उपभोग लाया जाने वाला, दूसरे के उपयोग में लिया हुआ, अन्य को लाभ पहुँचाने वाला।

परमधाम – पु. – वैकुण्ठ।

परमल – वि. – सुगन्ध, मनोहर खुशबू। (परमल आवे सुदे सेर। मा. लो.640)

परमहंस – पु.वि. – ज्ञान की परमावस्था तक पहुँचा हुआ संन्यासी, परमात्मा।

परमा – दूर।

परमाण – पु. – प्रमाण।

परमाणु – पु. – अत्यन्त सूक्ष्म भाग।

परमायु – स्त्री. – मनुष्य के जीवन काल की चरम सीमा 100 वर्ष।

परमारथ – पु. – परमार्थ, परोपकार।

परमेसर – पु. – सृष्टि का स्वामी, परमेश्वर।

परमेसरी – क्रि. – ईश्वरीय, दैवी शक्ति या दुर्गा का एक नाम।

पर्‍याँ बाई – स्त्री. – परियाँ।

पर्‍याँ माता – स्त्री. – परीमाता।

पर्‍या – क्रि. – पड़े हुए।

परेगा, पलेगा – क्रि.वि. – पालन पोषण होगा।

परलको – वि. – पानी जैसी पतली कोई खाद्य वस्तु।

परलेपार – वि. – दूसरे किनारे या सिरे पर।

परलो – वि. – प्रलय, जल प्लावन।

परलोक – पु. – दूसरा लोक।

परवरिस – स्त्री. – पालन पोषण।

परवल – एक प्रकार की सब्जी। (गाँदू परवल की तरकारी। मा. लो. 688)

परवा – स्त्री. – चिन्ता, फिक्र।
परवाणे – नाम का, प्रमाण, परीक्षा की कसौटी। (म्हारा माथा रे परवाणे भँमर लाजो हो रसिया। मा.लो. 598)
परवानगी – स्त्री. – अनुमति पत्र, पतिंगा।
परवानो – निमंत्रण पत्र, पत्र। लिख परवाना (हो राज बनीजी ने भेजीया। मा.लो. 175)
परवार – न. – परिवार, कुटुम्ब, परिजन।
परवास – स्त्री. – प्रवास, यात्रा, विदेश में जाना।
परवाह – स्त्री. – प्रवाह, जिम्मेदारी, जवाबदारी, चिन्ता, फिक्र।
परवाण – वि. – प्रमाण, नाप, परीक्षा की कसौटी।
परसन – प्रसन्न, खुश। (म्हाने सेज से मिल्या हनुमान महादेव परसन को। मा.लो. 683)
परसराम – पु. – परशुराम, अवतारी पुरुष, एक ऋषि।
परस – क्रि. – परोसने का कार्य कर, भोजन रख, स्पर्श कर।
परसण – वि. – प्रसन्न, खुश।
परसणो – क्रि. – भोजन परोसना, परोसगारी, भोजन वितरित करना।
परसु – पु. – कुल्हाड़ा, फरसा, परशु।
परस्या – क्रि. – परोस दिया, परोसा।
परसाद – प्रसाद, देव मूर्ति को अर्पण किया गया नैवेद्य।
परसाया – क्रि. – परोसवाया, दूसरे से परोसने का कार्य करवाया।
परसाल – स्त्री. – कमरे के सामने का खुला हुआ भाग, दालान, बड़ा कक्ष, दूसरा वर्ष।
परसूँ – क्रि. – परोसवाया, दूसरे से परोसने का कार्य करवाया, कल के बाद वाला दिन, परश्व।
पड़साल – स्त्री. – कमरे के सामने का खुला हुआ भाग, दालान, बड़ा कक्ष, दूसरा वर्ष।
परसूँ – क्रि. – स्पर्श करूँ, परोसूँ, स्पर्श करूँ।

परसूँ के दन – वि. – आज से तीसरा दिन, परश्व।
परसोत्तम – पु. – पुरुषोत्तम, श्रीकृष्ण।
परसों – अव्य. – बीते हुए कल से पहले वाला दिन, आगामी कल के बाद वाला दिन।
पर्याँ – स्त्री.ब.व. – परियाँ।
पराई – स्त्री. – दूसरे की, अन्य की।
पराग – पु. – पुष्परज, नहाने के पूर्व शरीर में मलने का एक सुगन्धित चूर्ण, चन्दन।
पराग्या – क्रि. – दूर चले गये।
पराण – वि. – प्राण।
पराणीक दन – वि. – क्षितिज से दूर, एक लड्ड, सूर्य।
परात – स्त्री. – बड़ी थाली, भोजन करने का बर्तन।
पराणी – स्त्री. – आरी युक्त लकड़ी जिससे बैल या पशुओं को हाँका जाता है।
पराणो – गाड़ी में जुते हुए बैल, हल हाँकते हुए, नाई या बक्खर हाँकने की कील वाली छोटी लकड़ी। (हालीड़ा ए मेल्या रास पराणा। मा.लो. 620)
परात – बड़ा थाल, रसोई में काम आने वाला थाल, बड़ी परात।
परायो – दूसरा। (पराया पुरसा। मा. लो. 600)
परार – अव्य. – पिछले का पिछला वर्ष, अन्न निकालने के बाद चावल या सालका बचा घास, व्यतीत तीसरा वर्ष।
पराल – पु. – भूसा, कचरा–कूटा, गेहूँ आदि का भूसा।
परालब्ध – वि. स्त्री. – प्रारब्ध, भाग्य।
परिन्दो – पु.फा. – पक्षी, चिड़ियाँ।
परियाँ – स्त्री. – बहुत-सी परियाँ।
परिस्तान – पु. – परी देश।
परी – स्त्री.फा. – फारस की अनुश्रुति के अनुसार काफ पर्वत पर बसने वाली

परों से वाली कल्पित परम सुन्दर स्त्री, परम रूपवती स्त्री।

परीच्छक – पु. – परीक्षा लेने, परखने या जाँच करने वाला व्यक्ति।

परीच्छा – स्त्री. – योग्यता, विशेषता, सामर्थ्य, गुण आदि जानने के लिए अच्छी तरह से देखने या परखने की क्रिया या भाव, इम्तहान।

परीछत – वि. – अर्जुन के पोते और अभिमन्यु के पुत्र, एक प्रसिद्ध राजा।

परूँ – क्रि.वि.– परसों , परश्वः।

परे – अव्यय.– उस ओर, उधर, दूर, अलग, आगे, बाद।

परेंडा – पीने का पानी रखने का स्थान,जल स्थल।
(दारी मेल्यो परेन्डा हेटे । मा.लो. 502)

परेम – स्त्री.– प्रेम।

परेवा – पु.– पंडुक पक्षी, पेंडकी, कबूतर जो पत्रवाहक भी होता है, पसीना।
(उड़ रे म्हारा लाल परेवा । मा. लो.44)

परेसान – वि.– आकुल, व्याकुल, व्यग्र।

परो जाय – इधर, उधर, दूर जाने कहाँ चला जाना। आगे अलग, कहीं दूर निकल जाना। कोई दन उठ परो जाय। मा.लो. 648)

परों – अव्य.– परसों, कल के ब ाद का दिन।

परोड़ो – ब्राह्म मुहूर्त का समय, चौथा पहर, प्रातःकाल, पौ फटने का समय हो जाना।
(परोड़ा रा पटक्या रे वाने पापड़ भावे। मा.लो. 435)

परोणो – क्रि.– पिरोना, धागे आदि में मोती पिरोने का कार्य।

परोत – पु.– पुरोहित, ब्राह्मण।

परोसणो – क्रि.– खिलाने के लिये भोजन सामग्री ला–लाकर खाने वालों के पात्र में रखना।
(पारवती याँ परोसवा लाग्या । मा. लो. 687)

परोसो – क्रि.– जिन्होंने भोजन नहीं किया उनको घर के लिये खाद्य पदार्थ का वितरण करना।

परोड़े – पु.– प्रातःकाल या ब्रह्म मुहूर्त का समय।

पल – न. – पल, घड़ी का साठवाँ भाग, क्षण।

पलक – स्त्री.– आँख के ऊपर का चमड़े का परदा, जिसके गिरने से वह बन्द होती है।
(पलक उगाड़ो न्यारी। मा. लो.684)

पलखड़े पाँव – क्रि.वि.– घोड़े के तंग में पाँव रखना। (दोनी पलखड़े पाँव।

पलघट – पु.– कुँए के थाले में लगने वाला छेददार पत्थर जिसमें चड़सी चलाने के लिए लकड़ी लगाई जाती है।

पलट – पु.– पल्टा, बदला, परिवर्तन, मुड़ना, लौटा।

पलटण – स्त्री.– सेना।

पलटणो – क्रि. – उलटना।

पलटाओ – क्रि.– वापस करो, लौटाओ।

पलेटो – पु.– रोटी पलटने का यन्त्र, उथेलना, पराठा नामक घी में तली रोटी।

पलटाणो – पु.– लौटाना, वापस करना, उलटना।

पलड़ो – पु.– तराजू का पल्ला, विरोधियों में से कोई पक्ष।

पलना – क्रि.– पाला पोसा जाना, खा–पीकर हृष्ट–पुष्ट होना, बच्चे का पालना।

पलस्तर – पु.– दीवारों आदि पर सीमेन्ट या चूने का लेप लगाना।

पल्ला से – स्त्री.– पल्लू या साड़ी के छोर से।

पल्लो – पु.– किनारी का पल्ला, तराजू का पलुआ, आँचल, छोर, दामन।

पल्लो पकड़्यो – क्रि.वि.– सहारा या आसरा लिया।

पलादणो – क्रि.– घोड़े की पीठ पर जीन कसना।

पलाणो – क्रि. – लादो, लादना, गधे, ऊँट की पीठ पर लदान। (पर्याण/पलाणो चंदरमाजी साँदड़ी जी।)

पलाण, पलान – पु.– लादने या चढ़ाने के लिये घोड़े की पीठ पर कसी जाने वाली गादी। (जीन–खुगीर लादना।)

पल्लादार – वि.–बेल बूँटेदार कीमती वस्त्र।

लादणो–पलादणो – मुहा.– घोड़े की पीठ पर कसी जाने वाली गादी। (जीन-खुगीर लादना।)

पलीत – वि.– गंदा रहने वाला व्यक्ति, गंदगी प्रिय, अपवित्र, नीच, प्रेत।

पलीतो – मशाल में लगाने का कपड़ा, तोप, दागने की बत्ती।

पलो – पु.– दूध, दही आदि लेने या देने का नाप।

पल्लो लेणो – मृतक के घर वाले जब कोई बैठने आता है तो औरतों का सिर ढँक कर जोर-जोर से रुदन।

पलोतण – रोटी पर लगाने का सूखा आटा। (अट्यावण या अटावण। मेदा की पूड़ी सकर को पलोतण। मा.लो. 219)

पवन – पु.– वायु।

पवनई – स्त्री.– पहनाई, भेंट में दिये जाने वाले वस्त्राभूषण आदि।

पवन पंखी, पवन पाँखी – वि.– द्रुतगामी अश्व, पवन वेग से दौड़ने वाला अश्व।

पवसावणों – क्रि. – थन से दूध छोड़ देना। गाय, भैंस आदि के थन में दूध भर जाना, ढोर के थन में दूध का भराव हो जाना।

पसेरी – ढाई किलो का बाट। (पसेरी लेके दोड़ी।)

पवनसुत – पु.– हनुमान्।

पवनचक्की – स्त्री.– हवा के जोर से चलने वाली चक्की।

पवित्तर – वि.– पवित्र, निर्मल।

पशु – पु.– जानवर, चौपाया।

पशुपाल – पु.– चरवाहा, ग्वाला।

पच्छम – पु.– पश्चिम।

पसतंग – स्त्री.– घोड़े के पेट के दोनों ओर की कपड़े की पट्टी।

पसतायो – वि.– पछताया, पश्चात्ताप किया।

पस भर – वि.– दोनों हाथों की अंजुलि भरकर।

पसर – पु.– फैलाव, फैलना, अंजुलि।

पसरणो – क्रि.– फैलाना, लम्बे होना, कुछ लेटकर या बहुत फैलकर बैठना, आक्रमण।

पंक्थ्या – न.– चढ़ाव, सीढ़ी, जीना।

पंख – न.– पंख, पाँख, पक्ष, पंखा, पाँखुड़ी।

पंगत – कतार, हार, भोजन करने को बैठी हुए पंक्ति, पाँत। (खिचड़ी के पंगत में परसो। मो. वे. 84)

पंगाथियाँ – चार पाई का वह भाग जिधर पाँव रहते हैं, पैताना।

पंचात – न. – पंचों की मंडली, पंचायत, पंचों द्वारा किसी विवाद के सम्बन्ध में किया गया विचार या निर्णय।

पंछो – न. – टॉवेल, तौलिया।

पंजो – हाथ का पंजा, पैर का पंजा। (पंजो तो झेल्यो गोरख नाथ को। मा.लो. 649)

पंथ – न.– रास्ता, मार्ग, सम्प्रदाय, वाम मार्ग, राह, पथ।

पंथवारी – ग्राम के बाहर की पंथवारी की पूजा यात्रा के समय से नित्य की जाती है कि पथिक भटके नहीं और यात्रा सुखमय हो, तीर्थयात्रा से सुरक्षित लौट आने की मंगलकामना। (उठो राधा रुखमणी पूजो पंथवारी। मा.लो. 629)

'पं'

पंथी – पथिक, राहगीर, पैदल आने-जाने वाला, मुसाफिर, वटाऊ। (पीयर पंथी दोई मिल्या वी दोई मिल्या सुनार हो। मा.लो. 614)

पंथीड़ो – यात्री, गुरु भाई, पंथ का अनुयायी, मुसाफिर, राहगीर। (पंथीड़ा उठ मारग लागा। मा.लो. 644)

पंपोरणो – किसी वस्तु या अंग पर धीरे-धीरे हाथ फेराना, सहलाना, मन की थाह लेना, व्यर्थ प्रयत्न करना, पंपोलना।

पँसली – स्त्री.– पसलियाँ ।

पस्तावणो – क्रि.वि. – पछतावा, पश्चाताप, खेद, यात्रा से पूर्व वस्तु को पहले शकुन के लिए आगे पहुँचा देना।

पंसारी – स्त्री.– औषधि विक्रेता, जड़ी-बूटी बेचने वाला।

पसारो – पु.– फैलाव, विस्तार।

पसारणो – क्रि.– फैलाना, फैलाव करना, विस्तार करना।

पसीनो – पु.– परिश्रम या गर्मी के कारण शरीर से निकलने वाला जल, स्वेद।

पस्त – वि.– हिम्मत हारा हुआ।

पसेरी – वि. – 5 सेर का बाट, नया ढाई का बाट।

पसोपेंच – क्रि.वि.– दुविधा, धर्मसंकट।

पस्तावो – क्रि.वि.– पछतावा।

पहाड़ो – वि.– पहाड़ा, पट्टी-पहाड़ा।

पहेली – स्त्री.– घुमाव–फिरावदार।

पा

पाइली – क्रि.– प्राप्त कर ली, मिल गई।

पाई भर – वि.– ढाई सेर का पुराना नाप।

पा – क्रि.– बच्चों का पा-पा कहकर पानी पिलाने का शब्द।

पाक – वि.–पीक, स्वच्छ, रसोई पकाना।

पाका – वि.– पके हुए, पका हुआ।

'पा'

पाका पान – वृद्ध, पका हुआ, परिपक्व, वृक्ष का पका हुआ पीला पत्ता।

पाकीट – पु. – जेब, बटुआ।

पाके – वि.– पकता है, पकती है।

पाँक्ति – बाजू से लेटने की क्रिया, करवट, पार्श्व।

पात्त्याँ फेरनो – करवट बदलना, करवट लेना।

पाखंडी – न. – ढोंगी, पाखंडी, दंभी, नास्तिक, धर्म विरुद्ध आचरण, कपटी। (पाखंडी ने गुरु की हंडी खराब कर दी हे। मो.वे. 57)

पाँख – सं.– पंख।

पाखऱ्या – क्रि.– बिछाया।

पाँखी – स्त्री.– पक्षी।

पाँगती – दे. – करवट, पंक्ति का तद्भव। (पिया पाँगती फेरी ने। मो.वे. 38)

पागड़ी – पगड़ी, फेंटा, पाग, दुकान,मकान भाड़े से लेने के लिये खानगी से अग्रिम दी जाने वाली एकमुश्त रकम। (बाँदवा ने पचरंगी पागड़ी वो बाई। मा.लो. 485)

पाँगलो – वि.उ.– पंगु, लंगड़ा, अपाहिज, मूर्ख, पागल, विकृत मनोबुद्धि वाला।

पागल – पु.– वह स्थान जहाँ चिकित्सा के लिये पागल रखे जाते हैं ।

पाँगरण, पाँगरन – वि.– नई फूटी हुई वृक्ष की कों पलें, फूटी एवं फैली हुई वृक्ष की सुकोमल पत्तियाँ ।

पाँगऱ्यो – क्रि.– फूटा, फैला, बड़ा हुआ।

पागड़ी – स्त्री.– सिर ढँकने की 20 मीटर लम्बी कपड़ों की धज्जी।

पागड़ी का पल्ला – स्त्री.– पगड़ी का पल्लू।

पागड़ो – घुड़सवार के पैर का आधार,पैर दान।

पागा – पु.– घुड़साल, अस्तबल, पहनावा, मूर्तियों के लिये बनवाये गये वस्त्र।

पाचक – वि.– पचाने वाली वस्तु।

पाँच इन्द्री – वि.– पंचेन्द्रिय।

पाचत – वि.– प्रायश्चित।

पाँच पराणी दन – वि.– दिन का लगभग 11 बजे का समय, गाँव में दिन का अंदाज लगाने के लिये सूर्योदय से सूर्य के आकाश मण्डल की ऊँचाई हाथ में रहने वाली लकड़ी (पराणी) के अंदाज से नापकर लगाया जाता है।

पाँच–पीपल – वि.– पंजा, पाँचों ऊँगलियाँ।

पाचन – स्त्री.– हाजमा।

पाँचा – पु.– कनेर के फल की गुठली से बने हुए, पाँचे प्रायः लड़कियाँ क्रीड़ा करती हैं , खेल के पासे।

पाँची – वि. – पाँच ही, पाँचों ही।

पाछी पल्टी ने – क्रि.वि.– पीछे पलटकर, वापस लौटकर।

पाछे – क्रि.वि. – पीछे, पश्चात् , बाद में, पीछे रहने वाली, शेष, बीती हुई, पहले की।

पाछो – वापस, पुनः फिर, लौटकर, एक बाजू, पीछे हट।
(पाणी पाछो जाई पीस्याँ। (मा. लो. 576)

पाछो जीवणो – क्रि.वि.– फिर से जीवित होना, पुनर्जीवित होना।

पाछो सरक्यो – क्रि.– पीछे खिसका।

पाज – स्त्री.– कुएँ की मुण्डेर।

पाँ–जइने – कृ.– पास में जा करके।

पाजण – पु.– माँड लगाने की क्रिया, चावल–साबुदाना आदि का माँड।

पाँजा – वि. – पंजा, पाँ च का भाव।

पाजेब – वि.– पैरों में पहनने का एक गहना, पैजनियाँ।

पाजी – वि.– दुष्ट, कमीना, एक गाली।

पाट – स्त्री.– घट्टी का पाट, पट, पाटला, पटिया, पत्थर के पाट, खेतों को पानी देने वाली नहर, उज्जैन जिले का एक गाँव, नदी की चौड़ाई, मकान का पाट, रेशम, सर्वथा, शुद्ध।
(माला पाट पोवाव। मा. लो.573)

पाटल्याँ – स्त्री.– कुँए के थाले या गाड़ी में लगाई जाने वाली सीधी लकड़ियाँ, चौड़े पट्टे वाली चूड़ियाँ।

पाटली – स्त्री.– कुएँ के आगे की लकड़ी– इसे हरन्या पाटली भी कहते हैं। नाड़ी या मोटी रस्सी में बनी हुई पाटली जिस पर चढ़स हाँकने वाला बैठकर बैलों को चलाता है, स्त्रियों के हाथों की चूड़ियाँ।

पाटवी – बड़ा लड़का या लड़की, पुत्र या पुत्री।

पाट्याँ देतो – क्रि.वि.– दौड़ता हुआ।

पाटा – स्त्री.- गाड़ी के पहियों के ऊपर चढ़ाये जाने वाले लोहे के पार्ट।

पाटी – स्त्री.- पटिये, पापड़ बेलने का पाटा, क्रि. - दौड़ना।

पाटी पड़ानो – क्रि.वि.– कान भरना।

पाटो – न. –पट्टा, पाट, पट्टी, पटरी, बाजोटा। (रेलगाड़ी को पाटो अइग्यो। मो. वे. 42)

पाटो फेर्‍यो – बना बनाया कार्य बिगाड़ देना।

पाठ – पु.– अध्याय।

पाठ – क्रि.– कण्ठस्थ करना, बार–बार दुहराना, पढ़ना।
(रामायण रा पाठ। मो.वे. 681)

पाठो – पु.– कागज का ताव।

पाड़ – पु.– पहाड़, किसी वस्तु को गिराने का भाव।

पाड़नो, पाड़णो – क्रि.– बनाना, करना, माण्डना, गिराना।

पाड़वाद्याँ – पु.–घोड़े–घोड़ी के तंग लटकाने वाली वस्तु।

पाड़ा – स्त्री.– भैंसा।

पाड़ी दो – क्रि.– बुलवा दो, गिरा दो।

पाड़ो – क्रि.– बुलाओ, आवाज दो, गिराओ।

पाँडुर का – वि.– सफेद सा।

पाड़ूँ – क्रि.– बुलाऊँ, आवाज दूँ, पु.– भैंस का छोटा बच्चा।

पाड्या – क्रि. – पड़ना का भूतड़ा, गिराया,

गिराना, भाँत पाड़ना, मक्का के फूल्ले पाड़ना, धानी।

पांडू रोग – वि.– पीलिया या हल्दी नामक पित्ताशय की बीमारी।

पाड़ो – न.– भैंस का बछड़ा, भैंसा, पाड़ा। (लुम लुमा लो झुम झुमालो म्हारे बेटो पाड़ो पाड़ो। मा.लो. 505)

पाड़ोस – पड़ोस, पास-पड़ोस। (राँगा राँगा पीयर पड़ोस।)

पाडोसी – न.– पड़ौसी, घर के पास में रहने वाला।

पाण उतार – क्रि.वि.– इज्जत बिगाड़ना। स्त्री. – खेतों में पानी देना।

पाणत्यो – पु.– खेतों को पानी पिलाने वाला मजदूर।

पाण – क्रि. – आवश्यकतानुसार फसल को पानी देना, मनुष्य या फसल की प्यास बुझाना, वि. – उत्तेजित करना, जोश दिलवाना।

पाण पे चड़नो – क्रि. वि.– जोश में आना।

पाणी – स्त्री.– जल, पानी, सं. -हाथ।

पात – स्त्री.– नारियल से बनी चूड़ियों पर चढ़ाया जाने वाला चाँदी का पतरा या पतली झिल्ली।

पातर – पु.– वह जिसमें कुछ रखा जाए, आधार, बरतन, कुछ पाने या लेने योग्य व्यक्ति, दान-पात्र, नाटक का पात्र, अभिनेता, नट, वि.–पतली वस्तु।

पातरा – वि.– पतला, पतली वस्तु, महीन, बारीक

पातक – वि.– पाप, अपराध।

पातकी – स्त्री. वि. - पापी, दुष्ट, अपराधी।

पातरी – स्त्री.– पतली, दुबली।

पातरो – पु.– पतला, दुबला, कृषकाय।

पातल – स्त्री.– पत्तल, पत्तों से बनी थाली। वि. – पतली, क्षीण, दुबली। (पातल चाट रे। मा.लो. 436)

पातली पेमा – दुबली पतली या क्षीणकाय स्त्री। संजा के किलाकोट में बनाए जाने वाली एक आकृति।

पातलो – वि.– पतला, महीन। (दुबला मोड़ पड़्या पातला। मा. वे. 47)

पातरिया – पु.– पति, स्वामी, पुरुष।

पाताँ – स्त्री.ब.व.– नारियल से बनी चूड़ियों पर चढ़ाया जाने वाला चाँदी का पतरा, हाथ का आभूषण, क्रि. – पिलाते हुए।

पाता – क्रि.– प्राप्त करना।

पाताल पानी – वि.– बहुत गहरा जल, मालवा का एक प्रसिद्ध रेलवे स्टेशन जो बहुत ऊँचाई पर है तथा उसके नीचे की ओर बहने वाला सोता।

पाताल – पृथ्वी के नीचे का कोई लोक।

पाती – क्रि.– प्राप्त करती स्त्री.- पत्रिका, चिट्ठी।

पाँती – वि.– हिस्सा, पंक्ति, भाग।

पाँतीदार – पु.– हिस्सेदार।

पाऽतो – क्रि. – पिलाता हुआ, पिलाओ तो, प्राप्त करता।

प्यातो – वि.– प्यारा, दुलारा, सबको प्यारा लगने वाला।

पातु, पातुरिया – स्त्री.– मदिरापान करवाने वाली जाति की स्त्री, रण्डी। (पातु लगायो लोगाँ को बगार।)

पातूड़ी – स्त्री.– रण्डी, नगरवधू।

पाथनो – क्रि.– गीली मिट्टी, गोबर आदि वस्तुओं को थाप–पीट या दबाकर ईंट, खपरेल, कण्डे, उपले आदि आकार में लाने की क्रिया।

पाथरनो, पाथरणो – क्रि.– फैलाना, बिछाना, बिछौना, बिछाने के वस्त्र गादी आदि। (नणदल बेठऊँ पाथरिया। मा.लो. 52)

पाथरनी – गादी।

पादर – वि.– उपजाऊ, सम्पन्न, उत्कर्ष।

पादरी – वि.– उत्तम फसल या लाभ होना, उत्कर्ष होना, पु.- ईसाइयों के धर्म गुरु, स्त्री. -अपानवायु का त्याग।

पादरे आणो – क्रि.-वि.– बहुत पैदावार होना, बहुत उत्कर्ष हुआ।

पा दीजे – क्रि. -पिला देना।

पादुका – स्त्री.–खड़ाऊ, पैरों में पहनने का लकड़ी की चप्पल या पदत्राण।

पान – पु.–पत्ता, पर्ण, पत्र, जल आदि।

पानड़ो – पु.– पत्ता, पत्र, खाने का पान।

पान-भाँत – वि.– पान की आकृति जैसा।

पान-से – वि.– पाँच सौ।

पाना – पत्ता, पत्ते, पान, पुस्तक का पन्ना, छाती में दूध आना।
(इतो पाना आया ने फूलाँ मेलो म्हारी जरणी। मा.लो. 633)

पानाजी – दामाद।
(पानाजी आपका चीरा ने बाई रा भँवर री जोडी घणी खुलती लागे। मा.लो. 513)

पाना फूलाँ रो – पु.–खूब फलो-फूलों का आशीर्वाद।

पानी रो पाखाण – पु.–पानी का पत्थर।

पानी-नी-र्‌यो – पु.– मुख का पानी उतरना, निस्तेज मुखाकृति होना, निर्लज्ज होना।

पानी-पानी हुई गयो – पसीज जाना।

पानी बाकी रइग्यो – क्रि.वि.– प्राप्त करना, शेष रह गया, इज्जत रह गई।

पानो – पु. -पन्ना, पृष्ठ, पान की आकृति वाला, सोने का बना एक आभूषण जो गले में पहना जाता है, स्त्रियों का प्रिय आभूषण, पशु का दूध उतरना।

पानी चोड़्यो – वि.– दुधारू पशुओं द्वारा दूध चुरा लेने की क्रिया, पशु को चंदी दाना या खाद्य पदार्थ पर्याप्त न मिलने पर दुधारू पशु प्रायः दूध की धारा अपने स्तन से बाहर नहीं छोड़ता किन्तु पेट भर जाने के बाद पुनः दूध दे देता है।

पानो छाड़्यो – वि.–गाय–भैंस आदि दुधारू पशुओं द्वारा दूध उतारने की क्रिया , दूध देने की स्थिति में पशुओं का होना।

पाप – वि.– पातक, दोष।

पाप की पाटी – पाप का घड़ा भर जाना, पाप से धन एकत्र करके पाप की दिवाल बना ली, अपने स्वार्थ लिये लोगों के गले काटना।

पापगरे – पु.– पापग्रह।

पापात्मा – वि.– महादुष्ट, व्यक्ति, पानी, क्रूर, निर्दयी, पातकी।

पाप पारगासो – क्रि.– पाप प्रकट करो, पाप खो लो।

पापड़ – पु.– पापड़ा।

पापड़ी – स्त्री.– महीन, चपाती, पपड़ी, नमकीन, पापड़।

पापी – वि.– दुष्टात्मा, पापी, कुकर्मी।

पाबंद – वि.– बँधा हुआ, बद्ध, नियम, विधि।

पाबूजी – सं.– एक लोक देवता।

पामणा, पावणा – पु.– पाहुने, मेहमान, अतिथि।

पामणो – क्रि.– पाहुना, महमान।

पामर – वि.– पापी, दुष्ट।

पाँय पटोऱ्या – क्रि.वि.– चरण पखारे, चरण धोये।

पायगा – घुड़साल, घोड़े घोड़ी बाँधने का स्थान, अस्तबल, अश्वशाला।

पायड़ा, पायड़ो – सं.– पैरदान, वह वस्तु जिस पर घुड़सवार अपना पैर रखता है।

पायाघर – वि.–सम्पन्न परिवार, भरा-पूरा घर।

पायाबंद – वि.– अपनी बात पर कायम रहने वाला, बात का धानी।

पायो – क्रि.– प्राप्त किया, पु. –पाँव, नींव, तल, पेंदी, आधार, मूल चारपाई या पलंग के पाये, चरण, पैर, कोई वस्तु जो इधर-उधर गिरी पड़ी हो, प्राप्त होना।

पायो उठायो – क्रि.– नींव उठाना, प्रारम्भ।

पार – पाल, दूसरे किनारे।

पार उतरणो – पार करना, पार उतरना, पार लग जाना, दूसरे किनारे चले जाना।

(मुरदो पकड़ तुलसी पार उतरग्या। मा.लो. 652)

पार करणो – क्रि.–पार उतरना, समाप्त करना।

पार उतारीद्यो – क्रि.– पार कर दिया, पार लगा दिया, दूसरे किनारे कर दिया।

पार पाड़नो – क्रि.वि.– निबाहना, सम्पन्न करना, पार लगाना, मुकाबला करना।

पारख – स्त्री.– परीक्षा, परख, जाँच, कसौटी।

पारखी – पु.वि.– परख या पहिचान करने वाला, परखने वाला, जौहरी।

पारसनाथ – पु.– पार्श्वनाथ, जैनियों के 24 तीर्थंकरों में से एक।

पारसी – वि.– पारस देश का निवासी, पारसी जाति, बुझौवल, पहेली।

पार – सं.– पसली की हड्डियाँ, सीमांत, पाल, दूसरा किनारा।

पारखणो – परखना, परीक्षा करना, गुण-दोष जानना, जान-पहचान।
(मालीड़ा रो बेटो म्हारे साथ फूलड़ा री पारख उ करे जी म्हारा राज। मा.लो. 589)

पार नी पड़े – क्रि.वि.– पूरा न पड़े।

पार नी पावे – क्रि.वि. – जिसका कोई अन्त न हो, अन्तहीन।

पारबती, पारबत्ती – स्त्री.– पार्वती।

पारदी – स्त्री.–शिकारी, बहेलिया जाति।

पारवाड़ो – कमजोर कपड़ा, हल्का कपड़ा, नया वस्त्र ही फटना, जगह-जगह से छीन होना, जीर्ण वस्त्रों में बनी अनेक दरारें, जीर्ण वस्त्र।

पारसद – पु.– परिषद् का सदस्य, सभासद।

पारस्याँ – स्त्री.ब.व.–पहेलियाँ, बुझौवल।

पाराण, पारायण – पु.– पूरा करने का काम, समाप्ति, नियत या नियमित समय पर होने वाला किसी धर्म ग्रन्थ का आदि से अन्त तक का पाठ।

'पा'

पारावार – पु.– निःसीम, आर–पार, समुद्र।

पारी – स्त्री.– किसी बात या कार्य के लिये वह अवसर जो कुछ अन्तर देकर क्रम से प्राप्त हो, बारी, अनुक्रम, अवसर, तीसरे दिन आने वाला ज्वर, बुखार।

पारू – वि.– प्यारी, प्रिया, प्रिय, अच्छी लगने वाली वस्तु।

पारे – पु.– मनका के दाने।

पारो – पु.– (सं. -पारद) एक प्रसिद्ध सफेद बहुत वजनी और चमकीली धातु जो साधारण द्रव रूप में रहती है।

पारो रकम – वि.– वजनदार वस्तु, पारा नामक वजनी द्रव पदार्थ।

पाल – पु.– मेड़, किनारा, चंदोवा, मोटा तम्बू, मछली का नाम, जगत्, थाला, पौधे की मोटी जड़।
(सरवर बाँदी नी पाल। मा.लो. 681)

पालक – पु.– पालने वाला, स्त्री. पालक की सब्जी, पिता।

पालकी – स्त्री.– बड़े संदूक की तरह की एक प्रकार की सवारी जिसे कहार कंधे पर लेकर चलते हैं।

पालखा – स्त्री.– मिट्टी की बनी कोठी, पेवला।

पालखी – स्त्री.– डोला, सुखपाल, बच्चों का एक खेल।
(आलखी–पालीखी जे कनैया लाल की।)

पालणो – वि.– पालन-पोषण करना, रक्षण, लालन-पालन, परवरिश करना, पलना।

पालन–पोसण – क्रि.वि.– भरण-पोषण, पाल पोसकर बड़ा करना।

पालतू – वि.– पाला हुआ जानवर।

पालथी – स्त्री.– दोनों पैर जोड़कर बैठने की स्थिति।

पाल – पु.–चंदोवा, छत, किनारा, तट।

पालणो – पु.– पलना, हिंडोला, जच्चा होने की बारी।

पालटी – वि.– दल, पुलिस का दस्ता, प्रीतिभोज, आसामी, पार्टी ।

पाला – क्रि.– पालन–पोषण किया, पूर्वज, लोक देवता।

पाली टलणो – क्रि.वि.– मासिक धर्म का रुकना, अवसर चूक जाना, समय निकल जाना।

पालो पड़नो – क्रि.– बर्फ पड़ना, ओस या ठण्ड का प्रभाव।

पाव – पु.– एक सेर का चौथा भाग, चार छटाक।

पाँव – पु.– पाद, पैर, पाव–चौथाई भाग।

पाँव की छाया – स्त्री.– पद चिह्न, पैरों के निशान।

पावणा – पु.ब.व.– मेहमान, अतिथि।

पावणो – क्रि. – पिलाना, प्राप्त करना, पाना, मिलना, भोजन करना, मेहमान।

पावती – स्त्री.– रसीद।

पाँवदान – पु.– पैर रखने के लिये बनाया हुआ स्थान, पाँवड़ा।

पाँव धोने सारु – क्रि.वि.– पैर धोने के लिए, चरण पखारने के लिए।

पाव नी दिया – क्रि.वि.– पाव, थोड़ा–सा भी नहीं दिया।

पावनो – पु.– पाहुना, मेहमान, अतिथि, क्रि. - प्राप्त करना।

पाँव–पाँव – क्रि.वि.– पैदल, पैदल, पैरों के बल पर।

पाँव बड़ाती – स्त्री.– पैर बढ़ाती, तेज चाल चलती, शीघ्रता करती, त्वरित गति से आगे को बढ़ाती।

पावली – चवन्नी का सिक्का, चौअन्नी, चार आने। (अधेली का पईसा ने पावला की कोड़ी। मा.लो. 704)।

पावसणो – दुहते समय गाय, भैंस के थनों को शिथिल करके उनमें दूध आने देना या दूध का थनों में आ जाना, बसना।

पावस्या – क्रि.– सूर्यास्त होना।

पावें – क्रि.– प्राप्त करें।

पावो – क्रि. –भोजन करो, जलपान करो। (धोवण-धावण ईनाने पाव। मा. लो. 597)

पास – पु.–उत्तीर्ण, समीप, निकट, सफल।

पाँगटो – जिसके पैर-हाथ बेकार हो गये हों, लूला, लंगड़ा, अपाहिज, पंगु।

पाँती – न.– भाग, बँटवारा, हिस्सा, भागीदारी, पक्ष, बाजू। (तीन बीघा पाँती। मो.वे. 33)

पाँय – पाँव, पैर, चरण, पग। (पाँय पदम वाजे घुघरा ए माँ। मा. लो. 661)

पाँस, पाँड – वि.– फाँस, शरीर में किसी वस्तु की चुभन, पास, निकट, कृषि के उपयोग में आने वाली लोहे का फाल, बक्खर की पास।

पासंग – वि.– काड़म, तराजू में पलवों में रहने वाली असमानता, त्रुटिपूर्ण तराजू, कुछ रखकर तराजू को सन्तुलित होना।

पासंग बरोबर – वि.– थोड़ा-सा भी।

पाँ –भरइगी – क्रि.– ज्वार या मक्का के राड़े की फाँस चुभ जाना।

पाँसो फेंक्यो – क्रि.वि.– जाल बिछाया, उलझने का कार्य किया, जाल में फँसाया, चौपड़ की गोट डाली।

पि

पिऊ, पिऊजी – पु.– प्रियतम, पति।

पिक – स्त्री.– कोयल।

पिंगला – स्त्री.– राजा भर्तृहरि की स्त्री का नाम, हठयोग की और तन्त्र में शरीर की तीन प्रधान नाड़ियों में से एक, लक्ष्मी।

पिघलणो – क्रि.– पिघलना, द्रवित होना, पसीजना, गलना।

पिचकणो – क्रि. –दबना, चपटा होना।

पिचकारी – स्त्री. – पानी खींचकर फेंकने वाली

नली, पीक।
(कायन की पिचकारी। मा. लो.573)

पिचकग्यो – क्रि.– चपटा हो गया, पिचक गया।

पिचाणनो – वि.– पहिचानना।

पिछड़नो – पीछे रह जाना।

पिछवाड़ो – वि.– पीछे का हिस्सा, पृष्ठ भाग।

पिछलो – वि.– जो पीछे की ओर हो, बाद का।

पिंजणो – क्रि.– पींजना, धुनकना।

पिंजरा – पु.– पींजरे।

पिंजरो – पु.– पींजरा, कटघरा।

पिंजारो – पु.– रुई पींजने या धुनने वाली एक जाति।

पिटई – क्रि.– पीटना, मारना।

पिटणो – क्रि.– पिट जाना, पीटा जाना।

पिट्टी – स्त्री.– चावल, मूँग या उड़द के आटे की पिट्टी।

पिटी गयो – क्रि.– पिट गया, पीट दिया गया।

पिंड – पु. – गोल पदार्थ, लड्डू जैसा गोला, पक्के अन्न या उसके चूर्ण आदि का गोला, लोंदा जो श्राद्ध में पितरों के नाम दिया जाता है, शरीर, देह।

पिंडखजूर – खजूर के फल।

पिड़क्यो – वि. – तुच्छ व्यक्ति, ओछा आदमी, छोटा साँप।

पिंडज – पु.– गर्भ से उत्पन्न प्राणी।

पिंडली – स्त्री.– घुटने के नीचे का पिछला मांसल भाग।

पिंड छुड़णो – पीछा छुड़वाना।

पिंडा – स्त्री.– ज्वार या मक्का के पौधों के बँधे हुए बण्डल या गट्ठर।

पिंडी – स्त्री.– छोटा डला या पिंड, ज्वार या मक्का के पौधों का बँधा हुआ समूह।

पित्त – वि.– यकृत, पित्ती रोग।

पित्तल – पु.– पीतल नामक धातु।

पितर – पु.– पूर्वज, गोलोकवासी माता–पिता।

पितर देवत – पु.– पितृ देव।

‘पि’

पितम्बर – वि.– पीला वस्त्र, पीताम्बर।

पितम्बरधारी – पु.– श्रीकृष्ण।

पितऱ्यो, पितल्यो – वि.– पितला हुआ, कसैला, कसैली हुई वस्तु, विकृत हुई वस्तु।

पितामह – पु. – दादा, पिता के पिता, स्त्री.– पितामही, दादी।

पिद्दो – पु.वि.– छोटा-सा, स्त्री. – पिद्दी छोटी।

पिन्नक – वि. स्त्री.– किसी नशे विशेषतः अफीम के नशे में सिर का रह-रहकर आगे की ओर झुकना।

पिनाक – पु. -शिव का धनुष।

पिप्पल – स्त्री.– पीपल।

पिपली – पीपल।

पिपरामूल – स्त्री.– पिपला मूल, एक औषध।

पियर पामणी – स्त्री.– पीहर में पाहुनी, मेहमान।

पियरिया – स्त्री.– पीहर, विवाहिता का पितृ कुल।

पियारा – प्यारा, प्रेमी।

पियाला – स्त्री.– कटोरा, कटोरी, प्याला।

पियालो – पु.ए.व.– बड़ा कटोरा, बाटकी या प्याला।

पियाल – पु.– नदी में का गहरा और विकट स्थल, दह, पाताल जैसा।

पियासा, पियासो, पियासी–वि. - तृषित, प्यासा, अतृप्त।

पियाले – वि.– पाताल।

पिरीत – स्त्री.– प्रीति, प्रेम, प्रसन्न, खुश।

पिराणो – पु.– बाँस।

पिरोया – क्रि.– पिरोने का कार्य किया।

पिलई गयो – क्रि.– पिला गया।

पिलणो – क्रि.– निचोड़ना, बल, मारना।

पिलसोद – बत्ती स्टैण्ड।

पिल्लो – पु.– कुत्ते का बच्चा।

पिलाना – क्रि.– पान करवाना, पीने के लिये देना।

पिव – पु.– प्रियतम, पति।

पिवणाँ – क्रि.– पीना, सर्प की एक जाति।

पिवणाँ री आस – क्रि.वि.– पीने की आशा।

पिसणो – क्रि.– चूर चूर करना, पीसना।

पिस्सू – पु.– शरीर का रक्त चूसने वाला कीड़ा।

पिसई करनी – क्रि.– पीसना।

पिसल – क्रि.– फिसलना।

पिसाच – वि.– भूत, राक्षस, प्रेत।

पिसाणा – क्रि.– पिसवाना।

पिसाब – स्त्री.– पेशाब, मूत्र।

पी

पीओ – क्रि.– पीने का काम करो।

पीक – वि.– थूँक, लार।

पींख – स्त्री.– पंख, पाँख, पाँखड़ा।

पींखड़ा – स्त्री.– पंख।

पीछो – वि.– पीछा करना।

पींजणो – क्रि.– पींजना, रुई धुनना।

पींजारो – रुई धुनने वाली जाति।

पीटणो – क्रि.– पीटना।

पीठ – पु.– शरीर का पिछला पृष्ठ भाग।

पीठो – पु.– वह स्थान जहाँ जनसमूह के लिये रसोई तैयार करके सुरक्षित रखी जाती है, भोजनालय, भण्डार, लकड़ी का भण्डार।

पीठोड़ी – स्त्री.– नई उम्र की युवा घोड़ी।

पींडवाड़ो – पु.– वह स्थान जहाँ उपले थापकर उन्हें व्यवस्थित क्रम से पिरामिड जैसा जमाया जाता है।

पीड़ – वि.– पीड़ा, तकलीफ।
(आई कमर माय पीड़।)

पींड – वि.– पिण्ड, वृक्ष का धड़, गीले आटे का गोल पिंड।

पींड खजूर – पु.– खजूर का फल।

पीड़ी – वि.– वंशानुक्रम।

पीड़ी दर पीड़ी – क्रि.वि.– वंश परम्परा से चला आ रहा क्रम।

पींडी – स्त्री.– ज्वार मक्का के डंडों का समूह जो एक गाँठ में बँधा होता है,
एड़ी से घुटने के मध्य का स्थान।
(पींडी पकड़े कुतरी हो।)

पींड नी छोड्यो – क्रि.वि.– पीछा न छोड़ा।

पींडल्याँ – स्त्री.– दोनों पैरों की पिंडलियाँ।

पीणो – क्रि. – पीना।

पीतल – पु.– ताँबे और जस्ते के मेल से बनी पीली उपधातु जिससे बरतन बनते हैं।

पीतल्यो – वि.– पीलापन लिये हुए, खटाईदार वस्तु पीतल के बर्तन में रखने से विकृत हो जाती है।

पीतली – स्त्री.– कसैली हुई साग–सब्जी या अन्य वस्तु।

पीताम्बर – पूजा पाठ के स मय पहिना जाने वाला रेशमी अधोवस्त्र , सोला, पीला वस्त्र, विष्णु।
(माता लाड़ी वऊ धोवे आपरा चीर पीताम्बर उलटवईरया। मा.लो. 627)

पीतो – चित्त।
(भावज रो पीतो बले । मा. लो.469)

पींदो – अव्य. – निचना भाग, पेंदा या पैंदी।

पीप – वि.– पीब, पाक, पस।

पीपल – पु.– अश्वत्थ वृक्ष।

पीपलई – सं.– पीपल, अश्वत्थ वृक्ष।

पीपलामूल, पीपरा मूर – स्त्री.– एक औषधि, पिप्पल।
(पियो वो सुवागण पिपलामूल । मा.लो. 42)

पीपो – पु.– टीन का कनस्टर, डिब्बा, पीपा, एक संत कवि।

पीब – क्रि.– पीना।

पीयर – सं.– पीहर, मायका, मातृ गृह।
(नैहर पीयर पाड़ो सा। मा. लो.616)

पीयरिया – सं.– पीहर, मायका।

पीयर प्यारी – क्रि.वि.– मायके को प्रिय लगने वाली।

पीयर वाट – पु.– पीहर का रास्ता, मायके जाने वाला रास्ता।

पीय – क्रि.– पति।

पीयू – पु.– प्रियतम।
(पीयू परदेस में। मा.लो. 581)

पीर – स्त्री.– मुसलमानों के देवता, पीर पेगम्बर, पीड़ा, दर्द।

पीर्‌या – क्रि.– पी रहे, पीले कपड़े।

पीलनो – क्रि.– तेल निकालना, घाणी करना, निचोड़ना।

पीलपड़ीगी – क्रि. वि.– भीड़ इकट्ठी हो गई, भीड़ लग गई।

पीला पड्या – क्रि.वि.– पीले पड़ गये, पीत वर्ण के हो गये।

पीला पील – जनसमूह, संकट, भीड़, किसी बात की अधिकता।
(मोटर आखी भरइगी मनक की पीला पील में। मो.वे. 52)

पीलो – वि.– पीला रंग।

पील्यो – पीली बार्डर वाली चुनरी।(जब पहला बच्चा होता है तो पीलिया ओढ़ाया जाता है।)
(पील्यो ओड़ो तो ववड़ लागो थें नीका। मा.लो. 22)

पीव – क्रि.– पीने का कार्य करो, वि.– पीप, पस, पु. – प्रियतम या प्रिय व्यक्ति।

पीवणो – क्रि.– पीना।

पीवत पीवत – क्रि.वि.– पीते-पीते।

पीसणा – क्रि.– पीसना, अनाज आदि की पिसाई करना।
(गड़ पर पीसवा जाय। मो. लो.571)

पु

पुकनखत्तर – क्रि.वि.– पुष्य नक्षत्र।

पुकारणो – क्रि.–बुलाना, टेरना, ललकारना, आवाज देना।

पुकार्‌यो – पु. –आवाज दी, बुलाया, चिल्लाया।

पुष्ट – वि.– पक्का, मजबूत, पुष्ट।

पूरवता – पूर्ण करते हुए, माँडना, चौक पूरना।

पुखराज – पु.– एक प्रकार का पीला रत्न।

पुंगी – स्त्री.– सुपारी, बच्चों की मुँह से बजाने की नलिका या बाजा।

पुजई गया – क्रि.– पूजा गये।

पुजणो – क्रि.– पुजाना, आदर करना।
(राणी पूजे राज ने मैं पूजूँ सुवागने।)

पीसणो – पीसना, नाज आदि पीसने की वस्तु, चूर्ण करना, शोषण करना, ताश के पत्तों को पीसना, किसी वस्तु को सिलबट्टे से रगड़ना।
(वा गड़ पर पीसन जाय रे म्हारा लाल।मो.लो. 571)

पुजापो – पु.– देवी- देवताओं की पूजा की सामग्री।

पुजायो – क्रि.वि.– पूजा जाना, सम्मानित होना।

पुट – पु.– पुड़, तह, सीधा, दोना, संपुट।

पुट्ठा, पुट्ठो – पु.– पुट्ठा, कड़ा कागज जिसकी जिल्द बनाई जाती है, पृष्ठ भाग, शरीर का पिछला हिस्सा, नितम्ब, गत्ता।

पुड़ – पु.– तह, संपुट।

पुढ़ारणो – क्रि.– आगे बढ़ाना, पापड़ की जूड़ी फुहारना।

पुण्य – वि.– पुण्य कर्म।

पुतई – स्त्री.– पुताई।

पुतरवती, पुतरवान – स्त्री.– जिसके पुत्र हो।

पुतली – स्त्री.– छोटा पुतला, गुड़िया, आँख के बीच का काला भाग, हीरा, राजस्थान का पुतली नृत्य।

पुतलो – पु.– लकड़ी, घास, कपड़े आदि का बना हुआ मनुष्य का पुतला।

पुदीनो – पु.– पोदीना।

पुन्न – वि.– पुण्य, सत्कर्म।

पुनर व्याव – क्रि.वि.– फिर से विवाह करने की रीति, नात्रा।

पुरखा – पूर्वज, पूर्व पुरुष, पूर्वक, साथ, सहित।
(जाय पुरखा सोभारामजी बाप भेराजी जाय। मा.लो. 332)

पुरजो – पु.– टुकड़ा, हिस्सा।

पुरणो – वि.– पूरा होना, पूरा पाड़ना, गाड़ना, रोपना।

पुरतो – वि.– आवश्यक, पर्याप्त।

पुरन पोली – स्त्री.– चने की पिट्ठी को मीठा करके, आटे की रोटी में संपुट करके बनाई गई मीठी रोटी या पराठा, पूड़ी।

पुरनमासी – स्त्री.– पूर्णिमा।

पुरबला जनम – क्रि.वि.– पूर्वजन्म।

पुरबलाभो – क्रि.वि.– पूर्वजन्म।

पुरस – पु.– पुरुष।
(नर पराया पुरससे। मा. लो.600)

पुरसोतम – पु. पुरुषोत्तम, विष्णु, जगन्नाथ, नारायण, मास- मलमास।

पुरिला – वि.– पूर्ति हुई, पुर गया, पूरा पड़ गया।

पुरी – स्त्री.– नगरी, छोटा शहर, उड़ीसा की विख्यात जगन्नाथपुरी।

परोत – पु.– पुरोहित।

पुलटिस – स्त्री.– फोड़े आदि पकाने के लिये उन पर लगातार बाँधा जाने वाला दवाओं का मोटा लेप जैसे अलसी का पुलटिस।

पुलिस, पुलस – स्त्री.– सिपाही।

पुस्कर – पु.– राजस्थान का प्रसिद्ध तीर्थ जो अजमेर के पास पुष्कर है, जल, जलाशय, ताल, कमल, सात द्वीपों में से एक।

पुस्पक – पु.– कुबेर का विमान जो रावण ने छीन लिया था और राम ने उससे छीनकर फिर कुबेर को दे दिया था, पुष्पक।

पुस्टी मारग – पु.– वल्लभ सम्प्रदाय, परमेश्वर के अनुग्रह का मार्ग, पुष्टिमार्ग।

पू

पूग्यो – क्रि.– पहुँचा।

पूँखड़ा – ज्वार के भुट्टे।

पूगणो – क्रि.– पहुँचना।

पूँची – स्त्री.– पूछी, पूछा, प्रश्न किया।

पूछनो – क्रि.– पूछना, प्रश्न करना, जिज्ञासा प्रकट करना, खोज खबर लेना।

पूँछो, पूँशो – पु.– बक्खर नामक कृषि उपकर की डंडियों के पीछे लगाई जाने वाली लोहे की कीलें।

पूजन – क्रि.– पूजन करना, देवता की पूजार्चना करना।

पूजा – क्रि.– पूजार्चन, देवार्चन, आदर सत्कार, पिटाई।

पूड़ी – स्त्री.– घी या तैल में तली हुई पुरी, किसी वस्तु की बँधी हुई पुड़िया।

पूणी – पौनी, रुई, सूत काटने के लिये धुनी हुई रुई, रुई की बनाई हुई मोटी बत्ती, पूनी, पौना, चौथाई।
(हाँ रे म्हारा लाल पूणी चरकला लई गया। मा.लो. 571)

पूत – सं.– पुत्र।

पूतना – स्त्री.– पूतना नामक राक्षसी, मथुराधीश कंस की भेजी हुई सुन्दरी, दुष्टा स्त्री।

पूतलो – पु.– पुतला, ओड़का।

पूनम – पूर्णिमा।

पूनम पाटलो – स्त्री.– पूर्णिमा के दिन बनाई जाने वाली संजा की आकृति, संजा का भव्य अंकन।

पूर – वि.– बाढ़।
(आई नदिया पूर। मा.लो. 603)

पूरनमासी – स्त्री.– पूर्णिमा।

पूरण – वि.– पूर्ण, पूरा।

पूरणाहुति – स्त्री.– यज्ञ की समाप्ति पर अन्तिम आहुति देना, पूर्णाहुति।

पूरबज – बड़े बूढ़े जिनकी मृत्यु हो चुकी हो, पितृगण, पुरखे।

पूरब – पु.– पूर्व दिशा।

पूरो करनो – क्रि.– पूर्ण कर लो, पूरा कर लो।

पूलो – पु.– घास का पूला या गट्ठर।

पूस – पु.– पोष का महीना, घासफूस कड़बी आदि।

पूंजी – धन, पूँजी, द्रव्य, रुपया-पैसा,

दौलत, महान् व्यक्ति, गौरव पुरुष।

पूंद – नितंब, गुदा, पुट्ठे।
(मारो रे इना बेवईजी रा पूंद। मा. लो. 495)

पे

पे – अव्यय – पर, ऊपर।

पेंच – वि.– दाव पेंच, पुर्जा।

पेंचकस – पु.– एक औजार जिससे किसी पुर्जे को कसा जाता है।

पेचाण – वि.– पहिचान, परिचय, परख।

पेंचिस – स्त्री.– पेट में आँव होने के कारण होने वाला मरोड़, एँठन।

पेंची – क्रि.वि.– पगड़ी के पल्लू की जरी।

पेज – पु.– पृष्ठ, चावल का माँड जिसे आदिवासी जन बधारकर पीते है, परही।

पेट – पु.– उदर।
(फँस्या पेट में टापू। मो.वे. 84)

पेटभरो – केवल खाता, आलसी।

पेट लबूरनो – पेट खुजालना, नाखुनों से पेट नोंचना।
(गोठ गोठीड़ा खई गया जमईजी लबूरे पेटगाड़ा मारुजी। मा.लो. 541)

पेटी – स्त्री.– छोटा संदूक, पिटारी, हारमोनियम नामक पेटी का बाजा।

पेटीवालो – पु.– हारमोनियम बजाने वाला।

पेटू – वि.– पेट भरा, अधिक खाने वाला, खाकर खुश होने वाला।

पेटो – पु. – बीच की खाली जगह।

पेटो भर्‍यो – क्रि.वि.– कागजों की खाना पूर्ति करना, बीच का रिक्त स्थान पूरा करना, पेटा भरना।

पेडल – पु.– सायकल का पैर दान या पाँव रखने का स्थान।

पेड़ – पु.– झाड़।

पेड़ा, पेड़ो – पु.– खोये की एक प्रसिद्ध गोलाकार चिपटी मिठाई।

पेड़ी – स्त्री.– चढ़ाव, सीढ़ियाँ, जीना, महाजनी की जगह।

पेंतरा – क्रि.वि.– दाँव, वार।

पेदल – क्रि.– पैरों से चलकर कहीं जाने वाला, पाँव-पाँव।

पेदाइस – स्त्री.– उत्पत्ति, जन्म, पैदावार, उत्पादन।

पेदावार – स्त्री.– अन्न आदि जो खेत में उपजा हो, उपज, फसल।

पेदा हुओ – वि.– उत्पन्न हुआ, जन्मा, प्रसूत, प्रकट, अर्जित।

पेंदो – पु.– किसी वस्तु का वह निचला भाग जिसके आधार पर वह ठहरता है, पृष्ठ भाग।

पेन – पु.– लिखने की कलम, क्रि.– पहिन।

पेप का फूल – पोप फल, पूगफल, सुपारी के फल, पीले कनेर के फूल से अधिक विकसित पीला फूल।

पैमाइस – स्त्री.– नापना।

पैमानो – पु.– नाप तौल करने का यंत्र, मद्य पीने का पात्र, नाप।

पेर – वि.– प्रहर, एक प्रहर 3 घंटे का होता है, पु.- पाँव, पद, चरण, पाद, क्रि. पहिन, पहिनना।

पेरनी – बीज बोने की भोंगली या नाल।
(गजरा पेर करूँ रे लटका। मा.लो. 581)

पेरन्यो – पु.– अनाज ओरने का यंत्र, बीज वपन करने की नाल।

पेरवास – पु.– पहिनावा।

पेराया – क्रि.– पहिनाया।

पेराव – पु.– पहिनावा।

पेहराव – वि.– पहिनावा।

पेरी – स्त्री.– गन्ने का टुकड़ा, हिस्सा, गाँठ से गाँठ तक का भाग।

पेरो – पहिनो, पहिन लो, वि. -निगरानी, पहरा देना।

पेल – पु.वि.– पहिला, प्रथम।

पेलड़ी को – वि.– एक मालवी गाली।

पेल जोत – स्त्री.– बड़ी बत्ती वाला दीपक, समई।

पेलवान – पु.– पहलवान।

पेला, पेलाँ – वि.– पहला, पूर्व में, दूसरी ओर का, पहले।

पेलाँग – क्रि.वि.– उस ओर, उधर, दूर।

पेलाँत – वि.– पहले पहल का, प्रथम।

पेलाँ का – वि.– पहले का, प्रथम क्रम का, पहले वाला, प्राचीन काल का, पुराना।

पेलाँ परथम – सर्वप्रथम।
(पेलाँ परथम आया गणेस। मा.लो.139)

पेलाँ पेल – क्रि.वि.– सर्वप्रथम, पहिले पहल।

पेली पाँती – पहली पंक्ति, भोजन करने वाले की पंक्ति, पंगत, लाईन, भाग, हिस्सा, भागीदारी, पक्ष, बाजू।
(पेली पाँत रे ई कुण कुण बेठा। मा.लो. 435)

पेलाड़ी – क्रि.वि.– दूसरी ओर, अन्य स्थान पर, दूरी पर।

पेलाँ रे भव – क्रि.वि.– पूर्वजन्म।

पेलाँवारा – वि.– पहले वाला, पूर्व का।

पेली तरफ – वि.– उस ओर, दूसरी ओर।

पेली करो जतन – क्रि.वि.– सर्वप्रथम ही प्रयत्न कर लेना चाहिये।

पेली पेर – प्रथम पहर, अलसुबह, प्रभात, प्रातःकाल, सवेरा।
(पेली पेर म्हने न्हावत धोवत लागी हो मारुजी। मा.लो. 552)

पेली बखत – क्रि.वि.– प्रथम बार, प्रथम अवसर।

पेली बियांत – क्रि.वि.– प्रथम प्रसूता।

पेलोड़ – पहला, प्रथम।
(यो तो पेलो वचन बोल्या जनकीजी मा.लो. 683)

पेवलो – स्त्री.– मिट्टी की बनी हुई कोठी।

पेस – क्रि.– पेश करना।

पेसानी – स्त्री.– चिह्न, पहिचान।

पेसाब – स्त्री.– मूत्र।

पेसी – क्रि.– न्यायालय में उपस्थिति, वाद के लिये प्रस्तुत होना।

पेसो – पु.– पैसा, नगद धन।

पेहला – पु.– प्रथम, पहिला।

पेहचान – वि.– जान पहिचान।

पेहरी रया – क्रि.– पहिने।

पो

पो – न.– प्रभात, ब्रह्ममुहूर्त, चौपड़ के खेल में कौड़ियों के दाव, चौपड़ का पहला घर या खाना, प्याऊ।

पोई – रोटी बनाई, सुई में धागा पिरोया, बना देना, पिरो देना।
(आँकड़ा की रोटी पोई। मा.लो. 687)

पोई देगा – क्रि.– पिरो देगा, बना देगा।

पोई री – स्त्री.– रोटी बना रही, सुई में धागा पिरो रही।

पोक – वि.– छेरना, पहले दस्त लगना।

पोकनो – क्रि.– छेरना, पतले दस्त आना, वि.– पुष्टि कारक खाद्य पदार्थ।

पोकणो, पोकणा – वि.– पुष्टि कारक पकवान्न, उत्तम भोजन, पतले दस्त आना।

पोखई गयो – पु.– तृप्त हो गया, खा पीकर मस्त हो गया, संतुष्ट हो गया।

पोंखड़ा, पोंखड़ो – पु.– ज्वार के हरे भुट्टे, जिन्हें आग में सेंककर और डंडे से पीटकर दाने निकाले और खाये जाते हैं।

पोखर – पु.– गड्ढा, पानी का गड्ढा।

पोखरणो – क्रि.– पोला बनाना, खोखला करना, खोदना।

पोंगा, पोंगो – वि.– हट्टा-कट्टा, मोटा-ताजा, पोचा, स्थूलकाय।

पोंच – वि.– पहुँच, सूझबूझ, किसी भी कार्य को करने की तथा करवा लेने की क्षमता, होशियार, समर्थ।

पोंचणो – क्रि.– पहुँचना।

पोंचा – क्रि.– पहुँचे, पहुँच गये, हाथ का पहुँचा, कलाई।

पोचा – वि.– हल्का, कमजोर।
पोंचाणो – क्रि.– पहुँचाना।
पोंची – स्त्री.– कलाई का आभूषण, रक्षा सूत्र विशेष।
पोंचो – वि.– पहुँचा, पहुँच गया।
पोटणो – क्रि.– पहुँचेगी, पहुँच जावेगी, पटाना।
पोटला – पु.– बड़ा थैला, बड़ी गाँठ।
पोटली – स्त्री.– छोटी गाठरी, गाँठ, चादर में कोई वस्तु बाँधकर सिर पर या कंधे पर डाली जाने वाली गठरी, कपड़े की गठरी, किसी वस्तु को गाँठ जैसी बाँधना।
(छोड़ो ओ पोटली ने करो सिणगार। मा.लो. 583)
पोटल्यो – वि.पु.– पुट्टल, बाँधने वाला, भिक्षुक या भिखरी, पटा लिया।
पोटा – गोबर।
पोटीर्‌या – क्रि.– पोट रहा, आटा पीसने की क्रिया, पटा रहा, वश में करने का प्रयत्न कर रहे, पटा रहे।
पोठा, पोठो – गाय-भैंस आदि पशुओं का गोबर।
पोड़नो – सोना, शयन करना, निद्रा आना, लेटना, आराम करना।
(पोड़ेगा श्री भगवान्। मा.लो. 606)
पोंडा – वि.– मोटा ताजा, हष्ट पुष्ट, गन्ने की एक किस्म।
पोड़ाया – क्रि.– सुलाया, शयन करवाया गया।
पोड़िया – क्रि.– सो रहे।
पोणो – क्रि.– रोटी पोने या बनाने की क्रिया या भाव, रुपया या किसी वस्तु का पौन हिस्सा निर्मित करना।
पोत – वि.– किसी वस्तु की बुनावट के लिये कपड़े आदि का स्तर देखना, जहाज, क्रि. - पोतना या घर की दीवारों पर सफेदा करने की क्रिया या भाव।
पोतड़ा – वि.– शिशुओं के अधोवस्त्र, जो तिकोने आकार के होते हैं, लंगोट जैसा सिला हुआ बच्चों के गुप्तांगों पर बाँधने का वस्त्र।
(पोतड़ो समाल रे पोतड़ो समाल कालुजी गेल्या पोतड़ो समाल। मा.लो. 442)
पोतण, पोतना, पोतनो –क्रि.– पोतना, पुताई करना, सफेदा करना, वि.- किसी की जेब साफ कर देना।
पोता – पु.– पुत्र का पुत्र।
पोती – स्त्री.– पुत्र की पुत्री, तवे पर डली रोटी को घी या तेल लगाकर सेकना, क्रि.- पुताई कर दी।
पोतो – न.– बेटे का पुत्र, पौत्र, फर्श साफ करने का कपड़ा, दीवार पोतना, सूखा मेवा, अफीम रखने का बटुआ।
पोथा – पु. – बड़ी पोथी, पुस्तक या ग्रन्थ।
पोथी – स्त्री.– पुस्तक, पुस्तिका, छोटा ग्रन्थ।
(पोथी तो पानाँ। मा.लो. 677)
पोदी – क्रि.– पिरोने का कार्य कर दिया, सुई में धागा पिरोना या धागे में मोती पिरोना, रोटी बनाना।
पोदीना – स्त्री.– एक जमीनी लता जिसके पत्तों की चटनी बनाई जाती है तथा इसका अर्क निकालकर औषधि के कार्य में लिया जाता है।
पोदो – पु.– पौधा, पौध, क्रि.- पोने का कार्य करो।
पोधा – पु.– किसी वृक्ष या सब्जी का पौध।
पोना – क्रि.– पिरोने का कार्य करना, ईट आदि वस्तु का पौन हिस्सा।
पोनी – स्त्री.– रुई की पूनी।
पोप – पु.– ईसाइयों के धर्मगुरु।
पोप का फूल – सुपारी का फूल।
पोपट – तोता, सुआ, मिट्ठू, शुक।
(पींजरा से पोपट उड़ी गयो।)
पोपड़ा – वि.– दीवारों का उखड़ा हुआ पलस्तर,

दीवारों की कलाई उखड़ना, वृक्ष की छाल निकलना।

पोपला – वि.– जिसके मुँ ह में दाँत न हों, पोला।

पोप लीला – वि. – नाटकबाजी, ढोंग ढकोसला।

पोपलो मूँडो – क्रि.वि.– पोपला मुँह, जिसके मुँह में दाड़ दाँत न हों।

पोबारा – क्रि.वि.– भरपूर आमदनी, सम्पन्नता।

पोबारा पच्चीस – क्रि.वि.– जुआ का खेल या दाँव।

पोमचा – वि.– छापे वाला वस्त्र या साड़ी, पीली छापे वाली साड़ी, बूँटीदार साड़ी की एक भाँत, बँदेज।
(सासु ओड़ाऊँ पोमचीया।)

पोमाणो – क्रि. – आत्मप्रशंसा करना, गर्व की बातें करना, डींग हाँकना, हर्षित होना।

पोयरा – वि.– पहरा, समय।

पोया – क्रि.– पिरोया, बनाया, चावल का बना हुआ पोहा।

पोया सेकूँ – क्रि.वि.– एक गाली, दूसरे की पोई गई वस्तु को कोई तीसरा ही सेके अर्थात् व्यर्थ की आफत उठाना।

पोर – वि. स्त्री.– उँगली की गाँठ या जोड़ जहाँ से वह झुकती या मुड़ती है, टुकड़ा, पेरी, पहर का समय, मुख्य द्वार या दरवाजा, गत वर्ष।

पोर दफोर – स्त्री. – घड़ी दो घड़ी, थोड़ा सा समय।

पोरस्या की माया – वि.– अखूट सम्पदा, अक्षय भण्डार, कथा सन्दर्भ के अन्तर्गत हीड़ के प्रसिद्ध नायक राजा भोज को गो चारण के उपलक्ष में मिली बाबा रूगनाथ शंकर भगवान की अक्षय निधि, स्वर्ण पिण्ड।

पोर रात – वि.– पहर भर रात्रि व्यतीत होना, 10 बजे के लगभग का समय।

पोरा – लड़ते हुए मारा गया।

पोरा सुईग्या – क्रि.वि.– रक्षकगण सो गये, प्रहरी सो गये, रखवाली करने वाले सो गये।

पोल – वि.– कोई पोली वस्तु, मुख्य दरवाजे से जाने का मार्ग, जमीन के भीतर की गुफा, भीतर से रिक्त वस्तु, पूर्वज, पाताली, प्रवेश द्वार। (म्हारा दादाजी री पोल। मा. लो.712)

पोलक – न. – स्त्रियों के पहनने का एक वस्त्र, ब्लाउज।
(पोलको ने बाड़ी। मो.वे. 51)

पोल पट्टी – ना.– अव्यवस्था, खाली जगह, परवाह नहीं करता, खालीपन, दरवाजा।
(रखवाला की पोल में। मो. वे.37)

पोली, पोळी – स्त्री.– मोटी एवं मीठी रोटी जो विशेष प्रकार से तैयार की जाती है, जैसे पोलन पोली।
(हो पन्द्रे आया पामणा पोली पोई रे एक गाड़ा मारुजी। मा.लो. 541)

पोले – स्त्री. – दरवाजे के पास, दरवाजे पर, पिरोने का कार्य कर।

पोवणी – स्त्री.– मिट्टी का तवानुमा बर्तन जिस पर रोटी पकाई जाती है।

पोवणो – क्रि.– पोना, रोटी बनाना, किसी वस्तु या मोती आदि को धागे में पिरोना।
(माला पाट पोवाव। मा. लो.573)

पोस – स्त्री.– पोष मास।

पोसरो – वि. – मुलायम, खस्ता।

पोसाक – पु.– पोशाख, पहनने के सम्पूर्ण वस्त्र।

पोसाय – वि.– लाभ होना, पूर पड़ना, लाभ देना।

पोसायनी – क्रि.वि. – पूर नहीं , पड़ता, पूरा नहीं होता, लाभ नहीं होता।

पोसीदा – वि.– गुप्त।

पोस्यो – क्रि.– बड़ा किया, संवर्धन किया, पालन पोषण किया।

प्रतिपाला – पालन करने वाली, माँ भवानी, नवदुर्गा।
(अरे जुवाला की रे प्रतिपाला की जगदम्बे आद भवानी रे। मा.लो. 667)

प्राग्रज लोवो – लोहे का नुकीला सुआ जिसे दूल्हे को तेल चढ़ाते समय नारियाँ हाथ में रखती हैं।
(सरी रे सोना री घड़ाओ के प्राग्रज लोवा री रे। मा.लो. 369)

प्राणी – जीव, प्राण, आत्मा।
जीवड़ो जावेगा प्राणी एकलो।

प्रीत – प्रेम, प्रीति, आनन्द, हर्ष, कृपा।
(होजी म्हारी लागी प्रीत तोड़ाई रे। मा.लो. 625)

प्रेम ब्याज – प्यार व्याज के समान, प्यार सूद के समान, प्रेम सूद के समान बढ़ता ही जाता है।
(प्रेम ब्याज दन दन बढ़े, नी छूटन की आस। मा.लो. 564)

फ

फ – प वर्ग का वर्ण।

फक्क – वि. - सफेद।

फकत – अव्य. – केवल, मात्र।
(फकत रुपया नारेल दई जाव। मो. वे.79)

फक्कड़ – वि. – मनमोजी।

फक्टरी – स्त्री. – कारखाना।

फंकड़ी – स्त्री.–पंखुड़ी, पाँखुड़ियों की कतार।

फकाण – पु. – पत्थर, पाषाण।

फंकी – स्त्री. – किसी दवा आदि वस्तु को जो फाँककर खाई जाती है, उतनी मात्रा जितनी एक बार में फाँकी जाय।

फकीर – पु. – कंगाल, भिखारी।

फखर – पु. – गौरव, नाज।

फग्गण – पु. – फाल्गुन मास।

फचा – वि. – फिर से, पीछे से।

फचाणली – स्त्री. – पहिचान ली गई, पहिचानी।

फजर – स्त्री.अ. – सवेरा, प्रातःकाल।

फजल – पु. – अनुग्रह, कृपा दृष्टि।

फजीतो – वि. – दुर्दशा, कच्ची केरी को आग में भुनकर उसे पानी में मसलकर शकर जीरा नमक आदि मिलाकर बनाया गया एक पाचक पदार्थ, फजीता पड़े लोग।

फजीतवाड़ो – क्रि. वि. – किचकिच या रातदिन का लड़ाई झगड़ा।

फजूल खरच – वि. – व्यर्थ और बहुत खर्च करने वाला, अपव्यय।

फटकड़ी – स्त्री. – फिटकड़ी।

फटक – क्रि.– अनाज आदि को सूप में डालकर फटकना या साफ करना।

फटकण – पु. – वह रद्दी अंश जो कोई चीज फटकने पर निकले।

फटकणो – क्रि. – फटकना, छिटकना, खिसकना, दूर होना, पास आना।

फटकणी – स्त्री. – जिससे कोई वस्तु फटकी या साफ की जाय, सूप, सूपड़ा आदि।

फटकारनो – क्रि.–धिक्कारना, लानत, फटकार लगाना, मारना, पीटना।

फट फजीतो – क्रि.वि. – छिछालेदर, आड़े हाथों लेना।

फटफटी – स्त्री. – मोटर सायकल।

फटफट – क्रि.वि. – मोटर सायकल से निकलने वाली ध्वनि।

फटकणी – स्त्री. – सूप, सूपड़ा।

फटकणो – क्रि.वि. – पास में आना।

फटक फटक – क्रि.वि. – ढीले वस्त्र, पछोरने की आवाज।

फटकल – वि.– मुँहफट, अशुभ, बकवादी।

फटकल्यो – क्रि.– फटक लिया, साफ कर लिया।

फटका – क्रि. – फटकने का कार्य किया, प्रहार, मार।

फटकारणो – क्रि. – फटकारना, आड़े हाथों लेना, डाँटना।

फटना – क्रि. – कुछ भाग अलग होना।

फटीचर – वि. – फटे पुराने वस्त्र पहनने वाला,

कंगला व्यक्ति, गरीब या निर्धन।

फटीका – पु. – फटाखे, आतिशबाजी।

फटी फटी फिरेगी – क्रि.वि. – एक गाली।

फटो – क्रि. – फटा हुआ।

फटा बाँस री आवाज – वि. – विकृत आवाज या ध्वनि।

फड़ – वि. – अड्डा, टोली, मण्डली, गोष्ठी।

फंड – पु. – निधि, चंदा, दान।

फड़कन – स्त्री. – फड़कना, झटकना।

फड़कनो – क्रि. – रहकर नीचे -ऊपर या इधर-उधर हिलना, भुजा या आँ ख आदि का फड़कना।

फड़ाणो – क्रि. – पंख फड़फड़ाना।

फड़की री – स्त्री. – फड़क रही, कूद रही, उछल रही।

फण – पु. – साँप का फन, रस्सी का फँदा।

फण गट – वि. – चक्कर खाकर गिरना, घूमकर नीचे गिर जाना।

फणो – पु. – साँप का फन।

फतवो – पु. – किसी बात के उचित या अनुचित होने के सम्बन्ध में दी जाने वाली व्यवस्था।

फते – स्त्री. अ. – विजय, जीत।

फतूर – वि.अ. – विकार, उत्पात।

फत्तर – पु. – पत्थर, भाटा।

फंद – वि. – फंदा, षड्यंत्र।

फंदणो – क्रि. – किसी को फाँदने के लिये लाया हुआ रस्सी का घेरा, पाश, फाँदना, फंदे में फँसना।

फदकी र्‌या – क्रि. – फुदक रहे, उल्लसित हो रहे, कूद रहे।

फंदा में पड़नो – क्रि.पु. – जाल में फँसना, चक्कर में आना, झमेले में पड़ना।

फन – पु. – कला कौशल, फण।

फफोला – पु. – छाले।

फब्ती – वि.स्त्री. – व्यंग्य।

फबनो – पु. – सुन्दर लगना, खिलना।

फरक – पु. अ. – फर्क अलगाव, भेद, अन्तर, अलग।

फरकती – स्त्री. – छुटकारा।

फरकाना – क्रि. – अलग करना, गीले वस्त्र आदि को हवा में नमी कम करना।

फरगी – स्त्री. – फल गई, गर्भ रह गया, गाभिन हो गई।

फरज – पु. – कर्त्तव्य, कर्म, मान लेना, कल्पना करना।

फरजी – वि. – नकली, बनावटी, कल्पित।

फरजे – क्रि. – घूमना फिरना, टहलना, इधर उधर डोलना।

फरती – ना. – चलती, दुःशीला स्त्री, भटकती फिरने वाली स्त्री, फिरती हुई, वेश्या।

फरतो-हरतो – वि. – जो आ-जा सके, काम कर सके।

फरद – स्त्री. – स्मरण रखने के लिये लिखा हुआ कागज, लेखा या सूची आदि।

फरना भेरु – फरना खेड़ी के भेरुजी, भैरवजी।

फिरनो – घूमना। (बारा रे फिरोगा। मो. वे.79)

फरमाइस – स्त्री. फा. – कोई चीज लाने या बनाने अथवा कोई काम करने के लिये दी जाने वाली आज्ञा।

फरमाओ – स्त्री. – आदेश दो, हुकुम करो।

फरमान – पु. – राज्य या राजा की आज्ञा, वह पत्र जिस पर इस प्रकार की आज्ञा लिखी हो।

फरमानो – क्रि. – आदेश देना।
(माता ने जई फरमावे म्हारा सगा नणदोईसा। मा.लो. 515)

फरमावणो – क्रि. – आज्ञा करना, आदेश देना, फरमाना।

फरमो – पु. – लकड़ी, मिट्टी, मोम, धातु आदि का वह ढाँचा जिसमें ढालकर चीजें बनाई जाती हैं।

फर्‌राँट – वि. – वेग, तेजी, तीव्रता से काम करने, बोलने या तीव्रगति से चलने वाला।

फरस – पु. – बैठने आदि के लिए समतल और पक्की भूमि, ऐसी भूमि पर बिछाया हुआ फर्श या जाजम स्पर्श।

फरसो – पु. – एक प्रकार की तेज धार की कुल्हाड़ी जिसका फाल चौड़ा व चन्द्राकार होता है, फरसा।

फरागत होणो – स्त्री. – छुटकारा पाना, मुक्ति, बेफिक्री, पाखाना आदि से फरागत होना, निपटना।

फराणी – स्त्री. – फल गई या ग्याबिन हो गई, गर्भ ठहरना।

फराणी, फहराणो – क्रि. – झंडा, कपड़ा आदि को वायु में लहराना, उड़ाना, फहराना।

फरार – वि.आ. – भागा हुआ कैदी।

फरासन – माच में जाजम बिछाने वाला नारी पात्र।

फरियाद – वि.फा. – फरियाद करने वाला, प्रार्थी , निवेदक।

फरिस्तो – पु. फा. – फरिश्ता, देवता।

फरेब – पु.फा. – छल कपट।

फल – पु. – वह वस्तु जो किसी विशिष्ट ऋतु में खेतों में पैदा होती है, परिणाम, लाभ।

फलदान – पु. – विवाह सम्बन्ध स्थिर करने की एक रस्म जिसमें वर को रुपया नारियल दिया जाता है।

फलाँगणो – स्त्री.– एक जगह से उछलकर दूसरी जगह जाना।

फलाणो – अमुक व्यक्ति, फलाँ व्यक्ति, कोई व्यक्ति। (महल पोड़ला फलाणा घर नार। मा.लो. 42)

फली – क्रि.स्त्री. – मुमफली या भूमफल, चँवला, मूँग, अरहर आदि की फलियाँ, छोटा फल, गाभिन होना।

फलीभूत – स्त्री.वि. – परिणाम।

फलो – दरवाजानुमा सादी लकड़ी व फूस से बनाया गया द्वार।

फव्वारो – पु. – फव्वारा।

फसकन, फसकनो – क्रि.– फिसलना, फिसकना, चिकनी फर्सी या जमीन से पैर फिसलना, किसी कार्य से मुकर जाना।

फसकी – स्त्री. – फिसली, पीछे हटी।

फँसणो – क्रि.पु. – धोखा खाना, फुसलाने में आना, छला जाना,उलझना।

फसरणो – लम्बा चौड़ा होकर बैठना, आराम से बैठना, दूसरों को बैठने के लिये जगह नहीं देना। (आई दयारामजी वाली फसरगई धमचक लगवा दो। मा.लो.भाग दो)

फसाद – पु.अ.– विकार, खराबी, उत्पात, उपद्रव, लड़ाई, हुज्जत।

फँसानो – क्रि. – फँदे मे डालना या उलझाना।

फसारसी – स्त्री. – फैलाती, चौड़ा करती।

फसारो – न. – फैलाव, विस्तार, फैलावा करना।

फसावणो – क्रि. – फँसाना, उलझाना, बहकाना, भुलावा देना, धोखा देना, छलना, जाल में फँसाना, झंझट में डाल देना।

फँद – फंदा, बंधन, जाल, फंदे में पड़ना, फँसना, मायाजाल, आडम्बर, ढोंग। (नवल बनाजी पड़ गया फंद में। मा.लो. 387)

फा

फाँक – स्त्री. – फल आदि का काटा या चीरा हुआ, लंबोतरा टुकड़ा, फाँक, फलक, लम्बा टुकड़ा, चीर, चूर्ण खाना, गप्प, गप्पी।

फाँकड़ा – वि. – पंख, अलबेला, बाँका।

फाँकणो – क्रि.हि. – फँकी दाने या चूर्ण खाने के लिये ऊपर से मुँह में डालना, गप्प लगाना, फँकी मारना, सत्तू या चूर्ण आदि फाँकना।

फाँका – पु. – फँका, नागा।

फाँका कशी – वि. – उपवास, घर में अन्न का पता न चलना, निर्धनता में जीना, इधर उधर

गप्प हाँकना।

फाँकू – वि. – गप्पी, झूठा, बकवास करने वाला।

फाग – पु. – होली के अवसर पर गाई जाने वाली फाग गीति, रसिया, फागुन का लोकोत्सव जिसमें लोग एक दूसरे पर रंग गुलाल डालते हैं तब गाये जाने वाले लोकगीत।
(नणद बाई वरजो मति मोत्याँ वाला से खेलाँगा फाग। मा.लो. 580)

फागन – पु. – फाल्गुन मास।
(मसत मईनो फागण को। मा. लो. 571)

फागी – स्त्री. – मिल गई, प्राप्त हो गई।

फाची – स्त्री. – फिर से, दुबारा।

फाछे फाछे – क्रि.वि. – पीछे पीछे।

फाटक – पु. – दरवाजा, द्वार।

फाटणों – क्रि. – विरुद्ध होना, दरार पड़ना, बहुत अधिक दर्द होना, मर्यादा बाहर होना, अभिमान करना, गर्व से फूलना, जवानी का जोश चढ़ना, मस्ती में आना, फटना, चिरना, दरकना, फटना, दूध का बिगड़ जाना। (टाटी तोड़ नजारा मार्‌या छाती फाटी रे। मा. लो. 429)

फाटिक सिल्ला – स्त्री. – फटिक शिला, स्फटिक शिला।

फाटो – वि. – फटना, फटा हुआ, फटा टूटा, पुराना, जीर्ण।

फाट्‌याँ नी मले – क्रि.वि. – दिल और दूध, फटने पर फिर से नहीं मिलते।

फाड़णो – क्रि. – चीरना, मुँह खोलना, फाड़ना, दूध में खटाई डालकर पानी अलग करना। (हूँ बोल्यो के फाड़ी मती लाखजो।)

फाड़ा – वि. – पहाड़ा, पट्टी पहाड़ा, अनाज के बड़े -बड़े टुकड़े, क्रि. - फाड़ डाला, चीर डाला।

‘फा’

फाणी – स्त्री. – पानी।

फाणूस – वि. – फानूस, काँच की बनी हुई सजावट की सामग्री।

फाँदण्यो – गाड़ी या सामंद के जूड़े को संतुलित व मजबूती प्रदान करने वाली मोटी रस्सी।

फाँद्यो – ना. – फाँदा, छलाँग, बाँधा, फंदा, कूदना, छलाँग।

फायदो – पु. – लाभ, नफा, हित, भलाई, अच्छा फल या प्रभाव, फायदा।

फायदेमंद – वि.फा. – लाभदायक।

फाया, फायो – क्रि. – प्राप्त हुए, मिला, सं. स्त्री.– इत्र या रुई का फाहा।

फारकती – स्त्री. – छुटकारा, बन्धन से छुटकारा।

फार्म, फारम – पु. – आवेदन पत्र, नमूना, ढाँचा।

फाल्यो – पु. – लोहे का वह फल जो हल के नीचे लगा रहता है, गाँव का दूसरा भाग, कोस्या।

फालतू – वि. – आवश्यकता से अधिक, अतिरिक्त, व्यर्थ।

फावड़ो – पु. – मिट्टी खोदने का फरसा, चौड़ा कुदाल।

फाँस – स्त्री. – पाश, फंदा, जाल, कमंद, चमड़ी में फाँस (बारीक तिनका) घुस जाना। (मेंदी की लागी फाँस सायबा। मा.लो. 592)

फाँसना – क्रि.सं. – फँसाना, पाश में डालना, वह फँदा जिसमें पशु पक्षी फँसाये जाते हैं, फाँस।

फासलो – पु. – दूरी, अन्तर।

फाँसी – स्त्री. – फँदा, फँसाने का फँदा, गला घोटकर दिया जाने वाला प्राण दण्ड।

फाँसो – क्रि. – फँसाओ, जाल में फँसा लेना, चौपड़ के पाँसे।

फाँसणो – क्रि.– फाँसना, जाल में उलझाना, उस्तरा।

'फि'

फिंकड़ा – स्त्री. – पंख, पाँख।

फिकर – स्त्री. – चिन्ता, विचार, उपाय।

फिंकायो – क्रि. – फिकवा दिया।

फिटकड़ी – स्त्री. – सफेद रंग का एक पदार्थ जो प्रायः पानी साफ करने एवं औषधि के काम में आता है।

फिटो पडनो – लज्जित करना, अपमानित करना, फीका पड़ना।

फितरती – वि. – अधिक (वक्र) क्रियाशील

फितूर – वि. – विश्वासघात, छलछिद्र।

फिरका – पु. – पंथ, दल आदि।

फिरकी – स्त्री. – खूब घूमने वाला, काठ या मिट्टी का एक गोल छोटा खिलौना जिसमें धागा पिरोकर बच्चे घुमाते हैं, चकरी जैसा खिलौना, चकई, पतंग की लड़ाई।

फिरगी – स्त्री. – वापस लौट गई, चली गई, फिर गई।

फिरंगी – पु. – विलायती तलवार, अंग्रेज। (चट्टी लूटे बनिया और लूटे फिरंगी। मा.लो. 688)

फिरणो – क्रि. – घूमना, मुड़ना, चक्कर खाना, टहलना, लौटना।

फिरने गयो – क्रि. – किसी मृतक के घर पर संवेदना प्रकट करने के लिये जाना, फिरने जाना।

फिराक में र्‌यो – पु. – उधेड़बुन में रहा, ताक में रहा।

फिलम – स्त्री. – वह पट्टी जिस पर चलचित्र या सिनेमा के चित्र होते हैं।

फिसड्डी – पीछे रहने वाला, पिछड़ा हुआ।

फिसलन – स्त्री. – ऐसी चिकनाहट जिस पर पैर फिसले।

फिसलनो – क्रि. – गीली चिकनाहट से युक्त जमीन या बर्फ पर फिसलना, बदल जाना।

फी

फींक – स्त्री. – पंख, पाँख, पांखि, पंखुड़ी, पर।

फींकड़ा – स्त्री. ब. व. – पंख, पाँखड़े, पंखुड़ियाँ।

'फी'

फीको – वि. – स्वाद, रस आदि के विचार से हीन या निकृष्ट, रंग, जाति, शोभा आदि के विचार से हीन या तुच्छ, नीरस।

फीणी – स्त्री. – एक मिष्ठान।

फीतो – पु. – जमीन या किसी वस्तु के नापने का फीता, नाड़ा।

फु

फुंकईगी – स्त्री. – फूँक दी गई।

फुँकना – क्रि. – फूँका या जलाया जाना, नष्ट या बरबाद होना।

फुंकनी – स्त्री. – वह नली जिसमें फूँक भरकर आग सुलगाई जाती है।

फुंकारणो – क्रि. – साँप का फुफकारना, आवाज करना, फूँकारना, फू-फू की आवाज करना।

फुग्गो – पु. - फुग्गा, गुब्बारा।

फुगावणो – क्रि. – फूँक देकर गुब्बारे को फुलाना या हवा देने के यंत्र में गुब्बारे या सायकल आदि के ट्यूब को फुलाना।

फुटकल – वि. – फुटकर, छिटपुट, खेरची, छुट्टा, खुल्ला।

फुटणो – क्रि. – फूटना, टूटना, फटना, दरकना, अँकुरना, अंकुर निकलना।

फुटी कोड़ी – वि. – कानी कोड़ी।

फुदकनो, फुदकणो – क्रि. – चिड़ियों की तरह एक स्थान से दूसरे तक उछलते हुए चलना, फुदकना।

फुदक्याँ करे – क्रि. – फुदकता रहे, फुदकती रहे

फुन्सी – स्त्री. – छोटा फोड़ा, एक चर्म रोग।

फुपकारनो, फुँकारणो – क्रि. – क्रोध में आकर साँप की तरह फू-फू करते हुए मुँह बढ़ाना या फूत्कार करना।

फुरसत – वि. – अवकाश, जिसे कोई कार्य न हो।

फुरती – वि. – चटपट काम करने की चाह, शीघ्रता, जल्दी।

फुरतीलो – वि. – हर कार्य त्वरित गति से करने वाला, तेज।
फुरसत – वि. – अवकाश के क्षण।
फुरेरी – स्त्री. – रोमांच वाली कंपकंपी, इत्र में डुबाई हुई वह सींक जिसके सिरे पर रुई लिपटी हो।
फुलका, फुलको – पु. – हल्की पतली और फूली हुई गेहूँ की रोटी, चपाती।
फुलड़ा – पु. – फूल, पुष्प।
फुलणो – क्रि. – फूलना, खिलना, विकसित होना, कलियों का खिलना या चटक्ना।
फुलझड़ी – स्त्री. – एक प्रकार की छोटी लम्बी आतिशबाजी।
फुलवाड़ी – स्त्री. – फूलों के पौधों का छोटा बाग, पुष्प वाटिका, बगीचा।
फुलाणो – क्रि. – फुलाना, गुब्बारा आदि को मुँह से फूँक देकर फुलाना।
फुलावणो – क्रि. – फुलाना।
फुलेल – पु. – इत्र।
फुसकारणो – क्रि. – फुफकारना।
फुसफुसाणो – क्रि. – बहुत धीमे धीमे स्वर में कान के पास मुँह ले जाकर बोलना, धीमे-धीमे बातें करना।
फुसलाणो – क्रि. – फुसलाना, बहकाना।
फुस्स – क्रि.वि. – धीमे- धीमे हवा के निकलने की ध्वनि।

फू

फू – क्रि. – फूँकना।
फू-फू – क्रि.वि. – फूँकने की आवाज।
फूँकड़गी – स्त्री. – फुँक गई, फूँक दी गई।
फूँकड़ो – पु. – ज्वार का हरा पोंखड़ा या भुट्टा।
फूँक्यो – क्रि. – फूँक दिया, जला दिया।
फूको – स्त्री. – काढ़ा, गुड़, अजवाइन एवं घृत को पानी में उबालकर प्रसूता को दिया जाने वाला काढ़ा।
फूगी गयो – क्रि. – फूल गया, फूलकर कुप्पा हो गया।
फूग्या – क्रि.ब.व. – फूल गये।
फूगो – वि. – फूल गया।
फूचो – पु. – पूछो।
फूट – वि. – फूटने की क्रिया या भाव, विरोध या वैमनस्य के कारण होने वाला भेद, दरार, अलगाव, बरसाती ककड़ी, मतभेद।
फूटना, फूटनो – क्रि. – ऐसी वस्तु या घटना जिसके अन्दर का भाग पतली अथवा मुलायम चीज से भरा हो, भर जाने के कारण आवरण फाड़कर निकलना जैसे फोड़े का फूटना।
फूत्कार – क्रि. – साँप द्वारा फूत्कार।
फूँतरा – वि. छिलके, थोथी या निःसार वस्तु।
फूतली – गुड़िया, खिलोना, बच्चों के खेलने की गुड़िया, पूतली। (सोना सरकी फूतली जी बेवई जी जीरा सरकी आँख। मा.लो. 541)
फूफाजी – पु. – फूफी या बुआ का पति, पिता के बहनोई।
फूफी – स्त्री. – पिता की बहन, बुआ।
फूँफाड़ो – क्रि. – फुफकारता हुआ, फुत्कार की आवाज करता हुआ सर्प आदि।
फूल – पु. – पुष्प, फूल, क्रि. – फूलना, हल्का।
फूलना – क्रि. – वृक्षों का फूलों से युक्त होना, पुष्पित होना, आग पर सेकने से रोटी का फूलना, गुब्बारा या सायकल की ट्यूब में हवा भरने या फूल जाना, वृक्ष पर फूल खिलना।
फूल बाती – स्त्री. – देवताओं की आरती उतारने के लिये बनाई जाने वाली रुई की बत्ती जिसका नीचे का भाग खिले हुए फूल की तरह गोलाकार होता है।
फूलरी – स्त्री. सं. – पैर की ऊँगलियों में पहना जाने वाला एक आभूषण, क्रि. – किसी वस्तु के फूलने की क्रिया।
फूलवारो – पु. – माली, बागवान।
फूली – स्त्री. – एक रोग विशेष जिसमें आँखों

की पुतलियों पर कुछ उभरा हुआ सफेद दाग पड़ जाता है, ज्वार या मक्का को बड़े कड़ाह में सेककर उनसे फूली नामक खाद्य पदार्थ बनाने की क्रिया, धानी।

फूल्यो – क्रि. – फूला, अधिक बड़ जाना, अधिक फैल जाना, गड़बड़ा जाना, अपने को बड़ा समझना, गर्व करना, फूलना, खिलना, प्रफुल्लित होना, पुष्पित होना, प्रसन्न होना, नारिक करने से बहक जाना।

फूले – फलना, फूलना, पुष्पित होना, वृक्षों का फूलों से युक्त होना, रोटी का फूलना, वृक्ष पर फूल खिलना, गुब्बार फूलना। (फूले वनस्पति बागाँ माय। मा.लो. 701)

फूवड़ – जिसे कार्य करने का ढंग न हो, अच्छी तरह से काम न आता हो, बेढंगा, भद्दा, अश्लील, गंदा। (फूवड़ जन जन हारी। मा.लो. 696)

फूँवार – फूहार, रिमझिम रिमझिम बारिश होना, छोटी छोटी बूँदे गिरना। (गिरधारी गेरी गेरी पड़े रे फूँवार। मा.लो. 620)

फूस – पु. – सूखी लकड़ी, घास या डण्ठल आदि, तृण, पिंडी आदि।

फूहड़, फूड़ – वि. – जिसे अच्छी तरह काम करने का ढंग न आता हो। बेढंगा, भद्दा, अश्लील गन्दा कथन या वार्तालाप।

फे

फेंकई गयो – क्रि. – वस्तु को उठाकर फेंक देना, डालना, उछालना, दूर गिराना।

फेंकड़ा – स्त्री. – पंख, फेफड़ा।

फेंकनो – न. – फेंकना, फेंक देना, बिगाड़ देना। (भाटो फेंकी माथो माँडो ई में कीको दोस। मो.वे.पृ.32)

फेकरी – स्त्री. – शेरनी जैसा एक जंगली हिंसक जानवर।

फेंक्यो – क्रि. – फेंक दिया, फेंका, दूरी से किसी वस्तु को उछालकर फेंकने की क्रिया।

फेंगड़्यो – वि. – विकृत, बेकार।

फेंट – पु. – चादर में बाँधकर, कन्धे पर लादकर ले जाई जाने वाली वस्तु, गाँठ बाँधना।

फेंटना – वि. – चक्कर में लेना, वश में करना, क्रि. – द्रव पदार्थ में कुछ डालकर अच्छी तरह मिलाने के लिये घुमा-घुमाकर हिलाना, ताश के पत्तों को फेंटना।

फेंट में लेणो – क्रि.वि. – चक्कर में लेना, चंगुल में फँसाना, अपने कब्जे में करना।

फेंटा, फेंटो – पु. – साफा, सिर पर बाँधने का लम्बा व पगड़ीनुमा वस्त्र जो लगभग 16 हाथ या 8 मीटर का होता है, क्रि. – फेंट लिया अथवा कब्जे में किया, वशीभूत किया।

फेंटू – वि. – फेंटने वाला व्यक्ति, पटाने वाला।

फेंटड़ी – वि. – बार-बार खाने वाली, पेट भरी।

फेण – पु. – झाग, फेन, बुलबुले।

फेंणी – स्त्री. – एक प्रकार की मिठाई, फीणी।

फेन – पु. – पानी के बुलबुले, झाग।

फेंफड़ो – पु. – छाती के अन्दर का वह अव्यय जिसके चलने से प्राणी श्वास लेते हैं।

फेंफरो – पु. – फेंफड़ा या फुप्फुस।

फेर – पु. – फिरने या फेरने या उलटा-पुलटा करने या घुमाव फिराव की क्रिया या भाव, चक्कर, बन्दूक का फायर, झंझट, फिर।

फेर करणो – क्रि. – बन्दूक-तोप की गोली चलाना, बाणों की या बातों की बौछार करना।

फेराणो – फहराना, उड़ाना, लहराना, ध्वज फहराना, पिसाना।

फेरा-फेरो – पु. – चक्कर, बार-बार आना-जाना, घेरा, भिक्षाटन के लिये घर-घर चक्कर लगाना, प्रदक्षिणा, घुमाव, विवाह के फेरे, चक्कर।

फेरी – अव्य. – फिर से, बाद में , फिर, क्रि. – चक्कर लगाना, भिक्षाटन की फेरी।

फेरे – क्रि. – दुहराना, रटना, कण्ठस्थ करे, भाँवर की रीति।
फेरो – पु. – भिक्षान्न, भिक्षा में प्राप्त अन्न, वि. – दुहराओ, उलटो।
फेल – पु. – परीक्षा में अनुत्तीर्ण होना, फैलना।
फेलनो – क्रि. – फैलना, कुछ दूर तक आगे बढ़ जाना, स्थान घेरना, अधिक बड़ा होना।
फेलाँ फेल – क्रि. वि. – सर्वप्रथम, पहले पहल।
फेलाव – वि. – विस्तार, फैलाव, प्रसार, वृद्धि।
फेलाणो – क्रि. – फैलाना।
फेस – पु. – विद्युत प्रवाह का उपकरण।
फेसलो – पु. – फैसला, निर्णय, निपटारा।
फेहरानो – पु. – फहराना, उड़ाना, लहरान।

फो

फोक – वि. – पतले दस्त।
फोकट – वि. – निःशुल्क, दाम दिये बिना।
फोंकणो – छेरना, पतले दस्त लगना।
फोकला – पु. – छिलका, खोल, आवरण।
फोंगली – स्त्री. – पोली वस्तु जैसे नली आदि।
फोटू – पु. – छायाचित्र, तस्वीर।
फोटा – पु.ब.व. – भैंस या गाय का गोबर।
फोटो – पु. – भैंस या गाय का गोबर, प्रतिबिम्ब, चित्र।
फोड़णो – क्रि. – फूटने में प्रवृत्त करना, तोड़ना, अपनी ओर मिलाना, सेंध मारना।
फोड़ा पड़ना – कष्ट होना, तकलीफ पड़ना, असुविधा होना।
फोड़ो – वि. – दुःख, तकलीफ, परेशानी, फोड़ा, फुंसी का बड़ा रूप।
फोज – पु. – सेना, फौज।
फोजदार – पु. – सेनापति।
फोजदारी – स्त्री. – फौजदारी का मामला या पद, सेनापतित्व।
फोंतरो – छिलका।
फोरई, फोराई – वि. – हल्कापन, आराम।
फोलरी – स्त्री. – पैर की ऊँगलियों का आभूषण विशेष, बिंछुवा, मच्छी जोड़ा।
फोलादी – वि. – मजबूत लोहे जैसा दृढ़, सशक्त।
फोलो – वि. – छाला।

ब – प वर्ग का अक्षर।
बइ – सं. – माँ अथवा बहिन के लिए सम्बोधन।
बइयाँ (बैयाँ) – बाँह, भुजा, कलाई।(गोरी– गोरी बईयाँ ने हरी पीली चूड़ियाँ। मा.लो. 577)
बइका – सं. – बहिन का।
बइ गई – स्त्री. – बह गई, माँ या बहिन का जाना।
बइग्यो – पु. – बह गया। क्रि. – बैठ गया।
बइराँ – स्त्री. – औरत, पत्नी। (परपुरस ने उबी ताके ए सी वइराँ खोटी। मा.लो. 548)
बईमान – वि. – धर्म रहित, कपटी, बेईमान, बुरी। (अनमानी बेईमानी अपनी। मो.वे. 40)
बऊ – स्त्री. – बहू, पुत्रवधू, बच्चों को डराने या समझाने के लिये मालवी शब्द, जानवर, कीड़ा आदि। (सासू मरी जाती तो बऊ होती ठावी। मो.वे.55)
बकऊ – स्त्री. – बिकाऊ, बिकाऊ वस्तु।
बंक – वि. – टेढ़ा, तिरछा, बाँका, वीर, हँसिये की तरह का एक टेढ़ा औजार।
बक – क्रि.– बोलना, बकना, बकवास, पु. – बगुला।
बकणो – क्रि. – बकना, बोलते रहना।
बकबक करे – क्रि.वि. – बकवास करना, डींग हाँकना।
बंकनाल – वि. – टेढ़ी नाल, वह नाड़ी जो शिशुओं की नाभि से जुड़ी होती है।
बक्खर – स्त्री. – कृषि उपकरण जिससे जमीन की मिट्टी उलट-पलट की जाती है, करी।
बकर कन्नो – वि. – बकरे के कान जैसे कान वाला।
बकरो – पु.क्रि.– बकरा, प्रसिद्ध चौपाया
बकर्‌यो – पु. क्रि. – बकवास कर रहा, बड़बड़ा रहा, डींग हाँक रहा।

बकवास – बकबक करना।

बकसो – पु.सं. – चीजें रखने का चौकोर संदूक, वि. – बकसीस, इनाम या पुरस्कार दो, देना।

बकसणो – क्रि. – प्रदान करना, क्षमा करना, माफ करना, देना।

बकसीस – स्त्री. – दान, पुरस्कार, ईनाम।

बकाया – वि.अ. – शेष।

बकास – वि. – बकवास, प्रलाप।

बकासुर – पु. – एक दैत्य जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

बके करना – स्त्री. – ठीक करना, व्यवस्थित करना।

बकोरो – वि. – बकबक करते फिरना।

बकोरो मती कर – बात को गुप्त रखना।

बखत – पु. – समय, काल, भाग्य। (बिना बखत बेराग भेरवी। मो. वे. 40)

बखरनो – क्रि. – बिखरना, बिखर जाना, बिखेरना।

बखसीस – वि. – इनाम, पुरस्कार।

बखाणणो – प्रशंसा करना, तारीफ करना, यश गान करना, बखान करना, विस्तार से कहना, गालियाँ देना, वर्णन करना। (बूँदी रा भीम राजा परणी पदार्या तो गोया में गुवाल्या वरवाण्या। मा.लो. 457)

बखार – पु. – वह घेरा या बड़ा भण्डार जिसमें अनाज भरा जाता है।

बखा, बखो – वि. – नादानी, गरीबी, निर्धनता, टोटा, दुःख।

बखिया – पु.फा. – एक प्रकार की महीन और मजबूत सिलाई।

बखी – स्त्री. – बारी, क्रम।

बखे – व्यवस्थित, ठीक से, सही।

बखेड़ो – वि. – झंझट, झगड़ा, कठिनाई।

बखेरणो – क्रि. – बिखेरना, बिखराना।

बग – पु. – पशुओं के पसीने से उत्पन्न होने वाला एक कीट विशेष, घोड़े की बड़ी मक्खी।

बगड़ – घर के आगे या मोहल्ले का बड़ा चोक, बड़ा बाड़ा, मैदान, जंगल, वन। (लावो रे बगड़ बुवारनो इना वर ने पड़छो रे। मा.लो. 416)

बग्गी – स्त्री. सं. – घोड़ा बग्गी, ताँगा, छोटी गाड़ी।

बगच्या – स्त्री. सं. – सन्दूक, पेटी।

बगड़्यो – वि. – बिगड़ गया।

बंगड़ी – स्त्री. – नारियल के खोल की चूड़ियों पर चाँदी की पतरी चढ़ाना, कलाई का आभूषण।

बंगड़े – पु.वि. – बिगड़ी, नुकसान होवे।

बंगवोई – लोहे की छड़ का निवार वाला चौखट झूला जो बड़े-बड़े घरों में या गाँव में लगा रहता है।

बंदरवाल – बन्दनवार, दरवाजे पर लगाए जाने वाली मखमल की बंदनवार, विवाह के अवसर पर लगाए जाने वाली पन्नी की चमकदार। (मोत्याँ रा लुमक झुमका मखदुल हो राजा बंदरवाल बदावो जी म्हारे आवीयो। मा.लो. 481)

बन्दोबस करनो – व्यवस्था करना, इन्तजाम करना, प्रबंध करना, नियंत्रण करना।

बगाड़े – पु.क्रि. – बिगाड़ करे, बिगाड़े, मिटावे, नष्ट करे।

बगत – पु. – समय, काल।

बगतराँ, बगतरो – पु.सं. – एक प्रकार का मच्छर जो पशुओं को काटता है, बग।

बगदो-कूटो – सं. – कचरा-कूटा।

बगरीर्‌यो – क्रि. – चारों ओर फैला।

बगल में – पु. – पास में, काँख में।

बगल – पु. – काँख, कुक्षि।

बगलाँ – स्त्री.ब.व.फा. – कँधे के नीचे का गड्ढा, काँख।

बगली – स्त्री. वि. – बगल से सम्बन्ध रखने वाला, बायाँ हिस्सा, पार्श्व, किसी स्थान को लकड़ियों आदि से घेरना।

बगले रो – क्रि. – अलग हटो, दूर रहो, पास में न आओ, फासला रखो।

बगलो – पु. – बगुला।

बंगलो – पु. – बंगला, बड़ा पक्का मकान।

बगला भगत – पु. – साधु बना रहने वाला कपटी व्यक्ति, बगुला भक्त, ढोंगी।

बगलाँ झूले – क्रि.वि. – बगल में झूलने वाला बच्चा।

बगसणे – प्रदान करना, इनायत करना, बख्शीश करना, देना। (रात अमला में जमाईसा ए मोती बगस्या हो राज। मा.लो. 521)

बगाड़ – वि. – बिगाड़ना।

बगाड़्यो – वि. – बिगाड़ा, नुकसान किया, नष्ट किया।

बगावत – स्त्री. – (अ) विद्रोह।

बगासी – स्त्री. – जमुहाई, उबासी। (काल म्हारी भाभी के दो बगासी अई। मो.वे.56)

बगीचो – पु. – वाटिका, बगिया। (बम बगीया में भाग घोटावे रघुवीर। मा.लो. 687)

बघार – पु. – तड़का, छोंक।

बचक – स्त्री. – मुट्ठी भरकर।
वि. – बचकना या बिदक जाना।

बचको भरी ने – मुट्ठी भर करके। (अचको मेंदी ने बचको पान। मा.लो. 295)

बच्ची – स्त्री. – बालिका, छोटी लड़की।

बच्चो – पु. – बालक, छोटा बच्चा।

बचत – मुनाफा, लाभ, पैसा या वस्तु, बचाव, रक्षा, खर्च होने के बाद बची हुई राशि।

बचनो – क्रि.वि. – बचना।

बच्याण यें – कृ. – बच्चों को, बालकों को।

बच्यो – वि. – बच गया, शेष।

बंच्यो – वि. – बाँचा, पढ़ा गया, शेष।

बचाकुचा, बचा खुचा – क्रि.वि. – अवशिष्ट, शेष।

'ब'

बचाणो – क्रि. – बचाना, रक्षा करना, आपत्ति।

बचार कर्‌यो – क्रि. – सोचा, विचार किया।

बचार्‌यो – क्रि. – विचारा, सोचा।

बचाव – वि.फा. – बचत करना।

बचावणो – क्रि. – बचाना, धन आदि की बचत करना।

बच्चू जी – अव्य. – बच्चाजी।

बछई के – क्रि.वि. – बिछा करके।

बछड़ी – स्त्री. – गाय की बछिया।

बछड़ो – पु. – गाय का बछड़ा।

बछिया – स्त्री. – गाय का बच्चा।

बछरू (बाछरू) – पु. – बछड़ा गाय-भैंस या घोड़ी आदि के बच्चे।

बछावणो – पु.सं. – बिछौना।

बिछावे – बिछाने का कार्य।

बछेरी – स्त्री. सं. – घोड़ी की बछिया।

बजड़, बज्जड़ – वि. –वज्र, कठोर, दृढ़, मजबूत, शक्तिशाली। (जड़िया बजड़ किमाड़ जी म्हारा राज। मा.लो. 616)

बजर किवाड़ – वज्र के समान कठोर दरवाजा, वज्र कपाट, मजबूत दरवाजा। (ताला जड़्या झाँझा लोवारा जड़ीया बजर किमाड़। मा. लो. 332)

बज्जर – वि. – वज्र, कठोर, व्रज के समान कठोर, मजबूत।

बजट्टी – स्त्री. – मालवी स्त्रियों के गले में पहनने का सोने का बना आभूषण

बजणो – क्रि. – बजना।

बजरंग – वि. – वज्र के समान दृढ़ अंगों वाला।

बजरंगबली – पु.सं. – हनुमान्।

बजबारस – स्त्री. – वत्स द्वादशी, मालवी नारियों का व्रत एवं अनुष्ठान पर्व।

बजर घंटा – वि. – बड़ा घंटा, मजबूत और भारी घड़ियाल।

बजर-हल्ला – वि. – वज्र के समान कठोर शिला, बड़ा चोकोर पत्थर, वज्र, शिला, कठोर पत्थर।

बजा – वि. – बजे, बजी, ठीक।
बजाज – पु. स्त्री. – कपड़े बेचने वाला।
बजाजन, बजाजण – स्त्री. – बजाज की स्त्री।
बजाजखानो – वि. – कपड़े की दुकान।
बजाजी – स्त्री. फा. – बजाज का काम या कपड़े का व्यापार-व्यवसाय।
बजाणो – क्रि. - बजाना।
बजार – बाजार, मार्केट।
बंजारा – पु. – बंजारा जाति का मनुष्य, बैलों पर सामान लादकर व्यापार-व्यवसाय करने वाली एक जाति।
बजिया – वि. – बज गये, बजने लगे।
बजी गई – क्रि. – बज गई, समय हो गया।
बजर नकटो – वि. – बड़ा, बेशर्म, निर्लज्ज।
बज्जात – बदजात, दुराचारी,कमीन, नीच ।
बँट – पु. – बाट, पत्थर का गोला, रसी का ऐंठन या बल, मार्ग, रास्ता।
बँटई – स्त्री. – साझे की खेती, बाँटे की काश्त।
बटको भरनो – क्रि. – दाँत से काटना, दशना।
बँटना – क्रि. – हिस्से के अनुसार कुछ मिलना या दिया जाना, वितरित होना।
बँटणो – क्रि. – तागो , तारों आदि को एक में मिलाकर इस प्रकार मरोड़ना कि वे मिलकर रस्सी आदि के रूप में एक हो जायें।
बँटवानो – क्रि. – बाँटना, वितरण करना, बँटवाना।
बँटखायो – वि. – ऐंठा, अकड़ गया, क्रोधित हुआ, प्रतिक्रिया हुई।
बटण, बट्टण – पु. – घुण्डी।
बटमर्‌यो – पु.क्रि. – बिगाड़ रहा, नष्ट कर रहा, भटकना।
बटमो – वि. – नष्ट करो, बिगाड़ो।
बटलोई – स्त्री. सं. – बटलोटा, चरवी।
बटवरलाल – राहजनी करने वाला, फेरी लगाने वाला, सामान बेचने वाला। (हमारे साजापुर को लम्बो रे बजार सोई बटवरलाल। मा.लो. 508)
बटवा, बटवो, बटुवो – पु. – कई खानों वाली एक प्रकार की छोटी थैली जिसमें नोट या चिल्लर आदि रखे जाते हैं। सुपारी तम्बाखू रखने का बटुआ। (सायबा बटवा सरीको म्हारो जीव। मा.लो. 589)
बँटाई – स्त्री. – साझे की खेती।
बट्टाखातो – पु. – वसूल न होने वाली रकमों का लेखा या मद।
बटाटा – पु. – आलू।
बटाटा भात – पु. – आलू, बटला व मसाले आदि के मिश्रण के साथ भात बनाने की क्रिया या भाव, नमकीन भात।
बंटा ढाल – वि. – विनष्ट करना, बरबाद, काम बिगाड़ देना।
बटालनो – क्रि. – झूठा खिलाना, भ्रष्ट करना।
बंटीरी – स्त्री. – बँट रही, वितरित हो रही।
बट्टी – स्त्री. – टिकिया।
बटुक – पु. – छात्र, शिक्षार्थी।
बटेर – पु. – तीतर की तरह की एक छोटी चिड़िया।
बटोरणो – क्रि. – इकट्ठा करना, बिखरी वस्तुओं को एक स्थान पर समेटना।
बट्टो – पु. (सं. वर्त्त) – मूल्य में होने वाली कमी, बट्टा, घाटा, हानि, कलंक, दाग।
बट्टो लागणो – वि. – कलंक लगाना, धब्बा लगना।
बठ्ठड़ – वि. – बोठा, धार नष्ट होना।
बंड – वि. – चालाक, शैतान।
बड़ – पु. – वटवृक्ष।
बड़ई – वि. स्त्री. – प्रशंसा, पु. – सुतार या बढ़ई जाति का मनुष्य, आगे बढ़ना।
बड़णो – बढ़ना, बढे, किसी लता का बढ़ना, वृक्ष का बढ़ना, बड़ा होना, बड़े होने का आशीर्वाद देना। (बड़णो रे चेजारा थारी बेल। मा.लो. 452)

बड़-बड़ – क्रि.वि. – बकबक, वाचलता।

बड़बड़ानो – क्रि. – अपने मन में बड़बड़ाना, कुढ़ना।

बड़ग्यो – क्रि. – बढ़ गया, आगे हो गया।

बड़ पींदे – स्त्री. – बड़ के नीचे, बरगद तले, वटवृक्ष के नीचे।

बड़ पूजन – स्त्री. – बट सावित्री की पूजा करना, वटवृक्ष का पूजन करना।

बड़बड़्यो – पु.वि. – बकवादी, गप्पी, गपोड़ी, बड़बोला।

बड़बोलो – वि. – बड़ा बोल बोलने वाला, बढ़-चढ़कर बोलने वाला, नट, भाट, चारण, विदूषक, गप्पी, अहंकारी।

बंडल – पु. – पुलिन्दा।

बड़वा – पु. – बड़े-बूढ़ों के इतिहास का वर्णन करने वाली एक जाति।

बड़वाग्नि – पु. – वह आग जो समुद्र के अन्दर जलती हुई मानी जाती है।

बड़ा, बड़ो – वि. –बड़ा, धन, विद्या, गुण, खाद्य बड़ा।

बडाई – बढ़ाई, तारिफ, प्रशंसा। (तमारी कोरी हो बड़ाई पन्नालालजी मरोड़ घणी। मा.लो. 433)

बड़ाणो – बढ़ाना, विस्तार करना, वृद्धि करना, अधिक, व्यापक, विस्तृत, प्रबल या उन्नत करना। (होजी म्हारी परणी बंस बड़ावे रे पपइयो बोल्योजी। मा.लो. 625)

बंडी – स्त्री. – गँजी, छाती के ऊपर पहनने की बिना बाँहों या आधी बाहों की कुरती।

बड़ी माता – स्त्री. – चेचक की बीमारी।

बंडू – वि. – चालाक, शैतान।

बड़ेरी – वि. – बड़ा, अधिक वय वाला, बढ़ा हुआ।

बड़ो – पु. – विशाल, बड़ा, अधिक उम्र का, बड़ा-बूढ़ा, दही बड़ा, महत्त्वपूर्ण।

बड़ो घर – पु. – ईश्वर के रहने का स्थान, स्वर्ग, कैदखाना, बड़े भाई का घर।

बड़ोदन – पु. – 25 दिसम्बर जो ईसाइयों का प्रसिद्ध त्योहार माना जाता है, दिन का बढ़ना, संक्रान्ति पर्व।

बड़ती – पु. – तौल, गिनती, दान आदि में होती अधिकता, आवश्यकता, उपयोग, व्यय आदि की पूर्ति हो चुकने पर भी कुछ बचे रहने की अवस्था या भाव, मूल्य वृद्धि।

बड़्यो – पु. – बढ़ा हुआ, विस्तीर्ण।

बड़ाई – वि. – प्रशंसा, किसी व्यक्ति या ईश्वर आदि के गुणों का बखान करना, बढ़ा-चढ़ाकर कहना।

बड़ानो – क्रि. – विस्तार।

बड़ावो – पु. – प्रोत्साहन, उत्तेजना।

बड़िया – वि. – उत्तम, अच्छा, श्रेष्ठ।

बण – वि. – चेचक या मुँहासों के कारण चेहरे पर चिह्न या दाग बन जाना, व्रण।

बणई – क्रि. – बनाई गई, तैयार की।

बणताँई – क्रि.वि. – बनते ही, तैयार होते ही।

बणतो-बगड़तो – क्रि.वि. – किसी का बन जाना या बिगड़ जाना।

बणियो – पु. – बनिया, वणिक, व्यापारी, क्रि. – बन गया।

बण्यो – बने, बने हुए, बनाए गए, बनाए, बनना, बनावट। (कायन का तो बण्या रे पालना। मा.लो. 608)

बतइदियो – क्रि. – बता गए, बतला दिया, बता दिया, दिखा दिया। (बड़ा काम की बात बतइग्या। मो.वे. 84)

बत्तो – पु.– बट्टा, लोढ़ा, बित्ता, लोहे का मूसल जिससे खरल में कूटा जाता है, सिर के बालों की लटें। वि. – अधिक ज्यादा।

बतलई – स्त्री. क्रि.– बात की, बोली, बताना।

बतायो – भू.कृ. – दिखाया, बताया हुआ। (छोरी नी बतायो। मो.वे. 70)

बतासो – पु.– बताशा, शकर की बनी मिठाई।

बतीसा – पु.– बत्तीस मसालों का बना हुआ एक प्रकार का लड्डू, बत्तीस किस्म की विशेषताओं वाली, बत्तीस गुणों से युक्त, वि. – 32 प्रकार के दोषों वाली स्त्री।

बत्तीसी – विवाह में मायके वालों को मायरा (भात) भरने को आने के लिये भेजी जाने वाली कुंकुम पत्रिका। इस विशिष्ट पत्रिका के साथ नारियल, सुपारी, फल, मिठाई, चाँदी का सिक्का, मेवा, वस्त्र इत्यादि बत्तीस मांगलिक वस्तुएँ झेलाई जाती हैं।
(माता रा जाया वीर बत्तीसी झेलो तो म्हारा घरे पेली बरदड़ी। मा. लो. 340)

बथल्या गुँथणा – थोड़े-थोड़े बाल लेकर चट्टी गुँथना, छोटी–छोटी चोंटी बनाना, सबको मिलाकर एक चोटी गुँथना।
(बेन्या बारे जणी मिल चट्टो टाल्यो तो तेरे जणी मिल बथल्या गुँथ्या। मा.लो. 348)

बत्थो – वि. – अधिक, ज्यादा, सिर के बालों की गुँथी हुई लट।

बत्था, बत्थी – वि.– अधिक, ज्यादा, खूब, पर्याप्त।

बथवो – पु.– बथुआ की सब्जी।

बन्था बांध्या – क्रि.वि. – सिर के बालों को बाँधा, चोटी गूँथी, वेणी बनाई।

बंद – स्त्री.– बँधन, फीता, रोका हुआ।

बद – क्रि.– बढ़ना, ऊँचा उठना। वि.– बुरा, बदनाम, खराब, दुष्ट, नीच।

बदक – स्त्री.– बतख, पानी में तैरने वाला पक्षी।

बद्यो – क्रि.– फूट गया, टूट गया, बढ़ गया।

बंदग्यो – क्रि.– बँध गया, बँधन में बँधा।

बंदगी – स्त्री.– ईश्वर की वन्दना, उपासना, सलाम, नमन।

बदकिस्मत – वि.फा.अ.– अभागा, भाग्यहीन।

बदचलनी – वि. स्त्री.– दुश्चरित्र, खराब चाल-चलन।

बदजबान – वि.फा.– विकृत वाणी बोलने वाला, गाली-गलौच करने वाला।

बदजात – वि. – नीच, लुच्चा, दुष्ट।

बदतर – वि. – और भी बुरा।

बदन – पु. – शरीर, देह।
(दुस्सासन ने पकड़ पकड़कर चीर बदन से हटायो। मा.लो. 691)

बदनसीब – वि. – अभागा, भाग्यहीन।

बदनो – क्रि. – ठहराना, वर्णन करना, मान लेना।

बंदर भपकी – स्त्री.– दिखावटी या सारहीन धौंस, बंदर के समान घुड़कना।

बदनी – स्त्री.– हिचकी आना।

बदबू – स्त्री. फा.– दुर्गन्ध।

बदमासी – स्त्री.– दुष्कर्म।

बद्यो – क्रि.– बढ़ा हुआ, फूटा हुआ।

बदलो – पु.– बादल, मेघ।

बद्दुआ – वि.– अभिशाप, शाप।

बंद – खुला न हो, बन्धन।

बंदर – पु.– बंदरगाह, बंदर, वानर।

बंदरवार – स्त्री.– फूल पाती की वह झालर जो मंगल अवसरों पर दीवारों पर बाँधी जाती हैं।

बदलनो – क्रि.– बदलना, परिवर्तन करना, तब्दील करना।

बदल – पु.– हेरफेर, परिवर्तन।

बदहजमी – स्त्री. फा.– अजीर्ण, अपच।

बदफेली – वि.– वेश्यागमन, पापी।

बदलो – पु.– बदल दो, परिवर्तन कर दो, प्रतिशोध, विनिमय।

बदा – क्रि. – विदा, विदा करना, भेजना।

बंदा – पु. – स्वयं।

बदा कऱ्यो – क्रि. – विदा किया, पहुँचा दिया, भेज दिया।

बदारदो – क्रि. – फोड़ डालो, टुकड़े कर दो।

बदाम – पु. – बादाम, एक सूखा मेवा।

बदामी – स्त्री. वि. – बादामी रंग का।

बंदिस – वि. – बँधा हुआ, घेरा हुआ।

बंदी – पु. – रोक, भाट-चारण।

बंदीखानो – पु. – कारागार, जेल।

बंदोबस्त – पु. – प्रबन्ध, नियन्त्रण।

बदोलत – क्रि.वि. – किसी की कृपा या अनुग्रह के द्वारा।

बंधक – पु. – गिरवी, रहन।

बन्धन – पु. – बन्धन, रोक।

बधनी चली – क्रि. – हिचकी चली, स्मरण किया।

बंधणो – क्रि. – बँध जाना, फँदे में आना।

बंधाईद्यो – क्रि. – बँधवा दिया।

बधाकरद्यो – क्रि.– विदा कर दिया, बधाई दे दी।

बंधान – पु.– अधिकार, सत्ता, बँधी हुई वस्तु।

बंधान बाध्यो – क्रि. वि.– कर निश्चित किया, रोक लगाई, मेड़बंदी की।

बधारनो – क्रि.– चढ़ाना, फोड़ना।

बधावो – स्त्री.– मंगलाचार, बधावा, मालवी लोकगीत।

बधिया – पु.– वह पशु जिसका अण्डकोश निकाल दिया गया हो या उसकी सक्रियता समाप्त कर दी गई हो, वाँगरो।

बँधी – क्रि. – बाँध रखी।

बन गया – बन जाना, हो जाना। (आज बणीग्यो काम। मो.वे. 50)

बनड़ा / बनड़ी – बनी, दुल्हन। (बनड़ी पूछे सुनो रे दुलइया तो कायरा कारण आया हो राज। मा. लो. 373)

बन्नी – दुल्हन, बनड़ी, बनी, नववधू। (बन्नी मसाणाँ में बाद्यो झूलो। मा. लो. 705)

बनखण्ड – बियाबान जंगल, सुनसान जंगली प्रदेश, उजाड़ प्रदेश।

बनजारो – पु.– बंजारा जाति का व्यक्ति।

बनतो-बगड़तो – क्रि.वि.– बनता बिगड़ता।

बननो – क्रि.– बनना।

बन्दनवार – वि.– पताका, आम्र पल्लवों की माला।

बन्ध्या – क्रि.– बँधे हुए बँधा हुआ।

बन्या हुआ – क्रि. वि.– बने हुए।

बना – अव्य.– बिना, रहित, दूल्हा।

बनात – पु.– एक तरह का ऊन का कपड़ा।

बनावटी – क्रि.– नकली, झूठा।

बनासा, बनीसा – सं.– पुत्र–पुत्री के लिये सा प्रत्यय लगाकर आदर सूचक सम्बोधन, मालवा के मारवाड़ी समाज में बना-बनी तथा राजस्थानी में बन्ना- बन्नी शब्द व्यवहृत होते हैं।

बनीर्‌यो – क्रि. – बन रहा, नाटक या अभिनय कर रहा।

बनेवी – बहनोई, जीजाजी (बहन के पति) (इ तो साला चाले ओ बनेवी ठोकर खाता जाय। मा.लो. 519)

बपरायो – क्रि.– वितरित किया, उपयोग में लिया।

बपीयो – पु.– बच्चों के मुँह से बजाने की सीटी, पपीहा, चातक।

बपोती – स्त्री.– बाप-बूढ़ों से मिली हुई सम्पदा।

बफारो – पु.– औषध मिले गर्म जल की भाप से शरीर का कोई अंग सेंकना, गर्मी देना, पलाश के जीर्ण पत्रों को गर्म करने के लिये खौलते पानी में उबालकर अस्वस्थ अंग विशेष पर चढ़ाकर ऊपर से पट्टी बाँध देना।

बबाल – आफत, मुसीबत, परेशानी। (म्हारा घर में घुसी बबाल। मा. लो. 506)।

बबूत – पु. – राख, भस्मी।

बबलू – पु. – बच्चे को प्यार भरा सम्बोधन।

बँबूल – पु.– बंबूल का काँटेदार वृक्ष।

बभूत – स्त्री.– विभूति, राख, भस्मी।

बम महादेव – पु.– महादेव का नामोच्चार। (बम बागड़्या में भाँग घोटावे रघुवीर। मा.लो. 687)

बम्बी – स्त्री.– साँप का बिल, बाँबी।

बम भोले – पु.–भोलेनाथ, शिव, शंकर, महादेव का नामोच्चार।

बमोड़ द्यो – क्रि.वि. – बर्र ने काट दिया, बर्र के काटने से गिल्टियों का उठ जाना, सूजन आ जाना, सूजन आना, झंझोड़ना।

बयना – स्त्री. – बहिन।

बया – पु. – बया पक्षी।

बयान – पु. – कथन, बयान।

बयानो – पु.– अग्रिम पेशगी।

ब्याव – क्रि.वि.– विवाह कार्य।

बरकत – स्त्री.अ. – यथेष्ट, समृद्धि। (तमारा रांद्या में तो बरकत कोनी मरोड़ घणी। मा.लो. 433)

बरखा – स्त्री.– वर्षा।

बरखास – वि.– समाप्त, जिसे हटा दिया गया हो, विसर्जित।

बरगद – पु.– वटवृक्ष, बड़ का झाड़।

बरगलानो – क्रि.वि.– विरुद्ध करना, कान भरना, भड़काना।

बरगुंडो – वि.– बेतरतीब रहने वाला, बाँस के टोकरे बनाने वाले।

बरगोल्यो – वि.– चक्रवात।

बरछी – पु. स्त्री.– बरछी, भाला।

बरछो – पु.– भाला।

बरजणो – मना करना, नकार दिया, इन्कार करना। (नणद बाई वरजो मती बंसी वाला से खेलांगा फाग। मा.लो. 580)

बरज्यो – क्रि.– मना किया।

बरजा, बरजो – क्रि.– मना किये, इन्कार करो।

बरजियो – स्त्री.– मना किया।

बरजो मती – क्रि.वि.– इन्कार न करो, मना न करो।

बरण – पु.– वर्ण, वरण करना, चुनना।

बरणी – स्त्री.– चीनी मिट्टी की बरनी जिसमें अचार- मुरब्बा रखा जाता है।

बरत – क्रि. – उपवास।

बरतन – पु.– धातु, शीशे की चीजें, बर्तन।

बरताव – पु.– व्यवहार, आचार-विचार।

बरदड़ी – स्त्री.– मंगलकार्य हेतु बनाया गया मिट्टी का चूहा, छोटी दो मुँह वाली कोठी विशेष।

बरदावणी – स्त्री. – यशोगान, प्रशंसा, स्तुतिगान।

बरदास – स्त्री.फा. – सहन करना, बरदाश्त करना।

बरदी – वर्दी, एक प्रकार का पहनावा जो किसी विभाग के कार्यकर्ताओं के लिये नियत है, गणवेश, खबर, आज्ञा, हुक्म। (अरे ई कपड़ा कई कवि की बरदी है। मो.वे. 51)

बरध – पु.सं. – बलिवर्द । वि. – बैल, वृषभ।

बरन – क्रि. – जलना, वर्ण।

बर निकासी – क्रि.वि. – बरात का प्रस्थान, वर की घुड़ चढ़ाई।

बरनो – जलना।

बरप – पु.– बर्फ।

बरफ – पु.– बर्फ, हिम।

बरफी – स्त्री.– एक प्रकार की चौकोर मिठाई।

बरबड़े – वि. – नींद में किसी से भी बातें करना, बड़बड़ाना, बुलबुला उठना।

बरबर – स्त्री.– बकवाद, बकबक।

बरबरतो – वि.– खूब गरम, गरमागरम, हाथ जलता हुआ, प्रज्ज्वलित।

बरबरी – स्त्री.– शराब निकालने की मटकी या घड़ा।

बरखा – वर्षा, बारिश, पानी गिरना। (बरखा हो रही हे फूलाँ की अवध में। मा.लो. 695)

बरबाद – पु.– बर्बाद होना, नाश होना।

बरबुल्या – होली पर गोबर की टिकिया बनाकर उसमें गड्ढे करके और उनको सुखाकर

उनकी माला होली पर चढ़ाई जाती है। होली को पहनाने की गोबर की माला का मनका।

बरमा – पु.– ब्रह्मा।

बरमो – पु.– पानी खींचने का यन्त्र, लकड़ी आदि में छेद करने का बढ़ई का एक औजार, पानी के लिए गड्ढे खोदने का यन्त्र।

बरमोजी – पु.– ब्रह्माजी।

बरस – पु.– वर्ष, साल, बरसो। (बगड़ावत ने मराया बरस बारा हुआ। मा.लो. 677)

बरसणो – क्रि.– वर्षा होना, वर्षा करना।

बरस व्यावणी – स्त्री.– हर वर्ष बच्चा देने वाली स्त्री या पशु आदि।

बरसा – वर्षा, मेह, बरखा, बरसना।

बरसाती – वि.– बरसात होने पर उसे बचाव के लिये लगाया गया मोम कपड़ा, छाता, वर्षा से बचाव की कोई भी वस्तु, वर्षा समय का।

बरसाती राग – वि.– वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला कजरी आदि राग।

बरसाद होय – क्रि.– वर्षा होवे, पानी गिरे।

बरसी – स्त्री. – मृत्यु दिवस।

बरसो – वर्षा करना, बरसो। (इन्दरजी आप बरसो तो धरती नीबजे। मा.लो. 615)

बरात – पु. – बारात, दूल्हे के साथ जाने वाला जनसमूह।

बराती – पु.– वर पक्ष से बरात में जाने वाले लोग।

बरामण – पु.– ब्राह्मण, पण्डित, गुरु।

बरामद – पु.– प्राप्त करना।

बरामदो – पु.– आँगन, घर के सामने का स्थान।

बरी – चीका, सद्यःप्रसूता गाय-भैंस का दूध, जलना।

बरोबर – वि. – समान, एकसा, ठीक, बराबर, एक पंक्ति में।

बरोबरी – स्त्री.– समानता, जोड़, तुल्यता, बराबरी।

बल – पु.सं.– मरोड़, बँट, सामर्थ्य, ताकत, जोर।

बलखानो – वि.– टेढ़ा होना, टेढ़ापन।

बलणो – जलना, जले, जलन करना, झुलसना, गरम होना, सुलगना, दहकना, इर्ष्या होना, अत्यधिक दुखी होना। (ढोडू काका बलन बलन हिंगलू करे। मा.लो. 575)

बलगम – पु.– कफ, श्लेष्मा।

बलती आग – स्त्री.– जलती अग्नि, आगी।

बलद – पु.– बैल, वृषभ।

बलबलती – स्त्री.– गर्म–गर्म, उष्ण।

बल्ड़ी – स्त्री.– ऊँची टेकरी, छोटी पहाड़ी।

बल्ड़ा में – पु.– डूँगरी पर, पहाड़ी पर।

बलराम – पु.– श्रीकृष्ण के बड़े भाई।

बलवंत – वि.– बलशाली।

बलवान – शक्तिशाली, हृष्टपुष्ट, बलशाली, शूरवीर, योद्धा। (सेवा करेगा देस की चतुर पूत बलवान। मा.लो. 549)

बलीगी – जल गई, जल गया, अधिक आग में जलना, दाग लगना, जलने से काली पड़ना, झुलसना, सुलगना, अत्यधिक दुखी होना। (तमारा चोखा काचा बाटी बलीगी मरोड़ घणी। मा. लो. 433)

बल्ली – स्त्री.– घर में आड़ा लगाने की लम्बी सागौन की सीधी लकड़ी।

बल्लो – पु. – लम्बा, मोटा और बड़ा, शहतीर या डण्डा, गेंद खेलने की लकड़ी का डण्डा।

बला – स्त्री.– वैद्यक अनुसार पौधों की एक जाति, पृथ्वी, लक्ष्मी, वि.- आपत्ति, आफत, दुःख, कष्ट, भूत–प्रेत या

उनकी बाधा, घोर, विकट।
बलाई – स्त्री.– लोहे का एक औजार जिसे कुँए आदि में डालकर बर्तन बाहर निकाले जाते हैं , मालवा में निवास करने वाली एक जाति, बगल में उठने वाला एक फोड़ा।
बलात्कार – वि.– स्त्री के स ाथ संभोग करना, अत्याचार करना।
बला लागो – क्रि.वि.– जलने लगा, ईर्ष्या करने लगा।
बलाबल – क्रि.वि.– अपने पराये की शक्ति की तुलना करना।
बलि – पु.सं.– उपहार, भेंट।
बलिदान – पु.– कुर्बानी, उत्सर्ग।
बलियारी – स्त्री.– अपने आपको किसी पर न्योछावर कर देना।
बलीग्यो, बलीगयो – क्रि.– जल गया, जल गये, आग में जलना।
बलीगी – स्त्री. – जल गई।
बलीतो – स्त्री.– जलाऊ लकड़ी।
बले – पु.– जले, जलन करे।
बवड़ाओ – क्रि.– लौटाओ, वापस लाओ।
बवंडर – पु.– चक्रवात, आँधी, तूफान, भूतालिया।
बंवल – पु.– बबूल, एक काँटेदार वृक्ष।
बवासीर – स्त्री.– गुदे का रोग।
बस – अव्य.– काफी, पर्याप्त, वश।
बसणो – क्रि.– रहना, बस जाना। वि.– विकृत। (राइवर दूर बसे।)
बसत – पु.– वस्तु, चीज, क्रि. – रहना।
बसन्त – पु.– वसंत ऋतु।
बसता – पु.– कागज या पुस्तक सामग्री रखने के लिये बनाया हुआ झोला, थैला या कपड़े का बन्धन।
बसतार – पु.– बृहस्पतिवार, गुरुवार।
बसत्यार – पु.– बृहस्पतिवार, गुरुवार।
बस्ती, बसती – स्त्री.– छोटा-सा गाँव।
बस्तो, बसतो – पु.– बस्ता, दफ्तर, किसी गाँव में रहने वाला, विद्यार्थियों का झोला।
बस चालणो – क्रि.– शक्ति या सामर्थ्य का ठीक तरह से पूरा काम करन, मोटर गाड़ी का चलना।
बसग्यो – वि.– विकृत हो गया, खराब हो गया, दुर्गन्ध देने लगा, पु.क्रि.- रहने लगा, निवास करने लगा।
बंस बड़ायो – पु.– वंश वर्धन किया, वंश का विस्तार किया।
बस बोर – पु.वि.– बेर के खट्टे फल, विकृत फलों वाली बोर।
बसमरो – पु.– छिपकली।
बसर – पु.– गुजर, निर्वाह।
बसाणो – क्रि.– बसने या रहने के लिये जगह देना या प्रवृत्त करना, आबाद करना, अपने कब्जे में लेना, स्थापित करना।
बसारी – स्त्री.– मकड़ी, एक छोटा कीट जो ठण्डे दूध- दही में आकर गिर जाता है।
बसावट – वि.– बस्ती की बसावट, बसाहट।
बसास – वि.– विश्वास।
बसी – स्त्री.– रकाबी, तश्तरी।
बसीकरण – पु.– वशीकरण, वश में करना।
बसूलो – पु.– लकड़ी, गढ़ने का सुतार का एक औजार, क्रि.- वसूल करो।
बसोलो, बसोला – पु.– लकड़ी गढ़ने का सुतार का एक औजार।
बहकणो – क्रि.– बहकना, फालतू बातें करना।
बहकाणो – क्रि.– ठीक रास्ते से हटाकर धोखे से दूसरी तरफ ले जाना, बहकाना।
बहना – क्रि.– प्रवाहित होना, स्त्री.– बहिन।
बहलाणो – क्रि.– प्रसन्न करना, बहलाना।
बहस – स्त्री.– तर्क–वितर्क, विवाद।
बहाणो – क्रि.– बहाना, बहानेबाजी, आड़ लेना।
बहादर – वि.– बहादुर, बाँका, पट्ठा, साहसी।

बहार – वि.– मौज, रंग, घर के बाहर।

बहाल – वि.– छोड़ना, खरा, मुक्त करना।

बहीखातो, बईखातो – पु.– वे सब पट्टियाँ जिनमें लेन-देन क्रय-विक्रय आदि से सम्बन्ध रखने एवं लेखे या हिसाब लिखे जाते हैं।

बहु – वि.– बहुत, ज्यादा, पर्याप्त, काफी, अधिक।

बहोतर – वि.– बहत्तर।

बा

बा – वयोवृद्ध को सम्बोधन।

बाओ – क्रि.– बोने का कार्य करो, बीज वपन करो।

बाई – स्त्री.– माता, बहन या स्त्री के लिये मालवी सम्बोधन, वात रोग, बादी।

बाई सिक्कल – स्त्री. अ.– सायकल।

बाऊ – पु.– हौआ, कीट आदि बताकर शिशुओं को डराने का शब्द।

बाँक – स्त्री.– बाँह या पैरों में पहनने का एक आभूषण, धनुष, एक प्रकार की छुरी, टेढ़ा, बाँका, तिरछा, झुकाव, मोड़, दबाव।

बाँकड़ी – स्त्री.– कलाबत्तु का एक फीता, तिरछी।

बाँकड्यो – पु.– बिच्छू के लिए विशेषण। वि. बाँका।

बाकला – पु.– ज्वार या गेहूँ के दानों को उबालकर बनाया गया खाद्य पदार्थ, उबला हुआ अनाज जिसमें गुड़ मिलाकर खाया जाता है, घूघरी। (बारे माणी का थने चोडू बाकला मा.लो. 699)

बाँका – वि.– कठिन, टेढ़ा।

बाँका नर – वि.– शूरवीर लोग।

बाँको – वि.– साहसी, शूरवीर, टेढ़ा।

बाखड़ी – स्त्री. वि.– गाय या भैंस, बियाने हुए बहुत समय होने पर भी दूध दे रही हो। (बेन्या आठ लवारी दस बाखड़ी बेन्या पेरण नवसर्यो हार आज कंचन दन उगीयो। मा.लो. 476)

बाग – पु.– बगीचा, फुलवारी। (सीता बाग लगायो हो राम। मा. लो. 659)

बागई – स्त्री.– नजर, पहेली, मूर्तियों को पहनाने का वस्त्र।

बागर, बागड़ – स्त्री.– चमगादड़, काँटेदार तार, कँटीली झाड़ी, साँड, पशु-पक्षियों को फँसाने का जाल, फँदा, काँटो को खड़ा करके बनाया गया जाल।

बागड़ में – स्त्री.– बागुड़ में।

बागड़ बिल्लो – पु.– जंगली बिल्ली, बच्चों को दिया जाने वाला विशेषण।

बाँगड़ – स्त्री.– जिसके बच्चे न होते हो। (काकाजी वीकी बाँगड़ ने मेली रखवा लरे। मा.लो. 496)

बागड्या भेरू – पु. – उज्जैन के एक प्रसिद्ध भैरव देव।

बागरी – सं. पु.– मालव की एक अनुसूचित जाति, मूल निवासी।

बागो – पु.– मूर्तियों को पहनाया जाने वाला वस्त्र, अंगा, जामा।

बागोलना – क्रि.– जुगाली करना।

बाघजी – बगड़ावत गूजरों के आदि पुरुष, (बाघ से बगड़ावत हुआ, मूल चौहाण देवी, आसावरी पूजताँ बाजे तरमांगल ढोल निसाण) इनके वंश में आगे चलकर भोजा रावत के यहाँ देवनारायण जैसे अवतारी पुरुष का जन्म हुआ था।

बाघाम्बर – वि.– बाघ की खाल से बना वस्त्र।

बाँच – क्रि.– पढ़।

बाँचणो – क्रि.– पढ़ना।

बाचा – गाल, कपोल। (बाचा बईग्या। गाल पिचक गये।

बाँछड़ी – स्त्री.– एक जाति, अपशब्द।

बाछरू – पु.ब.व.– बछड़े।

बाज – प.– बाज पक्षी, सं.-पत्तल, पलाश

पत्र या वटवृक्ष के पत्तों से बनी थालीनुमा पत्तल।

बाजन्तरी – स्त्री.– बाजा, एक वाद्य।

बाजणो भाटो – वि.– एक पत्थर विशेष जिसे बजाने से जल तरंग जैसी आवाज होती है।

बाजार – क्रि.– हाट या बाजार।

बाजार भरणो – क्रि.– हाट लगना, शोर होना।

बाजारूण – वि.– बाँझ स्त्री।

बाजी – स्त्री.– दाँव, क्रीड़ा, खेल, दादा, ताऊजी, बन चुकी।

बाजीगी – स्त्री.– बज गई, बजा दी गई।

बाजे – क्रि. –बजना, वाद्य बजना।

बाजो – पु.– बाजा, पेटी का बाजा, हारमोनियम, बैंड बाजा।

बाजोट, बाजोट्यो – पु.– लकड़ी का पटिया। (देवी सास बाजोट्यो लई आवो। मा.लो. 663)

बाजू – पु.– एक तरफ, बाजू, एक ओर, तरफ, भुजा, अलग, परे हटना।

बाजूबंद – पु.– भुजबंध, भुजा का आभूषण।

बाँझ – स्त्री. सं.– बन्ध्या।

बाझीगर – पु.– जादूगर, जादू के खेल बतलाने वाला।

बाट – पु.– रास्ता, मार्ग, तौलने के बाट।

बाटकी – स्त्री.– प्याला, कटोरी, कटोरी, कटोरीनुमा। (बाटकी में भाजी लइने खाता था। मो. वे. 40)

बाट-बटऊ – पु.– राहगीर, यात्री।

बाटड़ो – पु.– उबलते हुए पानी में मक्का या दलिया उबालकर बनाया जाने वाला खाद्य पदार्थ।

बाँटणो – क्रि.– बाँटना, वितरित करना।

बाटल, बाटली – स्त्री.– बोतल।

बाँटा – स्त्री.– पशुओं के खाने की चंदी, क्रि. – हिस्सा, विभाजित किया, विभाग किया।

बाँटा चूँट – क्रि.वि. – बाँट–चूँट कर या समान भाव से हिस्सा करना।

बाटी – स्त्री.– गेहूँ के आटे को गोलाकृति बनाकर, आग पर सेककर बनाया गया खाद्य पदार्थ।

बाटे – पु.– रास्ते में, मार्ग में।

बाँटे – क्रि.– वितरित करना।

बाड़ – स्त्री.– पानी का सेलाब, गन्ने की फसल।

बाड़ लगाना – क्रि.– गन्ने की फसल बोना, गन्ना रोपना, बागड़ लगाना।

बाड़ा – पु.– पशुओं के रहने या खेती या गृहस्थी की सामग्री रखने के लिये चारों ओर दीवारों से घेरकर बनाया हुआ स्थान विशेष।

बाँड़ा – वि.– चितकबरा, जिसकी पूँछ बोथरी हो गई हो ऐसा जानवर, कटवाँ।

बाड़ाँ मरे – क्रि.वि.– लत पूरी न होवे, स्मरण करे, याद करे, बाड़ में मरे।

बाडी – स्त्री.– अहाता, चहारदीवारी, कंचुकी, शारीरिक ढाँचा।

बाँड़ी – तिरछा देखने वाली, आँखों से ढेरी।

बाड़ीगाड – पु.– अंगरक्षक।

बाडीस – स्त्री.– अंगिया, चोली, कंचुकी, सीमाबंदी।

बाँडो – वि.– जिसके पूँछ न हो, जो उघड़ा हो।

बाडो – पु.– बाड़ा, वह स्थान जहाँ घर या पशु तथा कृषि का सामान रखा जाता है।

बाण – पु. – तीर, शर, अग्नि शलाका, खाट या चारपाई के लिये निकाली जाने वाली रस्सी।

बाण्यो – पु.– बनिया मनुष्य।

बाणासुर – पु.– एक शक्तिशाली असुर जिसका श्रीकृष्ण के पुत्र ने वध किया था।

बाणो – पु.– चप्पल जैसे जूते।

बाणी – स्त्री.– वाणी, बोली।

बात – पु.– बातचीत, वार्ता।

बाताँ फाँकणो, बाताँ फाँकण्यो – पु.क्रि.वि. -बातूनी होना।

बाती – बत्ती।

बाताड़्यो – वि.– बातूनी, गप्पी।

बाथ में – पु.– भुजाओं में, आलिंगनबद्ध, अंकवार।

बाथ में जकड़ी ने – बाहों में जकड़ करके।

बाथ्याँ आयो – क्रि.वि.– कुश्ती लड़ा, झगड़ा किया।

बाथलो – स्त्री.– एक प्रकार की सब्जी जो छाच में बनाई जाती है, बथुआ का साग।

बाद – अव्य.– पश्चात्, बाद में।

बादर – वि.– बहादुर, वीर, बादल।

बाँदरा – पु.ब.व.– बन्दर, वानर।

बादल – पु.– मेघ।

बादलमेल – वि.– गगनचुम्बी अट्टालिका, बहु मंजिली भवन।

बादला गाजे – क्रि.– बादलों की गर्जना, गर्जना करे।

बादली – स्त्री.– बदली, जलपात्र, छोटा बादल। (अजी धरउ दिसा से उठी सीतल बादली। मा.लो. 607)

बादशा – पु.– बादशाह, राजा, सम्राट।

बादा – वि.– मुँगफली के बीजरहित फल, पोची मुँगफली, मूमफल।

बाँदा – वि.– बंदा, स्वयं, दास।

बाँदी – स्त्री.फा.– लौंडी, दासी, बन्दी, क्रि.– बाँध दी, बंधन में डाली।

बादी – स्त्री. – वायु विकार, वात रोग, शरीर में वात का कुपित होना।

बाँदो – पु.- बाँदा, नौकर, बंधुआ मजदूर।

बाँध – पु.– बंध, मेड़, सेतु बन्धो, बाँधना, बाँधने की क्रिया या भाव, शोभा, दिखावे आदि के लिये ऊपर बाँधी हुई चीज।

बाँधणी – स्त्री.–पशुओं को बाँधने की रस्सी।

बाँधव – पु.– भाई बन्धु, नातेदार, बंधुगण, रिश्तेदार।

बान – वि.– आदत, भेंट, एक रस्म जिसमें विवाह आदि अवसरों पर दूल्हे दुलहिन को नाते या रिश्तेदार भेंट में रुपया आदि देते हैं।

बानगी – स्त्री.– नमूना।

बान्ने – पु.– दरवाजे पर, द्वार पर, बाहर।

बाना में गी – स्त्री. क्रि.- बंदोरी में गई, एक रस्म जिसमें दूल्हे- दुलहिन को गाड़ी या घोड़े आदि पर बिठाकर गाजे बाजे के साथ शहर या गाँव की गलियों में घुमाया जाता है, इसमें जाति रिश्तेदार स्त्री. पुरुष बच्चे सभी सम्मिलित होते हैं, बंदोरा, बंदोरी।

बानी – स्त्री.– वाणी, बोली, राख।

बानो – पु.– वेषभूषा, सजावट, एक रस्म जिसमें दूल्हा- दुलहिन को सजाकर शहर की गलियों में गाजे बाजे के साथ घुमाया जाता है।

बानो झेल्यो – क्रि.वि.– एक रस्म जिसमें दूल्हा या दुलहिन एवम् उसके घर के सदस्यों को कोई मित्र या रिश्तेदार बाना निकालने एवं भोजन के लिये आमंत्रित करता है।

बाप – पु.– पिता, जनक।

बापक्याँ – पु.– पिता के यहाँ ।

बापड़ो, भापड़ो – वि.– बेचारा, अनाथ, सीधा-सादा। (घबरई गी बापड़ी। मो.वे. 54)

बापर – क्रि. – उपयोग में ले, उठाव, चलन।

बापू – न. – पिताजी, गाँधीजी का आदर सूचक नाम, पितृ, तुल्य। (अपने अपना बापू। मो.वे. 84)

बाबत – पु.– विषय।

बाबरा – बाल, केश, बड़े बाल।

बाबराभूत – वि.– धूल धूसरित, धूल व गन्दगी से सना हुआ।

बाबुल – पु.– पिता, जनक।

बाबो – बाबाजी, साधू, संत, फकीर।

बामच	–	वि.– निःसार वस्तु, विकृत या खराब वस्तु, कमी, त्रुटि।
बामण	–	पु.– ब्राह्मण, पंडित।
बामणी	–	स्त्री.– ब्राह्मणी, सर्प जाति का बहुत छोटा प्राणी जिसके पैर होते हैं।
बामण्यो	–	ब्राह्मण, पण्डित। (बामण्या दाल ओजगीरे। मा.लो. 559)
बामरा	–	पु.– बसमरा, दीवारों पर चलने एवं कीट पतंग खाने वाली छिपकली।
बाय	–	स्त्री.– वायु रोग, वात रोग, मित्र।
बायसिक्कल	–	स्त्री.– सायकिल, द्विचक्र वाहिनी।
बाय का	–	स्त्री.– मित्र का, साथी का।
बायचंगो	–	ना.– चंचल, बचपना, असंगत बातें। बुद्धिहीन। (लोग धन खई जायगा, बायचंगो हे। मो.वे. 80)
बायर	–	अव्य.– बाहर। (बायर आव बनड़ी वाजेली। मा. लो. 441)
बायर काड़ो	–	बाहर निकालो, बहिष्कृत करना, बाहर निकालना। मा.लो. 566)
बायरा	–	पु.– बाहर वायु, हवा।
बायदी	–	स्त्री.– अग्नि, आग।
बाय बादी	–	वि. – वातजनित रोग, गठिया रोग।
बाँय बाँय मल्या	–	क्रि.वि.– बाहों में बाहें डालकर मिले, अंकवार हुए।
बायरे रो	–	क्रि. – बाहर ही रहे।
बायरो	–	वायु, हवा, पवन। (म्हारे दिखे कोई बायारो बीती गयो ऐसी घड़ी को। मो.वे. 56)
बायलाचार	–	वि. – मित्रता, प्रेम सम्बन्ध।
बायलो	–	पु.– मित्र, साथी, सखा, सुतार का एक औजार बसौला, स्त्री का गुलाम, डरपोक, भीरू, स्त्री के जैसे स्वभाव वाला।
बायाँ, बायों	–	स्त्री.क्रि.– लड़कियाँ, बाईं तरफ का, बाहें, भुजाएँ, बोने की क्रिया, उगाहना।

बारक	–	पु.– बालक, अव्य.- एक बार। (बरक ने बतरावो। मा.लो.599)
बारकाड़ी	–	क्रि.– बाहर निकाली।
बारणे	–	पु.– दरवाजे पर।
बारणो	–	पु.– दरवाजा, द्वार।
बारणो रोकई	–	विवाह करके घर आने पर बहन-बेटियों द्वारा दूल्हे का द्वार रोकने पर बहन-बेटियों को दिया जाने वाला नेग, दस्तूर।
बारद्यो	–	क्रि. – जला दिया, अग्नि में फूँक दिया।
बारदात	–	वि. – घटना।
बारदान	–	पु.– खाली थैला, टाट का बोरा।
बारनो, बारणो	–	पु. – दरवाजा, द्वार, फाटक।
बारमो	–	वि. – बारहवाँ, मृतक का बारहवा दिन, मृतक भोज, बारह अंक, 12, बारवाँ। (ने बारमा की माँ बनी। मो.वे. 47)
बार्‌यो	–	पु. – मिट्टी का पात्र, मिट्टी का छोटा लोटा, जला दिया।
बारवास	–	पु. – विदेश, घर से बाहर जाकर रहना।
बारा	–	वि. – बारह।
बाराखड़ी	–	स्त्री. – बाराक्षरी, पुरानी पढ़ाई की एक पद्धति या रीति।
बाराकों, बारी को	–	अव्य. – हिस्से का, तरफ का, ओर का।
बारा	–	बारह।
बारा मासी	–	स्त्री. – सब ऋतुओं में फलने और फूलने वाला एक पौधा, लता, नसरगंडी, बारहमासी, वह भजन या गीत जिसमें बारह महिनों का वर्णन हो।
बारा सिंगो	–	पु. – हिरन, बारहसिंगा, एक प्रकार का बड़ा हिरन।
बारी	–	स्त्री. – खिड़की, गवाक्ष, झरोका, अनुक्रम, दो पहाड़ियों के मध्य का मार्ग, पारी, ओसरी, क्रम, तट, किनारा, छोर पर का भाग, बाड़ा, अवसर।

बारीक – वि. – सूक्ष्म, महीन, सँकरा, छोटा, पतला।

बारीकी – स्त्री.– बारीक या पतलापन, सूक्ष्मता, पैनापन।

बारुड़ो – बच्चा, लड़का, पुत्र, बालक, बालुड़ो। (खाता तो वा खई गई बालुड़ा को चड़यो पेट। मा.लो. 560)

बारुन्डो – वि. – भड़का हुआ, विरुद्ध हुआ, मायके की ओर से कन्या के प्रथम शिशु के लिये दिया जाने वाला वस्त्राभूषण।

बारुद – स्त्री. – एक प्रसिद्ध विस्फोटक चूर्ण जो आग लगाने से भड़क उठता है और जिससे तोप- बन्दूक चलती है, दारू।

बारेठण – स्त्री. – बारहठ या ढोली जाति की स्त्री।

बारे काड़णो – क्रि. – बाहर करना।

बारेमास – वि. – बारहों महिने, बारह माह का समय।

बारे वर – वि. – बारह वर्ष का समय, बारह दूल्हे।

बारोठ – पु. – बारहठ, ढोली, दमामी।

बाल – पु. – बालक, बाल, केश, रोम। क्रि. – जला, बाला।

बालक – पु. – (स्त्री.- बालिका) बच्चा, लड़का, पुत्र, बालक।

बालकियो – पु. – बालक।

बाल गोपाल – पु. – बाल बच्चे।

बालटी – लोहे, पीतल की बड़ी बाल्टी। (सो दो सो बालटी पानी हेड़ो। मो. वे.84)

बालणो – जलाना, भस्म करना, झुलसाना, सुलगाना, दुख देना, तंग करना, इर्ष्या उत्पन्न करना, खिजाना, जलती हुई को क्या जलाना। (बलती ने बेटा म्हारा कईं रे बालो। मा.लो. 677)

बालद – पु. – बंजारों का बैलों पर ढोये जाने वाला काफिला, सामान व्यापार की वस्तुएँ। (समदरिया रे ऐले पेले पार तो वीराजी बालद उलटी। मा.लो. 364)

बालम – पु.सं. – पति, स्वामी, प्रणयी, प्रेमी, प्रियतम। (ढप कायको बजावे बालम रसीया। मा.लो. 574)

बालमा – पु. – बालक, प्रेमी, स्वामी।

बाल् यो – क्रि. – जलाया, दागा।

बाला – स्त्री. – कान का आभूषण, बारह तेरह वर्ष से लेकर 16-17 वर्ष की आयु वाली स्त्री।

बालानसीब – पु.फा. – वह जो सबसे ऊँचे स्थान पर बैठा हो। वि. – अहोभाग्य, सबसे अच्छा, बहुत बढ़िया।

बाली – पु. – सुग्रीव का बड़ा भाई, आभूषण।

बालिग – पु. – वयस्क, जवान, युवा।

बालिस्त – पु. – एक बेंत, बित्ता।

बाली नाँक्यो – क्रि. – जला दिया, जला डाला।

बालुडो – बच्चा, बालक, शिशु। (बाई वो आदी थारा बालूडो समझाव। मा.लो. 49)

बालू – पु.सं. – बालुका, बारीक पत्थर, बालक, बच्चा।

बालूँ – क्रि. – जलाऊँ। (बालूँ जालूँ रे सगा थारी रे दुकान। मा.लो.508)

बाले बाले – परभारा, बाहर-बाहर, दूर-दूर, दूर से, ऊपर-ऊपर, बिना कहे या बिना मिले।

बालो नाग – पु.– बाला नाम का एक नाग, सर्प।

बालोर – पु. – एक प्रकार की फली, बल्लर।

बाव – पु. – बादी, वायुविकार।

बाँवठा – वि. – ऐंठन, हाथ पैरों की अकड़न, भुजा।

बाँवठिया – वि. – भुजा का आभूषण।

बावड़ जा – क्रि.स्त्री. – पलट जा, वापस हो जा,

लौट जा, बाद में।

बावड़्यो – पु. – वापस लौटा, पलट गया, पनपा।

बावड़तँ – क्रि. – वापस आते समय, लौटते समय, पलटते वक्त।

बावड़ली – स्त्री. – लौटाई, पलटी।

बाँवटी – स्त्री. - बाँह, भुजा।

बावड़ी – स्त्री.क्रि. – लौटी, पलटी, कूप, बावड़ी।

बावरी – वि. – पगली, दिवानी।
(वइग्या राजा बावरा। मा. लो. 649)

बावन – वि. - बाजना।

बावनवीर – पु.वि.सं. – बड़े वीर या योद्धा, चतुर।

बावणी – स्त्री. बीजवपन का काम, बोने का काम।

बावन्या – बौने, छोटे लोग।

बावरा – पु.वि. - पगला, मूर्ख, बुद्धू।

बाँवल – पु. बँबूल, काँटेदार, वृक्ष।

बावलो – पगला, मूर्ख।
(गेला हुया ओ गोरी बावला फूलड़ा का भमर नी होय। मा.लो. 487)

बावा वाते – क्रि. – बोने के वास्ते, बोने के लिए।

बाबा – वि. – बाबा या साधु।

बावादो – क्रि. – बोने दो।

बावी – क्रि. – बोई गई, वपन की।

बादे – क्रि.– बो दो, बोने का काम कर।

बाव सरे – क्रि. – अपान वायु, डोरा चलाकर मिट्टी ऊपर नीचे करना, पौधों को हवा लगाने की क्रिया।

बावा – पु. – बाबा, साधु।

बावो – पु. – बोने का कार्य करो, बीज वपन करना।

बास – वि. – सुगंध, गंध, दुर्गन्ध।
क्रि. – निवास, रहना।
(केवड़ा की बास। मा.लो.206)

बाँस – पु. – केश, बाँस।

बासक – पु. – वासुकि नाग।

बाँस की पराणी – पु. – बाँस की लकड़ी या डंडा जिसके पेंदे में लोहे का अरीता लगा होता है।

'बा'

बसाँ – क्रि. – निवास करें, रहें।

बासण – बर्तन, पात्र।

बासती – स्त्री. – अग्नि, आग।

बासना – स्त्री. सं. – बास, गंध, महक, हींग के लिये रूढ़, हींक बासना।

बासण – पु. – बर्तन भाँडे।

बासली – स्त्री. – बासी, बाँसली, हाथ के अँगुठे का रोग।

बासा बसे – क्रि. – रहे, निवास करे, घरबार जमना।

बासी – स्त्री. – पुरानी, बस गई, खराब या विकृत हो गई, देर तक पका हुआ, निवासी।

बासीदो – क्रि. – घर के पशुओं का मल- मूत्र, घास, आदि को उठाकर रोड़ी या घूरे पर डालना, सफाई का काम करना।

बासे – वि. – दुर्गन्ध आए।

बासो – पु. – पड़ोस, निवास रहने का स्थान।

बाहुबल – पु. – शारीरिक शक्ति, पराक्रम।

बाहुबली – वि. – जैनियों के देवता, भगवान बाहुबलि।

बाँको – टेढ़ा, तिरछा, झुकाव, मोड़, दबाव।
(असल गेंदा की ढाल मंगई दूँ, बाँको हुई जा रे, दो दन रई जा रे। मा. लो.429)

बाँगड – मूर्ख गँवार, उज्जड अविवेकी, अप्रसूता युवती। (थारी आरती में नावीड़ा रो नेग तू कर वो बाँगड आरती। मा.लो. 415)

बाँजुली – बाँझ, वंध्या, सन्तान रहित।
(माता नी हे कोई पगल्या माँडण हार वो आनंदी बाँजुली वो। मा.लो. 602)

बाँटणो – बाँट दिया, दे दिया, वितरित करना, हिस्सा या भाग करके लोगों को देना।

बाँद – बाँधना, बाँध देना, बाँधने का काम, नदी या तालाब का पानी रोकने के

लिये बाँधी जाने वाली पत्थर आदि की मोटी पाल, पुश्त।

बाँय – बाँह, भुजा।
(प्रभुजी बाँयडली पकड़ो तो पार उतार जो। मा.लो. 651)

बि

बिकऊ – वि. – बिकने योग्य, बेचने का माल।

बिकणो – क्रि. – बिकना, बेचा जाना, किसी पदार्थ का कुछ धन के बदले में दूसरे के हाथ बेचा जाना, बिक्री होना।
(घणा लोगाँ का बिक्या टापरा अणी मदीरा के माय। मा.लो. 568)

बिकरम – पु. – राजा विक्रमादित्य, पराक्रम।

बिकराल – वि. – भयानक, विकराल।

बिखरनो – क्रि. – बिखरना, फैल जाना।
(अरे इका माथा का बिखरीग्या बाल। मो.वे. 54)

बिखा – क्रि.वि.-बुरा,नादानी, गरीबी।

बिखेर्‌यो – क्रि. – बिखेर दिया, गिरा दिया।

बिगड़णो – क्रि. – बिगड़ना, खराब होना, नाराज या अप्रसन्न होना।

बिगन – वि. – विघ्न, रुकावट।

बिगर – अव्य. – बगैर, बिना।
(चंदा बिगर केसी चाँदणी। मा. लो. 648)

बिगाड्यो – क्रि. – बिगाड़ा, बिगाड़ दिया, नाश कर दिया, नष्ट कर दिया।

बिगल – पु. – तुरही, एक बाजा।

बिगोद्यो – क्रि. – भिगो दिया, गीला कर दिया।

बिघन – वि. – विघ्न, बाधा, रुकावट।

बिच्छू – पु. – वृश्चिक, बिच्छू।

बिचलो – वि. – जो बीच में हो, मध्य का।

बिचवान – पु. – मध्यस्थ व्यक्ति।

बिचवानी – स्त्री. – मध्यस्थता, बीच में पड़कर झगड़ा निपटाने या सुलह करवाने वाला।

बिचवाल – वि. – बीच का, मध्यस्थ, दलाल।

बिचारी – स्त्री. – विचार किया, अव्य.– बेचारी।

बिचारो – वि. – बेचारा, क्रि.– विचार करो, सोचो, समझो।

बिछड़के – कृ. – बिछा करके।

बिछड़णो – क्रि. – बिछुड़ना, अलग होना, जुदा होना।
(गेंद गजरो वो आदी रात मुजरो परबात बिछड़ो। मा.लो. 532)

बिछात – क्रि. – बिछाने के वस्त्र, बिछावन।

बिछावणो – पु. – बिछाने की वस्तुएँ , फर्श, दरी, गादी आदि।

बिछुड़ी – बिछिया चुटकी, पैर की ऊँगली में पहनने का आभूषण।

बिंछिया – वि. – पैरों की अँगुलियों में पहनने का आभूषण, बिंछिया।

बिछेवा – स्त्री. – बिछौना, बिछावन।

बिछोणा – क्रि. – बिछावना, बिस्तर, बिछाने की वस्तुएँ ।

बिछो, बिछोह – वि. – वियोग, विरह, बिछड़ने की वेदना, दुःख या तकलीफ।

बिज्जू – पु. – बिल्ली की तरह का एक जंगली जानवर।

बिजली – स्त्री. – चपला, दामिनी, विद्युत।

बिजालू – पु. – बैंगन, भटा, एक सब्जी।

बिजारो – पु. – मिट्टी का ढक्कन, बिजोरा।

बिजासण – स्त्री. – एक लोक देवी, मातृ देवी, विन्ध्यवासिनी।

बिटमणो – क्रि. – नष्ट करना, बिगाड़ना, भटकना।

बिटमा – क्रि. – नष्ट करें , बिगाड़े, दुरुपयोग करें।

बिट्ठल – पु. – श्रीकृष्ण का एक नाम।

बिटाल्यो – वि. – भ्रष्ट किया।

बिड़ू – पु. – मित्र, सखा, सहायक, दोस्त, साझीदार।

बिणती – स्त्री. – विनती, प्रार्थना।

बिणा – अव्य. – बिना, रहित।

बितई – क्रि. – बिता दी, व्यतीत की।

‘बि’

बित्ता भर को – वि. – एक बेंत का, बालिस्त भर का।

बिद – वि. – विधि, तरीका, नियम।

बिदई – क्रि. – विदा करना, विदाई देना, रवाना करना।

बिदक्यो – वि. – बिदक गया, मुकर गया, मनाकर गया, चला गया।

बिंदली – स्त्री. – बिंदी, माथे की बेंदी, टिकुली, सौभाग्य शृँगार की वस्तु।

बिदा कर्‌यो – पु. – बिदा किया, भेज दिया।

बिंदी – स्त्री. – शून्य का सूचक चिह्न, माथे की बेंदी, टिकुली, बिन्दी, बेंदी, सौभाग्य चिह्न।

बिंदी को सणगार – स्त्री. – शृँगार प्रसाधन की वस्तु बिन्दी या बेंदी, टिकुली ।

बिधना – पु. – विधाता, ब्रह्म।

बिंधणो – क्रि. – बीधा जाना, छेदा जाना, फँसना, उलझना।

बिंध्या – क्रि. – बिंधे हुए, पिरोये हुए।

बिन टाँका – क्रि.वि. – बिना टाँके की, टाँका रहित।

बिनती – स्त्री. – विनती, प्रार्थना, निवेदन।

बिना – कृ. – बिना।

बिपत – वि. – विपदा, दुःख।

बिपदा – वि. – विपत्ति, आफत।

बिफरणो – क्रि. – नाराज होना, क्रोधित होना।

बिफल – वि. – विफल।

बिंब – वि. – प्रतिबिम्ब।

बिबूड़ी – स्त्री. – बीबी।

बिमको – वल्मीक, दीमक का टीला।

बिमल – वि. – स्वच्छ, साफ।

बिमलो – स्त्री. – बाँबी, दीमकों द्वारा बनाया मिट्टी का डूह।

बियाँ – स्त्री. – सिवैयाँ।

बियाणी – स्त्री. – प्रसव हुआ।

बियाणजी – स्त्री. – समधिन, पुत्र या पुत्री की सास आदि।

बियाव – स्त्री. – विवाह, शादी।

बियावान – पु.फा. – उजाड़ जगह, जंगल, सुनसान मैदान, भयानक जंगल।

बिरखा – स्त्री. – वर्षा, वृष्टि।

बिरत – क्रि.वि. – व्रत या उपवास।

बिरथा – वि. – व्यर्थ, फिजूल।

बिरम देव – पु. – ब्रह्म देव, ब्राह्मण।

बिरम देश – पु. – ब्रह्म देश,बर्मा, म्याँमार।

बिरम लोक – पु. – ब्रह्मलोक, स्वर्ग।

बिरमा – पु. – ब्रह्मा।

बिरमाविसणुमेस – पु. – ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

बिरला – अव्य. – विरल, कोई- कोई।

बिरलो – अव्य. – विरल, कोई- कोई।

बिरला जीवे – क्रि.वि. – शायद ही कोई जीवित बचे।

बिरलाय – अव्य. – बिखर गये।

बिरवो – पु. – पौधा, तुरही का पौधा।

बिराजणो – बैठना, बैठो, बैठिये, बिराजो, बिराजमान हो जाइये, पधराना। (ठाकुर भले बिराजो जी उड़ीसा जगन्नाथपुरी में।)

बिरादरी – स्त्री. – एक जाति के लोगों का समूह या वर्ग।

बिरामण – पु.- ब्राह्मण।

बिल – सं. – बिल, विवर।

बिलई – स्त्री. – बिल्ली, एकयंत्र जिससे कुँए में गिरी वस्तु निकालते हैं।

बिलकुल – अव्य. – पुरी तरह, बिल्कुल।

बिलखई – स्त्री. – बिलखकर, विलाप करके, रुदन करके, पश्चात्ताप करके।

बिलखणो – वि. – बिलखना, विलाप करना, व्याकुल होना।

बिलमाणो – न. – उलझाना, बिलमाना।

बिलम्याँ जायजी – पद. – बिछुड़ जाय, गुम जावे, ।

बिलमायो – क्रि. – बहकाया, भुलावा दिया, भरमाया।

बिलमाव – किसी काम में लग जाना या लगा देना । (म्हारा भाणेजाँ बिलमाव । मा.लो.पे.49)

बिलसो – विलास करना, शोभा पाना, आनन्द से भोगना, मौज करना, उपभोग करना। (खाजो ने पीजो रे बिलसणो, नत की हो जो रे थारे वरदडी। मा.लो. 333)

बिल्ला – पु. – पदक, तमगा।

बिलाव – पु. – जंगली बिल्ला, उदबिलाव।

बिलोनो – छाछ करना, मथना।

बिवई – स्त्री. – पगतली का फटना।

बिस – वि. – विष, जहर।

बिसमरी – छिपकली, एक विषैला जन्तु जो प्रायः घर की दीवारों पर प्रकाश में आने वाले कीट पतंगों को खाकर पेट भरती है।

बिस्कुट – पु. – एक प्रकार की टिकिया।

बिस्तरो – पु. – बिस्तर, बिछावन।

बिस्वा – वि. – बीस बिस्वा का एक बीघा। बीस लट्ठा लम्बी और एक लट्ठा चौड़ी भूमि, बीघा।

बिसमरो – पु. – छिपकली, बसमरा, एक जहरीला छोटा जानवर।

बिसरणो – क्रि. – भूलना, भुलावे में रखना, याद न रखना।

बिसारी – स्त्री. – एक प्रकार का रोग जो बगल, कुक्षि आदि स्थानों पर होता है।

बिसास – वि. – विश्वास, भरोसा।

बिसारणो – क्रि. – भूल जाना, याद न रखना।

बिसरानो – क्रि. – भूलना, भूला देना, भूल जाना, बिसराना, विस्मृत करना।

बी

बी – भाई, भय, भी।

बीकी जाणो – क्रि.–बिकजाना , बेच देना।

बीघा – न. – बीस बिस्वे खेत का नाप, भूमि का एक नाप। (बारे बीघा धरती। मो.वे.33)

बीचलो – जो बीच में हो, मध्य का, बीच का, मझला। (बीचलीकेकाँटेभागीयो। मा.लो. 569)

बीचे – वि. – बीच में, मध्य में।

बीचों बीच – क्रि.वि. – मध्य में।

बींछा – स्त्री. – बिछिया, पैरों की अंगुलियों का आभूषण।

बींछी, बींछण – स्त्री. – बिच्छू की मादा।

बीज – स्त्री. – द्वितीया का चन्द्रमा, सार, बिजली, बोने का बीज। (आगी बलो चुँदडी पर बीज पड़ो राज। मा.लो. 328)

बीजली – स्त्री. – बिजली, विद्युत्छटा, मेघों से कड़कने वाली बिजली।

बीजासण – स्त्री. – विन्ध्यवासिनी, दुर्गा का एक रूप।

बीजू – पु. – बिज्जू, बिल्ली के आकार का एक जानवर।

बीजोरो – बीजोरा नींबू, बीज वाले संतरा जैसे बड़े नींबू, गोदड्या नींबू। (वाड़ी में बीजोरा सनमन सोरा। मा.लो. 605)

बीट – स्त्री. – चिड़ियों का मल।

बींटी – स्त्री. – अंगूठी, मुद्रिका।

बीड़ – स्त्री. – एक प्रकार की धातु, घास का मैदान।

बीड़ा – वि. – कठिन कार्य को कर डालने का साहस, हिम्मत, शराब एकत्र करने का कूपा जो प्रायः ऊँट या चमड़े का थैलीनुमा होता है, सीदड़ा।

बीड़ा – पान के बीड़े। (पानाँ की बीड़ियाँ मुखड़ा में म्हारी राज कुँवर बाई। मा.लो. 526)

बीड़ी – स्त्री. – जर्दे से बनी हुई धूम्रपान करने की बीड़ियाँ, पत्ते में लपेटा जर्दे का चूरा जो चुरुट आदि की तरह सुलगाकर पिया जाता है।

बीडू – पु. – मित्र सखा।

बीणूँ – बिनना, चुनना, साफ करना, एक एक

फल बिनना, गेहूँ चावल दालें इत्यादि बिनना।
(भोला संगवी यो बन बिणूँ रे एकली। मा.लो. 635)

बीतणो – क्रि. – बीतना, गुजरना, व्यतीत होना।

बींद – पु. – पति, स्वामी, प्रियतम, दुल्हा। (थारी नींद में म्हारा बींद। मो.वे.38)

बींदणी – स्त्री.– पत्नी, स्वामिनी, दुलहिन, प्रियतमा।

बीन – स्त्री. – सपेरों के बजाने की बीन बाजा, पुंगी, क्रि. – बीनना।

बीनना – क्रि. – अनाज को बीनकर साफ करना।

बीननी – स्त्री. – सुतार का छेद करने का एक औजार, दुलहिन के लिये मारवाड़ी सम्बोधन।

बीम – पु. – सीमेंट, पत्थर और तार आदि का बिछाया हुआ जाल जो मकान की नींव या ऊपरी सिरे पर डाला जाता है।

बीमका – पु. – बीमला, घरोंदा, बिल, दर, बाँबी।

बीमला, बीमलो – पु. – बाँबी, डूह, दर, वि. – भद्द, कच्चा, गारे या मिट्टी का बना घर।
(माता नइ डसी बीमला नाग। मा. लो. 603)

बींदराबन – वृन्दावन, श्रीकृष्ण का स्थान, आगरा के समीप।
(बींदराबन में धोती सुकाय रया। मा.लो. 634)

बीमो – पु. – भविष्य की सुरक्षा के लिये का बीमा करवाना।

बीयाँ – सेवैयाँ, वीडा, मैदे व आटे की बनती है, मशीन से भी बनाई जाती है और हाथों से भी बनती है। (चीमटी रा चूँट्या रे वाने बीयाँ भावे। मा.लो. 435)

बीर – पु. – भाई, भ्राता, महावीर, कान का एक गहना, तरना।

बीर उमल्या – क्रि.वि. – जोश में आया, देवता का शरीर में प्रवेश होना, शरीर में कंपन होकर हिलना डुलना।

बीरबट्टी – स्त्री.–वीरवधूटी, बहूटी, चौमासा में निकलने वाला लाल रंग का कीड़ा।

बीरमो – पु. – बीरा, भाई।

बीराजी – पु. – भाई या बीर, भाई के लिये मालवी सम्बोधन।

बीस कोड़ी – चार सौ की संख्या।

बीसी – वि. – भोगा जाने वाला अच्छा समय, मानव का बहुत सुखी जीवन काल।

बु

बुआर – क्रि. – झाड़ू लगा, सफाई कर।

बुआरो, बुआरा – पु. – झाड़ू, झाड़न।

बुखार – पु. – ज्वर, बुखार, ताव।

बुखारी – स्त्री. – तलघर।

बुगचा – बगस, पेटी, डिब्बा, पोटली (कपड़े रखने के लिये)
(बेन्या म्हारी वो बुगचा रा सालु अन्ते घणा। मा.लो. 342)

बुगधारी – पु. – बगुला, सफेदी।

बुगुला – पु. – बगुले।

बुचकारे – क्रि. – प्यार करे, पुचकारे।

बुच्चो – वि. – बूचा, कनकटा, एक गाली।

बुजरग – वि. – बुजुर्ग, वृद्ध, वयोवृद्ध।

बुजावा – क्रि. – बुझाने के लिये, बन्द करने।

बुजे – बुझना, बंद होना, दीपक बुझना, दर्द बंद होना, समझना, बताए। (बुजो जमईसा म्हारी पारसी। मा.लो. 541)

बुझाणो – क्रि. – बुझाना, बन्द करना, अग्नि को शीतल या शान्त करना।

बुझोवल – वि. – पहेली, पारसी।

बुंटिया – स्त्री. – भंग की बूँटी, जड़ी।

बुड़णो – क्रि. – डूबना, चौपट होना, निमग्न होना।

बुड्डा – वि. – वृद्ध, जो साधारणतः मानी जाने वाली पूर्ण आयु की अवधि से अधिक भाग पार कर चुका हो, बूढ़ा।

बुड़ बुड़ा – क्रि.वि. – बुलबुला, पानी के ऊपर का फेन।

बुड़ापो – पु. – बुढ़ापा, बूढ़े होने की अवस्था।

बुढ़िया – स्त्री. – वृद्धा।

बुत – वि. – ढाँचा, मूर्ति।

बुँदका, बुँदकी – स्त्री. – कान का आभूषण, माथे पर लगाया जाने वाला गोल टीका, सिर का आभूषण, गोलक, टिकुली , कान के बुन्दे।

बूँदी – स्त्री. – बेसन की बूँदी के लड्डू, बुँदीदाने, राजस्थान का बूँदी शहर।

बुन्द – स्त्री. – बूँद।

बुध – पु. – एक ग्रह, बुद्धिमान और विद्वान व्यक्ति।

बुद्‌द्धीहीन – क्रि.वि. – बुद्धिरहित, गँवार, मूर्ख।

बुद्धू – वि. – मूर्ख, भोला भाला।

बुनई – क्रि. – बुनने की क्रिया भाव या मजदूरी, बुनकर, पु.-कपड़ा बुनने वाला जुलाहा।

बुननो – क्रि. – धागों की सहायता से करघे पर कपड़ा तैयार करना।

बुरई – वि. – बुरा कहना, निन्दा।
(बुरई के हेड़ो। मो.वे.84)

बुरकणो – क्रि. – चूर्ण आदि किसी चीज पर छिड़कना।

बुरको – पु. – घूँघट, परदा, छिपाव, एक प्रकार का पहनावा जिसे मुसलमान स्त्रियाँ अपने सिर से पैर तक पहनकर सब अवयव ढँकती हैं।

बुरनो – क्रि. – किसी वस्तु को खड्डा खोद कर गाड़ना, मिट्टी के गड्ढे आदि को पुरना, दफनाना।

बुरस – पु. – खाने या सफई करने की कूँची , ब्रश।

बुरा – वि. – बुरा व्यक्ति, खराब, विकृत, शकर आदि का चूर्ण।

बुरा बेवार का घर – क्रि. वि. – बुरे व्यवहार वाला घर, बुराई का घर।

बुरो – वि.– बुरा, खराब, चूर्ण, निकृष्ट।

बुलइके – कृ. – बुलावा करके।

बुलबुलो – पु.– पानी का बुलबुला, बुदबुदा

बुलाणो – क्रि.– अपने पास आने के लिये पुकार कर कहना, आवाज देना, पुकारना।
(बनड़ो मालीड़ो बुलावे बनो खेरादी बुलावे। मा.लो. 385)

बुकड़्याँ – स्त्री. ब. व. – बकरियाँ।

बुवारणो – बुहारना, झाडू लगाना, सफाई करना, झाडू से साफ करना, बटोरना। (कणे म्हारो आँगणो बुवारियो जी।)

बुवारी – झाडू, बुहारनी।
(बुवारो काड़ो तो वउवड़ लागो थे नीका। मा.लो. 22)

बू

बूकड़ाँ – पु.ब.व. – बकरियाँ।

बूकड़ां – पु.ब.व. – बकरे।

बूचो – वि. – जिसके नाक कान कटे हुए हो, कनकटा, नकटा।
(अदवेंडा नावी देखो व्याई रो नावी बुचर्यो। मा.लो. 370)

बूचर्‌यो – वि. – बूचे कान का व्यक्ति।

बूज, बूझ – स्त्री. – समझ, बुद्धि, पहेली।
क्रि. – पूछ।

बूजो – क्रि. – पूछो, तलाश करो।

बूजणो, बूझणो – क्रि. – समझना, जानना, पूछना

बूझाँ हो पारसी – पारसी या बुझौवल पूछें।

बूझी – स्त्री.– पूछी, तलाश की, बुझ गई

बूँट – पु.– विदेशी बनावट का जूता, हरे चन।

बूँटा – पु. – चने का पौधा।

बूँटा कड़ाया – क्रि. – साड़ी या लूगड़े के पर बेल-बूँटे निकलवाये।
बूँटी – स्त्री. – औषधि, जड़ी बूटी।
बूँटी छाननी – क्रि.वि. – भंग छानना।
बूड़णो – क्रि. – डूबना, अस्त होना।
बूड़लो – बूढा, वृद्ध, डोकरा, जरावस्था, बुढापा। (अदगेल्या नावी देखो सगा रो नावी बूड़ल्यो। मा. लो. 370)
बूड़ा – वि. – वृद्ध, बूढ़ा व्यक्ति।
बूड़ी – स्त्री. – वृद्धा बूड़ गई, डूब गई।
बूड़ीगी, बूड़ी गई – क्रि. – डूब गई, निमग्न हो गई।
बूता को – क्रि.वि. – वश की बात।
बूतो – पु. – कोई काम करने का सामर्थ्य, शक्ति।
बूँदा बाँदी – स्त्री. – हल्की बूँदों की वर्षा।
बूँदी – स्त्री. – राजस्थान का ऐतिहासिक नगर बूँदी, बेसन की बारीक पकौडी जैसी तैयार की गई मिठाई।
बूपच्या – वि. – भद्दी रोटियाँ।
बूर – पु. – चूर्ण, बुर, बारीक रवा।
बुरद्यो – क्रि. – बन्द कर दिया।
बूरा – पु. – किसी भी वस्तु का चूरा या चूर्ण, वि. – बुरा व्यक्ति।
बूरी गया – क्रि. – बन्द कर गया।
बूरी दो – क्रि. – बन्द कर दो।
बूरो – पु. – भूरे रंग की कच्ची चीनी, गुड़िया शकर, चूर्ण।

बे

बेठ – क्रि. – बैठ।
बेअंत – वि. – जिसका कोई अन्त न हो।
बेकल – वि. – काँटे की एक किस्म, एक मोटा और लम्बा काँटा।
बेकरा – वि. – जोर-जोर से रोना चिल्लाना।
बेकल्ड़ी – स्त्री. – मिश्रित अनाज।
बेकाम – वि. – बेकार, निकम्मा, निठल्ला।
बेकार – वि. – व्यर्थ, बिना काम का, निरुपयोगी।
बेकारी – वि. – बिना काम के, बिना रोजगार के।
बेखबर – वि. – अनजान, नावाकिफ, अज्ञान।
बेगड़ – स्त्री. – गायों से भरा बाड़ा, गौशाला।
बेंगण – पु. – भटे, एक सब्जी, बेंगन।
बेग – क्रि.वि. – शीघ्र।
बेगा – वि. – शीघ्र, जल्दी, त्वरित।
बेगा पधार जो – क्रि. वि. – शीघ्र आना, जल्दी आना।
बेगार – स्त्री.–बिना मजदूरी दिये लिया जाने वाला काम, वह काम जो मन लगाकर न किया जाय।
बेगारी – पु. – बेगार में काम करने वाला मनुष्य।
बेगी – स्त्री. – जल्दी, शीघ्र, क्रि. – बह गई। (बेगी चालूँ तो भींजे म्हारी ओरणी। मा.लो. 584)
बेगेरत – वि. – जिसका पानी या आब मर गया हो, बेइज्जत।
बेघर – वि. – जिसके घरबार न हो, बिना घर का।
बेंच – पु. – लकड़ी की लम्बोतरी ऊँची लम्बी बैठक।
बेचणों – क्रि. – बेचने, बेचना, विक्रय करना।
बेचना – क्रि. – बेचना।
बेचवा में नी आवे – बिकने में नहीं आता, बिकता ही न हो।
बेछक – वि. – बेसुध, संज्ञाहीन।
बेजड़ – दो वस्तुओं का मिश्रण करना, गेहूँ चने का मिश्रण, जौ चने का मिश्रण आदि।
बेजा – वि. – अनुचित, नामुनासिब।
बेजाप्ता – वि. – जाबते या नियम के विरुद्ध।
बेजार – वि. – हैरान, परेशान। सं. – बाजार, हाट।
बेजाराँ – वि. – जोर जोर से, जल्दी से। सं. – बाजारों में।
बेजाँ – वि. – उचित नहीं, गलत।

बेजान – वि. – मृतक, जिसमें जान न हो।

बेटमा – स्त्री. – मालवा के एक कस्बे का नाम, उलझना, व्यर्थ नष्ट करे।

बेटाण – सं.ब.व. – बेटों को।

बेटाये – सं. – बेटे को।

बेटी बेवार – क्रि.वि. – कन्या का आदान प्रदान।

बेटी लावणो – क्रि. – बेटी लाना।

बेटो – बेटा, पुत्र, सन्तान, सूत, दूत। (बटो भी तो योज हे। मो.वे.79)

बेठई के – कृ. – बिठला करके।

बेठक – क्रि. – बैठने का स्थान।

बेठक ऊठक – क्रि.वि. – दण्ड बैठक लगाना, उठ बैठ करना।

बेठक मारणो – क्रि.वि.-पालथी मारकर बैठना।

बेठणो – बैठो, बैठना, बैठ जाओ। (मोटा घर की बइराँ जेसी अइने बेठी पास। मो.वे.52)

बेठवा ने जाणो – मृतक के यहाँ पर जाकर मातम पुरसी करना।

बेठा ठाला – न. – बिना काम से बैठना, फालतू रहना, कुछ काम न करना।

बेठो करनो – उठा देना, बिठा देना, ऊँचा करना, खड़ा करना। (हाथ पकड़ ने बैठा कन्या गोड़ा नीचे से घेवर काड़्यो हो राज। मा.लो. 4)

बेंडपणा, बंडपणो – वि. – पगलापन, छिछोरापन।

बेडर – वि. – निर्भीक, डर रहित।

बेंडईग्यो, बेंडई गयी – वि. – पागल हो गया।

बेंड्या – वि. – पगले, पागल।

बेंडा, बेंडो – पु. – पगला, पागल, प्रेम भरा संबोधन।

बेंडा को मूत – वि. – एक मालवी गाली, पागल से उत्पन्न।

बेंडाणो – पगलाना, पागलपन। (साला पीवे ने बनेवी देखी ने बेंडाय। मा.लो. 519)

बेंडा राव – सं.ए.व. – हीड़ नामक गीत कथा का प्रमुख नायक, राण प्रदेश के राजा का नाम।

बेडी – स्त्री.– कड़ी, लोहे की गोलाकृति एक बन्धन, पाँव की कड़ी।

बेंडी राँड को – वि. – एक मालवी गाली, पगली स्त्री से उत्पन्न।

बेड़नो – भुट्टे आदि फल तोड़ना।

बेडुला – पु. – बेहड़ा नामक फल या उसका वृक्ष।

बेडोल – वि. – जिसके शरीर का डील डौल अनुपात में न हो।

बेड़ो – पानी भरी सिर पर कलश जोड़ी, नौका समूह।

बेढ़ब – वि. – बेढंगा, भद्दा।

बेढंगो – बिना ढंग का, भद्दा, अनुचित रूप से, बेतरह, बेढंगा।

बेंण – स्त्री. – नाली, गटर, मोरी।

बेणो – क्रि. – पानी का बहाव। पु. – कोठी का मुँह, चूल्हे के पीछे बनाया गया सामग्री रखने का स्थान, गोल मुँह, बैठना।

बेणोई – पु. – बहनोई।

बेंत – क्रि. – बेंतना, नापना, स्त्री. -एक किस्म की घास, पतली लकड़ी, एक प्रकार की विशेष घास जिसका फर्नीचर बनता है, छड़ी, बालिश्त, संतान। (बारा बेंत व्याणी गदड़ी। मो. वे.46)

बेंतर्‌यो – क्रि.– नाप ले रहा, नपती करना।

बेंताड़द्‌यो – क्रि. – नपवा दिया।

बेंताणो – क्रि. – नपवाना, नाप करवाना, कपड़े की नाप।

बेताब – वि. – व्याकुल, व्यग्र।

बेताल – पु. – भाट, नंदी जिसे ताल या सुर का ध्यान न हो, विक्रमादित्य द्वारा साधित बेताल।

बेतुको – जिसमें कोई तुक न हो, असंगत, बेढंगा, बेतुका।

बेतो – क्रि. – बहता पानी का बहाव।

बेथाल – वि. – बेडौल, बिना काम की, अनगढ़, कुरूप।

बेद – पु. – वैद्य, चिकित्सक, चार वेद। (बेदजी के लाया। मो.वे.56)

बेदम – वि. – मृतक, मृतप्राय, अधमरा, बोदा।

बेदम मारणो – क्रि.वि. – हड्डी तोड़ना, बुरी तरह मारना।

बेदाणा – स्त्री. – किशमिश।

बेंदी – स्त्री. – बिन्दी, टिकुली, टीका।

बेंदीली – स्त्री. – बिन्दी।

बेध – पु. – बाण।

बेधई गयो – क्रि. – बिंध गया।

बेधड़क – वि. – निडर, बिना डर के, निःशंक, बिना भय के, झिझक रहित, निर्भय, होकर, बेफिक्री से, निःसंकोच, धड़कन रहित, बिना संकोच के।

बेध लगणो – क्रि. – बाण लगना, सूर्य या चन्द्र ग्रह पर लगने वाला वेध।

बेन – स्त्री. – बहिन, भगिनी। (गेरी ने गेरी पावजो म्हारी बेन रसियो लिपटे नादान। मा. लो. 594)

बेन्याँबई – स्त्री. – बहिन, बाई, भगिनी।

बेनामो – पु. – बयनामा, विक्रय पत्र।

बेंनूली – स्त्री. – बहिन।

बेनो – क्रि. – बहना, प्रवाहित होना।

बेपड़दा – वि. – नग्न, खुला हुआ, घूँघट रहित, पर्दा रहित।

बेपर की – वि. – गप्प, बिना हाथ पैर की, तथ्यहीन, जिसके हाथ पैर न हो, निःसार।

बेपरवा – वि. – जिसे परवाह न हो, बेफिक्री निश्चिंत।

बेपार – क्रि. – व्यापार व्यवसाय, जिसका कोई पार न हो।

बेपारी – पु. – व्यापारी, व्यापार करने वाला।

बेफिकर – वि. – निश्चिंत, चिन्तारहित, जिसे कोई चिंता न हो, उदासीन।

बेबखत – वि. – बिना वक्त के, कुसमय, अवसर रहित।

बेबनाव – वि. – मनमुटाव, अनबन।

बेबाक – वि. – चुकाया गया ऋण, जिसके सिर ऋण न हो।

बेबूज – वि. – अज्ञानी, मूर्ख।

बेभोल – नशा, मदमस्त। (अइन्यो हे बेभोल में। मो.वे.37)

बेम – वि. – वहम, शक, शंका, संदेह।

बेमन – वि. – बिना मन के, बिना इच्छा के।

बेमाता – विधाता माता, बच्चे जन्म के छठे दिन विधाता माता बच्चों के भाग्य लिखती है ऐसी मान्यता है।

बेमानी – वि. – बेईमानी, जिसमें ईमान न हो।

बेयजी – ना. – समधी, ब्याईजी। (पेलाँ पेल बेयजी। मो.वे.78)

बेर – पु. – बोर, एक खट्टा मीठा फल। वि. – दुश्मनी, द्वेष, शत्रुता।

बेरई गयो – क्रि. – बिखर गया।

बेरंग – वि. – भदरंग, मजा किरकिरा होना।

बेरड़ी – स्त्री. – एक जाति, निर्लज्ज, नाचने और वेश्यावृत्ति करने वाली स्त्री।

बेरण – स्त्री. – बेरिन, दुश्मन।

बेराँ – स्त्री. – महिला, स्त्री, नारी।

बेराग – वैराग्य, बेसुरा, वैराग्य। (बिना बखत बेराग भेरवी। मो. वे.40)

बेरागी – पु. – एक जाति, जो राग द्वेष रहित हो।

बेरागण – स्त्री. – बेरागी की स्त्री, वैराग्य धारण की हुई स्त्री।

बेराँ आदमी – स्त्री. – पुरुष।

बेराँछती – स्त्री. – दिन रहते, सूर्यास्त से पूर्व, समय रहते।

बेराणा – क्रि. – बिखर गये, किसी वस्तु का बिखर जाना।

बेरानाँ – सं. – बहुत सी स्त्रियाँ।

बेरी – वि. – दुश्मन, शत्रु।
(बेरी की नजर पड़ी। मो.वे.38)

बेरुखी – वि. – उदासीन, बे मुरब्बत।

बेरूप्या – वि. – बहुरूपिया, मुखौटे धारण करने वाला, अनेक रूप धारण करने वाला, बहुरूपिया।

बेरो – वि. – बहरा, भेरा।

बेहाल – वि. – जिसकी हालत अच्छी न हो।

बैंया – भुजा।

बेल – स्त्री. – बिल्व का वृक्ष, बेल का वृक्ष, वृषभ, लता।
(बड़जे रे खाती का थारी बेल। मा.लो. 452)

बेलखण्यो – खोटे लक्षणों का प्रकट होना, बुरी आदतें होना, बुरे काम करना, समझ न होना, बुद्धि न होना।

बेलगाड़ी – स्त्री. – बेलों से चलने वाली गाड़ी, छकड़ा, दमणी।

बेलड़ी/बेलड़ा – स्त्री. – लता।

बेलण – पु. – रोटी बेलने का लकड़ी से बना उपकरण।

बेल बिन तुम्बा – लता के बिना फल कैसा ?

बेल बूँटा – स्त्री. – साड़ी आदि पर बेलबूटे की कारीगरी करना, कशीदा निकालना।

बेल भाँत – वि. – लता की भाँति, लता के समान, लता की सी छाप वाली वस्तु।

बेलाट – अवसर, समय, मौका।
(अणी बेला में कोई मत छींको। मो.वे.35)

बेला शक – क्रि.वि. – बिना सन्देह के बेधड़क।

बेलो – वि. – वंश वेल, वंशानुक्रम, रोटी बेलने का काम करो।

बेवई – स्त्री. – पैरों का फटना, बिनाई। पु. – व्याई, समधी, रिश्तेदार।

बेवची – स्त्री. – पैरों का फटना, बिवाई, एक प्रकार का चर्म रोग।

बेवड़ो – स्त्री. – पानी की दो घड़े जो सिर पर रखकर लाये जाते हैं।
(बाई कुंब कलस सिर बेवड़ो। (मा.लो. 453)

बेवा – वि. – विधवा स्त्री। क्रि. – बहने लगना।

बेवाण – पु.–समधन, विमान, आकाश-गामी रथ।

बेवार – क्रि. – व्यवहार, व्यवहार रखने वाला।

बेवाड़्यो – क्रि. – बिठाया, बहा दिया।

बेस – वि. – कपड़े का जोड़ा, वेशभूषा, कपड़े पहनने का ढंग।
(तीन बेस बेयजी म्हांरा सारू लावेगा। मो.वे.79)

बेसण, बेसन – पु. – चने की दाल का आटा।

बेस्या – स्त्री. – वेश्या, रण्डी।

बेसर – नथ की लड़ी।
(गेंदाजी वाँकड़ली मूछाँ में बेसर उलझे। मा.लो. 238)

बेसरम – वि. – बेशर्म, निर्लज्ज।

बेसाग – पु. – वैशाख मास।

बेसी – वि.फा. – अधिकता, अधिक।

बेसुध – वि. – जिसे सुधि न हो, अचेत।

बेसुमार – वि. – जिसकी कोई गिनती न हो सके, अगणित, असंख्य।

बेहड़ा – पु. – बेहड़े का पेड़ या फल, पानी भरे हुए दो मटके जो सिर पर उठाकर लाये जाते हैं, पानी का बेहड़ा।

बेहड़ा चोड़ – वि. – घोड़े - घोड़ी के सिर के ऊपर की भंवरी नामक एब।

बेहद – वि. – जिसकी कोई हद न हो, निस्सम, बहुत अधिक।

बेहयाई – स्त्री. – बेशर्मी , निर्लज्जता।

बेहोंस – वि. – मूर्छित, अचेत।

बोकड़ी – स्त्री. – बकरी।

बोकड़ो – पु. – बकरा। (हो काँकड मार्यो बोकड़ो पाँती पड़ी पचास। मा.लो. 541)

बोका – वि. – चुम्बन।

बोखरी – स्त्री. – अनाज सफाई की झाड़न, अरहर या गेहूँ के डंठलों से बनी झाडू।

बोखरो – पु. – खलिहान सफाई के लिये अरहर आदि की पतली डंडियाँ से बनी झाडू।

बोगस – वि. – व्यर्थ या निःसार वस्तु।

बोचा, बोचो – खुले या चौड़े मुँह का बर्तन।

बोची – स्त्री. – सिर और गर्दन के बीच, चेहरे के पीछे वाला दबा हुआ हिस्सा।

बोझ, बोझो – वि. – वजन, भार, बोझ।

बोजी – स्त्री. – पिता की बहिन, भौजी।

बोट – जलयान, नौका।

बोटनो – वि. – शिशुओं के दो दाँत निकल जाने पर सर्वप्रथम उसका अन्नाहार देने की लौकिक रस्म।

बोटी – स्त्री. – माँस का छोटा टुकड़ा।

बोठा – वि. – किसी शस्त्र की धार तेज न होना, गाँठ से हल्का होना।

बोंड – पु. – बीज कोष, बोंडी, स्तनाग्र।

बोड़की – स्त्री. – गंजे सिर की स्त्री।

बोड़्या खाजरू – वि. – बिना सींग का बकरा।

बोड़्या वईग्या – क्रि.वि. – गंजे हो गये।

बोड़ी – स्त्री. – गंजी। (माय बोड़ी ने बेटी झींतरी दोई को एक भरतार। मा. लो. 541)

बोड़ो – वि. – जिसके सिर के केश साफ कराये हुए हो, जिस पर वृक्ष हरियाली आदि न हों, पहाड़, साधु।

बोणी बट्टो – न. – प्रातः दुकान खोलने पर होने वाली पहली बिक्री, बोनी।

बोत – वि. – बहुत, अधिक, ज्यादा, पर्याप्त।

बोतल – स्त्री. – शीशा।

'बो'

बोथावे ज नी – क्रि. – वश में नहीं होता।

बोथाल्यो – क्रि. – वश में कर लिया, काम हाथ में ले लिया।

बोदर – वि. – छिलका, भूसा।

बोदा – वि. – कमजोर, का पुरुष। (तिड़कण लागा बोदा बाँस। मा. लो. 737)

बोदो – वि. – अबोध, मूर्ख, गावदी, सुस्त, कमजोर, अशक्त, जो पक्का या कड़ा न हो, कापुरुष।

बोध – वि. – उपदेश, ज्ञान, समझ।

बोना – वि. – जिसकी ऊँचाई कम हो, क्रि.– खेत में उपजाने के लिये बीज बोने की क्रिया या भाव।

बोनी – महाजन द्वारा व्यापार करते समय नगद धन लेकर सर्वप्रथम सामग्री का विक्रय करना, बोनी करना, बोना।

बोनो – वि. – जिसकी ऊँचाई कम हो, बौना, क्रि. – बोने का कार्य करना।

बोपचा, बोपची – सं. – मोटी एवं भद्दी रोटी।

बोफो – वि. – मूर्ख, गँवार, भद्दा।

बोबड़्यो – हकलाने वाला।

बोबल्याँ – सं. – स्तन द्वय।

बोबा, बोबो – सं. – स्तन, थन, पयोधर।

बोवा – क्रि. – बोने, बुवाई करने।

बोबा चूँखे – क्रि. – स्तन पान करे।

बोबा मसके – क्रि. – स्तन मर्दन करे।

बोमका, बोमकी – स्त्री. – मिट्टी की बनी हुई छोटी कोठी।

बोया – पु. – सनई के पौधे जिनके रेशे निकाले जा चुके हों।

बोया फूटे – वि. – एक मालवी गाली, बोया सुलगाकर मृतक को अग्नि दी जाती है।

बोर – सं. – बेर, स्त्रियों के सिर का आभूषण।

बोरा – सं. – थैला या थैली, बोहरा नामक एक जाति।

‘बो’

बोराणो – क्रि. – पागल हुआ, मदान्ध हुआ।

बोरायो – वि. – पागल हुआ, मदांध हुआ।

बोरी – स्त्री. – थैली, थैला।

बोरो – पु. – थैला, बोहरा जाति का मनुष्य। (बनड़ो भी रंग में ने बनड़ी भी रंग में तो बोराजी पड़ गया फंद में। मा.लो. 387)

बोल – पु. – बाणी, बोली, संवाद, लोक नाट्य के संवाद, कटुवचन।

बोलणो – क्रि. – बोलना, बातचीत करना।

बोल मार्‌यो – क्रि.वि. – ताना दिया, व्यंग्य कसा, कठोर वाक्य कहा।

बोलस्याँ – क्रि. – बोलेंगे।

बोला चाली – स्त्री. – कहासुनी, कथोपकथन, विवाद।

बोलारो – न. – किसी के बोलने की दूरी से सुनाई देने वाली आवाज, चहल पहल।

बोली – स्त्री. – बोली, अलिखित भाषा, उपभाषा।

बोली लगई – क्रि. – निलामी पर चढ़ाया।

बोले बोल – क्रि.वि. – अप्रिय वचन बोलना।

बोलो – क्रि. – बात करो।

बोवणी – क्रि. – बोने का काम, बोने का समय, बीज वपन का काम।

बोवाई चलीरी – क्रि. – बीज वपन।

बोवाड़ द्यो – क्रि. – वपन करवा दिया, बुवा दिया।

बोहरो – पु. – बोहरा जाति का मनुष्य, एक जाति।

ब्याणी – जनना, जन्म देना, जनी। (बारा बेंत ब्याणी गदड़ी। मो. वे.46)

ब्याज – ब्याज बट्टा करना, ब्याज पर पैसे देना और ब्याज लेना, धन से धन कमाना।

ब्याव – विवाह, शादी, ब्याह।

‘भ’

भ – प वर्ग का अक्षर।

भई – पु.– भाई, भ्राता, वि.-भा गई, मन को अच्छी लगी।

भईड़ा – पु.ब.व.– भाई लोग।

भई बंध – कुटुम्ब, परिवार, भाई-बन्धु। (भाईबंध यारा अँई से बँइसे झाँके ताल्याँ दई दई ने। मो.वे. 38)

भक – वि.– खाने की इच्छा, लालच।

भक-भक – क्रि.वि.– आग भभकना।

भक चढ़ानो – क्रि.– बलि देना, चढ़ाना।

भक्क – वि.– इच्छा, लालच।

भकस्या – पु.– भिक्षा, भीख।

भकाट – वि.– भूखा रहने से सिमटा हुआ जानवरों का पेट।

भख – वि.– इच्छा, लालच।

भग – क्रि.– भागना।

भंग – स्त्री.– भाँग, पु.-तोड़–फोड़, तरंग, टुकड़ा, खण्ड।

भगई लायो – क्रि.– भगाकर लाया, दौड़ाकर लाया।

भग्गू – वि.– टूटा हुआ, भागने वाला, भगौड़ा।

भंगेड़ी – वि.– भाँग पीने का आदी।

भगत – पु.– भक्त।

भगतण – स्त्री.– भक्तिन।

भगताँ रा बीडू – पु.– भक्तों के मित्र या सहायक, ईश्वर।

भगताँ – पु.ब.व.– भक्तगण।

भगती – स्त्री.– भक्ति, श्रद्धा।

भगदड़ – क्रि.वि.– भाग-दौड़, बहुत-से लोगों का एक साथ इधर-उधर भाग दौड़ करना।

भगदड़ मचीगी – क्रि.वि.– भागा-दौड़ी मच गई, भगदड़ होना।

भगंदर – वि.– एक रोग।

भगनो – क्रि.– भागना, दौड़ना।

भगवान – पु.–ईश्वर।

भगमा – वि.– भगवा, गेरुआ।

भगमा झंडो – पु.– भगवा ध्वज।

भंगार – वि.– टूटे-फूटे बर्तन या गहने आदि।

भगीरत – पु.– अयोध्या के सूर्यवंशी राजा जो तपस्या से गंगा को पृथ्वी पर लाये थे, भगीरथ।

भगोड़ो – पु.– वह जो अपना काम, पद या कर्त्तव्य छोड़कर किसी डर से दूसरी जगह चला गया हो, काम छोड़कर भागने वाला, दण्ड के भय से कहीं भाग गया हो ऐसा व्यक्ति।

भगोनी – स्त्री.– दाल सब्जी बनाने का छोटा पात्र।

भगोनो – पु.– दाल सब्जी बनाने का बड़ा पात्र।

भगोरो नाच – क्रि.– आदिवासियों का भगोरा नामक नृत्य।

भचीड़णो – क्रि.–जोर से पटकना, पछाड़ना, धक्का देना, प्रहार करना।
(भींत में भचेड़ा खाय। मो.वे.54)

भजका – वि.– रोज का, प्रतिदिन का।

भजणो – क्रि.– आराधना करना, ईश्वर को भजना।

भजन – पु.– भजना, जप या कीर्तन करना, ईश्वर के गीत गाना।

भंजन – क्रि.– तोड़ना, तोड़ - फोड़।

भज्जा, भज्या – पु.– पकौड़े, भजिये।

भजनानंदी – पु.–ईश्वर भजन में मगन रहने वाला व्यक्ति।

भजागल – वि. – भद्दी औरत, कुरूप स्त्री, एक गाली।

भटकणो – क्रि.– भटकना, व्यर्थ घूमना।

भट्ट – पु.– ब्राह्मणों के लिये उपाधि या आदरसूचक सम्बोधन, भाट, योद्धा, सूरा।

भट्टा – पु.– बेंगन या भटा नामक सब्जी, ईंट पकाने का भट्टा।

भटियारा – पु.– रसोइया, हलवाई।

भट्टी – स्त्री. – ईंटों आदि से बना वह बड़ा चूल्हा जिस पर कारीगर रसोई पकाते हैं, देशी शराब या गुड़ बनाने की भट्टी।

'भ'

भटीका – क्रि. – भ्रमित होना, जोर की आवाज होना।

भटूमरा मार – क्रि.वि.– लड़ाई झगड़ा, मारपीट टकना।

भटूरा, भटूर्या – पु.– उबली हुई ज्वार या गेहूँ से बना खाद्य पदार्थ, भुट्टे से निकाली गई कुछ गीली मक्का की घाट या राबड़ी।

भड़ – वृक्ष का तना, शाखा, डाली, भड़भड़ाने की आवाज।

भड़कणो – क्रि.वि.– भड़कना, विरुद्ध करना, चमकाना।

भड़का बोली – कठोर शब्द बोलने वाली, सच बोलने वाली, खरी सुनाने वाली, कटु बोलने वाली, झगड़ालू, कटुभाषिणी, मुँहफट, बिना नमक-मिर्च लगाए बात करने वाली।

भड़की – स्त्री.– धधकी, बड़ी लपट।

भड़कीलो – वि.– तड़क-भड़क या चमक- दमक वाला।

भड़भड़ाणो – क्रि.वि.– दरवाजा या अन्य किसी वस्तु को जोर-जोर से पीटना या भड़भड़ाना, खटखटाना।

भुड़भूँजो, भड़भुँज्यो – भाड़ में अनाज भूँजने वाला।

भड़वो – पु.– वैश्याओं का दलाल,भड़वा।

भड़ाक – वि.– जोर से भड़ की आवाज।

भड़ाभड़ – क्रि.वि.– आघात से होने वाला भड़ भड़ शब्द, धड़ाधड़, फटाफट
(पील्यो खाय रे भड़ाभड़ पान,

भड़ाम – गिरने की आवाज।)

भंडाणो – बदनाम करना।

भंडार – पु.– कोषागार, भण्डार गृह।

भंडारो – पु.– साधु सन्तों को दिया जाने वाला भोज।

भड़की पाड़ना – क्रि.वि.– मुँह पर चपत लगाना, मुँह पर कहना, तड़ से मारना।

भड़ीतो – पु.– आग में फल को पकाकर उसमें

मसाले डालकर बनाया हुआ भुरता।

भंडो फूटणो – भेद खुलना।

भण – क्रि.– पढ़।

भणक लागणी – क्रि.वि.– कान में भनक लगना, थोड़ी सी जानकारी मिलनी।

भणई – सब्जी तरकारी बनाने का मिट्टी का कढ़ाईनुमा पात्र।

भणनो – क्रि.– पढ़ना।

भणभणानो – क्रि.वि.–भिनभिनाना,गुनगुनाना

भतीजो – न.– भतीजा, भाई का लड़का, भ्रातृज।

भत्त – पु.– पत्थर गिरने का शब्द।

भत्तो – पु.– भत्ता, गुजारे की रकम।

भद – वि.– बुरा, बुरी।

भद्दो – वि.– भद्दा, कुरूप।

भद वईगी – स्त्री.– बुरी हो गई, इज्जत बिगड़ गई।

भन्नाटो – वि.– चक्कर आना, गोफन द्वारा फेंके गये पत्थर या वायुयान या मधुमक्खियों की आवाज।

भपकणो – क्रि.– लालटेन या गैस आदि का भपकना, जलती हुई लालटेन का हवा से एकदम बुझ जाना।

भपकी गयो – क्रि.– भपक गया, भाप का एकदम निकलना।

भपको – पु.– भपका, अधिक प्रकाश देने वाली वस्तु, वि. – भड़कीला, दिखावा, बनावटीपन, तड़क-भड़क, नखरा, मशाल।

भफई गयो, भफग्यो – वि.– गर्मी से पसीने पसीने हो गया, बफा गया, भाप से घबरा गया, उमस हो आई।

भबकणो – क्रि.– भड़कना, शीघ्र जल उठना, जोर से जल उठना।

भबूको – पानी का एकदम फूट पड़ना।

भभूत – भभूती, भस्म, राख, धूनी की राख, भस्मी।

भंमई दिया – वि.– टेढ़ा तिरछा कर दिया।

भमणो – भ्रमण करना, घूमना, फिरते रहना, चलते रहना।
(सयर को भमणो बडो हरामी। मा. लो. 437)

भम्मर – पु.– सिर का आभूषण।

भमरी – ना. – ततैया, भवरी, टाँटीयो, एक खिलौना, चकरी।
(तो जणे कोई भँवरी का जाला में हात लाक्यो। मो. वे. 50)

भमतल – वि.– निस्तार की भूमि, निचली भूमि।

भमर्‍यो – क्रि.– घूम रहा, डोल रहा, वि.– ठेढ़ा तिरछा हो रहा।

भमर लुभाया – क्रि. वि.– जीव मोहित हुआ।

भमरी – स्त्री.– भ्रमरी, भँवरी।

भमे – क्रि.– घूमे, डोले, भ्रमण करे, टेढ़ा होना।

भमेड़ई दूँ – क्रि.– नुचवा दूँ, कटवा दूँ।

भंभोड़नो – झकझोर देना, झकझोरना।

भमीग्यो, भमी गयो – वि.– टेढ़ा मेढा हो गया।

भय – पु.– आपत्ति, डर।

भयानक – वि.– भयंकर, डरावना।

भर – न. – भरना, वजन, भार, बोझा, पूर्ण होने या भर जाने की स्थिति।

भरड़ ग्यो – न.– भर जाना, पानी आदि का एक जगह भर जाना, इकट्ठा होना, लबालब होना।
(आखो कुवो भरई गयो। मो.वे. 84)

भरणी – स्त्री.– नाग देवता की स्तुति, लोकमंत्र, एक तक्षक का नाम, फल मिलना।

भरणो – क्रि.– भरना, पूरा करना, भुगतान, चुकारा, ठूँसना।

भरतार – पु.– पति, स्वामी, भरण पोषण करने वाला, भर्ता, मालिक।
(वऊ जोड़ा रा भरतार जस जीतो। मा.लो. 453)।

भरतरी – पु.– राजा भर्तृहरि।

भरती – वि.– भुरता, आग में भटा आदि फलों को पकाकर मिर्च मसाले के साथ तैयार किया गया भुरता, आग में भुनी हुई सब्जी।

भरत्यो – पु.– भरत नामक धातु का लोटा, भरत नामक धातु का लोटेनुमा पात्र, जिसमें दाल सब्जी बनाई जाती है।

भरत्या भाँत – क्रि. वि.– बेपेंदे का लोटा, लुढ़कने वाला लोटा, अपनी बात पर कायम न रहने वाला, इधर- उधर लुढ़कने वाला।

भरत्यो लोटो – पु.– भरत नामक धातु का बना लोटा।

भरद्यो – क्रि.– भर दिया, पूर्ण कर दिया।

भरनो – न. – ऋण चुकाना, अदा करना, क्षतिपूर्ति, भरना, पूरा करना।

भरपूर – वि.– पूरी तरह भरा हुआ, पूरा का पूरा, सम्पूर्ण पर्याप्त।

भरम गिन्यान – वि.– ब्रह्म ज्ञान।

भरम – पु.– भ्रम।

भरमाँ – क्रि.वि.– भटे, आलू आदि सब्जियों के भीतर मसाले भरकर सब्जी बनाना, भरा हुआ, जो भीतर से रिक्त न हो।

भर्या – पानी या रंग आदि किसी वस्तु का एक जगह भरा जाना, इकट्ठा होना, भरा हुआ, संग्रह किया हुआ, भरा पात्र। (रंग का ओ रणुबाई भर्या ओ कचोला। मा.लो. 583)

भर्‌यो पूर्‌यो – क्रि. वि.– भरा-पूरा, भरपूर।

भरागी – स्त्री.– घुस गई, भर गई।

भरा गयो, भराग्या – क्रि.– प्रविष्ट हो गया, घुस गया, भर गया।

भराणी – क्रि.स्त्री.– घुसी। (पछवाड़ा से चोर भराणा। मो.वे. 38)

भराव – पु. – भरने का काम या भाव, भराकर तैयार किया हुआ अंश, भरत।

भरी करी – स्त्री.– बुरा किया, अच्छा नहीं किया।

भरी नींद – गहरी निद्रा, सोने की गहरी अवस्था, सोना, शयन करना। (भरी नींद में तिरिया चमकी। मा. लो. 652)

'भ'

भरो वई जागा – वि.– बुरा हो जायेगा।

भरोसो – पु.– आशा, उम्मेद, आश्रय, (सहारा, अविलम्ब, दृढ़ विश्वास। मती जाव रे भरोसो दई ने। मा. लो. 528)

भल – पु.– भाला, वि. भला।

भलई – वि.– अच्छाई, सज्जनता।

भलक्या – वि.– चमके, चमक गये।

भलका – पु.हि.– फल, फदार, हथियार, चमकदार नोक वाला अस्त्र, भाला।

भलके – वि.– चमके, झलकना, झलकी देना, डोलना। (म्हारी नथ झलके। मा.लो. 598)

भलक मारे – क्रि.वि.– झलकी देवे।

भलकूद्यो – वि.– उछल कूद करने वाला, नट, विदूषक।

भलतो – वि.– बिना काम का, ऐरागेरा। (पण थोड़ी देर काल जणे भलता कने लागीग्यो। (मो.वे. 54)

भलमन्सात – वि.– भले मन वाला, भला करने वाला।

भलापणो – भलाई, अच्छाई, सज्जनता।

भला पधार्‌यो – भले आये, अच्छे आये।

भलीका, भलीको – वि.– उजेला, प्रकाश चमक।

भलेई – वि.– खैर, चाहे।

भलो – वि.– अच्छा, भला।

भलो कीदो – क्रि.वि.– भला किया, अच्छा किया, उत्तम किया।

भलो चंगो – क्रि.वि.– स्वस्थ और सशक्त, कुशल, अच्छा, खैर।

भलो बुरो – वि.– अच्छा या खराब, जैसा है वैसा, अच्छा-बुरा, टीका-टिप्पणी।

भलो होय – क्रि.वि.– भला होवे, भला होने का आशीष।

‘भ’

भवरस – क्रि.वि.– संसार रूपी रस राग।

भँवर आगे गोरड़ी – पति के सामने पत्नी, भाई के आगे बहिन, परिवार में पुत्र हो तभी परिवार अच्छा लगता है।
(भँवर आगे गोरडी, परवार आगे पुत्र सोवे वीर आगे बेनड़ी। (मा.लो. 460)

भँवर गफा – पु. - एक आध्यात्मिक गुफा।

भँवरपटा – सिर पर रखड़ी या बोर पर पट्टेदार गोट।
(भँवरपटा में कोयल बोली रा भँवर गेंदा जी। (मा.लो. 566)

भँवरी – स्त्री.– भ्रमरी, पु. - भ्रमर।

भँवरो – पु.– भ्रमर, बच्चों का खिलौना, चकरी भमरा।
(फूलड़ा वटाल्या भंवरा वाग का हे। मा.लो. 636)

भँवरा सरीखो – पु.– भ्रमर सदृश वि. रस लोलुप।

भविस – पु.– भविष्य, भावी, आने वाला समय।
(भविस टरे नही टाटी। मा.लो. 696)

भसम होणो – क्रि.वि.– भस्म होना, नष्ट होना , जलना।

भसर कुट्टो – वि.– बकवास करने वाला, वाचाल।

भस्ट्या खाय – क्रि.वि.– भ्रष्ट वस्तु को रखने वाला, औघड़।

भसम – वि. – भस्मी, राख।

भसमासुर – पु.– एक राक्षस जिसे महादेव ने किसी के भी सिर पर हाथ रखने से भस्म कर दिये जाने का वर दिया था, एक असुर, पेटू के लिये व्यंगोक्ति, सबको जलाने की शक्ति रखने वाला।

भसवाड़्यो – क्रि.– बहस करने वाला, बकने वाला।

भसूल्ड़ो – वि.– सूअर।

भसूँदो – वि.– दुर्गन्धयुक्त वस्तु या व्यक्ति।

भसाभस – क्रि.वि.– बहस, वादविवाद, बोलचाल, लड़ाई झगड़ा।

‘भा’

भाईचारो – पु.– प्रेमभाव, भातृभाव, अपनत्व।

भाई दूज – स्त्री.– भैया दूज।

भाई बंद – पु.– भाई बन्धु, कुटुम्बीजन।

भाऊ – पु.– भाई, भ्राता, बन्धु।

भाकड़ी/बाकड़ी – स्त्री. वि.– दूध न देने वाली गाय या भैंस।

भाकरी की चाकरी – पेट के लिये सेवा।

भाखरा – वि.– उबले हुए अनाज के दाने।

भाखा – क्रि.– कहा, बोला।

भाग – पु.–भाग्य, किस्मत, माथा, ललाट, सौभाग्य, भाग देना, हिस्सा।

भाँग – स्त्री.– भंग, बूटी।

भाँग छबीली – क्रि.वि.– मन में विविध छबियाँ पैदा करने वाली भंग की तरंग।

भाँगनो – क्रि.अं.– तोड़ना।

भागनो, भागणो – क्रि.– भागना।

भाँगड़ली – स्त्री.– भंग के सम्बन्ध में गाये जाने वाले लोकगीत।

भाँग मरूड़े – क्रि.वि.– मानव की नस-नस में जोश की लहर उत्पन्न करने वाली भंग।

भागरो – गली का दरवाजा, बाँस या बल्ली का बनाया हुआ आढ़िया, जालीदार आड़, जंगला।

भागवत – पु.– भागवतपुराण, हरि का भक्त, ईश्वर का कीर्तन करने वाला।

भागवत–धरम – क्रि.वि.– प्रभु के सगुण रूप की भक्ति से मोक्ष प्राप्त होता है – ऐसा मानने वालों का पंथ।

भाग फूटी गया – क्रि.वि.– तकदीर फूट गये, किस्मत फूट गई, तकदीर रूठ गई।

भागन्त – क्रि.– भागते हुए।

भाग्य – पु.– प्रारब्ध, देव।

भाँग्या – क्रि.– तोड़े।

भाँग्या जइरी – स्त्री.– दौड़ते जाना, भागते जाना, भागते रहना।

भाँग्या से – क्रि. – तोड़ने से, भागने से।

भागवंत – क्रि.– भाग्यशाली, भाग्यवान।

भागवान – वि. – भाग्यवान, भाग्यशाली, धनाढ्य, नसीबदार, पत्नी, स्त्री, आँख। (भागवान छोरी तमारी। मो.वे. 79)

भागीग्यो – न. – भाग गया, चला गया, डरपोक, कायर, भीरू।

भागीरथ – पु.– वह भागीरथ जिसने पृथ्वी का गंगावतरण करवाया था।

भागीरथी – स्त्री.– गंगाजी, गंगा नदी।

भागीरी – स्त्री.– भाग रही, दौड़ रही।

भाग्य – प्रारब्ध, नसीब।

भाँजगड़ – वि. – वाद-विवाद, लड़ाई-झगड़ा, तकरार, रगड़ा करना, झमेला, मामला, असंमजस।

भाँजगड़ करनो – क्रि.वि.– वाद-विवाद करना, झिकझिक करना, खीजना।

भाँजिया – क्रि.वि.– तोड़ डाला।

भाजी – स्त्री.– सब्जी, साग, तरकारी।

भाजी पालो – स्त्री.– साग-सब्जी, पत्तीदार सब्जी।

भाजी राँदी – क्रि.वि.– सब्जी पकाई।

भाट – पु.– पूर्वजों का यशोगान करने वाली जाति, भाट ठाकुर। वह जाति जो जातियों की वंशावली गाने व सुनाने का धंधा करती है। जातियों में प्रायःअपने-अपने अलग भाट होते हैं, भट्ट।
(पोंथी तो पानाँ रे भाट जी लई रे लिया। (मा.लो. 677)।

भाटनी – सं.– भाट, चारण, बंदीगण, राजा महाराजाओं की कीर्ति का वर्णन करने वाला व्यक्ति, खुशामदी।

भाटा – सं.– पत्थर, शिला।

भाटा से कुच्या – क्रि.वि.– पत्थर से कुचला।

भाटा की मूरत – स्त्री.– पत्थर की मूर्ति, प्रस्तर प्रतिमा।

भाटी – स्त्री– भट्टी, एक गोत्र।

भाटो – पु.– पत्थर, भाटा।
(भाटो फेंकी माथो मॉंडो ईमें की को दोस। मो.वे. 32)

'भा'

भाटो वाई देगा – क्रि.वि.– पत्थर फेंक देगा, पत्थर की मार देगा।

भाड़ – पु.– भट्टी, भाड़ा, चने, ज्वार, मक्का आदि भूनने की भड़भूँजे की भट्टी।

भाँड – पु.– खेल–तमाशे बतलाने वाली एक जाति।

भाड़खऊ – वि.– वेश्या का दलाल, दलाली करने वाला, बिचवान, मध्यस्थ।

भाँड सरीखो – पु.वि.– भाँड जैसा चिल्लाने वाला व्यक्ति।

भाड़ा चिट्ठी – स्त्री.– किरायेदार से लिखवाया गया भाड़ा–पत्र, इकरारनामा।

भाँडा फोड़ – क्रि.वि.– किसी षडयन्त्र को उजागर करना, गुप्त बात का भाँडा फोड़ करना, कलाई खोलना, स्पष्ट करना।

भाड़ा भीड़ – क्रि. वि.– अकारण लोगों का समूह इकट्ठा होना या करना।

भाँडी – स्त्री.– पीतल का पात्र, दूध-दही रखने का गोल व चौड़ा मुँह का पात्र।

भाड़ेती – पु.– किरायेदार, भाड़े पर रहने वाला।

भाड़ो – पु.– किराया, भाड़ा।
(भाड़ो खइने बेठीग्या। मो.वे. 40)

भाँडो – पु.– पीतल का बड़ा पात्र, भाण्ड।

भाड़ो तोड़ो – क्रि.वि.– किराया ठहराना, किराया लेना।

भाणा – सं.– बड़ी थाली या परात।

भाणा भरना – क्रि.वि.– मृत, श्राद्ध का एक प्रकार, लौकिक रस्म।

भाणेज, भाण – पु.– बहिन का पुत्र, भानजा।
(बेन भाणेज नी नोतिया। मा.लो. 681)

भाणो – पु.– बड़ी थाली, परात या ऊँची किनारों वाला बड़ा थाल।

भात – पु.– चावल, भानजा-भानजी के विवाह अवसर पर मामा की ओर से मायरा (मायेरा) करना या भरना,

भात करना, चाँवल, चोखा।
(नईभण्या भाणेजाँरा भात मा. लो. 681)

भाँत – वि.– किस्म, प्रकार, फर्क करना, डिजाईन।
(पाँच बदारवा म्हारे आवीया मारुजी पाँचाँ री नवी-नवी भाँत । मो.लो. 482)

भाँत भाँत का – क्रि.वि.– भाँति–भाँति के, नाना प्रकार के, भिन्न-भिन्न प्रकार के।

भाँतपाड़ी – फर्क किया, पंक्ति भेद किया, दुर्भाव रखा।

भादर – पु.– बहादुर, वीर, साहस, शूरवीर।

भादरी – स्त्री.– बहादुरी, वीरता, साहसी।

भादवो – पु.– भादों मास, भाद्रपद।

भान – ख्याल, विचार, ज्ञान, आभास, कल्पित विचार, स्मरण, चेतना, सुधि, होश, समझ, बुद्धि।

भानमती – स्त्री.– जादूगरनी, हाथ की सफाई, वर्णसंकर, औलाद उत्पन्न करने वाली स्त्री।

भाप – पु.– वाष्प।

भापड़ाये – पु.– बेचारे ने।

भापड़ो – पु.– बेचारा, सीधा-साधा।

भापण – पु.– भौंह।

भापण मारे – आँख लड़ावे, इशारा करे।

भाँप्यो – वि.– भाँप गया, समझ गया।

भाबज – स्त्री.– भौजाई, भाबी।

भाबरो भूत – वि.– अस्त–व्यस्त या गन्दा रहने वाला व्यक्ति, धूल धूसरित।

भाबी – स्त्री.– भौजाई, भाबज, भौजी, भाबी, भाई की पत्नी।

भाँबी – न. – जुलाहा, भाँबी एक जाति जो सरकार की ओर से बेगारीपने का काम करता है, हलेती बुनने का काम।

भाँभण – पु.– ब्राह्मण, जुलाहा स्त्री।

भाभोसा – पिताजी के लिये प्रयुक्त किया जाने वाला सम्मानसूचक शब्द।

भामरो – पु.– छिपकली, बसमरा।

भाय – पु.– भाई, भ्राता, बन्धु।
(म्हारी भँवर भायली भाँगाँ गेरी पावो में। मा.लो. 594)

भायलो – पु.ए.व.– मित्र, बन्धु, सखा।
(म्हारा भायला। मा.लो. 569)

भाया, भायो – पु.– भाई के लिये सम्बोधन, मालवा में पुत्र या उम्र में छोटे व्यक्ति के लिये प्यार भरा सम्बोधन।

भायो – वि.– अच्छा लगा।
(म्हारे मन भायो।)

भार – पु.– वजन, बोझ।

भारगत – तराजू से पहली तौल पर एक न कहते हुए भारगत कहते हैं।

भारकस्यो – क्रि.– बोझ से लदा हुआ, भार युक्त।

भारत – हिन्दुस्तान।

भारती – स्त्री.– सरस्वती, वाणी।

भारी – वि.– वजनी, लकड़ी की गठरी, वजनदार।
(तोकना में भारी। मो.वे. 51)

भारी पड़े – क्रि.वि.– ताकतवर, वजनी।

भारेली – स्त्री.– भारयुक्त, वजनी।

भारेलो – वि.– वजनी, वजनदार, भार से लदा हुआ।

भारो – वि.– घास लकड़ी या बाँस का गट्ठड़ या गठरी, पुलिन्दा, पुट्ठल।

भाल – पु.– मस्तक, टोह, भाग्य, काम की इच्छा, मतलब की बात।

भाल्यो – पु.– भेद देने वाला।

भाल दी – क्रि.– सुराग दिया, जानकारी दी, जिम्मेदारी सौंप दी।

भाल लागी – क्रि.– सुराग लगा, जानकारी मिली, भेद मिला।

भाला बरदार – पु.– बरछा लेकर चलने या बरछा चलाने वाला।

भाला भलकाती – स्त्री.– भाला चमकाती, बर्छी चमकाती।

'भा'

भाला की अणियाँ – स्त्री.– बरछी की नोक, भाला की नोक पर।

भालू – पु.– रींछ, रींछड़ो।

भालेराव – पु.सं.– गीति कथा हीड़ का एक प्रमुख पात्र।

भालो – पु.– बरछा, भाला, साँग।

भाव – वि.– मोल–भाव करना, मोल भाव करना, दाम, दर, भक्ति, भावना, स्वभाव।

भावज, भाबजबई – स्त्री.– भौजाई, भौजी, भाबी, भाई की पत्नी।

भावड़ – वि.–इच्छा, दोहद कामना, गर्भवती की इच्छा, मन की साध।

भावणो – भोजन करने की रुचि होना, भूख लगना, अच्छा लगना, पसंद आना, खाने की इच्छा, रुचिकर होना।
(मेलो रे मोतीलालजी की थाल मोत्यो लाडू भावेगा। मा.लो. 436)

भाव भगती – स्त्री.– भक्ति भाव से ईश्वर की आराधना करना।

भाँग – भंग, बूटी।
(बगिया में भाँग घोटावे रघुवीर। मा.लो. 687)

भाँगड़ली – भंग, भाँग, विजया।
(भाँगड़ली रा तार में ए बेन लोट्यो भूली जावद माय। मा.लो. 594)

भाँड – दामाद की उपाधि, दामाद के लिये हल्का शब्द, विवाह में गाया जाता है।
(तम जागो हो पन्नालालजी हो भाँड के वाणोल्या भले उगीयो। मा. लो. 286)

भाँवर – वि.– दूल्हा-दुल्हन का अग्नि कुण्ड के सात फेरे या चक्कर लगाने की क्रिया।

भावी – स्त्री.– होनी, होनहार।

भावीरी – वि.– अच्छी लग रही, पसन्द आ रही।

भावे – वि.–अच्छी लगे, मन को भावे।

'भि'

भिकमंगो – पु.– भिखारी, भिक्षुक।

भिकस्या – स्त्री. –भीख में मिलने वाला अनाज आदि वस्तुएँ, धार्मिक दान

भिकस्या पातर – पु.– भिक्षा लेने का पात्र, झोली या कमण्डल आदि।

भिकारी – पु.– भिक्षुक, भिखारी।
(मूरख राजा राज करत हे पंडित होय भिकारी। मो.लो. 696)

भिंगीऱ्या, भिंगीऱ्यो – पु.– भीग रहा, गीले हो रहे।

भिंजणो – क्रि.– भीगना, गीले होना।

भिंजाणो – क्रि.– भिगोना, गलाना।

भिट्टी की दी – क्रि.– सींगों से मारा, सिर की टक्कर दी।

भिड़णो – क्रि.– टकराना, टक्कर खाना, लड़ाई के लिये मुकाबला करना।

भिड़ीऱ्या, भिड़ीऱ्यो – क्रि.– भिड़ रहे, हाथापाई पर आ गये।

भिड़ी हुई – क्रि.– बन्द, लगी हुई।

भिड़ूँ – वि.– भिड़ने या टक्कर, भिडू-साथी, दोस्त, मित्र।

भिन्डा – पु. – जंगली, सब्जी, भिंडी।

भिश्ती – पानी छिकने वाला।

भी

भीक – वि.– भीख, भिक्षा।

भींग्या – पु.– भीग गये, गीले हो गये।

भींचनो – क्रि.– दबना, दबोचना, मुट्ठी बंद करना।
(अन्तरवा से मुखड़ो भींचे। मो. वे.35)

भींचाभींच – सकड़ाई।
(एक खटोली दोई जणां प्यारे सजना, सजना हुई रई भींचाभींच मा.लो.145)

भीड़द्या – क्रि.– लाद दिया, वजन रख दिया, घोड़े या ऊँट आदि तैयार करना, बंद करना।

भींजणो – क्रि.– भीगना, गीला होना, आर्द्र होना, पानी में तरबतर होना, पानी में भींगना।

(काली पीली बादली म्हारो लेर्यो भींजोयो जी। मा.लो.618)

भीड़ वईगी – स्त्री.– जनसमूह एकत्र हो गया।

भीडू – भीडू, सहयोगी, सहयोग, खेल (रम्मत) का साथी, खेल में अपने समूह का साथी, सहायक, मददगार, संकट में काम आने वाला, मित्र। (थारी काकी बाई ने भीडू बुलावो रे लाड़ी दोड़लो नी छूटे। (मा.लो. 455)

भीड़ो – क्रि.– वजन लादो, भार कसो।

भींत – स्त्री.– दीवार। (तोड़ो वेवईजी की भींत। मा. लो. 495)

भीम – लोकगीतों में पुत्र के लिये सम्बोधन, पाण्डुपुत्र, युधिष्ठिर का छोटा भाई, शिव, विष्णु, भयानक, विकराल, मोटा, कदावर। (अबीश लालजी रा भीम लखीणी लाड़ी लई गया जी। मा.लो. 426)

भील – भील जाति। (भीलनी का बोर सुदामा का तादूल। मा.लो. 689)

भीमसेन – पु.– पाँचों पाण्डवों में से एक जो बहुत बलवान थे, भीम।

भु

भुई रींगणी – स्त्री.– ऊँट कटारी, एक लता जिसका फल औषधि के काम आता है।

भुक्कड़ – वि.– भुक्खड़।

भुँकणो – क्रि.– भोंकना।

भुज – पु.– भुजा, हाथ।

भुजंग – पु.– बड़ा सर्प।

भुजबंद – पु.– भुजा का आभूषण।

भुजाली – स्त्री.– भुजा में छिपा अस्त्र, एक छोटी कटार जैसा अस्त्र।

भुँजाव्या – क्रि. – भुँजे हुए, भुने हुए।

भुट्टा – पु.– मक्का के हरे भुट्टे, गीले भुट्टे, बेंगन की सब्जी।

भुनभुन – क्रि.वि.–मक्खियों का भिनभिनाना

भुनसारो – पु.– प्रातःकाल का समय।

भुरता सरीखो – वि.– भुरते जैसा, भुँजा हुआ सा, झुलसा हुआ सा।

भुरकस – पु.– किसी वस्तु का वह रूप जो उसे खूब कुचलने या कूटने से प्राप्त होता है।

भुरकणो – क्रि.– बुरबुराना, ऊपर से छींटना।

भुरमाणो – भ्रमित करना, भुलावा देना। (सासूजी रा बाई भुरमाया हो पीयुजी आया सासरे जी। मा.लो. 516)

भुरकी – ना. – जादू, मोहिनी मंत्र, वशीकरण, मंत्रित भस्मी।

भुराली – स्त्री.–उत्तेजित, पगली, क्रोधित।

भुलक्कड़ – वि.– भूल जाने वाला।

भूलनो – क्रि. – भूलना, याद न रहना।

भुवन – सृष्टि।

भुआ – स्त्री.– बुआजी, पिता की बहिन।

भू

भूक – न. – भूख, क्षुधा, तीव्र इच्छा, कमी, अभिलाषा, आवश्यकता, दरिद्रता। (भूका-प्यासा छोरा-छोरी। मो. वे. 45)

भूचाल – पु. – भूकम्प, पृथ्वी का हिलना।

भूँजणो – क्रि.– भूँजना, आग में दबाकर भूनना।

भूँडणो – बुरा, अशोभन।

भूणो कुंवर – पु.– गीत कथा, हीड़ का एक पात्र, जिन्हें मालवा के अधिकांश क्षेत्र में अवतार मानकर पूजा जाता है।

भूत – पु.– राक्षस, भूतकाल।

भूतनाथ – पु.– भगवान् शिव, महादेव।

भूतजगन – पु.– पंच महायज्ञों में से एक जिसमें बलि- विश्व दैव आदि कृत्य किये जाते हैं।

भूता दावण – वि.–भूतों की फौज, जिसके अ नेक बच्चे हों और जो साल संभाल से रहित हो।

भूपत – पु.– राजा, भूपति।

भूत भडंग – भूत के समान, गंदा और भयावना, उन्मत्त। (भूत भडींगो।)

भूताऱ्यो – तेज आँधी का चक्रवात।

भूँभट, भूँभट्ट – वि.– नष्ट करना, समाप्त करना, खर्च कर डालना।

भूँभल – वि.– गर्म-गर्म राख, ऐसी राख या भस्मी का ढेर, जिसके अन्दर अग्नि के कण तप्त एवं जलते हुए हों ।

भूम – स्त्री.– भूमि, पृथ्वी, जमीन।

भूमका – स्त्री. भूमि, स्थल, जगह, पृथ्वी, जन्मभूमि, मातृभूमि।

भूमकी, भूमको – स्त्री.– मिट्टी की बनी कोठी या पेवला, छोटी कोठी, बच्चों के पेट के लिये विशेषण।

भूम्याँदेव, भूम्याँमराज – पु.– लोक देवता, भूमि देव।

भूमर – वि.–गर्म-गर्म राख, तप्तराख या भस्मी।

भूरसी, दक्षिणा, भूरसी दखणा – स्त्री.– वह दक्षिणा जो मंगलकार्य या भोजन करने के बाद उपस्थित ब्राह्मणों को दी जाती है।

भूऱ्यो – वि.– भूरे रंग का।

भूरीभट्ट, भूरोभट्ट – वि.– भूरे रंग का।

भूरी भें – स्त्री.– भूरी भैंस, महिषी।

भूरो कोळो – वि.– भूरा कद्दू, काशीफल, जिसका रंग भूरा हो।

भूलणो – भूलना, चूक जाना, भूल करना, विस्मृत हो जाना, भूल करना, इठलाना, भ्रम में पड़ना, गलती करना, खो देना, ध्यान न रखना। (यो तो दूजो म्हारो भुलणो सुबाव गोरी म्हारी ये। मा.लो. 447)

भूल वेणी – क्रि.वि.– भूल होना।

भूल्यो – पथ भ्रष्ट, मार्ग भूला हुआ, भूल जाना, भटक जाना, भ्रम में पड़ जाना, गुम हो जाना।

भूँगड़ा – सीके हुए चने, भुने हुए चने।

भूँदणो – न. – ग्राम सूअर। (भूँदणी का बारे। मो.वे. 34)

भूँसाँदो – वि.– गन्दगीप्रिय, रहनेवाला।

भूसो – पु.– कचरा-कुटा, छिलका, जौ आदि का भूसा, वि. – बकबक करने वाला।

भे

भेकरा करे – क्रि.वि.– जोर-जोर से रोवे।

भेजा, भेजो – पु.– मस्तक, दिमाग।

भेंट – स्त्री.– मुलाकात, उपहार, नजराना।

भेदणो – पु.– भेदना, बेधना, छेदना।

भेदू – पु.– भेदिया, भेद देने वाला, छिद्र बनाने वाला।

भेद्यो – क्रि.– भेद दिया, गिराया, ढहाया।

भेन – स्त्री.– बहिन, भगिनी, बेन्याँ बई।

भेर – वि.– बहरापन, मिलाना।

भेरी, भेरो – स्त्री. – जिसको कान से सुनाई न देता हो ऐसी स्त्री या पुरुष, सम्मिलित।

भेरू, भेरूजी – पु. – एक लोक देवता, भीषण शब्द वाला, भयानक, विकट, शिव का रूप।

भेरवी – स्त्री.– एक लोकदेवी, नाथपंथी सम्प्रदाय के अन्तर्गत तांत्रिक क्रियाओं की जानकार भैरवी या आराधिका चामुण्डा, सबेरे गाई जाने वाली एक रागिनी, तांत्रिकों का वह मण्डल जो देवी की पूजा के लिये एकत्र होता है या बनाया जाता है।

भेल – वि.– मिश्रण।

भेला – वि.– इकट्ठा, समूह।

भेली – स्त्री.– गुड़ की भेली, पिंड।

भेंऽ – स्त्री.– भैंस, महिषी, रोना।

भेंस – स्त्री.– भैंस या महिषी।

भेंसा – पु.– भैंसा, पाड़ा।

भेंसा कलाली – स्त्री.– लोकदेवी, लोकगीतों में प्रसिद्ध मातृ शक्तिपीठ, यह स्थान सारंगपुर के पास भैंसवा गाँव में मिलता है।

भेंसासुर – पु.– महिषासुर, भैंसासुर, जिसका दुर्गा देवी ने वध किया था।

भेंसो – पु.– भैंसा, पाड़ा।

भो – पु.सं.– भव, संसार, उत्पत्ति, जन्म, भय, डर।

भों – वि.– कुत्ते की या भोंपू की आवाज या ध्वनि।

भोंकणो – क्रि. – घुसेड़ना, नुकीली चीज जोर से दे मारना, कुत्ते का भोंकना।

भोग – क्रि.– भोगना, व्यवहार में लाना, भोजन, खाद्य, ईश्वर को नैवेद्य लगाना। (भांग कुबजा को। मा.लो. 696)

भोग्यो – पु.– भोगा, उपयोग किया, भुगता।

भोगी – पु.– संसार के भोगों को भागने वाला, भुगतने वाला इन्द्रियों का सुख भोगने या चाहने वाला।

भोगीर्‌या, भोगीर्‌यो – पु.ब.व.– भुगत रहे, भोग रहे।

भोंचक – वि.– हक्का-बक्का, चकित।

भोज – पु.–दावत, धार का प्रसिद्ध राजा भोज।

भोजई – भाभी, भाई की पत्नी, भोजी, भोजाई। (सगी भोजई नी लागी पगे। मा. लो. 684)

भोजन – पु.– खाद्य पदार्थ।

भोजन भट्ट – भोजन करने या बनाने में पटु।

भोज पत्तर – पु.– एक प्रकार का वृक्ष जिसकी छाल, ग्रन्थ आदि लिखने के काम आती थी।

भोजाई – स्त्री.– भाई की पत्नी, भाभी।

भोजायाँ होण – स्त्री.ब.व.–भौजाइयाँ।

भोडर – पु.– अभ्रक, अबरक।

भोत – वि.– बहुत, काफी। (हल्दी गाँठ गठीली हल्दी भोत रंगीली। मा.लो. 372)

भोतरो – वि.– जिसकी धार तेज न हो ऐसा अस्त्र, बोठा।

भोतसी – वि.– बहुत-सी।

भोती – वि.– बहुत ही।

भोथो – वि.– बाथ में भरो, जिम्मेदारी लो, अपने वश में करो।

भोदर – वि.– किसी अनाज या दलहन आदि का आवरण या छिलका।

भोंदू – वि.–भोलाभाला,मूर्ख, नासमझ, बुद्धिहीन।

भोन – पु.– भुवन, मकान, जगह।

भोपड़ो – पु.– भोपा, भरापूरा, परिपूर्ण, खूब। (नानो आम्बो भोपड़्यो अरे हो समदन केरी लटालूम। मा.लो. 162)

भोपा, भोपो – पु.– देवनारायण के पण्डे–पुजारी, मालवा में बसने वाली भोपा नामक जाति जो बगड़ावत गूजरों की खानदान में उत्पन्न अवतारी पुरुष देवनारायण की यशोगाथा का गायन करते हैं।

भोपाल – पु.– मध्यप्रदेश की राजधानी।

भोपाल ताल – पु.– भोपाल स्थित तालाब, जिसके समान पूरे देश में कोई तालाब नहीं है, इस तालाब पर एक उक्ति – ताल तो भोपाल कू और सब तलैया–गड़ तो चित्तौड़ कूँ और सब गड़ेया।

भोंपू – पु.– फूँककर बजाया जाने वाला एक प्रकार का बाजा, कारखाने की सीटी।

भोबई – स्त्री.–भुवाजी, पिता की बहिन, भुआ।

भोबरो, भोभरो – पु.– सिर, माथा, मस्तक।

भोभरो फोड़ दूँवाँ – क्रि.– सिर फोड़ डालूँगा।

भोमका – स्त्री.– जन्मस्थल, कर्म स्थान, भूमि, पृथ्वी, जमीन, धरती, बीमका।

भोमण – पु. -भँवर, कुँए पर घूमने वाला भँवर जिस पर नाड़ी चलती है।

भोम्याँ मराज – पु. -भूमि देवता, भूमि देव, भू देव, लोक देवता।

भोमरा, भोमरो – पु.ब.व.– भ्रमर, खिलौना।

भोयाँ – पु.ब.व.– भोई नामक जाति जो देवी के सामने नृत्य गीत प्रस्तुत करती है एवं नवरात्र के पश्चात् उसके नाम की

जोत (खप्पर में प्रज्ज्वलित अग्नि) को अपने नंगे हाथ पर उठाकर देवी वेश में चलती है, इसके दूसरे हाथ में खड्ग धारण करवाया जाता है।

भोर – पु.– प्रातःकाल, सवेरा।

भोरंग – वि.– संसार का एक रंग।

भोरा – वि.– भोला-भाला, भोला। (साला आपरा भोरा ओजी नणदोई सा।)

भोरी – स्त्री.– भोली, सरल चित्तवाली।

भो रींगणी – स्त्री.– एक काँटेदार छोटा पीले रंग के भटे का सा फल, काँटेदार फल, भटे के आकार का एक पीला फल।

भोरो – वि.– भोला।

भोरो-भोरी – वि.– भोला-भोली।

भोंरो – पु.– भ्रमर, भँवरा-चकरी नामक खिलौना, भँवरा।

भोला – वि.– नासमझ, सरल चित्त।

भोला अमली – वि.– शिव शंकर, सदाशिव शंकर, जो भंग का अमल करते हैं। (म्हारा भोला अमली। मा.लो. 687)

भोली घोड़ी – स्त्री.– हीड गीत कथा में पोरस्या की माया (अखूट भण्डार) के अन्तर्गत भोजाजी राय को प्राप्त एक दिव्य घोड़ी का नाम।

भोलो–भालो – क्रि.वि.– भोला–भाला, सरल। (ना भूरी भाभी भोली। मो.वे. 40)

भोसड़ा को – वि.– एक मालवी गाली।

भोसड़ो – स्त्री.– स्त्री जनेन्द्रिय।

भोश्या चोदी को – स्त्री.– एक मालवी गाली।

भोसी – स्त्री.– जनेन्द्रिय।

भोसी को – वि.– एक मालवी गाली।

म – प वर्ग का वर्ण।

मँइ – सर्व.– मैं।

मु, मूँ, म्हूँ, म्हें – सर्व. – मैं।

म्हाँ – सर्व.– हम सब।

म्हाँने – सर्व.– हमने।

मूँ तो – सर्व. – मैं तो।

म्हाँसूँ, म्हाँसो – सर्व.– हमसे।

मूँ कूँ – सर्व.– मैं कहूँ।

म्हाँरी – सर्व.– हमारी।

मइड़ो – छाछ। (मइड़ो लियो मण चार। मा.लो. 694)

मईग्यो – क्रि. – समा गया, प्रविष्ट हो गया।

मईन्यो – सं.– महीना।

मईनो – सं.– महीना।

मक्या – सं.– मक्का के भुट्टे।

मक्कड़ माता – सं.– मक्का माता।

मक्की – स्त्री.– मक्का अनाज।

मकबरो – पु.– वह इमारत जिसमें किसी की कब्र हो, मजार।

मकरध्वज – पु. – कामदेव, मदन।

मकर सँकराँत – पु.– मकर का सूर्य, मकर संक्रांति पर्व।

मकान – पु.– घर, गृह, भवन।

मक्का का दाणा – पु.– मक्का के दाने।

मक्का की धाणी – स्त्री.– मक्का की धाणी या फूली।

मकाना – पु.– मखाना, एक सूखा मेवा।

मकोड़ा – पु.ब.व.– छोटा चार पाँव वाला कीट।

मकनो हाती – बड़ा और मस्त हाथी, बिना दाँतों वाला हाथी, बहुत छोटे दाँतों वाला हाथी, मकुना, बिना मूँछों वाला मनुष्य। (मकनो सो हाती ऊपर अम्बा वाडी। मा.लो. 577)

मकरोवणो – बेसन या आटे को थोड़ा-थोड़ा पानी छींटकर दानेदार बनाना या मसूरी पाड़ना।

मकोलो – भुट्टे का डूँडिया।

मखमल – स्त्री.– रेशमी वस्त्र।

मग – पु.– रास्ता, मार्ग।

मगज – पु.– बादाम, दीमाग, भेज। (मगज मत चाट।)

मगजी – स्त्री.– कपड़े की गोट, किनारी, पट्टी। (साँपरी मगजी लगई दे सिपई रे। मा.लो. 562)

मँगत – वि.– भिखारी, भिक्षुक, माँगने वाला।

मँगतो – वि.– भिखमंगा, भिक्षुक।

मगद – पु.– बादाम।

मँगनी – स्त्री.– सगाई, काम चलाऊ चीज।

मगरमच्छ – पु.– मगर नामक प्राणी।

मगरी – स्त्री.– मगर की मादा, घर के मध्य ऊँची दीवार पर लगाई जाने वाली, आड़ी लकड़ी, पहाड़ी।

मगरे रो – क्रि.– मरुभूमि में रहो।

मगरो – वि.– ऊँची जगह, पहाड़ी स्थान।

मंगलसुत्तर – पु.– किसी देवता के प्रसाद के रूप में कलाई पर बाँधा जाने वाला डोरा, धागा, विवाहित मालवी स्त्रियों द्वारा गले में पहना जाने वाला सौभाग्यसूचक चिह्न, सूत्र।

मगरूर – वि.– घमण्डी, किसी बात की परवाह न करने वाला।

मगसर – सं.– मार्गशीर्ष।

मँगायो – क्रि. – मँगवाया।

मँगाव – क्रि. – मँगवाओ, बुलाओ, किसी चीज को मँगवाने की क्रिया या भाव।

मचकणो – हिलना-डुलना, झुकना, बोझ से दबना। (नाचण हाले डोले मचकई मचकोड़े। (मा.लो. 492)

मचकावणो – जल्दी-जल्दी खाना, प्रहार करना, मारना-पीटना। (छींके बेठी दई मचकावे। मा. लो.158)

मचका – पु.– झूले लेना, पेंग बढ़ाना।

मचको – पु.– झोंका, धक्का, झूले की पेंग।

मचकोड़नो – मरोड़ना, पराजित करना, हराना, नष्ट करना, मारना। (नाचण हाले डोले मचकई मचकोड़े। मा.लो. 492)

मचकोड़े – क्रि.– जोर–जोर से झूले लेना या झूले की पेंग बढ़ाना।

मचके चोड़ – क्रि.वि. – बैलों द्वारा जोर लगाकर गाड़ी को ऊँचाई पर चढ़ा ले जाना

मचावी – क्रि.– मचाई।

मचिया – स्त्री.– छोटी चारपाई या बालकों का पलना।

मचीत – पूरी, सारी, खचाखच, लबालब। (वीरा ओ थारी बाळद भरी रे मचीत। मा.लो. 364)

मचोरो – झूला देना।

मच्छ – स्त्री.– मछली, मगरमच्छ।

मच्छ्याँ – स्त्री.ब.व.– मछलियाँ।

मच्छर – पु. – दँशवाला कीटाणु।

मच्छरदानी – स्त्री.– मसहरी, मच्छरों को उलझाने वाला वस्त्र विशेष।

मचड़का – वि.– जोर लगाना, हिलना।

मचलना – क्रि.– हठ करना, अड़ना।

मचली – क्रि. स्त्री. – मचल गई, रुठ गई, अड़ गई, बच्चों का पलना, खटिया, जिद की।

मछला बोलनो – व्यंगपूर्ण बोलना या बेमन से बोलना। (सुसराजी मछला बोले। मा. लो.100)

मछन्दरनाथ – पु.– गोरखपंथी अवधूत गुरु मत्स्येन्द्रनाथ।

मछलाँदी – गन्दी रहने वाली, दुर्गन्धमय, मछली जैसी गन्ध वाली। (दोड़ो म्हारी मछलाँदी नार। मा. लो. 495)

मँछेरी – स्त्री.– मसहरी।

मँजन – पु.– दाँत साफ करने का चूर्ण। क्रि. – माँजना या साफ करना।

मजबान – पु.– मेहमान, अतिथि।

मजबूत – पु.– दृढ़, पक्का, टिकाऊ, कड़ा, कठोर।

मजबूर – वि.– विवश, लाचार।

मजबूरी – वि.– विवशता, लाचारी।

मजदार – स्त्री.– नदी की धारा के मध्य।

मजमो – पु.– जमावड़ा, भीड़ भाड़।

मजमून – पु.– आलेख का नमूना।

मंजल – पु.– पड़ाव, मंजिल, लक्ष्य, मुकाम।

मंजला – पु.– मकान या जहाज का तला।

मजाक – वि.– हँसी ठ्ठा।

मजाल – स्त्री. अ. – सामर्थ्य, शक्ति, बिसात।

मजादार – आनन्ददायक, स्वादिष्ट, मजा, प्रसन्नता।
(चीरा तो तम पेरलो बना पेचाँ मजादार। मा.लो. 270)

मजिस्ट्रेट – पु.– न्यायाधीश।

मजीरा – पु.– ताल देने के लिये काँसे की छोटी कटोरियों की जोड़ी।

मंजुल – वि.– सुन्दर, उत्तम, शोभा।

मजूरी – स्त्री.– मजदूरी।

मजेदार – वि.– सुन्दर, आनन्द देने वाला।

मजेमें – आनन्द में।

मजा – वि.– आनन्द, मजा।

मज्जा – वि.– मज्जा, अस्थिसार, गूदा।

मजो चखानो – क्रि.वि.– मजा बतलाना, खबर लेना।

मजो बतानो – क्रि.वि.– सीख देना।

मजो – पु.– पतंग या गुड़ी उड़ाने का धागा विशेष जो गोंद या पीसे काँच में सूतकर तैयार किया जाता है, आनन्द।

मझ – पु.– मध्य, बीच।
(बनाजी थें तो चड़चाल्या मझ आदी रात। मा.लो. 391)

मझदार – पु.– बीच धारा में, अधबीच।

मटकन – वि.– अर्थहीन, शब्द समूह, मटकना।

मटकनो, मटकणो – क्रि.–फुँदी देना, कूल्हे मटकाना।

मटकी, मटुकी – छोटी मटकी, मिट्टी की छोटी हंडिया।

मटको – पु.– मिट्टी का बना बड़ा मटका, मटकने या नाचने का उपक्रम।

मटन – पु.– माँस।

मटामट – क्रि.वि.– मुँह से खाते समय ध्वनि निकलना।

मटी – स्त्री.– मिट्टी, देह।

मटी गयो – क्रि.– मिट गया, समाप्त हो गया।

मठ – पु.– मठ, साधुओं का वास।

मट्ठड़ – वि.– बुद्धिहीन जिसकी बुद्धि कुण्ठित हो गई हो, ऐसी दलहन जो पानी में गल न पाये।

मट्ठो – स्त्री.– बिना मक्खन निकाले दही की छाछ, वि. - मंदा।

मठाधीश – पु. - मठधारी, मठ का स्वामी, बड़ा गुसाई।

मड़ – मठ, छोटा घर, किला, दुर्ग, झोपड़ा।
(खेल खेल वे महाकाली माँय कुमार्यां का मड़ माय। मा.लो. 663)

मंडन – क्रि.– माँडना। पु. – समर्थन, पुष्टि, पक्ष में रहना।

मण्डप – पु.– किसी उत्सव या मंगलकार्य के लिये घासफूस, कपड़े आदि से छाकर बनाया हुआ स्थान, मंच, देव मन्दिर के ऊपर की गोल बनावट और उसके नीचे का स्थान।

मड़्या हुआ – क्रि.– जड़ा हुआ, फ्रेम किया हुआ।

मँडरानो – अ.क्रि.– चारों ओर से छाना या घेर लेना, चक्कर लगाना।

मंडल – वि.– घेरा, वृत्त, परिधि।

मंडली – स्त्री.– समूह, समाज, किसी विशेष कार्य, प्रदर्शन व्यवसाय आदि के लिये बनाया हुआ कुछ लोगों का संगठित दल।

मंडान – पु.– मंडान, मंडना, किसी कार्य को करने की प्रारम्भ तैयारी होना।

मंडाद्यो – क्रि.– लिखवा दिया।

मड़ी – स्त्री.– झोपड़ी।

मड़ी दे – क्रि.– मढ़ देवे, जड़ देवे।

मड़ी माता-मरीमाता – स्त्री.– बड़ी माता, मरी माता, एक लोक देवी जो मृत्यु का चक्कर चलाती है ऐसा माना जाता है। मालवा में स्वतन्त्रता पूर्व जब औषधालयों का अभाव था, बड़ी संख्या में लोग मरते थे, एक ज्वर जिसको लोग मड़ी कहते थे। उसी को देवी, मड़ी माता या मरी माता कहा जाने लगा था। (इंदौर तथा उज्जैन में मरीमाता मन्दिर है।)

मड़ीलो, मड़ेलो – पु.– चक्की, चाकी या घट्टी को घुमाने के लिये लगाया गया लकड़ी का हत्ता या हाथ में पकड़ने का डण्डा।

मढ़ – क्रि.– चारों ओर लगाना या लपेटना, बाजे के मुँह पर चमड़ा लगाना, पुस्तक पर जिल्द मढ़ना या मण्डित करना, चित्र की चौखट मढ़ना, किसी के सिर, काम या दोष मढ़ना, ढकना, लगाना। (झालर रा जाया सोना से मड़ई दूँ थारी सींगड़ी। मा.लो.671)

मण – वि.– पुराना 40 सेर का नाम, मणि (कीड़ी चाली सासरे नो मण काजल सार। मा.लो. 542)

मणका, मणकी – स्त्री.– माला के दाने, मनका।

मणधर – पु.– मणि को धारण करने वाला सर्प।

मणपूर चक्कर – पु.– हठयोग में शरीर के अन्दर के छः चक्रों में से एक जो नाभि के पास माना जाता है।

मण्यार, मणेर – पु.– चूड़ी वाला, मणियार, जौहरी, मणिकार।

मणि – वि.– हीरा, मणि या रत्न।

मंतर – पु.– गुप्त रखने योग्य रहस्य की बात, गुप्त परामर्श, वेद के वे वाक्य जिनके द्वारा यज्ञ आदि करने का विधान है, वे शब्द या वाक्य जिनका इष्ट सिद्धि या किसी देवता की प्रसन्नता के लिये जप किया जाता है, वे शब्द जिनसे झाड़-फूँक किया जाता है, मन्त्र, गूढ़ रहस्य, गुर, वेद ऋचा।

मत – पु.– सम्मति, आशय, अभिमत।

मंतरणो – क्रि.– मंत्रोच्चार।

मंतरी – स्त्री.– सचिव।

मतदाता – पु.– मत देने वाला।

मत बढ़जे – क्रि.वि.– बढ़ना नहीं, ऊपर नहीं उठना।

मत मारजे – क्रि.वि.– मारना नहीं, पीटना नहीं।

मतलब – पु.– तात्पर्य, आशय, अर्थ, स्वार्थ।

मतलबी – वि.– स्वार्थी, कपटी।

मतली – स्त्री.– कै, उल्टी, वमन, जी घबराना।

मतवाली – स्त्री.वि.– मदमस्त, सैद्धान्तिक, ताकतवर, मोटी और सशक्त, मदांध।

मति – स्त्री.– बुद्धि, विचार।

मती दीजो – क्रि.वि.– मत देना, देना नहीं।

मतो – पु.– मत, सम्मति, परामर्श।

मत्थो – पु.– माथा, मस्तक, सिर।

मथणो – क्रि.– मथानी या लकड़ी आदि से तरल पदार्थ तेजी से चलाना, मंथन करना।

मंथण – क्रि – मंथन करना, मथना, बिलौना, छानबीन करना।

मथाणी, मथनी – स्त्री.– दही मथने के लिये काठ का बना एक प्रकार का डण्डा, रवई, बिलोनी।

मथारो – सबसे ऊपर का सिरा।

मंद – वि.– धीमे, मंद, सुस्त, आलसी, मूर्ख, धुँधला।

मद्दा सुरम – वि.– धीमा, मंदा।

मद्दी – वि.– सस्ती, बाजार भाव में मंदी आना।

मद्दो – वि.– मंदा, धीमा।

मदत, मदद – स्त्री.– सहायता पहुँचाना, हाथ बँटाना।

मददगार – पु.– सहायक।

मदन – पु.– कामदेव।

मंदर – पु.– मन्दिर, देवस्थान, पूजा स्थल, घर।

मदरसो – पु.– पाठशाला, स्कूल, शाला, विद्यालय।

मदवा – मद भरे, नशा, प्रमाद, उन्माद, गर्व, हर्ष, आनन्द, कामुकता। (कठे आपने सोला सूरज उगा मदवा मारुजी। मा.लो. 524)

मंदी – स्त्री.वि.–मंद, कम मूल्य का, सस्ता, भाव में गिरावट।

मंदोदरी – स्त्री.– रावण की पटरानी।

मध – वि.– मध्य, बीच।

मध्यम – पु.– मध्यम, बीच का, संगीत का म सुर, रजोगुण, वि. - साधारण।

मधु – पु.– शहद, वसन्त ऋतु।

मन – पु.– मन, जी।

मनई – स्त्री.– मना करना, इच्छा, विचार, मनाही।

मनकामना – वि.– मनोकामना, मन की इच्छा।

मन का मालिक – वि.– मन का स्वामी, स्वयं के मन का अधिपति।

मनख – पु.– मनुष्य, आदमी।

मनचलो – वि.– मनचला।

मनचायो – वि.– मनोवांछित।

मन्नत – स्त्री.– किसी याचना की पूर्ति के लिये मानी हुई किसी देवता की पूजा, मानता, मनौती।

मन मन में – क्रि.वि.– मन ही मन में, मन के अन्दर, अन्दर ही अन्दर, भीतर ही भीतर, स्वयं के मन में।

मन चींत्यो – मन में सोचा या विचारा हुआ

मनजाण्यो – वि. – मन की मर्जी के अनुसार। इच्छानुसार।

मनड़ारी वात – क्रि.वि.– मन की बातें, मन की बात।

मन तुरंग – वि.– मनरूपी अश्व।

मन नी भावे – क्रि.वि.– मन को अच्छा न लगे, मन विरुद्ध।

मन बेहलाव – क्रि.वि.– मन को बहलाना या फुसलाना, मन लगाना।

मन बेहले – क्रि.वि.– मनोरंजन हो, दिल बहल जावे।

मन भायो – वि.– जो मन को भावे या अच्छा लगे, प्यारा।

मन भाविनी – स्त्री.– मन को अच्छी लगने वाली, मन को भाने वाली, मनपसन्द।

मन भाती – स्त्री.– मन को अच्छा लगती, मनपसन्द।

मनमानी – मनवांछित, इच्छानुसार।

मनमान्यो – वि.– मनमानी, जो कुछ मन में आवे वही करना।

मनमारनो – इच्छाओं को दबाना, विवश होना, मन मारना।

मनमाई – स्त्री.– मन में, मन के अन्दर।

मन मोइनी – स्त्री.– मन को मोहित करने वाली, मन भाविनी।

मनमोजी – वि. - स्वच्छंद, स्वेच्छाचारी, तरंगी।

मन मोदक – पु.– मन में सोची हुई सुखद पर असम्भव बात, मन के लड्डू, कल्पित बात को लेकर मन को प्रसन्न रखने की चेष्टा।

मन रले – मन को अच्छा लगना, भला लगना, आच्छादित होना, हर्ष होना। (मोलावे लाड़ लड़ी रा काकासा के काकीसा रो मन रले (हरसे)।)

मनवार – मनुहार, मनाना, स्वागत, खुशामद, अनुनय, आग्रह, अनुरोध। (पानाजी मीठा बोलो तो थाँ पे रीजारा मनवाराँ मानी लीजो। मा.लो. 513)।

नशा – स्त्री.– इच्छा, आशय, मतलब।

मनसबदार – पु.– वह जो किसी मनसबपर हो, ओहदेदार, मुगल शासनकाल का एक पद।

मनसूबो – वि.– विचार, इरादा।

मनवार – वि.– मनुहार, मनाना, स्वागत।

मनाने – क्रि.– रूठे हुए को प्रसन्न करना।

मनावणा – न.ब.व.– रूठे हुए को राजी करना, मनाना, मनुहार करवाना, खुशामद करवाना।
(एक घड़ी मनावणा सानी में समझावणा।)

मनियार – वि.– मनियारी का काम करने वाला, मणियाँ या चूड़ियाँ बेचने वाला।

मनी जागा – क्रि.– मन जावेगा, मना लिया जाएगा, प्रसन्न कर लिया जाएगा।

मनी मन – क्रि.वि.–मन ही मन में , मन के अन्दर।

मनु – पु.– ब्रह्मा के 14 पुत्र जो मनुष्यों के मूल पुरुष माने जाते हैं।

मनुरी – बड़े मन से, दिल से।
(घणी ओ मनुरी सायबा घाट रंगायो। (मा.लो. 475)

मनुस – पु.– मनुष्य, आदमी।

मनेज नी – क्रि.वि.–मानता ही नहीं , प्रसन्न ही नहीं होता।

मनोबल – स्त्री.– रुठे हुए को मनाने की क्रिया या भाव, मन की शक्ति, मन की सामर्थ्य या ताकत।

मनोवर – वि.– सुन्दर, मनोहर।

मपई गयो – क्रि.– नप गया, नाप लिया गया।

मपती – स्त्री.– नपती, नाप।

मपीग्यो, मपीगयो – क्रि.– नप गया, नाप दिया गया, नाप लिया, नपवाया।

ममणो – मिट्टी का घड़ा, मटका।

मय्यत – वि.– मरा हुआ, मुर्दा।

मयन्याँ – पु.– महीने, माह।

मर – वि.– मरना, मरा हुआ, मृतक।

मर आगी – स्त्री.– मरती क्यों नहीं, मर जा।

मरकणो – वि.– मारने वाला पशु।

मरखप्या – मर खप जाना, मर खप गए, कभी के मर गए, पराजित हो गए, रण में मारे गए, युद्ध में मारा जाना, काम में लगे रहे।
(रावण सरका मरखप्या सो पिया परनारी को संग। मा.लो. 549)

मरघट – पु.– श्मशान, मसान, मसाण।

मरज – वि.– मर्ज, दुःख, तकलीफ, व्याधि।

मरजादा – वि.–मर्यादा, मान, सीमा, प्रतिष्ठा।

मरजी – स्त्री.– मर्जी, इच्छा, पसन्दगी।

मरजीवा, मरजीवो – वि.– नाशवान, क्षणभंगुर, नश्वर।

मरण – क्रि.– मरना, मृत्यु, मौत।

मरणतोल – वि.– शरीर छोड़ने की तैयारी में हो ऐसा मरणशील, मरने वाला, मरणासन।
(ने मरणतोल वइगी उणीज् घड़ी। मो.वे. 54)

मरणो – क्रि. –मरना, कुम्हलाना, लय होना, मृत्यु, आसक्त होना, कुम्हलाना।

मरद – पु.- मर्द, युवा, पति।
(वीर, मरद मुछारा। मो.वे. 38)

मरदमी – वि.– मर्दानगी, बहादुरी।

मरदाँ – पु.ब.व. – मर्द, पुरुष, स्वयं के लिये गर्वोक्ति।

मरदानगी – स्त्री. फा.– पौरुष, वीरता, शूरता।

मरदाँ का छोगा – क्रि.वि.– मर्दो के बालों की लटें।

मरदानी – स्त्री. वि.– पुरुष की सी, मर्दों जैसी, साहस।

मरदसरीखो – वि.– मर्द जैसा, मर्द के समान।

मरदुम सुमारी – पु.– जनगणना करना।

मरदानो खेल – क्रि.– पुरुषोचित्त क्रीड़ा।

मरन होग्यो – क्रि.– मरने जैसी स्थिति हो गई, मरण हो गया।

मरम – पु.– मर्म, भेद, रहस्य, गुप्त शक्ति, मर्मस्थल, हृदय, मलहम।

मऱ्याँ – स्त्री.– काली मिर्च, मरने से।

मऱ्यो – क्रि.– मरा हुआ, मरा।

मरवो – पु.– एक पौधा जिसकी गन्ध से सर्प आदि सरीसृप घर में प्रविष्ट नहीं होते, मरवा-मोगरा।

मराड़्या – वि.– ज्वार के भुट्टों से अन्न निकल जाने के बाद उसका अवशिष्ट निःसार भाग जो पशुओं को खिलाने के काम आता है। पशु आहार।

मराठो – पु.– मराठा जाति का मनुष्य।

मराठी – स्त्री – मराठी भाषा, महाराष्ट्र की बोली या भाषा।

मरायगो कई – क्रि.वि.– मरवाएगा क्या?

मरावणी को – वि.– एक मालवी गाली।

मरी – स्त्री.– मर गयी, मली, मेल, हनुमान् आदि देवता पर चढ़ाए जानेवाले सिन्दूर, चाँदी वर्क आदि के सूखकर गिर जानेवाला चोला।

मरु – पु.– मरुभूमि, मारवाड़ देश।

मरेठी – महाराष्ट्र, महाराष्ट्री, महाराष्ट्रीयन औरतें, महाराष्ट्र की रहने वाली। (गेंदाजी मरेठी लुगायाँ कामणगारी। मा.लो. 566)

मरोड़ – न.– गर्व, घमण्ड, ऐंठ, बल, अदा,वँट,मरोड़ना,शत्रुता,विरोध। (तमारी कोरी हो बड़ाई दुलीचंदजी मरोड़ घणी। मा.लो. 433)

मरोड़नो – मोड़ना, मरोड़ना, बल डालना, तोड़ना, नष्ट करना, मूँछों पर ताव देना, ऐंठन, उमेठ देना। (चड़ो अणी घोडी ने बाग मरोड़ी मा.लो. 378)

मरोड़ी – क्रि.– मोड़ दिया, घुमा दिया।

मरोड़ी मूँछ – क्रि.वि.– मूछों पर ताव दिया, मूछें मरोड़ी गईं।

मरोड़ो – पु. - मरोड़ने की क्रिया या भाव, ऐंठन, पेटदर्द, दस्त आने के पूर्व पेट में होने वाला दर्द।

मल – वि.– पाखाना, मैला।

मलई – स्त्री.– देर तक गर्म किये दूध के ऊपर जमा हुआ सार भाग, सार तत्त्व, मलाई मिलाना।

मलक – वि.– बहुत–सा, अधिक ज्यादा, काफी।

मलक्की – वि.– बहुत-सी, काफी, अधिक।

मलका – स्त्री.– महारानी।

मलखम – पु.– मालखंभ, व्यायाम करने का खंब।

मलणो – मिलना।

मलगी – स्त्री.– मिल गई, प्राप्त हो गई।

मलग्यो – क्रि.– मिल गया, प्राप्त हो गया।

मलगोऱ्यो – वि.– मनमौजी, निश्चिन्त, बेफिक्र।

मल्डद्यो, मल्डीद्यो – क्रि.– मरोड़ दिया, हाथ या किसी वस्तु को मोड़ना।

मलपी – वि.– जोर से नारे लगाकर, उचककर।

मलबो – वि.– कूड़ा-कर्कट, कचराकूटा, गिरे हुए मकान का ईंट-गारा आदि क्रि. मिलना, मिलन।

मलमूतर – पु.– मल-मूत्र, टट्टी-पेशाब।

मल्यई – वि.– मिलाकर।

मलऱ्यो – क्रि.– मिल रहा।

मल्ल – पु.– एक जाति जिसका पेशा एक ऊँचे डण्डे या खम्बे के ऊपर व्यायाम प्रदर्शन करना होता है। मल्ल जाति का मनुष्य।

मल्ला – पु.– एक जाति जिसका पेशा मछली मारना एवं नाव खेना होता है, मल्लाह।

मलवा – क्रि.– मलना, मिलने के लिये।

मलान – वि.– म्लान, मुरझाया हुआ।

मलायो – क्रि.– मिलाया, मिला दिया।

मलार – वि.– एक राग विशेष, मल्हार राग, वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग।

मलाल – पु.– दुःख, रंज, मन में पाप होना।

मलावी – क्रि.– मिलाई।

मसकरी – हँसी मजाक, ठिठोली, दिल्लगी।

मेलीदो – पु.– चूरमा, एक प्रकार का बढ़िया मुलायम ऊनी कपड़ा, दाल–सब्जी, रोटी आदि सब खाद्यों को मिलाकर खाया जाने वाला लसीला खाद्य।

मलेन्यो – पु.– जाड़ा देकर आनेवाला एक ज्वर।

मलो – क्रि.– मिल लो, मुलाकात करो।

मवड़ा – पु. – महुए का फल, मधुर फल।

मवड़ी – स्त्री.– महुए का झाड़, मधूक वृक्ष।

मवड़ो – पु. – महुआ, महुए का वृक्ष या फल।

मवाद – पु.– पीव, मल, गन्दगी।

मवाली – वि.– गुण्डा, बदमाश।

मवेसी – पु.– चौपाया, पशु, ढोर।

मवेसीखानो – पु.– पशुशाला।

मस – वि.– तिल, मस्सा, एक चर्म रोग।

मसक – पु.– मच्छर, चमड़े का थैला जिसमें पानी भरकर लाया जाता है,एक प्रकार का पात्र, क्रि. – मसलना।

मसकणो – क्रि.– मसकना, मसलना, वि.– मस्का लगाना, इस प्रकार दबना या दबाना कि टूट-फूट न होने पावे।

मसक्यो – क्रि.– मसक दिया, मसक नामक वाद्य बजाने वाला।

मसकी गयो – क्रि.– मसक गया।

मसक्कत – वि.– परिश्रम, मेहनत।

मस्करी, मस्खरी – वि.स्त्री.– परिहास, दिल्लगी, हँसी–ठट्ठा, हँसी–मजाक।

मसको – वि. – मुलम्मा, चाटुकारी, चापलूसी।

मसनद – स्त्री.अ.– बड़ा गाँव, तकिया, लोटन तकिया।

मस्तईर्‌यो – वि.– मस्त हो रहा, पुष्ट हो रहा, प्रसन्न हो रहा।

मसत, मस्त – वि.– मगन रहना।
(हाँ रे म्हारा लाल मसत मइनो फागण को। (मा.लो. 571)

'म'

मस्तानी – स्त्री. वि.– मस्त रहने वाली स्त्री।

मस्ती – स्त्री.– उधम करना, शोरगुल, उन्माद।

मसरू को थान – वि.– रेशमी वस्त्र।

मसल – पु.– मिसल, मसलना, मिलाना।

मसलणो – मसलना, मर्दन करना, मलना, गूँदना।
(बेवईजी मूरख मसले हाथ। मा. लो. 541)

मसल दूँवाँ – क्रि.वि.– मटियामेट कर दूँगा, हाथ से मसल दूँगा।

मसलमान – पु.– मुसलमान।

मदवा – मद भरे, नशा, प्रमाद, उन्माद, गर्व, हर्ष, आनन्द, कामुकता।
(कठे आपने सोला सूरज उगा मदवा मारुजी। (मा.लो. 524)

मसला – वि. – गम्भीर मामला।

मसला बोलनो – ताना देना, व्यंग कसना, छींटाकशी करना।
(छोटी बेन मसला बोली तु बगर बुलाई केसे आई। (मा.लो. 684)

मस्यो हुओ – क्रि.– मसला हुआ, घूँदा हुआ, मथा हुआ।

मसलाँ बोलेगा – क्रि.वि.– ताना देगा, व्यंग्य कसेगा।

मसलो – पु.– कहावत।

मसान, मसाण – पु.– श्मशान, मरघट।
(बोले जाले मसाण में मेले। मा. लो. 548)

मसाण्यो वेराग – क्षणिक जीवन का श्मशान तक सीमित रहने वाला वैराग्य, सभी प्रकार के वैभव छोड़कर देह त्याग करने पर उसके शव को जलाने के लिये उत्पन्न होने वाली क्षणिक वैराग्य वृत्ति जो घर आने तक विलीन हो जाती है।

मसाल, मुसाल – स्त्री.– डण्डे में चीथड़े लपेटकर, घासलेट में भिगोकर जलाई जाने वाली मशाल।

मसालची – पु.– मशाल जलाने एवं उठाकर चलने वाला नाई, दीवार जोड़ने का मसाला, औषधियों का रासायनिक मिश्रण।

मसालो – पु.–गर्म मसाला जिसमें तेजपाल, पत्थरफूल, काली मिर्च, लौंग, शाहजीरा, धनिया, लोंग आदि वस्तुएँ मिलाई जाती हैं, दाल-सब्जी आदि का गर्म मसाला। आतिशबाजी का मसाला।
(तेली को तेल बरे ने मसालची की गाँड।)

मसीहा – पु.– ईश्वर, उपकारी, दयालु।

मसूड़ो – पु.– मुँह के अन्दर का वह अंग जिसमें दाँत उगे होते हैं।

मसूर – पु.सं.–एक प्रकार की दलहन जिसकी दाल पौष्टिक व स्वादिष्ट होती है।

मसेरी – स्त्री.– मसहरी (मच्छरों से बचने के लिये पलंग के ऊपर चारों ओर लगाने का जालीदार कपड़ा, वह पलंग जिस पर उक्त कपड़ा लगा हो।

मसोड़ – न. – सोते समय दो चादरें या लिहाफ, दुलाई के अन्दर चादर डालकर बनाया जाने वाला ओढ़न, दोवड़।

मसोदो – पु.– लेख का वह पूर्व रूप जिसे काँट–छाँट और सुधार किया जाने को हो, प्रलेख, युक्ति, तरकीब।

मस्ती – शैतानी, नशा, बेपरवाही, मस्त होना, असावधानी, मदमस्त।
(अणी दारू की मस्ती में। मा.लो. 568)

म्हँखे – सर्व.– मुझको।

महतारी – माता, माँ, जननी।
(मुखड़े नी बोली महतारी। मा.लो. 684)

महन्त – पु.– साधु, संन्यासी।

महाकाली – स्त्री. – दुर्गा का रूप।

मंगतो – भिखारी, भिखमंगा, मंगता, माँगने वाला।
(इतराक् में एक मंगती अई गई। मो.वे. 52)

'म'

मंगल – न.– कल्याण मांगलिक, शुभ, विवाहोत्सव, बंद करना।
(मंगलगीत लुगायाँ गाया। मो. वे. 35)

मंगलाचार – ग्रन्थारम्भ के पूर्व परमेश्वर, सरस्वती, गुरु माधव, गणेश इत्यादि का स्मरण, आनन्द, उत्सव, आशीर्वादोच्चारण, मंगलाचरण।

मंगलावणो – होली का जलाना, बंद करना, अग्नि जलाना, दीपक जलाना, मंगलाना, मंगल करना।

मंजल – मजल, मंजिल, मकान का ऊपरी खंड, लक्ष्य।
(तो तीसरी मंजल का चड़ाव पे से पड़ी। मो.वे. 54)

मंड्याण माँड्णो – मंडान, किसी कार्य को करने की प्रारम्भिक तैयारी करना, कार्यारम्भ करना, कार्य का श्रीगणेश करना।

मंतरणो – क्रि. – जादू करना, मंत्र के द्वारा किसी पर प्रभाव डालना, वशीभूत करना, झाड़-फूँक करना, फुसलाना।
(पढ़ने लग्या मंतर। मो.वे. 57)

मंदर – न.– मन्दिर, देवालय, प्रासाद, मंदराचल।

म्हाँके – सर्व.– हमको।

महावत – पु.– हाथीवान।

महावीर – पु.– हनुमानजी, चौबीसवें और अन्तिम जैन तीर्थंकर, बहादुर।

म्हामारी – स्त्री.– मरी, हैजा।

महा सिवरात्रि – स्त्री.– महाशिवरात्रि पर्व।

महिनो – पु.– महीना, माह।

महिला – स्त्री.– स्त्री, महिला, नारी।

महुआ – स्त्री.– महुए से बनी दारू।

म्हूँ – उ.पु.ए.व.– मैं।

महेस – पु.– शिव, शंकर।

महोरत – वि.– मुहूर्त, शुभ समय।

माँ – स्त्री.– लक्ष्मी, माता, माँ के लिए सम्बोधन।

माईं, माई – उ.पु.ए.व.– मैं भीतर, माँ।
(हूँ बलिहारी दो जणा माई रंग रो वदावो। मा.लो. 450)

माईजी – स्त्री.– मौसी।

माई को लाल – पु. – सहोदर, सगा भाई।

माऊ – पु.– महुए का फल, जहर।

माकड़ – पु.– मकड़ा या मकड़ी।

माकड़ी – स्त्री.– मकड़ी, जानवर।
(जो माकड़ी के जाला माँय। मो. वे. 46)

माकण – पु.– खटमल।

माका, माखा – स्त्री.–मक्खियाँ, मधुमक्खियाँ।

माकी भोसी – वि.– एक मालवी गाली, अपशब्द

माकूल – वि.– उचित।

माँ के, म्हाँके – पु.– माता के, सर्व. – हमको।

माँ के देखी के – क्रि. वि.– हमको देख करके।

माखण – मक्खन, एक कपड़ा, खटमल।

माखन – पु.– मक्खन, लौनी, चिकनाई।

माखामार – स्त्री.ब.व.– मधुमक्खियाँ।

माखी – स्त्री. ब.व.– मक्खियाँ।

माखो – पु.– मक्खी (नर)।

माँगण – वि.– लेनदारी।

माँगणा, माँगणो – क्रि.– माँगना, भिक्षावृत्ति करन।

माँग पत्तर – पु.– वह पत्र, जिसमें किसी प्रकार की विशेषतः आर्थिक माँग की गई हो।

माँगर्‌यो – माँग रहा।

मागा – स्त्री. – स्थान, जगह।

माँगा – स्त्री.– चाहा।

माघ – पु. – माघ, मास।

माच – पु.– मालवी का लोकनाट्य।

माचा – पु.– ऊँचा स्थान, मंच, उच्च सिंहासन, पलंग।

माची – स्त्री.– पलना, छोटी खटिया, चढ़स के मुँह पर लगाई जाने वाली चौकोर लकड़ी।

माचो – पु.– पलंग, खाट, मचान, मालवा के ग्रामों में घट्टी (चक्की) रखने का ऊँचा स्थान।

माँजनो, माँजणो – क्रि.– बरतन आदि वस्तुएँ साफ करना।

माजनो – वि.– इज्जत, प्रतिष्ठा।
(माजना में थूके।)

माजना वारो – वि.– इज्जत वाला, इज्जतदार।

माँजर – स्त्री.– तुलसी या आम्र मंजरी, पुष्प गुच्छ जिसमें फल आते हैं।

माँजा – पु.– पतंग की डोर जो गोंद तथा पिसे हुए काँच आदि के मसाले में तैयार हो गई हो, मँजा, क्रि. -बर्तन आदि को माँजने की क्रिया।

माँजी – स्त्री.– माँ साहब, माताजी, वृद्धा के लिये आदरणीय सम्बोधन।

माटर, मास्टर – पु.– शिक्षक।

माटी – स्त्री.– मिट्टी, गारा, पु. – पति, स्वामी, खाविन्द, लाश।
(थारी साड़ी में पड़गी आँटी, थने लईग्या म्हारा माटी। मा.लो. 507)

माड़ – वि.– एक राग विशेष।

माँड – स्त्री.– चावल का उबला पानी, बाजार या हाट में दुकान लगाने की क्रिया, क्रि. – माँडना, अंकन करना।

माड़साब – पु.– मास्टर सा., शिक्षक।

माडणाँ – स्त्री.– आकृतियाँ उकेरना, जमीन पर माँडना या आकृति याँ बनाना, दीवारों पर चित्रांकन करना, संजा की आकृतियाँ माँडना।

माँड्यो – क्रि.– माँडा बनाया।

माँडा – क्रि.– बनाया, उकेरा, लग्न मण्डप, विवाह, शादी।

माँडिया – क्रि.– माँडा बनाया, तैयार किया, उकेरा , पत्र, पुष्प व मालाओं से सुसज्जित मण्डप तैयार किया।

माड़ी – वि.– माता, जननी, माँ। (म्हारो माड़ी रो केवण वारो दोनी अन्तरयामी। मा.लो. 74)

माड़ीजायो, माड़ी रा जाया –क्रि.वि.– भाई, सहोदर, भ्राता (माड़ी जाया चुँदड़ लावजो। मा. लो. 352)

माँडू सेर – पु.– माण्डव शहर, माण्डू।

माँडो – पु.– बनाओ, उकेरो, मण्डप, विवाह, शादी।

माणक, माणक मोती– पु.– हीरा, मोती, माणिक आदि रत्न।

माणी – छः मण का एक माणी।

माणीगर – वि.– धनाढ्य होते हुए भी बहुत बड़ा मन वाला, सरल, दानी, उपयोग करने वाला, स्वाभिमानी।

मात – उफने हुए अनाज का ढेर, मात देना, हराना।

माणो – पु.– घोड़े के पैर पर भँवरी नामक ऐब।

मातबर – वि.– बलशाली, ताकतवर, विश्वसनीय, शक्तिशाली, पक्का, श्रीमान्, श्रीमती।

मातम – क्रि. – रोना-धोना, शोक करना, रंज करना, मृतक शोक।

मातमपुरसी – मृतक का एक वर्ष तक हर महिने कुंभ देना, धूप लगाकर कुंभ दान करना, मृतक के घर शोक संवेदना के लिए बैठने जाना।

मातर – एक मिष्ठान्न, कसार, मात्र, सिर्फ, क ेवल।

मातरा – स्त्री. – स्वर सूचक चिह्न, औषधि की मात्रा।

माता – स्त्री.–माँ , माता, शीतला माता।

माताबई – स्त्री.– माताजी।

माता–सामूँ गाल – क्रि.वि.– माँ की गाली देना।

मातेश्री – स्त्री.– माताश्री, माताजी।

माथ – पु.– मस्तक, सिर।

माथणी – स्त्री.– मिट्टी की छोटी मटकी।

'मा'

माथणो – पु.– मिट्टी का बना बड़ा मटका, पीतल का बड़ा मटका।

माथा – पु.ब.व.– मस्तक, सिर।

माथा पच्ची – वि.– सिर खपाना।

माथा–फोड़ – पु.– सिर पीटना, मगज मारना।

माथामारी – वि.– दिमाग खराब करना, सिर खपाना।

माथे – क्रि.वि.– सिर पर, ऊपर, सहारे, भरोसे, सिर के ऊपर।

माथे आवणो – इल्जाम लगाना, बदनामी आना, बदनाम होना।

माथे करनो – कर्ज लेना, उधार लेना।

माथे चड़ानो – क्रि.– मस्तक पर धारण करना, शिरोधार्य करना, सिर पर चढ़ाना, मुँह लगाना।

माथे रखी के – क्रि.– सिर पर रख करके शिरोधार्य करके।

माथे मड़नो – किसी के सिर काम या दोष मढ़ना, जड़ देना।

माथे हाथ देणो – हताश होना, परेशान होना, पश्चात्ताप करना, पछताना।

माथे हात धरीके – सिर पर हाथ रख करके, होश होकर के, कृपा दृष्टि करके।

माथो – पु.– बुद्धि, मस्तक, माथा, सिर।

माथा टेकी के – कृ.– सिर टिका करके, सिर को सहारा देकर के।

माथो मुँड़ इल्यो – क्रि.वि.– सिर मुँडवा लिया, सिर घुटवा लिया, घोट मोट हो गया।

माथो निगोरनो – जब किसी का को नहीं करना हो तो धीरे से मुँह मोड़ लेना, मना कर देना, सिर हिला देना, नकार देना, सिर हिला देना, नकार देना, अस्वीकार करना।

माथो हिलई के – कृ. –सिर हिला करके, मना के, नकारा करके, अस्वीकार करके।

माँद – वि.– हिंसक जन्तुओं के रहने का स्थान, गुफा, खलिहान में अनाज का

ढेर लगाना, माँद देना, गल्ला रखने की जगह या बरवार, उदास, फीका।

मादल – भुजबंद (भुजा का गहना)। (आपतो पोड्या गोरी ढोलिये कोई म्हने भी सादरी वताव रे, मादल रलक्यो जाय। मा.लो. 24)

मादल्यो – चाँदी का हाथ का गहना। (थारो रूपा को मादलियो, थारे रेसम लम्बी डोर। मा.लो. 56)

माँदी – स्त्री.– बीमार, अस्वस्थ।

मादेव – पु.– महादेव, शिव, शंकर।

माँदो – पु.– बीमार, अस्वस्थ।

मान – वि.–आदर, इज्जत, सत्कार, पूजार्चना।

मान–गुमान – क्रि.वि.– मान-मनोबल, मान-गर्व, मानिनी का गर्व।

मानजो – मान करना, स्वीकार करना, अपनाना, मान जाना, समझ जाना। (साधु उतारे आरती तम मानजो गोविन्द।)

मानता – वि.– मान्यता, मनौती, आदर।

मानेती – स्त्री.–सम्माननीय, मान्यता प्राप्त।

मानते फिरीर्‌यो – क्रि.वि.– अपने को सब कुछ समझकर घूम रहा।

मापणो – नापना, पात्र में भरकर के किसी वस्तु का परिणाम निकालना, माप करना, तुलना करना, थाह लेना, मापने का उपकरण, अनुमान करना। (मापूँ तो हात पचास तोलूँ तो तोला तीस री। मा.लो. 350)

मानपत्तर – वि.– सम्मान पत्र।

मान पान – वि.– सम्मान के साथ खान-पान व इज्जत देना।

मान–भंग – वि.– अनादर, अपमान।

मान्या–गुन्या – क्रि.वि.–इज्जतदार, मान सम्मान प्राप्त।

मानसरोवर – पु.– हिमालय के उत्तर की एक प्रसिद्ध और परम पवित्र मानी जाने वाली बड़ी झील।

मानिंद – वि.फा.– समान, तुल्य।

मानीली – क्रि.– स्वीकार कर ली, मान ली।

माप – स्त्री.– मापना, नाप, वह मान जिससे कोई चीज नापी जाए।

मापणो – क्रि.–नापना-तौलना, नाप करना।

माफ – पु. – क्षमा।

माफक – वि. – मुताबिक।

माफी – स्त्री. – क्षमा।

माफीदार – पु.फा. – वह जिसको राज्य की ओर से माफी में जमीन मिली हो, लगान या करमुक्त व्यक्ति।

माम – वि. – इज्जत, मान।

मामपड़द्‌यो – क्रि.वि. – इज्जत गिरा दी।

माम्याँबई – स्त्री.ब.व. – मामीजी, मामा की पत्नी।

मामा, मामो – पु. – मामा।

मामी – स्त्री. – मामा की पत्नी या स्त्री, मामी, लिंग।

मामूली – वि. – साधारण, सामान्य।

मामेरो, मामेरा – पु. – भानजा या भानजी का विवाह होने पर मामा की ओर से वस्त्राभूषण आदि से की जाने वाली पहुँनाई, भेंट, मायरा, माहेरा, मामेरा।

मामो – पु. – मामा।

माँय – अव्य. – अन्दर, भीतर।

मायको – पु. – पीहर, मायका, माता का पितृकुल, मातृपक्ष।

मायते – वि. – अन्दर, भीतर, गुप्त, मध्य, बीच।

मायनो – वि. – अर्थ।

मायमाता – स्त्री. – मातृदेवी, वह घर जिसमें दूल्हा-दुल्हन द्वारा माय माता या मातृदेवी की पूजा की जाती है।

मायरो, माहेरो – पु. – भानेज या भानजी की शादी पर वस्त्र आभूषण आदि से की जाने वाली प्रथा, माहेरा। (नानी बाई का माहेरा।)

माँय रो – क्रि. – अन्दर ही रहो, बाहर न निकलो।

माँय रालो – क्रि.वि. – अन्दर डालो या बिछाओ।

माया – स्त्री. – लक्ष्मी, धन, सम्पत्ति।

मायाजाल – वि. – गोरखधन्धा, इन्द्रजाल, तिलस्म।

माया जोड़नी – धन सम्पदा एकत्र करना, सम्पत्ति का संग्रह करना, धनवान होना।

माया ममता – स्त्री. – माया-मोह, दया-प्रेम।

माया-मों – स्त्री. – माया, मोह, लीला, धोखा, अज्ञान, प्रपंच, ममता।

मायावी – पु. – चालाक, धूर्त, धोखेबाज, छली, जादूगर।

मार – क्रि. – मारना, पीटना,माल, जंगल, वन।

मारकणी – वि.स्त्री. – सींगों या लातों से मारने वाली गाय या भैंस आदि।

मारग – पु.– मार्ग, रास्ता, राह, बाट, गेलो।

मारणो – क्रि.पु. – मारना, प्राण लेना, ।

मारफत – अव्य. – द्वारा, जरिये।

मारवणी – स्त्री. – ढोला की प्रियतमा, प्रेमिका, मालवी में प्राप्त ढोला-मारवण नामक गीत कथा की नायिका।

मारूजी – लोकगीतों का नायक, पति।

मारवाड़ी गा – स्त्री.– मारवाड़ देश या मारवाड़ी।

माराज – पु. – महाराजा, महाराज, ब्राह्मण, पण्डित के लिये सम्बोधन।

मारुजी – पति, प्रियतम।
(म्हारा मारुजी पाँचमो मासज लागो।)

मारामारी – क्रि.वि. – मारपीट, खींचातानी।

मारीर्‍यो – क्रि.- मार रहा, पिटाई कर रहा।

मारुणी – मारवण, ढोला की प्रियतमा, प्रेमिका, ढोलामारु नामक गीत कथा की नायिका, पत्नी।

मारो – घोंसला, नीड़, पीटो।

माल – सामान, धन सम्पदा, जंगल।
(मैं भेजूँ मुक्तो माल सकर की बोरी। मा.लो. 260)

मालकन – स्त्री. – मालकिन, स्वामिनी।

मालक – पु. – मालिक, अधिपति।
(चुड़ला री लाज धणी मालक राखे। मा.लो. 660)

माल काँगणी – स्त्री. – एक लता जिसके बीजों से तेल निकलता है।

मालकिन – स्त्री. – स्वामिनी, मालिक की पत्नी।

मालगाड़ी – स्त्री. – वह रेलगाड़ी जो केवल माल ढोती हो, सामान ले जाती हो।

मालगुजारी – स्त्री.फा.– वह भूमिकर जो सरकार को जमींदार देता है, भू आगम, भू राजस्व, लगान।

मालजादी – वि. – दुष्टा स्त्री, दुराचारिणी, एक मालवी गाली।

मालण, मालन – स्त्री. – माली की स्त्री, मालिन।

मालनी – स्त्री. – मालिन, माली की स्त्री।

मालपा, मालफा – पु. – मालपुआ, एक प्रकार की मिठाई।
(छाने खायो जरासो मालपुवो । मा.लो. 560)

मालम – पु. – मालूम, विदित, ज्ञात, पता।
(वा मालम हे करतूत तमारी। मो. वे.40)

मालम नी – क्रि.वि. – मालूम नहीं, पता नहीं।

मालवी – स्त्री. – मालव प्रान्त की भाषा। (इसकी चार उपबोलियाँ निमाड़ी, रजवाड़ी, सोंधवाड़ी एवं उमठवाड़ी हैं। इनके बोलने वालों की संख्या नवीनतम सर्वेक्षण के अनुसार 2 करोड़ हैं।)

मालवो – पु. – मालव प्रदेश।
(माजी आई हे मालवा माय। मा. लो. 661)

मालामाल – वि. – धनाढ्य, ऐश्वर्यवान, धनवान, सम्पत्तिवान।

माला, माली – पु. – माली, जाति, बागवान, पंक्ति, गले में पहनने की माला, आर्थिक स्थिति।
(तो माला पाट पोवाव । मा. लो.573)

माली – क्रि. – मसली, चूरा किया।

माळो – क्रि. – मसलो, चूर्ण करो, घोंसला।

मालो – पु. – घोड़ा-घोड़ी की पीठ का वस्त्र विशेष।

मावजो – पु. – मुआवजा, वह धन जो किसी वस्तु की एवज में शासन द्वारा दिया जाता है, क्षतिपूर्ति धन।

मावठ, मावठो – पु. – शीतकाल में होने वाली वर्षा, ओले पड़ना।

मावणो – क्रि. – समाना।

मावत – पु. – महावत, हाथी का सवार, माता पिता।

माव दो – क्रि.वि. – जहर दे दो, विष दे दो।

मावस – स्त्री. – अमावस्या।

मावसाजी – पु. – मौसा, मौसी के पति।

मावसी – स्त्री. – मौसी, माँ की बहिन।

मावा, मावो – पु. – अफीम खाने वालों की एक मात्रा का नाप, दूध जलाकर, बनाया हुआ खोया, सार भाग।

मावीत – माता-पिता।

मावो खाणो – क्रि. – अफीम की निश्चित मात्रा खाना, मावा या खोया खाना।

मास – महिना, गर्भ।

माँस – पु. – माँस, गोश्त।

मास-मच्छी – स्त्री. – माँस-मछली।

मास्याँ बई – स्त्री. – मौसीजी के लिये मालवी सम्बोधन।

मास्टर – पु. – शिक्षक, गुरु।

मासी, मासीजी – स्त्री. – मौसी, माँ की बहिन।

मासोजी, मासाजी – पु. – मासी के पति।

माहतम – वि. – महिमा, श्रेष्ठता, प्रभाव।

माहिती – स्त्री. – जानकारी, ज्ञान।

माँग – माँगना, सिर पर केश विभाजन रेखा, केशरेखा में कुम-कुम भरना, याचना करना, सगाई की हुई कन्या।

माँगणो – क्रि. – माँगना, याचना करना, किसी को किसी वस्तु को देने के लिये कहना, तकाजा करना, भिक्षा की याचना करना, भिक्षा।

माँगर – आलसी, सुस्त, धीमा, अकर्मण्य, आलस करना, कामचोर।

माँग्यो – माँगा, माँगना, माँगीलाल।
(थोड़ो सो अजमो म्हारी सासू ए माँग्यो।)

माँड – चावल का, माँडी, कलप।
(लापर व्यई ने माँड पाओ माँड पाओ राज। मा.लो. 396)

माँडण – श्रृँगार, शोभा, चित्रकारी, मांडने, घर, आँगन या द्वार पर स्त्रियों द्वारा बनाई हुई मंगल आकृतियाँ, धारण करना, सजाना, स्थापित करना।
(मुखड़ा रो माँडन सायबा नथ लाजो राज। मा.लो. 483)

माँडणा – न.ब.व. – चित्र, रंगोली, दीपावली पर खड़ी और गेरु से माँडे जाते हैं, मंगल आकृतियाँ, स्वस्तिक, आँगन द्वार पर पद चिह्न बनाना।

माँडी – लगाना, माँडना, हाट बाजार में जगह-जगह दुकान लगाना, रोटी, कलफ।
(जारे माँगी लालजी ने माँडी दुकान। मा.लो. 508)

माडूँ – बनाना, करना, लिखना, माँडव, मालवा का एक ऐतिहासिक नगर।

माँडो – शादी, ब्याह, जहाँ विवाह का मंडप बनाया जाता है, रोटी।
(माँगी माँडा जोग। मो.वे.33)

मि

मिंचणो – क्रि.–आँख मींचना, बन्द करना। (सरमो मरतां आँख्या मीचे। मो. वे. 35)

मिंचकणो – क्रि.– आँखें मिचकाना, मटकाना, पलक मारना, बार-बार पलकें खोलना और बन्द करना।

मिचमिचो – रोशनी न सहती आँखों वाला, सूर्यमुखी।
मिचलाणो – क्रि.– मितली आना, जी-घबराना, कै आने या उल्टी होने के पूर्व पित्त विकार होने की स्थिति।
मिजबान, मिजमान – पु. – मेहमान, अतिथि।
मिजाज – वि.– अकड़, अभिमान, स्वभाव, तबियत।
मिजाजण – वि.स्त्री. – नखरे वाली, मिजाज वाली।
मिटणो – क्रि. – बिगाड़ना, लुप्त करना।
मिट्ठू – पु. – तोता, सुआ, कीर, मीठा बोलने वाला, मिष्ट भाषी।
मिठाई – वि. स्त्री. – मीठापन, मिठाई, मिष्ठान्न।
मिट्ठी – वि. – मीठी।
मिट्ठो – वि. – मीठा, स्त्री. – मीठापन, मिष्ठान्न।
मिठूडयो – वि. – मीठा खाने वाला, मीठी-मीठी बातें करके जी बहलाने वाला।
मिंतर – पु. – मित्र, दोस्त, सखा।
मिति – स्त्री. – सीमा, परिणाम, निश्चित संख्या, तिथि।
मिथ्या – झूठा।
मिनख – पु. – मनुष्य।
मिण जावरी – स्त्री. – बिल्ली, माजरी।
मिनट – वि. – मिनट।
मियाद – स्त्री. – समय।
मियाँ बीवी – सं. – पुरुष-स्त्री।
मियाँल – पु. – लकड़ी का पाट, लट्ठा शहतीर।
मिरगा नेणी – स्त्री. – मृगनयनी, मृग जैसे नेत्रों वाली।
मिरग्या – पु.ब.व. – मृग।
मिरी – स्त्री. – काली मिर्च।
मिरच – स्त्री. – लाल या काली मिर्च।
मिरची – स्त्री. – लाल या काली मिर्च।
मिलणी – स्त्री. – सम्बन्धी का आपस में मिलना, आपस में दो का गले मिलना।
मिलणो – क्रि. – मिलना, प्राप्त होना, पाना।
मिलने सरू – क्रि.वि. – मिलने के लिये, मिलन हेतु, भेंट के लिये।
मिलट – पु. – एक घण्टे का साठवाँ भाग, मिनिट का समय।
मिलबा की बाताँ – क्रि. – मिलने की बातें, प्रेम भरी बातचीत।
मिल्यो जावे – क्रि.वि. – मिलता जावे, मिलकर जावे।
मिल – पु. – कारखाना, मिलना।
मिलायो – क्रि. – शामिल किया, सम्मिलित किया, मिलाया।
मिस – अव्य. – बहाने से।
मिस्तरी – पु. – बढ़ई, कारीगर।
मिसल – पु. – कागज पत्रों की नस्ती।
मिस्सी – स्त्री.- दँत मंजन, दातौन, दँतुअन।
मिसरी – स्त्री. – मिश्री, जमाई हुई शकर के डले।
मिसरू – वि. – रेशमी वस्त्र।
(हिंगलू का ढोल्या ने मिसरू का तकिया पोड़ेगा श्री भगवान। मा. लो. 606)
मिसाल – स्त्री. – उदाहरण।
मिस्सी रोटी – गेहूँ चना व जौ के आटे की रोटी, बेजड़ रोटी।

मी

मींगणी – स्त्री. – मेंगनी, बकरी की लैंडी या विष्टा।
मीचणो – क्रि.– बन्द करना।
मीजाजण – अहंकारी, घमण्डी, गर्व करना, मदमाती।
(जद ए मिजाजण भम्मर पेरी ने नीसरी। मा.लो. 329)
मीजबान, मीजमान – पु.– मेहमान, अतिथि, पाहुन।
मीठ – वि.– मीठा, मिष्ठान्न, मीठा बोलने वाला।
मीठो – वि.– मीठी वस्तु, मिठाई, मीठा बोलने वाला, मधुर।

मींडलो – पु.– एक फल जो वर–वधू के हाथ के कंगन में पिरोने के काम आता है।
मीणो – पु.–मीणा जाति का पुरुष, जहरीली वस्तु।
मीत – पु.– मित्र, सखा, दोस्त।
मींतरू – पु.– मित्र, सखा, दोस्त।
मीन – मछली, मछलियाँ, मत्स्य। (मीन मारकर भोग लगावे। मा.लो. 688)
मीन–मेख – क्रि.वि.– त्रुटि, कमी।
मीनक्याँ – स्त्री.ब.व.– बिल्लियाँ।
मीयाँ बीवी – सं.– पुरुष–स्त्री, पति–पत्नी।
मीर – वि.– अमीर, धनवान।
मीरगानेणी – मृगनयनी, सुन्दर आँखों वाली। मृग के नयनों के समान आँख वाली। (म्हारी मिरगानेणी जावादो। मा.लो. 595)
मीर मारद्यो – क्रि.वि.– बड़ा भारी काम कर डाला।
मीराबई – स्त्री.– चित्तौड़ के राजा की कृष्ण भक्त पत्नी, मीराबाई।
मील – पु.– कारखाना, सड़क का पुराना नाप, 2 मील का एक कोस, वर्तमान नाप से 1.5 किलोमीटर।
मीलो – वि.– सड़ा गला बदबूदार अनाज।

मु

मुआ – वि.– मरा हुआ।
मुआवजा – पु.– हानि के बदले में मिलने वाला धन।
मुई – स्त्री.– मर गई।
मुकताई – वि.–बहुत–सा ही, काफी, ज्यादा।
मुक्तो – बहुत-सा, अधिक, खूब। (में भेजूँ मुक्तो माल सकर की बोरी तुम बेठी बेठी जीमो सुन्दर सुन्दर म्हारी गौरी। मा.लो. 260)
मुकदमो – पु.– अभियोग, अपराध।
मुक्का, मुक्को – पु.– आघात या प्रहार के लिये बाँधी हुई मुट्ठी, घूँसा।
मुकुट – पु.– मुकुट, शिरोभूषण,किरीट।
मुकता, मुकतो – वि.– बहुत–सा, काफी, पर्याप्त।
मुकरनो – क्रि.– मनाना, इन्कार करना, हाँ कहकर ना करना।
मुकादम – पु.– अगुआ, जमादार, कारिन्दा।
मुकाबलो – पु.– सामना, मुठभेड़, तुलना, टक्कर।
मुकाम, मुक्काम – पु.– अड्डा, पड़ाव, डेरा।
मुखड़ारी बात – क्रि.वि.– मुँह की बात, लोकवार्ता।
मुखड़ो – पु.– मुँह, चेहरा।
मुखत्यार – प्रतिनिधि।
मुखत्यारनामो – अभिकर्ता पत्र, अधिकार पत्र।
मुखदुल फुन्दा – मखमल के फुन्दें। (मुखदुल रा फुन्दा बनो हरिये तोरण आयो। मा.लो. 402)
मुखबरी – स्त्री.– गुप्त भेद देना।
मुख भर – वि.– मुँह भर करके।
मुखसुद्दी – क्रि.वि.– मुख शुद्धि करना, भोजन के बाद पान-सुपारी खाना।
मुख, मुख्य – पु.– प्रमुख, प्रधान, प्रमुख।
मुखारबन्द – वि.– मुख कमल।
मुखालपत – वि.– विरोध।
मुखियो – पु.– मुखिया, प्रधान।
मुखोटो – वि.–बनावटी मुख, नकली चेहरा।
मुगट – पु.– मुकुट।
मुगत, मुगती – वि.– मुक्ति, बन्धनहीन, मोक्ष।
मुग्गम – वि.–अनिश्चित, ऊपर–ऊपर, संदिग्ध, गुप्त, अंदरूनी, छिपा करके।
मुचलका, मुचलको – वि.– जमानती कार्यवाही।
मुच्छभूर – वि.– भूरी मूँछों वाला।
मुछन्दर – पु.– बड़ी–बड़ी मूँछों वाला, मूर्ख, बुद्धू।
मुछ–मुन्डो – वि.– मूँछें मुँड़वाया हुआ, मूँछों से रहित।
मुछालो – वि.– बड़ी मूँछों वाला, मूँछ वाला। (जो तम मरद मुछाला हो। मो. वे. 38)

मुंज – स्त्री.– मुंज नामक घास, मूंज की रस्सी, धार का राजा मुंजराज।

मुजब – अव्य.– के अनुसार।

मुजरा – क्रि.वि. – प्रणाम।

मुजरा – पु.– किसी रकम में से काटकर रखा जाने वाला धन, अभिवादन, प्रणाम।

मुजरो – पु.– वेश्या का बैठकर गाना। (गेंद गजरो वो आदी रात मुजरो। मा. लो. 532)

मुंजी – वि.– कंजूस, कृपण।

मुजरे कर लो – क्रि.– हिसाब में ले लो, पिछले बाकी में जमा कर लो।

मुंजोरी – वि.– बकवास, सामना करना, मुँह पर बोलना, बड़ों के सामने बकबक करना।

मुटईगी – स्त्री.– मोटी या तगड़ी हो गई।

मुट्ठी – स्त्री.– घूँसा, मुक्की। (मुट्ठी नी मेलिया। मा.लो. 681)

मुट्ठो भरीने – क्रि.वि.– मुट्ठी भर करके।

मुंड गेरा – पु.– खोपड़ी, सिर, कटा हुआ सिर।

मुंडो – पु.– मुँह, चेहरा।

मुँड़णो – क्रि.– बल खाना, मोड़ना, मुड़ जाना, बचकना।

मुँड़ाणो – क्रि.– मुण्डन करवाना, सिर मुँडवाना, सिर चेहरे के बाल साफ करवाना।

मुंडा–मुंडी – क्रि.वि.– मुँह पर बात कह देना, आमना–सामना करना।

मुंडेर – स्त्री.– मुंडेरी, पाल, किनारा,मेड़।

मुताद्‌यो – क्रि.– पेशाब करवा दिया।

मुताबिक – पु.– अनुसार।

मुद्गल – पु.– व्यायाम के लिये लकड़ी का बना मुद्गल।

मुद्दई – पु.– दावा दायर करने का अभियोग करने वाला, शत्रु, दुश्मन, वादी।

मुद्दत – वि.– अवधि।

मुद्दल – स्त्री.– पूँजी, मूल रकम, मूलधन।

मुद्दो – पु.– विचारणीय विषय , बाबत।

मुँदड़ी – अँगूठी।

मुदरण – पु.– छापाखाना।

मुदरा – पु.– मुद्रा, ठप्पा, अँगूठी, छाप, कुण्डल, आकृति, योग की मुद्रा।

मुन्सी – पु.– कारिन्दा, मुंशी, लेखापाल।

मुनादी – स्त्री.– ढोल पीटकर की जाने वाली घोषणा, डूँडी, ढिंढोरा, डुग्गी।

मुनासिब – वि.– उचित, उपयुक्त।

मुनि – पु.– ऋषि, मुनि।

मुन्सिफ – पु.– दीवानी का न्यायाधीश।

मुन्नी – स्त्री.– छोटी लड़की के लिये सम्बोधन।

मुन्नो – पु.-छोटे बच्चे के लिये सम्बोधन।

मुफलिसी – वि.– कमी, तंगी।

मुबलक – वि.– भरपूर, अनगिनत, विपुल।

मुम्बई – सं.– बम्बई।

मुयाँ – पु.– ऐसी कील जिसके दोनों ओर तीखी नोंकें निकली हों।

मुयो – वि.– मरा हुआ, मृतक।

मुरकी – स्त्री.– पुरुष के कान में पहनने की सोने की बाली, स्वर को कोमलता से और सुन्दरता से घुमाते हुए दूसरे स्वर पर ले जाना। (वोई सेल्याँ वालो ने वोई मुरकी वालो। मा.लो. 580)

मुरगा – पु.– मुर्गा।

मुरझाणो – क्रि.– कुम्हलाना, मुरझाना, सुस्त या उदास होना।

मुरती – स्त्री.– मूर्ति, पाषाण प्रतिमा।

मुरदो – पु.– मुर्दा, शव, निष्प्राण शरीर, मरा हुआ। (मुरदा पकड़ हो तुलसी पार उतरग्या मा.लो. 652)

मुरदार – वि.– मरा हुआ, मृतक, अपवित्र, अशक्त, नपुंसक।

मुरदाल – वि.– मरा हुआ सा, मरियल।

मुरदाल खोपड़ी – क्रि.वि.– मरियल मनुष्य।

मुरव्बा – पु.– कच्चे आम, आँवले आदि को

शकर की चासनी में डालकर बनाया हुआ मुरब्बा।

मुरम – वि. – मुरमुरा, पत्थर का चूरा, बजरी।

मुरमुरा – स्त्री – परमल।

मुरली – स्त्री.– बाँसुरी, बंसी।

मुरलीधर – पु.– भगवान् श्रीकृष्ण।

मुरली मनोहर – पु.– श्रीकृष्ण।

मुराद – स्त्री.– इच्छा, आकांक्षा।

मुरीद – पु.– शिष्य, नौकर।

मुरोव्वत – पु.– लिहाज।

मुलक – पु.– मुल्क, देश, काफी, बहुत। (सुसरा सरीका कोई नईं रे मुलक में।)

मुलक्को, मुलक्का – वि.– बहुत–सा, काफी, अधिक।

मुलाखात – पु.– भेंट, परिचय।

मुलाजम, मुलाजिम – पु.– नौकर, सेवक।

मुलायजो – पु.– दूसरे का भाव रखा, शील–संकोच, रिआयत।

मुल्लो, मुल्ला – पु.– बोहरा जाति का मनुष्य।

मुवायनो – पु.– निरीक्षण, जाँच पड़ताल।

मुवो – वि.– मरा हुआ, मृतक।

मुस्कराणी – स्त्री. - मुस्कराई, हँसी।

मुसत – पु. – मुट्ठी, एक साथ।

मुसकाणो – क्रि.– मंद-मंद हँसना, मुस्कुराना, पुलकित होना, मंद हास्य। (मधु क्यों मुँह मुसकावेरी। मा.लो. 679)

मुसकिल – वि.– कठिन, दुश्कर, दिक्कत, आफत, विपत्ति।

मुसम्मी – स्त्री.– मोसम्बी।

मुसंडो – वि.– हट्टा–कट्टा, मुस्टंडा।

मुसल्ड़ो – पु.– हेय सम्बोधन।

मुसली – स्त्री.– एक औषधि, धोली या काली मुसली, एक जड़ी बूटी।

मुसल्लो – पु. – वह दरी या चटाई जिस पर मुसलमान लोग बैठकर नमाज पड़ते हैं।

मुसाफर – पु.–मुसाफिर, यात्री, बटोही, प्रवासी।

मुसाफिरखानो – सराय, धर्मशाला।

मुसायरो – पु.– काव्य गोष्ठी, मुशायरा, कवि सम्मेलन।

मुसालची – पु.– मशाल उठाने वाला।

मुस्टंडो – मुफ्त का माल खाकर मोटा-ताजा बनने वाला पाखंडी, हृष्ट-पुष्ट, बदमाश, गुंडा।

मुहब्बत – पु.– प्रेम, प्यार, स्नेह।

मू

मूँगेड़ी – स्त्री.– मूँग की सफेद दाल को पीसकर मसाले मिलाकर बनाई गई वस्तु, खाद्य पदार्थ।

मूँगो – महँगा, प्रवाल, मूँगा।

मूँछ मरोड़णो – मूँछ मरोड़कर ऐंठना, घमण्ड में रहना। (नगर बजाराँ मूँछ मरोड़े घर में डलहल रोवे म्हारा राम। मा. लो. 158)

मूँछा – पशुओं के मुख पर लगाया जाने वाला जाल जिसके लगाने से पशु घास आदि वस्तुएँ खा नहीं सकते।

मूँछ मुछाला – वि.– मूँछों वाला।

मूँज – मैं ही।

मूँजण – क्रि. – कोठी के मुँह को बन्द करना।

मूँजी – वि.– कंजूस, आवश्यकता होने पर भी धन खर्च न करने वाला, मुंज घास।

मूँजीद्यो – क्रि.– बन्द कर दिया।

मूंजो – क्रि.– बन्द करो।

मूंझण – क्रि.– मिट्टी की कोठी को मुँह को बन्द करना।

मूठ चलाड़नो – क्रि.वि.– जादू या टोना करना।

मूठ – पु.– हत्ता, मुट्ठी, एक तांत्रिक क्रिया।

मूठ बाजरो – पु.– मोठ–बाजरा नामक धान्य।

मूँडकी – स्त्री.– कटा हुआ सिर, गर्दन।

मूँडणो – क्रि.– मुंडना, सिर घोटना, ठगना, शिष्य बनाना।

मूंडागे – अव्य. – मुँह के आगे, सामने, सन्मुख।

मूँडा–मूँडी – क्रि.वि.– मुँह पर बात करना, आमना–सामना करना।

मूँडा में – क्रि.– मुँह में।

मूँडावणो – क्रि. – मुण्डन करवाना, धोखा खा जाना, ठगा जाना, चेला बनना।

मूँडावे – क्रि.– मूँडने में आवे, मुँडवाना।

मूँडी – स्त्री.– सिर, गर्दन।

मूँडे-मूँडे – क्रि.वि.– अलग अलग, पृथक् , विभाजन।

मूँडेर – स्त्री.– मुंडेरी, पाली, किनारा।

मूँडो – पु.– मुँह, चेहरा।

मूँडो फाड़ – क्रि.– मुँह खोल, मुँह से बात कर।

मूँडो घुमई के – कृ.– मुँह घुमा करके, मुँह पलट करके, मुँह दूसरी ओर करके।

मुँडो देबाको धरम – मुँह देने का धर्म, किसी की मृत्यु पर परिवार की स्त्रियों का मुँह देना या मृतक के गुण करते हुए रोना।

मुँडो फेरीने – कृ.– मुँह घुमा करके, दूसरी दिशा में मुँह करके।

मुँडो मचकोड़े – अनचाहापन दर्शाना, मुँह बनाना, मुँह बिगाड़ना।
(डेली में बैठा भावज मुंडो मुचकोड़े। मा.लो. 55)

मूतको – पु.– कुल का, कुल से सम्बन्धित।

मूतणो – क्रि.– पेशाब करना।

मूँ – सर्व.– मैं ।

मूतपड़ेलो – एक कडुआ फल।

मूँद – क्रि.– बंद कर।

मूँदड़ी – स्त्री.– अँगूठी, बीटी, छल्ला।

मूँदीद्यो – क्रि.– बन्द कर दिया।

मून – वि.– मौन, चुप, शान्त, नीरवता, मौन व्रत।

मूँ नी चालूँ – स्त्री.– मैं नहीं चलता।

मूपल्याँ, मूफल्याँ – सं. स्त्री.– मुमफली, एक तिलहन, भूमफल।

मूयाँ – सं.ब.व.– दोनों ओर से नुकीली कीलें।

मूयो – पु.– मरा हुआ।

मूरख – वि.– मूर्ख, उज्जड़, अज्ञानी।

मूरछा – स्त्री.– मूर्च्छा, संज्ञाहीन दशा।

मूरत – स्त्री. ए.व.– मूर्ति, प्रतिमा।

मूरताँ – स्त्री.ब.व.वि.-मूर्तियाँ, प्रतिमाएँ।

मूल, मूळ – वि.– जड़, मुख्य, नक्षत्रनाम, खास

मूल नखत्तर – पु.– मूल नक्षत्र, जिसमें यदि किसी बालक का जन्म हो तो पानी झरने की लौकिक रस्म की जाती है।

मूल पुरस – पु.– किसी वंश का आदि पुरुष।

मूल मेट – वि.– जड़ से नष्ट करना।

मूली – पु.– मूला, मूली।

मूवा – वि.– मृतक।

मूसल, मूसलो – पु.– मूसल, ओखली में अनाज कूटने या खाँडने का मूसल।
(मूसला से मारी। मा.लो. 555)

मूसक – पु.– चूहा, ऊँदरा।

मूसो – पु.– चूहा, ऊँदरा।

मे

मेउड़लो – पु.– मेह, वर्षा, ठण्ड में बरसने वाला पानी।

मेख – पु. – कील।

मेंगई – महँगा, महँगाई।
(अणी मेंगई में मरयादा पालो। मो.वे. 40)

मेगरवो – ओस, धूँधल।

मेंगो – वि.– महँगा, बहुमूल्य, कीमती।

मेघ – पु.– बादल, बदरा, बदली।

मेघनाद – पु.– रावण का पुत्र, इन्द्रजीत, बादल जैसी गर्जना करने वाला, गरज।

मेघा – पु.– इन्द्र, मेंढक, बादल।

मेजबान – पु.– मेहमान, अतिथि।

मेजबानी – स्त्री.– अतिथि सत्कार।

मेट, मेठ – पु.– मजदूरों का सरदार।

मेटणो – क्रि.– मिटाना, समूल नाश करना।

मेड़ – स्त्री.– खेतों का सेड़ा, मिट्टी की ऊँची पाली।

मेड़बन्दी – स्त्री.– मेड़ बनाना।

मेंडकमाता – स्त्री.– मालवी के बालगीत जिन्हें बालक वर्षाऋतु लगते ही गाना प्रारम्भ कर देते हैं, डेंडक माता।

मेड़ी – स्त्री.– दो मंजिला मकान।
(ऊँची- ऊँची मेड़ी, चाबेगा बिड़ला। मा.लो. 120)

मेण – पु.– मोम।

मेंणत – क्रि.– परिश्रम, मेहनत।

मेणा दे – रामदेवजी की माता का नाम मेणा दे राणी।
(धणी तम माता मेणा दे का लाड़ला। मा.लो. 656)

मेणावती – स्त्री.– गोपीचन्द नाथ की माता का नाम।

मेतर – पु.– मेहतरानी।

मेतराण – स्त्री.– मेहतरानी।

मेता – पु. – महता, मेहता, सम्मानित पुरुष के लिये विशेषण।

मेताब – पु. –सूर्य, एक प्रकार की आतिशबाजी।
(छोड़ो नी मेताब। मा.लो.270)

मेतारी – स्त्री. - माता, जननी।

मेती, मेथी – स्त्री.– एक सब्जी, दाना मेथी।

मेतो – पु.– मेहता, महता।

मेद – वि.– शरीर में निकला हुआ फोड़ा, गिल्टी, गाँठ, चरबी, मुटाई।

मेंदर – एक कीड़ा।
(मेंदर कान खजूरा।)

मेदा – स्त्री.– गेहूँ का अति महीन आटा।

मेदान – पु.– विस्तृत समतल भूमि, मैदान।

मेंदी – स्त्री.– मेहंदी, एक झाड़ी।

मेदू – स्त्री.– मेहंदी।

मेनत – पु.– मेहनत, परिश्रम।

मेनतानो – पु.– पारिश्रमिक।

मेना – स्त्री.– काले रंग की एक प्रसिद्ध चिड़िया जो मुनष्य की सी बोली बोलती है, सारिका, पुराणानुसार हिमालय की स्त्री और पार्वती की माता, मीणा जाति।

मेंबर – पु.– सदस्य।

मेंबरी – पु.– सदस्यता।

मेमा – न. महिमा, महत्ता, प्रताप, यश, कीर्ति, गौरव, महत्त्व, प्रभाव, शोभा।
(या तो गुलबयारी ने मेमा भारी म्हारी झरणी। मा.लो. 633)

मेंमान – पु.– मेहमान, अतिथि।

मेंमानी – वि.– अतिथि–सत्कार।

मेर – स्त्री.– मेड़, खेत का, मर्यादा, समीप।

मेरबानी – स्त्री.– कृपा , दया।

मेराब – स्त्री.अ.– द्वार आदि के ऊपर की अर्द्ध मण्डलाकार रचना।

मेरी कई – क्रि.वि.– मेरा कथन।

मेरे – सर्व. –पास, नजदीक, निकट, सफल, उत्तीर्ण, समीप।
(बइरा मेरे बेठीगी। मो.वे.52)

मेल – पु.– महल, अटारी, मित्रता, सन्धि।
(मेली गया रे संगवी मेलां अदबीच। मा.लो. 637)

मेलणों – भेजना, रखना, धरना, पहुँचाना, छोड़ना, जमाना, पीटना।
(मेलूँ तो ढाल भराय, ओडूँ तो हीरा खरी पड़े। मा.लो. 350)

मेल दी – क्रि.– रख दी, रख दिया, डाल दिया।

मेलद्या, मेलद्यो – क्रि.– रख दिया, रख दिये, पटक दिया।

मेलबा – क्रि.– रखने हेतु।

मेलणो – क्रि.– रखना।

मेलाँनी – स्त्री.– महलों की।

मेलाँरी – स्त्री.– महलों की।

मेलावी – क्रि.– रखवाई।

मेलिआ – क्रि.– रखकर आ जा।

मेली कुचेली – क्रि.वि.– गन्दी, खराब, मेल से भरी हुई।

मेल्यो – रखा, भेजने वाला, धरना, पहुँचाना, छोड़ना।
(कणी रा भरोसे तम आया प्यारा बनड़ा कणी रा भरोसे घर मेल्याजी बना। मा.लो. 403)

मेवजी – मेघ, बादल, मेह।
(आप वरसो मेवजी धरती नीबजे। मा.लो. 620)

मेवलो – पु.– मेह, मेघ, शीतकालीन वर्षा, बर्फ के साथ ओलावृष्टि।

मेवो – पु.– पानी, मेघ, मेवा, मिष्ठान्न।

मेसरी – स्त्री. - माहेश्वरी या मारवाड़ी जाति के लोग।

मेह – बादल, वर्षा, बारिश, बरसात, मेघ, घटा।

मेंहदी – स्त्री.– मेहंदी।

मेहल – पु.– महल, राजभवन।

मेहर – वि.– दया, कृपा, जिसकी कोई सीमा न हो, मुसलमानों की शादी में दिया जाने वाला स्त्री धन।

मेहलाँ आजोजी – पद. – मेहलों में आना या पधारना जी।

मेहुलो बरसे – क्रि.वि.– मेह बरसता है।

मेहतारी – स्त्री.– माता।

मो

मों – सर्व.– मुझे।

मोऽ – वि.– मोह , ममता, प्रेम।

मोइल्यो – क्रि.– मोहित कर लिया, मोह लिया।

मोइत–वेग्यो – क्रि.– मोहित हो गया।

मोइतो – गंदा चिंदा।

मोकरो – अधिक, बहुत, प्रचुर, बहुत सारा, विस्तृत, फैला हुआ।

मोकल, मोकलो – क्रि.– भेज, भेज दो। (हमारा नाराणजी भूका रे लाड़ी ने मोकलो लाड़ी रा काकासा भूका रे लाड़ी ने मोकलो। मा.लो. 432)

मोको – सर्व.– मुझको, वि. -उचित समय, अवसर, ताक।

मोख – पु.– मोक्ष, मोरी या नाली से पानी के बहाव का मुख।

मोखलो – क्रि.– भेजो।

मोखिक – पु.– जबानी, कण्ठस्थ।

मों गई – वि.– महँगाई, हर प्रकार की वस्तु की कीमतें बढ़ना।

मोगर – स्त्री.– मूँग या उड़द की छिलका रहित दाल।

मोगरी – स्त्री.– पापड़ या आटा कूटने के लिये बनाई गई लकड़ी का घननुमा हथौड़ा, एक प्रकार की सब्जी जो मूले से फल के रूप में पैदा होती है, लकड़ी का धोवना।

मोगरो – पु.– एक सुगन्धित पुष्प।

मोंगलो – पु.– मूँग, एक दलहन।

मोंगा, मोंगो – वि.सं.– महँगा।

मोग्घम – वि.–अनिश्चित, ऊपर–ऊपर, गुपचुप।

मोच – स्त्री.– शरीर के किसी अंग के जोड़ का कुछ भाग इधर–उधर हट जाना, लचक जाना।

मोचा – वि.– किसी बर्तन के गिर जाने या पत्थर आदि की चोंट लग जाने के कारण उसमें पड़ने वाला गढ़ा या चपटापन।

मोची – पु.– जूता बनाने या दुरुस्त करने वाला व्यक्ति, चमड़े का काम करने वाला।

मोज – स्त्री.अ.– लहर, तरंग, मन की उमंग, मनोरंजन।

मोजकरो – क्रि.– आनन्द में रहो, सुखी रहो।

मोजड़ी – स्त्री.– जूती, सलमा–सितारे जड़ी हुई सुन्दर जूतियाँ।

मोजा, मोजो – पु. – जूते या बूँट के पहले पहने जाने वाला एक वस्त्र विशेष, गाँव, हलका, पटवारी को दिये गये गाँव का नाम, देहात।

मोजी – मनमौजी, स्वेच्छाचारी, तरंगी, मस्तराम, मन में उमंग रखने वाली, बेपरवाह, आनन्द से रहने वाला।

मोजूद – वि.– उपस्थित, विद्यमान, तैयार

मौजूदा – वि.–वर्तमान समय का, इसी समय का।

मोट – पु.– एक प्रकार का अन्न।

मोटकी – बड़ी, बड़ी सौत, सोतन के लिये मालवी सम्बोधन, घर में जो बड़ी बहू होती है या बड़ी बेटी होती है। (मोटकी हरामजादी माँडे झगड़ो। मा.लो. 582)

मोट्यार – वि.– युवा, जवान, मुटियार।

मोटा – वि.– बड़ा, जाड़ा, तगड़ा, सबल और सम्पन्न।

मोटाजी – पु.– पिता के बड़े भाई के लिए सम्बोधन।

मोटा घर की नार – पद. – बड़े घर की स्त्री, बेटी।

मोटा रावले – पु.– बड़ा घर, राजमहल, रावला, रनिवास।

मोटा वऊ – बड़ी बहू, पाटवी बहू, सबसे बड़ी बहू। (मोटा वऊ वाया। मा.लो. 601)

मोटी – वि. – बड़ी, महान्, उदार, प्रतिष्ठित, जो पद में, धन में बड़ी हो, जेठानी।

मोटी मोटी – क्रि.वि.– बड़ी–बड़ी, बड्डरी।

मोटे ठाम – वि.– बड़ा घर, बड़ी घुड़साल।

मोटो रावलो – बड़ा घर, राजमहल, रावला, गढ़, हवेली, कोट।

मोठ – हल्दी, पीठी, उबटन। (आई वणजारा री मोठ उतरी वड तले। मा.लो. 371)

मोड़ – पु.– मालवा की एक वाणिक जाति, मोड़ बनिया, क्रि.- मुड़ना, घुमावदार रास्ता, दूल्हे के सिर पर धारण रखाया जाने वाला मुकुट, शिरोभूषण, आम्र मंजरी, मुकुट।

मोड़णों – क्रि.– तोड़ना, बिगाड़ना, मोड़ देना, घुमा देना।

मोड़ी – स्त्री.–दुल्हन के सिर पर धारण करवाया जाने वाला मुकुट, किरीट, तुर्रा या शिरोभूषण, वि.- देरी, विलम्ब, जिसके सिर पर प्राकृतिक रूप से तुर्रा या मोड़ हो जैसे मोर के सिर की मोड़ी, एक पुरानी लिपि।

'मो'

मोड़ो – वि.– देरी, विलम्ब।

मोण – पु.– गूँथे हुए आटे में डाला जाने वाला घी या तेल जिसके कारण उससे बनने वाली वस्तु खस्ता या मुलायम हो जाती है।

मोण्याँ में जा – वि.– श्मशान में भेजने सम्बन्धी एक गाली, अभिशाप।

मोत – सं.– मृत्यु, मरण।

मोताज – वि.– पराश्रित, आश्रित, आधीन, मोहताज, दरिद्र।

मोती – वि.– समुद्री सीपों से निकलने वाला एक प्रसिद्ध बहुमूल्य रत्न

मोतीचूर – पु.– बेसन की, घी या तेल में तली हुई बुँदिया जिसे शकर की चाशनी पिलाकर लड्डू बनाये जाते हैं।

मोतिंगो, मोथिंगो – पु.–खेतों में उगने वाला खरपतवार, एक प्रकार की घास जिसकी जड़ की गाँठें बड़ी सुवासित होती हैं जो हवन शान्ति की सामग्री में मिलाई जाती है।

मोती पोवणाँ – चुगली करना, बुराई करना।

मोत्याँ बई – सं. स्त्री.– स्त्रीवाचक नाम रखने की परम्परा।

मोत्याँ वालो – जिसके साफे में बहुमूल्य मोतियों की (रत्न) लड़ियें लगी हो। (ऐसे पति)। (मोत्याँ वाला से खेलुँगा फाग। मा. लो. 580)

मोत्यो लाडू – मोतीचूर के लड्डू, बारीक नुक्ति के लड्डू, रंग-बिरंगे मोतीचूर। (मोतीलाल रे पातल चाट मोत्याँ लाडू भावेगा। मा.लो. 436)

मोथो – पु.– जल में होने वाली घास की जड़ों की गाँठें जो बड़ी सुगन्धित होती है।

मोद – वि.– प्रसन्नता, आनन्द, उल्लास, खुशी।

मोदक – पु.– लड्डू।

मोन – पु.– चुप, शान्त, गूँगा, मौन।

मोंपास – वि.– मोहपाश, मोहजाल।

मोंपे – सर्व.– मुझ पर।

मोंफत – वि.– मुफ्त, निःशुल्क।

मोव्बत – वि.– मुहब्बत, प्रेम।

मोंबदलो – वि.– अदला–बदली, बदले में, आपस में किसी वस्तु का परिवर्तन करना, बदलना।

मोम – पु.फा.– वह चिकना पदार्थ जिससे शहद की मक्खियों का छत्ता बना होता है, वि. - कोमल यथा मोम सो दिल।

मोम कप्पड़ – पु.फा.– मोम लपेटा हुआ मोटा कपड़ा।

मोमणो – पु.– मिट्टी का बड़ा घड़ा या मटका।

मोयन बेड़ो – मनोहर बड़ा पानी का मटका वाला बेड़ा।
(हाथ में हरियालो चूड़ो माथे मोयन बेड़ो जी। मा.लो. 617)

मोंयरे – सर्व. –अरे, मुझे।

मोंय – सर्व.– मुझे।

मोया – मुंज।
(मोया का हमारा कमर कसोटा। मा.लो. 103)

मोंये – सर्व.– मुझको।

मोयां – स्त्री – लोहे की कीलें – जिसके दोनों ओर नुकीलापन होता है।

मोर – पु.– पीठ, मयूर, मोहर।

मोर्‌यो – पु.– मोर, मयूर।

मोर्‌या – पु.ब.व.– बहुत से मोर, मयूर, स्त्री.- मोरनी, एक सुन्दर प्रसिद्ध नाचने वाला बड़ा पक्षी।

मोरचा, मोरचो – पु.फा.– लोहे पर चढ़ने वाला जंग, नाकाबंदी, सेना द्वारा अपने लिये जमाया हुआ सुरक्षित स्थान।

'मो'

मोर छल – पु.– मोर के पंखों से बनाया हुआ चँवर, पंखा।

मोरत – पु.– मुहूर्त, लग्न।

मोरत्यो – पु.– मुहूर्त देने वाला ज्योतिषी या ब्राह्मण आदि।

मोरतरी वेला, मोरतरो समय– मुहूर्त की बेला या समय।

मोरनी सरीखी – स्त्री.– मयूरी सदृश, मोरनी के समान, मोरनी जैसी।

मोरबंद – वि.– जिसे बंद करके ऊपर से मोहर लगाई गई हो, सीलबंद।

मोरबंद्‌यो – क्रि.– जिसके सिर पर मोर बंधा हुआ हो, ऐसा दूल्हा या आम का वृक्ष।

मोरम – पु.– मुहर्रम, ताबूत, बालू रेती।

मोर मुगट – पु.– मोर के पंखों से बना हुआ मुकुट या शिरोभूषण।

मोर्‌यो – क्रि.– चूर रहा, चूर्ण कर रहा, बारीक कर रहा।

मोर्‌यो – पु.– मयूर, मोर, केकी, शिखी।

मोरा – स्त्री.– बैलों के मुँ ह पर बाँधी जाने वाली गुँथी हुई रस्सी का बंधन।

मोराँ – स्त्री.ब.व.– मोहरें, पुराने सिक्के, पीठ।
(मोरा म्हारी कूकड़ी। मा.लो. 616)

मोराँ पाछे कचाल – पु.पद.– पीठ पीछे खुजलाना, अपना कार्य स्वयं करना।

मोरी – स्त्री.– नाली, गटर, गन्दे पानी का नाला, पजामे की नाड़ी पिरोने का स्थान, पाइप का मुँह, पशुओं के मुँ ह पर बाँधी जाने वाली रस्सी जिसे विशेष प्रकार से गूँथकर बनाया जाता है।

मोरो – बैलों के मुँह पर बाँधी जाने वाली गुँथी हुई रस्सी, मोरा।

मोर्यो – मयूर, मोर, आम के मोर।

मोलई – क्रि.– मोल किया, भाव किया, मूल्य किया।

मोल – वि.– मूल्य आँकना, मोल लेना, मोल, कीमत, भाव, दर।

मोल – खरीदकर, मूल्य देकर, कीमत, महत्त्व, भाव, दर।
(म्हारा तो वीराजी थाने लाया हे मोल। मा.लो. 483)

मोलत – मोहलत, अवधि, रिआयत, मियाद, समय की छूट।

मोलवी – पु.– मुस्लिम धर्मशास्त्र का आचार्य, मूल्य किया हुआ।

मोलवे – क्रि. – मोल करे, मूल्य ठहरावे।
(सोनो यो मोलवे। मा.लो. 637)

मोल लई लो – क्रि.– क्रय कर लो।

मोल्ड़ी – स्त्री.– मोरनी, दुल्हन का सेहरा।

मोल्यो, मोल्या – वि. – नपुंसक व्यक्ति, उदास या सुस्त व्यक्ति।

मोल्ली, मोल्लो – वि.– ज्वार या गेहूँ में लगने वाला कायमा रोग विशेष, गेरुआ रोग, फसल का रोग जिसमें हजारों कीट एक साथ लगकर फसल नष्ट कर देते हैं।

मोला – पु.– ताजा, सहायक, मददगार, मित्र, सेवक, स्वामी, मालिक, ईश्वर, परमात्मा, बेस्वाद।

मोलाणो – क्रि.– किसी के दिये हुए रुपयों को वापस न करते हुए उनकी एवज में कोई वस्तु की अपेक्षाकृत कम मूल्य की ही, दे देना।

मोलानो – पु.– मुस्लिम धर्मावलम्बी आचार्य या मौलवी, धार्मिक व्यक्ति, क्रि. मोला किया।
(घोड़ी मोलावे। मा.लो. 191)

मोली – स्त्री.– जलाऊ लकड़ियों का गट्ठर, भारा, बोझा, ताजा।

मोलीछा – स्त्री.– ताजी छाछ या मट्ठा।

मोळू – पु.– आँवल, गाड़ी की नाव में लगने वाला लोहे का गोल यंत्र।

मोल्यो – वि.– जो पत्नी को वश में नहीं रख सके , निर्बल, नपुंसक स्त्रियों के जैसे लक्षण वाला, जोरु का गुलाम।
(मोल्या ने घुटकावे म्हारा राज। मा.लो. 158)

मोवणी, मोवनी – स्त्री.– मोहित करने वाली स्त्री, काली तम्बाखू।

मोवन भोग – पु.– दूध शक्कर तथा घी में बनाया हुआ हलुआ, एक मिष्ठान्न।

मोवन माला – स्त्री.– सोने के दाँतों की बनी हुई माला।

मोवे – क्रि. – मोहित करें, विमोहित करें।

मोसमी – वि.– ऋतु अनुसार, मौसम की वस्तु, मोसम्बी नामक फल।

मोसर – वि.– उत्तर संस्कार, मृतक भोज या श्राद्ध कर्म।

मोसर मंडायो – क्रि.वि.– उत्तर संस्कार करने की योजना बनी, मोसर करना तय हो गया।

मोसारो – वि.– मौसाजी की ओर से लड़की एवं उसके परिवार को दिये जाने वाले वस्त्रालंकार आदि।

मोसाय – वि.– महाशय जी।

मोसेरा भई – पु.– मौसी का लड़का, भाई।

मोहन – पु.– श्रीकृष्ण।

मोहब्बत – पु.– प्रेम, प्यार।

मोहर्रि र – पु.– गुमास्ता, मुनीम।

मोहनियाँ – वि.– मोहित करने वाला, श्रीकृष्ण।

म्याना पालकी – म्याना बंद पालकी जिसमें खिड़कियाँ हों।
(जेठ देवर म्याना पालकी सुसराजी घोड़ी ले सवार। मा.लो. 213)

म्हाने – सर्व. – मुझे, हमको, हमें।

य – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला में य वर्ग का प्रथमाक्षर।

यग – न. – यज्ञ, एक वेदोक्त कर्म, हवन, यज्ञ करना।

यच्छ – पु. – यक्ष।

यतिम – न. – अनाथ, अनाथ बालक।

यम – पु. – यमराज।

यमदूज – स्त्री. – यम द्वितीया, भाई दूज।

या

या – अव्य. – अथवा, यह।

याँ – सर्व. – यहाँ।

याँई – सर्व. – यहीं।

या अई – स्त्री. – यह आई।

या कई – क्रि. – यह कहा।

या कईं – प्र.सर्व. – यह क्या, यह कौन सी।

या कईं रम्मत – सर्व. – यह कैसा खेल।

याचना – क्रि. – माँगना।

याँज लगऊँ – क्रि. – यहीं से शुरू करूँ, यहीं से प्रारम्भ करूँ।

याँज – सर्व. – यहीं।

यातना – ना. – कष्ट, पीड़ा, दुःख, तकलीफ।

यातरी – पु. – यात्री, किसी देवस्थान पर यात्रा करने वाला।

याँती – सर्व. – यहाँ से।

यातो – अव्य. – यह तो।

या तो नी खी – क्रि.वि. – यह तो नहीं कहा।

याद – पु. – स्मरण।

यादगिरी – यादगार, याददास्त, स्मृति, स्मरण शक्ति, चिह्न।

यादरे – क्रि. – याद रहे, स्मरण रहे।

याददास – स्त्री. – स्मरण शक्ति।

यादी – स्त्री. – स्मरण रखने की सूची।

यादो – क्रि. – यादव, अहीर।

याँ पे – पु. – यहाँ पर।

या यो – क्रि. – आया, आयो।

यार – पु. – मित्र, सखा, दोस्त।

यारी – स्त्री. – मित्रता।

याँ रुकनो – क्रि.वि. – यहीं रुकना, यहीं ठहरना।

या ले – पु. – यह ले, यह लो।

याँ से – क्रि. – यहाँ से।

याँ सूँ – सर्व. – यहाँ से।

यु/यू

युवराज – पु. – जीवित राजा का उत्तराधिकारी, ज्येष्ठ पुत्र।

युवा – वि. – युवक, जवान।

यूँई – अव्य. – इसी तरह, बिना काम से।

ये/यो

येंका वस्ते – क्रि.वि. – इसके लिये, इसलिये, इसके वास्ते।

यें ती वें – सर्व. – यहाँ से वहाँ तक, इधर उधर।

यें वें – अव्य. सर्व. – यहाँ वहाँ।

यो – यह।

यो ऊहे – अव्य. – यह वही है।

योज – सर्व. – यही, ये ही।(बेटो भी तो योज हे। मो.वे.79)

योजन – नं. – दो, चार या साठ कोस की दूरी।

यो तो – क्रि.वि. – यह तो।

यों – अव्य. – ऐसे।

यो तो मूँ – पु. – यह तो मैं।

यो ढबेज नी – क्रि.वि. – यह बैठता ही नहीं, ठहरता ही नहीं।

योवरा – पु. – कोठा, कमरा।

योनी – स्त्री. – जन्म, जाति से उत्पन्न, स्त्री का गुप्तांग।

र – य वर्ग का व्यंजन।

रई – स्त्री.– राई, रहना।

रईग्या – पु.ब.व.– रह गये, ठहर गये।

र्‌यईग्या – क्रि.ब.व.– रिसा गये, रुष्ट हो गये, नाराज हो गये।

रई-रई ने – रह-रहकर।

रइवर – पति, दूल्हा, राजा, शौहर। (रइवर धीरे-धीरे आया। मो. वे. 35)

रईस – वि. –अमीर, धनी, ऐश्वर्यवान।

रऊँ – क्रि.– रहता हूँ।

रंक – वि.– गरीब, निर्धन, क्षुद्र, तुच्छ, धनहीन।

रकम – धन, मूल्यवान वस्तु, गहनें, रुपयों की अधिक तादाद, धूर्त, बदमाश (भरी रकम की थेली पे। मो. वे.380)

रखणो – रखना।

रकत – पु.– रक्त, लहू, खून, रुधिर, वि.– लाल, रक्त के रंग का।

रकत चंदण – वि.– लालचन्दन, देवी चंदन।

रकत पात – पु.– खून खराबा।

रकबा – पु.– क्षेत्रफल।

रकत बीज – पु.– खटमल, एक असुर।

रकम, रक्कम – स्त्री.– सम्पत्ति, गहना, जेवर, धन की राशि।

रकम भाव – स्त्री.– आभूषण वगैरह।

रकमाँ – स्त्री. ब.व.– गहने, आभूषण।

रकशा – क्रि.– बचाव, रक्षा, रिक्शा, घोड़ा, बग्घी, छोटी मोटी।

रख्यो – क्रि.– रख लिया था, रखा हुआ था।

रख्याऊँ – क्रि.– रखकर आना।

रखवाली – स्त्री.– निगरानी, रक्षा करना, पहरेदारी।

रखवालो – पु.– रक्षा करने वाला, पहरेदार, चौकीदार।

रखड़ी – स्त्री.– सिर का आभूषण। (म्हारी रखड़ी रतन जड़ाजो जी।)

रखावणो – क्रि.– रखवाना।

रखील्यो – क्रि.– रख लिया, किसी वस्तु को अपने पास रख लेना।

रखीसर – पु. (सं. ऋषीश्वर) – नारद ऋषि, बहुत बड़ा ऋषि। क्रि. –रखने वाला, बहुत बड़ा व्यक्ति, एक लोक देवता जिनका थानक मगरिया गाँव में है।

रखेल – स्त्री.– उपपत्नी के रूप में रखी हुई स्त्री, विवाह किये बिना दूसरी स्त्री रख लेना, पत्नी पर लाई गई अनव्याही स्त्री।

रखो – क्रि.– रख दो।

रखोपत – क्रि.वि.– दूसरे की आन या इज्जत रखना, व्यवहार रखना।

रखो हो – क्रि.– रखते हो।

रग – स्त्री.फा.– शरीर की नस या नाड़ी।

रंगई – स्त्री.– रंगने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

रंग–उड़णो – वि. –रंग फीका होना, रंग उड़ जाना या उतर जाना।

रंग खेलणो – क्रि.– फाग डालना, होली खेलना।

रंग चड़्यो – मजा आ गया, तूल पकड़ना, रंगत आना।

रंग–ढंग – क्रि.वि.– हावभाव, लक्षण।

रंग रंगीली – क्रि.वि.– रंगों से सराबोर।

रगड़ खड़के – कृ.– घिस करके, टकराते हुए।

रंगत दोहरी – स्त्री.– टेक को दुहराकर कहना।

रगड़-झगड़ – क्रि.वि.– रगड़ा-झगड़ा।

रगड़्यो – क्रि.– धूल में मिला दिया, रगड़ दिया।

रगड़णो – क्रि. –घर्षण करना, घिसना, पीसना, किसी से बहुत परिश्रम लेना।

रंगत – पु.– मालवी लोक नाट्य का एक शास्त्रीय पक्ष।

रगड़द्यो – क्रि.– रगड़ दिया, घिस दिया।

रगड़ो – क्रि.– झगड़ा करे, भाँग पीसना व पीना।

रंगणो – क्रि.– किसी चीज को घुले हुए रंग में डालकर रंगीन करना।

रंगपंचमी – स्त्री.– फागुन बदी पंचमी, रंग खेलने का दिन।

रंगवा – क्रि.– रंगने के लिये, रंगीन करने के लिये।

रंग-बिरंगा – क्रि.वि.– रंग बिरंगा, भिन्न-भिन्न रंगों वाला।

रंग भर सासरे – पु. – राग रंग की प्रतीक ससुराल।

रंग-मण्डप – पु. – रंग भवन।

रंग मेल – पु. – भोग विलास करने का स्थान।

रंग राता – वि. – भोग विलास करने में लीन।

रंग रूप – क्रि.वि.– रंग तथा रूप, रंग-ढंग, आकार–प्रकार।

रंगारंग – वि.–उत्सव, रंग कार्यक्रम, आमोद-प्रमोद।

रंगारण – स्त्री.–रेंगने वाली स्त्री, रंग में सराबोर होना, रंगारा की पत्नी।

रंगारी – स्त्री.– रंगारे की पत्नी, कपड़ा रंगने वाली स्त्री।

रंगारो – पु.– रंगारा जाति का पुरुष, कपड़े रंगने वाला, रंगकार।

रंगीली – स्त्री.– रंगदार, रसिक स्त्री।

रंगीलो – पु.वि.– रंगा हुआ रंगीन, रंगदार, विलासप्रिय, मजेदार।

रंगेल – वि.– रंगीला, विलासी, रसिक।

रंगो – क्रि.– रंग दो, रंग डाल दो, रंगीन कर दो।

रघु – पु.–अयोध्या के राजा जो श्रीरामचद्रजी के पूर्वज थे।

रघुनाथ – पु.– श्रीरामचन्द्रजी, लोगों का आपस में अभिवादन करने का उच्चारण जे रुगनाथजी की।
(म्हाने वर दीजो रघुनाथ देवर लाला लछमण जी। मा.लो. 683)

रचका – स्त्री.– हरी घास, पशुओं का हरा चारा।

रच्छा – क्रि.– रक्षा, बचाना।

रचना – क्रि.– बनाना, बनाये।

रच्या, रच्यो – क्रि.– बनाया, बनाये।

रची – स्त्री.– बनाई, रचना की, निर्माण किया।

रज – वि.– थोड़ा-सा, धूल का कण, रजोगुण, स्त्रियों का मासिक धर्म, पराग।

रंज – पु.फा. – रंजीदा, दुःख, खेद, शोक।

रंजणो – क्रि. – घुल मिल जाना, मन लग गया।

रजई – स्त्री. – दुलाई, रजाई, ओढ़ने का वस्त्र।

रजक, रज्जक – पु. – रोजगार, काम-धन्धा, रोजी-रोटी, धोबी, कपड़े धोने का पेशा करने वाली जाति।

रजपूत – पु. – राजपूत, क्षत्रिय।

रजवाड़ो – पु. – रियासत, राजाओं के रहने का स्थान, राजा-महाराजाओं या जागीरदारों का निवास स्थान, राजमहल।

रजा – स्त्री. – मरजी, इच्छा, छुट्टी, आज्ञा,स्वीकृति, काम-धन्धा, रोजी, रुजक, रजक।

रजामंद – वि.– सहमत, राजी।

रजामंदी – वि.– स्वीकृति, सहमति, अनुज्ञा, आज्ञा।

रजिस्टर – पु.– सादे कागज की बही, पंजी।

रंजिस – वि.स्त्री.– मनमुटाव, अप्रसन्नता, लड़ाई-झगड़ा, खिन्न, बेर, दुश्मनी।

रंजी – स्त्री.– रम गई, घुलमिल गई।

रंजीग्यो, रंजी गयो – क्रि.– तृप्त हो गया, मस्त हो गया, मन लग गया, मन बहल गया।

रट – क्रि.– एक ही बात रटना, कण्ठस्थ करना, बार-बार बोलना।

रटणो – क्रि.– रटा, कण्ठस्थ किया, रट लिया, बार बार बोलना।

रट लगाड़ी – स्त्री.– रट लगाई, बार-बार कह रहा।

रड़ – क्रि.– रोना, गुनगुनाना।

रड़को – क्रि.– जोर-जोर से रोना, रुदन करना, रुलाई।

रड़णो – क्रि.– रोना, आँसू बहाना।

रड़नो – क्रि.– खटना, रात-दिन परिश्रम करना।

रंडापो – पु.– राँड या विधवा अवस्था, विधवापन।

रड़बड़नो – भटकना, व्यर्थ घूमना।

रंडी – स्त्री.– व्याभिचारिणी स्त्री,नगरवधू गणिका, वेश्या।

रंडी की छोरी – स्त्री.– गणिका पुत्री, वेश्या।

रण – पु.–युद्धभूमि, युद्ध, लड़ाई, कर्ज, खुला मैदान, रणक्षेत्र, निर्जन उसर भूमि। (घोड़ी रा जाया झीणा रण में जुझाणा। मा.लो. 473)

रणकार – वि.–आवाज, ध्वनि, अन्तर्नाद।

रण छत्तर – पु.– लड़ाई का मैदान, युद्ध भूमि।

रणछोड़ – युद्ध से भागना, श्रीकृष्ण का नाम (जहाँ राज करे रणछोड़ नरबदा माई। मा.लो. 260)

रणवास – स्त्री.– रानियों के रहने का स्थान, रनिवास, अन्तःपुर, रानियों का राजमहल।

रण हत्या – वि.– ऋण हत्या, किसी का ऋण रखकर मर जाना।

रणुबाई – गणगौर, पार्वती, गौरी, चैत्र मास में मनाया जाने वाला गणगोर पूजन उत्सव। (रंग का ओ रणुबाई भर्या हो कचोला। मा.लो. 583)

रत करीने – कृ.– मन में प्रसन्नता भरकर, प्रेमपूर्वक।

रतजगो – पु. – रात भर जागना, उत्सव, पर्व।

रतन – पु. – रत्न, हीरा, मणि।

रतन – रत्न, कन्या रत्न, तारा, आँख की पुतली, चन्द्रमा, तारा, अपने वर्ग में उत्तम। (रतन जमई म्हारे आवता हो राज। मा.लो. 468)

रतन जड़ाव – रत्नजड़ित, रत्नों से भरपूर। कानाँ ने झांल घड़ावणो म्हारे झुमणां रतन जड़ाव रे।

रतन तलाव – पु.– रत्न जड़ित तालाब, रत्नों से भरी हुई पृथ्वी की तह, रत्नाकर।

रतन धन – पु.– रत्नों का धन।

‘र’

रत्ती – वि.– तौल का सबसे छोटा अंश, आठ चांवल के बराबर वजन एक रत्ती माना जाता है।

रतनार – वि. – कुछ लाल सुरखी लिए सुन्दरी जिसके मुख एवं आँखों में मदभरी लालिमा अपने यौवन के कारण छाई हुई हो। (रतनार ही नेनाँ झाँके।)

रतनागर – पु.– समुद्र, रत्नाकर। (छेला रतनागर जाँबू मँगाय दो। मा.लो. 15)

रतनावली – स्त्री.– तुलसीदास की पत्नी, रत्न जटिल माला, रत्नों से जुड़ा हार।

रतालू – पु.– शकरकंद, जमीकंद।

रति – क्रि.वि.– रति आनन्द, संभोग।

रति सरीखी – स्त्री. – रति जैसी, रति सदृश, कामदेव की पत्नी रति के समान सुन्दरी।

रती – स्त्री.–चिरमूँ, कामदेव की पत्नी।

रतोंद, रतोन – वि.– एक प्रकार का नेत्र रोग जिसमें सन्ध्या के समय से अस्पष्ट या धुँधला दिखाई देने लगता है।

रथ – रथ एक वाहन, स्पन्दन।

रथयात्रा – स्त्री.– आषाढ़ शुक्ल द्वितीया को होने वाला जगन्नाथजी का रथोत्सव जिसमें उन्हें बिठाकर गुंडीचा मन्दिर ले जाया जाता है।

रथड़ा – पु.ब.व.– रथ, ताँगा, बग्घी।

रदन – क्रि.–रोना।

रंदऊ – क्रि.– पकाऊँ, पकवाऊँ।

रद्द – वि.– बेकार, निरस्त।

रद्दी – वि.– बेकार के कागज, वस्तुएँ, विकृत चीज।

रद्दो – पु.– गारे का लोंदा दीवार पर चढ़ाना, लुगदी, लकड़ी चिकनी करने का बढ़ई का एक औजार।

रंदया हुआ – क्रि.– पके हुए।

रंधाऊँ – क्रि. – बनवाऊँ, रँधवाऊँ, पकाऊँ

रंधाडूँ – क्रि.–पकवाऊँ, बनवाऊँ, रंधवाऊँ।

रंधणो – क्रि.– रंधना, परेशान होना, व्यथित होना।

रंधनवाड़ो – वि.– हमेशा किचकिच व लड़ाई-झगड़े का माहौल।

रंधो – पु.– सुतार का एक औजार जिससे लकड़ी चिकनी की जाती है।

रन – युद्ध लड़ाई, जंगल, वन, झील, खाड़ी।

रन्दो – लकड़ी छीलकर चिकनी और साफ करने का औजार।

रप, रपट – स्त्री.– सड़क की निचली भूमि में पानी के निकास के लिये बनाई गई पुल जैसी सड़क, फिसलन।

रंप – गीली मिट्टी की परत।

रंपई गयो – क्रि.– दब गया, ढँक गया, मिट्टी में दबना।

रपटणो – क्रि.– फिसलना, तेजी से चलना, चिकना स्थान जिस पर पैर फिसलता है, रपटीली भूमि।
(रपटे म्हारा पाँव।)

रपस्यो – क्रि.– मुकर गया, मनाकर गया, फिसल गया।

रफटगी, रफटी गई – स्त्री.– फिसल गई।

रफत – आदत, अभ्यास, स्वभाव।

रफा-दफा – वि.– दबा देना या शान्त करना, किसी भी मामले को दबा देना।

रफू – क्रि.– फटे हुए कपड़ों को ठीक करना।

रफू चक्कर – वि.– चंपत, गायब होना, भाग जाना।

रव्वड़ – पु.– वट की जाति का वृक्ष, इसके दूध को सुखाकर रबर बनाया जाता है।

रबड़नो – भटकना।

रव्बो – वि.– पतली वस्तु, चिकनी वस्तु जिसे जितना खींचों उतनी लम्बी या पतली हो जाती है।

रंभा – स्त्री.– केला , गौरी, वेश्या, एकप्रसिद्ध अप्सरा।

रंभाणो – क्रि.– गाय का चिल्लाना, रंभाना

रमझम – छमाछम नाचना-कूदना, रुमझूम करते हुए लटके से नाचना।
(बना की घोड़ी रमझम करती जाय मा.लो. 377)

रमकू–झमकू – सं.– नाम।

रमकूड़ी–झमकूड़ी – स्त्री.– स्त्रियों के नाम।

रमझोला – नुपूर, झाँझर, पायल, नाचना-कूदना, हँसना खेलना आदि मनोरंजन।
(म्हे तारा री रमझोला झमका ती जाऊँ रे। मा.लो. 563)

रमण कन्या – क्रि.वि.– सम्भोग किया, रति सुख भोगा, खेले।

रमणीक – वि.– सुन्दर, रम्य, मनोहर, मन को अच्छा लगने वाला।

रमणो – क्रि.– रमण करना, आसक्त, खेलना।
(को तो दादाजी हम रमवा ने जावां। मा.लो. 600)

रमता – खेलते हुए।
(म्हारी परीमाता ने देख्या सुतार्या रा मड़ में। मा.लो. 98)

रमता डावड़ा – पु.– घुमक्कड़ लड़का, इधर-उधर घूमता रहने वाला बालक, चंचल बालक।

रमता राम – वि.– जो बराबर घूमता-फिरता हो जैसे रमता जोगी जो स्थिर न रहे, चंचल।

रम्मक–झम्मक – क्रि.वि. – अपने पैरों की पैंजनी को बजाती चलने वाली स्त्री, नाज नखरे वाली स्त्री।

रमाँगा – क्रि.– रमण करेंगे, खेलेंगे।

रमाड़णो – खिलाना, रमाना, फुसलाना, मौज कराना।
(आँगणे रामाड़ोगा तो खोपरो खवाड़ी दऊँगा। (मा.लो. 493)

रम्याँ–रम्याँ – क्रि.वि. – खेलते-खेलते।

रयई – स्त्री. – रिसा गई, गुस्से में आ गई

रय्यत – पु. – प्रजा, जनता, रियाया।

रयाँ करे – क्रि. – रहा करे, रहें।

रयो – क्रि. – रहा, ठहरा, रह गया।

रीयावणो – वि. – मनोहर, सुहावना, रमणिक, अच्छा, सुन्दर।
(वानो हे रीयावणो। मा.लो. 208)

रळकता – वि. – फिसलता, फिसलते, झूलते, खिसकते, लुड़कते।
(नागजी बिजली सो चमके नागजी रलके हो। मा.लो. 92)

रळकता-केस – वि. – कन्धे या कमर तक झूलता या लटकते हुए केश, बाल।

रलक्यो – बच्चों की छोटी गुदड़ी।

रलनो – क्रि. – फैल जाना, मिल जाना, लुढकना, शामिल हो जाना, फैलना।
(ईं की माँग को कुंकू परसीना से रलीग्यो। मो.वे.54)

रल्यो – वि. – बदमाश, दुश्चरित्र, ठिलवई करने वाला, बेशर्म।

रळी – स्त्री. – इधर-उधर आमोद-प्रमोद करने वाली स्त्री, क्रीड़ा करने वाली।

रळे – क्रि. – परिश्रम करे, श्रम में लगा रहे, परेशान रहे।

रवइयो – पु. – चाल-चलन, रंग-ढंग, तरीका।

रवन्नो – पु. – वह कागज जिस पर बेचे हुए माल का ब्यौरा लिखा रहता है।

रवन्नो कटाणो – क्रि. – पशुओं आदि वस्तुओं के क्रय-विक्रय क परवाना या पार पत्र बनवाना।

रवरगण्ड – वि. – एक गाली, आवारा या बेशर्म।

रवाल – स्त्री. – रवादार, दानेदार, जर्दे की रवाल या चूरा।

रवालचाल – वि. – घोड़े-घोड़ी के चलने का एक तरीका या चाल।

रवानगी – स्त्री. – विदाई, भेजना या रवाना करना, प्रस्थान।

रवाना – क्रि. – प्रस्थान, प्रस्थित, चल देना, चले जाना।

रवी – स्त्री. – दही बिलौने का यंत्र, छाछ बिलौनी, मथनी, मथानी,पु. – सूर्य।

रवे-अई – क्रि.वि. – पशुओं का काम क्रीड़ा हेतु तैयार होना।

रवो – पु. – गेहूँ का दलिया, रवा, बहुत मोटा अन्न कण, दाना, अनाज का बारीक कण।

रस्ता में – पु.– रास्ते में, राह में, मार्ग में।

रस्ते चलते – क्रि.वि.– राह चलते, मार्ग में।

रस्तो बताव – क्रि.– रास्ता बताओ, मार्ग बतलाना।

रस्तो रुक्यो – क्रि.वि.– मार्ग रुक गया, राह बन्द हो गई।

रस्सो – स्त्री.– रस्सी, सूत या पटसन से बना रस्सा।

रस में बस – क्रि.वि.– रस में विष घोलना, आनन्द की अवस्था में व्यवधान डालने का प्रयास करना।

रसाण – पु.– रसायनशास्त्र।

रसातल – स्त्री.– नीचे के सात लोकों में से छटा लोक।

रसालो – पु.– रिसाला या अस्तबल, घुड़साल।

रसाव – पु.– रिसन।

रसिया – पु.– प्रियतम, रसिक, प्रेम।

रसियो – पु.– फागुन मास में गाये जाने वाले होली के गीत, फाग या रसिया।

रसीद – स्त्री. किसी चीज की प्राप्ति या पहुँच का पत्र।

रसीलो – वि. – रसिक, शृँगार, रसदार, प्रिय।

रसूम – पु.– प्रचलित प्रथा या विधान के अनुसार किसी को दिया जाने वाला धन।

रसूल – वि.– ईश्वर, परमात्मा।

रसोइया – पु.– रसोई बनाने वाला।

रसोड़ादार – रसोई की स्वामिनी, भोजन बनाने वाली, रसोईदार, रसोईया।
(जेठजी दिल्ली का चोधरी मारुजी तो जेठाणी रसोड़ादार। मा.लो. 482)

रसोड़ो – रसोईघर, भोजनशाला, रसोई।

(रसोड़ो करंता भाबज बाई बोल्या। मा.लो. 660)

रस्तो – रास्ता, मार्ग, पथ।
(हम तो हमारा रस्ते-रस्ते जइऱ्या था। मो.वे. 50)

रंग – आनन्द, मजा, उत्सव, मस्ती, उत्सव, विनोद, नाटक, अभिनय, नशा, असर, तुरुप।
(हूँ बलिहारी दो जणा माई रंग रो वदावो।)

रंगमेल – रनिवास, राजभवन, राजा-रानी का निवास।
(ई तो रंग मेलाँ से केसर वऊ जागीय। मा.लो.330)

रंग्या चंग्या – रंग बिरंगे, होली के रंग में रंगे हुए, बहुरंगी, छेल छबीला।
(नानी मोटी खटोलड़ी ने रंग्या चंग्या पाया जी। मा.लो. 307)

रंगरूट – न.–सेना में नया भरती किया जाने वाला जवान। (रंगरूट–मो. वे.52)

रंथाणो/रंदाणो – किसी खाद्य पदार्थ को पकाना, भोजन बनवाना, खिचड़ी, घाट, दलिया, इत्यादि पकाना।

रहंट – पु.–चरसी, चरखा, गडारी, अटेरन, रहँट, बाल्टियों की माला द्वारा कुँए से पानी निकालना।

रहन – वि.–गिरवी या बन्धक रखी जाने वाली वस्तु।

रहम – दया।

रहस – वि.–रहस्य, गुप्त बात।

रहवासी – वि.–निवासी, रहने वाला, बाशिन्दा।

रह्या – वि.–रहे, रह गये।

रहिजे – क्रि.–रहिये, रहना।

रहीम – वि.अ.–कृपालु, दयालु, पु.–ईश्वर का एक नाम।

रह्वास – पु.–निवास, रहने का स्थान।

राऽ – वि.–राय, मशवरा, सलाह, एका।

राई – स्त्री.–एक तिलहन, रई, बघारने की तिलहन।

राईवर – वि.–प्रेमी, श्रेष्ठ पुरुष।
(जोसी रो घर म्हारा राईवर दूर वसे है। मा.लो. 703)

राऊ – पु.–नवग्रहों में से एक राहू, इन्दौर का एक उपनगर राऊ (महू)।

राकस – पु.–राक्षस।

राख – स्त्री.–भस्म, राख, खे-खार, गरद।

राखड़ी, रखड़ी – वि.– स्त्रियों की वेणी में गूँथने का सोने का बना एक आभूषण, सिरो भूषण।
(म्हारी रखड़ी रतन जड़ाजो जी।)

राखणो – क्रि.–रखना, रक्षा करना, बचाना, छिपाना, रोकना।
(बालक होवे तो राखलाँ बाईजी जोबन राख्यो नी जाय। मा.लो. 470)

राख्यो – क्रि.–रख लिया, रखवाली करना, रखा, बचाया, पोषण करना।

राख रखोपत – क्रि.वि.– आपस में एक-दूसरे की बात रखना, इज्जत रखना।

राखी – स्त्री.–रक्षाबन्धन का सूत्र।

राखीद्यो – क्रि.–रख दिया, जहाँ से कोई वस्तु उठाई थी वहीं रख दी गई।

राखीली – क्रि. –रख ली गई, किसी वस्तु को अपने पास रख लेना।

राखे – क्रि.–रखे, रख लिये।

राखोड़ा में लोटनो – किसी मृतक का श्राद्ध न करने का उपालंभ, मृतक की अस्थियों को राख में दबा होना जिसका क्रिया-कर्म न होना।

राखोड़ी – राख का ढेर, कण्डे, उपले या लकड़ी की भस्मी या राख।

राखोड़ो – न.– राख, जले हुए उपले का शेष अंश, भस्म, वानी, धूल।

राखोड़ो नाँकी देगा – क्रि.वि.–राख डाल देग, वि.–इज्जत धूल में मिल जाएगी।

राग – पु.सं.– प्रिय वस्तु के प्रति होने वाला मन का भाव या झुकाव, ईर्ष्या और द्वेष, प्रेम, अनुराग, मोह, अंगराग, रंग विशेषतः लाल रंग, महावर, संगीत में स्वरों के विशेष प्रकार और क्रम या निश्चित योजना से बना हुआ गीत का ढाँचा, भारतीय संगीत अनुसार छः राग।

रोंगस – पु.– दैत्य, दानव, राक्षस, असुर, क्रूर पापी।

रोंगसी – स्त्री.– राक्षसी, दानवी।

राँगा – क्रि.ब.व.– रहेंगे, निवास करेंगे, स्त्री.- पैरों की दोनों जंघाएँ, एक धातु जिसके बर्तन आदि वस्तुएँ बनती हैं।

रागीर – पु.– राहगीर, यात्री, पथिक, बटोही।

राच – क्रि.– उगड़ना, रचना, जैसे मेहंदी का रंग उगड़ना या खिलना।

राचणो – क्रि.– राचना, रंग उगड़ना।

राचड़ा – कृषि आदि के उपकरण या खिलना।

राच्यो – वि.– मेहंदी ने रंग दिया, रंग खिला।

राचणी, राचनी – स्त्री.– रंग देने वाली मेहंदी या हल्दी।

राची – स्त्री.– रंग दिया, उगड़ी।

राछ / राछड़ा – पु.– बर्तन भाण्डे आदि, राछड़ा, दैनिक उपयोग के बर्तन, कृषि यंत्र।

राछस – पु.– राक्षस, दैत्य, दानव, पापी, दुष्प्रकृति का मनुष्य।

राज – राजा, राज्यपति, नरेश, नृप, स्वामी। (तू तो राज दिवानजी रा कुकडा नचीत बोल। मा.लो. 438)

राजकरण – क्रि.– राज्य करने के लिये।

राज करनो – राजा की हैसियत से राज करना, दीपक को बुझाना, आराम करना, मौज करना, रजस्वला होना, माता-पिता की छत्र छाया का सुख भोगना।

राजकँवरी – स्त्री.-राजकुमारी, राजा की पुत्री।

राजगद्दी – स्त्री.– राज सिंहासन।

राजनीत – स्त्री.– राज्य की नीति।

राजपाट – पु.– सिंहासन, राज्याधिकार।

राँज – वि.– झाड़ी से बनी गुफा।

राजपथ – पु.– राजमार्ग, प्रमुख पथ।

राजपुतानो – पु.– राजस्थान राज्य।

राज रीत – न. राजा के दरबार की रीति, राजाओं की रीति या भाँति।

राजल बेन्यां – स्त्री.ब.व.– राजकुमारी सदृश बहिनें, बहिन के लिये सम्मान-जनक सम्बोधन ।

राजल बेनूँली – स्त्री.वि. – राजकुमारी सदृश बहिन, राजल बहिन।

राजवी – पु.– राजा, नृप।

राजसी – वि.– राजाओं के योग्य या राजाओं के समान।

राजस्थानी – पु.वि.– राजस्थान या राजपुताने का, स्त्री.- राजस्थान या राजपुताने की भाषा।

राजहंस – पु.– एक प्रकार का बड़ा हंस।

राजा – राजा, शासक, किसी राज्य या देश का प्रधान शासक।

राजायें – पु.– राजा को।

राजीनामो – पु.फा. – वह लेख जिसे प्रमाण और निश्चय के रूप में मानकर दो विरोधी पक्ष आपस में मिलकर करते हैं।

राजी – पु. – तैयार, स्वीकृति ,रजामंदी।

राजी खुशी – वि. – कुशल, प्रसन्न, कुशल- पूर्वक, सही-सलामत, अपने मन से।

राजी हुई जाओ – क्रि.वि.– तैयार हो जाओ, मान जाओ।

राजो – स्त्री.– राजा, किसी देश या जाति का प्रधान शासक।

राँट अई गई – क्रि.वि.– टेढ़ा हो गया, तिरछा हो गया, झुक गया।

राँटी – स्त्री.– टेढ़ी, तिरछी।

राँटो काम – वि.– टेढ़ा कार्य, कठिन काम।

राड़ – वि. – लड़ाई-झगड़ा, वंश परम्परानुसार मनुष्य की होने वाली कद काठी या लम्बाई-चौड़ाई तथा स्वास्थ्य का होना।

राँड – स्त्री.– विधवा, वैधव्य, एक गाली।

राँडक्याँ – स्त्री.ब.व.– लड़कियों को गाली के रूप में सम्बोधित करने का शब्द।

राँडाँ – स्त्री.ब.व. – विधवाएँ, एक गाली।

राड़ी – स्त्री. – घनी झाड़ियों वाला जंगल।

राँडी रोवणो – क्रि.वि.– स्त्रियों का रोना-धोना, स्त्रियों के समान बात-बात पर अपने घर की दशा आदि सांसारिक बातों पर प्रलाप या बकवास करते रहना।

राँडी–राँडका पूत – स्त्री.– विधवा का पुत्र।

राँडी साड़ो – स्त्री.– विधवाओं के पहनने के वस्त्र, सफेद धोती या साड़ी आदि।

राड़ो – पु.– ज्वार या मक्का का सूखा हुआ पौधा या कड़बी।

राण – सं.पु.– गीत कथा हीड़ के अनुसार राजा वैंडराव की राजधानी जो राजस्थान में राण प्रदेश के नाम से जानी जाती है, एक मीठा फल – रैणा, राण, राणा, खिरनी।

राण्याँ सरखी – स्त्री.– रानियाँ जैसी।

राणा – पु.– राजा, नेपाल, मेवाड़, उदयपुर आदि राज्यों के राजाओं की उपाधि।

राणी – स्त्री.–राजपत्नी, राजरानी, रानी, बेगम।

रात – स्त्री. – सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय, रात्रि, निशा।

रातड़्यो – वि.– लाल, लाल रंग का।

रातड्यो तलाव – पु.– ऐसा तालाब जिसमें मिट्टी की विशेषता के कारण उसका पानी लाल रंग का दिखाई देता हो।

रात–दन – क्रि.वि.– हमेशा, अहर्निश, रात-दिन।

रातड़ फाटी – क्रि.वि.– आँखों की लालिमा दूर हुई, आँखें स्वस्थ हुईं, प्रायः सायंकाल होने वाली सूर्य की लालिमा का नष्ट होना, पौ-फटी, प्रातः काल की बेला हुई, कालिमा नष्ट हुई।

रात पड़्याँ – स्त्री.– रात्रि होने पर।
(मेलाँ में राड़ मचावे म्हारा सगा नणदोईसा।)

राती जगो – क्रि.वि.– रात्रि जागरण।

रातूँ रात – क्रि.वि.– रात भर में ही, एक ही रात में किया जाने वाला काम।

राते – स्त्री.– रात्रि होने पर, रात्रि में।

रातो – वि.स्त्री.– लाल, किसी के प्रेम में अनुरक्त।
(हो रातो चूड़ो ने राती काँचली। मा.लो. 542)

राँध – पु.क्रि.– पकाना, राँधाना, भोजन बनाने या राँधना।

राँध्या – क्रि.– बना लिया, तैयार कर लिया, वि. - परेशान कर डाला।

राँधी माँगण – वि.– रो-रोकर खाने वाला, भोजन का तिरस्कार कर उपयोग में लेने वाला, आलसी।

राँधूँ – क्रि.– पकाऊँ, तैयार करूँ।

रान – स्त्री.– जँघा, जाँघ।

रापट-रोल्यो – क्रि.वि. – बना-बनाया काम बिगाड़ देना, आटे में पानी अधिक मिला देना।

रापटा – वि.– दलिया, राबड़ी इत्यादि खाद्य पदार्थों को विकृत रूप में तैयार करना, खाद्य वस्तु को बनाते समय बिगाड़ देना, अधिक पानी मिलाकर पतला कर देना, वि.– झापट या थप्पड़ मारना।

राँपर्‌यो – वि.– घास का काँटा।

राँपी – स्त्री.– चमड़ा काटने का औजार।

राँपो, राँफो – वि.– मूर्ख, अनाड़ी, एक गाली।

राब – स्त्री.– गुड़ की चाशनी से कुछ हल्की

चाशनी लेकर बनाई गई राब, मिठाई, पतला गुड़।

राबड़ी – स्त्री.– मक्का के दलिये की छाच या मट्ठा में उबालकर पकाई गई राबडी, मालवा क्षेत्र का प्रिय खाद्य पदार्थ, राबड़ी के सम्बन्ध में प्रचलित लोकगीत। (केवल पानी में उबालकर बनाई गई हो तो इसे बाटडूँ या बाँटड़ा कहा जाता है।)

राबड़्यो – वि.– किसी के घर पर राबड़ी खाकर उसी का अहित करने वाला व्यक्ति, अनुदार या नुगरा व्यक्ति, पेटू, कृतघ्न।

रा–बाँधी – वि.– विचार किया, एकमत हुए, सोचा, मत को पुष्ट किया।

राम – पु.सं.– श्रीरामचन्द्र, परशुराम, बलराम, दम, तथ्य, हे राम, सत्य, शक्ति, आन्तरिक सत्य, शक्ति, आत्मशक्ति, शब्द से दुखोद्गार। (थाँ में कँई रामनी र्‌यो।)

रामकेणी – स्त्री.– राम कहानी, स्वयं की व्यथा–कथा, आपबीती।

राम चड़ड़ो – लम्बी बात, दुःख की बात।

रामजणी – स्त्री.– वेश्या, रण्डी, गणिका। (रामजणी नचाव रे नाच गाना करा व रे बनी का सेर में। मा.लो. 400)

राम जुवारा – पु. – राम-राम कहकर अभिवादन करना।

रामझारो – ताम्बे-पीतल आदि का लम्बी नली वाला जल पात्र, पानी भरकर काम में लाया जाने वाला पात्र।

राँमताँ, राँमतो – वि. – रंभाता हुआ।

रामदूत – पु. – हनुमान्।

रामदेव – पु. – राजस्थान के प्रसिद्ध राजा जो अपने अलौकिक कार्यों से राजस्थान एवं मालवा में देवता की भाँति घर-घर पूजे जाते हैं, लोक देवता।

राम देवरा – पु.– मारवाड़ में स्थित रामदेवजी का मन्दिर, मालवा एवं राजस्थान के ग्राम-ग्राम में स्थित रामदेवरा नामक देवस्थान या थानक विशेष।

रामनोमी – स्त्री. – चैत्र सुदी नवमी जो रामचन्द्रजी की जन्म तिथि है।

रामप्यारी – स्त्री.– राम को प्रिय लगने वाली सीता या तुलसी दल, पत्नी।

रामपुरी – स्त्री.– अयोध्या, साकेत, रामपुर में बनने वाला चाकू या छुरी।

रामफल – पु.– रामफल नामक फल।

रामबाण – पु.– तुरन्त लाभ करने वाली औषधि, अचूक दवा, अमोघ।

राम रट्या – क्रि.वि. – रामनाम का जाप किया, राम का नाम रटा।

रामरस – स्त्री.सं. – तिलक लगाने की पीली मिट्टी, वि. – नमक।

रामराज – पु. – ऐसा आदर्श राज्य जो सब लोगों के लिये अत्यन्त सुखदायक हो और जिसमें किसी को किसी बात का कष्ट न हो।

राम राम – पु. – नमस्कार, राम की वन्दना, खेद की ध्वनि।

रामलीला – स्त्री. – राम के चरित्र का अभिनय।

रामाण बाँचणो – क्रि.वि. – अपनी पूरी आत्मकथा कहना, रामायण पढ़ना, सुख-दुःख सुनाना।

रामायण – पु. – वह ग्रन्थ जिसमें राम के चरित्र का वर्णन किया गया हो।

रामाजी – पु.वि. – ग्रामीण, अनपढ़, मूर्ख, गँवार।

रामझारो – ताम्बे-पीतल आदि का लम्बी नली वाला जल पात्र, पानी भरकर काम में लाया जाने वाला पात्र।

राय आँगण – रनिवास का बड़ा चौक, महल के आगे का चौक, राज्यांगन। (राय आंगण ढोल वाजे गंगा जीमे झालर वाजे। मा.लो. 134)

राय – राजा, रानी, स्वामिनी, मत, मालकिन, अभिप्राय, सलाह, परामर्श, कायस्थ जाति का पर्याय या सम्बोधन, बधावे में पुरुषों के नाम के पहले सम्बोधन में कहा जाता है।
(राय हो भगवतीलालजी आपरा चौक मे हो राज टुटो म्हारो नवसर्जी हार म्हारा राज। मोती वेराणां चन्दन चौक में हो राज। मा.लो. 467)

रायणचोक – पु. – प्रमुख चौक, चौपालनुमा चारों ओर से बन्द स्थान, खुली चोकोर सार्वजनिक जगह, चौगान, मैदान।

रायतो – पु. – दही में पड़ा हुआ कद्दू या बेसन की बुँदिया।

रायजादो – राजा का पुत्र, राजकुमार, विवाह के समय लोकगीतों में गाया जाने वाला दूल्हे का एक विशेषण।
(जद रायजादो बनो चीरा हो पेरे। मा.लो. 400)

राय देखणी – स्त्री. – राह देखना, रास्ता तकना।

राय रूपा – वि. – चाँदी जैसी उजली।

राय लगा – पु. – राह दिखा, मार्ग बतला, रास्ता दिखाओ, सम्मति दो।

रायलो – वि.– उदार, प्रेमी, मसखरा।

रायाँरा – राजा, बड़ा राजा, श्रेष्ठ राजा।
(बाई सूरजजी रायाँरा आँगणा। मा.लो. 453)

रार – वि.– लड़ाई-झगड़ा।

राल, राल – वि.– थूक, लार, पदार्थ जिसका उपयोग जले अंग पर औषधि के रूप में किया जाता है।

रालणो – बिछाना, डालना, गिराना, ढकना, मिलाना, मिश्रित करना, फैलाना।
(धन रा ख्याली लाल रालोरे जाजम। मा.लो. 482)

राली – न. – बिछाना, गुदड़ी, बच्चों की छोटी गुदड़ी।

राल्या – क्रि.– डाली, फेंकी, बनाई।

राल्यो – क्रि.– पिरोया, बनाया, उलटाया, पलटाया, बिछाया।

रालूँ डोर – क्रि.– डोर या रस्सी पिरोना।

रालो – क्रि.– पिरोओ, बनाओ, वि. -ढेर लगाओ, एक स्थान पर एकत्र करो।

राव, रावजी – पु.– राजा, ढोल बजाने वाला ढोली या राव, राव जाति का मनुष्य, जागीरदारों की उपाधि, सम्मानसूचक शब्द।
(कणी हो नगरी रा तम तो रावजी।)

रावटी – स्त्री.– छोटा तम्बू, छोलदारी, छोटा घर, बारह दरी, छावनी, ग्रामनाम।

रावण – पु.– लंकापति, वि.- दुष्ट प्रकृति का मनुष्य।

रावण खण्ड्यो – जिसका ऊपर का होठ खण्डित हो, कटा हुआ हो, रदन खण्डित, ओष्ठ खण्डित।

रावत – पु.– छोटा राजा, शूरवीर, सरदार, बड़ा आदमी।
(पल्लो तो पकड्यो रावत भोला को। मा.लो. 676)

रावतमाल – पु.– मालदेव राजा के लिये विशेषण, जोधपुर, एक राजा का नाम।

रावला – पु.ब.व. – राजमहल, भव्य भवन

रावलो, रावरो – पु.– राजा का महल, रनिवास, जागीरदार आदि का निवास स्थान, कुलीन व्यक्तियों के रहने का महल, राजवाड़ा, बहुत बड़ा मकान या भवन, रावल, राजकुल

रास – स्त्री.– रस्सी, रास क्रीड़ा, राशि, ढेर।

रास्तो – पु.– रास्ता, मार्ग, पथ।

रासन – अं.– राशन, खाद्य सामग्री, खाने पीने की वस्तुएँ।

राश्यो/रास्यो – स्त्री.– रस्सी, मोटा, रस्सा, वरेड़ी।
(झूला रास्या बेवड़ा। मा. लो. 607)

‘रा’

रासपिराणी, रासपराणी – स्त्री.– रस्सी और लकड़ी।

रासलीला – स्त्री.सु.– रासधारियों का कृष्ण लीला सम्बन्धी अभिनय करना, कृष्ण चरित्र का स्वाँग भरना।

रासी – स्त्री.वि.– राशि, ढेर, पुंज, समूह उत्तराधिकार, ग्रहों के अनुसार राशि, तल्खी प्रकृत्ति, झगड़ालू स्वभाव का।

राष्ट्र – पु.– देश, राज्य।

राष्ट्रगीत – स्त्री.– राष्ट्र का अभिमान या वंदना गीत।

रादड़ी – रस्सी, पतली रस्सी।

राँगड्यो – भैंसे का तुच्छार्थक नाम। (वागा निरखो नी जाल्याँ झाँको राँगड़िया जमईजी। मा.लो. 517)

राँगड़ीयारो – रंगरेज, छीपा, कपड़े रंगने का काम करने वाला, छोटे लोग, तुच्छ लोग, उद्दण्ड, शूरवीर। (चोपड़-चोपड़ कई करो मारुजी चोपड़ राँगड़ीयारो ख्याल। मा. लो. 482)

राँगा – रहेंगे, रहना, रहते हैं, निवास करेंगे, पैरों की दोनों जंघाएँ। (राँगा राँगा पीयर पड़ोस। मा.लो. 616)

राँघड़ा – शूरवीर, बहादुर। (हो म्हारा रांगडिया जमईसा आपने गाल गावाँ राज। मा.लो. 529)

राँफो – नासमझ, अपढ़।

राँडी रोवणा – व्यर्थ की बातें करना, झगड़े-टंटे की बातें करना, हर छोटी बड़ी बात पर बातें करना, रोते हुए बातें करना।

राँदणो – परेशान करना, व्यथित करना, पकाना, तैयार किया हुआ, राँधना। रोबा पाड़ो, राँदो हो तम।

रांदल वऊ – अच्छी रसोई बनाने वाली। (राँदल वउ वाया छोटी वऊ सींच्या तो जउ म्हारा लेर्यां लेवे जी। मा. लो. 601)

‘रि’

रिप्या – रुपया, रुपये, पैसे। (म्हारी पाँच रिप्या की साड़ी। मा. लो. 507)

रिक्स – पु.– जवाबदारी, जिम्मेदारी।

रिक्शो, रिक्सो – पु.– एक प्रकार का हल्की सवारी जिसे आदमी खींचता है।

रिंगरिंग – क्रि.वि.– छोटी- छोटी बातों पर बहस करना या चिड़ना, पीछे पड़ना।

रिंगणा हरको – वि.– छोटा-सा, घोड़े या गधे की लीद जैसा छोटा, गोलमटोल।

रिझाणो – क्रि.– मोहित करना, प्रसन्न करना।

रिटड़ो – वि.– नाक बहाव।

रिण – पु.– कर्ज, ऋण।

रित – स्त्री.– ऋतु, मौसम, रीति।

रिद सिद दाता – पु.– गणपति, गणेश, लम्बोदर, गजानन, विनायक।

रिन – पु.– कर्ज, ऋण।

रिनी – वि.– कर्जदार, जिस पर कर्ज च़ढ़ा हो।

रिप्या – पु.ब.व.– रुपये।

रिप्यो – पु.ए.व.– रुपया।

रियाणो – पु. - रुठ गया, अप्रसन्न हो गया, नाराज हो गया, सुन्दर।

रिया ढोर जूँ – क्रि.वि.– ढोर के समान रह गये।

रियाँ बळे – क्रि.वि.– ईर्ष्या करे।

रियाया – स्त्री.अ.– प्रजा।

रियायत – स्त्री.– छूट।

रियायती – वि.– जिसकी रियायत दी गई हो, जिसे छूट का लाभ दिया गया हो, वह मूल्य जिसमें किसी विशेष अवसर पर कुछ अंश छूट कर दिया जाता है।

रियासत – स्त्री. वि.– राज्य, देशी राज्य।

रिवाज – पु.अ.– पद्धति, रीति।

रिसई – स्त्री.– रिसा गई, रूठ गई, अप्रसन्न हो गई।

रिसतो, रिस्तो – पु.– रिश्ता, सम्बन्ध, नातेदारी, रिश्तेदारी।

रिस्तेदार – पु.– नातेदार, रिश्तेदार, सगा, सम्बन्धी, समधी।

रिसई जाओ – क्रि.– रूठ जाओ, नाराज हो जाओ।

रिसनो – पु. – किसी पात्र से तरल पदार्थ का धीमे-धीमे बाहर निकलना, रिसना, रिसन।

रिसाणो – नाराज होना।

रिसामो – पु.फा.– घुड़सवार सेना, घुड़साल, विश्राम।

रिसेज घणो – पु. - क्रोध बहुत आता है, क्रोधी, बहुत रिसता है।

रिसोड़्या – पु.– रुठे हुए, क्रुद्ध हुए, अप्रसन्न हुए।

री

रीऽ – वि.– क्रोध, गुस्सा।

रींगणी – स्त्री.– छोटे-छोटे फलों वाली एक लता, छोटी सी, छोटे कद की सी छोटे - छोटे गोलफल।

रींगणो ले ले – क्रि.वि.– एक गाली।

रींछड़ो – पु.– रींछ।

रीजणो – रीझना, प्रसन्न होना, आसक्त होना, मोहित होना, दिल बहलाना, आनंदित होना।
(केसरिया रा नेणाँ में रीज रहूली। मा.लो. 596)

रीजी – वि.– प्रसन्न हुई, रीझी।

रीजे – क्रि.– रहना, निवास करना।

रीजो दूर – क्रि.वि.– दूर रहना।

रीझ – पु.– इनाम, प्रसन्न, मोहित, अनुरक्त, दिल बहलाव।

रीझणो – क्रि.– मोहित होना, अनुरक्त होना, दिल बहलाना।
(पानाजी मीठा बोलो तो बाई थाँपे रिझाणा। मा.लो. 513)

रींट, रींठ – पु.– बाटी सेंकने के लिये कन्डों या उपलों को व्यवस्थित जमाकर उन्हें जलाना और जल जाने पर उन्हें लकड़ी से ठोक पीटकर उन पर बाटी सेंकना।

रींटड़ो – पु.– नाक की गन्दगी।

रीठ, रीठो – पु.– एक प्रकार का फल जिससे कपड़े धोये जाते हैं, अरीठा, अरा रोठ।

रीड़, रीढ़ – पु.– पीठ की हड्डियाँ, रीढ़ की हड्डियाँ, गिरे हुए मकान की जगह।

रीड़ी थकी – घिसने से मजबूत व चिकनी।
(म्हारी रीड़ी सी ढाँकणी फोड़ी हो राज। मा.लो. 557)

रीत – वि.– रीति-रिवाज, नियम, रीति नीति, परिपाटी।
(गीत गाँवा रीत की ने दुणा करस्यां लाड़। मा.लो. 529)

रीत को रायतो – रीति अनुसार कार्य करना।

रीती – स्त्री.– रिक्त, खाली।

रीतो – पु.– खाली, रिक्त।
(जमईजी दौड्या घरे आया तो दुपट्टा मंगाया दुद्या पेड़ा। मा.लो. 522)

रीद सीद – रिद्धि-सिद्धि, गणपति की दो पत्नियाँ, सफलता, धन, समृद्धि, पूर्णता, सुख, सर्व सम्पत्ति।
(प्रथम पुजावण वाला रीद सीद लावण वाला। मा.लो. 465)

रींप – स्त्री.– लकड़ी की पट्टी।

रींप्या – पु.ब.व.– लकड़ी की पट्टी।

रीप लगाना – क्रि.– लकड़ी की पट्टी लगाना।

रीपस ग्यो – पु.– फिसल गये, मुकर गया, मनाकर गया।

रीपसग्या – पु.ब.व.– फिसल गये, मुकर गये।

रीबणो – क्रि.– कष्ट उठाना, दुःख उठाना।

रीबर् यो, रीबीर्‌यो – पु.वि.– दुःख उठा रहा, परेशान हो रहा, कष्ट पा रहा।

रीभर्‌या – वि.– कष्ट पा रहे, दुःख झेल रहे।

रीम – स्त्री.– बीस दस्ता कागज।

रीयाँ बले – क्रि.वि.– ईर्ष्या करे।

रीयो – क्रि.– रह गया, ठहर गया।

रील – स्त्री.– धागे की गिट्टी, धागे की गिरनी।

रीस – वि.– क्रोध, गुस्सा, अप्रसन्न। (म्हारी बई से आड़ा बोलो थाँपर आवे रीस।)

रीसाई गयो – पु.– रुष्ट हो गया, रूठ गया, नाराज हो गया।

रीसाणो – रूठना, क्रुद्ध होना, नाराज होना।

रीसाँ बले – क्रि.वि. - क्रोध में आए, ईर्ष्या करे।

रु/रू

रुआँ रुआँ – क्रि.वि. –रोम- रोम, बाल- बाल।

रुई – स्त्री. – कपास से निकाली गई रुई, क्रि. –रोई।

रूउं रूउं करे – क्रि.वि.– धीमे धीमे रोवे, रोने जैसा उपक्रम करे, रोने का मन करे।

रुँ – पु.– रोयाँ, बाल, रोम, रहूँ।

रुक्को – पु.– कागज के छोटे टुकड़े पर कुछ लिखकर देना, छोटा पत्र, चिट्ठी।

रूँकड़ो – पु.– वृक्ष, रूख।

रूकणो – क्रि.–रुकना, ठहरना, स्थिर होना।

रुकमांगद – पु.– मालवी गीत कथा ग्यारस माता का नायक राजा रुकमांगद।

रूक्योज नी – क्रि.वि.– रूका ही नहीं , ठहरा ही नहीं।

रूकसत – स्त्री.– विदाई।

रूँख/रूँखड़ा – पु.– वृक्ष, झाड़।

रूख कर्‌यो – क्रि.– उन्मुख हुआ, सामने आया, रूख किया।

रूखमण, रूखमणनार – स्त्री.– रूक्मिणीजी, श्रीकृष्ण की पत्नी।

रूँखड़ो – वृक्ष, झाड़, पेड़। (म्हारेजो आँगण रूँखड़ो। मा. लो. 485)

रूँखड़ी – पौधा, छोटा पेड़।

रूँख माँय – पु.– वृक्ष की खोह में , झाड़ में।

रूँखरी – स्त्री.– वृक्ष की।

रूँगचा – पु.– बाल, रोंगटे। (रूँगचा रइग्या आधा। मो. वे.42)

रूँगचा ऊबा वईग्या – क्रि.– रोम खड़े हो गये, बाल खड़े हो गये।

रूँगचा उपाड़ लीजे – क्रि.वि.– एक मालवी गाली, अपशब्द जो संकेतित है।

रूँगचा ले ले – वि.– एक गाली संकेतित अपशब्द।

रूँगटा – वि.– रोंये, बाल, घने केश।

रूँगटा ऊबा वईग्या – क्रि.वि.– किसी डरावनी वस्तु को देखकर बाल या रोयों का खड़े हो जाना।

रूगना – लालच में टकटकी, ताकना।

रूगनाथ – पु.– श्रीरामचन्द्रजी।

रूगनाथजी की जे – पु.– नमस्कार के लिये शब्द।

रूँगा – क्रि. – रहूँगा, ठहरूँगा, निवास करूँ गा।

रूँगावण – क्रि.वि.– कोई वस्तु तौल कर देने पर भी उसमें अतिरिक्त बढ़ोत्री करने की याचना, थोड़ा और डालने की कामना, तौल के अतिरिक्त दी गई वस्तु।

रुच – स्त्री. वि.– रुचिर, मन को अच्छा लगने वाला, प्रेम, चाह, शोभा, कांति।

रुच रुच भोग लगाया– प्रेमपूर्वक या रुचि के साथ भोजन किया।

रुंचला – वि.– काँस, घास, गूँदा नामक घास आदि की जड़ों का समूह।

रूँचला एकठा कऱ्या– क्रि.– खरपतवार इकट्ठी की।

रूजगार – पु.– रोजगार, काम–धन्धा, नौकरी– पेशा, व्यवसाय।

रूजवात – स्त्री.–पड़ताल, प्रत्यक्ष,बातचीत।

रूझान – पु.– झुकाव।

रूठणो – क्रि.– रुठ रहा, अप्रसन्न हो रहा।

रूंड – वि.– परम्परा से आया हुआ, चलन, प्रथा।

रूंड – कटा हुआ मस्तक, सिर, मुण्ड।

रूंडमाला – स्त्री.– नरमुण्डों की माला।

रूंड-मुंड – वि.– हट्टा-कट्टा, अलमस्त।

रूडीमत – वि.– रूढ़ सिद्धान्त, पारम्परिक विचारधारा।

रूड़ो – अच्छा, भला, सुन्दर, श्रेष्ठ, उत्तम, खूबसूरत, स्वस्थ, तंदुरुस्त, सक्षम,

होशियार, चतुर, वीर।
(हमारी गुजरड़ी का सीसज रूड़ा। मा.लो. 430)

रूढ़ि – वि.– चलन, रिवाज, प्रथा।

रूण–झुण – क्रि.वि.– छमछमाट करना।

रूणीजो – राजस्थान में रामदेवजी का स्थान, बीकानेर के पास।
(गऊँडा की लाज घणी मालक राखे राम रूणीजे जाय। मा.लो. 660)

रूत – स्त्री.– ऋतु, मौसम।

रूत आयाँ – स्त्री.– समय आने पर।

रूते बैठी – स्त्री.– स्त्री का मासिक धर्म में होना।

रूतबो – वि.– पद, ओहदा, बड़प्पन।

रुदन – क्रि.– रोना, शोक करना, रंज करना।

रुद्र – पु.– महादेव, ग्यारह का समूह, शिव।

रुद्राच्छ – पु.– रुद्र की माला।

रूँधनो – क्रि.– रोकना, प्रतिबन्ध लगाना।
(काँकड़ हालीड़ा ए रूँद्यो हो राज। मा.लो. 374)

रुनक–झुनक – क्रि.वि.– रुनझुन की ध्वनि, पैरों की पैंजनी, ध्वनि।

रुपया, रुपीया – पु.– रुपये, कलदार।

रुपाला – वि.– रूपवान, सुन्दर, आकर्षक।

रुपालो मेघ – क्रि.वि.– सुन्दर बादल, खूबसूरत बदली या बदलोटी।

रूप – स्वरूप, सौन्दर्य, सुन्दरता, चाँदी।

रूपाँ को परनालो – क्रि.वि. – चाँदी का पत्ता या पतरा।

रूपाँ राणी – स्त्री.– सुन्दरी, रूप की रानी।

रूपानाणो – चाँदी, चाँदी का टुकड़ा, पत्ता या पतरा, घूघरी। (माँगलिक कार्यों में रूपानाणा की बहुत जरूरत होती है। मकान के नींव, विवाह आदि में।)

रूपारी – वि. – रूपवती, सुन्दरी।

रूपारेल – बहुत सुन्दर, रूपवती, धारा, एक स्थान और एक खाई का नाम।

रूपालो – वि.–सुन्दर, रूपवान, शोभायमान, रूपवाला।
(हो रंग रूपाला जमईसा आपने गाल वागाँ राज। मा.लो. 529)

रुमझुम – रिमझिम रिमझिम पानी का बरसना, फुहार पड़ना, हल्की-हल्की बारिश होना।
(आसपास बरसे हे रुमझुम नीर। मा.लो. 607)

रुमक झुमक – घुँघरू, नुपूर, रूनझुन झनकार, ध्वनि।
(हो म्हारे रूमक झुमक पायल वाजे रा। मा.लो. भाग–2)

रूबरू – पु.– प्रत्यक्ष, सामने, सम्मुख।

रूबाब – वि.– धाक, अकड़।

रूमचा – पु.– बाल, रोएँ।

रूमाल – पु.– तौलिया, गलना, दस्ती, वस्त्र विशेष जिससे हाथ-मुँह पोंछा जाता है।

रूयाँ – पु.– रोयें, बाल।

रूल – पु.– कागज पर सीधी लकीर खींचने का डण्डा।

रूलिंग कागत – पु.– लाइन खिंचा हुआ कागज।

रूवाँ रूवाँ – क्रि.वि.–रोम–रोम, क्रि. –रोवें-रोवों।

रूसणो – क्रि.– रूष्ट होना।
(बेन्या थारी भाबज माँड्यो रूसणो। मा.लो. 353)

रूसना – वि.– अप्रसन्न होना।

रूस्या – पु. रूठ, नाराज हुए।

रूसवा – वि.– रूठने, नाराज होने।

रूहड़ली – सं.– रात्रि, रजनी, निशा।

रे

रे – अव्य.– अरे, रे, ऐ।

रेइग्यो – क्रि.– रह गया।

रेंकणो – क्रि.– भैंस की आवाज।

रेंकीर्‌यो – क्रि.– गधे की आवाज।

रेख – लकीर, मर्यादा, सीमा, पंक्ति, (कतार, श्रेणी, दरार, हद, ऊँगली की पोर की रेखा। मा.लो. 618)

रेख पे मेख – क्रि.– विधाता का लिखा कोई टाल नहीं सकता।

रेखा – स्त्री.– लकीर, मर्यादा।

रेंगणो – क्रि.- रेंगना, घिसटकर चलना।

रेग्यो – क्रि.– रह गया, ठहर गया।

रेंगरी – स्त्री.– पतली या छोटी नाली। क्रि. – रेंग रही, घिसट रही।

रेजगारी – स्त्री. फा. – रेज, रुपये के छोटे-छोटे सिक्के, खुले पैसे।

रेंजो – वि.– मचलना, अप्रसन्न या नाराज होना, किसी बात को लेकर लड़ना– झगड़ना।

रेजो – खेत की घास काटना, हाथों से बनाया हुआ रेशम का डोरा, लोकगीतों का नायक, सोने-चाँदी आदि को गलाकर शलाका रूप में ढालने का एक लम्बा लोह उपकरण।
(वारी वारी रेसम रा रेजा। मा. लो. 402)

रेंजो करर्‍यो – क्रि.– मचल रहा, हठ कर रहा।

रेंट – पु.– रहँट, चकरी झूला।

रेट – वि. - उस्ताद, चतुर, चालाक।

रेंट्यो – पु.-झूला, रहट, चर्खी, सूत कताई का चर्खा।
(कताँगा रेंट्यो जी म्हारा राज । मा.लो. 616)

रेटे – अव्य.– नीचे।

रेट वईग्यो – क्रि.वि.– होशियार हो गया, सावधान हो गया, ठीक या सही काम होने की क्रिया, भाव (अंग्रे. राइट)।

रेंटड़ो – वि.– नाक की गंदगी।

रेड़, रेड़को – क्रि.– बहुत जोर-जोर से रोना, डालना।
(जरा सो गंगाजल भी रेड़ो। मो. वे. 84)

रेनाँ, रेणाँ – क्रि.– रहना, निवास करना, सं. खिरनी, राण, एक मीठा फल।

रेण – पु.फा.– रहन, किसी के पास कोई चीज गिरवी रखकर उसके बदले रुपये लेना, बन्धक, रहन-गिरवी, रात। (बालम रेण भोड़ी राज। मा.लो. 540)

रेणनामो – पु.फा.– वह पत्र जिस पर रहन की शर्तें लिखी जाती हैं, बन्धन पत्र।

रेण दिन दो चार – क्रि.वि. – इस संसार में दो-चार दिन का रहना है।

रेणी – स्त्री.– रहन–सहन का तरीका।

रेणी रेणी – क्रि.वि.– अपना-अपना रहन-सहन।

रेणो – क्रि.– रहना, निवास करना।
(म्हारा हंजा मारुजी याँ ही रेवोजी। मा.लो. 595)

रेत – पु.– बालू, सिकता, सोने का कण

रेतड़ली – स्त्री.– रेत मिली हुई जमीन।

रेती – स्त्री.–बालू सिकता, क्रि.– रहती, निवास करती।

रेतीर्‍यो – क्रि.– धीरे-धीरे काट रहा, रेत रहा।

रेते–रेते – क्रि.वि.– रहते हुए।

रेतो – पु.– रहता, निवास करता।

रेदास – पु.सं.– रविदास, एक प्रसिद्ध भक्त, भक्त रैदास।

रेन–बसेरो – क्रि.वि.– रात्रि विश्राम।

रेनो – क्रि.– रहना, निवास करना।

रेंपल्यो – वि.– जिसकी नाक बहती रहती हो।

रेबा – क्रि.– रहने, निवास करने।

रेम – वि.–दया, रहम, मुलायम, रेशम जैसा।

रेलणो – क्रि.–सूखे खेतों को बोने के पूर्व पानी से गीला करना।

रेलवे – स्त्री.– रेलगाड़ी।

रेले–रेले – क्रि.वि.– पानी के बहाव के पीछे-पीछे।

रेलो, रेळो – पु.– पानी का तेज बहाव, वंश परम्परा, तोड़ा, जन समूह का आगे बढ़ना, रेलमपेल करना।

रेवड़ – पु.– भेड़-बकरियों का समूह, लहंडा, गल्ला।

रेवड़ी – स्त्री.– सिरनी, फली बीज अथवा तिल्ली पर शकर चढ़ाकर बनाई गई मिठाई।

रेवती – स्त्री.– एक नक्षत्र, पंचक का अन्तिम दिवस, बलराम की पत्नी।

रेवे – क्रि.– रहता है।

रेवादो – क्रि.– रहने दो।

रेवाल चाल – पु. – दो पैर आग-दो पीछे करके दौड़ने वाले अश्व की गति, घोड़ी-घोड़े की एक चाल।

रेवो – क्रि.– रहो।

रेसम – पु.– एक प्रकार के कीड़े से तैयार किये हुए महीन, चमकीले और दृढ़ तन्तु जिससे रेशमी वस्त्र तैयार किये जाते हैं। (वारी-वारी रे रेसम रा रेजा मुखदुल रा फून्दा बनो। मा.लो. 402)

रेशो – पु.– तन्तु, धागा, सूत।

रेसाँ – रहना, रहेगी, निवास करना। (माता रेसाँ अबीशलालजी रे ओवरे। मा.लो. 627)

रेहन – पु.फा.– रहन, किसी के पास कोई चीज बन्धक रखकर बदले में रुपये लेना।

रेहतो – क्रि.– रहता, निवास करता।

रो

रो – प्रत्य. – रहो, रोना, का अर्थ की विभक्ति।

रोड़ो – रुकावट, अवरोध, अनगढ पत्थर, निषेध। (अटकीऱ्यो हे रोड़ो। मो.वे. 48)

रोइरी – स्त्री.– रो रही।

रोकड़ – स्त्री.– नगद रुपया पैसा, धन, जमा पूँजी।

रोकड़्यो – पु.– खजांची, मुनीम, केशियर।

रोक-दकाँ – क्रि.वि.– रोककर देख।

रोकाईग्यो – क्रि.– रुक गया।

रोग – पु.सं.– व्याधि, मर्ज, बीमारी।

रोंगटा – पु.– रोयें, बाल, केश।

रोंगटा खड़ा हुई गया – क्रि.– रोयें खड़े हो गये, बाल खड़े हो गये।

रोगा – क्रि.– रहोगे।

रोगी – स्त्री. वि.– जिसे रोग हुआ हो, अस्वस्थता।

रोगीलो – पु.वि. - रोगी रहने वाला, बीमार।

रोज – पु.– प्रतिदिन, नित्य।

रोजगार – पु.– काम धन्धा, नौकरी-पेशा, व्यवसाय।

रोजड़ा, रोजड़ो – पु.– रोज, एक जंगली पशु।

रोजनामचा – पु.– दैनिक लेखाबन्दी।

रोजनदारी – क्रि.– प्रतिदिन के भुगतान पर नौकरी करना।

रोजा – पु.– मुसलमानों का व्रत, दिन में उपवास और रात्रि में भोजन।

रोट – पु.– मोटी व तगड़ी रोटी, ज्वार या मक्की की रोटी।

रोट्याँ वी – क्रि.– रोटी बनी।

रोटा – पु.– मोटी व तगड़ी रोटी।

रोटी – स्त्री. – गूँथे हुए आटे की तवा पर तैयार की गई पतली रोटी जो अक्सर गेहूँ के आटे से बनाई जाती है।

रोटा पाणी को जुगाड़ – क्रि.वि.– भोजन–पानी का प्रबन्ध करना।

रोटो, रोटलो – सं.– मीठी या तगड़ी रोटी।

रोठा – पु.– रोटी, रोट।

रोड़ – पु.– रोड़ी या धूरे पर चरने या लौटने वाला पशु, गधा, गर्दभ, रासभ, छोटी किस्म का घोड़ा या गधा, एक कवि नाम।

रोड़ी – स्त्री. - घूरा, वह स्थान जहाँ पशुओं का मल–मूत्र व कचरा कूटा एकत्र किया जाता है, खाद का गड्ढा।

रोड़ो – पु. (सं. लोष्ठ) – ईंट या पत्थर का बड़ा टुकड़ा किसी मुसीबत, आफत, काम में दखल विघ्न डालने वाली वस्तु।

शब्द		अर्थ
रोणी सूरत	–	वि.– रोती सूरत, हमेशा दुःख का बखान करते रहने वाला।
रोणो	–	क्रि.अ.– रोना, चिल्लाना, आँसू बहाना, रुदन करना।
रोणो धोणो	–	क्रि. वि.– रोना–धोना, हमेशा रोते रहना।
रोतल्यो	–	वि. – हमेशा रोते रहने वाला।
रोताँ–रोताँ	–	क्रि.वि.– रोते-रोते, रोते हुए।
रोती नी रे	–	स्त्री.– रोती बन्द नहीं होती, रोना बन्द नहीं करती।
रोंदतो	–	क्रि.वि.– रौंध हुआ, पैरों तले कुचलता हुआ।
रोप	–	क्रि.– रोपना, वि.-रोपित, रोप्य, बीज या पौधा।
रोपनी	–	स्त्री.– रोपने की वस्तु, कहीं से लाकर लगाना या स्थापित करना, जमाना।
रोपी हाल	–	क्रि. – हल में हाल बनाना,पौधों की रोपनी।
रोब पड़ना	–	कष्ट होना, तकलीफ उठाना, दुःख पड़ना, परेशानी। (रोबा पाड़ो राँदो हो तम। मो.वे. 40)
रोयाँ, रोवाँ	–	पु.– रोआँ, रोम, बाल।
रो-रो ढेर वईग्यो	–	क्रि.वि.– रो-रोकर बेहाल हो गया।
रोर, रोळ	–	वि. – कोलाहल, शोरगुल, उपद्रव।
रोली ने	–	क्रि.– फटककर, छाँटकर।
रोवाड़णो	–	रुलाना, परेशान करना, दुःखी करना, दुःख देना। (म्हारी छोरी ने रोवाड़ी तो डेली में डचकी दऊँगा। मा.लो. 493)
रोस	–	वि.– गुस्सा, क्रोध।
रोसन	–	वि. – प्रकाशित।
रोसनी	–	स्त्री.वि.– उजाला, प्रकाश, दीपक, दीया।
रोसनाई	–	वि. – स्याही।
रोहिणी	–	स्त्री.– नक्षत्र, बलराम की माता।

शब्द		अर्थ
ल	–	मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला का वर्ण।
लई	–	क्रि.– लेकर, बेचारा, असहाय, दीन, गरीब, विवश, लेकर, पतंग व कागज को जोड़ने के लिये आटे व मैदे की राब।
लईजा	–	ले जा।
लइरी	–	न.– ला रही, ला रहे।
लऊ	–	स्त्री.– लहू, खून, रक्त।
लऊ-लागी	–	स्त्री.– मन रम गया, वि. – लालसा जगी, मन लगा, ध्यानस्थ हुआ।
लऊ–लुवान	–	क्रि.वि.– लहू-लुहान, रक्त से सना हुआ।
लंक	–	स्त्री.– लंकाद्वीप, समय।
लंकऊ	–	स्त्री.– दक्षिण दिशा।
लक्कड़फाड़	–	दे.– जलाने की लकड़ी, चीरने फाड़ने वाला, असंगत, अशिष्ट बोलने की आदत वाला, चाहे जो बोल देना।
लक्कड़ बग्गो	–	पु.– लक्खड़ बघ्घा नामक जंगली पशु।
लक्खण	–	पु.– लक्षण, आचरण, चरित्र, आदत। (पड्या लक्खण आदमी का। मो. वे. 45)
लक्खड़–छोल	–	वि.– सुतार, लकड़ी छीलने वाला
लक्खड़	–	पु.– लकड़ी का बहुत बड़ा और अनगढ़ टुकड़ा।
लकड़ो	–	पु. – लकड़ी, वि. - दबाव।
लक्खणाँ	–	वि. – लक्षण से, चिह्न से, आदतों से।
लक्खड़ कोट	–	पु.– खम्बों का बाड़ा, कटघरा।
लकड़ी	–	स्त्री.– लम्बी लकड़ी।
लकवा, लकवो	–	पु.– पक्षाघात की बीमारी।
लंका	–	पु.– रावण की नगरी, सिंहल।
लंकापत	–	पु.– रावण।
लंका हुईगी	–	क्रि.वि.– दूर हो गई, बहुत दूर पड़ गई।
लकलक	–	क्रि.वि.– कंपकंपाना।
लख चोरासी	–	चौरासी लाख योनियों से मुक्त होना, मुक्ति मिलना।
लखणा	–	सं.– लक्षण।

लखन – पु.– लक्ष्मण।
लखपति – वि.– लाखों की सम्पत्ति वाला।
लखपति यो बणजारो– वि.– लाखों की दौलत का स्वामी बंजारा जाति का मनुष्य।
लखारो – पु.–लाख की चूड़ी बनाने वाला।
लखीणो – वि.– लाखों में एक।
लखेरो – पु.– एक जाति, लाख की चूड़ियाँ बनाने वाला, लखारा जाति।
लग – पु.– आधार, स्तम्भ के ऊपर की लकड़ी, पु.– स्तम्भ के ऊपर की लकड़ी और स्तम्भ।
लगई रिया – क्रि.– लगा रहे।
लंगड़ – वि.– लंगड़ा, लंगड़ाकर चलने वाला।
लंगड़ो – लंगड़ा।
लंगड्यो – वि.– लंगड़ा।
लगदर्‌यो – वि.– धनहीन, फटे पुराने वस्त्रों वाला, एक गाली।
लगन – पु.– विवाह के लग्न या शादी का मुहूर्त।
लगनालाव – क्रि.– लग्न लाने का भाव, लग्न निकलवाकर लाना।
लगवाल – वि.– प्रेमी, लगा हुआ।
लग्या, लग्यो – क्रि.– लगे हुए, लगा हुआ, लग रहा।
लंगर – वि.– स्त्रियों के पाँवों का एक चाँदी का आभूषण, जहाज का लंगर, भारी गहना, सिक्खों का मुफ्त भोजनालय।
लगाड़णो – लगाना, मिलाना, छुआना, अर्पण करना, काम सौंपना, जड़ना, दाँव पर धन लगाना, खर्च करना, जलाना, सुलगाना, दाम आँकना, बोली लगाना, लागूकरना।
(पेराई ओड़ाई ने घर जावस्याँ देवी-देवता ने पगे लगावस्याँ । मा.लो. 430)
लगाणो – क्रि. – लगाते, लगाना, जड़ना, सौंपना, चिपकाना, बोली लगाना, लागू करना, दाम आँकना।

लगात – क्रि.वि.– पर्यन्त, तक।
लगाम – पु.– बागडोर, नकेल, बाग, नियन्त्रण।
लगाव – वि.– आत्मीयता, मोह, प्रेम, स्नेह, जुड़ाव।
लगावण – रोटी के साथ खाया जाने वाला साग, तरकारी, रोटी, पराठे, पूड़ी, चाँवल आदि लगाकर खाया जाय वह द्रव्य पदार्थ।
लगी गया – क्रि.– लग गये, संलग्न हो गये।
लंगर – पाँव में पहनने का चाँदी का गहना लंगर जो आँटे वाले और मोटे होते हैं, भारी गहना, बड़े-बड़े आश्रमों में भोजन के लंगर, मुफ्त भोजन, दान पुण्य करने वाले धनाढ्य लोग जगह-जगह लंगर लगाते हैं।
(नानकी तो के, म्हारे लंगर घड़ई दो। मा.लो. 582)
लंगार – न.– पंक्ति, लम्बी कतार, लाईन, पूँछ। (पाछे लागीरी लंगार। मो.वे.33)
लंगूर्‌यो – पु. बन्दर, वानर।
लंगोट – पु.– रूमाली।
लंगोटी – स्त्री.– कोपीन, कछनी, छोटा लंगोट।
लंघन – स्त्री.सं.– लाँघने की क्रिया , उपवास, फाका।
लघु – वि.– छोटा, हल्का।
लघुसंका – स्त्री.– पेशाब करना।
लचक – वि.– पैर ऊँचा-नीचा पड़ जाने पर हड्डी के इधर–उधर खिसकने से आई हुई मोच, कसक, बामच।
(वीकी पतली कमर लचकाणी । मा.लो. 527)
लचकणो – क्रि.– लचकना, इधर-उधर हड्डी का खिसकना।
लच्छी – स्त्री.– धागे की गिट्टी, लपेटा हुआ धागा, डोरा।
लच्चर – वि.– ढीला-ढाला, कमजोर, आलसी।

लचलची – स्त्री.– नर्म, नाजुक, सुकोमल (एड़ी थारी लचलची ओ गोरी।

लच्छन – पु.– लक्षण, रंग-ढंग, तौरतरीका, शरीर में होने वाला काला दाग, जो सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार शुभ माना जाता है।

लच्छा–फूँदी – पु.–पाँव में पहनने का गोलाकृति एक आभूषण तथा हाथों में पहनने की फूँदी या झुमका।

लछमी – स्त्री.– लक्ष्मी, धन की देवी।

लछमण – पु.– लक्ष्मण, सुमित्रा के पुत्र।

लछमण रेखा – स्त्री.– लक्ष्मण रेखा, प्रतिबन्धित स्थल, अमिट विश्वास।

लजईरी – वि.– लज्जित हो रही, शर्मा रही, लाज आ रही।

लजाणो – क्रि. – लज्जित होना, शर्मा जाना, लज्जा आना, लाज आना, लजा देना, शर्मा देना।

लज्जत – वि.– स्वाद, मिठास।

लज्जा – वि.- मर्यादा, लाज, शर्म, संकोच।

लट – स्त्री.–बालों की लट।

लटकन – सं.– कान की बाली, कान का आभूषण, झुमका।

लटक – शैली, झलक, छटा, खूबी, अंगों की कोमल मनोहर चेष्टा।
(आप तो ओड़ी गोरी चूनड़ी, म्हाने लटक वताव रे।)

लटकण – वि.– लटकने वाली वस्तु, झुमका आदि।

लटकनपंथी – अधर में लटकने वाला।

लटका – नखरे करने वाली, बनावटी चेष्टा, ढोंग।
(म्हे तो लटका करती आई म्हाराज। मा.लो.73)

लटकाणो – क्रि.– लटकाना, टाँगना।

लटको – वि.पु.– ढंग, ढब, बनावटी कोमल चेष्टा और बातचीत, हाव–भाव, टोटका।
(टीको तो पेर करूँ रे लटको। मा. लो. 581)

लट्टा – पु.वि.– बालों के गुच्छे, लपट, तुच्छ, हीन, अनाज में गुच्छे बनना।
(भेरूजी बेठा हे लट्टा बिखेर। मा. लो. 75)

लट्टो – पु.– बाल, केश।

लटपट – क्रि.वि.-गमगाना, लड़खड़ाना।

लट्ठ – पु.– सोंटा, डण्डा, लाठी, वि.– स्थूल और लम्बे शरीर वाला ऊँचेकद वाला।

लट्ठ भारती – वि.– बेफिक्र, मुस्टंडा, अनाड़ी, गँवार।

लट्ठा – वि.– हाथ करघा का बना वस्त्र, मोटा कपड़ा, मोटी लकड़ी।

लट्ठो – वि.– अड़ंगा, काम करने का दबाव।

लटको–झटको – क्रि.वि.– नाज-नखरा।

लटा–पटी – स्त्री.– भिड़न्त।

लटणो – क्रि.– झुकना, कमजोर होना।

लटाँ–पकड़ीके – क्रि.– बालों को पकड़ कर, चोंटी पकड़ करके।

लटालूम – वि.– जैसे लूम लटक रहे हों , झुमके या गुच्छे लटक रहे हों, मोती जैसे लट्टू लटक रहे हों।
(मोड़ जो आयो पत्ते तो केरी की लागी लटालूम। मा. लो. 486)

लटियाँ पछाड़ी – क्रि.वि.-बालों की लटें बिखरीं।

लटीग्यो – वि.– छिप गया, अस्त हो गया, दुबक गया, झुक गया।

लटूमणो – क्रि.-झुकना, अधर में लटकना।

लट्म-झट्म – क्रि.वि.– झटका-झूमी।

लटूर्या – उलझे बाल, केश।

लटूरी – स्त्री.– बालों की लट।

लट्टू – वि. – मोहित, फिदा, चकरी, भँवरा, बिजली का बल्व ।

लटे – क्रि. – अस्त होवे, लट जाने पर।

'ल'

लट्टो – पु. – बाल, रोम, रोया।

लट्ठ – पु. – बड़ी लाठी, डण्डा।

लट्ठ भारती – बेफिक्र, मुस्टंडा, अनाड़ी, गँवार।

लठंगो – वि.– लकड़ी जैसा लम्बा बढ़ रहा।

लठेत – वि.– लाठी चलाने वाला, लाठी घुमाने वाला।

लट्ठो – पु.– (हि. लट्ठ) 5 हाथ या साढ़े सात फुट की लकड़ी का एक नाप जिससे जमीन की नपती की जाती है, वि. - अड़ंगा, दबाव।

लट्ठो लगाणो – क्रि.वि.– अड़ंगा लगाना, दबाव देना।

लड़ – स्त्री.– मोती की माला या लड़ी। क्रि. – झगड़ा कर। सं. – लड़ी या हार।

लड़ई – स्त्री.– युद्ध, लड़ाई-झगड़ा, तकरार, वाद-विवाद।
(होजी म्हारी परणी करे लड़ई रे। मा.लो. 625)

लड़ईर्‌या हो – क्रि.वि.– लड़ा रहे हो।

लड़खड़ातो – क्रि. – लड़खड़ाता, डाँवाडोल होता, डगमगाता इधर–उधर पैर पटकता या डग भरता हुआ।

लड़णो – क्रि. – लड़ना, लड़ाई-झगड़ा करना।
(दोई लड़ भड़ता रे वाने लाडू भावे। मा.लो. 435)

लड़बड़णो – क्रि. वि.– लड़खड़ाना, लथपथ होना।

लड़बड़ तो फिरे – क्रि. – रोता फिरे, इधर-उधर घूमता फिरे।

लड़ी – स्त्री. – लड़ा, माला की छोटी लड़।

लड़ोकल्यो – वि. – झगड़ालू प्रवृत्ति वाला।

लत – क्रि. – आदत।

लत पड़ी गई – क्रि.– आदत पड़ गई, अभ्यास पड़ गया।

लता – स्त्री.– बेल, बेलड़ी, वल्ली।

लता मण्डप – स्त्री. – लता कुंज, लता भवन, लताग्रह।

लत्ता – वि. – चीथड़े, फटे पुराने कपड़े, लात।
(इ लत्ता लोभी जाय। मो.वे. 73)

'ल '

लती – वि. – जिसकी लत या आदत पड़ गई हो।

लतीफो – पु.– चुटकुला, हास्य-व्यंग्य।

लथपथ – वि.– भीगा हुआ, तर।

लथाड़ – स्त्री.– झिड़की, फटकार।

लद्दू – वि.– जिस पर बोझ लादा गया हो

लद्दू घोड़ी – वि.– ऐसे मनुष्य के लिये विशेष जो प्रायः हमेशा बोझा ढोता रहता हो या लदा-फंदा रहता हो या वजन लादकर चलने का अभ्यस्त हो।

लद्द लगे को पड़ीग्यो – धड़ाम से नीचे गिर गया।

लदवायो – क्रि.– लादा गया, लदवाया गया।

लदाँ पड़ीऱ्या – क्रि.वि.– बोझ से लदा, झुका या दबा हुआ।

लदान लादी – क्रि.वि.– लादे जाने वाला माल लादा गया बोझा से लाद दिया गया।

लन्ड – पु. – शिश्न।

लन्डी को – वि.– एक गाली, रंडी से उत्पन्न।

लपकणो – क्रि.– झपटना।

लपको – पु.– लत, आदत, चस्का।

लपट – स्त्री.– आग की लौ, अग्नि शिखा, लिपटना।

लंपट – वि.– कामुक।

लपटणो – क्रि.– लिपटना, चिपकना।

लपग्यो – पु.– छिप गया, दुबक गया।

लपटाँ – वि. – आग की ज्वाला, अग्नि ज्वाला।

लपटो – पु.– आटे का पकाया हुआ घोल, पतली।

लपटाय – क्रि.– लिपटाकर।

लपटारी – स्त्री.– लिपटा रही, चिपक रही।

लप–लप – क्रि .वि.– जीव्हा लपलपाना, ललचाना।

लपलपईरी – स्त्री.– खाने को जीव्हा ललचा रही।

लपलपी – बन्दूक का बटन।

लप्प–झप्प – क्रि.वि.– लालटेन का भपकना, लप–झप करके बुझ जाना, ताक–झाँक, इधर की वस्तु उठाकर उधर रखना,

बहानेबाजी करना, झूठा, असमंजस।

लप्पड़ – क्रि.वि.– झापड़ , गाल पर झापड़, थप्पड़।

लपक–झपक – क्रि.वि.– झपटना, लालटेन हवा के कारण लपक–झपक करना।

लपरई – न.-लबारपना, बक्वास, बक्बक।

लपेटणो – क्रि.– लपेटना, घड़ी करना, तह करना, समेटना।

लपरचट्टो – वि.– झूठी बातें, झूठी शिकायतें।

लपलपी – अधिक बोलने वाला लपलपाहट, बकबक, झपाटे से, बन्दूक का घोड़ा।

लपसी, ल्हापसी – स्त्री.– गुड़ के घोल में दलिया मिलाकर बन गया पदार्थ, सीरा, लपसी।

लपालप – जल्दी-जल्दी, शीघ्र, झट।

लपीजा – क्रि.– छिप जा।

लपीने – कृ.– छिपकर।

लपोड़ी को – वि.– एक गाली, गप्पी।

लपोड़ा – पु.– शिश्न, गप्प।

लप्पा झप्पा – जिसमें लप्पा लगा हो, लप्पे की चोड़ी किनारी वाला जरी वाला, गोटा-किनारी का भारी काम।
(लप्पा झप्पा री साड़ी म्हारी सासु सारू लावजो रे वीरा। मा.लो. 344)

लप्पादार – मोटी जरी किनारी दार।
(सोवे लप्पादार टूल को घाघरो जीस पर सोवे। मा.लो.244)

लफंगो – वि.– लंपट, दुश्चरित्र, लुच्चा।
(छोरो नेठू लफंगो हो। मो. वे. 79)

लफड़ो – वि.– झंझट, बखेड़ा।

लफ्फाजी – वि.– जबानी जमा खर्च, व्यर्थ की बातें बनाना।

लबरको – क्रि.– अच्छी वस्तु का पहले से ही हथियाने का प्रयत्न करनेवाला, मुँह मारना।

लंबड़्यो – क्रि.– लम्बा व्यक्ति।

लंबरदार – पु.– नम्बरदार, ताल्लुकेदार।

लबरेज – वि.– पूर्ण, भरपूर, पूरा भरा हुआ।

लंबाण – वि.– लम्बाई।

लबादो – पु.– चोंगा, पहनावा।

लबार – वि.– झूठा।

लबूरे – क्रि.– नोचे, नखूनों से नोचे।

लंबूतरा – वि. – लम्बे चेहरे वाला, लम्बे शरीर वाला।

लंबो – वि.– लम्बाई वाला मनुष्य, लम्बा मनुष्य।

ललकार – पु.– दुतकार, पुकार, जोर से डपटना।

ललकारणो – क्रि.– दुत्कारना, चिल्लाकर बोलना।

लप्पो चप्पो – क्रि.वि.– खुशामदी।

लम्पो – स्त्री.– गाड़ी के धरे और ऊद के नीचे लगाई जाने वाली लकड़ी, मृतक को दी जाने वाली लकड़ी।

लम्मण – वि.– अधिक तौलना, नमती लेना या नम्मण, नमती।

लम्बो – वि.– लम्बा।

ल्या – क्रि.– लेआ, लिया।

लाँग्यो – क्रि.– ले गया।

ल्या–द्या – क्रि.वि.– लिया–दिया।

लरंगतो – क्रि.– उछलता हुआ।

लर बड़तो काड़्यो – क्रि.वि.– हल्का होने पर निकाला, सिकुड़ जाने पर निकाला।

लरे – धीरे - धीरे फैलना।

ललक लइके – कृ.–उत्सुकता से, उमंग से, लालसा ले करके।

ललंगतो – क्रि.– उछलता हुआ।

ललचायो – वि.– लालच उत्पन्न हुआ, लालच लगा।

लल्लो, चप्पो, लल्लु–चप्पू– स्त्री.-चिकनी चुपड़ी और खुशामद की बातें, चापलूसी, खुशामद।

ललाट – पु. – माथा, भाग्यरेखा।

लवड़ो – पु.– शिश्न, लिंग।

लवारा – पशु के छोटे बछड़े।

लवारी – ताजी जनी हुई, तानी।
(आठ लवारी दस बाखड़ी बेन्या

पेरण नवसर्यो हार आज कंचन दन उगीयो जी। मा.लो. 476)

लवलाई – वि.– लालसा जगी, प्रेम हुआ।

लवल्या – वि.– लालसा, इच्छा।

लवाजमो – पु.–आवश्यक सामग्री, साज–सामान।

लवारी – स्त्री.– गाय की बछिया, केड़ी।

लवारो – पु.– गाय का बछड़ा, केड़ा।

लस्कर – पु.– सेना, छावनी, भीड़–भाड़, लश्कर। (दल लसकर देखीने। मा.लो. 394)

लसको – क्रि.– चाटने का शौक, चुपचाप रोते हुए ठसके लेना।

लसरको – क्रि.– चाटने का काम, जीभ से चाटना।

लसक्या लेणा – क्रि. –रोना, रुदन करना, दुःखी होकर आँसू बहाना, क्लेशी, रोते-रोते थक जाना, रोने के बाद टसकना।

लसर लसर – सिल पर पीसना, लसीटना, चूर्ण करना, सिल पर पीसते हुए हाथों का चलना, हाथों को जोर-जोर से चलाना। (लसर-लसर मेंदी वाँटता म्हारो बाजूबंद झोला खाय। मा.लो. 222)

लसण – पु.– लहसुन।

लस्सण – पु.– लहसुन।

ल्हई – स्त्री.– लाई, पानी में आटा उबालकर बनाई गई लई।

लहरी – वि.– मनमौजी।

ल्हसण – पु.– लहसुन।

ल्हाक्यो – क्रि.– गिराया, पटका।

ल्हाँट – स्त्री.– गाय की 3 साल की बछिया ल्हाँट कही जाती है।

ल्हाचण – वि. –कलंक, धब्बा, दाग, निशान, अपकीर्ति।

ल्हासाँ – वि.ब.व.– लाशें , शव।

ल्हींक्यो – पु.– कंघा ।

ल्होड़ी – स्त्री.– छोटी।

ल्होड़ो बड़ो – वि.– छोटा–बड़ा।

ल्होंड़ी – स्त्री.– बटी, गोल पत्थर, छोटी।

लाई – स्त्री.– लेकर आई, आटे की बनी कागज चिपकाने की लई।

लाकड़ा – पु.– लकड़ियाँ।

लाकड़ो – पु.– लकड़ी, डण्डा।

लाकड़ा कोल्यो – वि.– एक गाली।

लाकड़ा धक्यो – वि.– एक गाली।

लाकड़ा पड़्यो – एक गाली।

लाकेट – स्त्री.– गले का हार, एक आभूषण जो भुजाओं पर बाँधा जाता है।

लाख – वि.सं.– लक्ष, सौ हजार, बहुत अधिक, चिपकाने की लाख।

लाखड़्याँ – स्त्री.ब.व.– लकड़ियाँ (जलाऊ)।

लाखड़ी – स्त्री.– लकड़ी।

लाखड़ो – पु.– लकड़ी का मोटा ठूँट।

लाख चोंटीगी – क्रि.वि.– चिपका दी गई।

लाख लगई दी – क्रि. वि.– लाख लगवा दी।

लाख को मूत – वि.– एक गाली।

लाखाँ–पाताँ – स्त्री.– लाख की बनी चूड़ियाँ और उन पर चढ़ाया जाने वाला चाँदी या सोने का पतरा।

लाखीणी – वि.– लाखों में एक स्त्री, श्रेष्ठ, लखपति, बहुमूल्य लिखेसरी विवाह के बाद बहू पहली बार मायके जाती है तो उसे लाखीणी करके नया चूड़ा-मणियाँ पहनाकर भेजा जाता है। (भगवतीलालजी रा भीम लाखीणी हो लाड़ी लई गया जी। मा.लो. 426)

लाखीणो – वि.– लखपति, लाखों का स्वामी, श्रेष्ठ।

लाखी दे – क्रि. – गिरा दे, डाल दे, पटक दे।

लाखेगा तार – क्रि.– धागे डालेंगे, तार डालेंगे, सूत पिरोवेंगे।

लाग लागे – क्रि.- दबाव लगता है, पारिश्रमिक मिलता है।

लाग – पु.– मौका, अवसर ।

लागताँई – क्रि.– लगते ही।

लाग्यो – क्रि.– लगा।

लाग लगाणो – क्रि.– लग्गा लगाना, किसी कार्य की शुरूआत करना, पीछे से दबाव देना।

लागत – वि.– पैसा खर्च होना, लगने वाली सामग्री, रकम, मूल्य।

लाग–लगा दो – क्रि.वि.– सहारा दे दो, दबाव देने की क्रिया।

लागणो – क्रि.– लगना, चूभना, छूना, पौधा जमना, चोंट आना, मन में कोई बात चुभ जाना, खिड़की या दरवाजा बन्द होना, अर्थ बैठना, आदत पड़ना, शिष्टाचार से अभ्यास होना, स्थल या काल शुरू होना।

लागती की – वि.– रिश्तेदार, सम्बन्धी।

लागत – वि.– लगने वाली वस्तु या मूल्य।

लागत – वि.– किराया, व्यय, खर्च, किसी चीज की तैयारी या बनवाने में होने वाला व्यय।

लागत हाथ – एक काम को करते हुए दूसरे काम को भी उसके साथ या उसके कर चुकने के तुरन्त बाद करना, इसके साथ ही, साथ का साथ।

लागा–लागा – क्रि.वि.– लगे लगे, काम में निरन्तर जुटे हुए।

लागी ई नी – क्रि.वि.– लगी ही नहीं।

लागी लाय पचीस – पच्चीसों किस्म की आग लगी है।

लागून्यो – वि.– बन्दर, वानर।

लागो लागो – क्रि.वि.– लगा लगा, जल्दी–जल्दी, पीछे पड़ा हुआ।

लाँच – वि.– रिश्वत, लालच, प्रयोजन।

लाँचखऊ – वि.– घूसखोर।

लाचण – वि.– दाग, कलंक, धब्बा।

लाचार – वि.– विवश, मजबूर।

लाचारी – स्त्री. वि.– दीनता, दैन्य।

लाछण – वि. चिह्न, निशान, दाग, धब्बा, दोष, ऐब।

लाज – स्त्री.– शर्म, मर्यादा, झेंप।

'ला'

लाजवंती – वि.– लज्जावती, एक हीरा, लाजवाली।

लाज नी आवे – क्रि.वि. – लज्जा नहीं आती, शर्म नहीं आती।

लाजा मरूँ – स्त्री.– लज्जा आवे, शर्म आवे, लाज से मरी जा रही।

लाट – स्त्री.– मोटा, ऊँचा और बहुत बड़ा खम्भा।

लाटरी – स्त्री.– वह योजना जिसमें लोगों को गोटी या गोली उठाकर नाम आने पर धन बाँटा या कोई बहुमूल्य चीज दी जाती है।

लाठ को मूत – वि.– बड़े का बच्चा, एक गाली।

लाठी – स्त्री.– लकड़ी, डण्डा, लट्ठ।

लाड़ – वि.– प्यार, दुलार, एक जाति, बच्चों के साथ किया जाने वाला प्रेमपूर्ण व्यवहार, लाड़–प्यार।

लाड़ करे – क्रि.– प्रेम करे, स्नेह करे, दुलार करे।

लाड़की – स्त्री.– दुलारी, प्यारी।

लाड़ कोड़ – न.– प्यार और उमंग, विवाह के बाद जमाई को कुछ दिन ससुराल में सत्कार से रखना।

लाड़लो – वि.– स्नेही, प्यारा, दुलारा।

लाड़वा – पु.– लड्डू।

लाड़बाई – वि.– लाड़ प्यार से रही या पाली पोसी हुई प्यारी, बड़े नाजों से पालना। (वऊ लाड़ी रा भरतार जस जीतो म्हारी नणद वदावणा। (मा.लो. 453)

लाड़ीबई – स्त्री.– दुलहिन बहू।

लाडू – पु.– लड्डू, मोदक। (आज का लाडू खईलो रामजी काल कईं खाओगा। मा.लो. 437)

लाडूवाँ – पु.ब.व.– लड्डू।

लाड़ो – पु.– दूल्हा, वर।

लाण – पु.– मृतक की स्मृति में दी जाने वाली भेंट, स्मृति चिह्न।

लाण बाँटी – क्रि.– स्मृति चिह्न वितरित किये।

लाणो – क्रि.– लाना, ले आना। (अबके सावण लावाँ जी। मा.लो. 617)

लात – स्त्री.– पैर, पैर का प्रहार।

लात की दई – क्रि.– लातों से मारा।

लात घमूका – क्रि.वि.– लातें और मुक्के से मारना या पीटना।

लाताँई लेग्या – क्रि.वि.– लाते ही ले गये, लाये और तुरन्त ही ले गये।

लाद – क्रि.– लादना, अपने शरीर पर बोझ लादने की क्रिया या भाव, घोड़े या गधे की लीद।

लादणो – क्रि.– लादना, भार या बोझा रखना, वजन रखना। (माथा का तो मेमंद ओजी नणदोईसा लादो होय तो दीजो। मा.लो. 515)

लादा – क्रि.– प्राप्त हुआ, मिला, लाद दिया गया।

लादीर्‌यो, लादीर्‌या – क्रि.– लाद रहे, बोझ रख रहे।

लादो – वि.– वजन, किसी के द्वारा जबरन प्रदत्त बोझ लादने की वस्तु, प्राप्त हुआ, मिल गया।

लान – पु.– स्मृति चिह्न, घास का मैदान, वाटिका या बगीचे का खुला प्रांगण।

लानो – क्रि.वि.– लाना, लेकर आना।

लाँप – पु.- फाँस, कंटक, घास का काँट।

लापक–लीपक – क्रि.वि.– बना–बनाया काम बिगाड़ देना, लीपा पोती करना।

लापड़ चुपड़ – किसी भी द्रव पदार्थ से सन जाना।

लापता – वि.– जिसका कोई पता न चले, गायब।

लापर – वि.– झूठा, झूठ बोलने वाला। (आप लापर बाप लापर लापर सोई परवार। मा.लो. 529)

लाँपऱ्यो – पु.– घास का काँटा।

लापलीप – कुछ भी दिखाई न देना, बिगाड़ देना।

लापसिया – पु.– सिरा बनाने वाला व्यक्ति, सीरा या लपसी तैयार करने वाला।

लाँपी – स्त्री.– एक चमड़ा काटने का औजार, चमार का एक औजार।

लाँपो – न.– श्मशान में मृतक की चिता में लगाई जाने वाली अग्नि।

लाँपो द्‌यो – क्रि.वि.– मृतक को मुखाग्नि दी गई, दाह संस्कार की एक रस्म, जिसमें पुत्रादि सर्वप्रथम अग्नि प्रदान करते हैं।

लापसी – गेहूँ के दलिये को घी में सेककर गुड़ के रस में पकाकर बनाया हुआ एक मिष्ठान्न, लपसी, मीठा दलिया। (घर का घरे लापसी। (मो.वे. 39)

लाफसी – स्त्री.– सीरा, लापसी।

लाफालोर – वि.– लफंगा , बदमाश, झूठा, गप्पी, गप्प हाँकने वाला, लम्बी–चौड़ी बातें बनाने वाला।

लाँब – लम्बा, दीर्घ, दूर, फासले, दूरी पर।

लाँबछड़ी – खजूर का पेड़, ऊँची खजूर। (लाँबी लाँबी लाँबछड़ी ने जण पर लागा केला रे घर होता जाजो रे। मा.लो. 510)

लाँबो – अधिक लम्बा, बहुत ऊँचा, लतंगड़, लम्बा मार्ग, लम्बा प्रयाण, मरण, लम्बी बात। (इस लाँबड़ के घर की ये चंदीया।)

लाबऱ्या भेरू – वि.– इन्दौर के एक प्रसिद्ध भैरव देव।

लाबर्यो झाबऱ्यो – पु.वि.– बड़े–बड़े बालों वाला इन्सान या कुत्ता आदि।

लाँबा – वि.– बड़े–बड़े बाल।

लांबो – वि. – लम्बा, लम्बे।

लाभ – पु.– फायदा, मुनाफा, बरकत।

लाभणो – क्रि.–मिलना, प्राप्त होना, लाभकारी होना, नफा।

लाभ्यो – क्रि.– प्राप्त हुआ, मिला, फायदा हुआ।

लाभाँजी लाभाँ – क्रि.वि.– लाभ ही लाभ, फायदा ही

फायदा, तौलने के लिये बनियों द्वारा किया जाने वाला शब्द।

लाभी – स्त्री.– प्राप्त हुई, मिली।

लामड़ो – पु.– लम्बे कद का।

लाम देणी – क्रि.वि.– फासला रखना, समय देना, दूरी रखना, लम्बा समय दे देना।

लाय – वि.– आग, जंगल में दावाग्नि लगना, ईर्ष्या, असन्तोष, तेज गर्मी (लाय लागी ने घर बल्यो। मा.लो. 543)

लायक – पु.– योग्य, उपयुक्त।

लायकी – स्त्री. वि.– योग्यता,सामर्थ्य।

लायजे – क्रि.– लाना, किसी वस्तु को लेकर आने का निर्देश।

लार – स्त्री.– साथ में। (थारा समरथ दादाजी थारी लार लाल क्यों रे खड़ो रे दिलगेरी से। मा.लो. 390)

लार टपकणी – पु.– किसी वस्तु को देखकर मुँह में पानी आ जाना।

लाऱ्यो – पु.क्रि.– ला रहा, शिशु की गर्दन में बाँधा जाने वाला कपड़ा, जिससे लार से कपड़े खराब न हो।

लाराँ लई – स्त्री.– साथ में लाई।

लारी – स्त्री. –लाने का कार्य कर रही, ला रही, एक छोटी मोटर।

लारे – पु. साथ में। (म्हारे लारे लागे साँतीड़ा री फोज। मा.लो. 610)

लाल – पु.– लाल रंग, बेटा, पुत्र, प्यारा लड़का या आदमी के लिये प्यार भरा सम्बोधन, वि. - रत्न।

लाल चंदण – वि.– रक्त, चंदन, देवी को चढ़नेवाला चंदन।

लाल परेवो – लाल पक्षी, पंछी। (उड़ -उड़ रे म्हारा लाल परेवा, नगर वदावो जाजे रे। मा.लो. 44)

'ला'

लालची – वि.– जिसे लालच हो, लोभी।

लालटेन – स्त्री.– कंदील।

लालन–पालन – क्रि.वि.– पालन–पोषण, लाड़–प्यार।

लाल मनख – वि.–अंग्रेज या गोरी जाति के लोग।

लाल मरचाँ – वि.सं.ब.व.– लाल मिर्च।

लाल सरपाव – वि.– लाल रंग की पोशाख, देवी की या उसके पण्डे की पोशाख।

लालसा – वि.- इच्छा, अभिलाषा, लालच।

लालूड़ा – पु.– पुत्र के लिये प्यार भरा सम्बोधन।

लालेत्यो – वि.– लालची, लालच से काम करने वाला।

लालो – पु.– एक प्रकार का आदरसूचक सम्बोधन, महाशय, कायस्थ या पठान के लिये जातिवाचक रूढ़ शब्द।

लाव – क्रि.– ले आ।

लावजो – क्रि.– ले आना।

लावण – स्त्री.– घाघरे या लहँगे का पैरों की तरफ लटकने वाला हिस्सा।

लावणी – स्त्री.– लावणी गाने का ढंग विशेष, तुर्रा किलंगी की गायकी, एक प्रकार का लोक संगीत जो प्रायःचंग एवं डफ वाद्य पर गाया जाता है। मालवा का लोक प्रसिद्ध तुर्रा किलंगी साहित्य, क्रि. -फसल को काटकर अपने खलिहान में जमा करना।

लावणो – क्रि.– लाना।

लावर – पु.– लाहौर, राजस्थान का एक कस्बा, जहाँ से चलकर सोंधिया जाति का मालवा में आगमन हुआ।

लावा – पु.– लावा नामक छोटा पक्षी।

लावारिस – वि.– जिसका कोई वारिस या उत्तराधिकारी न हो।

लि

लिआकत – वि.– लायकी, योग्यता, गुण।

लिखणो – क्रि.– लिखना।

लिखत – लिखावट, लिखा हुआ, लिखावट, लिखाई, लिखने का ढंग, लिखे हुए अक्षर, अनुबन्ध। (लगनाँ तो जोसी देस रा लावजो लगनाँ री लिखत हजारी रे बना। मा.लो. 403)

लिखण्यो – क्रि.– लिखने वाला।

लिखाँ – स्त्री.ब.व.– जूँ के अण्डे, लिखने का काम करें।

लिखाड़्यो – क्रि.– लिखवाया गया।

लिंग – पु. – पुरुष जनेन्द्रिय, व्याकरण में लिंग, शिवलिंग, महादेव का पिण्ड, चिह्न।

लिंगायत – पु.– एक शैव पंथ।

लिच्चड़ – वि.– लिजलिजा।

लिपटणो – क्रि.– लिपटना, आलिंगनबद्ध होना।

लिज्जत – वि.– स्वादिष्ट, लज्जतदार।

लिखणो – क्रि.– लीपना, लिखना।

लिपन्या–पोतन्या – क्रि.वि.– लीपने–पोतने या लिपाई–पुताई का काम करने वाला।

लिपा–छबा – क्रि.वि. –साफ सुथरा, स्वच्छ स्थान।

लिमड़ो – नीम का पेड़।

लिम्बोरी – पु.–नीम का फल, निंबोरी।

लिया–दिया – क्रि.वि. - लेना–देना हो गया, ले लिया, दे दिया।

लियाज – पु. -व्यवहार या बर्ताव में किसी बात या व्यक्ति का आदरपूर्ण ध्यान, मुलाहजा, शील, संकोच, लिहाज, मर्यादा, ध्यान, लज्जा, शर्म।

ली

लींक – स्त्री.– जूँ का अण्डा, लिक्षा।

लीकरी – स्त्री.क्रि.– निकली।

लीजो – क्रि.– ले लेना।

लींडो – पु.– लेंडी, मनुष्य या पशुओं का मल।

लींडो खसकी जायेगा– मल निकल जाएगा, मुश्किल में पड़ना।

लीद – स्त्री.– लीद या लेंडे।

लीदरा – वि.– फटे पुराने वस्त्र, चीथड़े।

लीदो – क्रि.– लिया हुआ।

लीघो – लिया हुआ।

लीन – वि.– तन्मय, डूबा हुआ।

लीपण – पु.– लीपने की सामग्री यथा लीद, पीली मिट्टी आदि, लेप या लीपण का मिश्रण।

लीपणो – क्रि.– लीपना, लीपने का काम करना, लीपन।

लीप – क्रि.– लीपने का काम करो।

लिपाणो – लिपवाना, लेपन करवाना, लिपाई करना, साफ-सफाई करना। (सासूजी ए घोलियो केसर लिपणो। मा.लो. 570)

लिप्यो छाब्यो – लिपा छबा, साफ-सुथरा, स्वच्छ स्थान, लीपा हुआ।

लींबू – पु.ए.व.– निब्बू, निम्बू नामक खट्टा फल।

लींबू तले – क्रि.वि.– नींबू के पौधे के झाड़ के नीचे।

लींबे – पु.– नीम पर, नीम के वृक्ष के ऊपर।

लींबोरी, लींबोली – स्त्री.– नीम का फल। (नीम की लींबोरी पाकी सावण मइन्यो आयोजी राज। मा. लो. 617)

लीम – पु.– नीम का वृक्ष।

लीमड़ी/लीमड़ो – स्त्री.– नीम का वृक्ष।

लीयो – क्रि. – लिया हुआ।

लीरी – क्रि. -चिन्दी या टुकड़ा लम्बाई में चीरा या फाड़ा हुआ कागज, वस्त्रादि।

लीरी ग्यो – क्रि.– निकल गया, चला गया।

लीरो – क्रि.– चिन्दा।

लीरो वईग्यो – क्रि.– फट गया, टुकड़ा हो गया।

लील – पु.– नीला।

लीलड़ी – घोड़ी। (बाई वो उठो बालम लीलड़ी पलाणो। मा.लो. 49)

लीलपी – स्त्री.– हरियाली।

लीलपो – वि.– हरी घास खाने वाले पशुओं का गोबर जो प्रायः हरा और पतला होता है।

लीलम – पु.– नीलम, नीलमणि।

लीलड़्याँ – स्त्री.– घोड़ियाँ, झुर्रियाँ।

लीलड़ो – पु.– घोड़े के लिए रूढ़ शब्द।

लीला – वि.– नीला (नल), नीले रंग की वस्तु, क्रि.- किसी महापुरुष का चरित्र का स्वाँग भरना, लीला करना यथा रामलीला, रासलीला आदि, केवल मनोरंजन के लिये किया जाने वाला काम या व्यापार, क्रीड़ा, खेल, प्रेम का खिलवाड़, प्रेम–विनोद, साहित्य में शृंगार के अन्तर्गत एक अभिनय जिसमें नायिका और नायक दोनों एक–दूसरे के बोल-अलंकार आदि धारण करके अथवा उनकी गतिविधि बातचीत आदि की नकल करते हैं, खिलवाड़।
(रामजी की लीला देखो। मो.वे. 33)

लीलालेर – आनन्द, सुख, वैभव, वृद्धि, खूब मौज मजा, आनन्द के ठाठ, आनन्द मंगल।

लीलाड़ – मस्तक, माथा, सिर, ललाट।
(कर्यानईंतिलकलिलाड़। मा.लो. 681)

लीली – वि.– हरी, गीली, भीगी हुई, हरे रंग की, श्वेत रंग की घोड़ी, हरियाली, लोक देवता रामदेव की घोड़ी का नाग।

लीलो चूड़ो – हरा चूड़ा (लाख का)।
लीलो चूड़ो ने लीली काँचली (लीलो माइणीकोभैंसगाड़मारुजी। मा.लो. 541)

लु

लुगई – न. – स्त्री, आँख।
(रस्ते चलती लुगायाँ से। मो. वे. 45)

लुगई को मारेल – औरत का गुलाम।

लुकई गयो – क्रि.– छिप गया।

लुकसान – पु.– नुकसान, हानि।

लुक्को – वि.- धूर्त, कपटी, बदमाश, गुण्डा, आवारा।

लुगड़ो – पु.– नौ गज की साड़ी, स्त्रियों का वस्त्र।
(लुगड़ा से ढाँकूँ। मो.वे. 47)

लुगदो – पु.– लुगदा, लोंदा।

लुगाई की टकी – क्रि.वि.– हठ, त्रिया हठ।

लुँगाड़ा – स्त्री.ब.व.– लफंगे , गुंडे, बदमाश

लुगायां – औरतें, स्त्रियाँ।
(मंगलगीत लुगायाँ गाया। मो. वे. 35)

लुँचण – पु.क्रि.– चुटकी से बाल उखाड़ना, केशलुंचन, नोचना।

लुच्चा–लफंगा – वि.– बदमाश, गुण्डा।

लुटई, लुटग्यो – लुट गया, लूट लिया।

लुटणो – क्रि.– लुट जाना, लूट लिया जाना, ठगा जाना।
(लुट - लुट दधि खाय बीरज को नाम लजावे। मा.लो. 679)

लुटाणो – क्रि.–लुटा देना, उड़ा देना, बर्बाद करना।
(हाँ रे बना हीरा खान लुटाव रे बनी का सेर में। मा.लो. 400)

लुटेरो – पु.– लूटने वाला, लुटेरा, ठग, डाकू।

लुड़कणो – क्रि.– लुढ़कना।

लुड़काणो – क्रि.– लुढ़काना, जमीन पर लोट–पोट होना।

लुण लक्खण – न.–विवेक, शिष्टता, समझ,बुद्धि।

लुणक्यो – एक प्रकार की पत्ती वाली सब्जी है जो गेहूँ के खेत में पैदा होती है।
(राती डाँडी लुणक्यो दोड़ कचेरी जाय। मा.लो. 154)

लुणई – स्त्री.- लावण्य, लवनी, चिकनाई।

लुणी – स्त्री.– मक्खन, लोनी।

लुतरो – वि.– चुगलखोर, बात का बतंगड़ बनाने वाला।

लुँथावण – पु.– खर्च से परेशानी, तंगाई।

लुन्दो – वि.– पिण्ड, लोदा, लोथ।

लुपत, लुप्त – वि.– अदृश्य, गायब।

लुभाणो – आकर्षित होना, लुभायमान होना, मोहित करने वाला, सुन्दर, मनोहर, लुभाना, लुभाने वाला।
(काँकड़ करसाण्या लुभाणा। मा.लो. 657)

लुम्बो तोड्यो – क्रि.वि.– लूम तोड़े, पकी पकाई पर अधिकार किया।

लुमाणो – उमड़ना, अचानक बहुत अधिक मात्रा में आ पड़ना, उमड़ाव, धावा, लटालूम।

लुम्बो – लूम झूम, श्रावण का महीना लूम झूम कर आना, छा जाना।
(घरे आवो नणद बाई रा वीर सावण लुम्बो जी। मा.लो. 610)

लुयो – क्रि.– पोंछा, पोंछ दिया।

लुवणो – फलों से अफीम एकत्र करना।

लुल्यो – वि.– लूला–लंगड़ा, अपाहिज।

लुवीलो – क्रि. – अफीम लुहने का काम करो, अफीम एकत्र करो।

लुवो – क्रि.– अफीम लूने या फलों से अफीम एकत्र करने का काम करना।

लुहार – पु.– लोहे का काम करने वाला कारीगर, लोहार जाति।

लू

लू – स्त्री.– गरम, तेज हवा, लू लगने का रोग।

लूखा – वि.– रूखा, खुश्क, सूखा।

लूखा–सूखा – क्रि.वि.– सूखा, सामान्य।

लूगड़ा – स्त्री.ब.व.– धोती, साड़ी।

लूचन्यो खईजा – क्रि.– मच्छर काटना।

लूट – स्त्री.– लूटना, डकैती।

लूट खसोट – स्त्री.– लोगों को लूटना या उनका माल छीनना।

लूटपाट – स्त्री.– लूटमार।

लूण – पु.– नमक।

लूण्याँ – पु.ब.व.– खारी सेव, नमकीन।

लूणी – स्त्री.– लौनी, मक्खन।

लूणो – क्रि.– अफीम के डोड़े पर से अफीम एकत्र करने का काम।

लून – पु.– लवण, नमक।

लूँबा तोड़्या – पु.– सार वस्तु या पकी पकाई को सीधे हथियाने का प्रयास करना।

लूम – सं.– गजरा या चोली के बन्द या फुँदे, पु. - दुम, पूँछ, चक्कर।

लूमणो – क्रि.– लटकना, झूलना।

लूमतोड़्या – क्रि.– पकी पकाई पर अधिकार किया।

लूमालूम – न.– लदा हुआ, लटालूम, फलों के गुच्छे।

लूम्बा – न. – झुमका, लूमना, लटकना, झूमना।

लूर लूर – झुक-झुक कर, बार-बार, प्रसन्नता से।
(पाँच कुलवऊ म्हारे आवती हो राज लुर लुर लागती म्हारे पाँव म्हारा राज। मा.लो. 468)

लू लागणो – क्रि.– लू लगना, लू से ज्वर हो आना।

लूलो – वि.– जिसका हाथ कटा हो या बिल्कुल न हो, अशक्त।

लूलो पाँगळो – वि.– लूला–लंगड़ा, अपाहिज, अपंग।

ले

लेइलो – क्रि.– ले लो, ले लीजिये।

लेई चालो – क्रि.– ले चलो, ले चलिये।

लेइजा – क्रि.– जे जा, ले जाओ।

लेख–लिख्या – क्रि.वि.– लेख लिखे, विधाता का लिखा लेख या भाग्य, दस्तावेज।
(लिख्यारेविधातालेख।मा.लो. 618)

लेग्या – क्रि.– ले गया।

लेगो – क्रि.– लेवेगा।

लेंगो – स्त्री.– लहँगा, घाघरा।
(माजी लेंगो बिराजे सवा थान को ए माय। मा.लो. 661)

लेई चालो – क्रि.– ले चलो, ले चलिये।

लेख – पु.– लेख, दस्तावेज।

लेखक – पु.– लिपिक, लिखने वाला, रचना करने वाला।

लेखनी – स्त्री.– कलम।

लेट्याँ लेट्याँ – क्रि.वि.- लेटे–लेटे, सोये–सोये।

लेंडईगी – स्त्री.–कुंद हो गई, बन्द हो गई, भ्रष्ट हो गई।

लेड़ापणो – वि.– टुच्चापन, दृष्ट प्रकृति।

लेंडी – स्त्री.– बँधे हुए मल की बट्टी, बकरी, ऊँट, हाथी आदि की मेंगनी या मेंगने, घोड़ा–घोड़ी की पूँछ के पास लगने वाली कपड़े की पट्टी।

लेंडी खसकणी – स्त्री.– मेंगनी निकलना, आफत आना, डरना।

लेंडो – पु.– हाथी आदि का मोटे आकार का मेंगना।

लेड़ो – वि.– आचरण भ्रष्ट, उठाईगीर।

लेण – क्रि. – लेना, किसी वस्तु को ले लेने की क्रिया या भाव, मृत्युभोज में आंगतुकों को दी जाने वाली भेंट वस्तु।

लेण आवीगी – स्त्री.– बिजली आ गई।

लेण बाँटनी – मृत्यु भोज पर स्मृति वस्तु देना।

लेणार – वि.– लेने वाला।

लेणियार – पु.– लेने वाला।

लेणो – न. – किसी में बकाया रहा हुआ धन, उगाही, उधार लेना, लेनदारी, ले जाना।

लेत – क्रि.– लेते ही, लेना।

लेतलाली – वि.– ढील पोल, किसी काम में किया जाने वाला प्रमाद।

लेताँई – क्रि.– लेते ही।

लेतोई चाली पड़्यो – क्रि.– लेते ही चल पड़ा।

लेदे – क्रि.– लेना-देना।

लेदो – क्रि.– लेकर दे दो, किसी वस्तु बाजार से क्रय करके देना।

लेन – स्त्री.– लाइन, पंक्ति, सीध, क्रि.- लेना, मृतक के विभिन्न दी जाने वाली वस्तु।

लेनपत – क्रि.वि.– किसी के भाग्य में कोई वस्तु विशेष लाभकारी होना।

लेप – पु.– लीपने, पोतने की चीज, लेप करना।

ले पूग्यो – क्रि.– लेकर पहुँचा, ले पहुँचा।

ले भग्गू – वि.– लेकर भाग जाने वाला, उठाईगिरा।

ले रई री – क्रि. स्त्री.– लहरा रही, फहरा रही, लहरें ले रही।

लेर्‌या भाँत लूगड़ो – वि.स्त्री.– लहर वाला लूगड़ा, चुनरी।

लेर ले – लहराना, नशा आना, हवा। (आम्बा ऊपर थाल वाजे भम्मर्यो लेर ले। मा.लो. 331)

लेराणो – लहरा रहा, फहरा रहा, लहरावे, लहराया। तो जउ म्हारा लेर्यां लेवे जी।

लेवड़ो – कच्ची दीवाल के सूखे पोपड़े (लेपन)। (माथे बेवड़ो ले, भीत को लेवड़ोई ले। मा.लो. 113)

लेस – क्रि.वि.– तैयार, सन्नद्ध, फाइल का डोरा, भरपूर।

लेस्यो – वि.– चिपचिपा, लेसदार।

लेहर – स्त्री.– लहर, तरंग।

लेराँ लइऱ्यो – क्रि.वि.– लहरों का आनन्द ले रहा।

लो

लौ – स्त्री.– आग की लपट, ज्वाला, दीपशिखा, सं. कान का निचला हिस्सा।

लोई – स्त्री.– गूँथे आटे का पेड़ा जिसे बेलकर रोटी बनाई जाती है, रक्त। (लोई वईग्यो पाणी। मो.वे. 47)

लोऊ – पु.– लहू, रक्त, खून, रुधिर।

लोक – पु.– लोग, जन, इहलोक, परलोक, पृथ्वी।

लोककथा – पु. – परम्परागत कहानी, किंवदन्ती।

लोक गंगा – स्त्री.- जनतारूपी गंगा, जनगंगा।

लोक गाथा – स्त्री. –गाकर कही जाने वाली कथाएँ।

लोक जीवन – पु.–सार्वजनिक जीवन।

लोकतन्त्र – पु.– प्रजातन्त्र, गणतन्त्र।

लोक बारताँ – स्त्री.– इतिहास, पुराण आदि के अ ध्ययन का वह अंग जिसमें पुरानी प्रथाओं, धारणाओं, विश्वासों, परम्पराओं आदि से सम्बन्ध रखने वाली और लोक या जनसाधारण में प्रचलित बात।

लोग – मनुष्य, जनसमूह, आदमी। (हाँसी हाँसे लोग। मो.वे. 33)

लोग लुगायाँ – स्त्री-पुरुषों का आदमी-औरतें। (लोग लुगायाँ रो आयो रे धड़ेलो। मा.लो. 576)

लोग-बाग – जन साधारण जनता, जनसमूह, भीड़।

लोगायाँ – लुगाइयाँ, औरतें, महिलाएँ, नारियाँ। (गेंदाजी मरेठी लोगायाँ कामणगारी। मा.लो. 566)

लोटी – पानी का छोटा लोटा, लुटिया।

लोट्यो – बड़ा लोटा, छोटा लोटा, धातु निर्मित पूजन के लिये जल पात्र, शौचपात्र, लोटा, उलट-पुलट होना, लौटना। (लोट्यो समाल रे लोट्यो समाल। मा.लो. 442)

लोंठई – जबरदस्ती, बल प्रयोग से।

लोठड़ी – बदचलन, दुराचरण, दुश्चरिता, क ुमार्गी, बुरे चाल चलन वाली। (एजी व्यईजी वाली लोठड़ी म्हारा काकाजी रे लाराँ जाय रे। मा.लो. 510)

लोड़ी – छोटी, छोटी लड़की, छोटी बहू, छोटी वस्तु, छोटे लोग, छोटी सौतन। (चंदावदनी ओ टीको लोड़ी रो म्हारी मारुजी। मा.लो. 446)

लोड़्यो – छोटा, दूसरा, बड़े से दूसरे नम्बर का छोटा। (लोड़्यो देवर पीसे पोवे जेठ भरेगा पाणी हो राज। मा.लो. 413)

लोड़ी – सिल पर पीसना, पत्थर, बट्टा, लोढ़ा, छोटी।

लोड़ा – पु.– सिलबट, पत्थर जिससे मसाला पीसा या कूटा जाता है, लिंग या शिश्न के लिये शब्द।

लोंडा – पु.–दास, चाकर।

लोंडी – स्त्री.– दासी, चेरी, सेविका, बाँदी, गोली।

लोणी – स्त्री.– मक्खन, माखन, लौनी, नवनीत।

लोंदरी – स्त्री.– घूघरमाळ।

लोंदा – पु.– पिण्ड, लोथ।

लोन – पु.– लवण, नमक।

लोप – वि.– गायब, छिपना।

लोब – पु.– लालच।

लोबान – पु.– एक प्रकार का सुगन्धित गोंद जो जलाने और दवा के काम आता है।

लोभ – पु.– लालच, चाह, लालसा। (हमारा कँवर तप का हो लोभी। मा.लो. 583)

लोभी – वि.– लोभ करने वाला, लालची।

लोया, लोयो – पु.– लोई, पिंड।

लोरी – स्त्री.– बच्चों को सुलाने के लिए गाये जाने वाले शिशु गीत।

लोल – वि.– चंचल, चपल, चलायमान, हिलती हुई।

लोला – पु.– शिश्न।

लो लागी – स्त्री.– ईश्वर से नाता जुड़ना, प्रेम या अनुराग उत्पन्न हुआ।

लोवा – पु.– लोहा। (साँकल दी लोवा की जी। मा.लो. 616)

लोवार – पु.– लुहार, लोहे के औजार बनाने वाला।

ल्हाँट – गाय या भैंस जिसके अभी तक बच्चा न हुआ हो।

व – मालवी एवं देवनागरी का व्यंजन।
वं – सर्व.– वहाँ।
वइऱ्या – हो रहे, होते हैं।
(बिना घी का जाया वइऱ्या मेंगी वइरी सूँठ। मो.वे. 32)
वँई – सर्व.– वहीं, वहाँ, उधर।
वँई आड़ी – सर्व.– उस ओर, उस तरफ, उधर।
वईग्यो, वईग्या – क्रि.– हो गया, हो गये।
वँई ग्यो – क्रि.वि.– उधर गया, उस ओर गया।
वईटारा – ओलम्बा, उलाहना, उपालम्भ।
वँई याड़ी – सर्व.– उधर, वहाँ।
वईऱ्यो – क्रि.वि.– हो रहा।
वउवड़ – बहू, पुत्रवधू, नववधू।
(वउवड़ पाणी पावो हो राज।)
वऊ – स.– बहू, पुत्रवधू।
वकत – पु.– वक्त, समय, अवधि, प्रतिष्ठा।
वक वचई नहीं सक्या– उसको बचा नहीं सके।
वकसीस – वि.– इनाम, पुरस्कार,बकसीस।
वंकनाल – पु.– गर्भपोषण, नलिका।
वकील – पु.– विधिज्ञ, वकील, प्रतिनिधि।
वको – वि.– अकाल, निर्धनता, गरीबी, कमी, दुर्भिक्ष, दुर्दिन।
वखत बे वखत – जब भी चाहे, जब कभी, समय-असमय, समय कुसमय।
वखाणनो – क्रि. – प्रशंसा करना, तारीफ करना, बखान करना, गालियाँ देना।
वख्खर – स्त्री.– करी, धरती की मिट्टी उलटने का कृषि यन्त्र।
वखत – समय, वक्त, मौका, अवसर, फुरसत।
वखरणो – क्रि.– बिखरना, छूटकर गिरना, खेत में वखर चलाना।
वखरी गयो – क्रि.– बिखर गया।
वखारी – अनाज का भण्डार।
वखेर – क्रि.– बिखेरना।
वखेरणो – क्रि. – बिखेरना, इधर–उधर गिराना, छिटकना।
वखो – न.–विपत्ति,संकट, आपत्तिकाल, मुसीबत, परेशानी, दुःखी होना, गरीबी के दिन, बुरे दिन।
वगड्यो – वि. -बिगड़ा, नष्ट हो गया।
वगऱ्यो – क्रि.– बिखर रहा, फैल रहा।
वगाड्यो – क्रि.– बिगाड़ा, नुकसान किया, बिगाड़ दिया।
वगारी – स्त्री. – बघारी–बघार दिया, सब्जी–दाल आदि में छोंक लगाना।
वघारी – स्त्री.– बघार दी, छोंक दिया।
वच – बीच में, मध्य, वचन, अधबीच में।
(गोया तो वच की या पीपल रे वीरा। मा.लो. 352)
वचक – वि.– डर आतंक, धाक, भोंचक, बिचक।
वचकणो – क्रि.– डर जाना, बिचक जाना, उझकना।
वचन – पु.– वाणी, कथन, उक्ति, प्रमाण भूत वाक्य, आप्तवाक्य, व्याकरण में संख्या बोधक।
(ये पेलो वचन बोल्या जानकीजी। मा.लो. 683)
वंचाड्या – क्रि.– ओंछे, काढ़े, बचाये, बाल ओंछना, पढ़वाया गया, बचाये।
वंचाणी – स्त्री.– बाँची गई, पढ़ी गई, कही गई, लिखी गई, बचाई।
वचाऱ्यो – क्रि.– विचार किया, सोचा।
वंची – क्रि.– बच गई, बाँची, कही, हो गई।
वंचीग्यो – पु.– बच गया, जीवित रह गया।
वछावण – पु.– बिस्तरा, बिछाने का वस्त्र।
वछावणो – पु.– बिस्तरा, बिछाने का वस्त्र।
वछाँट – बौछार।
वछेरी – घोड़ी का बच्चा, घोड़ी, छोटी घोड़ी, नई नवेली घोड़ी।
(नानी मोटी तलक वछेरी तो जाँ चड़ राइवर आया हो राज। मा.लो. 397)

वजन – पु.– भार, तौल, प्रभाव, दबाव, असर, महत्त्व।

वजनदार – वि.– भारी, बोझिला, प्रतिष्ठित।

वज्जर – पु.– वज्र, हीरा, बिजली, गाज।

वजाड़नो – क्रि.– बजाना, ढोल, घण्टा आदि बजाना।

वजीफो – पु.– पुरस्कार, छात्रवृत्ति।

वजीर – पु.– प्रधानमन्त्री, दीवान, शतरंज का वजीर, मन्त्री।

वजूद – पु.– अस्तित्व, एहसास, मौजूदगी, उपस्थिति।

वजेसे – पु.– वजह से , कारण से, के–कारण।

वट – पु.– वटवृक्ष, बड़ का झाड़।

वटमणो – क्रि.– नष्ट करना, बिगाड़ना, झमेले में डालना।

वँट – पु.– रस्सी का बँट, बँटना, दोहरी करना, एँठन, विभाजन।

वँट काड़नो – मारपीट करके बदला लेना, रस्सी आदि की ऐंठन खोलना, गर्व चूर करना।

वटमणा पड़ना – परेशानी आना, मुसीबत आना, दुःख पड़ना।

वटलाणो – क्रि.वि.– भ्रष्ट होना, बिगड़ना। (दूध बटाल्यो अणी वाछरूरे। मा.लो. 636)

वड़ – बड़, वटवृक्ष। (आई वणजारा री मोठ उतरी वड़ तले। मा.लो. 371)

वड़ई – बड़प्पन।

वड़्लइग्यो – सब कुछ खत्म हो गया, बरबाद हो गए, लुटा गए, कुछ न रहा।

वड़्लो – न.– वटवृक्ष बड़ का पेड़, बड़।

वड़ो वईग्यो – बुझ गया, दीपक का बंद होना, दीपक का बुझना, बंद होना, बड़ा, दही बड़ा।

वण – चेचक के फोड़े, चेचक के फोड़े का निशान, चेचक निकलना, कपास, कपास का पौधा, उन पर उन्होंने।

वणज – वाणिज्य, व्यापार, एक भोज्य पदार्थ। (भेरू माता रे पाँव लगाड़स्याँ एक वणज हम अदको सो करस्याँ। मा.लो. 430)

वणजारा – भाई के लिये सम्बोधन सूचक, बनजारा एक जाति। (दोई वणजारा ओ काँकड़ आविया। मा.लो. 360)

वणजारी – बनजारे की स्त्री, कान का आभूषण। (कणी बद लुटी या वणजारी। मा.लो. 713)

वण दन – उस दिन।

वणाको – सर्व. वि.– उनका, उनको।

वणास – विनाश, बेकार, नष्ट करना। (म्हारा बाजोत्या को कत्यो रे वणास। मा.लो. 75)

वतराणो – बोलना, बात करना, बतराना, वार्तालाप, बातचीत। (जी सायबा बारख ने वतरावो। मा.लो. 599)

वताड़नो – स्त्री.– बताना, दिखाना। (संगवी ने वाट वताड़ो म्हारी जरणी मा.लो. 629)

वताल – क्रि.– दिखा, दिखला, प्रदर्शित कर।

वत्तो – अधिक।

वत्थो – वि.– बहुत अधिक, सिर के बालों की लटें।

वथाड़ – क्रि.– दिखला, बतला।

वद – क्रि.– बढ़ना, बोलना।

वदऊ – अतिरिक्त, बढ़ा हुआ, बधाना।

वदणी – हिचकी, हिक्का।

वदणो – क्रि.– बढ़ना, ऊँचा उठना, बड़ा होना। (घट्या वद्या ने थारा छोरा छोरी लाव। मा.लो. 366)

वदू – वि.– बहुत अधिक, ज्यादा, काफी, पर्याप्त, अतिरिक्त।

वदन – सं.– शरीर, मुँह।

वंदन – क्रि.– प्रणाम करना, वन्दना करना।

वद–वद रे म्हारा चंदन का रूँख – बढ़ना, बोलना।

वदनी – स्त्री.– हिचकी।

वदनी चलीरी – क्रि.वि.– हिचकी चल रही।

वदाणो – बधाना, बढ़ाना।

वदावणो – स्वागत करना, किसी के उत्कर्ष के प्रति हर्ष प्रकट करना, बधाना

वदावो – मंगलगीत, स्वागत गीत, बधाई गीत, आनन्दोत्सव।
(आब बरसे ने धरती नीबजे माई रंग रो वदावो। मा.लो. 450)

वदे ज नी – क्रि.वि.– बढ़ता ही नहीं, ऊँचा नहीं उठता।

वधू – स्त्री.– पुत्रवधू, दुल्हन।

वन – पु.– जंगल।

वनम – पु.– जंगल में।

वनंग, वनांग – उधर, वहाँ।

वनाए – सर्व.– उनको।

वनारनो – क्रि. – साग-सब्जी छील करके साफ करना और काटना, सब्जी सुधारना।

वनास – उजाड़ना, विनाश करना।
(माली करी पुकार तो थारे पोपट वन फल वणासीयाजी। मा.लो. 312)

वनासपति – स्त्री.– वनस्पति, लता–पत्रादि।

वनीरें – सर्व.– उसको, उनको, उन्हें।

वनी को – सर्व.– उनका, उनको।

वप – क्रि.– बोना।

वपरायो – क्रि.– उपयोग में लिया।

वफादार – पु.– विश्वासपात्र, स्वामी भक्त, अनुरक्त, कृतज्ञ।

वयाँड़ी – उधर।

व्या – क्रि.– हो गया।

व्याँड़ी – सर्व.– उधर।

वर – पु.– दूल्हा, वर, जवाँई, पति, वरदान, वर्ष।

वरक – पु.– चाँदी का पत्ता, वर्क।

वरकल्यो, वरखल्यो– वि.– उद्दण्ड, चंचल, परेशान करने वाला।

वर के सिणगारे – क्रि.वि.– वर का शृँगार करे, दूल्हे की सजावट करे।

वरणगीं – वस्त्र या वस्तुएँ, टाँगने की रस्सी, लटका हुआ बाँस, लटकाई हुई बल्ली।

वरगड़ो – पु.– जंगली पशु, बरगड़ा, भेड़िया।

वरजणो – किसी को किसी बात या काम करने के लिये रोक देना, मना करना, अवरोधना, त्यागना।
(केसरिया ओ म्हे थाने वरज्या था। मा.लो. 446)

वरण – पु.- किसी को किसी के लिए चुनना।

वरणी – वर्णन, वर्णन करना, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।
(बीच में चले जानकी शोभा वरणी न जाई। मा.लो. 695)

वरद – वरदान देने वाला, मंगलकारी, शुभ, विवाह में गीत गाती हुई स्त्रियों का कुम्हार के यहाँ मंगल कलश लेने को जाना, मंगलकलश का स्थापन, शुभ दिन, सम्पूर्ण वैवाहिक काम।
(अणी वरद सुन्दर वऊ अड़ी रया रे। मा.लो. 338)

वरदड़ी – स्त्री.– मिट्टी की दो मुँह वाली छोटी–सी कोठी जो गृहस्थ जीवन में प्रतीक रूप में विवाह के अवसर पर बनाई जाती है।

वरद्या – क्रि.– वरदान दिया, वर दिया।

वरत – पु.– व्रत, उपवास।

वरतमान – पु.– वर्तमान, चालू समय, विद्यमान।

वरतो – क्रि.– उपयोग में लो, बापरो, विपरीत करो, वापस, लौटता।

वरदान – पु.– किसी देवता या बड़े का प्रसन्न होकर कुछ देना।

वरम – पु.– घाव, चोंट लग जाने पर घाव का हो जाना, मर्म, कवच, फोड़ा–फुँसी का घाव, सूजन।

वरस – पु.– वर्ष, साल, वर्षा कर।

वरसा – क्रि.– बरस गया, पानी का बरसना या वर्षा होना।

वरदावे – क्रि.– प्रशस्ति गान करे, प्रार्थना करे, प्रसन्न करे।

वर वऱ्यो – वि.– बड़बड़ाने वाला, अधिक बोलने वाला, कुछ तो भी हमेशा बकते रहने वाला।

वरस्यो – क्रि.– बरसा, बरस गया।

वरात्या – क्रि.वि.– बराती।

वराजी थकी – क्रि.– बैठी हुई।

वरेइनी – क्रि.वि.– वरण नहीं करता।

वरेड़ी – रस्सी, वरत्रा।

वर्गावेर – एक-दूसरे को आँखों आँख नहीं देखना, एक-दूसरे की नहीं बनना, बारहवाँ चन्द्रमा, शत्रुता।

वळ – क्रि.– घुस जा, प्रविष्ट हो जा, वि.- बाँकपन, टेढ़ा–तिरछापन।

वलखी – वि.- बिलखी, विलाप किया, रोना।

वळण – नफा-नुकसान के चुकाने की व्यवस्था करना, लौटाने की क्रिया।

वळतो – क्रि.वि.– लौटते हुए, वापस आते हुए, पुनः, फिर।
(वळतो माली दीदी रे आसीस तो नत की विजो रे थारे घर वरदड़ी। मा.लो. 312)

वल्लभ – पु. – पति, यार, प्रेमी, श्रीकृष्ण का नाम।

वलसे – वि.– शोभा देवे, अच्छा लगे, क्रि.- प्रदान करो।

वलसो – क्रि.– भेंट करो, रुपया आदि भेंट में देने की क्रिया या भाव।

वल्यांग – सर्व.– उधर।

वंश वेली – स्त्री.– वंश परम्परा।

वश – वि.– वश में, अधीन, वशीभूत, अनुकूल।

वशाड़्यो – क्रि.– बसाया, रखा।

वशास – क्रि.– विश्वास।

वशीग्यो – क्रि.–बस गया, रहने लगा।

वशीभूत – वि. –वश में होना, अधीन होना।

वसंत – पु.– वसंत ऋतु।

वंस – पु.– वंश, कुल, गोत्र, घराना, जाति, बाँस।

वसणो – क्रि.– निवास करना, रहना, कहीं पर बस जाना।

वंस चालणो – क्रि.– वंश विस्तार होना, वंश चलाना, गद्दी का वारिस होना।

वस्तर – पु.– वस्त्र, कपड़ा।

वंस – वंश, पुत्र-पौत्रादिक का क्रम, कुल, औलाद, संतान, वारिस।
(होजी म्हारी परणी वंस बड़ावे रे। मा.लो. 625)

वंस परम्परा – पु.– वंश परम्परा, सन्तानोत्पत्ति का क्रम, पीढ़ी।

वंस बोणो – पु.– वंशहीन, निपुत्र, पुत्रहीन।

वंसज – पु.– किसी के वंश में उत्पन्न, सन्तान, औलाद।

वंसधर – पु.– वंशज, वंश को चलाने वाला।

वस में करनो – वश में करना, अधिकार में करना

वसावणो – बसाना।
(वचना से लोग वसाविया। मा. लो. 719)

वसीकरण – पु. -मंत्र–जंत्र द्वारा किसी को वश में करना।

वसीज दसा वे – क्रि.– वैसी ही हालत होगी।

वसीयत – स्त्री.अ.– उत्तराधिकार पत्र।

वसीयतनामो – पु.– मृत्यु बाद के अधिकार का लेख।

वसीलो – पु.– सम्बन्ध, लगाव, जरिया।

वसूल – पु.– लगान या रुपया आदि किसी से ले लेना या वसूल करना, उगाहना।

वसूला – पु.– बसौला, बढ़ई का एक औजार।

वस्ती – स्त्री.– बस्ती, बसाहट, अधिक।

वस्तर – स्त्री.– वस्त्र, कपड़े आदि।

वा

वाँ – सर्व.– वही।

वाँई – सर्व.– वहीं।

वाई – क्रि.– बासीदा, घर की साफ–सफाई से निकला कचरा कूटा गोबर आदि एकत्र कर घूरे पर फेंकना, वि. – वायुविकार, वात रोग।

वाँईज रो – क्रि.वि.– वहीं रहो, वहीं पर रहा करो।

वाई दूँ – क्रि.– बो दूँ, वपन करूँ, बोने का काम करूँ।

वाए – वाह, बहुत अच्छे, ऐसा कहकर एक कटाक्ष करना।
(वाए म्हारी जच्चा तू बड़ी होसीयार।)

वाकई – अव्य– सचमुच, वस्तुतः वास्तव में।

वाँक – वि.– गलती, टेढ़ापन, तिरछान, वक्रता, घुमाव, बाँक।

वाँकड़ – वि. – वक्रता, बाँकापन, टेढ़ा या तिरछापन, घुमावदार।

वाँकड़ा – वि.– बाँका, आड़ा, घुमावदार, पलाश वृक्ष की जड़ों से निकले तन्तु।

वाँकड़ी – स्त्री.– टेढ़ी, बाँकी, तिरछी।

वाँकड़ो – पु.– पलाश वृक्ष की जड़ से निकल तन्तु– जिसे बँटकर रस्सी आदि कृषि उपयोगी वस्तुएँ बनाई जाती हैं।

वाँकड़्यो – पु.– बिच्छू, वृश्चिक या डंक, बाँके डंक वाला, टेढ़ा।

वाँक्यो – वि.– बाँका, टेढ़ा, तिरछा, घुब्बड़ वाला, भेंगा देखने वाला।
फूँक से बजने वाला लम्बा पीतल का बाजा- इसे बजाने वाले कनारची ढोल के साथ सीतामऊ क्षेत्र में बजाते रहते हैं।

वाँकी जगे – क्रि.वि.– उस स्थान पर।

वाँकी चूँकी – क्रि.वि.– बाँकी–टेढ़ी, टेढ़ी–तिरछी।

वाँकीज – सर्व.– वहीं की।

वाके, वाको – सर्व– उसके, उसको।

वाग – पु.– बाग, बगीचा।

वागड़्यो लोटो – पु.सं.– काँसे या पीतल का बना लोटा नामक पात्र जो शौच के लिये साथ में ले जाया जाता है।

वाँ–ग्यो – क्रि.वि.– वहाँ गया।

वाग – बगीचा, बाग, वाटिका, सरस्वती, वाणी।
(वागाँ में खेलाँ वगीचा में खेलाँ खेलाँ झरोका के बीच। मा.लो. 578)

वागर – स्त्री.– काँटेदार बागुड़ या आड़, चमगादड़।

वागरी – पु.– बागरी जाति।

वागा – देवी-देवता के कपड़े।

वागा में – पु.– बगीचों में।

वागेलो – पु.– अफीम रखने का कटोरा।

वागो – पु.–भगवान् की मूर्ति को पहनाये जाने वाले वस्त्र।

वागोले – पु.– बागोल काट रहा, पशुओं का बागोलना, जुगाली करना।

वागो–हीव्यो – क्रि.वि. – भगवान् की मूर्ति के लिए पोशाख सिलवाई, बागा सिलवाया।

वाघजी – पु.– बाघजी नामक बगड़ावतों के आदि–पुरुष।

वाँचणो – क्रि.– पढ़ना, बाँचना।

वाचनालय, वाचनाले– पु.– पढ़ने का स्थान।

वाँ – पद – वहाँ।

वाचरू – पु.ब.व.– बछड़े।

वाँचा – स्त्री.–वाणी, वचन, बोल, शुद्ध बोल, सरस्वती।

वाँचे – क्रि.– पढ़े, पढ़ने का कार्य करे, पसन्द करे।

वाँचो – क्रि.– पढ़ो।

वाँछड़ी – स्त्री.– रण्डी, दुश्चरित्र स्त्री, एक मालवी गाली।

वाँछड़ी का पूत – पु.– रण्डी का लड़का।

वाछरू – पु.ब.व.– बछड़े, गाय के बच्चे।

वाँछया – क्रि.– बाल ओंछे, बाल काढ़े।

वाँछ्यो – क्रि.– बाल ओंछने या काढ़ने की क्रिया, चोटी करना, कंघी करना।

वाँछा – स्त्री.– इच्छा, चाह, अभिलाषा।

वाँछ्यो – क्रि.– बाल ओछने या काढ़ने की क्रिया, चोटी करना, कंघी करना।

वाँछा – स्त्री.-इच्छा, चाह, अभिलाषा।

वाँछीऱ्यो – क्रि.– ओंछ रहा, बाल निकाल रहा, कंघी कर रहा।

वाँछेठ – चाहना, अपनाना।

वज – वही।

वाँज – सर्व.– वही।

वा जनस – स्त्री.– वह वस्तु या चीज।

वाजणो – क्रि.– बजना, शब्द करना।

वाँ ऽ जरो – क्रि.पु.– वहीं रहो।

वाजताँ – क्रि.– बजते ही।

वाज्या – क्रि.– बजे, बजने लगे।

वाँज्यो – वि.– बाँझ, सन्तान रहित।

वाँज–ऱ्यो – क्रि.– वही रहा, वहीं पर ठहरा, वहीं रह गया।

वाजवी वात – क्रि.वि.– सही या सत्य बात, उचित बातचीत।

वाजा–वाजी – स्त्री.– बजे–बजी, बाजे या ढोल–नगाड़े आदि वाद्य बजने या बजाना।

वाजूँ – क्रि.– कहलाऊँ, कोई दूसरा कहे।

वाजेता – क्रि.– कहलाते थे, कहलाता था।

वाजेली – प्रसिद्ध, मशहूर, ठावा।
(ब्याइजी वाली बायर आव बनड़ी वाजेली। मा.लो. 441)

वाजो – बाजा वाद्य, ढोल, नगाड़े।
(वागाँ में वाजा जंगी ढोल सेर्यां में वाजी सरणई। मा.लो. 350)

वाँजो – वि.– बाँझ, निःसन्तान।

वाँझ – पु.– बंध्या।

वाँझो – वि.– बाँझ।

वाट – पु.– रास्ता, तोलने या बाट, मार्ग, राह, मग, पथ।
(वीरा जाँ चढ़ जोऊँ थारी वाट। मा.लो. 352)

वाटकी – स्त्री.– कटोरी, कटोरा।

वाटको – पु.– बड़ा कटोरा।

वाट–खरच – पु.– राह खर्च, यात्रा के समय मार्ग में होने वाला, जेबखर्च।

वाट खूटणो – पु.–मार्ग तय होना, मंजिल पर पहुँचना।

वाट चूकणो – क्रि.वि.– राह भूलना, मार्ग भूल जाना।

वाट जोवणी – प्रतीक्षा करना, राह देखना, रास्ता देखना।

वाटड़ो – स्त्री.– पानी में मक्का या ज्वार का दलिया उबालकर बनाया गया घाट, दलिया पतली लप्सी।
(परताब सींग, वाटड़ो राँद्यो केनी राँद्यो।)

वाट लागणो – अपनी मंजिल पहुँचना।

वाट–वटऊ – पु.– राहगीर, यात्री।
(वाट वटऊ म्हारा भई भतीजा वीराजी ने यूँ जई कीजो हो राज। मा.लो. 557)

वाटी – स्त्री.– वाटी, गेहूँ के आटे की गोलाकृति में बनाई गई बड़ी व मोटी बाटी।

वाटूड़ी – स्त्री.– चलती राह में मिलने वाली कोई स्त्री।

वाटे – पु.– रास्ते में, राह में, मार्ग पर।

वाटे जाणो – क्रि.– रास्ते पर चलना, राह पर चलना।

वाँटे – वितरित कर देवे, प्रदान करे, बाँट लेवें, हिस्सा करे।

वाँटो – पु.– बाँटा, हिस्सा, बाँट दो।

वाँटो हमेसाई राँटो, वाँटो हमेस राँटो– बाँटे की खेती हमेशा ही टेढ़ी होती है।

वाड़ – क्रि.– घास, पिंडी आदि किसी भी पशु चारे की फसल के काटना, पु.- गन्ने की फसल, वाड़ प्रत्यय रखकर,

स्थान विशेष का नाम परखने की परम्परा यथा – छिंदवाड़, कन्डे रखने का स्थान, पिंडवाड़, सोधंवाड़, इमामबाड़ आदि, नदी का पूर आना।

वाड़णो – क्रि.– काटना।

वाड़्ल्यो – क्रि.– काट लिया, दराँती से घास–पिंडी आदि की फसल काटने की क्रिया।

वाड़ा–वाड़ो – पु.– पशुओं के बँधने, उनकी खाद्य सामग्री घास–पिंडी आदि सुरक्षित रखने के लिये, कृषि उपकरण आदि सुरक्षित रखने के लिये घास फूस या खपरैल डालकर बनाया गया बाड़ा या बड़ा मकान, पशुओं के थनों का घेरा

वाड़ी – स्त्री.–बगीचा, फुलवारी, वाटिका, सब्जी की बाड़ी या बगीचा, क्रि. - काटी गई, पशुओं के थनों का आकार।

वाडूँ – क्रि.– घास आदि काटने का काम करूँ।

वाड़े – क्रि.– घास आदि काटने का कार्य करें, पशुशाला, अश्वशाला, कृषि उपयोगी मकान, क्रि.- घास आदि काटने का काम करो, दुधारू पशु के थन का घेरा।

वाड़ो काड़्यो – क्रि.वि.– दुधारू पशुओं के प्रसव हो जाने के उपरान्त अपने बछड़ों को दूध पिलाने के लिये निकाला गया थनों का घेरा या ऊँवाड़ा।

वाण – पु.– बर्तन, घरेलू उपयोग में आने वाले ताँबा–पीतल आदि धातुओं के बने बर्तन, रस्सी बनाने की कच्ची सामग्री यथा पलाश वृक्ष की जड़ या पटसन आदि के रेशे।

वाण्यो – पु.– बनिया, व्यापारी के लिए एकमात्र सम्बोधन, महाजन, साहूकार।

वाणियाँ – पु.ब.व. – बनिये, साहूकार, महाजन, दुकानदार आदि।

वाणियाँना – पु.– बनियों के यहाँ।

वाणी – स्त्री.- वाचा, वाणी, भाषा।

वात – पु.– बातचीत, कथा, गप्प, वारता, वातरोग, गठिया, कमरदर्द, वायुविकारजनित वात रोग, वार्तालाप, चर्चा।

वातन्नो – पु.– बिछाने की गादी, दरी, फर्श आदि वस्त्र विशेष।

वातर – क्रि.– बिछाने का काम।

वातरनो – क्रि.– बिछौना, बिछाना।

वात राखी – प्रतिष्ठा बचाना।

वाताँ – पु.– बातें, बातचीत, वार्ताएँ या लोककथाएँ।

वाँता लागणो – बातें करने लगना, बातों में उलझ जाना। (माथे बेड़ो वाताँ लागो ई लक्खण खोटा रा।)

वाँती – सर्व.– वहाँ से।

वातूड़्यो – वि.– बातें फाँकने वाला, गप्पी, बातूनी

वाते – अव्य.– लिए, निमित्त, बिछाना।

वाथरनो – बिछाना।

वाथरो – क्रि. – बिछाओ, बिछौने बिछाना, वाथरा की पत्ती की सब्जी बनती है।

वाथलो – स्त्री. – बथुआ का साग या सब्जी।

वाद – वि.– झगड़ा, फरियाद, चर्चा।

वाँदरी – स्त्री– बन्दरिया।

वाँदरो – पु.– बन्दर, वानर।

वादरो – बादल।

वादल – पु. – बादल, मेघ।

वादी, वायदी – पु.– वाद रखने वाला, फरियादी, वि. - वायु विकार होना, क्रि.- बोने की क्रिया या भाव, अग्नि, आगि, आग।

वादूँ – क्रि. –बो दूँ, बोने या बुवाई का काम करूँ, वि. वायदा, इकरार।

वादे – वि. – वायदे या इकरार करना बोने का आदेश देना।

वाद्यो – न.– गाय का बछड़ा जब दो या तीन साल का हो जाता है तब उसे बाधिया करके वैध बनाया जाता है।

वान, वाण – पु.– बर्तन, भेंट, एक लौकिक रस्म

जिसमें दूल्हे को भेंट में रुपया आदि दिया जाता है।

वानगी – स्त्री. – नमूना, बानगी।

वानी – स्त्री.– राख या भस्मी, वाणी, बोली, बातचीत।

वानो – पु.– दूल्हा या दुलहिन का जुलूस।

वानो झेल्यो – पु.– किसी प्रेमी, रिश्तेदार या व्यावहारिक व्यक्ति द्वारा किसी की बेटी या बेटे के विवाह के अवसर पर बंदोरा झेलने की लोक रस्म – जिसमें दूल्हा–दुल्हन को बाना या सजा-धजाकर नगर में जुलूस निकालना एवं समाज-अतिथियों समेत प्रीतिभोज देना। इस लौकिक रस्म का अभिप्राय एक दिन का समस्त खर्च झेलकर अपने रिश्तेदार की आर्थिक सहायता करना या आदान–प्रदान का भाव है।

वापन्या – उपले, कंडे, जंगल से एकत्र किये सूखे हुए गाय भैंस के पोटे जो हवनादि के काम में लिये जाते हैं।

वापर – पु. – उपयोग में ले, काम में लेवे, किसी वस्तु को बपराना या आपस में बाँट लेना, बापरना।

वापरणो – क्रि. – उपयोग में लेना।

वापसी-व्यो – क्रि. – पलटा, वापस हुआ।

वापो – पु. – बाप, पिता।

बाँबरी, वाँमरो – पु. - बसमरा, छिपकली।

वाय – स्त्री. – वायु रोग, हवा, वायु।

वायड़ो – वि. – बाँका, ऐबी, दोगला, छल-छिद्री, टेढ़ा चलने वाला।

वायण – औकात, प्रभाव।
(म्हारा पीयर री वाटे केसर उडी रई वायण आवे ओ वीरा री वरदड़ी। मा.लो. 347)

वायदी – स्त्री.– अग्नि, आगी, आग।

वायदो – पु.वि.– वायदा, प्रतिज्ञा, वचनबद्धता, पशुओं का मलमूत्र साफ करना।

वायरी – स्त्री.– बिना बछड़े वाली गाय या भैंस, हवा।

वायरो – हवा, पवन, वातावरण।

वायलो – पु. – मित्र, सखा, प्रेमी, दोस्त, साथी, संगी, बढ़ई का बसौला नामक लकड़ी छीलने का औजार, नारी जैसा पुरुष, स्त्रैण।

वायाँ – क्रि. बोने से, वपन करने से।

वायो – क्रि. – बोया, बीज बोने का काम किया, किसी पर हाथ उठाना या औजार उठाना।
(हात वायो, टेणपो वायो मोटा वऊ वाया। मा.लो. 60)

वार – पु.– दिवस, आघात, देर, समय।
(समझावत लागी वार वो। मा.लो. 419)

वार-तेवार – पु.– वार-त्यौहार, पर्व, अवसर।

वारना – शिकवा, शिकायत करना, डाँटना।

वारणो – क्रि.– रोकना, मना करना, पीछे हटाना।

वारता – स्त्री. – वृत्तान्त, हाल, किस्सा, कहानी, वार्ता।

वारद्यो – क्रि.– न्यौछावर कर दिया, उत्सर्ग किया।

वारदात – स्त्री. – भीषण या विकट दुर्घटना, मारपीट, दंगा-फसाद करना या घटना-घटित होना।

वारनीस – पु.– लकड़ी दीवार आदि पर किया जाने वाला रंग-रोगन।

वारनो – अन्दर करना, न्यौछावर करना।

वार्या जवार्या – मिट्टी का बना छोटे लोटेनुमा पात्र, विवाह में मण्डप के नीचे दूल्हा-दुल्हन के ऊपर चार लोटे से सिर के ऊपर महिलाएँ उवारती जाती हैं और गीत गाती जाती हैं। उन चारों लोटों में अलग-अलग वस्तुएँ रखी जाती हैं

जैसे धनिया, लाख, गुड़ और चाँदी।

वार् यो – पु. – पानी पीने या उपस्थ की सफाई करने के लिये उपयोगी मिट्टी का बना लोटेनुमा पात्र, न्यौछावर किया। (बाई पर वार्या ताजणाजी म्हारा राज। मा.लो. 534)

वार-लागी – स्त्री. – समय लगा, बहुत समय लगना।

वारस – पु. – वारिस, उत्तराधिकारी, वंशज।

वारा-न्यारा – वि.– पर्याप्त धन सम्पत्ति होने पर उसका मनमाने तरीके से उपयोग करना, गुलछर्रा उड़ाना, धन उड़ाना।

वारी – न्यौछावर, बलिहारी, बारी, पारी, अवसर। (वारी जाऊँ रे नादान वर रो सेवरो। मा.लो. 379)

वारी जऊँ – वि.– उत्सर्ग हो जाऊँ, बलिहारी जाऊँ।

वारुण्डो – वि. – अपने से पृथक् रहने वाला, विरुद्ध, भड़का हुआ, असंतोषी।

वारंट – पु.– अधिपत्र, सूचना पत्र, पकड़ने का आज्ञा पत्र।

वाल – पु.– बाल, कश, रोम, आटे की गोल लंबाई जिसे काट कर लोये बनाते हैं।

वाँ लग – अव्य. – वहाँ तक।

वालरो – बाल, केश, रोम, वालोर लता। (डूँगर वायो वालरो जमइजी उगो गेर घुमेर। मा.लो. 545)

वाला – प्रिय। (दादाजी खोदाया तलाव बालाजी मा.लो. 569)

वालु, वाळू – स्त्री.– बालू रेती।

वालुड़ो – पु.– बालक, बच्चा, स्नेहिल।

वाले-वाल – पु. – बाल बाल में। वाले रे वाले रे मोती सारिया।

वाले वाले – चुपचाप अकेले।

वालो – वि.– प्रिय, बालक, बच्चा, स्नेहिल, प्यारा, वल्लभ।

वालोळ – पु.- बल्लर की सब्जी, बालोर।

वाव – स्त्री. – वायु, हवा, बावड़ी, बोना। (हूँ तो वाव ढोलूँगा पंखो लई ने। मा.लो. 528)

वावणी – स्त्री.– बुवाई का समय, आषाढ़ मास, वर्षा ऋतु के आरम्भ में पानी का बरसना और बोना।

वावड़ी – स्त्री. – वापी, चौकोर बँधा सीढ़ियों वाला कुँआ।

वावणो – क्रि. – बुवाई का काम करना, बोने का काम।

वावसरे – क्रि.वि. – अपान वायु का निकालना, पादना।

वाँ – क्रि.वि.– वहाँ।

वावसू – पु. – हवा लगाना, फसलों को हवा लगे इस हेतु डोरा चलाकर उनकी खरपतवार नष्ट करना।

वावस्याँ – क्रि. – हवा लगाने के लिए डोरा या कुलपा लगाना।

वास – पु.– निवास, रहना, निवास स्थान, घर, मकान, स्त्री. – गंध, महक, सुवास। (म्हारा घर में लछमी को वास। मा. लो. 606)

वासक – पु. – वासुकि, वासुकि नाग, वासक देव। (वासक तम सुता के जागो। मा. लो. 655)

वास करे – क्रि.– रहे, निवास करे।

वासण – बर्तन, पात्र।(कुमार का रे वासण घड़नो छोड़ दे। मा.लो. 178)

वासणो – क्रि.– दुर्गंध, बदबू, बास।

वासती – स्त्री. – जागती, अग्नि, आग।

वासदेव – पु.– वासुदेव, श्रीकृष्ण।

वासना – वि. – कामना, इच्छा, हवस, हींग, गंध।

(अणी केवड़ारी वास। मा. लो. 661)

वासरू – पु.– बछड़े, बच्चे।

वासल्यो – वि.– दुर्गन्धयुक्त।

वासली – स्त्री.– दुर्गन्ध, बदबूदार।

वासा – पु.– निवास करना, रहना, घर बासा बसना, घर बार जमना, स्त्री-पुरुष का घर बसाकर रहना।

वासा वस्या, वासा वसे– क्रि.वि. – घर बार जमा, स्त्री-पुरुष का अलग से घर बार जमाना।

वासी, वाशी – वि. – बासी, पुरानी, बहुत समय से रखी हुई, खराब, विकृत, निवासी, रहने वाले।

वासपूजा – न. – घर में निवास के पूर्व की पूजा, वास्तुपूजा, वास्तु शान्ति, यज्ञ इत्यादि।

वासी मुंडो – बिना दतून कुल्ला किया हुआ मुँह, बासी मुँह।

वासुन्दो – वि.– दुर्गन्धयुक्त, गंध देनेवाला, गन्दगी प्रिय।

वासु – पु.– वासुदेव, श्रीकृष्ण।

वासो – क्रि.– निवास करना, निवास होना, रहना।

वास्ते – अव्य. – लिए।

वास्तो – न.– सम्बन्ध, लगाव, सम्पर्क, वास्ता, लेन-देन, मित्रता।

वाह – वि. – वहन करने वाला, ढोने वाला, प्रशंसा या आश्चर्य सूचक शब्द, धन्य, घृणा या तिरस्कार सूचक शब्द।

वाहवा – अव्य.– वाह! वाह!, शाबाश।

वाँ – सर्व.– वहाँ, वहाँ पर।

वाँइटा – न. – शरीर के अंगुली या किसी भी भाग में होने वाली नस की अकड़न या आँटा और उसके कारण होने वाला दर्द।

वाँको – न. – टेड़ापन, बल, मोड़, घुमाव, मरोड़, अपराध, दोष, असमानता।

वाँचो – पढ़ा, पढ़कर, बाँचा।
(वाँचा परवाना हो राज बनाजी तो चला दिना। मा.लो. 175)

वाँचयो – पढ़ना, वाँचना, पाठन करना।
(कागद वे तो हूँ वाँचलू बाईसा करम नी वाँच्यो जाय। (मा.लो. 470)

वांछड़ी – एक समाज की स्त्री, एक मालवी गाली।

वाँजणी – बाँझ जिसके सन्तान न हुई हो, वंध्या।
(नागजी ढोल गोरावे ओ वाँजा वाँजणी। मा.लो. 91)

वाँटणो – क्रि. – देना, विभाजन करना, वितरित कर देना, बाँ ट देना, पीस दी गई, प्रदान कर देना, हिस्सा करना, सिल पर पीसना, भाग करना।
(लसर-लसर मेंदी वाँटता म्हारो भुजबंद झोला खाय। मा.लो. 222)

वाँटो – बटवारा, भागीदारी, विभाजन, अलग-अलग, पशुओं का अन्न, खाद्य।
(कान रा झालज जीजा बाई जीमे वाँटो नी होय। मा.लो. 90)

वाँसे – वहाँ से।
(कई वाँ से तो लाजो हरिया बाँस। मा.लो. 24)

वि

विकइग्यो – क्रि.– बिक गया।

विकट – वि.–विकराल,भयंकर कठिन।

विकट हास्य – वि. – भयानक हँसी, अट्टहास।

विकणो – क्रि.– बिकना, बिक जाना।

विकरमाजीत – पु.– उज्जयिनी का प्रसिद्ध और बहुत प्रतापी राजा विक्रमादित्य जिन्होंने विक्रम संवत का प्रवर्तन किया।

विकरमी संवत – भारत में प्रचलित एक प्रसिद्ध संवत जो उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य ने चलाया था।

विकराल – वि.– भयानक, डरावना, भीषण, भयंकर।

विकरो – क्रि. – विक्रय।

विकलांग – वि.– जिसका कोई अंग टूटा या खराब हो।

विकार – वि.– खराबी, बीमारी।

विगड़्यो – वि.– बिगड़ा।

विगाड़्यो – क्रि.– बिगाड़ा, नष्ट किया।

विग्यान – वि.– विशेष रूप से प्राप्त ज्ञान, रसायन-भौतिक आदि शास्त्र।

विघन – वि.– विघ्न, बाधा, विपत्ति, आपत्ति, रुकावट।
(गणराज गणपति देवता सब विघन म्हारा टाल रे। मा.लो. 491)

विंछू – पु.– वृश्चिक, डंक वाला, विषैला कीड़ा।

विचकणो – क्रि.– बिचकना, मुँह बनाना।

विचरणो – क्रि.– विचरना, घूमना।

विचारणो – क्रि.– विचार करना।

विचारो – अव्य.– बेचारा, विचार करो, सोचो।

विचाल्याँ – वि. - बीच में, मध्य में, घर की बाजू में बनाया गया सामग्री रखने का ऊँचा स्थान।

विछइदो – क्रि. – जमीन पर बिछाना।

विंछा – बिछूड़ी, बिछिया, चुटकी, मच्छी जोड़ा।
(तमारा खाड़ा हेडई लऊँ ने म्हारी बिन्छा पेरई दऊँ। मा.लो. 439)

विजणो, विझणो – पु.– पंखा।

विजळी – स्त्री.– विद्युत, बिजली।

विजोरो – पु.– मिट्टी का एक विशेष पात्र जिससे प्रायः कलश आदि ढँकने का कार्य लिया जाता है।

विटाल – पु. – दोष, अपवित्र।

विटालणो – क्रि. – भ्रष्ट करना।

विट्ठल – पु. – भगवान् कृष्ण का एक नाम।

विणको – सर्व. - उनका।

विणनो – बिनना, चुनना, तोड़ना, फूल चुनना, फूल तोड़ना, गेहूँ, चावल बिनना। हो जी में तो फूलड़ा वीणूँ एकली रे पपइयो बोल्यो जी। मा.लो. 625)

वितरण – क्रि.– बाँटना, देना, हिस्से करना, वितरित करना।

विद्या – पु.– ज्ञान, कला, ब्रह्म विद्या।

विधवा – स्त्री.– बेवा, राँड।

विधाता – ब्रह्मा, विधात्री।
(सायबा को सारो नईं जी लिख्या विधाता लेख। मा.लो. 618)

विधि – स्त्री.– नियम, कानून, विधाता, भाग्य, आस्था।

विधुर – पु. रंडुआ, वह जिसकी पत्नी मर गई हो।

विनये – विनय, विनती, प्रार्थना।
(माजी दास नरसइयो थाने विनये ए माय। मा.लो. 661)

विना – अव्य. – बिना, अकारण, यों ही, बिना कारण के, व्यर्थ, उसका।

विनी – स्त्री. – उस।

विप्र – पु. – ब्राह्मण, पंडित।

विनवे – विनती करना, प्रार्थना करना, स्मरण करना, हाथ जोड़ना।
(नाथ भगवती विनवे थारी प्रथम वाजे ताल रे। मा.लो. 491)

विपदा – पु.– संकट, विघ्न, बुरा, आपद, परेशानी।

विपदा लइके – क्रि.– तकलीफ उठा करके, दुःख प्राप्त करके।

विपरीत – वि.– उल्टा, विरुद्ध।

विपत – विपत्ति, विपदा।

विफरनो – क्रि. – क्रोध करना, गुस्सा होना, विकराल होना, आपे से बाहर होना, बिगड़ना, अंट संट बोलना, आवेश में न कहने की बात को कह देना।

विफल – वि. – असफल, व्यर्थ।

विभूति – वि.– भस्म, राख, ऐश्वर्य, ईश्वरीय, महापुरुष।

विमल – वि.– स्वच्छ, साफ, मल रहित।

विमान – पु.– आकाश मार्ग से चलने वाला रथ, हवाई जहाज, पुष्पक, विमान आदि।
(उड़त विमान। मा.लो. 684)

विमुख – वि. – अलग, विरत, जिसने मुख मोड़ लिया हो, उदासीन, विरुद्ध।

विरंच – पु.–ब्रह्मा, भाग्य निर्माता, चतुर्मुख, चतुरानन।

विरथा – वि.– वृथा, फिजूल, व्यर्थ, यों ही, निष्फल, अकारण।

विरह को संताप – क्रि. वि. – विरह जनित दुःख, विरह से उत्पन्न कष्ट, विरही या दुःखी।

विलमणो – क्रि. – मोहित होना, आकर्षित होना, विलंब होना, प्रसन्न होना, गदगद् होना, खुश होना, हर्षित होना, किसी अन्य काम में लग जाना।

विलसणो – उपयोग करने वाला, मनोरंजन करने वाला, धन सम्पत्ति का उपयोग करने वाला।
(माता नी हे को विलसन हार वो आनंदी बाँजुली। मा. लो. 602)

विलोवणो – मथना, बिलोना, मंथन करना, बिलोनी (रवई) से दही को मथना।
(रात बिलोयो रे वाने मारव भावे। मा.लो. 435)

विराजणो – क्रि. – भूल जाना, याद न रहना।

विसाद – पु. – दुःख, तकलीफ।

विसामो – क्रि.वि.– विश्राम, आराम।

विसास – पु.– विश्वास, भरोसा।

विसी – सर्व – उसी, वि. – बीस की आयु या अंक।

वी

वी – स्त्री. – वे।

वीका – सर्व.– उसका, उनका।

वीको – सर्व. – उसका, उनको।

वीदा – सेवैयाँ, बोयाँ।

वीचको – वि.– मध्य का, बीच का, बिचला।

वीचाई ग्यो – क्रि. – बेच डाला, बेच दिया गया, बिक गया।

वीचे – वि.– मध्य में, बीच में, बीच का।

वींछण – स्त्री.– बिच्छू की मादा, दूध में पानी डालना ताकि दूध गर्म करते समय पशु के थन न जले।

वीछावे – क्रि. – बिस्तर लगावे, बिछाना।

वींछू – पु. – वृश्चिक, बिच्छू।

वीज – सर्व. – वहीं, वे ही, उनको।

वीजणो – पंखा, व्यंजन, हाथ पंखा।

वीजलसार – वि.– स्टील, फौलादी, लोहे की एक विशेष किस्म।

वीजली – स्त्री. – विद्युत, बिजली।

वींझावण – स्त्री. – जंगली झाड़ी, जंगल, सघन वन, विन्ध्यवन।

वींटाली द्यो – वि. – भ्रष्ट कर दिया, दूषित कर दिया।
(आगे आगे वींद सजावे रे बनो तो म्हारो जोड़ी रो। मा. लो. 398)

वीतणा – वि. – आपबीती, अपने अनुभव में आई हुई, व्यतीत होना।

वीतणा वीती – क्रि.वि. – अपने साथ जो घटना घटित हुई उसका सार कहना, आप बीती सुनाना।

वीत्या – क्रि. – बीते, गुजरे।

वीताल देगा – क्रि. – बतला देगा, कुछ कर गुजरेगा।

वीती वेगा – क्रि.वि.– बीती होगी, गुजरी होगी।

वींद – पु. – पति, स्वामी, दूल्हा, पुत्र।

वीण्यो – न.– बीनना (धान बीनना), कपास बीनना, खेत में मक्का, ज्वार के राड़े बीनना।

वींदणी – स्त्री. – पत्नी, दुलहिन, पुत्रवधू के लिये सम्बोधन।

वीनणी – स्त्री. – पत्नी, दुलहिन या पुत्रवधू।

वीनणो – पु. – एक औजार जिससे बढ़ई लकड़ी में छेद बनाता है।

वीने – सर्व.– उसको, उसे, उस ओर।

वीनो – सर्व. – उसका, उनका।

वीपदा – वि. – दुःख, तकलीफ, आफत।

वीयाणो – सुबह हो जाना, उजाला हो जाना, गाय भैंस का जनना।
(उठो वउ सकल वीयाणो, आँगण दो चम्पा रा थाणा। मा. लो. 297)

वीर – पु. – बहादुर, बलवान, योद्धा, सिपाही, उत्साह, भाई, साहित्य के नौ रसों में से एक रस, आल्हा छंद।

वीरता – वि. – युद्धादि में शौर्य दिखाना।

वीराण – वि. – उजाड़, सुनसान, जिसमें बस्ती या आबादी न हो।

वीरासण – पु. – वीरों के जैसा आसन, बैठने का एक प्रकार का आसन या मुद्रा ।

वीराजी – पु. –भाई के लिए मालवी सम्बोधन।

वीरीगी – स्त्री. – भूल गई, स्मरण न रख सकी, बिखर गयी।

वीरो – पु. – भाई, वीर।
(ए माँ कुणसो वीरो लेवा जाय वो। मा.लो. 609)

वीरवळी – स्त्री. – जादूगरनी।

वीरवळ्यो – पु. – जादूगर, ऐन्द्रजालिक।

वीलोवणों – छाछ बनाने की बड़ी रवाई, मथना, बिलौना, मंथन करना।
(लावो रे मई बिलोवणो इना वर ने पड़छ रे। मा.लो. 416)

वीवा – विवाह, ब्याह, शादी।
(यो कुँवर हुयो वीवा जोग। मा. लो. 635)

वु/वू/वे

वु – सर्व. – वू।

वू – पु. सर्व. - वह, ऊ।

वू में – सर्व. – उसमें।

वे – सर्व. – वहाँ।

वे – सर्व. – वीज, वह।

वेकरा – क्रि. – जोर-जोर से चिल्लाना।

वेकुंठ – पु. – विष्णु का निवास स्थान या लोक, स्वर्ग।

वेखर – क्रि. – बिखेर दे।

वेखऱ्यो – पु. – घास की एक किस्म, बिखेर।

वेग – पु. – प्रवाह, बहाव, मल-मूत्र आदि को शरीर से बाहर निकालना, जोर, तेजी, शीघ्रता, जल्दी।

वेगड़ – पु. – गायों से भरा हुआ बाड़ा, बहुत अधिक, पूरा, सम्पूर्ण।

वेगला – वि. – दूर, अलग, जुदा, निराला, विभिन्न।

वेगा – वि. – जल्दी, शीघ्र, तीव्रता, अव्य. – होगा।
(वेगा आवजो। मा.लो. 664)

वेगार – वि. – बेगार, मुफ्त में काम करने वाला, सेवक।

वेगारी – पु. – बेगार ढोने वाला, बोझा उठाने वाला।

वेगी – स्त्री. – शीघ्र।

वेचको – छेद, छिद्र, सुराख, गड्ढा, नाका।

वेचणो – क्रि. – बेचना, विक्रय करना, व्यय करना।

वेचाणो – बिकना, बिकवाना, बेचना, बेचाना।
(या तो कणी जगा मोल बेचाय। मा.लो. 550)

वेचावे – क्रि.– बेचना, विक्रय करना, व्यय करना।

वैजन्ती – स्त्री.– पताका, झण्डी, एक प्रकार की माला जिसमें पाँच रंगों के फूल होते हैं, वैजयन्तीमाला।

वेंडपणो – वि. – पागलपन।

वेंड्या, वेंड्यो – पु. वि. – पगला, पागल।

वेंडाराव – पु. – हीड़ गीत कथा का एक पात्र।

वेंडी राँडको – वि. – एक गाली, पागल स्त्री से उत्पन्न।

वेंडो – पु. – पागल।

वेण – स्त्री. – नाली, गटर, पानी के निकास के लिये नाली बनाना, मेड़बन्दी।

वेण काड़ी – क्रि. – नाली या गटर निकाली, पानी का निकास मार्ग बनाया।

वेणी – स्त्री. – चोटी, वेणी, शिखा, नदियों का संगम, जूड़े पर बाँधने का गजरा।

वेणु – स्त्री. – बाँसुरी, बँसरी।

वेणु गोपाल – पु. – श्रीकृष्ण।

वेणो – क्रि. – होना, हो जाना, किसी घटना या घटित हो जाना या किसी काम का हो जाना।

वेंत – पु. – बेंत, छड़ी, पतली लकड़ी, पशुओं के जनने की गिनती।

वेंतणो – क्रि. – बेंतना, नापना, नपवाना, कपड़े बेंतवाना।

वेतन – पु.– मजदूरी, तनख्वाह।

वेतर – स्त्री. – बहता हुआ पानी, खाल, झरना, नाली।

वेतवा – क्रि. – कपड़ा नपवाने, कपड़े का नाप देने।

वेताल – पु. – द्वारपाल, शिव का एक प्रधान गण, विक्रमादित्य द्वारा साधित गण।

वेताँ-वेताँ – क्रि.वि. – होते-होते, कोई काम होते हुए।

वेंताणो – क्रि. – कपड़े आदि का नाप देना।

वेती – स्त्री. – बहती हुई, होता।

वेतीज अड़री – स्त्री. – होता ही आ रहा।

वेतो – क्रि. – होता, किसी कार्य के होने की सम्भावना, बहता।

वेता वेगा – क्रि. वि.– होता होगा।

वेद – पु. – सच्चा और वास्तविक ज्ञान, आर्यों के सर्व प्रधान और सर्वमान्य धार्मिक ग्रन्थ, श्रुति, ऋग– यजु– साम और अथर्ववेद, रोगियों की चिकित्सा करने वाले वैद्य, गाय या भैंस के बच्चे के लिए शब्द, जानकार, अनुभवी।

वेद कतरा द्या – क्रि.वि. – गाय या भैंस ने कितने बच्चे दिये?

वेदान्त – पु. – उपनिषद्।

वेदी – स्त्री.– चबूतरा जिसके ऊपर इमारत बनती है, कुरसी, शुभ या धार्मिक कृत्य के लिये बनाई हुई ऊँची छायादार भूमि, हवन शान्ति के लिये बनाई गई वेदी, यज्ञ देवी।

वेदू – पु. – वैद्य, चिकित्सक, वेद का जानकार।

वेध – वि. चन्द्रमा या सूर्यग्रहण लगने का उचित समय, नियम या कानून सम्मत, विधिमान्य।

वेन – पु. – नाली, गटर, पानी का निकास मार्ग।

वेपार – पु. – व्यापार, व्यवसाय।

वेपारी – पु. – व्यापारी, व्यापार करने वाला। (नवलिया वेपारी। मा.लो. 690)

वेर – वि. – बेर, दुश्मनी।

वेरड़ गयो – क्रि. – बिखर गया, छितरा गया।

वेरण कुँख – विरान, विरह वियोग, जुदाई, दुःख, प्रियजन का वियोग, वियोग में अनुभव होने वाला अनुराग, दुश्मन, शत्रु। (माता बाई की लुटी वेरण कुँख हटीला बनड़ा। मा. लो. 423)

वेरनो – बिखेरना, फैलाना, फैला देना, बिखेर देना, विकीर्ण करना। (हो राजा अगवाड़े वेरो मूँग।)

वेरसिया – वि. – शुष्क, नीरस।

वेराणा – क्रि. – बिखर गये। (मोती वेराणा। मा.लो. 468)

वेरागण – स्त्री. – वेरागी की स्त्री।

वेराँ – समय, काल, वक्त, खाली समय, फुर्सत, अवकाश, किसी भी समय। (न्हावा री वेराँ रूणीया रम्या ही राम।

मा.लो. 658)

वेरी – स्त्री. – दुश्मन, शत्रु। (राजा कंस की छाती धड़के म्हारो वेरी गोकुल माय। मा.लो. 698)

वेरे – क्रि. – बिखेर या बिखेरने का प्रयास करे।

वेरो – क्रि. – बिखेरो या बिखेर दो।

वेल – स्त्री. – पानी का रेला, नाली, लता, बैल, गुल्म, वंश वेल, धोरो।

वेलड़ी – लता, बेल। (साँडड़ली ने पावो रे नरखो दूद निरावो रे नागर वेलड़ी जी। मा.लो. 326)

वेलपाती – स्त्री. – बेलबूँटे।

वेलबूँटी – स्त्री. – काम दानी, बेल बूँटी निकालने की कला।

वेला – स्त्री. – समय, कान के ऊपर की चमड़ी की पर्त, झिल्ली।

वेलूँ – स्त्री. – रेत, बालू रेती।

वेवई – पुत्र या पुत्री का ससुर, समधी, सगा, सम्बन्धी, पैर की बेवई फटनी। (तू ओड़ी ले वेवई जी वाली। मा.लो. 507)

वेवाड़नो – बहाना, बहा देना, प्रवाहित कर देना। (पत्थर पे फोडूँ थारी मूँदडी वो म्हे तो नदियाँ वेवाड़ूँहार। मा.लो. 567)

वेवाण – पु.–विमान, हवाई जहाज, समधन। (वेवाण मन की भोली। मा.लो. 507)

वेवार – वि. व्यवहार, सांसारिक ज्ञान।

वेश – पु. – स्वरूप, परिवेश, वेशभूषा, स्वाँग।

वेशण – पु. – चने की दाल का आटा।

वेश्या – स्त्री. नगरवधू, रण्डी, रामजणी, गाने बजाने और धन लेकर संभोग करने वाली स्त्री।

वेश्याखानो – पु. – वेश्यालय, गणिकालय।

वेशी – वि. – अधिक, ज्यादा।

वेस – पु. – परिवेश, स्वरूप, वेशभूषा, पोशाख, पहराव, भेस।

वेसण – पु. – चने की दाल का आटा।

वेसणो – लाल अस्तर वाला वह चौकोर कपड़ा जिस पर बिकाऊ वस्तु रखी जाती है। यह एक हाथ लम्बा और एक हाथ चौड़ा होता है। (बजाजण हाट माँड्यो ये मालणी, सोनारण ए हाट माँड्यो वेसणो ये मालणी। मा.लो. 192)

वेसाग – पु.– वैशाख मास।

वेसी – वि.– अधिक, बढ़ा हुआ।

वेसो – अव्य. – वैसा, उसी प्रकार का।

वेस्या – नगरवधू, रण्डी, रामजणी, गणिका, गाने बजाने और धन लेकर संभोग करने वाली स्त्री।

वेंडो – पागल, पागलपन, पगला। (वेंडा तो वइग्या राजा वावरा। मा. लो. 649)

वो

वो – सर्व. – वह, उसका।

वोकसी – सर्व. – उससे।

वोका – सर्व. – उसका, उसके, चुम्बन।

वो भी – अव्य. – वह भी।

वोराजी – पु. – बोहरा जाति का व्यक्ति, व्यापारी।

व्याणी – प्रसूति, बच्चा होना, ब्याई हुई गाय भैंस के बच्चे। (काँकड़ रे थारी काकी व्याणी तो असूरो क्यों आया रे? मा.लो. 409)

व्यो – न.– हुआ, पैदा होना। (कावो दरी कँई व्यो। मो.वे. 53)

श – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला का व्यंजन।

शऊर – पु.अ.– अच्छी तरह काम करने की योग्यता या ढंग, बुद्धि।

शक – पु.– एक प्राचीन विदेशी जाति, शंका, सन्देह।

शंक – पु.– शंका, डर, भय, आशंका, संशय।

शक शुभा – वि. क्रि.– शंका, सन्देह।

शंकर – पु.– मंगल कारक, शुभ, शिव, शंकराचार्य।

शकर कंद – पु.– एक प्रकार का जमीकंद।

शक्कर – स्त्री.सं.– शर्करा, शकर।

शकल – स्त्री.–मुखाकृति, चेहरा,स्वरूप।

शकार – पु.– शिकार किया हुआ जानवर।

शकुन – पु.– सगुन।

शंख – पु.– एक प्रकार का बड़ा घोंघा, जिनका कोष बहुत पवित्र माना जाता है और देवताओं के आगे बजाया जाता है, कम्बु, कण्ठ, सौ पद्म की संख्या।

शंखण – स्त्री.– कामशास्त्र में वर्णित स्त्रियों के चार प्रकारों में से एक शंखिनी जो दुबली, पतली, छोटे स्तनों वाली, कुछ निर्लज्ज और क्रोधी स्वभाव की कही गई है।

शगुन – पु.– विवाह की एक रस्म, तिलक, टीका, शकुन।

शतरंज – स्त्री.– एक प्रसिद्ध खेल जो बत्तीस गोटियों से खेला जाता है।

शनि – पु.– शनि ग्रह।

शबद – पु. सं.– ध्वनि, आवाज।

शबद कोस – पु.– वह ग्रन्थ जिसमें बहुत से शब्द हों।

शबद भेद – पु. – व्याकरण अनुसार शब्द भेद, शब्द भेदी बाण चलाना।

शबनम – स्त्री.–ओस, एक प्रकार का बहुत पतला कपड़ा।

शम्भू – पु.– शिव, महादेव, शंकर।

शमशान – मसाण, मरघट।

शमा – स्त्री.– मोमबत्ती, दीपशिखा।

शमी – स्त्री. - एक प्रकार का वृक्ष।

श्यामा – स्त्री.- राधा, राधिका, एक प्रसिद्ध सुरीला काला पक्षी, सोलह वर्ष की युवती, षोडशी, काले रंग की गाय, यमुना नदी, रात, श्याम रंग वाली, काली।

शरण – स्त्री.– आश्रय, बचाव की जगह या स्थान।

शरणागत – पु.– शरण या आश्रय हेतु आया हुआ।

शरत – शरद ऋतु।

शरत्या – क्रि. वि. –शर्त के साथ, निश्चयपूर्वक।

शरद – पु.– शरद ऋतु।

शरबत – पु.– कोई मधुर पेय, वह पानी जिसमें शक्कर या खाँड मिली हो, फलों के रस से बना शरबत।

शरम – स्त्री.– शर्म, लज्जा, शरमाना, हया।

शरमा – पु.– ब्राह्मण, शर्मा।

शरमाणो – क्रि.– शर्म आना, लज्जित होना

शरमीलो – पु.वि. -जिसे जल्दी शर्म या लज्जा आती हो, लजीला, लज्जावान।

शराफत – स्त्री.अ.– सज्जनता।

शराब – पु.– मदिरा, मद्य।

शराबी – पु.– वह जो प्रायः शराब पीता हो, मद्यप।

शरीक – वि. – किसी काम में साथ देने वाला, शामिल, सम्मिलित।

शरीफ – पु. – भला आदमी, सज्जन व्यक्ति।

शस्तर – पु. – शस्त्र, हथियार, साधन।

शस्तर धारी – वि. – हथियार बन्द, शस्त्र धारण करने वाला।

शस्तर विद्या – स्त्री. – हथियार चलाने का प्रशिक्षण, शस्त्र विद्या, धनुर्वेद।

शहतूत – पु.– एक पेड़ जिसकी फलियाँ मीठी होती हैं, रेशम के कीड़ों का मुख्य भोजन जिसके माध्यम से रेशम तैयार की जाती है।

शहद – पु. – मधुमक्खियों द्वारा फूलों से संचित मीठा रस, मधु, सेंत।
शहेन्शा – पु. – बादशाह, राजा।

शा

शाक – पु. – शाकभाजी, तरकारी, सब्जी, साग।
शाख – स्त्री. – शाखा, डाली, टहनी।
शागिरद – पु. – शिष्य, चेला, शागिर्द।
शान – स्त्री.अ.वि. – तड़क भड़क, ठाठ बाट, ठस्का, भव्यता, प्रतिष्ठा।
शाप – पु. – धिक्कार, भर्त्सना।
शाबास – फा. – प्रशंसा सूचक शब्द, वाह वाह, धन्य हो, साधुवाद।
शामत – स्त्री. – दुर्भाग्य, अनिष्ट, परेशानी, बुरासमय, मुसीबत।
शारदा – स्त्री. – सरस्वती, काश्मीर की एक प्राचीन लिपि।
शाह – पु.फा. – महाराज, बादशाह, मुसलमान फकीर, बड़ा या भारी, महान्।
शाह खरच – वि. – बहुत खर्च करने वाला, भारी खर्चा।

शि

शिकंजो – पु.–दबाने, कसने आदि का यंत्र।
शिकात – स्त्री.– निन्दा, चुगली, शिकायत, उपालंभ, उलाहना।
शिलाजीत – स्त्री.–पहाड़ों की चट्टानों से निकलने वाली एक प्रसिद्ध पौष्टिक काली औषध।
शीतल – वि. – ठंडा, ठंडक, शीत से परिपूर्ण।
शीतल पेय – स्त्री.– बर्फ का पानी, ठंडाई, ठंडक प्रदान करने वाला पेय पदार्थ या रस।
शीतल लेप – स्त्री.– चंदन का लेप, ठंडक प्रदान करने वाला लेप।
शीतला – स्त्री.– चेचक रोग, इस रोग की देवी, शीतला माता, एक लोकदेवी।
शीरा – पु.– चीनी या गुड़ पकाकर बनाया हुआ गाढ़ा रस, मीठा दलिया या लप्सी।
शीसम – पु.– एक बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत और सजावटी सामान बनाने के काम आती है।
शीशी – स्त्री.– छोटी बोतल।
शीशो – पु. – काच नामक पारदर्शी मिश्र धातु से बना पात्र।

शु/शू

शुक्करवार – पु.– शुक्रवार।
शुभ – वि.–अच्छा, उत्तम, भला, कल्याणकारी, मंगलप्रद।
शुंभ – पु.– एक प्रसिद्ध दैत्य जिसे दुर्गा देवी ने मारा था।
शुभा – क्रि.वि.– शंका, संशय।
शून्य – पु.– आकाश, सिफर।
शूरो मरद – क्रि.वि.– शूरवीर मर्द, वीर पुरुष।

शे/शो

शेतान – पु.– ईसाई, इसलाम आदि धर्मो में तमोगुण का प्रधान देवता जो मनुष्यों को ईश्वर के विरुद्ध भड़काता और धर्म मार्ग से भ्रष्ट करता है।
शोक – पु.– किसी वस्तु की प्राप्ति या सुखोपभोग की कुछ प्रबल, उत्कट या असाधारण अभिलाषा, लालसा या कामना, वि.- रंज, गम।
शोच – पु.–शुद्धता, पवित्रता, मल त्याग।
शोर – पु.– जोर की आवाज।
शोरगुल – पु.– हल्ला गुल्ला।
शोरबा – पु.– उबाली हुई तरकारी आदि का रस, तरी एवं मसालेदार रस।
शोरत – स्त्री.– प्रसिद्धि, ख्याति।
शोरा – पु.फा.– शोरा, मिरी से निकलने वाला एक प्रसिद्ध क्षार।
शोहर – पु.फा.– खसम, खाविन्द, पति।
शोहरत – पु. फा. वि.– प्रशंसा, बड़ाई, यश, खुशबू।

स – मालवी एवं देवनागरी वर्णमाला का व्यंजन।

सई – वि.– सही, हस्ताक्षर, ठीक, सत्य, जबान, बयाना, सौदा करते समय दी जाने वाली अग्रिम रकम या धन।

सईवो – स्त्री.- सहेली, ओ– सम्बोधन में।

सई साट – वि.– एकदम सत्य।

सऊकार – पु.– साहूकार, वणिक, व्यापारी, लेनदेन करने वाला महाजन।

सक – वि.– शक, सन्देह।

सक्की – वि.– शंकालू, शंका या सन्देह करने वाला।

संकट – पु.– विपत्ति, आफत।

संकड़ो – वि.सं.– संकीर्ण, कम चौड़ा, तंग।

सकनो – क्रि. – ढंग, चुपचाप, छाना माना।

सक्ति – स्त्री.– शक्ति, ताकत, बल, सख्ती।

सकर – शक्कर।

संकर – वि.– भिन्न जाति की वस्तुओं का मिश्रण, वर्णसंकर, जिसकी उत्पत्ति भिन्न वर्णों या जाति के माता–पिता के मिलने से हुई हो।

सकरकंद – पु.– शकरकंद, जमीकंद, रतालू।

सकरो – वि.– झूठा, दूसरों से भिड़ा हुआ खाद्य पदार्थ, दूसरी वस्तुओं से सम्पर्कित ।

सकल – वि.– सब, समस्त, सूरत।

संकलन – वि.– कई संख्याओं का जोड़, एकत्रीकरण, संग्रह, ढेर, इकट्ठा करना।

संकलप – पु.– संकल्प, विचार, पक्के विचार का, उच्चारण, दान पुण्य का संकल्प, मन में विचार।

सकल बनई के – क्रि.वि.– सूरत बना करके, चेहरा बिगाड़ कर।

सकराँत – स्त्री.– संक्रांति पर्व, मकर संक्रांति पर्व।

सकराँवारा – पु.– शकर वाले।

सँकरो – वि.– संकरा, संकीर्ण, पतला।

सकल पंच – पु.– समस्त पंच, सभी व्यक्ति।

सकार – पु.– गोश्त, मांस।

सकाल – वि.– अच्छा समय, सुदिन, विपुल उत्पादन का वर्ष।

सकियाँ – सखियाँ, सहेलियाँ, साथन, सखी समूह, सहचरी।
(हाँ रे बना लाला सँवारे थारी सकीयाँ। मा.लो. 400)

संका – वि.– संदेह, आशंका।

सकुन – पु.– शकुन, अपशकुन, अच्छा या बुरा समय देखने का विचार।

संकेत – पु.– मन के भाव प्रकट करने वाली कोई शारीरिक चेष्टा, इंगित, इशारा।

सकेलो – क्रि. – समेटो, इकट्ठा करो।

संकोच – पु.– सिकुड़ना, लज्जा, आगा पीछा, हिचक।

सकोरा – पु.– प्यालेनुमा मिट्टी का बर्तन।

सख्त – वि.– कठोर, कड़ा।

सखती – स्त्री.– सख्ती, कड़ाई, कठोरता।

सख मल – वि.– सुकोमल, नाजुक, मुलायम, नर्म।

सख मलजो – क्रि.वि.– सुख मिले, सुख का आशीर्वाद।

सखरी – स्त्री.– दाल रोटी आदि कच्ची रसोई जो किसी के छूने या खाने से सखरी हो जाती है।

सखरो – पु.– वह अन्न जो किसी से छुया हुआ हो या जूठे हाथ लगाया हुआ हो।

सखरो वईग्यो – क्रि.वि.– जूठा हो गया, खराब हो गया, दूसरी वस्तु से भिड़ या अड़ गया।

संख्या – पु.– अंक, गिनती आदि संख्याएँ, एक प्रकार का भयानक विष।

सखा – पु.– मित्र, दोस्त, साथी, संगी, सहायक, स्नेही।

सखी – स्त्री.– सखी, सहेली, सुखी।

सखी वीजे – स्त्री.– सुखी रहने का आशीर्वाद।

सखेणी को सायबो – पु.– सखी का पति।

सग – वि.– ढेर, संग्रह, संग्रहीत वस्तु, इकट्ठी वस्तु।

सगई – स्त्री.– मँगनी, सगाई सम्बन्ध करना, सम्बन्ध जोड़ना, वाग्दान।

सगग सगग – बढ़ना, जल्दी जल्दी, बढ़ना, बड़ा होना, लम्बा होना, आकाश में पतंग का उड़ना, बढ़ाना।
(सगग सगग वा उड़े। मा.लो. 542)

संग – पु. – साथ, मिलन, सोहबत।

सगत – वि.– अपने आप, व्यक्तिगत पहल।

संगत – वि.– सोहबत, साथ, संसर्ग, संगति साथ।

सगत करके – कृ.– स्वयं पहल करके साथ करके, साथ हो करके।

सगती – वि.- शक्ति, ताकत, बल, सामर्थ्य।

सगपण – न. – कन्या का वाग्दान, सगाई, विवाह-सम्बन्ध, सगाई सम्बन्ध करना, सगाई की बातचीत करना।
(सगई सगपन काम में लोग म्हारे से क्यों पूछे। मो.वे. 80)

संगम – पु.–मिलाप,मिलन,नदियों आदि के मिलन का स्थल।

संग्या (संज्ञा) – होश।

सगर धान्याँ – क्रि.वि.– सब प्रकार के अनाजों का मिश्रण, मिश्रित धान्य।

सगरा – वि.– सब, समस्त, सम्पूर्ण।

सगरा घेवर लेसाँ – सारा घेवर ले लूँगा।
(सगरो घेवर लेसाँ हो राज।)

संगरणी – स्त्री.– अतिसार, दस्त लगना।

संगराम – पु.– युद्ध, लड़ाई।

संगरे – पु.– साथ में रहे, एकत्र या इकट्ठा करना।

संगरो – वि.– संग्रह की हुई वस्तुएँ।

सग लगाड्यो – क्रि.वि.–ढेर किया, एकत्र किया।

सगला – वि.– सब, समस्त।
(लावजो तो सग्ला सारु लावजो रे वीरा। मा.लो. 352)

सगली – स्त्री.– सभी, सबकी सब, समस्त
(थारी सगली लेईजा घुघरी। मा. लो. 49)

सग लागी गयो – क्रि.– ढेर हो गया, ढेर किया, एकत्र किया, इकट्ठा हो गया।

सगस – पु.– शख्स, आदमी, सगस महाराज नामक एक लोक देवता का स्थान जो सोंधवाड़ के मगरिया ग्राम में स्थित है।

सगा – वि. – रिश्तेदार, नातेदार, सम्बन्धी।

सगाई – स्त्री.– वाग्दान।

सगा सरीखो – क्रि.वि.– सगे जैसा, रिश्ते के समान।

संगिनी – स्त्री.– पत्नी, जीवन संगिनी, जीवन साथी, मित्र, साथिन।

संगी – पु.– संगिनी, नारी, साथी, मित्र, बन्धु, दोस्त।

संगीत – पु.– गाना, बजाना व नृत्य।

संगीन – पु.फा.– वह बरछी जो बंदूक के सिरे पर लगी रहती है, बड़ा भारी, विकट, भीषण।

सगुण – पु.– सत, रज ओर तम तीनों गुणों वाला सगुण, ईश्वर।

सगुन – पु.– शकुन, अच्छे शकुन।

सगे चड़नो – अनुकूल होना, मनमाफिक काम होना, सन्तोष होना।
(कुणाजी ए बाँ दी सरवर पाल, सरवर म्हारे सगे चड़ेजी। मा.लो. 337)

सगे सम्बन्धी – पु. - रिश्तेदार, नातेदार।

सगो – वि. सगा सम्बन्धी, रिश्तेदार, नातेदार, रक्त सम्बन्धी।
(वाँ कई सगे हैं? मो.वे. 54)

सगोती – स्त्री.– सगोत्र, अपने ही गोत्र या कुल वाला।

संघ – पु.– समूह, समुदाय, संघटित-समाज, प्राचीन बौद्ध भिक्षुओं का धार्मिक समाज अथवा निवासस्थान,

सभा या समाज जिसे कानून अनुसार एक व्यक्ति के रूप में काम करने का अधिकार हो।

सघन – वि.–घना, ठोस, बहुत पास- पास।

संघी – पु.– तीर्थयात्री, साथी।

सड़ो – न.– खराब, सड़ान, सड़ने की दुर्गन्ध। (सड़्यो खाटला को बाण। मो. वे. 34)

सच – वि.– जैसा हो वैसा ही कहा हुआ, सत्य, वास्तविक, ठीक।

सच्चई – वि.– सच, सत्य, सही, सत्यता, वास्तविकता।

सच्चे – वि.– सत्यवादी, सच बोलने वाला, बिल्कुल ठीक, यथावत्।

संचे – क्रि.– इकट्ठा करे, एकत्र करे, ढेर, समूह।

संचरे – क्रि.– इकट्ठा करे, संचित करे, संग्रह करे, बचावे, विचरण करे।

सचल – वि.– चंचल, चपल, चलता हुआ।

सचाई – वि. – सत्यता, वास्तविकता।

सच्चो – सच बोलने वाल, बिल्कुल भी झूठ न बोलने वाला।

सची – स्त्री.– शची, इन्द्राणी, इन्द्र पत्नी, सत।

संची – स्त्री.– इशारा, संकेत से किसी वस्तु को बतलाना या समझाना।

संचारो – एक क्षार जो पापड़ बनाने के काम में आता है।

सच्चो – वि.– सच बोलने वाला।

सजऊँ – क्रि.– सजा दूँ, सुसज्जित करूँ, सजावट का काम करूँ, शृँगारित करूँ।

सजणो – क्रि.– सजना, शृँगारित करना।

सज्जन – वि.– सभ्य, सुसंस्कृत, शरीफ, सौम्य, सं. - साजन, पति, स्वामी।

सज धज – स्त्री.– बनाव शृँगार, सजाव।

सजन – न. – प्रिय, सज्जन, भला मनुष्य, प्रियतम, पति, साजन।

सजना सजनी – सं.– पति पत्नी।

सजना सँवरना – क्रि.वि.– बनाव शृँगार करना।

सज्या धज्या – क्रि.वि.– सजे धजे, सजे सजाये।

सज्यो सजायो – क्रि. वि. – साजों से सजा हुआ, सजावट किया हुआ, मंडित।

संजवारो – पु.– झाड़न, झाडू, बुहारा।

संजा – स्त्री.– श्राद्ध पक्ष में कुमारियों द्वारा बनाये जाने वाले भित्ति चित्र, चित्रांकन।

सजा – स्त्री.– दण्ड, कारागार में बन्द रखने या अन्य प्रकार का दण्ड।

संजा के – स्त्री.– सन्ध्या को, शाम को।

संजा को टेम – वि.– सन्ध्या का समय।

सजाणो – क्रि.– सजावट करना।

सजाति – ह.पु.– एक जाति के।

संजा फूली – वि.– सन्ध्या हुई, सन्ध्या की लालिमा हुई।

सजावट – पु.- सजावट, ठाठ-बाट, सजधज।

संजावल नार – स्त्री.– ग्यारस माता गीत कथा की नायिका।

सजा याफ्ता – वि.– जिसे कैद की या अन्य प्रकार की सजा मिल चुकी हो।

सजी धजी – स्त्री.– सुसज्जित, शृँगारित।

सजीलो – वि.-सजधज से या बन - ठनकर रहने वाला, छैला, सुन्दर, आकर्षक।

सजी सँवरी के – कृ.– सजधज करके, बनसँवर करके, सज सँवर करके, शृँगारित, बनाव शृँगार करके।

संजोया – पु.–जलाया, दीप प्रकाशित किया, इकट्ठा किया, संकलित किया।

संझाबाती – स्त्री.– संध्या के समय जलाया जाने वाला दीपक, संध्या के समय का गीत या राग विशेष।

संझा – स्त्री.– संध्या का समय, शाम का वक्त।

सटईल्यो – क्रि.– चिपका लिया, समीप कर लिया, पास में ले लिया।

सटकग्यो – क्रि.– धीरे से या चुपचाप खिसक जाना, देखते- देखते निकल जाना, चंपत होना, चले जाना।

सटकारणो – क्रि.– फटकारना, दुत्कारना।

सटको – पु.– चिलम का कश।

सटणो – क्रि.–चिपकना, मारपीट होना।

सट्ट – वि.– जल्दी, तुरन्त, शीघ्र।

सट्टा, सट्टो – पु.– तेजी मन्दी के ख्याल से अतिरिक्त लाभ कमाने का खेल या व्यापार, सौदा, एक प्रकार का जुआ।

सट्टीको करद्यो – क्रि.वि.– किसी भी वस्तु का एकदम समाप्त होना, बीतना, झापड़ मारना।

सटर पटर – स्त्री.– सट पट, आवाज जिसका कोई सिलसिला न हो, शीघ्रता का प्रदर्शन।

सटा सट – क्रि.वि.– गटागट मुँह के द्वारा किसी वस्तु को गले में उतारना, अतिशीघ्र, तुरन्त।

सटावणो – क्रि.– छिपाना, दुबकाना।

सटावील्यो – क्रि.– छिपा लिया, दुबका लिया, स्वयं के निकट या पार्श्व में कर लिया।

सटीक – स्त्री.– टीका सहित, व्याख्या सहित, बिल्कुल ठीक।

सटी गयो – पु.– छिप गया, दुबक गया।

सट्टो – क्रि.वि.– सट्टा लगाया, सट्टा खेला।

सटोर्‌यो – पु.वि.– सट्टेबाज।

सठ्याणो – अ.क्रि.– साठ वर्ष का होना, बूढ़े हो जाने पर बुद्धि का ठीक से काम न देना।

सठ्यायो – क्रि.– सठिया गया, बुद्धि भ्रष्ट हो गई, साठ का हो गया, बूढ़ा हो गया।

सड़क – स्त्री.– आने जाने का चौड़ा और पक्का मार्ग, राजमार्ग, मुख्य मार्ग।

सड़णो – क्रि.– खराब होना।

सड़्यो – क्रि.– सड़ गया, विकृत या खराब हो गया।

सड़्यो खाद – वि.– पकी हुई खाद, खाद जैसा सड़ा हुआ।

सड़ाक – क्रि.– हाथ की थप्पड़ या बेंत की मार का शब्द।

सड़ाक से दी – क्रि.– जोर से मारा।

सड़ा सड़ सूँत्यो – क्रि.वि.– रस्सी या बेंत से खूब पीटना।

सडाँध – वि.– सड़ी हुई वस्तु की दुर्गंध, बास।

संडास – पु.- पाखाना या टट्टी घर, संडास।

संडासी – पु. किसी गर्म बरतन को पकड़ने की चिमटी या औजार।

सड़ियल – वि.– सड़ा हुआ, निकृष्ट, रद्दी, खराब, दुबला-पतला, मरियल।

सड़ीग्यो – क्रि.– सड़ गया, गल गया।

संडो मुसंडो – क्रि.वि.– हट्टा–कट्टा, मोटा ताजा, गबरू।

संडोर – पु.– चढ़स के साथ चलने वाली मोटी रस्सी या नाड़ा।

सण – पु.– सनई एक पौधा जिसके रेशों से रस्सियाँ और टाट बनाये जाते हैं। (सण तो सूतर का धोरी थारे मोरा पेरावाँ। मा.लो. 674)

सणगार – पु.– शृँगार, सज धज।

सणचूरो – पु.– खेतों को हरी खाद देने के लिये सनई की फसल को बोना एवं कुछ बड़ी हो जाने पर हल चलाकर मिट्टी मिलाने की क्रिया।

सणचोरो – पु.– पापड़ आदि वस्तुएँ बनाने के काम में आने वाला एक प्रसिद्ध क्षार।

सणागत – पु.– शिनाक्त, पहिचान।

सत – पु.– सत्य, यथार्थ, वास्तविक, सही, सत्यतापूर्ण।

संत – पु.– साधु, सज्जनता।

सत करम – वि.– सत्कर्म, अच्छा काम।

सतगुरु – पु.– सच्चा और अच्छा गुरु, परमात्मा।

सतत – पु.अव्य.– लगातार, निरन्तर, सदैव, निरन्तर।

सत की नगरी – पु.अव्य.– लगातार, निरन्तर, सदैव, निरन्तर।

सतपत राखो – वि.– सत्य पर विश्वास रखो।

सतपदी – स्त्री.– सप्तपदी, वे सात प्रतिज्ञाएँ जो विवाह के अवसर पर वर–वधुओं से करवाई जाती हैं।

सतपुरस – पु.– सतपुरुष, उत्तम पुरुष, सदाचारी व्यक्ति, महान् व्यक्ति।

सतफेरा – क्रि.– सात बार भाँवर लेने की धार्मिक रस्म।

सत्यानास – वि.– सर्वनाश, ध्वंस, बरबादी।

सत्यासी – वि.– अस्सी और सात का योग, सत्तासी।

सत्योत्तर – वि.– सत्तर और सात का योग, सतोत्तर।

सतरंगो – वि.– सात रंगों वाला इन्द्रधनुष।

सतरंजी, सतरंगी – स्त्री.– दरी, फर्श, जाजम, सात रंगों वाली सूत की चटाई, रंग–बिरंगी दरी।

सतरा – वि.– सत्रह।

सतवादी – वि.– सात माह का बच्चा, सत्य बोलने वाला।

सतसंग – पु.– साधुओं या सज्जन व्यक्तियों का साथ, सत्संगति, अच्छी संगत।

सताणो – क्रि.– सताना, दुःख देना, परेशान करना, हैरान करना, तकलीफ देना।

सत्ताधारी – स्त्री.– शासन का अधिकारी, सत्ता को धारण करने वाला।

सन्तान – पु.– बाल बच्चे, वंश, औलाद।

संताप – पु.– दुःख, तकलीफ।

सत्तावीस – वि. – बीस और सात का योग।

सतावणो – वि.– दुःख देगा, सताना, संताप देना।

सत्ती – वि. स्त्री.– पति के सिवा और किसी पुरुष का ध्यान न करने वाली स्त्री, साध्वी, पतिव्रता, दक्ष प्रजापति की कन्या और शिव की पहली पत्नी, वह स्त्री जो अपने पति के साथ चिता में जलकर या उसके मरने पर तुरन्त किसी और प्रकार से अपने प्राण दे देवे।

सतीपणो – स्त्री.– सतीत्व।

सतुआ – पु.– सत्तू, गेहूँ, चावल या चने को सेककर उसके आटे में चीनी मिलाकर बनाया गया खाद्य पदार्थ, सत्तू।

सतूनो – पु.– किसी काम को प्रारम्भ करने का सिलसिला, आयोजन या उपक्रम।

सते, सतह – स्त्री.– किसी वस्तु का ऊपरी या तल वाला भाग या हिस्सा।

सतोगुन – पु. – प्रकृति का वह गुण जो अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करता है।

सत्ता, सत्तो – पु.– सात बुंदियों वाला ताश का पत्ता, पाँसों पर सात का दाव, सात का अंक, सत्ता, अधिकार, प्रभुत्व।

सदका – पु.– खैरात, दान, निछावर करना, प्रणाम करना, उतारा, शरण।

सदगत – स्त्री.– मरने के बाद अच्छे लोक में जाना, सद्गति, क्रि.-सदा चलता रहने वाला, सूर्य, चन्द्रादि।

सद्गति – वि.– मरणोपरान्त अच्छी गति प्राप्त करना, जीवन का उद्धार।

सद्दी – वि.– जल्दी, शीघ्र, त्वरित गति।

सदर – वि.– प्रधान, मुख्य अधिकारी, सभापति।

सरूप – वि.सं.–अच्छे स्वरूप वाला, सुन्दर, अच्छे गुण वाला, परमात्मा, प्रत्यक्ष में ईश्वर के दर्शन, प्रत्यक्ष स्वरूप।

सदरमत – स्त्री.– शाबासी, हिम्मत की दाद देना।

संदल – पु.फा.– चंदन।

सदा – अव्यय.– हमेशा, सदैव, नित्य।

सदाचारी – वि.– सत्य का आचरण करने वाला।

सदायो, सदाद्यो – क्रि.– सधा दिया, जिम्मे कर दिया, सुपुर्द कर दिया।

सदा बरत – पु.– सदावर्त, धर्मादा, राशन का बँटवारा करने वाली संस्था, अन्नक्षेत्र, वह स्थान जहाँ गरीबों को नित्य नियम से भोजन मिलता हो।

सदासिव – पु.– शिव महादेव, भोले, सर्वदा कल्याण करने वाला, सदाशिव।

सदुपदेस – पु.– उत्तम उपदेश, अच्छी शिक्षा, अच्छी सलाह।

संदूक – पु.– लकड़ी या धातु का बक्सा या चोकोर पेटी।

संदे – वि.– संदेह, निश्चय का अभाव, संशय, शंका, शक।

संदो – वि.– संघ, दरार, छेटी, दो लकड़ियों के बीच की दरार।

संध गयो – क्रि.– जड़ गया, संधि हो गई, चिपक गया।

सध्यो हुवो – क्रि.– सधा हुआ, जुड़ा हुआ, साधा हुआ, साधित।

संध वईग्यो – पु.– दरार या छेटी पड़ गई।

संधि – पु.– मेल, मित्रता, मिलाप, जुड़ना।

संधी गयो – क्रि.– जुड़ गया, जोड़ दिया गया

सधुक्कड़ी – स्त्री.– साधुओं का सा या साधुओं की तरह।

संधे ज नी – क्रि.वि.– जुड़ता ही नहीं, जोड़ने में नहीं आता।

संधो – पु.– संध, दरार, छेटी, दूरी।

सन – पु.– सनई का पौधा, ईसाई या मुस्लिम गणना वर्ष।

सनकी – वि.- सनकने वाला, अनिश्चित।

सनकी – क्रि.वि.– सनक गया, पागल।

सन्गार – वि.– शृँगार।

सनचूरो – वि.पु.– खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ने के लिये सनई की हरी फसल को चूर करके खाद देने की क्रिया।

सनद – पु.– अधिकार पत्र, प्रशंसा पत्र।

सन्नाटो – वि.– जहाँ कहीं कुछ भी शब्द न होता हो, नीरवता।

सन्डासी – स्त्री.– गर्म बर्तन पकड़ने का एक केंचीनुमा औजार।

सनातन – परम्परागत, क्रम।

सनमन – सम्बन्ध, रिश्ते। (सनमन सोरा सात कचोरा। मा. लो. 605)

सनमान – पु.– सम्मान, आदर, इज्जत।

सन्मुख – अव्य.– सम्मुख, सामने।

सन्याण – वि.- निशान, चिह्न, दाग, धब्बा।

संन्यासी – पु.– संन्यासी, त्यागी।

सन्यो – पु.– सना हुआ, भरा हुआ।

सनन्यो बनन्यो – क्रि.वि.– जिसका मस्तिष्क उचित-अनुचित का भेद न करके उटपटाँग काम में लगा रहता हो, अविवेकी।

सनागत – पु.– शिनाक्त, पहिचान।

सनातनी – वि.– शाश्वत, सनातन से चला आने वाला धर्म।

सनातन धरम – क्रि.वि.– स्वाभाविक, शाश्वत नियम।

सनार की दकान – स्त्री.– सुनार की दुकान।

सनी – पु.– शनि, नवग्रहों में से एक ग्रह।

सनीवार – पु.– शनिवार, शनैश्चर, थावर।

सपकण – पु.– सम्बन्ध, रिश्ता, नाता।

सपंड़ाणो – क्रि.– स्नान करवाना, नहाना।

सपट चूकीग्यो – क्रि.वि.– ध्यान न रहा, याद न रख सका।

सपट नी री – क्रि.वि.- ध्यान न रहा, याद न रही।

सपत पदी – सप्तपदी, विवाह के सात फेरे।

संपद – स्त्री.– सम्पत्ति, दौलत, धन, वैभव, ऐश्वर्य।

संपदा – स्त्री.– सौभाग्य, सम्पत्ति, ऐश्वर्य।

सपना में – पु.– स्वप्न में।

सपनो – पु.सं.– स्वप्न।

सप्तमी – स्त्री.– सातवीं तिथि।

सपने आव – पु.– स्वप्न में आना।

सपनो – स्वप्न, नींद में दिखाई देने वाला मानसिक दृश्य या विचार, स्वप्न में किसी को किसी घटना का दृश्य दिखाई देना। (आज तो सपनो माता एसो देख्यो। मा.लो. 676)

सपनो सुणायो – पु.– स्वप्न में देखी गई बातों को जाग्रत अवस्था में सुनाना।

सप्पारी – स्त्री.– सुपारी, पूगीफल।

सपरत – वि.फा.– सुपुर्द।

सपाट – वि. – समतल मैदान।

सपाटो – पु.- दौड़ने का वेग, तीव्रगति, दौड़।

सपूत – पु.– अच्छा और योग्य पुत्र, सुपुत्र, भला।
(घोड़ी राज सपूती। मा.लो.191)

सपूताँ – पु.ब.व.– सुपुत्र, अच्छे लड़के, सुशील बालक।

संपूरण – पु.–सम्पूर्ण, पूरा, पूर्ण, समस्त।

सपेरो – पु.–सपेरा।

सफई – स्त्री.–स्वच्छता, सफाई।

सफर – पु.–यात्रा।

सफा – वि.–साफ, पुस्तक का पृष्ठ।

सफा करनो – क्रि.वि.–सफाई करना, साफ करना, दुर्भावना से किसी को मार डालना।

सफा चट्ट – वि.–बिल्कुल साफ या चिकना करना।

सफायो – पु.–बिल्कुल साफ या चिकना, समूल नाश।

सफेत – वि.–श्वेत, सफेद, उजला।

सफेती, सफेदी – वि.–सफेदी, दीवारों पर चूना, पाण्डु आदि पोतकर सफेदी करना।

सफेदो – पु.–जस्ते का चूर्ण जो दवा के काम आता है, एक प्रकार का बढ़िया सफेद रंग का लेप।

सब – वि. –सब, सर्व, सकल, समग्र, पूरा, सारा।

सबड़का – न. – तरल, ग्रास, तरल खाद्य को खाने से आने वाली आवाज, प्रबल इच्छा।
(बाँय घड़ईने सबड़का लगाव। मो.वे. 39)

सबक – पु.फा.–पाठ, शिक्षा।

सब कई – क्रि.वि.–सब कुछ।

सबज – वि. सब ही।

सब जगे – पु. - सर्वत्र, सब जगह।

सबद – पु.– शब्द, निर्गुण भक्ति सम्बन्धी भजन, गीत, रामनाथ।
(दादर मोर पपइया बोले सबद मदुर सुणावे जी। मा.लो. 678)

सम्बन्धी – पु.–रिश्तेदार, नातेदार।

सबर – वि.–सब्र, धैर्य, घोड़ी का गर्भ धारण करना।

सबरा – पु.–सबके सब, सभी।

सबरी – स्त्री.–सब, रामायण की शबरी।

सबी – सर्व.–सभी।

सबी जणा – पु.–समस्त मनुष्य।

सबूरी – वि.–धीरज, धैर्य, सब्र।

सबेरो – पु.–प्रातःकाल का समय, उषाकाल।

सभा – स्त्री.–परिषद्, गोष्ठी, समिति।

सभासद – पु.–सभा के सदस्य।

संभाल – पु.– रक्षा, पालन, देखरेख।

संभालजो – पु.–संभालना, सहेजना, रक्षा करना, पालन–पोषण करना।

संभालूँ – पु.–सम्हाल करूँ, सहेजूँ।

संभोग – पु.–मैथुन, संभोग।

समई – स्त्री. –दिया, दीपक, दीपाधार।

समई गया, समई गयो– क्रि.–समा गये, प्रविष्ट हो गये, घुस गये।

समचे समचे – सहयोग से।
(उस दाई रे हाथ समचे समचे चतरभुज जनमीया।)

समंज – वि. –समझ, किसी बात को समझने की शक्ति, चेतना, बुद्धि, अक्ल।
(जम नी समज्या। मो.वे. 49)

समंजणो – क्रि. – समझना, कोई बात अच्छी तरह विचार करके ध्यान में लाना, समझदार, होशियार, बुद्धिमान।

समजेइ कोनी – क्रि.वि.–समझता ही नहीं।

समझबूझ – क्रि.वि.–समझा बुझाकर।

समझियो – पु.–समझ गया, जान गया।

समझोतो – क्रि.वि.–मनाना, समझौता, आपस में रहकर विवाद समाप्त करना।

समटूणी – बारात विदाई का उपहार आयोजन।

समता – स्त्री.–समान होने का भाव, बराबरी, तुल्यता, सुख-दुःख में समान रहना।

समतल – वि. - बराबर, भूमिका एक-सा होना,

समतल होना, सपाट मैदान।

समंदखार – पु.– समुद्र लवण।

समंद तलाव – समुद्र जैसा विशाल तालाब।

समंदरिया री पाल – स्त्री.– समुद्री किनारा।

समदरसी – वि.– सबको एक-सा समझने वाला, समदर्शी।

समंद – पु.– समुद्र, रत्नाकर, सागर।

समंदर – पु.– समुद्र, सागर, पारावार, जलनिधि, नीरनिधि, जलधि, तोय। (समदर का तीर बिराजो जी। मा. लो. 688)

समदर डेंडकी – समुद्र की मेंढकी। (म्हारी भाबज समदर डेंडकी। मा. लो. 50 पे.)

समदां समदां – क्रि.वि. – समुद्र-समुद्र।

समाधि – स्त्री. – ईश्वर के ध्यान में मग्न होना, योग साधना का चरम फल, ध्यान, किसी का स्मरण।

समन्स – पु.– उपस्थित रहने के लिये न्यायालय की आज्ञा।

समधा – स्त्री.– समिधा, यज्ञ–काष्ठ।

समधी – पु.– रिश्तेदार, लड़के या लड़की के ससुर (स्त्री.- समधन)।

सम्प – सम्बन्ध, सम्पर्क, हिल मिलकर।

सम्पत – पु.– सम्पत्ति, धन। (सम्पत होय तो आवजो रे वीरा नी तो रीणो तमारे देस। मा. लो. 352)

सम्पूरण – वि.– परिपूर्ण, सम्पूर्ण, पूर्ण, पूरा, समस्त।

सम्मत – वि.– सहमति, राजी।

समरथ – वि.– शक्तिशाली, सामर्थ्यवान, समर्थ। (धन धन हो थारा माता-पिता ने ऐसा समरथ जाया हो। मा.लो. 653)

समरथन – पु.– किसी बात का पोषण या समर्थन, किसी बात को पुष्ट करने वाला या समर्थन देने वाला।

सम्राट् – पु.- वह बहुत बड़ा राजा जिसके अधीन अनेक राजा हो, महाराजाधिराज।

समरूँ – क्रि.– सुमिरण करूँ, याद करूँ।

समलाणो – सम्हलवाना, सुपुर्द करना, सम्हलाना, सम्भव होना। (जई समलावो रे वाने कईं कईं भावे। मा.लो. 435)

समसत – वि.– समस्त, पूर्ण, सबके सब, सम्पूर्ण।

सम्सट् – वि.– समस्त, पूर्ण, सबके सब।

समसी – स्त्री.– तलवार, खड्ग, समशीर।

समाई – स्त्री.– समाना, शक्ति, सामर्थ्य, बिसात।

समागम – पु.– मिलन, संयोग।

समाज – पु.– समूह, जाति समाज।

समाजी – पु.– वह जो समाज के सिद्धान्त मानता हो।

समाणी – स्त्री.– समा गई, प्रविष्ट हो गई। (हिवड़ा समाणी लाड़ी लाया हो। मा.लो. 459)

समादी हुवो – क्रि.-समाधि में प्रविष्ट होता हुआ।

समादी में ग्यो – क्रि.वि.– ध्यानावस्थित हुआ।

समाधान – पु. – संतोष, निकाल, निपटारा।

समान – वि. – समता, बराबरी, तुल्य।

समानी – स्त्री. – प्रविष्ट हुई, समा गई।

समायो – पु. – समा गया, प्रविष्ट हुआ।

संमार – पु. – संभाल, देखरेख।

समालणो – क्रि. – देखरेख करना, सम्भालना, व्यवस्था करना, पालन-पोषण करना। (जदे भैया म्हने अपणी होंस सभाली मो.वे. 52)

समाल्या – क्रि.– संभाल की, सहेजा, टटोला, संभाला।

समाल्यो – पु.– संभाल की, सहेजा, देखरेख की।

समावणो – क्रि.– समाना, प्रविष्ट होना।

समास – वि.– वाक्यों को जोड़ना या उनका

विग्रह करना, बड़े-बड़े वाक्यों वाली रचना।

समिति – स्त्री.– चुने हुए लोगों का समूह।
समीचार – पु.– समाचार, खबर।
समीणो – पु.– समान, बराबर।
समीसाँज – स्त्री.– गोधूलि बेला, संध्या का समय।
समूल – क्रि.वि. – जड़ मूल से, जड़ सहित।
समेटणो – क्रि.– समेटना, इकट्ठा करना, सहेजना।
समेत – अव्य.– सहित, साथ, समवेत।
समे, सम्यो – पु.– समय, काल।
(सम्या पे लाई देस्याँ।)
सम्प – स्नेह, सम्पर्क।
सम्मेलन – पु.– मिलन, सामूहिक रूप से मिलने का कार्यक्रम।
समेलो – क्रि. – मिलन, सम्मेलन, जूड़ी में जोत अटकाने का कीला।
समोणो – क्रि.– मिलना, मग्न या लीन होना, समा जाना, तासीर के अनुसार मिलाना, पानी समोना।
सयर – शहर, शायर।
(सयर को भमणो बड़ो हरामी नगर को भमणो। मा.लो. 437)
स्यई – स्त्री.– स्याही।
स्या – वि.- भयंकर काला, काला स्याह।
स्याणी – स्त्री.वि. – बुद्धिमती, चतुर, समझदार युवती।
स्याणो – वि.पु.– बुद्धिमान, सयाना, चतुर, युवा।
स्यानी – स्त्री.– सयानी, चतुर, बुद्धिमती।
स्याम – पु.– कृष्ण, संध्या, शाम का समय।
स्यामी – पु.– स्वामी, ईश्वर।
स्याँपो – पु.– साँप, रात में सोने का समय।
स्यार – पु.– सियार, गीदड़।
स्यालो – स्त्री.– शीत ऋतु।
सर – पु.– धागे में पिरोये गये मोती की माला, पु.- सिर, मस्तक, माथा।
सरकणो – क्रि.–खिसकना, सरकना।
सरकण्यो – वि.– घिसटकर चलने वाला पंगु, शिशु।
सरकी – समान, सरीखा, जैसा, तुल्य, समता, बराबर।
(एक चणा री दोई दाल दोयाँ ने सरकी राखजो। मा.लो. 599)
सरकाव – क्रि.– खिसका, चला, हटा, वि.– समान, जैसा, सरीखा।
सरकार – स्त्री.-मालिक, प्रभु, देश का शासन करने वाली संस्था या सत्ता।
सरकी – वि.– सरीखी, समान, जैसी। क्रि.– खिसकी, चली गई, सरक गई।
सरकी कसम – क्रि.वि.– सिर की सौगन्ध।
सरको – वि. -अलग हटो, दूर हटो, खिसक जाओ, समान, जैसा।
सरीको – वि.– समान, तुल्यता, समता।
सरखी, सरीखी – वि.– समान, जैसी, तुल्य समता, बराबरी।
सरग – पु.– स्वर्ग।
(सरग भवंती साँवरी एक संदेसो लेती जा। मा.लो. 332)
सरगणो – पु.– सरदार, नेता, मुखिया।
सरगुण – वि.– सगुण, साकार।
सरगवासी – पु.– स्वर्ग में निवास करने वाला, मृतक देवता।
सरगस – पशुओं और कलाबाजी आदि का कौशल दिखलाने वालों का दल या मण्डली, सर्कस।
सरगस काड़्यो – क्रि.वि.–बाजार में खेलकूद, नाच आदि का प्रदर्शन किया।
सरग पाताल – वि.– असम्भव को सम्भव बनाने वाला, साधारण प्रयास करने वाला, आकाश पीटने वाला।
सरगुन – पु.– सगुण, साकार।
सरगे ग्यो – क्रि.वि.– स्वर्ग को गया, देव लोक को प्राप्त हुआ।

सरचले जदी – क्रि.वि.– हैसियत हो तब, सामर्थ्य हो तभी।

सरजणो – पु.– सुरजना की लम्बी फलियाँ या उसका वृक्ष, एक सब्जी बनाना।

सरजीवन – पु.–पुनर्जीवित होना, फिर से जी उठना।

सरजीवनी बूँटी – वि.–संजीवनी बूँटी, जीवन देने वाली औषध, शक्ति प्रदान करने वाली जड़ी।

सरजू – स्त्री.– सरयू नदी।

सरजूँ – क्रि. – सृजन करूँ, बनाऊँ, निर्माण करूँ।

सरजो – क्रि.– सृजन करो, बनाओ, उत्पादन करो, निर्माण करो।

सर-जोरी – वि.– सीना जोरी।

सरे – क्रि.– काम पूर्ण होवे।

सरे जनी – क्रि.वि.– पूर्ण न हो सके, काम न बन सके, रहा न जाए।

सर्राटो – पु.– हवा के जोर से।

सरड़ – क्रि.– किसी वस्तु को खींचने, पीने या चलने से उत्पन्न ध्वनि, झाड़ की पत्तियों को सरड़ना, खींचना या खाना।

सरणाई – न. – शहनाई, एक फूँक वाद्य, शरण में रखने वाला।
(वागाँ में वाजा जंगी ढोल सेर्यां में वाजी सरणाई। मा.लो. 350)

सरणागत – पु.– शरणागत, शरण या आश्रय में आया हुआ।

सरणी – स्त्री.– निचली भूमि, मार्ग, सीधी लकीर, पद्धति, शैली।

सरणे – पु.– शरण में, आश्रय में।

सरणो – निचली सतह वाली भूमि।

सराणो – पु.– तकिया, उपधान, सिरहाना, ओसीसा, वि.- जितना हो उतने में काम पूरा कर लेना, घर की छत के खपरैल फेरना या सराना।

सरत – पु.– शर्त, बाजी।

सरतन – क्रि.–प्रबन्ध करना।

सरताँ – पु.ब.व.–शर्तें।

सरताज – पु.– सिरताज, बादशाह, राजा।

सरतानो – पु.– बाज पक्षी, एक प्रकार का शिकारी पक्षी।

सरतिया – पु.– शर्त बदकर किया जाने वाला कोई कार्य।

सरती – स्त्री.– पूरी होती।

सरतो – पु.– पूरा होना।

सरा – स्त्री.– सराय, लग्न सरा, चिता, ज्वार का सरा, एक फसल।

सरो – पु.– ज्वार का सूखा पोपड़ा, सरा या भुट्टा।

सरोतो – पु.– सुपारी काटने का औजार, सरोता।

सरद – स्त्री.– शरद ऋतु, सरदी, शीत।
(दूजी सरद पूनम की रात। मा.लो. 661)

सरद रितु – स्त्री.– शरद ऋतु, वि. -सर्दी, सर्द का मौसम।

सरद्दी – स्त्री.–सरहद, सीमा, चौहद्दी बताने वाली सीमा रेखा या चिह्न।

सरदा – पु.– श्रद्धा।

सरदाग्यो – क्रि.– ठण्डक पहुँचवाई, पानी या ठण्डक से अनाज आदि वस्तुओं का सरदा जाना या विकृत हो जाना।

सरदा भगती – स्त्री.– श्रद्धा भक्ति।

सरदार – पु.– नायक, अगुआ, शासक, सिक्खों की पदवी।

सरदी – स्त्री.– ठण्डक, नमी, तरी।

सराद – पु.– पितरों का तर्पण।

सरधा – स्त्री.– श्रद्धा।

सरन – पु.– शरण, आश्रय।

सरनागत – पु.– शरण में आया हुआ।

सरने – पु.– शरण में आया हुआ।

सरनो – क्रि.वि.– पूरा होना, पूर्ण होना, पर्याप्त होना, स्त्री.- निस्तार वाली भूमि।

सरप – पु.– सर्प, साँप।

सरपंच – पु.– प्रधान पंच, प्रमाण पुरुष मुखिया।
सरपट – वि.– तेज, चाल, तेज गति, अश्व की एक चाल या गति।
सरप नीऱ्यो – पु.– सर्प निकला, सर्प का बाहर आना।
सरपणो – क्रि.– रेंगना, सरकना।
सरपाव – पु.– शारीरिक सिर से पैर तक के पूरे वस्त्र।
सरपासो – एक प्रकार की गाँठ।
सराप – स्त्री.– शाप, अभिशाप, बद्दुआ, हाय।
सरापी – स्त्री.–चाँदी–सोने के व्यापारी, सर्राफ, महाजनी या लिपि।
सरापो – पु.– सर्राफ का काम या पेशा, सराफों का बाजार।
सराप्यो – क्रि.– शाप दिया, अभिशाप दिया।
सरीपो – पु. –शरीफे या सीताफल नामक वृक्ष या फल।
सरू – अव्य.– लिए, शुरू, प्रारम्भ।
सरू कऱ्यो – क्रि.– आरम्भ किया, प्रारम्भ किया।
सरूप – वि.– आकार या रूप से युक्त, सुन्दर रूप, स्वरूप।
सरो पाव – पूरी वेशभूषा।
सरफो – पु.– व्यय, खर्च।
सरफो कीदो – क्रि.– खर्च किया, व्यय किया।
सराफा, सराफो – पु.– सोने–चाँदी, हीरे जवाहरात की दुकानें जहाँ लगती हों वह बाजार।
सरी – स्त्री.– माचिस की तिली या काड़ी, सली, शलाका।
सरीक – पु.– शामिल, सम्मिलित।
सराफी – स्त्री.– कारिन्दा, महाजन, सोने–चाँदी आदि के आभूषणों का व्यवसायी, सेठ–साहूकार।
सरबत – पु.– शर्बत, ठण्डा पेय।
सरबस – पु.– जो कुछ पास में हो, वह सारी सम्पत्ति या पूँजी, सर्वस्व।
सराब – स्त्री.– शराब, मद्य, दारू, मादक पेय।
सराबरी – स्त्री.– स्पर्धा, बराबरी।
सरब सक्तिमान – वि.– जिसमें सब कुछ करने की शक्ति हो, ईश्वर।
सरवरिया – पु.– तालाब, सरोवर।
सरम – पु.– शर्म, हया, लज्जा।
सरमई – स्त्री.– शर्मा रही, लज्जित हुई।
सरमा – क्रि.पु.– शर्मा, ब्राह्मणों की एक उपाधि।
सरमावे – वि.– शर्म आवे, लज्जित होवे।
सरमा सरमी – अव्य. – लाज के मारे, एक-दूसरे से लज्जित होकर संकोच से लिहाज से, शर्म में आकर के।
सऱ्यो – पु.– लोहे की राड पूरा हुआ, काम हो गया।
सराय – स्त्री.– मुसाफिर खाना।
सरल – पु.– सुगम, सहज, सुलभ।
सरवर – पु.– तालाब।
(सरवर चड़ी ने ओ छोरी हीरा देखणे लागी। मा.लो. 676)
सरवरियारी पाल – पु.– तालाब के किनारे।
सरवण – सं.– (श्रवण) अंधक मुनि के पुत्र श्रवण जो अपने पिता को बहंगी पर बिठाकर तीर्थाटन करते थे। इनकी मुख्य कथा कहकर भीख माँगने वाला ब्राह्मण।
सरावणो – क्रि.– सराना, पूरा करना, मकान के खपरेलों को व्यवस्थित करना।
सरावलो – स्त्री.– तेल की पली, दूध नापने का पला।
सरसग्गी – सरग में जाना, प्रभु मिलन, स्वर्गीय गगनगामी।
(सगग सगग वा उड़े सरसग्गी वीको नाम। मा.लो. 542)
सरसठ – वि.– सढ़सठ।
सरस पटोली – रेशमी साड़ी की सुन्दर पटली।
(सरस पटोली दाँती रो चुड़लो दात। मा.लो. 382)
सरस पटोलो – एक रेशमी वस्त्र, मिसरु, रंग बिरंगा आँचल, साड़ी का पल्लू।

(सरस पटोली रादाबाई ढाँक्या। मा. लो. 601)

सरसर – वि.– सरसराते हुए, झुरझुर।

सरस – वि.– रस से परिपूर्ण।

सरसती – स्त्री.– सरस्वती।

सरसती नीगा ती – सरसरी नजर से, उचटती हुई या ऊपरी निगाह से चलते-फिरते नजर डालना, मोटे तौर पे, मोटे रूप में।

सरी – सीख, सली, शलाका, सोने की पतली और छोटी सीख।
(सरी रे सोना री घड़ाओ के प्राग्रज लोवा री रे। मा.लो. 369)

सरीरंग – रंग शरीर पर आने लगा।
फूँखे पुत्र सरीरंग लागो।

सरू – अव्यय – लिए, सारू।

सरसूँ – स्त्री.– पौधा जिसके बीजों का तेल निकलता है, जान पड़ता है नहीं। सरेनी-सजता है अधिक लोगों में थोड़ा भोजन कम पड़ना, काम पूर्ण नहीं होना, काम नहीं बनना।
(मारुजी रूस्या नी सरे जी। मा.लो. 599)

सरेस – पु.– एक प्रकार का पदार्थ जो सफेदा आदि में मिलाकर दीवारों पर पोता जाता है, रसयुक्त, सरस।

सरहद – पु.– सरहद, सीमान्त प्रदेश, सीमा रेखा।

सरद्दी – स्त्री.– सरहद, सीमा रेखा।

सलई – स्त्री.– चीड़ का पेड़, चीड़ की लकड़ी से बनी सली, शलाका, काड़ी, धातु की पतली छड़, आँखों में सुरमा लगाने, बुनने की सलाई।

सल, सल – पु.– कपड़े में सिलवट पड़ना।

सलगणो – क्रि.– जलना, जल उठना।

सलगायो – क्रि.– सुलगाया, सुलग गया, जलाया।

सलग्यो – क्रि.– जल गया, लकड़ी या अनाज आदि में घुन लग गया, कीटों द्वारा अनाज खाने से घुन लग जाना।

सल्तनत – स्त्री.– राज्य, साम्राज्य।

सलपड़्यो – क्रि.– कपड़ों में सल पड़ जाना, वि.- शंका हुई, दिल में दरार उत्पन्न होने का भाव।

सलमा–सितारा – पु.– सोने या चाँदी का वह तार जो कपड़ों पर बेल–बूँटे बनाने के काम आता है तथा सितारे जो चमकीले होते हैं, गोलाकृति तारेनुमा धातु की वस्तु।

सल्ला – स्त्री.– शिला, पीसने की पट्टी, वि.- सलाह, राय, मशविरा, उपदेश, सलाह।

सळवार – स्त्री.– मुस्लिम स्त्रियों का पहनावा।

सला, सल्या – पु.– राय, मशविरा, शिला।

सलाकार – पु.– सलाह या राय देने वाला व्यक्ति।

सला, सळो – पु.– चिता, लकड़ी की बनाई वह चिता जिस पर मुर्दे को रखकर जलाया जाता है।

सलाद – पु.– विभिन्न फलों को काटकर मिलाया हुआ मिश्रण।

सलाम – पु. – नमस्कार, अभिवादन, प्रणाम।

सलामत – वि.– सकुशल , स्वस्थ।

सली, सरी – स्त्री.– तिली, काड़ी, शलाका, सलाई।

सलीको – पु.– अच्छी तरह काम करने का ढंग, योग्यता, हुनर, शिष्टता।

सलूक करे – क्रि.– बर्ताव करे, व्यवहार रखे, आचरण करे।

सलो – पु. – चिता, शव का अग्नि संस्कार करने के लिए रची गई लकड़ियों की चिता।

सलोक – पु.– श्लोक, संस्कृत की पद्यबद्ध रचना।

सलोंकी – वि.– सोलंकी।

सलो रंचो – क्रि.– लकड़ियों से चिता तैयार की।

सवई – वि.– सवा गुनी, सवाई।

सवकार – पु.– साहूकार, महाजन, लेन–देन का धन्धा करने वाला।

सवजी – पु.– शिवजी, महादेव, गौरजी, भोलेनाथ।

सवत – स्त्री.– सौत, सौतन, पति द्वारा लाई हुई दूसरी स्त्री।

संवत – पु.– संवत्, वर्ष, साल।

सव्वा – वि.– सवा, एक और एक का चौथाई, भाग।

सवँरिया – पु.– साँवरिया, श्रीकृष्ण, स्वामी, पति, क्रि.वि.– बन-ठनकर तैयार हुए, सँवर गये।

सवलत – वि. – सुविधा, सहूलियत, सुगमता।

सवा – पु.– सवाया, एक और एक का चौथाई का जोड़, शिवा।
(सवा छटाँग। मा.लो. 484)

स्वाँग – पु.– मुखौटा धारण करना, परिरूप बदलना, मालवी नाट्य प्रकार।

सवागी, स्वागी – स्त्री.वि.– अच्छी लगी, सुहा गई, सुहागी या सोहागा नामक पदार्थ जिसका उपयोग आभूषण बनाने में किया जाता है।

सवाद – वि.– स्वाद।

स्वाद्या, स्वाद्यो – स्वाद लेने या चखने वाला, रसिक।

स्वाँगी, सवाँगी – स्त्री.– ढोंगी, अभिनयकर्त्ता।

स्वाँण दी – स्त्री.– सुला दी, सुला दिया, सुलाया।

सवायो – वि.–भारी, वजनी, अधिक ताकतवर, सवाया, बढ़कर।
(सबसे सवायो इन्दोर वालों आछो रंग लायो रे बनड़ा। मा.लो. 385)

सवारताँ – क्रि.– ठीक करते हुए, साल-सम्भाल करते।

सँवार्‌या केस – क्रि. – बाल सँवारे, बाल काढ़े, बाल ओंछे, केश सज्जा की।

सँवाल्या – पु.ब.व.– सियार।

सँवाल्यो – पु.ए.व.– सियार।

सवाल – पु.अ.– प्रार्थना, माँग, प्रश्न।

सवाल जवाब – पु.अ. – तर्क-वितर्क, वाद-विवाद, बहस, प्रश्नोत्तर।

सवायो – पु. – ऋण जिसमें सवाया वसूल किया जाता है।

सवैयो – एक छन्द जिसमें मात्राएँ और गण भी पाये जाते हैं।

संस्कार – पु.– आवश्यक धार्मिक कृत्य जो जन्म से मरण पर्यन्त चलते हैं ।

ससराजी, ससरोजी – पु.– श्वसुर, पत्नी या पति के पिता के लिए सम्बोधन।

सस्तर – पु.– शस्त्र, औजार, हथियार।

सस्ती – वि. – सस्ता, कम मूल्य का, साधारण, मामूली, जिसका भाव कम हो।

संसार – पु.– घर बार, परिवार, जगत।

संसारी – स्त्री. – सांसारिक, गृहस्थी, विवाहित।

ससि – पु.– चन्द्रमा, चाँद।

सँसे – वि.– संशय, भ्रम, शंका, सन्देह, साँसो।

सहज – पु.– सहज, स्वाभाविक, सरल प्रकृति।

सहज समाधि – स्त्री.– वह ध्यान या समाधि जो सदगुरु के बतलाये अनुसार लगाई जाती है, जिसमें आसन, मुद्रा आदि के प्रयोगों की आवश्यकता नहीं होती।

सहणो – क्रि.– झेलना, सहना।

सहभोज – पु.– एक पंक्ति में बैठकर भोजन करना, साथ साथ खाना।

सही, सई – पु.– हस्ताक्षर, दस्तखत, स्याही।

सहेजणो – क्रि.– सम्भालना, यह देखना कि सब चीजें पूरी हैं या नहीं।

सहेल्यो – सखियाँ, सहेलियाँ, मित्र, सहचरी
(सहेल्याँ ए नींद...।)

संगवी – संघवी, संगी-साथी, यात्रा में जाने वाला संघ, समूह।
(संगवी माता यसोदा का पूत गंगाजी को संग चाल्यो । (मा.लो. 626)

संगाती – साथी, संगी, मित्र, साथ देने वाला, बंधु।

(पाप संगाती कोई ओर नइ। मा. लो. 681)

संजा – न. – संध्या, शाम, शाम के समय आकाश का लाल होना, साँझ, साँझी, श्राद्ध पक्ष में शाम के समय सोलह दिन तक दीवाल पर गोबर से स्वस्तिक, बेलबूटे आदि बनाए जाते हैं। (माता धोवत धोवत संजा खुली। मा.लो. 627)

संजोव – जलाना, संजोना, प्रज्ज्वलित करना। (वे तो बेन्या बाई आरतड़ी संजोवती। मा.लो. 184)

संजोवणो – सजाना, सजाकर रखना, दीपक जलाना, प्रकाश करना, तपास करना, देखना, संयुक्त करना, रखना, स्थापित करना। (तमारी बेन्या तो रेवा बाई आरती संजोवे। मा.लो. 458)

संद – सीलन, गीलापन, सेंध, छेद, दरार, थेगला।

संदेस – न. – संदेश, खबर, समाचार, आशीर्वचन, प्रेषित आदेश, आज्ञा।

संपज – प्राप्त, मिला हुआ, मेल, एकता, मित्रता, प्रेम, सम्पर्क। (हाँ रे वाला जेसा कत से सूत ऐसी सम्पज राखजो। मा.लो. 535)

सहोदर, सोदर – पु.– सगाई भाई।

सा

सा – अव्य. – समान।

साइकल – स्त्री.– दो पहियों वाली पैरगाड़ी, बाइसिकल।

साँई – पु.– स्वामी, ईश्वर।

साँई का – वि.– हम उम्र के, समान वय का।

साई देणी – क्रि.वि.– अपना वचन रखने के लिए किसी को अग्रिम धन देना, पेशगी।

साईस – पु.– सईस, घोड़े की साल सम्भाल करने वाला।

साऊकार – पु.– साहूकार, लेनदेन करने वाला महाजन।

साक – स्त्री.– साग भाजी, सब्जी।

साँकड़ी – स्त्री. – सकरी, संकीर्ण, तंग।

साँकड़ो – वि.– सकरापन, जगह की कमी, संकरा, तंग, ओछा, संकीर्ण। (मुख साँकलो। मा.लो. 567)

साकरे – क्रि. – ओरना या ओराई का कार्य करना, बीज वपन करना।

साँकल तोड़ा – क्रि.वि.– साँकुल या कड़ी को तोड़ने वाला, अर्गला तोड़ने वाला, ताकतवर, बहादुर या चोर।

साँकल – स्त्री.– अर्गला, साँकुल, कड़ी, जंजीर, बंधन।

साकार – पु. -प्रत्यक्ष, आकार युक्त।

साकिन – स्त्री.अ.– निवास, रहने वाला स्थान, ग्राम।

साख – पु.– शाखा, टहनी, साक्ष, प्रतिष्ठा, साख, गोत्र।

साग – स्त्री.– सब्जी, भाजी, गोत्र, शाखा, डाल पर पकी हुई केरी या फल, सागवान का पेड़ या लकड़ी।

साँग – स्त्री.– एक बरछी, शक्ति, स्वांग, तमाशा, सब अंगों से पूर्ण, सम्पूर्ण, पूरा, वेश परिवर्तन, मुखौटा धारण करके खेल तमाशा बताना।

सागटी – डंडी, डाँडी जो डोरा बक्खर में लगाई जाती है जिससे अर्थी (तरकटी) तैयार की जाती है। (लाम्बी लाम्बी सागटी ने मोया की डोरी। मा.लो. 704)

साँगणा – वि.– सघन, घने, बहुत पास- पास।

साँग बदल्यो – क्रि.– वेश परिवर्तन किया, मुखौटा या रूप बदल दिया।

सागर – सेगरी, साँगली, मूली जब पक जाती है तो उसमें फली लगती है। फलों की सब्जी, मोगरी।

(गादल वचली रे वाने सांगर भावे। मा.लो. 435)

सागर – पु.– समुद्र, बड़ी झील।

सागर धान्यो – वि.– सब तरह का मिश्रित अनाज, बेकल्ड़ा।

साँगरी – स्त्री.– काली बटली, एक प्रकार की दाल, एक सब्जी।

साँग लगई – क्रि.– साँग या लोहे का सब्बलनुमा औजार लगाना।

सांगानेर – पु.– राजस्थान का एक प्रसिद्ध शहर, जिसका उल्लेख संजा के गीतों में आता है।

सागी – वि.– वृक्ष पर पकी हुई केरी , डालपक आम, सागौन की लकड़ी या पेड़।

साँघणा – वि.– सघन, बहुत पास-पास।

साँच – वि.– सच, सच्चाई।

साँचरिया – क्रि.– इकट्ठा किया, संचित किया।

साँचा – वि.–सच्चा, सचाई वाला, लकड़ी या लोहे का संचा जिससे ईंट या कोई वस्तु बनाई जा सकती है।

साँची साँच – क्रि.वि.– पूर्ण सत्य, सच ही सच, एकदम सत्य।

साँची वात – क्रि.वि.– सत्य बात, सच्ची बात।

साँचो – वि.– सच्चा, सच, संचा। पु.– एक विशिष्ट आकार का वह उपकरण जिसमें कोई गीली वस्तु ढालकर दूसरी आकृति बनाई जाती है, एक निश्चित नाप की वस्तु।

साँज – स्त्री.– संध्या,संजवाती, संध्यादीप, साँझ का समय।
(साँज परे। मा.लो. 596)

साज – स्त्री.– साजो सामान, बजाने के वाद्य, क्रि.– सुसज्जित होना, सजना।

साँजका – स्त्री. – संध्या का समय।

साजन – पु.– मालवी में प्रचलित साजन या पति सम्बन्धी लोकगीत, पति।

साँज पड़ी – स्त्री.– संध्या हुई, संध्या का समय हुआ।

साजिन्दो, साजिन्दा – पु.– साज बजाने वाले उस्ताद, वादक कलाकार, गाने वाले के साथी जो प्रायः वादक होते हैं।

साजिश – वि.– षड़यन्त्र, किसी के खिलाफ कोई गुप्त मुहिम चलाना।

साजी – स्वस्थ, अखंड, अटूट, एक क्षार, सज्जी क्षार, साजी खार।
(साजी में तो कचरो पड्यो। मो. वे. 49)

साँजी – स्त्री.– विवाह के अवसर पर वर वधू की शुभकामना हेतु लोक मातृका देवी माताजी के स्थान पर पारिवारिक महिलाओं के साथ हल्दी मेहंदी, गोबर, पाण्डु आदि ले जाकर संध्या के समय लिपाई करना, चौक पूरना एवं हल्दी चावल चढ़ाकर इस मंगल अवसर पर भाई को आमंत्रित करने की लोक प्रथा। इस कर्म के समय गाये जाने वाले सांजी के लोकगीत।

साजी – स्त्री.– सज्जी, एक क्षार जिनके उपयोग से पापड़, सज्जा, ढोकला आदि खाद्यान्न तैयार किये जाते हैं, वि.– स्वस्थ्य होने का भाव।

साजी माँदी – क्रि.वि.– स्वस्थ-अस्वस्थ, निरोग।

साजी संचोरो – स्त्री.– सज्जी या संचूरा नामक क्षार तत्व जिसे पानी में उबालकर पापड़ आदि बनाये जाते हैं।

साँजे – स्त्री.– संध्या होने पर।

साजो – पु.– एक क्षार, सज्जी, क्षार मिलाकर पानी में पकाया गया आटा क्रि.- साज सजाओ, साजो सामान।

साँझ – स्त्री.– संध्या का समय।

साँझका – स्त्री.– संध्या को।

साँझी – स्त्री.– मंदिरों में भूमि पर रंगीन चूर्णों से बनाई गई बेल बूटों की सजावट, क्वाँर

मास में कुमारी कन्याओं द्वारा बनाई जाने वाली सँजा की आकृतियाँ, मालवी कुमारिकाओं का व्रतोपवास, चित्रावण कला, एक लोकपर्व, इसे सँजा-साँजा-साँझी-साँजुलि आदि नामों से भी पुकारा जाता है। ब्रज में इसे साँझी, राजस्थान में सँझ्या, महाराष्ट्र में गुलबाई और बुन्देलखण्ड में जामुलियाँ कहा जाता है।

साँझी पाड़ी – क्रि.– संजा की आकृतियाँ उकेरी।

साँट – स्त्री.– बेंत या लकड़ी आदि से पीटे जाने शरीर पर वैसा ही चिह्न बन जाना, पतली बेंत या लकड़ी।

साटण, साटन – स्त्री.– एक प्रकार का मोटा वस्त्र, हाथकरघे पर बनाया गया वस्त्र।

साट वेणो – क्रि.वि.– बन्द होना, बिजली के गुलुप या बल्ब का जलते- जलते बन्द हो जाना।

साँटा – पु.ब.व.– गन्ने, ईख।
(साँटो रे। मा.लो. 33)

साँटी – स्त्री.– पतली लकड़ी, सन्टी, छड़ी, चाबुक, घोड़ा, अरहर की या अन्य साँटी।

साँटो – पु.– गन्ना, ईख।

साठा – वि.– साठ।

साठ खेड़ो – पु.– राजस्थान का एक गाँव जो मालवा की सीमा पर स्थित है - जहाँ सर्प देवता कालेश्वर महाराज का भव्य मंदिर है। पाती के लगन करने वाले दूल्हे- दुलहिन यहीं की पत्रिका लेकर बिना लग्न के ही विवाह कर लेते हैं। विवाहोपरान्त लाड़ा -लाड़ी भेंट सहित इस स्थान पर धोकने के लिए लाये जाते हैं।

साठण – स्त्री.– देसी मोटा वस्त्र, हाथकरघे पर बना हुआ वस्त्र।

साँठा – पु.– गन्ना, ईख।

साठे पाठे – वि.– साठ वर्ष की उम्र व्यतीत हो जाने पर परिपक्व।

साठेराव – पु.– मालवी गीत कथा हीड़ का एक प्रसिद्ध पात्र।

साँड – पु.–केवल संतान उत्पन्न कराने के लिए पाला हुआ वृषभ, आवारा।

साँडनी – स्त्री.– ऊँटनी जो बहुत तेज चलती है।

साँडनी असवार – पु.– ऊँट पर सवारी करने वाला।

साँडड़ली – ऊँटनी।
(थारी साँडड़ली सिणगारो नणदल से लावो घुघरी। मा.लो. 49)

साटी – रेशमी वस्त्र, एक प्रकार का साटन।
(साटी को घागरो। मो.वे. 51)

साँडा – पु.– एक रेगिस्तानी प्राणी जिसके शरीर से तेल निकालकर विभिन्न बीमारियों के काम में लाया जाता है।

साड़ी – स्त्री.–धोती, ओढ़ने का वस्त्र, स्त्रियों के पहनने की चौड़े किनारे की धोती या साड़ी।

साडू – पु.– पत्नी की बहिन के पति, पत्नी के जीजा या बहनोई, साढू, साली का पति।

साड़े साती – स्त्री.– शनिदेव का जन्म लग्न में साढ़े सात वर्ष तक रहना, शनिग्रह की अशुभ दशा जो साढ़े सात वर्ष तक रहती है।

साड़ोल्यो – स्त्री.– साड़ी का पल्लू, साड़ी का वह किनारा जो कमर में खोंसा जाता है।

साढू – पु.– पत्नी की बहिन का पति।

साणपत – वि.–अपनी शान बघारना, ज्यादा होशियारी बताना, अधिक समझदारी का प्रमाण देना, ज्यादा समझदारी बताना।

साण पे चड़ई – क्रि.– सान पर धार तेज की, परीक्षा ली।

साणी, स्याणी – वि.– समझदार लड़की या स्त्री, चतुर स्त्री।

स्याणो, साणो – वि.– सयाना, चतुर, समझदार, युवा।

साणो वईग्यो – पु.– समझदार हो गया, होशियार हो गया।

सात – वि.– सात।

साँत – वि.– जिसका अन्त हो गया हो, मृतक, शान्त।

सातक, सातंक – पु.- ग्रह शान्ति नामक लोकाचार।

सातंग – गृहशान्ति, हवन, यज्ञ। (सातंग बेठा सो जणा सोभाग रेणा। मा.लो. 333)

सातर – वि.– सात की संख्या।

सास्तर – पु.– वेद, पुराण आदि शास्त्र।

साता – वि.– शान्ति, सुस्ताना, बीमार के हालचाल पूछना।

सातो सायर – वि.– सातों समुद्र।

सातू – पु.– सिके हुए, गेहूँ या चने का पिसा हुआ आटा जिसमें शकर या गुड़ मिलाकर खाया जाता है।

सातूड़ी तीज – स्त्री.– भाद्रमास की तृतीया तिथि इस दिन शुद्ध घृत में सत्तू के लड्डू बनाये जाते हैं।

साँते – पु.– साथ में।

साते पियाल – वि.– सातों तल, जमीन या पृथ्वी के नीचे के सातों खण्ड।

साँतो पाड्दयो – बागड़ में छिद्र बनाना।

सातोल – वि.– सातवाँ हिस्सा या भाग।

सात्यो – साथिया, स्वस्तिक। (साबलाजी सात्यो माँडे। मो.वे. 33)

साँतीड़ो – न. – मित्र, साथी, दोस्त, सखा, साथ में काम करने वाला, साथ में रहने वाला। (साँतीड़ा हे आगे पीछे। मो.वे. 35)

साथ – पु.– मेल, मित्रता।

साथन – स्त्री.– साथिन, सहेली।

साथम – पु.– साथ में, संग में।

साथरी – स्त्री.– गाड़ी का वह भाग जहाँ चौड़ा पटिया लगा होता है – जिस पर गाड़ी चलाने वाला बैठता है।

'सा'

साथीड़ो, साथीड़ा – पु.– मित्र, दोस्त, साथी।

साद – गर्भ रहने के तीसरे महिने में इच्छा पूर्ति के रूप में खाने की वस्तुओं पर मन जाने को साद कहते हैं। (लिम्बूड़ा री साद गोरी ने।)

सादक – पु.– साधना करने वाला।

सादनो – पु.– साधना, सुधारना, सिद्ध करना।

साद्यो – क्रि.– साधा, सम्पर्क किया।

सादऱ्यो – क्रि.– साध रहा, सम्पर्क कर रहा, पूर्ण कर रहा।

सादरी – स्त्री.– चटाई, दरी, फर्श, खजूर के पत्तों से बनाई सादड़ी।

सादा – वि.– साधारण, सामान्य, सादी वस्तु।

सादारी-नादारी – वि.– अमीरी–गरीबी।

सादी – स्त्री.– शादी, विवाह।

सादू – पु.– साधु, संन्यासी।

साँदो – संधि भरना।

सादूँ – क्रि.वि.– साधना करूँ।

सादो – वि.– सादा, सामान्य, साधारण, सीधा सरल।

साध – स्त्री.– अभिलाषा, उत्कण्ठा।

साध झकोला खाय – क्रि.वि.– साधु स्नान करते हैं।

साधणो – क्रि.– साधना करना, साधना, काम में सम्मिलित करना।

साध–पुराना – क्रि.वि.– इच्छा पूर्ण होना।

साध्वी, साधवी – स्त्री.– सती, पतिव्रता, संन्यासिन, वि. -पवित्र आचरण करने वाली।

साधु – पु.– साधु, संन्यासी, वैरागी।

साधूड़ो – पु.– साधु, संन्यासी, वैरागी।

सान – वि.– शान, धार तेज करने का औजार।

सान चड़इदी – स्त्री.– सान पर चढ़ा दी गई, धार बनाई।

सान्ती – स्त्री.- शान्ति, कुशलक्षेम, कुशल।

सान्याँ – वि.– इशारे से।

सानी – स्त्री.– इशारे से, बराबरी। वि.– बेजोड़, अद्वितीय, बराबरी का।

(तम नी समज्या म्हारी सानी में। मो.वे. 49)

साँप – पु.– सर्प, साँप।

साँपड़नो – क्रि.– नहाना, स्नान करना।

सापड़े – क्रि.– स्नान करे, नहावे।

साँपीग्यो – वि.– पीछे हट गया, डर गया, काँप गया, शर्मा गया, घबरा गया, लम्बी साँस लेना।

साफ – वि.– स्वच्छ, निर्मल, शुद्ध, निर्दोष, स्पष्ट, उज्ज्वल, जिससे कोई झगड़ा या बखेड़ा न हो, निखरा हुआ, चमकीला, सादा, निष्कपट, खाली, कोरा।

साफी – स्त्री.– चिलम के नीचे लगाने का छोटा कपड़ा, हाथ का छोटा रुमाल।

साफो – पु.– सिर पर बाँधने का वस्त्र, पगड़ीनुमा फेंटा।

साँब – पु.– महादेव, भोलेनाथ शंकर, शिव, त्रिनेत्र।

साबत – वि.– स्वस्थ, जो फटा टूटा न हो, अखण्डित।

साबन – पु.– कपड़े धोने एवं सफाई करने का साबुन।

साबर (सबर) – पु. – वश में आना, वि. – पशुओं का गर्भधारण करना।

साँबर – पु.– एक हिरन, बारहसिंघा।

साबला – पु. इच्छुक, लालायित। (मंडप रा हम साबला। मा. लो.327)

साबुत – वि.– सम्पूर्ण, पूरा, बिना टूटा, जो खण्डित न हो।

साबू – पु.– साबुन।

साबूदाणा – पु.– सागू नामक वृक्ष के तने के गूदे से तैयार किए हुए दाने जो शीघ्रता से पच जाते हैं, साबूदाना।

साँभर – पु.– राजपूताने की एक झील जिसके पानी से नमक बनता है। एक प्रकार का हिरन।

साम – स्त्री.– संध्या, शाम का समय,पु.– सामवेद।

सामण – पु.– श्रावण मास, सावन का महीना।

सामण गावे – क्रि.– श्रावण मास में गाये जाने वाले लोकगीत।

सामणी, सावणी – स्त्री.– लड़के या लड़की की मँगनी (सगाई) हो जाने पर रीति–रिवाज या लोकाचार के अनुसार श्रावण मास में भेजे जाने वाले वस्त्र–गहने आदि की भेंट।

सामत – विपत्ति, दुर्दशा, बदकिस्मती, दुर्भाग्य, शामत।

सामंद – पु. – कृषि के उपकरण यथा गाड़ी-बैल, हल, बक्खर, डोरा, चरसी, रास-पिराण आदि समस्त उपकरण।

सामंद–सींदरा – कृषि के उपकरण एवं रस्सी आदि।

साम–दाम – क्रि.वि.– किसी प्रकार या युक्ति से काम करवाना।

सामनूँ – पु.– सामने, सीधे, आगे की ओर, सम्मुख।

सामने – पु.– सम्मुख, समक्ष, आगे।

सामनो – क्रि.–सम्मुख होना, मुकाबला करना, सामना करना, दंगल, स्पर्धा।

सामरथ – पु.–सामर्थ्य, शक्ति, ताकत, पुरुषार्थ।

सामरथवान – वि.– शक्तिशाली, सामर्थवान, ताकतवर, पुरुषार्थी।

साँमल – पु.– शामिल, सम्मिलित, जूड़े की कीलें जो लकड़ी की बनी होती हैं और इनके सहारे बैलों के जोत की पिरोई जाती है।

साँभल जोत – स्त्री.– लकड़ी की बनी सांमल एवं बैलों के गले में डाला जाने वाला रस्सी का फँदा या जोत।

साँमली – स्त्री. – साँवरी, साँवली, श्यामरंग वाली।

सामवर्ण – वि. –श्यामवर्ण, काले रंग का, श्याम रंग की वस्तु, श्रीकृष्ण।

सामा – सामने, सन्मुख, आगे।
आमा जो सामा बना मेल झुकाणो। मा.लो. 400)

सामाजिक – पु.– समाज सम्बन्धी, समाज में प्रचलित विभिन्न गतिविधियाँ।

सामान – पु.– वस्तुएँ।

सामा–सूधारो – क्रि.वि.– ठीक से रहो, भले रहो, अच्छे से रहने का प्रयास करो।

सामिल – पु.– शामिल, सम्मिलित।

सामी साँज – संध्या के समय (धर धरी वेराँ)।
(सामी साँज गोरो लाड़ो चोक बेठो केवड़ो महाकाय रे। मा.लो. 206)

सामूँ – पु.– सामने, सम्मुख ।

सामूणी – स्त्री.– बारात के वधू के द्वार पर आ जाने पर घरातियों विशेषकर समधियों द्वारा स्वागत किया जाना, घराती एवं बारातियों का मिलनोत्सव।

सामूँ–न्हाल – क्रि.वि.– सम्मुख देख, सामने देख।

सामू–पोल – क्रि.वि.– बड़ा द्वार, मुख्य द्वार, प्रमुख दरवाजा, प्रमुख मार्ग।

सामूँ मुँडे वात नी करे– पद – ठीक से बात न करना, सामने न बोलना, शर्मिन्दा होना।

सामे – पु.– सम्मुख, सामने, प्रत्यक्ष।
(सूरज सामे पाणीड़ा नी जऊँ। मा. लो. 577)

सामे ऊबो – पु.– सम्मुख खड़ा हुआ, सामने खड़ा हुआ।

सामों – पु. –काँगनी या चना की तरह का एक प्रकार का घटिया अन्न, कोदो–सवाँ।

सामोरे – क्रि.वि.– ठीक से रह, भला रहा, अच्छे रहो।

सायकल – स्त्री.– बायसिकल, पैर गाड़ी।

साय करे – क्रि.– सहायक हों , सहायता करे, भला करे, रक्षा करे।

साँय-साँय करे – वि.– वनखण्ड में सनसनाती हवा के चलने की ध्वनि जो प्रायः डरावनी लगती है, निर्जन स्थान।

सायदाँ – शाहजादी, रानी साहिबा, पटरानी।
(बाँदो अनीशलालजी का ओवरे उनकी सायदाँ हो राज जाया हे पूत वदावोजी म्हार आवीयो। मा. लो. 481)

सायबजी, सायबाजी– पु.– पति के लिए सम्बोधन, स्वामी, प्रियतम, प्रेमी।
(पंखेरू रे सायब हरके। मा. लो.72)

सायबो – पु.– पति, सायब, प्रियतम, प्राणेश्वर।

सायर – पु.– पति, प्रियतम, प्राणेश्वर, सागर, समुद्र, स्त्री, पत्नी, आने-जाने वाले माल पर लिया जाने वाला कर, कवि, शायर, बुद्धि, समझदार, सज्जन, सरल, सीधा, भोला, गम्भीर।
(घोड़ियक घोड़ला थोबजो रे सायर बनड़ा । मा.लो. 423)

सायर बेनूँली – वि.– सायर (समुद्र) की तरह गंभीर बहिन।

सायो – पु.– छाया, परछाई, भूत-प्रेत आदि असर या प्रभाव।

सायो नी न्यो – क्रि.वि. – छत्रछाया नहीं रही, वरदहस्त न रहा, आश्रय उठ गया।

सार – पु.– किसी पदार्थ का मुख्य या मूल भाग, तत्त्व, सत, गूदा, मर्म, निष्कर्ष, मतलब, परिणाम, फल, धन, दौलत, भलाई या मक्खन, बल, शक्ति, वीर्य, लोहा, लोहे का हथियार, तलवार, जुआ खेलने के पाँसे, शतरंज, चोसर की गोटी, पिंगल का एक छंद जिसमें 25 मात्रायें होती हैं। अन्त में दो गुरु तथा 26 पर यति होती है, साल नामक धान जिससे चावल निकलता है।

सारका – स्त्री. – मैना, पालन-पोषण, देखरेख, पलट, खाट, पु.- कपूर।

सारकी – अव्य.– सरीखा, सरीखी, लोहे की बनी सुई।

सारकी सुई – स्त्री.– लोहे की बनी सुई जिससे कपड़ों की सिलाई की जाती है, अल्पीन।

सारंग – पु.सं.– एक प्रकार का हिरन, कोयल, हंस, मोर, पपीहा, हाथी, घोड़ा, शेर, कमल, स्वर्ण, सोना, तालाब, भौंरा, मधुमक्खी, विष्णु का धनुष, शंख, चन्द्रमा, समुद्र, पानी, जल, नीर, साँप, चंदन, बाल, केश, शोभा, तलवार, बादल,मेघ, आकाश, मेढक , सारंगी, कामदेव, बिजली, फूल, दीपक, दीया, औरत, ग्रह–नक्षत्र, ईश्वर, गहने, कपड़े आदि, चार तगण का एक छन्द, सारंगी नामक बाजा, रंगा हुआ, रंगीन, सुन्दर, मनोहर, सरस, रसयुक्त।

सारंगी – स्त्री.– एक वाद्य, सारंगी।

सारणो – लगाना।
(काजल सार्यो। मा.लो. 224)

सारथ – वि.– स्वार्थ, लालच, रथ सहित।

सारथी – पु.– रथ चलाने वाला, सूत।

सारद – स्त्री.-सरस्वती, शरद ऋतु सम्बन्धी।

सारदा – स्त्री.– सरस्वती, शारदा।

सार दियो – क्रि.वि.– पूरा कर दिया, किसी भी काम को पूर्ण करना।

सारस्यो – पु.– परोसने वाला, भोजन सामग्री परोसने वाला, सारस।

सारस – सारस।

सारस पगो – वि.– सारस जैसे कृश या पतले या भद्दे पाँवों वाला।

सार समार – देखरेख।
(करती सारसमार। मा.लो. 570)

सारा सेर का – पु.– सम्पूर्ण नगर या शहर के निवासी।

सारी, साड़ी – स्त्री.– धोती या साड़ी।

सारू – अव्यय – लिए, वास्ते।

सारूँ – क्रि.– पूर्ण करूँ, घर के खपरेल सोना, थोड़े में सब काम पूर्ण करना ।

सारे – क्रि.– पूर्ण करे, वि.- समस्त, सब।

सारे के सारे – क्रि.वि.– सब के सब, समस्त।

सारो – वि.– सब, सभी, समस्त, पूर्ण करो, पत्नी का भाई, सहारा।
(घर में भारो सारो रे। मा. लो.416)

साल – पु. – वर्ष, संवत्सर, शालि, धान, वह छिद्र जिसमें लकड़ी पिरोकर हल या बक्खर तैयार किया जाता है।
(साल रो खाँडनो। मा.लो. 416)

सालगराम की मूरत – स्त्री.– शालिग्राम की वटी, मूर्ति, पाषाण प्रतिमा।

साल सूँपड़ो – पु.– विवाह के अवसर पर भाई द्वारा दूल्हे–दुलहिन के हाथों पर साल गिराने की रस्म, रिवाज या लोक–प्रथा।

साल्या – पु.– गाड़ी में पिरोने की लकड़ी के डण्डे ।

साल्या-पाटली – स्त्री.– कुँए के थाले पर पिरोई जाने वाली लकड़ी के दो खड़े स्तम्भ तथा उनके सिरों को जोड़ने वाली पाटली नामक सीधी लकड़ी जिसमें चक्र वगैरह लगाकर चढ़स चलाई जाती है।

साला – पु.– पत्नी का भाई, एक गाली।

सालहेली – साले की पत्नी। मा.लो. 518)

सालू – पु. – एक लाल कपड़ा जो मांगलिक होता है । षोडश मात्रिक देवता के लिए उपयुक्त लाल कपड़ा, साड़ी, धोती।
(केल्याँ कु तेरे सालू सोवे। मा. लो. 578)

सालू समाणी – स्त्रियों के ओढ़ने का लाल रंग का एक वस्त्र, सालू या साड़ी पहनने के लायक लड़की, साड़ी पहनने योग्य अपने बराबरी की वधू।
(ओ जसोदी बनड़ा सालुड़ा समाणी लाड़ी लावीया। मा.लो. 459)

सालूँ – क्रि.– चलूँ।

सालो – क्रि.– (चालो) चलो, साला।

साव	–	पु.– साहू, साहूकार, साऊ, साव, हुबहू, बिल्कुल।
साव चेत	–	वि. – सावधान, होशियार, सचेत।
सावड़	–	वि.– जच्चा का समय।
सावण सेरा	–	रुक-रुक कर पानी बरसना। (सावण बरसे सेवरो जी। मा.लो. 622)
सावणी	–	स्त्री.– सावन मास में वर पक्ष की ओर से कन्या पक्ष को भेजी जाने वाली वस्त्राभूषण की रस्म, श्रावणी ब्राह्मणों द्वारा सावन मास पर जनोई बदलना।
सावणी तीज	–	स्त्री.– श्रावण मास की तृतीया तिथि। (जी सायबा आइ सावणीया री तीज झूला तो घाल्या वाग में। मा.लो. 623)
सावधान	–	वि.– होशियार, सचेत करना।
सावन	–	पु.– श्रावण मास।
साँवरो, साँवलो	–	वि.– श्यामल, साँवला, साँवले रंक का, श्याम वर्ण के श्रीकृष्ण। (साँवली सुरत। मा.लो.527)
साँवा	–	पु.– सामा नामक अन्न, कोदो सवाँ।
सास	–	स्त्री. – सासु, पत्नी की माँ, श्वास
सास्तर	–	पु. – वेद।
सास्तरी	–	वि. – शास्त्र का जानकार या पंडित।
सासन	–	पु.– शासन, शासन प्रणाली।
सासरो	–	पु.– ससुराल, पत्नी का मैका, श्वसुरालय।
सास वऊ	–	स्त्री.– सास बहू।
साँस	–	श्वांस ले करके, दम ले करके।
सासरियो	–	पु.–ससुराल, श्वसुरालय, सासरा।
साँसा	–	वि.– संशय, शंका, सन्देह, साँस, जीवन, जिंदगी, अभाव। फाँके पड़ना।
साँसी	–	स्त्री.– मालवा की एक अनुसूचित जनजाति।
सासूजी	–	सास, पति की माता, पत्नी या पति की माता के लिए सम्बोधन। (पेरी ओढ़ी ने रणुबई सासु कने गया मा.लो. 583)
सासुवार	–	स्त्री.– स्त्रियों की बाईं ओर की माँग के लिये प्रतीक शब्द।
साँसो	–	चिन्ता, फिक्र, संशय, सन्देह, जीवन, जिन्दगी।
साहजी	–	पु.– साहूजी, साहूकार, तेली जाति का एक गोत्र।
साहब	–	पु.– साहबा, अधिकारी, बड़ा व्यक्ति, महाजन के लिये सम्मान सूचक शब्द, परमात्मा, प्रभु, स्वामी, परमेश्वर।
साहबी	–	वि.– प्रभुता या ऐश्वर्य से युक्त उच्च अधिकारी, बढ़ाई।
साहस	–	वि.– हिम्मत।
साहित्य	–	पु.– सहित या साथ होने का भाव, सामग्री, ललित वाङ्मय।

सि

सिकगी	–	क्रि.– सिक गई, सेक दी गई, सिकना या सेकने का भाव।
सिकर	–	वि. - शिखर, चोटी
सिकलगड	–	वि.– मस्तिष्क का वह स्थान जहाँ अनहद नाद की ध्वनि गुंजायमान होती रहती है।
सिकल	–	स्त्री.– सूरत, मुखाकृति , चेहरे की आकृति।
सिकलीगर	–	पु.– उस्तरों आदि को परवान चढ़ाने या धातुओं को रगड़कर चमकाने वाला कारीगर।
सिकावण	–	क्रि.– दूसरों के कहने में चलना, किसी वस्तु को भाड़ में सिकवाना या सेंकना, सीख में आ जाने वाला।
सिकीर्‌यो	–	क्रि.– सीख रहा, दूसरों के बहकावे में चल रहा।
सिखर	–	पु.– शिखर, चोटी, उच्च स्थान।
सिखाणो	–	सं.– विद्या, कला आदि की शिक्षा या उपदेश देना।
सिंग	–	सिंह, शेर, किसी के नाम के पीछे लगने वाला, नामांश।

(माजी सिंग सवारी असवार माय पदम वाजे घुघरा ए माय। मा.लो. 661)

सिंगड़ो – पु.– अँगूठा बताना, सींग, शृँग।

सिंगड्यो – वि.– सींगवाला।

सिंगाजी – पु.- कबीर के समकालीन निमाड़ी संत गायक।

सिंगाड़ो – पु.– सिंघाड़ा फल।

सिंगार – पु. सं.– शृँगार, सजावट, सज्जा।

सिगार – पु.– धूम्रपान करने की सिगरेट, बीड़ी आदि।

सिंगासण – पु.– सिंहासन, उच्चासन, ऊँचा आसन।

सिंगी – पु.– फूँककर बजाया जाने वाला सींग का बना एक बाजा।

सिंगी राजो – पु.– सींग वाला राजा।

सिंगोटी – वि.– बछड़े बछड़ियों के सिर के दोनों बाजुओं में निकलने वाले छोटे–छोटे सींग।

सिगोश – स्याहगोश, शरभ लिंक्स।

सिंघाड़ो – पु.– सिंघाड़ा नामक फल, एक फलाहारी खाद्य।

सिंघासण – पु.– सिंहासन, उच्चासन।

सिंचई – स्त्री.–सींचना, खेतों को पानी पहुँचाना।

सिंचई गयो – क्रि. –सींच दिया गया, सिंचाई का काम हो चुका।

सिंचावणी – स्त्री.– विवाह के अवसर पर कन्यादान में सींची जाने वाली रकम, रुपये–पैसे आदि।

सिंचावणो – पु.– सिंचाई करवाना।

सिजदो – पु.–प्रणाम करना, झुकना, अभिवादन।

सिजाणो – क्रि.– पकाना, आग पर किसी वस्तु को पकाना।

सिझि गयो – क्रि.– पक गया, गल गया, सीझ गया।

सिटकणी – स्त्री.– किवाड़ बन्द करने के लिए लोहे, पीतल या लकड़ी का एक विशेष उपकरण।

सिटल्ल्यो – वि. – सिटी बजाने वाला, आवारा।

सिट्टी पिट्टी – क्रि.वि.– होश हवास, सुध बुध।

सिड़ाव – पु.– सीढ़ियाँ, चढ़ाव, जीना।

सिणगार – पु.– शृँगार, सजावट, सजाना। (करो सिणगार। मा.लो. 583)

सितंगो – वि.– अस्त व्यस्त रहने वाला, शीत वाला।

सितानो – पु.– बाज नामक शिकारी पक्षी।

सिताफल – पु.– शरीफा, सीता फल।

सितार – पु.– एक प्रकार का तार वाद्य, बाजा।

सितारा – पु.स्त्री.– धातु के बने हुए गोल चमकीले तारे जो प्रायः वस्त्रों पर टाँके जाते हैं या सजावट के सामान पर उपयोग में लाये जाते हैं।

सितारे – स्त्री.– आसमान के तारे, चमकीले तारे, चमकीली धातु के बने तारे जो वस्त्रों में टाँके जाते हैं।

सिद्ध – कहाँ, किधर, सीधा, सरल, सामने, बिल्कुल सीद में। (कंकु भरी रे चंगेडली वउवड़ थे सीद चाल्या आज। मा.लो. 200)

सिदवड़ – सिद्धवट, उज्जैन में सिद्धवट पर मृतकों का तर्पण किया जाता है। (सिदवड़ झूलता घर आव, सरवर झूलता घर आव। मा. लो. 199)

सिदारणो – जाना, प्रस्थान करना, रवाना होना, चले जाना, मृत्यु होना। (इ तो सगला कंठाल्या गुजरात सिदार्या। मा.लो. 372)

सिदड़्यो – वि.– बड़े पेट वाला, अधिक खाने वाला।

सिद्दी – स्त्री.– काम को सिद्ध या पूर्ण करने वाली देवी, सिद्धी देने वाली देवी।

सिद्ध – पु.– सिद्धी प्राप्त पुरुष, शक्ति, सफलता या पूर्णता प्राप्त व्यक्ति, सिद्ध पुरुष, सफल। (अपणाँ मतलब सिद्ध करी ने। मो. वे. 40)

सिद्धि – स्त्री.–दैवी शक्ति, मुक्ति, सफलता, पूर्णता।

सिंदूर – पु.– एक प्रकार का लाल रंग या चूर्ण जिसे हिन्दू सुहागिनें माँग में भरती हैं, देवी- देवता पर चढ़ाया जाने वाला चूर्ण।

सिधार्या – क्रि.– पहुँच गये, चले गये, पहुँचे। (तुलसी सुसराल सिदार्या। मा. लो. 652)

सिन्धु – पु.– समुद्र, सागर, सिन्धु नदी, काली सिन्ध नदी।

सिनगार – स्त्री.– श्रृंगार, सजावट।

सिपरी – स्त्री.– शिवपुरी, मालवा की अन्तिम सीमा रेखा पर बसा प्रसिद्ध शहर।

सिपेड़ो – सिपाही, पुलिस, रक्षक, सिपाई। (धरती को घाघरो सिवईदे सिपई रे। मा.लो. 562)

सिफर – वि.– शून्य।

सिफारिस – स्त्री.– किसी के पक्ष की अनुशंसा करना।

सिमरान – स्त्री.– समई, दीप स्तम्भ।

सिमेन्ट – पु.– सीमेन्ट, संधान द्रव्य।

सिमोण – स्त्री.–समोना, मिलाना, मिश्रण करना।

सियार – पु.– गीदड़।

सियाराम – सं.– सीता राम।

सियाल – पु.– सियार, गीदड़।

सियाला, सियाले, स्यालो–पु. ठंड का मौसम, शीत ऋतु।

सियो – क्रि.– सीने या सिलाई का कार्य करो।

सिर – पु. –मस्तक, माथा।

सिरकार – पु.– सरकार, ब्रड़ा ओहदेदार।

सिरजनहार – सृष्टि की रचना करने वाला, परमेश्वर, सृजनकर्त्ता। (सायब म्हारा सिरजनहार पीयुजी थांकी नार। मा.लो. 619)

सिरजा – क्रि. बनाया, उत्पन्न किया, रचा गया।

सिरजोरी – जबरदस्ती, जुल्म, उदण्डता। (चोरी ने सिरजोरी। मो.वे. 41)

सिरदा – वि.– श्रद्धा।

सिरदार – पु. – सरदार, सेनापति, बड़ा व्यक्ति। (इन सातों में कुण सिरदार। मा.लो. 484)

सिरधा – स्त्री.– श्रद्धा, अपनी जितनी हैसियत हो।

सिराणो – पु.–तकिया, ठंडा करना, मंद पड़ना, बिताना। (ढोल्या रे सिराणे। मा.लो. 285)

सिरप, सिरफ – अव्य.– सिर्फ, केवल, मात्र।

सिरपो, सरफो – पु.– व्यय, खर्च।

सिरहाने – पु.– तकिये के पास।

सिरावण, सिरावन – वि. – ठंडा या शीतल करने वाला, पदार्थ, प्रातःकाल का स्वल्पाहार

सिरी – श्री, लक्ष्मी, नाम के पूर्व सम्मान-सूचक विशेषण।

सिरीकिसन – पु.– श्रीकृष्ण, बलराम के भाई।

सिरीखंड – पु.– श्रीखण्ड, एक खट्टा मीठा खाद्य पदार्थ जो दधि शर्करा के मिश्रण से तैयार किया जाता है।

सिरोपाव – पु.– सिर से पैर तक के कपड़ों की पोशाख।

सिल – स्त्री.– शिला, पत्थर का लम्बा टुकड़ा जिस पर मसाले आदि पीसे जाते हैं।

सिलई – स्त्री.– सिलाई का काम, ढंग या मजदूरी।

सिल बट – स्त्री.– सिल बट्टी।

सिलवट – स्त्री. – सिकुड़न, सल पड़ना।

सिलवानो – क्रि.– सिलाई करवाना, सिलाना

सिलसिलो – पु.– सिलसिला, क्रम, बँधा हुआ तार, श्रेणी, पंक्ति, व्यवस्था।

सिलाव – क्रि.– सिलवाओ, सिलवाने का काम करो।

सिलोन – पु.–श्रीलंका, सिंहल नामक देश।

सिल्ला – शिला, मसाला, पीसने की शिला, सील, पत्थर। (उदियापुर से सायबा सिल्ला मंगाव। मा.लो. 597)

सीला बालम – शीतल, प्रिय, ब्रह्मचर्य।

सीली गोरड़ी – शीतल गौरी, शीतला देवी।
(सीला बालम सीली गोरड़ी ए माय। मा.लो.202)

सिल्ली – जिस पर धार तीखी की जाती है।

सिवजी – पु.– शिव, शंकर।

सीवणो – सीना, सीलना, सिलाई करना, टाँका लगाना।
(इन्दोर्या का दरजी ए सीव्यो ठीका ठीक म्हारा मारुजी हो राज। मा. लो. 483)

सिवाजी – पु.– छत्रपति शिवाजी।

सिवा – अलावा, अलहेदा।

सिवाय – अलावा।

सिवाल – पु.– सियार।

सिवाल्यो – पु.– सियार।

सिवालराज – पु.– सियार रूपी राजा।

सिसकणो – क्रि.– धीमे- धीमे रोना, सिसकना।

सिसकी – स्त्री.– धीरे-धीरे रोने का शब्द।

सिसु – पु.– शिशु, बच्चा।

सिसो – पु.– शीशा, बोतल।

सिसोद्यो – पु.– सिसोदिया वंश।

सिंह – पु.– शेर, केशरी, मृगराज, वीर, बारह राशियों में से एक।

सिंहद्वार – पु.– प्रमुख द्वार, मुख्य दरवाजा।

सिंहस्थ – वि.– सिंह राशि में स्थित कोई ग्रह, पु. - वह समय जब द्वादश वर्षों में बृहस्पति सिंह राशि में स्थित रहता है, तबका, उज्जैन का महान् धार्मिक पर्व और मेला।

सिंहासन – पु.– सिंहासन, देवताओं के बैठने की चौकी।

सिंही – स्त्री.– शेरनी, सिंह की मादा।

सी

सींक – स्त्री.– तिली, काड़ी।

सीकार करणो – क्रि.– शिकार करना।

सींको – पु.– पेड़ पौधों की बहुत पतली उपशाखा या टहनी, डाँगी, छींक, स्त्री.– छींका जिस पर घी दूध आदि का बर्तन ऊपर लगी खूँटी आदि पर लटकाया जाता है।

सीख – स्त्री.– सिखाई जाने वाली और हित की बात, विदाई।
(सीख देवो। मा.लो. 606)

सीखणो – क्रि.– ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा पाना, समझना, सीखना।

सींग – पु.सं.– शृंग, सिंग।

सींगड़ा – पु.ब.व.– सींग।
(धोरी रा चलक्या सींगड़ा। मा. लो. 35)

सींगड़ो – पु.– सींग, व्यंग्य में अँगूठे के लिए इशारा।

सींगी – स्त्री.– सींग से बना एक बाजा।

सींगीनाद – वि.– सींग से बने बाजे से निकली हुई आवाज जो प्रायः नाथपंथी साधुगण बजाया करते हैं।

सींगाड़ो – पु.– सिंघाड़ा, जल में उत्पन्न होने वाला एक प्रसिद्ध फल।

सींघ – पु.– सींग।

सींघड़ा – पु.ब.व.– सींग, दोनों सींग।

सींचणो – क्रि.– सिंचाई करना।

सींचावणी – स्त्री.- वधू को दी जाने वाली भेंट।

सीजणो – क्रि.– पकना, पकाना।

सीझणो – क्रि.– आँच पर पकना।

सीट – स्त्री.– बैठक, बैठने की गादी या स्थल।

सीटल्यो – वि.– पगला, आवारा, सीटी बजाने वाला।

सींटा – पु.ब.व.– अंगूठे।

सीटी – स्त्री.– सीटी बजाना।

सींटो – पु.– अंगूठा।
(सींटा चार। मा.लो. 415)

सींटो बतइद्यो – क्रि.वि.– अंगूठा दिखा दिया, मुंह फेर लिया, मुकर गया, ठेंगा बनाना, मना करना।

सींटो वताल द्यो – क्रि.– अंगूठा बता दिया, मुकर गया।

सींठो – पु.सं.– अंगुष्ठ, हाथ या पाँव का अंगूठा।

सींठो बताल दियो – क्रि.वि.– मुकर जाना।

सीड़ – स्त्री.– बकरी या भेड़ी के दूध की धार सीधे मुँह में गिराना।

सीड़ी – स्त्री.– निसेनी, पेड़ी, जीना, चढ़ाव, सीढ़ियाँ।

सीत – वि.– शीतल, ठंडा, सुस्त, धीमा।

सीत्कार – वि.– सीसी की आवाज या ध्वनि।

सीतंगा – वि.– पगला, अर्द्ध विक्षिप्त।

सीतल – वि.–शीतल, ठंडा, सुस्त, धीमा।

सीतला माता – स्त्री.– एक लोक देवी, मातृ देवी, बड़ी माता, बड़ी चेचक।

सीता – स्त्री.सं.– भूमि को जोतने पर हल की चाल से पड़ी हुई रेखा, जानकी, राम की पत्नी सीताजी।

सीतापतवरणी – सीता के पति राम जैसा रंग, श्याम रंग। (गाम आजोद्या रे गोयरे सीतापत वरणी कँवर चंत धरणी तो आछा आछा घोड़ला वेचाय राम रघुवंशी घोड़ी। मा.लो. 185)

सीताफल – पु. - शरीफा।

सीद में – वि.– सीधे, सीध में।

सीदड़्यो – वि.– बड़े पेट का, बहुत खाने वाला, घी का पात्र।
(सीदड़ी केरा घीय। मा.लो. 626)

सीदा सादा – वि.– सीधा साधा, सरल, सरल मन का।

सीदो – वि.– सीधा, सरल चित्त, सरल मन वाला।
(पर्व पर ब्राह्मण को भोजन सामग्री देना। मा.लो. 702)

सीध – वि.– समानान्तर, सीध में, सामने, सीधा।

सीधो साधो – क्रि.वि.– सीधा साधा, सरल चित्त।

सीन – वि.– दृश्य।

सीना – क्रि.– सिलाई का काम करना, छाती।

सीनो – पु.– सीना, क्रि.– सिलाई का कार्य करना।

सीपूड़ी – वि.– अस्त–व्यस्त तथा पगली जैसी रहने वाली इधर–उधर घूमने –फिरने वाली स्त्री।

सीम – स्त्री.सं.– सीमा, हद, सरहद।

सीया – क्रि.– सिलाई का कार्य हो चुका, स्त्री.– सीताजी।

सीयो – क्रि.– सीने का काम किया।

सीरनी – मिठाई, मिष्ठान।
(सीरनी रा डरीया हो जमई नई आया सासरे जी। मा.लो. 516)

सीरमट – पु.अ.– सीमेन्ट।

सीरावण – पु.– प्रातःकाल का कलेवा।

सीरो – पु.– घुली हुई चीनी या गुड़ के रस में पकाया हुआ दलिया, ठण्डा, शीतल, शान्त।

सील – स्त्री.– लिफाफा आदि बन्द करके उस पर चिपकाई जाने वाली चपड़ी की सील, रबर, स्टाम्प।

सीलो – वि.– ठण्डा, शीतल।

सीवाड़नो – क्रि.– सिलवाया, किसी कपड़े को सिलवाने की क्रिया।

सीवार – स्त्री.– काई, कजी, काँजी, सेवार, सियार।

सीवाल्यो – पु.– सियार, गीदड़।

सीस – पु.– सिर, मस्तक।

सीसफूल – पु.– सिर पर धारण किया जाने वाला आभूषण।

सीसा – पु.– शीशा, बोतल, एक प्रकार का तरल एवं कीमती धातु, काँज।

सीसाँटो – एकदम आघात लगना, हृदय शून्य होना, किसी गम को बर्दाश्त नहीं कर पाना।

सीसोद्या – पु.– राजपूत या सोंधिया जाति का एक गोत्र।

सीही – स्त्री.– एक प्रकार का जंगली जानवर जिसके शरीर पर काँटे निकल आते हैं।

सुअटो – पु.– तोता, शुक, कीर, सुआ।
सुआ – पु.– तोता, शुक, कीर।
सुआनगरी – स्त्री.– सुसनेर का एक प्राचीन नाम।
सुआवड़ – स्त्री.– प्रसूता का समय जच्चा।
सुई – स्त्री.– सो गई, नींद लग गई, सीते की सुई। (सुई का नाका से हत्थी निकाल द्यो। मो.वे. 80)
सुई तागो – स्त्री.– सुई–धागा, सुई–डोरा।
सुईयो – पु.– बड़ा बोरा या थैला सीने का सुआ।
सुकणो – क्रि.– सूखना, रसहीन होना, उबला या कमजोर होना। (काशीजी में धोती सुकाय रया। मा. लो. 634)
सुकतलो – पु.– जूते के अन्दर रखने का चमड़े का टुकड़ा।
सुकमण – वि.– सुकोमल, सुखी।
सुकमार – वि.– नाजुक, सुकोमल, मुलायम, मृदु।
सुकमल – वि.– सुकोमल, नर्म, मुलायम।
सुकरत – वि.– सुकृत, अच्छे काम, श्रेष्ठ काम, सद्कर्म।
सुकलो – भूसा।
सुकल्यो – वि.– दुबला–पतला, सूखा या कृषकाय, क्षीणकाय व्यक्ति।
सुकाल – वि.– समृद्धि के दिन, अच्छी उपज वाला वर्ष। (इन्दरजी दुनियाँ में होवे सुकाल हो इन्दर राजा। मा.लो. 615)
सुको – वि.– सूखा, सूखे का वर्ष।
सुकता – स्त्री.– एक नदी, संज्ञा।
सुख – वि.– कष्टरहित, आराम।
सुखई गयो – क्रि.– सूख गया, सुखा लिया गया।
सुख–प्यारी – स्त्री.– सदा सुख में डुबोकर रखने वाली स्त्री।
सुखवर नींदरा – क्रि.वि.– सोना, गहरी निद्रा में होना।
सुखमल – वि.– सुकोमल, नाजुक।
सुख्या होग्या – क्रि.वि.– सुखी हो गये।
सुख्यो – पु.– सुखी।
सुखाणो – क्रि.– सुखाना, शुष्क करना।
सुखारो – वि.– थोड़ी तेजी लिये नमकीन वस्तु।
सुखी – स्त्री.– खुशहाल, सुखी, सुखपूर्वक रहना, सकुशल।
सुगणा सायजी – सद्गुणशाली पति, गुणोंवाला, बुद्धिमान्, भाग्यशाली, गुणी। (उठो उठो हो म्हारा सुगणा सायबजी तमारी बेन्या पागाँ लाया हो राज। मा.लो. 55)
सुग्गो – पु.– सुआ, तोता, शक, कीर।
सुग्गड़ – वि.– सुघड़, चतुर। (सुगणा गुणवती। मा.लो. 471)
सुगणासायब – पु.– सुगना के पति।
सुगणो – गुणी, गुणों वाला, बुद्धिमान, सद्गुण सम्पन्न। (सुनो सुगणा मारुजी कसूँबारी खेती राचन्द करो। मा.लो. 471)
सुगत – वि.-अच्छी गति, अच्छी स्थिति।
सुगंद – पु.– इत्र फरोशी, एक जाति, इत्र विक्रेता।
सुगन – वि. – शकुन–अपशकुन।
सुगरी – वि.– अच्छे गुरुवाली।
सुगरो – पु.– अच्छे गुरुवाला, कृतज्ञ। (हो राजा सुगरो हालरिया रो बाप।)
सुँगाड्यो – क्रि.– सुँघाया।
सुँघनी – स्त्री.- सूँघने की तम्बाखू, नसवार।
सुँघाणो – क्रि.– सुँघवाना, सुँघा देना।
सुजई दियो – क्रि.– सूज गया, सूजन आ गई।
सुजणो – देखकर के, सूझ, समझ, समझदारी से, बुद्धि से, उपज, कल्पना, दृष्टि, किसी अंग का फूल जाना, सूजन आना, सूजना।
सुजी गई – क्रि.– सूजन आ गई।
सुझाणो – क्रि.– दूसरे के द्वारा दिये गये सुझाव।
सुट्टी – स्त्री.– छुट्टी, तातील, नागा।
सुँठी – स्त्री.– सोंठ, सुण्ठि, सूखा हुआ

अदरक।

सुंठेली – वि.– सुठि, सुडोल सुन्दर, अच्छा, बहुत, आगर परगने का एक गाँव।

सुड़ा – पु. – तोता, कीर, सुआ।

सुड़ायें – पु.– तोता को।

सुण – क्रि. – सुन।

सुणाणो – क्रि. – सुनाना, किसी को भला बुरा कहना, जताना।

सुणाव – क्रि.– चुनाव, चुणाव, चुनने की क्रिया, मतदान।

सुणावना टेम – चुनाव या मतदान का समय।

सुण्यो – सुनना, सुना, सुन लिया, श्रवण करना। (इतरो सुण्यो ने सासू भी अड़गी। मो. वे. 54)

सुत – रुई से बना कच्चा धागा, पुत्र, सूत्र। (काचा सूत रा पालना बंध्या सरग दुबार। मा.लो. 332)

सुँतई – क्रि. – सूतने या रगड़ने की क्रिया या भाव।

सुत्तक – वि.– जन्म या मरण निमित्त अपवित्रता।

सुतन्तर – पु.– स्वतन्त्र।

सुतम करदी – क्रि.वि.– गजब कर दिया, खूब किया।

सुंतल्डी – स्त्री.– ऐसी लाल मिर्च जो अन्तिम रूप से पौधों से तोड़ी जाती है, कुछ लाल–कुछ हरापन लिये मिर्च।

सुंता – ना. – सोया, सोये, निद्रा, सो रहे, शयन कर रहे। (वासक तम सूता के जागो। मा. लो. 655)

सुतार – पु.– लकड़ी का काम करने वाला मिस्त्री या कारीगर, बढ़ई। (खेल म्हारी अम्बे माँय सुतार्या का मड़ माय। मा.लो. 663)

सुत्ता रईग्या – क्रि.वि.– मर गये, सोते–सोते ही जिनका प्राणान्त हो गया हो ऐसा व्यक्ति।

सुँ ताई वड़गी – क्रि.वि.– सूँत दिया गया, पीटा, मारा, पिटाई की, किसी बर्तन को सूँतना या साफ करना।

सुदरग्यो – वि.– सुधर गया, ठीक हो गया, अच्छा बन गया।

सुद–बुद – क्रि.वि.– होश में आना, सावधान होकर रहना, सुधि हो आना, बुद्धि को नियंत्रण में रखना।

सुदरसन – वि.– सुदर्शन, भगवान् विष्णु का सुदर्शन चक्र, शिव, विषम ज्वर के प्रयोग हेतु किया जाने वाला चूर्ण, देखने में सुन्दर, मनोरम।

सुद्दाँ – अव्य.– सहित, साथ में, समेत।

सुदामो – पु. – भगवान् कृष्ण का बाल सखा, मित्र , एक दरिद्र किन्तु विद्वान् ब्राह्मण, दुबले तथा निर्धन व्यक्ति के लिए रूढ़ शब्द।

सुदारो – क्रि.– सुधारने का काम करो, ठीक करो, सुधारना।

सुदे सेर – सारे नगर में, पूरे शहर में। (परमल आवे सुदे सेर नाना कावड़्या रे वीर। मा.लो. 640)

सुदी – स्त्री.– शुक्ल पक्ष, चंद्र मास का उजला पक्ष, वि.- सीधा या चित्त। (नव से उँदा ने नव से सुदा नव से बावन बीस। मा.लो. 546)

सुदो – क्रि.– ठीक, सीधा, चित्त।

सुद्दर – पु.– शूद्र, एक वर्ग।

सुध – स्त्री.– स्मृति, याद, सुधि।

सुधरई – स्त्री.– सुधारने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

सुधरम – वि.– अच्छे कर्म वाला बढ़िया, अच्छा, उत्तम कार्य।

सुधारक – पु.– सुधारने या ठीक करने वाला।

सुधारणो – क्रि.– बिगड़ी वस्तु का अच्छे रूप में लाना, ठीक होना, सुधार होना।

सुनई – क्रि.– सुनाई, सुनवाई होना, किसी की बात या आक्षेप आदि की सुनवाई

करना, सुनी–सुनाई बात।

सुन्दर – सुन्दर, रूपवान, खूबसूरत।
(सोला बरस की सुन्दरी जी कई जोबन में भरपूर। मा.लो. 540)

सुन्न – वि.- शून्य, अचेत, अचेतन, आकाश सुनसान, स्पन्दनहीन, निश्चेष्ट।

सुन्न-सिकर – वि.– शून्यरूपी शिखर, सर्वोच्च स्थान।

सुन्नो-सुनो – क्रि.– सूना-सूना, सुनसान,शान्त, स्वर्ण।
(सुन्ना को डोरो। मो.वे. 78)

सुनसान – वि.– एकान्त, वीरान, उजाड़, निर्जन, जन शून्य।

सुन्यो – क्रि.– सुना, सुन लिया, सुना गया, जानकारी मिली, मालूम पड़ा।

सुनवई – स्त्री.– सुनना।

सुनवई सक्या – क्रि.– सुना सके, सुनवा सके ।

सुन्नो – पु.– स्वर्ण, सोना।

सुनार – पु.– सोने-चाँदी का काम करना, सोने-चाँदी का आभूषण बनान।

सुपरत, सुपरद – क्रि.– सुपुर्द करना, जिम्मे करना, जिम्मेदारी सौंपना।

सुपातर – वि.– सुपात्र।

सुपरद करणो – क्रि.– सुपुर्द करना, सौंपना।

सपूत – वि.– सुपुत्र, योग्य या सर्वथा लायक या होनहार पुत्र।

सफेद – पु.– सफेद, श्वेत, स्वच्छ, पवित्र।

सुफेदी – स्त्री.– उज्ज्वलता, बिछौना, बिस्तर, रजाई।

सुफल वई – क्रि.– सफल होना, कार्य सिद्ध होना।

सुवाब – न. – स्वभाव, आदत।
(यो तो दूजो म्हारो भूलनो सुभाव गोरी म्हारी ये। मा.लो. 447)

सुबे – स्त्री.– सुबह, प्रातःकाल।

सुभाव – वि.– स्वभाव, आदत।

सुमड़ो – वि.– मुँह फुलाये और बिना बोले रहने वाला व्यक्ति, ढोलामारवण प्रेम कथा का एक खलनायक।

सुमरण – क्रि.– स्मरण करना।

सुमत – अच्छी।

सुम्मार – पु.– सोमवार।

सुमार – पु.– गिनती, हिसाब।

सुय्यो – पु.– सुईया, लोहे बना सुईया।

सुर – पु. सं.-देवता, सूर्य, स्वर, आवाज।

सुरई – स्त्री. -सुराही, ठण्डे पानी का बर्तन

सुरख – वि.– सुर्ख, लाल रंग।

सुरखी – स्त्री. फा.– सुर्ख, इमारत के काम में आने वाला गेरू या मसाला जो प्रायः पत्थर, ईंट पीसकर बनाया जाता है, वि. -लालिमायुक्त नशे की हालत में आँखों में सुर्खी या लालिमायुक्त डोरे होना,लाल स्याही, मस्ती या मस्त होना।

सुरंग – स्त्री.– जमीन को अन्दर से पोला करके बनाया गया भाग, गुफा, वि.– अच्छे रंग का, लाल रंग का (म्हारे हलदी रो रंग सुरंग निबजे मालवे)।

सुरंगलो – वि.– रंगदार, हरियाला, सतरंगी।

सुरंगी – वि.– सतरंगी, सात–सात रंगों से युक्त, इन्द्रधनुषी।

सुरज – पु.– सूर्य, सूरज।

सुरजो – पु.– सूर्य, सूरज।

सुरण – पु. जमीकंद, सूरन।

सुरत – पु.सं.– सुध, मुखाकृति।

सुरत–मूरत – स्त्री.–श्रुति–स्मृति,लगन, समाधि।

सुरताँ – स्त्री.– ध्यान, याद, वि.- चतुर, सयाना, सं.- सुर या देवता होने का भाव, दैवत्व।

सुरति – स्त्री. सं.– सम्भोग, स्मृति।

सुर–नर – पु.– देव मनुष्य।

सुरपनखाँ – स्त्री.- सूर्पणखा, रावण की बहिन।

सुरपेटी – स्त्री.– हारमोनियम।

सुरमई – स्त्री.वि.फा.– सुरमे के रंग का, हल्का

'सु'

नीला रंग, इस रंग में रंगा कपड़ा, घोड़ा।

सुरमो – वि. फा.– आँखों का अंजन, सुरमा।

सुरया – पु.– सूर्य।

सुरर – क्रि.– किसी विस्फोटक में अग्नि लगाने से उत्पन्न ध्वनि, पक्षी के उड़ने की ध्वनि, अपानवायु।

सुरल्या – पु.– कान का एक आभूषण।

सुरलोक – पु.– स्वर्ग, परलोक, देवलोक।

सुरसती – स्त्री.– सरस्वती, शारदा, ज्ञान की अधिष्ठात्री देवी।

सुरसरी – स्त्री.– गंगा नदी।

सुरसा – स्त्री.– सर्पो की देवी, सर्पों की माता, एक राक्षसी।

सुरसुंदरी – स्त्री.– अप्सरा, देव कन्या, देवांगना।

सुरा – स्त्री.– शराब, दारू।

सुराक – पु.– सुराख, गड्ढा, छेद, छिद्र।

सुराग – पु.– किसी अपराधी का पता लगाना, टोह लेना, वि.-उत्तम राग।

सुरागा – स्त्री.– नील गाय, सुरभि।

सुराई – स्त्री.– ठण्डे पानी का पात्र, सुराही।

सुरिया गा – स्त्री.– सूर्या गाय, देवताओं की गाय।

सुरीलो – वि.– मीठे स्वर वाला, मधुर स्वर लहरी, मीठी आवाज, मधुर ध्वनि।

सुरू करो – क्रि.– प्रारम्भ करो, शुरू करो, श्री गणेश मनाओ।

सुरू आद, सुरूवात – क्रि.– प्रारम्भ, शुरू, श्रीगणेश।

सुरेस – पु.– एक नाम, इन्द्र, सुरेश।

सुरो – पु.– लड़का, छुरा।

सुलगणो – क्रि.– जलना, सुलगना, लकड़ी या कण्डों का जल उठना।

सुलच्छन – वि.– अच्छे लक्षण, अच्छी आदतें या कर्म।

सुलझाणो – क्रि.– उलझन दूर करना, निपटारा, फैसला।

सुलटा – वि.– सीधे, चित्त।

सुलतानी कोस – पु.– टीपू सुल्तान का बनाया नाप, 2 मील = 1 कोस।

सुलनो – क्रि.– अनाज आदि में घुन लग जाना।

सुलफो – पु.– गाँजा, चरस आदि तमाखू की चिलम।

सुलबा सारू – क्रि.– बिगाड़ने के लिये, घुन लगाने हेतु।

सुलमा – ऊँचे-ऊँचे, बड़े-बड़े, विशाल। (धणी थारे सुलमा उड़े रे निसाण। मा.लो. 656)

सुले – स्त्री.– मेल–मिलाप, सुलह, समझौता, सन्धि।

सुल्या – एक कर्णाभूषण।

सुवरण – पु.– स्वर्ण, सोना।

सुवा – पु.– तोता, कीर।

सुवाग – स्त्री.– सौभाग्य, सौभाग्य सिन्दूर। (सुवाग बढ़तो। मा.लो. 605)

सुवागण – स्त्री.– सौभाग्यवती सधवा, सुहागिनें। (सुसराजी ए दीयो रे सुवाग सदा माई रंग रो वदावो। मा.लो. 450)

सुवागी – वि.– अच्छी लगी, सुहा गई, सोने को गलाने के लिये उपयोग में आने वाला सोहागा, एक रसायन।

सुवाड़ी – स्त्री.– सुला गई, लिटाना।

सुवाड़्या – क्रि.ब.व.– सुला गये, सुलाये गये।

सुवावड़ – स्त्री. – प्रसूता का समय, जच्चा, प्रसूता का विशेष खाद्य।

सुवाणी – स्त्री.– सुहावनी, सुहाने वाली, शोभा वाली, सुन्दर।

सुवाय – सुहाना, भाना, अच्छा लगना।

सुवावणो – सुहाना, अच्छा लगना, मन लगना, शोभित होना, सुन्दर लगना, सुहावना लगना।
(कणे पुऱ्या माणक चोक म्हारो आँगणों सुवावणो जी। मा.लो. 308)

सुवासड़ा – पु.– मालवा का एक कस्बा।

सुवास – वि.– खुशबू, सुगन्ध।

सुवाला – वि.– सुन्दर, मुलायम, नर्म, सुकोमल।

सुवासजी – सुहासिनी, सौभाग्यवती स्त्रियों को किसी मंगलकार्य के लिये भोजन पर आमंत्रित करना, बहन बेटी सौभाग्यवती स्त्री।

सुवो – न. –तोता, मिट्ठू, शुक। (सुबा कई वाणी बोले हो राम। मा. लो. 659)

सुशील – वि.– शीलवान, चरित्रवान, शान्तिप्रिय, सुन्दर।

सुशुम्ना, सुसुम्ना – स्त्री.–एक नाड़ी।

सुस्त – ढीला सुस्त, आरामतलबी।

सुस्तावणो – क्रि. –ठहरना, विश्राम करना, धीरज रखना, प्रतीक्षा करना।

सुसनेर – पु.– एक परगना जिसका पुराना नाम सुआनगरी है।

ससराजी – पु.–श्वसुरजी।

सुसराजी – न. –ससुर, पति व पत्नी के पिताजी।

सुँसाड़्यो – वि.–नाक व गले से सूँ–सूँ की आवाज निकालकर बोलने या बात करने वाला।

सुसिया – पु.– चन्द्रमा, शशि।

सुहाग – पु.–सौभाग्य, पति।

सुहाग कामण – वि.– सुहागिनों द्वारा गाये जाने वाले कामण गीत या वशीकरण सम्बन्धी गीत।

सुहाग्यो – वि.– अच्छा लगा।

सू

सूकड़ – सूखी, दुबली पतली, निर्बल, कमजोर, कृशांग, शरीर सूखने का रोग, नीरस। (इस सूकड़ के घर की ये चंदीया। मा. लो. 428)

सूकड़्यो – वि.– सुखा हुआ, दुबला–पतला, कृशकाय।

सूकड़ी, सूकली – स्त्री.– दुबली–पतली, कृशकाय।

सूको – वि.सं.–शुष्क, सूखा, दुबला, कमजोर।

सूखा बाग में – पु.–सुखे हुए।

सूखे – क्रि.– सूखता है।

सूखो रइग्यो – क्रि.वि.–सूखा रह गया, शुष्क रहा।

सूगन – पु.–शकुन।

सुँगऱ्यो, सुँगीऱ्यो – क्रि.– सूँघ रहा, सुगन्ध ले रहा।

सूगलो – क्रि.–घृणास्पद, गन्दा रहने वाला।

सूचना – पु. - सूचित करना, मालूम होना।

सूचना पत्तर – पु.– जिस पत्र पर सूचना लिखकर भेजी जावे, इश्तहार।

सूज – पु. –सूझ, समझ।

सूजणो – क्रि. -आघात, रोग आदि से किसी अंग का फूलना, सूझना या दिखाई देना।

सूजाक – पु.फा.–मूत्रेन्द्रिय का एक रोग जिसमें उसे अन्दर घाव हो जाता है।

सूजी – स्त्री.– दरदरा आटा।

सूझणो – स्त्री.– सूझने का भाव, अनोखी कल्पना उपजना, दिखना।

सूट – वि.– छूट, छुटकारा।

सूँठ – पु.–सूखा अदरक, सोंठ।

सूँड – पु.–हाथी की सूँड,बेंतादि समोरना, घास उखाड़ना।

सूणो – क्रि.वि.–सूना हो, सुनसान, सुनो।

सूत – पु.–सूत्र, धागा, डोरा, सारथि।

सूतक – पु.– घर में सन्तान होने या किसी के मरने पर परिवार वालों को लगने वाली अशौच।

सूतमाँ – वि.हि.– सूत, सूत से नापकर ठीक की हुई वस्तु के समान सुडौल या सीधी वस्तु, सूत ठीक करना।

सूत में – पु.–सीध में।

सूतली – स्त्री.–रस्सी, सुतली।

सूता – क्रि.– सो रहे, शयन कर रहे।

सूता नीदरा – क्रि.वि.– नींद में सोये हुए।

सूद – पु. फा.–ब्याज, लाभ, फायदा। (वऊ सूद भली हो वीरो नई ओलख्यो। मा.लो. 360)

सूद में – पु.–सीध में।

सूदो वईग्यो – क्रि.– ठीक हो गया, सीधा हो गया।

सूध – वि.– सीधा, शुद्ध।

सूधा – वि.– सीधा, सरल, चित्त।

सूना – शून्य, रिक्त, सूनापन, खाली स्थान, खालीपन, निर्जन स्थान।

सूपड़ो – वि. सं.– अनाज फटकने का पात्र, सूप।

सूबेदार – पु.फा.– सूबे या प्रान्त का प्रधान अधिकारी या शासक।

सूमड़ो – वि.– गुमसुम, चुपचाप, शान्त, कृपण।

सूर्य गरण – पृ.– सूर्यग्रहण।

सूयो – पु.– सुई या टाट या बोरे सीने का लोहे का सुइया।

सुर्या गाय – स्त्री.– सुरभि गाय, एक लोककथा का पात्र।

सूर – पु.सं.– सूर्य आक, मदार, विद्वान्, आचार्य, सूरदास।

सूरज – पु.– सूर्य, अन्धा, शूरवीर, वीर। (जदी सूरज जूवाराँ जी। मा.लो. 54)

सूरिज – पु.– सूर्य, बहादुर, राजा, बादशाह।

सूरजमुखी – स्त्री.– सूर्यमुखी, एक तिलहन।

सूरजो – पु.– सूर्य।

सूरत – स्त्री.–रूप,आकृति , मुखमण्डल, शकल, उपाय।
(केसर्या में सुरत हमारी वो नादान गजरा वाली। मा.लो. 705)

सूरमो – वि.– शूरवीर, योद्धा, बहादुर।

सूऱ्या मण्डली – स्त्री.– अँधों की फौज।

सूरया, सूऱ्यो – पु.– सूरदास।

सूरा तपसी – पु.– सूर्य जैसा तपस्वी।

सूरा पूरा – वीर और उदार, दानी, पूर्ण शूरवीर, दातार।

सूँग्यो – क्रि. – सूँघना, सूँघा।

सूँठ – ना. – सौंठ, सूखा हुआ अदरक।

सूल्ड़ो – पु.– सुअर, शूकर।

सूल्या – वि.– घुन लगा हुआ अनाज।

सूली – वि.– फाँसी का फन्दा, शूल।

सूलो – क्रि. – चलो।

सुवर – पु. सं.– शूकर।

सूँस – कुछ जैसा जलजीव।

सूँ-सूँ – वि.– सीत्कार, वायु का साँय–साँय करना।

सूँ–सूँ करे – क्रि.वि.– रूप ध्वनि, सूँ–सूँ की आवाज करना, क्रोध में आना, बच्चे का पेशाब करना।

से

सेक – पु.– अंग की सिकाई करना, सेकना।

सेकई गई – क्रि.– सिक गई, सिकना, गर्म होना।

सेंकड़ा – पु.– सौ का समूह, एक सौ।

सेंकड़ो – पु.वि.– एक सौ।

सेकणो – क्रि.– सिकाव करना, सेंकना, तपाना। (म्हारी नणदल सेके प ाँव। मा. लो. 567)

सेकी – क्रि.– सिकाई की, वि. शेखी, बड़प्पन, बड़ी–बड़ी बातें, आत्म प्रशंसा।

सेकी झाड़े – क्रि.वि.–आत्मप्रशंसा करे, बड़प्पन जतावे।

सेखी – वि.– शेखी, बढ़ाई, प्रशंसा के पुल बाँधना।

सेंगरी – स्त्री.– काली बटली, एक प्रकार की सब्जी।

सेज – स्त्री.सं.– शय्या, पलंग, बिस्तर, वि.- सहज, सरल।
(म्हाने सेज में मिल्या हनुमान महादेव परसन को। मा.लो. 683)

सेज में – क्रि.– सहज में, सस्ते में, सरलता में।

सेज पे चढ़ी – स्त्री.– पलंग पर पैर रखा, बिस्तर पर चढ़ी।

सेज पे पड़ी – स्त्री.– पलंग पर सो रही, रुग्ण हो रही।

सेजड़ली – शैय्या, सेज, पलंग बिछौना आदि।

सेजाँ – पु.– शय्या पर, बिस्तर पर।

सेंट – वि.– सुगन्धित द्रव्य।

सेठ – पु.सं.– श्रेष्ठी, बड़ा साहूकार, धनी, महाजन।

सेंडल – स्त्री.– पैर में पहनने की आधुनिक चप्पल, बंद चप्पल।

सेड़े–सेड़े – स्त्री.– मेड़ पर।

सेड़ो – पु.– सेड़ा, मेड़, हदबन्दी, किनारा, निटोड़ा, सीमा।

सेणकी – स्त्री.– एल्युमीनियम नामक धातु का एक पात्र, डेकची।

सेणकी चद्दर – स्त्री.– डेकची और चादरा।

सेणो – पु.– मिट्टी की बनी कोठी का मुँह जिससे अनाज बाहर निकाला जाता है।

सेत – वि.– सुफेद, पुल, बाँध।

सेंत – पु.– शहद, मधु।

सेतबंध – पु.– पुल, सेतुबन्ध।

सेतान – वि.– शैतान, नटखट, उपद्रवी, दुष्ट प्रकृति वाला।

सेतानो – पु.– बाज पक्षी।

सेंद – पु.– चोरों द्वारा बनाया गया गड्ढा, सेंध।

सेंद मारी – क्रि.– निशानेबाजी, चोरों ने खाद दिया, चोरी की।

सेंदो – परिचित, पीछे पड़ना।

सेंदो लूण – वि.– सेंधा नमक, एक क्षार।

सेंदुर – पु.– सिन्दुर, स्त्रियों का सौभाग्य चूर्ण।

सेंध – पु.– चोरों द्वारा दूसरे के घर में बनाया गया गड्ढा।

सेंधमारी – क्रि.– चोरी के लिए बनाया गया गड्ढा, निशानेबाजी

सेंधो लूण – पु.– सेंधा नमक, एक क्षार एक प्रकार का खनिज लवण।

सेन – पु.– बाज पक्षी, नाई जाति का एक गोत्र, संकेत, झाला, इशारा, चिह्न, निशान, पहिचान, शयन।

सेन बतई – क्रि.– इशारा किया, इशारे या संकेत से बतलाया।

सेन समाज – क्रि.– नाई समाज।

सेना – स्त्री.– फौज, पलटन, बहुत बड़ा दल या झुण्ड।

सेब – पु.– सेबफल, खारी सेब, नमकीन पदार्थ।

सेबड़ो – पु.–नाक का निटोड़ा।

सेम – स्त्री.– सेम की फली, एक सब्ज।

सेमरी – स्त्री.– चील नामक पक्षी, छोटा गिद्ध।

सेमलो – पु.– सेमल का वृक्ष जिसकी रुई बहुत सुन्दर व मुलायम होती है।

सेहज – वि.– सहज, आसानी से, सरलता से।

सेहन – पु.– घर के सामने का बरामदा।

सेर – पु.– शहर, एक तौल, घूमना, टहलना सोलह छटाँक का वजन, चार पाव, अस्सी तोले का पुराना तौल, हवाखोरी। (बनी का सेर में। मा.लो. 400)

सेरक्यो – पु.– गले का एक आभूषण।

सेरावण – पु.– प्रातःकाल का नाश्ता, सिरावन।

सेराँ वाली – स्त्री.– दुर्गा, भवानी, चंडिका, शेर के वाहन वाली।

सेरी – स्त्री.फा.– गली, वीथिका।

सेरो – पु.– सीरा, लप्सी, हल्की बरसात होना।

सेर्यां – घर के सामने का चौक। (वीरा रे तम तो वीजो सेर्यां माय रा साड़। मा.लो. 50)

सेल – पु.– भाला, बेटी के सेल, बरछा। स्त्री.– सेर, टहलना, घूमना, शैल, पहाड़, पानी का बहाव, प्रीति भोज।

सेलजा – स्त्री.– पार्वती, शैलजा।

सेर सुँवाली – मेवे की पुड़ी। (मेवा की तमारी सेर सुँवाली। मा. लो. 102)

सेलाब – पु.फा.– पानी की बाढ़।

सेला मिलण – वि.– आखिरी मिलन, अन्तिम बार मिलना, छेला अंतिम।

सेलावी र्‌यो – क्रि.– सहला रहा, धीमे-धीमे हाथ फेर रहा, फुसला रहा।

सेली फाग – क्रि.वि.- सेल या भाले से फाग खेलना, युद्ध करना, खून की होली खेलने का भाव।

सेली सिंगी – वि.– छोटे छोटे सींगों वाली सिंगोटी।

सेल्याँ – चोंचदार पाया खिड़कियाँ पाग के ऊपर बाँधी जाने वाली सलमे सितारे के तारों की पट्टी।
(मैं तो वारी हो सासूजी थाकी कूँख पे तमने जाया हो सेल्याँ वाला ई लाल। मा.लो. 461)

सेंवई – स्त्री.सं.– सेविका, सिवइयाँ।

सेव – वि. - सेवा सुश्रुषा, भगवान की सेवा पूजा, बेसन से बनी नमकीन सेव, सेवफल।

सेवक – पु.– सेवा करने वाला, चाकर, नौकर।

सेवड़ा – पु.– जैन साधु, श्वतेताम्बर का अनुयायी, बड़ी खारी सेव।

सेवन – पु.सं.– उपयोग में लाना, सेवा, नियमित औषधि का सेवन, उपभोग करना।

सेवड़ो – पु.– सिर पर या पास में दबाकर रखना, मुर्गी द्वारा अपने अण्डों को सेहना, अन्ततः।

सेस – पु.– शेष नाग।

सेंस – वि.– सहस्र, हजारों।

सेहरो – पु.– विवाह का मुकुट, मोर, सिर पर रुपयों को वार कर याचक, मंगल या ढोली को दातारी देना।

सेवराँ – पु.– प्रातःकाल का समय।

सेवरो – सेहरा (दूल्हे के सिर पर लगाया जाने वाला)।
(वर रा दादाजी वीणे फूल हो म्हारा राइवर जोगो सेवरो जी। मा.लो. 196)

सेवग – पु.– परिजन।

सेव्या – क्रि.– सेवा की, सेवन किया।
(दशरथ के घरे जनम लियो सेविया वनखण्ड जी। (मा.लो. 654)

सेवर्यो – सेवन करना, सेवन किया।
(वाड़ी रा भँवरा दाख पी पी ने रस सेवर्यो। (मा.लो. 177)

सेवो – कपड़े में टाँका लगाना, सिलाई सीवन, पानी का सोता।
(आपकी सेवा में खरी बात केवा में। मो.वे. 49)

सेसल्या – शेषनाग, सरकने वाले जानवर।
(एसल्या सेसल्या सब आया आया सिंगी ने स्याल। मा.लो.317)

सेवाँ – स्त्री.– सिवैया, सेंवई।

सेवे – क्रि.– सेवा करे, सेवन करे।

सेस – सेकड़ों, शेष, बकाया, शेष नाग।

सो

सो – वि.क्रि.– सो जाने का आदेश, सौभाग्यवती का संक्षिप्त रूप, शत या सौ की संख्या।

सों – वि.– सोंह, सौगन्ध।

सोइगी – स्त्री.– सो गई।

सोइ परवार – स्त्री.– समस्त परिवार।
(आप लापर बाप लापर लापर सोई परवार। मा.लो. 529)

सोइर्‌या – क्रि.– सो रहे।

सोइलूँ – क्रि.- सो लूँ, सोने का काम करूँ।

सोओ – क्रि.– सो जाओ, शयन करो।

सोक – वि.– शोक, सौतन, सौत।

सोकीन – वि.– शैकीन, शौक रखने वाला।

सो को – वि.– सौ कोस, दो सौ मील या लगभग सवा तीन सौ किलोमीटर।

सोखणो – क्रि.– शोषण करना, जल या पानी को सोख लिया जाना।

सोग – स्त्री.सं.– शोक, किसी के मरने पर होने वाला दुःख या रंज, मातम।

सोकड़ – सोत, सोतन, दूसरी पत्नी।
(सायब हरक वदावियो सुवा रे सोकड़

लियो मूँ मचकोड़। मा. लो. 712)

सोगड़ – सुन्दर, अच्छी तरह से गढ़ा हुआ।
सोगंद – स्त्री.– शपथ, सौगन्ध, कसम, प्रतिज्ञा।
सोगन – कृ. – शपथ, सौगन्ध, कसम ले करके।
सोच – चिन्ता, फिक्र, दुःख, पछतावा, रंज। (सोच करे मन में। मा.लो. 652)
सोज – वि.– ठीक, चंगा।
सोजन – क्रि. –शरीर के किसी अंग पर सूजन आ गया।
सोज वईग्यो – पु.– ठीक हो गया, अच्छा, भला या चंगा हो गया।
सोजा – क्रि.– सो जाओ, शयन करो।
सोजाक – क्रि.वि.– सूजाक बीमारी।
सोजो – वि.– सूजन, शोथ।
सोंटों – पु.– लकड़ी का डगा, लाठी, बड़ा लट्ठ।
सोंटों मेलद्यो – क्रि. – डंडा रख दिया, डंडा मार दिया।
सोड़ – पु.–चद्दर आदि दोहरा करना, मिलाना, समीप ।
(न्यारी न्यारी सोड़ गाड़र मारुजी । मा.लो. 541)
सोड़े आके रोरी – क्रि.वि.-पास में आकर रो रही।
साड़े – वि.– निकट, पास, समीप।
सोड़ो – पु.– कपड़ा धोने का सोडा, निकट, समीप, पास, साथ, संग, रक्षा।
सोणचड़ी – स्त्री.– एक प्रकार की सुनहरी चिड़िया, पक्षी, नट जाति की स्त्री. नटी, स्वर्ण पंखी चिड़िया।
सोणो – क्रि.– सोना, शयन करना, नींद निकालना।
सोत – स्त्री.– सौतन, सपत्नी, द्विपत्नी।
सोती बगताँ – क्रि.वि.– सोते समय।
सोतेलो – पु.– सौत से उत्पन्न सन्तान।
सोतो – पु.– सोता हुआ, सोया हुआ, झरना, सोता।
सोतो छोड़ीगी – स्त्री. - सोया हुआ छोड़ गई।
सोदर – पु.– सगा भाई।
सोदबा – क्रि.– ढूँढने या खोजने के लिए, तलाशने हेतु।
सोदा – क्रि.– ढूँढा, पु. – खरीदी हुई सामग्री, क्रय-विक्रय का तय।
सोदागर – पु.– व्यापारी।
सोदाबाजी – स्त्री. – ठहराव, लेनदेन या व्यवहार के सम्बन्ध में की जाने वाली बातचीत।
सोदी – स्त्री.– ढूँढी तलाश की।
सोंदी सोंदी – क्रि. – सोंधी-सोंधी खुशबू या सुगन्ध, सुगन्धित, पहली बरसात
सोदो – पु.अ.– बाजार से लाया हुआ सौदा, सामान या सामग्री, क्रि.- ढूँढो, तलाश करो।
(काँई काँई सोदा लायो म्हारा राज कूँजड़ो आयो। मा.लो. 440)
सोदो पटग्यो – क्रि.– काम बन गया।
सोधण – क्रि.– ढूँढने के लिए।
सोंधण – स्त्री.– सोंधिया नारी, एक ग्राम।
सोधणो – क्रि.– ढूँढना तलाश करना, शुद्ध करना, शुद्धता की जाँच करना, परीक्षा लेना।
सोंधनी – स्त्री.– सोंधिया स्त्री।
सोंध्या, सोधिया – पु.– सोंधिया जाति का मनुष्य।
सोनचड़ी – स्त्री.– स्वर्ण पंखी चिड़िया, सुनहरी चिड़िया या पक्षी।
सोना – पु.– स्वर्ण।
(सोना रो सूरज उगो। मा.लो. 45)
सोनार – पु.– सुनार जाति का मनुष्य।
सोनी – पु.-सुनारी का काम करने वाला।
सोनो – पु.– स्वर्ण सोना, क्रि.- शयन करना।
सोंप – पु.– सोंफ, एक मसाला, मुख शुद्धि

की पाचक वस्तु।

सोंपणो – क्रि.– सौपना, सुपुर्द करना।

सोंप्यो – क्रि. – सोंप दिया, सुपुर्द किया।

सोंफ – स्त्री.– सौंपी, एक पौधा जिसके बीज दवा और मसाले के काम आते हैं।

सोब – वि.– शोभा, कान्ति, दीप्ति। (म्हारा लीप्या बीना केसी थारी सोब तो करो म्हारी कुँवासी आरती जी। मा.लो.207)

सोबत – स्त्री.– संगति, सोहबत, साथ, संगत, प्रसंग, संभोग, संसर्ग। (बोल वो आंबारी कोयल म्हारा पीया की सोबत होय। मा.लो. 445)

सोबा – क्रि.– सोने के लिए, शयन करने हेतु, वि. – शोभा, सुन्दरता।

सोबाग – स्त्री.– सौभाग्य।

सोबा होसी – स्त्री.– शोभा होगी।

सोबो पड़्यो – क्रि.– सोने का समय हो गया, काफी रात बीत गई।

सोभाग – स्त्री.– सौभाग्य, खुश किस्मत, अहोभाग्य। (सोभाग रेणा सातंग बेठा सो जणा जे बीच बेठा सूरजी चन्दरमाजी सोभाग रेणा। मा.लो. 333)

सोभागवती – स्त्री.– जिसका पति जीवित हो, सुहागिन।

सोम – पु.–वह लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋषि करते थे, सोमरस, चन्द्रमा, अमृत, सोमवार।

सोम्मार – पु.– सोमवार।

सोम्मारे – पु.– सोमवार को।

सोमेती – स्त्री.– सोमवती अमावस्या।

सोमेसर – पु.–सोमनाथ, महादेव, शंकर, शिव, सोमेश्वर महादेव।

सोयटा – चोपड़, तोता, पासे। (ढोला ने मारुणी खेले सोयटा जी (म्हारा राज। मा.लो. 398)

सोयरा – पु.– श्वसुर, ससुर।

सोया – क्रि.– सो गये।

सोयाबीन – एक तिलहन।

सोरनो – क्रि.– इकट्ठा करना, समेटना, एकत्र करना, जच्चा के गीत। (मोती वेराणा चन्दन चोक में हो मारुजी म्हारा से सोर्या नी जाय। मा. लो. 546)

सोरठ – पु.–गुजरात और दक्षिणी काठियावाड़ का प्राचीन नाम, जिस की राजधानी सूरत है, दोहे में प्रचलित बीजा सोरठ की प्रणय कथा, मालवा में प्रचलित सोरठ कुँवरी नामक प्रेम कथा जिसे सोरठराग में गाया जाता है।

सोरम – वि.– सुगन्ध, यश, कीर्ति, उत्तर प्रदेश का प्रसिद्ध शहर व घाट जहाँ प्रवाहित गंगाजी में यात्री पिण्डदान व श्राद्ध करते हैं।

सोराणा – क्रि. – इकट्ठा कर चुके, एकत्र कर चुके।

सोरा सोरी – स्त्री.– छोरा, छोरी, लड़का-लड़की, इकट्ठा करना।

सोरा समेटी – क्रि.वि.– किसी चोर, उचक्के या ऐसे ही व्यक्ति के द्वारा किसी के घर की सभी वस्तुएँ इकट्ठी करके ले भागना, एकत्र करके भाग जाना, सब कुछ समेट लेना।

सोरो – वि.– हल्का, सामान्य, शांत, सुखी (जीव सोरो नी रे), क्रि.– इकट्ठा को, एकत्र करो, पु.– लड़का, छोरा। (सनमन सोरा सात कचोरा। मा. लो. 605)

सोल – पु.– जूते का तला।

सोलंकी – पु. – क्षत्रियों की एक शाखा।

सोलमो – वि. – सुन्दर, सोलहवाँ।

सोला – वि.– षोडश, सोलह।

सोला सणगार, सोलई सिनगार –वि.– षोडश श्रृंगार, स्त्रियों द्वारा अपने शरीर पर सोलह श्रृंगार धारण किया जाना।

सोवणो – क्रि. – सोना, शयन करना।

सोवत – वि.– शोभा देना, क्रि. सोते हुए। (गजेन्द्र सम इन्द्र सोवती गले मोतीयन की मालरे। मा.लो. 491)

सोवन मुरकी – सोने की मुर्की जो पुरुषों के कान में पहनी जाती है। (पाँच रुपैया ने पान रा बिड़ला सोवन मुरकी काने रे। मा.ला. 44)

सोवन सिखर – आध्यात्मिक पर्वत की ऊँची चोटी, स्वर्ण शिखर।

सोवा गयो – क्रि.– सोने या शयन करने के लिए गया।

सोवेट्या – पु. – सुआ, तोता, शुक, कीर।

स्याणी – सयानी, समझदार। (थारा सुसराजी बोल्या वऊ स्याणी गुल गेंदा बनी मती जाव जमना पाणी। मा.लो. 225)

ह

ह – मालवी वर्णमाला का अन्तिम वर्ण।

हँ – अव्यय – हाँ , हूँ।

हई – स्त्री.क्रि.– पकड़ी।

हईनी – अव्य.– नहीं है।

हऊ – वि.– अच्छा, ठीक, उत्तम, सास, सासू।

हउतंग – बिल्कुल, सर्वथा।

हऊ होरा – पु.– सास ससुर।

हक – वि. – अधिकार, कब्जा।

हंक – क्रि.– हाँकना, जोतना।

हँकई – क्रि.स्त्री.– हाँकने की क्रिया, मजदूरी।

हकर कंद – पु.– शकरकंद, जमींकन्द, रतालू।

हक्क – वि.– हक, अधिकार।

हक्को बक्को – क्रि.वि.– भोंचक होना, चकित होना, चोंकना, घबरा जाना।

हकदार – वि.– अधिकारी, मालिक, प्रभु, स्वामी।

हकमत – स्त्री.– शासन, अधिकार।

हकला – वि.– हकलाकर बोलनेवाला, रुक-रुक कर बात करने वाला, बोबड़्या।

हकलाणो – तुतलाना।

हकवा – वि.– अफवाह, भ्रान्ति, बिना सिर पैर की बातें उड़ाना।

हँकवणो – क्रि. – हँकवाना, खेत जुतवाना।

हँकवायो – क्रि. – खेत जुतवाना, हाँका गया, जोता गया।

हँकानो – क्रि.– हाँकना, पुकारना, हँकवाना, निकलवाना।

हँकायो – क्रि.– हँकवाया, गैराया,चलाया, निकलवाया, घेराया।

हँकार – स्त्री.– जोर से बुलाना।

हँकारणो – पु.– पुकार, टेरना, हाँकना, हलकारना, गाड़ी चलाना, घोड़ा दौड़ाना, पुकारना।

हँकालने पेभी – क्रि.– दूर भगाने पर भी, हँकारने पर भी , हटाने पर भी।

हकीकत – वि.– वास्तविकता, सचाई, वस्तु स्थिति।

हकीम – पु.– वैद्य, विद्वान्, पंडित, यूनानी रीति से चिकित्सा करने वाला चिकित्सक।

हँकुचाणो – क्रि.– शर्माना, संकोच करना।

हंकोच – वि.– संकोच।

हगई – स्त्री.– सगाई, विवाह के पहले की रस्म, वाग्दान।

हँगई – क्रि.– टट्टी या शौच।

हंगचई – स्त्री.– शर्माई, लज्जित हुई, इकट्ठा करके।

हंगचे – पु.– संग्रह करके, इकट्ठा, बचत, संचय या बचाव करे।
हंगणो – क्रि.– हगना, शौच जाना।
हगत – पु.– अपने आप, स्वयं की इच्छा से।
हग देणो – क्रि.– अनाज का ढेर करना।
हग, हगा – वि.– ढेर, राला।
हगनो मूतनो – क्रि.–टट्टी पेशाब करना।
हगरा – वि.– सब, सम्पूर्ण, पूरा।
हगरो – वि.स.व.– सम्पूर्ण, पूरा, सारा।
हगल ग्यो – क्रि.– जल उठा, सुलग गया।
हँगले मूतले – क्रि.– टट्टी पेशाब कर लेवे।
हगली – स्त्री.– सब की सब, सभी, क्रि. -जली जल गई।
हगाई – स्त्री.– सगाई, सम्बन्ध, विवाह पूर्व की एक रस्म।
हंगाद्यो – क्रि.– टट्टी बिठा लाया, शौच हो आया।
हंगामो – वि.– शोरगुल, हंगामा, लड़ाई झगड़ा।
हंगायके – कृ.– टट्टी बिठा करके।
हंगार – पु.– चिड़ियों आदि पक्षियों की बीट, विष्टा, मल।
हचको – पु.– हचकोला, धचका, दचका।
हंचणो – क्रि.– इकट्ठा या संग्रह करना, संचित करना।
हंचरे – पु.– इकट्ठा होवे, बड़ा होवे, बढ़े।
हंची – स्त्री.– इशारा, संकेत।
हंची हंची – स्त्री.– आहट सुनकर, इशारे या संकेत के आधार पर।
हंचे – क्रि.– संग्रह करे, बचत करे, बचावे।
हज़म – वि.– हाजमा, पचाना, पचा लेना।
हजम करणो – पु.– पचा जाना, हजम कर लेना, हड़प लेना।
हज्जाम – पु.– हजामत करने वाला नाई।
हजाबी – हजारी, हजारी गुल का फूल, गेंदा, हजार की संख्या, अनोखा। (पेंचाँ भोत हजाबी नवल बना लाला भोत हजाबी। मा.लो. 414)
हजामत – क्रि.– बाल बनवाना, बालों की कटिंग करवाना।
हज्जार, हजार – वि.– दस सौ, सहस्र, एक हजार ब.व. हजारों, सहस्रों।
हजारी – एक पुष्प गेंदा, लोकगीतों का नायक, एक हजार, हजार वर्ष की उम्र, आशीर्वादात्मक शब्द, सहस्र, हजार, हाथ वाला (परमेश्वर)। (लगनाँ तो जोसी रा लावजे लगनाँ री लिखत हजारी जी बना। मा.लो. 403)
हजार्‌यो – वि.– दोगला, वर्ण संकर, कई बातें बनाने वाला।
हँजवारी – स्त्री.– झाड़न, बुहारी।
हजारों – वि.- सहस्रों, हजारों, अनगिनत।
हँजा – स्त्री.– संध्या, संजा, संज्या, सँझा वाई, संध्या का समय, शाम की वेला।
हँजावलनार – स्त्री.– संजावल नामक स्त्री, ग्यारस माता नामक गीतकथा की नायिका।
हजूर – पु.– बादशाह या बड़े लोगों के लिये संबोधन का शब्द।
हजूरी – स्त्री.– सेवक द्वारा बड़े लोगों की सेवकाई करना, हाँजी जी, चापलूसी या खुशामद करना।
हट – पु.– हटना, दूर चले जाना, निश्चित स्थान को छोड़ देना, वि. हठ करना।
हटकाणो – रोकना, मना करना, मन को वश में रखना, हटाना, रुकना, अटकना। (म्हारे हिवड़े हरस हटकाणी। मा.लो. 527)
हटणो – क्रि.– हटना, दूर खिसकना, चले जाना।
हटाणो – क्रि.– हटाना, खिसकाना, दूर करना।
हटीलो – वि.– हठ करने वाला, जिद्दी, दृढ़ प्रतिज्ञ, दुराग्रही।
हटीलो बनड़ो – पु.- हठ करने वाला, बनड़ा, बना या दूल्हा।

(काकाजी से मिलवा दो रे हटीला बनड़ा। मा.लो. 423)

हट्टो कट्टो – वि.-हृष्ट-पुष्ट, बलवान, ताकतवर।

हटे पड़ग्या – क्रि.– जिद्दी हो गये, हठीले हो गये, हठ में पड़ गये।

हठ – पु. – अड़, टेक, जिद।

हठ पड़ग्यो – पु.– हठीला हो गया।

हठ धरमी – पु.– अपने मत की हठ करने वाला।

हठी – पु.– हठ करने वाला।

हठीलो – पु.– हठ करने वाला, जिद्दी, अड़ियल, दुराग्रही।

हड़कणो – वि.– पगला, पागलपन सवार होना।

हड़ूकणो – क्रि.– उल्टी, कै या वमन करना।

हड़क्यो – पु.वि.– जिसको हड़काव या पागलपन सवार हुआ हो।

हड़कल्यो – वि.– एकसरे शरीर का, लम्बा एवं दुबला पतला व्यक्ति, कमजोर, अशक्त।

हड़णो – क्रि.– सड़ना, विकृत होना, गलना, बिगड़ना।

हड़क – स्त्री.– पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए व्याकुलता।

हड़कणो – स्त्री.– पागल होना, कुत्ते के पागलपन का जोर होना।

हड़काणो – डरा - धमका देना।

हड़ग्या, हड़ग्यो – क्रि.वि.– सड़ गया, बिगड़ गया।

हड़ताल – स्त्री.सं.– दुःख, विरोध या असन्तोष प्रकट करने के लिए कर्मचारियों द्वारा कार्य बन्द करवा देना, भूख हड़ताल करना, हरतालिका तीज के दिन उपवास करना।

हड़प – वि.– खाया या निगला हुआ, लेकर छिपाया हुआ, गायब किया हुआ, ले लेना।

हड़पणो – क्रि.– मुँह में रखकर निगल जाना, गायब करना, डकार जाना।

हड़मत, हणमत – पु.– हनुमानजी, बजरंगबली।

(हाँ वो हार्या हड़मतजी रा भीम। मा.लो. 534)

हड़बड़ी – स्त्री. – जल्दी, उतावली, शीघ्रता, जल्दी तथा उतावलेपन के कारण घबराहट।

हड़माची – बदनाम औरत।

(म्हारी हड़माची ये थने रावले बुलावे। मा.लो.163)

हड़्या पड़्या – वि.– सामान्य से सड़े गले, भले बुरे।

हड़ा हड़ हूँते – क्रि.वि.– सड़ सड़ की आवाज के साथ, चाबुक या लकड़ी से पीटना, बेंत से सड़ासड़ मारना।

हंडिया – स्त्री.– हाँडी, हँडी, मिट्टी का बरतन।

हड़ी राँड – स्त्री. वि.– गन्दी औरत, औरत को एक गाली।

हड़ी राँडको – क्रि.वि.– गन्दी औरत से उत्पन्न और स्वयं भी गन्दा रहने वाला, एक गाली।

हंडी – स्त्री. –मिट्टी, धातु या काच से बनी हुई हँडी या बरतन।

हड्डी – स्त्री.– हड्डियाँ, अस्थियाँ।

हंडे – अव्यय– से, साथ, सम्पर्क।

हंडेगी – क्रि.स्त्री.– साथ में गई।

हड़े – क्रि.– सड़े।

हड़ो – पु.– सड़ा, बागुर, फसल की सुरक्षा हेतु लगाई जाने वाली काँटों की बाड़ या बागुड़।

हंडो – पु. – गगरा, हण्डा, पानी रखने का धातु का बना पात्र, साथ, साथी, दोनों हाथ मुँह में डालते हुए, क्षमा माँगते हुए, किसी की शरण में जाना।

(आड़या वड़ग्यो ऊकारयो।)

हण – पु.– सन, सनई, जूट।

हण चूरो – पु.– सन की फसल बोकर उसी खेत में मिलाना ताकि हरी खाद मिलने से खेत में उर्वरा शक्ति बढ़ जाए, एक प्रकार का क्षार जिसके पानी से मूंग,

चना आदि के पापड़ बनाये जाते हैं, सनचूर, संचोरा।

हण हूतन – पु.– सन और सूत का।

हतई – गपसप मारने का स्थान, जहाँ पंच बैठकर निर्णय लेते हैं, अमल कसूम्बा लेते हैं, चौपाल।
(हतई बेसन्ता दाऊजी बोल्या। (मा. लो. 660)

हतकड़ी बेड़ी – स्त्री.– हाथ की हथकड़ी और पाँव की बेड़ी या कड़ी।

हतकंडो – वि. – हाथ की चालाकी, चालबाजी, हतकंडा।

हत्तीड़ो – पु.– हाथी, गज, हस्ती नक्षत्र।

हत्ती – पु.– हाथी, सती।
(तमारा हत्ती का कऊं देखणा।)

हत्ती पड़े – किसी के ऊपर मर मिटना।

हत्ते – पु.– हाथ में।

हत्ते चड़ीग्यो – क्रि.वि.– हाथ में आ गया, निगाह में आ गया।

हतईर्‌यो – क्रि.वि.– सता रहा, परेशान कर रहा।

हत्या – स्त्री. – वध, खून, कत्ल।

हत्यारो – पु.– हत्या करने वाला, मार डालने वाला।

हतलेवो – पु.– विवाह में वर वधू के हाथों को मिलाना।
(रुमाल ढुढ़न बाई गया वाँके हतेली में दीवलो जोयो। मा.लो. 527)

हतेल्यो – पाणिग्रहण।

हतवेड़ो – किसी भी आने जाने वाले के साथ आने जाने वाला, साथ हो जाने वाला।

हतार – पु.– सुतार, बढ़ई।

हताल्ड़ो – पु.– सुतार के लिये हेय शब्द, एक गाली।

हतावे – क्रि.– सताता है, परेशान करता है, दुःख देता है, तकलीफ देता है।

हतास – वि.– हताश, निराशा, मन की आशा पूरी न होना।

हत्तो – पु.– हत्ता, हाथ, कुर्सी, फावड़ा आदि का हत्ता।

हतेली – स्त्री.– हाथ की हथेली, हथोड़ी।

हतोड़ा – पु.– हथोड़ा, लोहा पीटने का बड़ा औजार।

हत्थी – न.– हाथी, हस्ती, गज, शतरंज की एक गोट।
(सुई का नाका से हत्थी निकाल द्यो। मो.वे. 80)

हथकड़ी बेड़ी – स्त्री.– हाथ की हथकड़ी और पाँव की कड़ी।

हथणी – स्त्री.– हथिनी, मुख्य द्वार के आसपास की बैठक, कपड़े आदि टाँगने की भित्ति उपकरण।

हथफूल – पु.– हथेली का आभूषण, एक गहना।

हथ्याणो – क्रि.– हथियाना, हाथ में लेना, अपने हाथ में करना, धोखे से लेना।

हथ्यार – पु.– हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला शस्त्र, तलवार, बरछी आदि।

हथलवा, हथलेवा – पु.– विवाह के अवसर पर वर का अपने हाथों में कन्या का हाथ ग्रहण करने की रीति, वरवधू को दी जाने वाली भेंट की वस्तुएँ, पाणिग्रहण।
(जणी हथलैवे हाथ मिलाया। मो. वे. 36)

हथेरी में छाला पाड़णो– बहुत परेशान करना, तकलीफ देना, दुःख देना, दुःखी होना।

हथेली – करतल।

हथोड़ी – पु. – वह औजार जिससे कारीगर कोई चीज जोड़ते–पीटते और ठोकते या गढ़ते हैं, छोटा हथोड़ा।

हद करनो – कमाल करना, आश्चर्य हो ऐसा करना, जो कार्य नहीं किया जा सके उसको करना, भलाई या बुराई की चरम सीमा।

हदकणो – हदकना, धक्का लगना, चोंट लगना,

विचलित होना, परेशान होना, कुछ नहीं सूझना।

हद्द – पु.–सीमारेखा, सीमांकन, कॉंकड़।

हद्द कर दी – क्रि.वि.– सीमा के पार हो गया, खूब किया।

हद्द भार – पु.– सीमा के बाहर, सीमा से हटकर।

हद्दी – वि.– शीघ्र, त्वरित, जल्दी।

हदर ग्यो – क्रि.– सुधर गया, ठीक हो गया, आदतों में सुधार कर लिया।

हदरणो – क्रि.वि.– सुधरना, ठीक होना, सुधारना।

हदरे – क्रि.– सुधरो, सुधर जाओ, अपनी सीमा में रहो।

हंद – वि.– सीध, सीधा।

हंद मार – वि.– सीधे सीध, ठीक अपने नाक की सीध में।

हंद पर – क्रि.वि.– सीध पर, सीध आने पर, समानान्तर।

हदस – वि.– भय, घबराहट।

हदी हदी – क्रि.वि.– जल्दी जल्दी।

हद्दी हद्दी – क्रि.वि.– जल्दी जल्दी।

हंदे – पु. – साथ, सीध में ।

हंदो – वि.– जोड़, सन्धि, छेटी, दूरी, खंदक, खाई।

हधर ग्यो – क्रि.– सुधर गया, ठीक हो गया।

हनमत – पु.–हनुमान, बजरंगबली, बालाजी।

हनागत – आवाज, ध्वनि या आहट, मालूम नहीं पड़ना, किसी भी चीज की आवाज नहीं आना, चलने फिरने की आवाज नहीं आना, कोई भी बात मालूम न होने देना।

हनागत पड़नी – मालूम पड़नी, किसी के आने की आहट होना, किसी बात का मालूम होना।

हन्याण – वि.– निशान, चिह्न।

हन्याणी – स्त्री.– निशानी, स्मृति चिह्न, यादगार।

हनार – पु.– सुनार।

'ह '

हनारण – स्त्री.– सुनार की स्त्री, सुनारण।

हनारी – पु.– सोने चाँदी आदि धातुओं के विभिन्न प्रकार के गहने बनाने का काम या उसकी मजदूरी।

हनु – स्त्री.– दाढ़ की हड्डी, जबड़ा, ठोड़ी, चिबुक।

हनेहन – चुपचाप काम करते रहना, अपने मन से काम करते रहना।

हंपई गयो – क्रि.– छिप गया, दुबक गया।

हंपड़ऊँ – क्रि.– स्नान करवाऊँ।

हपड़-झपड़ – क्रि.वि.– कपड़े फड़काते हुए चलना, उतावलापन।

हपड़नो – नहाना, स्नान करना, नहा लेना।

हंप्यो – क्रि.– छिप गया, दुबक गया।

हंपड़ायो – क्रि.– स्नान करवाया।

हंपड़ावाँ – क्रि.– स्नान करवावें , नहाने का काम करें।

हपतो – पु.फा.– सप्ताह, सात दिन।

हपसी – वि.– अधिक खाने वाला, भूख न होने पर भी खाने वाला।

हंपाणो – क्रि. – छिपना, दुबकना, गायब होना।

हंपातो फरे – क्रि.वि. – छिपता फिरे, इधर-उधर दुबकता फिरे।

हंपावणो – पु.– छिपाना, गुप्त रखना।

हफर – पु.– सफर, यात्रा।

हफसी – वि.– अधिक खाने वाला।

हब – अव्य.– सब, सभी।

हबका – पु.– सबका।

हबड़को – क्रि.– पतले पेय को सुड़क करके खाना, सबड़ना।

हबरा – पु.– सबके सब, सभी।

हबरो – पु.– सब, सभी।

हवस – वि.– इच्छा, वासना।

हबसी – पु.– अधिक खाने वाला।

हबी – अव्य.– सभी, सबके सब।

हमे – सर्व. ब.व.– हमारे।

हंमज – वि.– समझ, बुद्धि, ज्ञान।

हमजदार – वि.–बुद्धिमान, समझदार, जानकार।

हमजणो – वि.– सयाना, चतुर, ज्ञानी।

हमजाड़नो – क्रि.– समझाना।

हमजाड़्यो – क्रि.– समझा दिया।

हमजीली – स्त्री.– समझ ली गई, समझ लिया, जान लिया।

हमजो – पु.– समझा, समझ गया।

हमजोली – पु.– साथी, संगी, हम उम्र, समान उम्र के, मित्र।

हमजावी न्या – पु.– समझा रहे, समझाने का प्रयास कर रहे।

हमटी – अधिक (समष्टि)।

हमदरद – पु.– सहानुभूति रखने वाला।

हमदरदी – वि.– सहानुभूति, हमदर्दी।

हमन – सर्व.– हमने।

हमरत – पु.– अमृत।

हमल – पु.अ.– गर्भ।

हमल न्यो – क्रि.– गर्भ रहा, गर्भ ठहरा।

हमलाणी – पु.– सुपुर्द की।

हम्माल – पु. बोझा ढोने वाला।

हम्माली – स्त्री. –बोझा ढोने का पारिश्रमिक।

हमीणा, हमीणो – अव्य.– समान, बराबर।

हमु – सर्व.– हम।

हमेरो – सर्व.– हमारा, विवाह में वर–वधू पक्ष का मिलन।

हमेस – अव्य.– हमेशा, सदा, सदैव, सर्वथा।

हमुँ भी – सर्व.– हमको।

हमुँतो – सर्व.– हम तो।

हमीं – सर्व.– हम भी।

हमोवणो – अधिक गर्म पानी में आवश्यकतानुसार ठण्डा पानी मिलाना, गुनगुना करना।

हया – वि.– शर्म, लज्जा, संकोच।

ह्यो – क्रि. – हुआ, घटित हुआ।

हव्या – क्रि.– घटित हो चुका।

हर – पु.– महादेव, शंकर, शिव।

हरक – पु.वि.– हर्ष, प्रसन्नता, आनन्द। (सुसराजी हरक वदावीया सासूजी ए लियो खोल्या झेल। मा.लो. 471)

हरकनो – सरक, शोभा, खिसकना, हर्ष, प्रसन्नता, खुशी, उत्सव। (हिवड़ो हरक्या सुसराजी को। मो. वे. 35)

हरकल्यो – क्रि.– सरक गया, खिसक गया, चला गया।

हरकी गयो – क्रि.– दूर हट गया, चला गया, खिसक गया।

हरकण्यो – क्रि.– सरककर या घिसटकर चलने वाला बालक।

हरकत – स्त्री.– हिलना–डुलना, गति, चेष्टा।

हरकणो – क्रि.– दूर हटना, खिसकना, सरकना, हटा दिया।

हरकाई द्यो – क्रि. – खिसका दिया, सरका दिया, हटा दिया।

हरकारो – पु.– डाकिया, चिट्ठी बाँटने वाला।

हरकावे – क्रि.– खिसकावे, दूर करे, प्रसन्न होवे।

हरकाहेली – अधिक निकटता।

हरकी – स्त्री.– प्रसन्न हुई, क्रि. -खिसकी, दूर हटी, स्वयं की।

हरकूबई – स्त्री.– लोक कथा की पात्र।

हरक्यो – खुशी, प्रसन्न। (म्हारो हरक्यो सोई परवार।)

हरख – पु.वि.– हर्ष, प्रसन्नता।

हरखणो – क्रि.– प्रसन्न होना, खुश होना।

हरखाणो – क्रि.– प्रसन्न हुआ।

हरग – पु.– स्वर्ग।

हरगवास – पु.– स्वर्गवास, मृत्यु, मौत।

हरग हामूँ – क्रि.वि.– स्वर्ग के सामने।

हरज – पु.– हर्ज, नुकसान, काम में पड़ने वाली बाधा, अड़चन, हानि।

हरजई – स्त्री.– व्यर्थ घूमने वाली, आवारा, व्याभिचारिणी, कुलटा।

हरजाई – स्त्री.– दुश्चरित्र स्त्री, हर किसी से देह सम्बन्ध स्थापित करने वाली।

हरजणो – पु.– सुरजना का पेड़ या उसकी फलियाँ, सिद्ध होना, पूरा होना, कम न पड़ना।

हरजानो – वि.फा.– किसी का हर्ज, हानि या नुकसान होने पर उसके ब दले चुकाया धन, क्षतिमूल्य, प्रतिकर, क्षतिपूर्ति।

हरण – पु.– मृग, हिरण, क्रि. – हरण करना, चुराकर या हरकर ले जाना, छीनना, लूटना।

हरणो – क्रि.– हरना, हरण करना, छीनना, हरकर ले जाना।

हरत – स्त्री. – स्मृति, याद।

हरतंई लेग्यो – क्रि.वि.– हरण करते ही ले गया।

हरतन – क्रि.वि.– सूतना, किसी भी कार्य को करने के पूर्व उसके लिये किया जाने वाला प्रयास।

हरतानो – पु.– श्येन, बाज, गिद्ध।

हरता फरता – घूमते फिरते, चलते फिरते। (हरता फरता जेठजी बोल्या।)

हरतो व्या – क्रि.वि.– हरण करता हुआ या ले जाता हुआ।

हरद – स्त्री.– सर्दी , ठण्ड, हल्दी।

हरद्वार – पु.– हरिद्वार, तीर्थ स्थान।

हरदा माँय – पु.– हृदय के भीतर, हृदय में।

हरदो – पु.– हृदय, छाती, बुद्धि।

हरधंगी – स्त्री.– अर्द्धांगिनी, स्त्री, पत्नी।

हरन – क्रि.– हटना, चुराकर ले जाना। पु. – हरिण।

हरन्या दे कँवरी – लोककथा हरन्यादे कुँवरी की नायिका।

हरनो, हरन्यो – क्रि.– हरण करना, चुराना, पु.– हरिण।

हरपी गयो – क्रि.वि.– हड़प गया, हजम कर गया, डकार गया।

हरबड़ी – क्रि.वि.– हड़बड़ाना, जल्दीबाजी करना।

हरम – स्त्री.– जनानखाना, अन्तःपुर, रनिवास, वि.- शर्म, लज्जा, हया।

हरमाणो – शर्माना, लज्जित होना।

हऱ्या भऱ्या – क्रि.वि.– हरा–भरा, हरियाली से परिपूर्ण।

हऱ्याली – स्त्री.– हरियाली।

हऱ्यो – क्रि.– हरा, हरण किया, चुराया।

हरवा – वि.स्त्री.– हरवी, जो भारी न हो, हल्का, मीठा, गले का हार, गले की मिठास। (हरवा बोले बोल)।

हरस गंडियो – वि.– दूसरों को देखकर पिघलने वाला, मन में अफलित इच्छा रखने वाला, हर्षोन्मत्त।

हरसद्दी – स्त्री.– उज्जैन की लोक प्रसिद्ध हरसिद्धि देवी जो महाराजा विक्रमादित्य की आराध्या देवी रही।

हरस – न.– इच्छा, चाहत, हर्ष, खुशी, हरख। (रीसे बलता लोग म्हारे हरस दिवानी केवे। मो.वे. ८०)

हरसे – हर्ष, प्रसन्न, खुश, हर्षित होना, प्रसन होना, खुश होना। (माता मीठा जो बोले ने मन हरसे। मा.लो. 627)

हराणो – पु.– सिरहाना, तकिया। क्रि.– हरा देना, पराजित करना।

हराँतियो – सिरहाना, सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग।

हराड़ी – अधिक खाने वाला, खाने के लिए मरना, भोजन भट्ट।

हराम – वि.– निषिद्ध।

हराणे पड्यो – सिरहाने पड़ा, तकिये के नीचे रखा।

हराम को मूत – वि.- एक गाली, जारज सन्तान।

हरामखोर – वि.पु.– मुफ्त का माल खाने वाला, धन लेकर भी काम न करने वाला।

हरामजादो – हरामजादा, दोगला, वर्णसंकर, परम दुष्ट, पापी।

हरारत – स्त्री.अ.– गरमी, हल्का ताप, बुखार या ज्वर।

हरावलो – दूध नापने का पला या पली।

हरास – पु.फा.– हिरास, भय, डर।

हरिद्वार – पु.– गंगा तट पर स्थित तीर्थ।

हरिया – वि.– हरा, हरे रंग का।

हरियाले बन्ना – पु.– सदाबहार, प्रियतम।

हरिया बाँ स – हरे बाँस।
(जाजो पियाजी तम डूँगर कई वाँ से लाजो हरिया बाँस रे। मा.लो. 24)

हरियाली – स्त्री.– भरी–भरी पृथ्वी, घास–तृण एवं शस्य से परिपूर्ण, हरापन।

हरियो – हरा, हरा रंग, हरा वस्त्र।
(देवर म्हारो रे उ हरिया रुमाल वालो रे। मा.लो. 581)

हरीको – अव्यय. समान, सरीखा, जैसा।

हरीदरोब – वि.– हरी दूर्वा, दूब, तृण।

हरीरो – पु. –मेवे, मसाले डालकर बनाया एक पेय पदार्थ जो जापा में पिलाते हैं।

हरुफ – पु.अ.– अक्षर, वर्ण।

हरो – वि.सं.– हरित, हरि, धास, पत्ती, प्रफुल्ल, प्रसन्न, ताजा।

हरे – अव्य.– हर का सम्बोधन, हे, हर।

हरेक – अव्य.– हर एक, हर कोई।

हरो – वि. सं.– हरित, हरा, सबल, प्रफुल्ल, प्रसन्न, ताजा।

हरोई हरो हूजे – क्रि.वि.– हर अच्छी वस्तु को पाने की इच्छा।

हल – पु.–जमीन जोतने का एक उपकरण, किसी सवाल को हल या सरल करना।

हलई – क्रि.-हिलाई, हिला दी, हिलाना।

हलक – पु.– गले की नली, कण्ठ।

हलकई – स्त्री.– हलकापन।

हलको – वि.– हल्का, कम वजन का।

हलकानो – वि.– हकलाना, तुतलाना।

हलकार – चींघाड़, ओहदा, डाँट डपटकर मना करना।
(लाड़ेआवेहातीरीहलकार।मा.लो. 209)

हलगणो – सुलगना, जलना, जल उठा, आग लगना, दावाग्नि।

हळद – न. – हलदर, हल्दी।
(हळद हींग का भाव बिकी री। मो.वे. 47)

हलफनामो – पु.– शपथ पत्र।

हलमो – पु. मिल–जुलकर की हुई हँकाई, सब कृषकों द्वारा किसी खेत को जोतने या बोने के लिए अपने कृषि उपकरणों का एक साथ प्रयोग करना, बाद में दाल–बाटी की गोठ खाकर आना।

हलवई – पु.– पकवान बनाने वाला, रसोइया।

हलियाँ – पु.– हाली, नौकर, मजदूर, कृषक।

हलवो – पु.– हलुआ, मिठाई।

हल्या – स्त्री.– शिला, एक चौकोर शिला।

हळो – स्त्री.– चिता।

हल्लो – पु.– हल्ला, धावा।

हलाहल – वि.– विष, जहर।

हवई – क्रि.स्त्री.– अच्छी लगी।

हवन – पु.– मन्त्र पढ़कर तिल अग्नि में डालना, होम, हवन।

हवलदार – पु.–पुलिस या फौज का छोटा अफसर।

हवस – स्त्री.– लालसा, वासना, चाह, तृष्णा, काम।

हवा – स्त्री.– वायु, प्राण, वायु।

हवाई जाज – पु.– हवा में उड़ने वाली सवारी गाड़ी, वायुयान।

हवाड़्यो – क्रि.– पकड़वाया।

हवाद – वि.– स्वाद।

हवाद्यो – स्वाद लेने या चखने वाला रसिक।

हवाद्यो भगत – मेवा मिष्ठान्न में रुचि रखने वाला खाने का शौकीन, अच्छे खाने की चाह वाला।

हवा पाणी – पु.– जलवायु।

हवामण – वि.– सवा मन का वजन, पचास किलो।

हवार – वि.– सवा सेर, एक सेर और इसके चौथाई भाग का योग, सवा सेर।

हवाल – हाल, स्थिति, हालचाल, सम्हाल। (आपतो चाल्या पीया चाकरी म्हारा अब कोन हवाल। मा. लो. 621)

हविस – वि.– हवन करने योग्य, हविष्यान्न, वासना, भूख, हवस।

हवे – अव्य.– अब।

हवेर – पु.– प्रातःकाल।

हवेली – स्त्री.अ. – बहुत बड़ा मकान, प्रासाद, महल, पुष्टी मार्गी मंदिर। (अपणा वाग हवेली पे। मो.वे. 38)

हव्वो – वि.– होआ, हौवा।

हंस – पु.सं.– एक प्रसिद्ध जल पक्षी, सूर्य।

हंसणी – स्त्री.– मादा हसं। (हम हंसा की हंसणी रे कँवरा)।

हँसणो – क्रि अ.– हास करना, हँसना।

हस्तक – पु.– हाथ (हस्त)।

हस्ताच्छर – पु.– दस्तखत, स्वीकृति या अस्वीकृति।

हस्ती – पु.– हैसियत, ताकत, औकात।

हँसमुखो – वि.– सदा हँसते रहने वाला चेहरा या मुखाकृति , विनोदशील।

हसरत – वि.– मन की इच्छा या तमन्ना।

हँसली – स्त्री.– बच्चों के गले का आभूषण, गले के पास की हड्डियों के इधर-उधर खिसक जाने की बीमारी।

हँसलो – पु.– हंस, जीवात्मा।

हँसाई – स्त्री.– हँसी, लोकनिन्दा, जग हँसाई।

हँसोड़ – वि.– हँसी की बातें करने वाला, बाज, मसखरा, ठिठोली करने वाला या हँसाते रहने वाला।

हंकोच – संकोच, शर्म, लज्जा।

हंजवारी – झाड़ू, बुवारी। (हंजवारो काड़ो तो ववड़ लागो थें नीका। मा.लो. 22)

हंजा – प्रियतम, पति, दूल्हा, (वींद राजा हंजा म्हारे चोंप घडई दीजो राज। मा.लो. 474)

हंजा मारु – प्रियतम, पति, दूल्हा, विवाह के लोकगीतों का एक नायक। (माथा ने भंमर घड़ाव म्हारा हंजा मारु। मा.लो. 595)

हँडी – छत पर लटकाया जाने वाला काँच का वह पात्र जिसमें दीपक जलाया जाता है, लालटेन, चिमनी की काँच की हँडी।

हँवरणो – पीसे हुए अनाज का आटा घट्टी में से निकालना।

हंसियो – क्रि. – हँसना, मुस्कुराना, खुले मुँह से हर्ष ध्वनि निकालना, उपहास करना, हँसी उड़ाना, निंदा करना, मजाक करना।

हंसो – प्राण, आत्मा, हँसलो, साँस, हंस। (अरे म्हारा हंसा रे लोभी जीवड़ा। मा.लो. 706)

हा

हा – अव्य. शोक में सम्बोधन, दर्द, दुःख, भय आदि में निकलने वाली आह।

हाऊ – वि.– अच्छा, हऊ, सास।

हाँक – क्रि. – बुलाने की आवाज, चलाने की आवाज, हाँकना, गेरना।

हाँकणो – क्रि.– गेरना, गाड़ी, रथ, हल आदि चलाना, डींग मारना, बढ़–चढ़कर बातें करना।

हाँकद्यो – क्रि.– हाँक दिया, गेर दिया, चला दिया।

हाँक नी पाड़ाँगा – क्रि.– बुलावेंगे नहीं, आवाज नहीं देंगे।

हाँकदे – जमीन को हाँकने का काम करें।

हाकम – पु.– शासकीय बड़ा अधिकारी।

हाकर – पु.– आवाज देने वाला।

हाँक्यो – क्रि.– हाँक दिया, जोत दिया ।

हाका हूक	–	स्त्री.– चारों ओर से जोर-जोर की आवाज लगाना।
हाको	–	क्रि.– पुकार, आवाज देना।
हाको करतो थको	–	क्रि.– जोर की आवाज लगाता हुआ।
हाँको	–	क्रि.– हाँकने या घेरने का काम करो।
हाको–डाको	–	क्रि.वि.– वह जोर का शब्द जो जंगली जानवर या पशु को भगाने के लिए, बाजा बजाकर किया जाता है।
हाको देणो	–	क्रि.– पुकारना, चारण, भाट आदि के द्वारा अपने यजमान की प्रशस्ति जोर–जोर से ऊँची आवाज में करना।
हाग	–	वि. -डाल पकी केरी या आम, साग–सब्जी।
हाँग	–	क्रि.– शौच।
हाँगणाँ	–	वि.– सघन, बहुत पास–पास।
हाँगणो	–	क्रि. – शौच जाना, सघन।
हाग पच्चारे	–	क्रि.वि.– आम पकने को हुए।
हाँगण्यो	–	वि.– बार–बार टट्टी जाने वाला।
हाँगरी	–	स्त्री.– सेंगर नामक एक सब्जी, काली बटली, क्रि.- शौच जा रही।
हाँगल्ड़ा	–	वि.– मक्का के मोटे व ताजे भुट्टे, बहुत बड़े भुट्टे।
हाँग लगाड़ी	–	क्रि.वि.– सव्वल से खोदा गया, चोरों द्वारा चोरी करने के लिए अस्त्र से किसी दीवार में छेद बनाना, गड्डा बनाना, खाद देना।
हाँगानेर	–	पु.– राजस्थान का प्रसिद्ध शहर साँगानेर।
हांगेज घणो	–	वि.– बार–बार शौच जाना।
हाँगेड़ा	–	चिल्लाकर रोना।
हाँच	–	वि.– सच, सचाई, सत्य।
हाँचल को पूतरो	–	वि.– सच्ची जैसा का पुतला जो मनुष्य जैसा दिखाई देता है।
हाँची	–	वि.– सच्ची, इशारा, सेन। (हांची या सब जाणजे।)
हाँची हाँच	–	क्रि.वि.– प्रत्यक्ष में सत्य दिखने वाला, हूबहू।
हाँची वात	–	स्त्री.– सच्ची बात, सत्य बात।
हाँचो	–	वि.– सच्चा, सत्य बोलने वाला, संचा जिसमें ढालकर ईंट या अन्य कोई वस्तु बनाई जाती है।
हाँज	–	स्त्री.– सांझ, संध्या, शाम।
हाँजका	–	स्त्री.– संध्या, शाम के समय।
हाजर	–	स्त्री. - उपस्थित हूँ। इ जो हाजर उबा देवर जेठ।
हाजर सो नाजर	–	जो भी पास वस्तु है वह सामने रखना, सन्मुख रखना, जो भी है वह सेवा के लिए प्रस्तुत है।
हाजरा हुजरी	–	प्रत्यक्ष, देवी-देवता जो प्रत्यक्ष में किसी के शरीर में आकर वरदान देते हैं।
हाजरी	–	स्त्री.– उपस्थिति।
हाजा माँदा	–	वि.– स्वस्थ–अस्वस्थ।
हाजिर ज्वाप	–	वि.– प्रत्युत्पन्न मतित्व, तुरन्त और उपयुक्त उत्तर देना।
हाँजी हाँजी	–	क्रि.वि.– खुशामद करना।
हाँजी	–	स्त्री. – संजा, संजा का अंकन करना।
हाँजे	–	स्त्री.– सन्ध्या को, शाम को।
हाझो	–	स्त्री.– सज्जी, साजा, एक क्षार जिसे आटे में मिलाकर पापड़ बनाये जाते हैं।
हाट	–	स्त्री.– हाट, बाजार।
हाट भराणो	–	क्रि. – बाजार में विभिन्न वस्तुएँ बिक्री के लिये आना।
हाँटा	–	पु.ब.व.– गन्ने, साँटे।
हाटे	–	बाजार में।
हाँटो	–	पु.– गन्ना।
हाड़	–	पु.सं.– हड्डी, अस्थि।
हाँड	–	साँड, आकला वृषभ।
हाड़–हाड़	–	क्रि.वि.– पक्षियों को भगाने के लिये की जाने वाली ध्वनि या शब्द।
हाड़का	–	पु.ब.व.– हड्डियाँ। (हूँ काई पेरू थारा हाड़ रसिया। मा. लो. 582)

हाड़का ढीला पड़ना – शरीर की हड्डियाँ शिथिल पड़ गई, शरीर कमजोर हो गया, ढीला पड़ गया।

हाड़ जरेरे – क्रि.वि.– हड्डियाँ जल जाती हैं।

हाँडयाँ – स्त्री.ब.व.– मिट्टी की बनी हुई मटकियाँ, देगची के आकार की मिट्टी की बनी हंडियाँ।

हाँडा – स्त्री.– मिट्टी या किसी धातु का बना बड़ा मटका।

हाँडा हरका पेट – वि.– बड़े मटके के समान फूला हुआ पेट।

हाँडी – स्त्री.– मिट्टी की हण्डी या मटकी देगची के आकार का मिट्टी का छोटा बरतन।

हाण – हानि, नुकसान, घाटा।
(घर में हाण जगत में हाँसी कीमत घटती जाय। मा.लो. 568)

हाड़ी ज्वर – स्त्री.-काला बुखार, हड्डी बुखार।

हाण लाभ – वि.– हानि–लाभ।

हाण्णो – पु.– झाड़न, झाडू, बुहारी, सफाई का उपकरण।

हाण्णो काड़री – स्त्री.– झाडू लगा रही, सफाई कर रही।

हात – पु. सं.– हस्त, हाथ, कर, नाप।

हातकड़ी – स्त्री.– हतकड़ी।

हातड़ा – पु.ब.व.– दोनों हाथ।

हात में चोंटे – क्रि.– हाथ में चिपकना।

हात फूल – हथेली का आभूषण।

हात मारणो – पु.– पैसों पर हाथ मारना या खाने पर हाथ मारना।

हात मिलाणो – सम्बन्ध जोड़ना।

हात हिलानो – काम से मुकरना, मना करना।

हात धरणो – पु.– बाँह गहना, हाथ धरना।

हात लगो – क्रि.पु .– साथ में ।

हाताँ – पु.– हाथों से।

हातीड़ो – पु.– हाथी।

हाते – क्रि.– परस्पर लेनदेन, व्यवहार के रूप में लिया उसे किसी ऐसे ही समय में लौटाना।

हातो – पु.– अहत्ता, चारों ओर से लकड़ी या काँटे की बागुड़ के घेरे को कहीं से तोड़कर बनाया हुआ स्थान जिसमें से आदमी निकल जाये, निकलने का छोटा रास्ता, हत्था, छिन्दा, छिद्र।

हाथ ऊँचा करके – क्रि.– हाथ खड़ा करके, खाली हाथ बतला करके।

हाथड़ो – पु.ए.व.– हाथ।

हाथ धोईने बेठनो – वस्तु गँवा बैठना, आशा छोड़ देना।

हाथफूल – पु.– हथेली का आभूषण।

हाथ फैलई के – कृ.– हाथ फैला करके, हाथ दिखला करके।

हाथापई – स्त्री.– हाथ–पैर से खींचने और ढकेलने की लड़ाई, भिड़ंत।

हाथ अई गया – क्रि.– पकड़ में आ गये, हाथ में आ गई, चंगुल में फँस गये।

हादड़ – स्त्री.– सादड़ नामक लकड़ी।

हादरी – स्त्री.– चटाई बिछाने की दरी जो खजूर के पत्तों से बनाई जाती है।
(कोई म्हाने भी हादरी वताव रे।)

हादा – वि.– सादा, सामान्य।

हादी – स्त्री.– सादी, सामान्य।

हान – वि.– सुधि, सुधबुध, चेतन, स्त्री.– हानि, नुकसान।

हाननो – पु.– झाड़, बुहार, बुहारी।

हान नी है – क्रि.वि.-सुधि या चेतना नहीं है।

हानी – वि.– इशारे से, संकेत से।

हाँप – वि.पु.– सर्प, साँप, नाग।

हाँपड़ – क्रि. – स्नान कर, नहा।

हाँपड़ल्यो – पु.– स्नान कर लिया, नहा लिया।

हाँफीर्‌यो – वि.– हाँफ रहा, साँस भर रही, दम भर रहा।

हाबत, हाबुत – वि.–साबुत, पूरा, सम्पूर्ण, जिसका टुकड़ा न हो, बिना टूट।

हाबड़–हाबड़ – क्रि.वि.– जोर-जोर से किसी पेय पदार्थ को सुड़कने की आवाज, राबड़ी का सबका लेना।

हाबरनी अई – क्रि.– काम नहीं बना।

हाबुत – वि.– अक्खा, पूरा, सम्पूर्ण।

हाबू – पु.– साबुन।

हांभर को हींग – पु.– साँभर नामक हिरन का सींग।

हाम खादो – वि.–एक गाली, साँप द्वारा खाये जाने का अभिशाप।

हाँमड़ी – स्त्री.– मोर पंख के रेशे से पारे की गाँठ बनाना।

हामण – पु.– श्रावण मास।

हामण गावे – क्रि.– श्रावण मास में ढोलनों या दमामी की स्त्रियों द्वारा लोकोचार के अन्तर्गत गाये जाने वाले सरस लोकगीत, हिंडोला गीत।

हामल – क्रि.– सुन, सुना।

हामली के नी हामली– क्रि.वि. – सुना कि नहीं सुना।

हामल्यो – पु.– सुन लिया, सुना गया।

हामी भरनी – हाँ में हाँ करना, हाँ में हाँ मिलाना, तरफदारी करना।

हामूणी – स्त्री.– बारात के सम्मुख जाकर उनका सेवा सत्कार करने की लोक प्रथा, बारात का स्वागत सत्कार करना।

हामू ताक में – पु.– सामने के ताक में ।

हामू पोल – पु.– प्रमुख द्वार, सामने का दरवाजा।

हय – अव्य.– निःश्वास, किसी कार्य को करने की जल्दी, दर्द के कारण कराह, टीस।

हाय घणी – वि. –जल्दी बहुत ही।

हाय तोबा मचई – क्रि.वि.– हाय–हाय करते रहो।

हायरी – स्त्री. सं.– सारसी नामक गाँव।

हायरो – पु.– ससुराल, सासरा।

हाय लागी – क्रि.– जल्दी मचाई, शीघ्रता की,शाप लगा।

हायो – क्रि.– पकड़ लिया।

हार – स्त्री.–शुद्ध प्रतियोगिता, खेल आदि में पराजय होना, गले का आभूषण, माला, हार, पंक्ति, कतार आदि।

हारनो – हारना, पराजित होना, हार जाना, पंक्ति, श्रेणी, कतार, गले में पहनने की फूलों की माला, गले का एक आभूषण, हानि, क्षति।
ढेड़ाँरो जीत्यो ने रायाँरी हार गई, (लाड़ी खेल नी जाणे। मा.लो. 443)

हारस्यो – पु.– भोजन की परोसगीरी करने वाला।

हारस – स्त्री.– सारस नामक बड़ा पक्षी।

हारस पगो – पु.वि.– सारस जैसे पतले और दुबले पाँवों वाला।

हारा – क्रि.– हार गया, पु. – साला, श्वसुरात्मज।

हारी – नौकर–चाकर, बैलदार, स्त्री.– साली, पत्नी की छोटी बहिन। क्रि. – हार गई।

हार गयो – पु.– हार गया, पराजित हो गया।

हारी बालदी – पु.– नौकर–चाकर।

हारू – अव्य.– लिए।

हारे जाणो – ससुराल जाना, किसी के सहारे रहना, आश्रय में रहना, हार जाना, पराजित हो जाना।

हारेड़ा – सारस, एक प्रकार का बड़ा पक्षी, सारस नामक बड़ा पक्षी, जलाशयों के पास रहने वाला लम्बी टाँग का एक पक्षी।
(कठड़ा से आया हारेड़ाजी ने कठड़ा से आया दादर मोर। मा.लो. 647)

हारो – क्रि.– हार जाओ, पु. साला, मजबूत।

हाल – पु.– हालचाल, स्थिति, शालि नामक धान्य जिससे चावल निकाले जाते हैं, हल में पिरोई जाने वाली लम्बी व सीधी लकड़ी, वि. -दुर्गति, दुर्दशा, बुरी दशा, पु.- बड़ा कक्ष, कमरा, दालान या चौक।

हाळ – पु.– साल नामक धान्य, हल में पिरोई जाने वाली लकड़ी।

हालणो – क्रि.–हिलना, शरीर का प्रकम्पित होना।

हाल्याँ – पु.ब.व.– नौकर को बैलदार, सालियाँ, पत्नी की छोटी बहिनें।

हालरियो – पु. – शिशुओं को सुलाने के लिए गाई जाने वाली लोरी या लोकगीत।

हालरो – पु.– बच्चों को गोद में लेकर हिलाना डुलाना, झोंका देना, लहर, हिलोर, हालरी बच्चों को सुलाने के लिये गाई जाने वाले लोरी गीत।

हाला, हाळा – पु.– शराब, साला, श्वसुरात्मज।

हालीड़ो – पु.– हाली, नौकर।
काँकड़ को कई देखो रे दुलइयाँ (काँकड़ हालीड़ा ए रुन्धो होराज। मा.लो. 374)

हाली – स्त्री.– नौकर–चाकर, हाली, बँधुआ मजदूर, बैलदार, साली, पत्नी की छोटी बहिन।

हाले – वि.– दुःख देवे, शूल की तरह चूभना, हिलना, अभी-अभी।

हालो – पु.– साला।

हाव – अव्य.- सभी, हब।

हाव–भाव – क्रि.वि.– अंग भाव, नखरा, लटका-झटका, भाव-भंगिमा।

हावणो – क्रि.– पकड़ लिया।

हाँसिल – क्रि. – पाया, मिला हुआ, प्राप्त, जोड़ का हासिल, पैदावार, उपज, पात्र, लाभ, नफा।

हाहाकार – वि.– कुहराम।

हाँड़ड़ो – दिल, हृदय, छाती।
(थें ई समजो पिया म्हारा लोग नी जाणे, म्हारी छाती फाटे ने हाँइड़ो उलटे। मा.लो. 346)

हाँक – बुलाना, आवाज देना, पुकारना।
(कुली के जदे हाँक पाड़ी। मो. वे. 50)

हाँकणो – जमीन में हल बक्खर चलाने का काम, हँकाई, जुताई करना, हाँकना।

हाँगेड़ा – जोरों से चिल्लाना, जोर-जोर से रोना, जोर से बोलना।

हाँगेड़ा पाड़ना – चिल्ला कर रोना, जोर-जोर से रोना।

हाँज – संध्या, संजाबाई, साँझ, शाम।

हाँची केणो – सच बोलना, सच कहना।

हाँजी – आदरसूचक प्रत्युत्तर, जी हाँ, स्वीकृति , समर्थन, हाँ में हाँ मिलाना, चापलूसी, साँझी, बहन द्वारा भाई के यहाँ पर भतीजे के लिये साँझी ले जाना। (कपड़े गहने आदि)।
(पातलीया ओ दातण करलो नी पण हाँजी केसरिया ओ भम्मर म्हे पेराँ। मा.लो. 446)

हाँजे – न.-शाम, संध्या का समय, साँझ।

हाँटो – गन्ना, साँटा, ईख।
(हाँटो रे कूका गूँज गली को भावे।)

हाँडी – वि. – छोटी काली मिट्टी की मटकी जो नये मकानों की छत पर टाँगी जाती है, दही जमाया जाता है, अर्थी के पीछे फोड़ी जाती है।

हाँती – न. - विवाहादि पर सम्बन्धियों और पड़ोसियों व मिलने वालों को दी जाने वाली भेंट।

हाँते – संग में, साथ में, साथ में रहने वाला।
(छोटा देवरिया हाँते।)

हाँपणो – क्रि. – परिश्रम व दौड़ने के कारण जोर-जोर से साँस लेना, दम, श्वाँस दम रोग।

हाँसी – मजाक, ठट्ठा, हँसी, खिल्ली।
(घर में हाँण जगत में हाँसी कीमत घटती जाय। मा.लो. 568)

हि

हिकमत – स्त्री. वि.– हिकमती, कोई नई बात ढूँढ निकालने की बुद्धि, युक्ति, उपाय, तरकीब, पेशा, खूबी, चातुर्य।

हिकमती, हिकमत्या– वि.– चालाक, चतुर, धूर्त, होशियार।

हिंकाड़्यो – क्रि.– सिखाया हुआ, कान भरे।

हिंग – पु. – हींग।

हिगड़ा – पु.– सींग, हींग। (झालर रा जाया सोना से मड़ई दूँ थारी सिंगड़ी। मा.लो. 671)

हिंगड़ी – स्त्री.– छोटी सिंगोटी, पशुओं के सिर पर निकलने वाले छोटे-छोटे सींग।

हिंगराट – वह पलंग जिसके पाये और चौखट प्रवाल के बने होते हैं , बढ़िया पलंग,रमण शैया, लोकगीतों की अन्यतम शैया, हिंगलू ढोलिया। (चोसर अगला ठाट आपतो हिंचता हिंगराट। मा.लो. 529)

हिंगलाज माता – स्त्री.– मातृ शक्ति नव दुर्गा, इन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका के अनुसार इनका स्थान बलोचिस्तान में हिंगोली नदी के किनारे पर है। पौराणिक मान्यतानुसार यह वही स्थान है जहाँ दक्ष प्रजापति और शिव की लड़ाई के बाद उसका मस्तक गिरा। किंवदन्ती है कि मुसलमान उसे बीबी शानी का मजार मानते हैं। अंग्रेज यात्री गोल्ड स्मिथ ने उसे सन् 1911 में ढूँढ निकाला था जो 3740 फुट ऊँचाई पर है। एक और किंवदन्ती अनुसार मारवाड़ के एक शासक ने इस स्थान की यात्रा की थी और देवी ने प्रसन्न होकर उन्हें अनोखी तलवार दी थी। कर्नल टाड ने इस कथा का उल्लेख किया है। हिंगलाज माता आज कई जातियों की देवी है। (खण्ड-6, 715-716)

हिंगरू – डूँगर, सिंगरफ, एक लाल रंग का कुंकुम जिससे माँग भरी जाती है। (हिंगरू का ढोल्या ने मिसरू का तकिया। मा.लो. 606)

हिंगलू – स्त्री. - इंगुर, सिंगरफ, एक लाल रंग का पदार्थ जिससे माँग भरी जाती है।

हिंगलू ढोल्यो – वह पलंग जिसके पाये और चौखट प्रवाल के बने हों। बढ़िया पलंग, रमण शैया, पति-पत्नी के सोने का पलंग, लोकगीतों की अन्यतम शैया। (हिंगलू का ढोल्या ने मिसरू का तकिया। मा.लो. 606)

हिंगलोट – पु.– हिंडोला, पालना, झूला।

हिंगाड़ो – पु.– सिंघाड़ा नामक फल जो तालाबों में उगाया जाता है।

हिंगी – स्त्री.– सिंगी, सींगों वाला बाजा।

हिंगुन्यो – वि.– लालिमा युक्त।

हिंगोट्यो/हिंगोट – पु.– इंगुदी फल, इंगुर।

हिचकणो – क्रि.– झिझकना, मन का पीछे हटना, संकोच।

हिंचका – पु.– ताने देना, व्यंग्य कसना।

हिचकी – स्त्री.– कोई काम करने से पहले मन में होने वाली झिझक, रुकावट, आगा पीछा, हिचकी नामक एक रोग जिसमें गले की श्वास हिचक की आवाज के साथ बाहर निकलती है।

हिंजड़ा – पु.– नपुंसक, नामर्द, कायर।

हिंजरनो – वि.– लालसा से, दुःखी, लालायित।

हिजावीन्यो – क्रि.– पका रहा, सिझा रहा।

हिजेइ नी – क्रि.वि.– पकता ही नहीं , सीझता ही नहीं।

हिटी गयो – क्रि. – निकल गया, चला गया।

हिडम्बा – स्त्री.– भीम की पत्नी जो राक्षस थी।

हिंडोला – पु.– हिंडोला, झूला, पालना, काठ का बना बड़ा चक्कर जिसमें लोगों को बैठने के लिए ऊपर-नीचे घूमने वाले छोटे- छोटे चौखटे होते हैं।

हित – वि.– लाभकारी।

हितंगो – वि.– पागल।

हितानो – पु.– बाज पक्षी, शिकारी बाज।

हितेसी – वि.– हित या भला चाहने वाला, हितकारी।

हिदड्यो – वि.– बड़े पेट वाला, अधिक खाने वाला।

हिन्द – पु.– हिन्दुस्तान, भारत।

हिन्दी – वि.– हिन्दी भाषा, इसकी कई उपभाषाएँ और बोलियाँ हैं।

हिन्दू – पु.फा.– हिन्दू धर्म के अनुयायी।

हिन्दोला – पु.– हिंडोला, पालना, झूला, दोला, डोला।

हिपई – पु.–सिपाही, हवलदार, ग्राम रक्षक।

हिफाजत – स्त्री.– रक्षा, सुरक्षा, रखवाली।

हिम – स्त्री.– बर्फ, ओस, शीत, बरफ, चन्द्रमा।

हिम्मत – स्त्री.– साहस।

हिमाकत – वि.– गुस्ताखी।

हिमालो – पु.– हिमालय पर्वत।

हिमाळो पड़ीर्‌यो – क्रि.वि.– बर्फ गिर रही, बर्फ पड़ रही।

हिम्मत टूटणी – हौसला, टूट जाना, धीरज खोना, कायर हो जाना, निर्बल हो जाना।

हिम्मत राखणी – साहस रखना, हिम्मत रखना, साहसी होना, बुलंद होना।

हिय, हिया – पु.– हृदय, दिल, छाती।

हियाव – वि.–प्रेम, साहस, उमंग,उत्साह।

हियाव देणो – रमणीक लगना, अच्छा लगना, सुहाना लगना, लक्ष्मी का निवास होना।

हिया बाज – पु.– शिकारी बाज।

हियो – पु.– हृदय, दिल।

हिरण – पु.– हरिण।

हिरनकस्यप – पु.–दैत्यों का प्रसिद्ध राजा जो प्रह्लाद का पिता था और जिसे भगवान ने नृसिंह अवतार धारण करके मारा था।

हिरन्यादे कँवरी – मालवी की प्रसिद्ध लोक कथा, दे अक्षर देवी का संक्षेप है।

हिरदा से चोंटईके – कृ.– हृदय से लगा करके, हृदय से चिपका करके, प्यार करके।

हिरदा – पु.– हृदय, दिल।

हिरदो – पु.– हृदय, दिल। (वाणी तो बोले सीताराम की सीता हिरदे लगायो हो राम। मा.लो. 659)

हिरस गंडिया – वि.– एक मालवी गाली।

हिरा – पु.– हीरा।

हिरावण, हिरामण – पु.– प्रातःकालीन नाश्ता, कलेवा।

हिरासत – स्त्री.– पहरा, चौकी, हवालात।

हिलई डुलई के – कृ.– हिला डुलाकर के, इधर- उधर हिला करके।

हिलरा – वि.– हिलौर, तरंग, लहर।

हिल्योई नी – क्रि.वि.– हिला तक नहीं , स्थिर रहा।

हिलोर – क्रि.– लहर, तरंग।

हिलोल – क्रि.– हिलना, लहर, तरंग। (हिवड़ा में उठे रे हिलोल रसिया। मा.लो. 574)

हिवड़ो – पु.– हृदय, दिल। (म्हारे हिवड़े हरस हटकाणी। मा. लो. 527)

हिवाळा रजा – वि.– सियार राजा।

हिवाल्यो – पु.– सियार, गीदड़।

हिंसक – वि.– हिंसा करने या मार डालने वाला, वधिक, घातक।

हिंसा – वि.- हत्या करना, हानि पहुँचान।

हिसाब किताब – पु.– आय व्यय का लेखा जोखा, लेनदेन का ढंग या रीति।

हिस्सो – पु.– हिस्सा, बँटवारा, पाँती।

हिंस्यो – पु.– घोड़े का हिनहिनाना।

ही

ही ही – अव्यय.-बार-बार दाँत निकालकर हँसना।

हींक – स्त्री.– सींक, तिली, सीख, शिक्षा, काड़ी।

हींक देणी – स्त्री.– शिक्षा देणी, सीख देणी, शिक्षित करना, विदा करना, जुवारी या भेंट।

हींक्यो – क्रि.– सीखा, सीखने का प्रयास करो,

छींका, छत पर बरतन लटकाया जाने वाला छींका।

हींख – क्रि.– सीख, सीखना, उपदेश, शिक्षा।

हींग – स्त्री.– एक सुगन्धित मसाले का पदार्थ जिसके डालने से दाल- सब्जी आदि पदार्थ सुगंधित व पाचक हो जाते हैं।

हींगड़ा – पु.ब.व.– सींग।

हींगड़ो – पु.– सामान्य हींग, हींग की एक किस्म, पशुओं के सींग, अँगूठा बताने के लिए विशेषण।

हींगले – क्रि.वि.– सब जगह, हर कहीं, सर्वत्र।

हींगाड़ो – पु.– सिंघाड़ा, जल में पैदा होने वाला एक पाचक फल।

हींचावणी – स्त्री.– विवाह के अवसर पर दूल्हा–दुलहिन को दी जाने वाली भेंट।

हींचे – क्रि.– घोड़ों का हिनहिनाना, सिंचन का कार्य करे, झूले।

हींचो – झूला, पालना, हिंडोला, झोली।

हींजड़ो – पु.– नपुंसक।

हींजरनो – क्रि. –अन्दर ही अन्दर मन में रोना। सारे दिन एक ही चिन्तन करना, हींसना, मन ही मन किसी वस्तु के लिए लालायित रहना।

हिजाणो – क्रि.– पकाना, पानी में पकाना या आग में भूनना।

हीजी गयो – क्रि.– सीझ गया, पक गया, उबल गया।

हीजे – क्रि.– पके।

हीटजा – क्रि.– निकल जाओ, चले जाओ, भाग जाओ।

हीट्यो – क्रि.– निकला, निकल गया, चला गया।

हींटी – स्त्री.– सीटी।

हींटो वताड़नो – क्रि.वि.– अंगूठा दिखला देना, किसी काम के लिए मना करना।

हीड – वि. – मालवी में प्रचलित ऐतिहासिक गीत कथा, जिसमें बगड़ावत गूजरों की उत्पत्ति का इतिहास छिपा है। बाघाराव से उत्पन्न चौबीस भाई बगड़ावतों की कहानी, तपस्या, अकूत धन की प्राप्ति एवं उनके द्वारा किये गये युद्धों का वर्णन -अन्त में बड़े भाई भोजाजी राय के यहाँ अवदान के रूप में उत्पन्न देवनारायण और तेजस्वी बालक। आज इन्हें अवदान के रूप में पूजा जाता है। सम्पूर्ण राजस्थान एवं मालवा में इनके मन्दिर या देवरे बने हुए हैं। इनका प्रशस्ति गान हीड़ के रूप में दशहरे से देव उठनी ग्यारस तक गाया जाता है। (हीड़े चिन्ता ने तो मन भई म्हारा चिंता करे। मा.लो. 672)

हीड़ना – क्रि.– चलना फिरना, घूमना, ढूँढना, पता लगाना।

हीड़ी – स्त्री.– सीढ़ी, पेड़ी, जीना, चढ़ाव, निसैनी।

हीड़ो – क्रि.– काम धन्धा, सेवा टहल, चाकरी, नौकरी, गुलामी।

हीण – वि.– रहित, बिना, दीन, तुच्छ, ओछा, हीन।

हीत – स्त्री.– शीत, ठंड, ठंडक।

हीतई गयो – स्त्री.– किसी वस्तु का शीत से नर्म पड़ जाना, ठंडा हो जाना।

हीतंगो – वि.–पगला, पागल, अर्द्ध विक्षिप्त, नमी वाला।

हीतलामाता – स्त्री.– एक लोक देवी, मातृ शक्ति, शीतला माता, बड़ी चेचक।

हीताफल – पु.– सीताफल, शरीफा।

हीदड़्यो – वि.– बड़े पेट वाला, बहुत तथा बार-बार खाने वाला।

हीदो – वि.– सीधा, सीध में, भिक्षुक को दिया जाने वाला खाद्यान्न, सरल चित्त।

हीन – वि.–दीन, हीन, बुरा, तुच्छ, ओछा, रहित, बिना।

हीनपुरस – उत्साह रहित पुरुष, उत्साहहीन पुरुष, निरस पुरुष, उमंगहीन सुस्त या कमजोर।
(गोरी सूखे बाप के हीनपुरस की नार। मा.लो. 564)

हीनो – पु.– हीना या मुश्क अंबर नाम इत्र, सुगंधित द्रव्य, अनमना।

हीपई – पु.– सिपाही, रक्षक।

हीपलो – पु.– सिपाही।

हींप – स्त्री.– सीप।

हीय – पु.– हृदय, दिल।

हीयो – पु.– हृदय, दिल, शीशा का तद्भव – बाटल।

हीर – वि.– हीरा, किसी वस्तु का अन्दर का भाग, धातु या वीर्य।

हीरामन – पु.– एक प्रकार का तोता जिसका अंग सोने का सा माना जाता है, लोक कथ। गाथाओं का प्रमुख पात्र।

हीरावण – पु.– प्रातःकालीन नाश्ता या भोजन

हीराँदासी – स्त्री.– हीड़ गीत कथा की एक पात्र, गूजरी।

हीरो – पु. सं.– हीरक, प्रसिद्ध व बहुमूल्य रत्न जो अपनी उज्ज्वल द्युति चमक और अधिक कठोरता के लिये प्रसिद्ध है।

हीळीगार – वि.– अत्यन्त ठंडा पानी, बर्फ के छोटे- छोटे टुकड़े, ओले।

हीळो – वि.– ठंडा, शीतल।

हीलो हवालो – पु.– बहाना, निमित्त।

हीवड़ो – सं.– हृदय, दिल।

हीवाल्यो – पु.– सियार, गीदड़।

हींस – पु.– हिनहिनाना।

हु

हुई के – कृ.– हो करके।

हुई गई – स्त्री.– हो गई, सो गई।
(म्हारा घर में चार थाँबा दो ठोके दो हुइग्या लाँबा। मा.लो. 445)

हुकईरयो – क्रि.– सूख रहा, दुबला या कमजोर पड़ गया।

हुक द्यो – क्रि.– सुख दिया, सुखी किया।

हुकम – आदेश, आज्ञा, अनुमति।
(देवो हुकम खेलाँ होली। मा.लो. 583)

हुकम चलाणो – आदेश देना, आज्ञा देना, अधिकार जमाना।
(सासू वाँकी झाडू लगावे, वातो खड़ी हुकुम चलावे। मा.लो. 506)

हुकमल – वि.– सुकोमल, मृदु, मुलायम, कमजोर, नर्म।

हुकलो – पु.– गेहूँ के डंठलों का भूसा।

हुकल्यो – वि.– कमजोर, अशक्त, दुबला पतला, क्षीणकाय।

हुका पच्चीसी – अधिक मेहनत और फल कुछ भी नहीं, कुछ नहीं मिलना।

हुक्को – पु.– तम्बाखू पीने के लिये विशेष प्रकार का उपकरण।

हुक्को पाणी – पु.– एक बिरादरी का आपस में बैठकर हुक्का पीना व पानी पिलाने का व्यवहार।

हुकम – पु.– आज्ञा, आदेश।

हुँकार – पु.– गर्जन, ललकार, स्वीकार सूचक शब्द, हुँकारा भरना।

हुकाम – पु.– दुकान के सामने।

हुकायो – क्रि.– सुखाया, सूखा किया।

हुँकारो भर्‌यो – पु.– हाँ की, स्वीकृति दी।

हुगणाबई – स्त्री.– सुगनाबाई, एक नाम।

हुँगणो – वि.– सूँघना, महक लना, टोल लेना।

हुगलो – वि.– सूग या घृणा आने जैसा घृणास्पद।

हुगरी – एक पक्षी, कृतज्ञता।

हुज्जत – वि.– झगड़ा, बखेड़ा, तकरार, खींचतान।

हुजे – क्रि. – सूझे, दिखाई देवे।

हूजो – वि.– सूजन, शोथ, सूजना।

हुड़ हुड़ – क्रि.वि.– कुत्ते को दुत्कारनेकी आवाज।

हुण – क्रि.– सुन।

हुणती – स्त्री.– सुनती।

हुणती हमजती – स्त्री.– सुनती समझती।

हुतई गयो – क्रि.– सूँत दिया गया, रगड़ दिया गया।

हुँतली – स्त्री.– सुतली, पतली रस्सी।

हुतार – पु.– सुतार, लकड़ी घड़ने वाला कारीगर।

हुदरनो – सुधरना।

हूदो – वि. – सीधा, सरल, साधारण, सीधा-सादा, सुगम, भोला-भाला, जिसमें तड़क भड़क न हो, बिल्कुल सरल।

हुनर – पु.फा.– कला, कारीगरी।

हुन्नर – पु.– कला कौशल, कारीगरी।

हुनार – पु.– सुनार, सोनी।

हुनारी – स्त्री.– सोने चाँदी की कारीगरी।

हुप् – पु.– बन्दर की आवाज।

हुपारी – स्त्री.– सुपारी।

हुफ् – वि. – दर्द के कारण उपजी हुई आवाज।

हुफनी करे – क्रि.– प्रतिकार की भावना न रखना।

हुबहू – क्रि.वि.– ठीक वैसा ही, ज्यों का त्यों।

हुमड़ो – बिना बोले रहने वाला व्यक्ति, गुमसुम रहने वाला व्यक्ति।

हुयारे – क्रि.– हो गया रे, हुआ रे।

हुयो – क्रि.– हुआ, हो गया।

हुर्यो – वि.– छीछालेदार, फजीहत करने का भाव, हृदय के उल्लास की अभिव्यक्ति का शब्द।

हुऱ्यो हे – क्रि.वि.–प्रसन्नता की अभिव्यक्ति के लिये शब्द।

हुरल्या – वि.– कान का आभूषण।

हुलगा – क्रि.– सुलगा, सुलगना।

हुलरावती – झूला देती, झूला देना। (हिरता फिरता हुलरावती म्हारो हिवड़ो हिलोरा लेय। मा.लो. 200)

हुल्या – क्रि.– सुला हुआ, कीटों के द्वारा खाया हुआ, अनाज, घुन लगा अनाज, कान का आभूषण।

हुल्लड़ – पु. – हुड़दंग, दंगा, उपद्रव, कोलाहल।

हुवो – न. – हुआ, हो गया, काम बन गया, पैदा होना, गीदड़ की बोली।

हुलस ग्यो – पु.– प्रसन्न होना, उपड़ना, उभरना, आनन्दित होना।

हूक – वि.– उमंग, उत्साह, शूल, कसक, अफवाह, चमक।

हूकड़ी, हूकणी – स्त्री.– एक विशेष प्रकार की मीठी पूरी, जिसे लकड़ी के गोल संचे से कंगूरे या आकृतिदार बनाकर तला जाता है।

हुकड़्यो – वि. – सूखा, दुबला-पतला, कमजोर क्षीणकाय।

हू

हूंकण्याँ – स्त्री.– मीठी पूरियाँ।

हूँकड़े – क्रि.– गरज रहा।

हूँकारो देणो – स्वीकृति प्रदान करना, वार्ता के बीच में श्रोताओं द्वारा उत्साहवर्धक हाँ शब्द, हाँ-हाँ करके स्वीकृति देना।

हूँग – वि.– घृणा, गन्दगीपूर्ण।

हूंग – क्रि.– सूँघने का काम, सूँघना।

हूज – पु.– समझबूझ, सूझना, दिखाई देना।

हूजबूज – क्रि.वि.– समझदारी, सूझबूझ विचारपूर्ण काम।

हूज पड़ीगी – स्त्री.– स्पष्ट हो गया, समझ में आ गई।

हूजी गयो – क्रि.– दिख गया, दिखाई दे गया।

हूजेइनी – क्रि.वि.– सूझता ही नहीं , दिखाई नहीं देता, समझ में नहीं आता।

हूजो – पु.– सूजन, शोथ, दिखाई दिया।

हूट – वि.– तिरस्कार, अपमानित करना।

हूट – स्त्री.– सूँठ।

हूटड़ली मऱ्याँ – स्त्री.– लाल मिर्च जो पौधों से अन्तिम बार तोड़ी जाती है, कुछ लाल कुछ सफेद रंग की मिर्च।

हूँठ – सौंठ।

हूँड – पु.– मुँह, नाक, सूँड, चड़स की थैली जिससे कुँए के थाले में पानी उँड़ेला जाता है।

हूँडावण – कम धन देकर पूरे का ब्याज लेने में कटौती राशि।

हूड़ा-हूड़ी – पु.– तोता-तोती।

हूड़ो – पु.– तोता, शुक, कीर, सुआ।

हूत-हात – क्रि.– व्यवस्था, सूत बाँधना, सरोधा बँधना, कार्यारम्भ करना।

हूतली – स्त्री.– सुतली, बारीक रस्सी।

हूता – पु.– सो रहे, शयन कर रहे।

हूँतीद्यो – क्रि.– सूत दिया, माँजा दिया, रगड़ दिया, खा गया।

हूथार – पु.– सुतार, बढ़ई, कारीगर, एक जाति।

हूद – पु.– सीध, सीधा।

हूद बंद – सीध बंद, सीधा, एक कतार से, अवक्र।

हूदी – अव्य.– सीधी, तक।

हूदो – वि.– सीधा, सपाट, समानान्तर।

हूदो रीजे – क्रि.वि.– सीधे रहना, ठीक से रहना।

हूधरी गयो – क्रि.– सुधर गया, सुधार दिया गया, ठीक हो गया।

हूनर – वि.– कला –कौशल।

हूनरी लुगई – स्त्री.– कला कौशल प्रिय स्त्री, कलावन्त स्त्री, कला में निष्णात स्त्री।

हूनेर – पु.– सुसनेर, सुआनगरी,सोंधवाड़ी क्षेत्र, एक संज्ञा।

हूनो – वि.– शून्य, जनरहित, उजाड़, वीरान, सुनसान, सूना।

हूँपड़ा – पु.– सूप, अनाज फटकने का उपकरण।

हूँपड़ो – पु.– सूप, सूपड़ा।

हूयो ज नी – क्रि.– सोया ही नहीं, शयन नहीं किया, हुआ ही नहीं।

हूर – वि.– मुसलमानों के अनुसार स्वर्ग की अप्सरा, सुन्दर, सूअर।

हूर की परी – स्त्री.– स्वर्ग की अप्सरा।

हूँ – पु.उ.पु.– मैं।

हूरज – पु.– सूर्य।

हूरज हाँपड़ी – स्त्री.– सूरज पूजा।

हूरो आवे – वि.– सनक सवार होवे, सनकता।

हूल्ड़ो – पु.– सुअर, शूकर, जंगली पशु।

हूल – वि.– शूल, हृदय में चुभन।

हूवाड़ीद्या – क्रि. – सुला दिये, शयन करवा दिया।

हे

हे – अव्य.– सम्बोधन, है, अजी।

हेकई गयो – क्रि.– सिक गया, भुन गया, गर्म हो गया।

हेकड़ – वि.– अकड़, अकड़ रखना, ऐंठना।

हेकड़ी – स्त्री.– अकड़ई, हिम्मत, अक्खड़, उद्धत, प्रचण्ड, प्रबल।

हेकले – क्रि.– सिकाव कर लेवे, सेक लेवे।

हेकाव – पु.– सिकाव, सेकना।

हेकावण घणी – क्रि.वि.–शरीर में बहुत जलन होना, ईर्ष्या द्वेष से ग्रसित होना, क्रोध की व्याप्ति होना, मन में कुड़कुड़ाते रहना।

हेकाड्ग्यो – क्रि.– सिक गया, सेक दिया गया।

हेकाणो – क्रि.– सिकवाना।

हेकीद्यो – क्रि.– सेक दिया गया।

हेचकताणो – क्रि.वि.– भेंगी आँखों से देखने वाला, खींचातानी, कमीबेशी, खींचतान, भेंगा, ढेरा।

हेंचीऱ्यो – क्रि.– खींच रहा।

हेंचो – क्रि.– खींचो, खींचने का कार्य करो।

हेजलो – न.– माता का बालक के प्रति प्रेम, प्यार देना, प्यार देकर किसी बात या काम में प्रवृत्त करना, वात्सल्य, प्रेम, हेत।

हेजो – सं.– हेजा नामक रोग।

हेटा – पु.अव्य.– नीचे, सं.- चमड़े के फटे पुराने जूते।

हेटाकूटो – माथा पच्ची, सिर खपाना।

हेटा मेल दो – क्रि.– नीचे रख दो, जमीन पर रख दो।

हेटी वईगी – वि.– अपमानित हो गया, इज्जत खराब हो गई, नाक नीची हो गई।

हेटे – नीचे, जो गुण पद आदि से नीचा हो, अधीन, जमीन पर, किसी वस्तु के नीचे। (पाछा फरी ओ बाई देखजो दादाजी उबा माँडप हेट। मा.लो. 425)

हेटे काठो – मजबूत, मालदार, धनाढ्य, पैसे वाला, नींव मजबूत होना।

हेटो बईजा – क्रि.पु.– नीचे बैठ जाओ।

हेठे – नीचे / हेठे बेठनो।

हेड़णो – क्रि. – निकालना, खींचना। (एक दमड़ी की दवा मँगई दूँ हेड़ी लाखूँ छेमण कीड़ा। मा. लो. 168)

हेड़्यो – क्रि.– निकाल दिया, निकाल बाहर किया।

हेड़्या – क्रि.– निकाल बाहर किया।

हेड़ा – क्रि.– निकाला, बाहर किया, खेत का सेड़ा या मेर जहाँ घास पैदा होती है, सीमा, किनारा।

हेड़ीने दई दी – क्रि.– कोई वस्तु निकालकर देना।

हेड़ो – क्रि.– निकालो, किनारा।

हेंडो – क्रि.– गीदा हुआ।

हेणो – पु.– काठी का मुँह जहाँ से अनाज आदि निकाला जाता है, चूल्हे के पीछे सामग्री रखने का स्थान।

हेत – पु.– प्रेम, स्नेह, मुहब्बत। (इतरो हेत अब हरि से करो। मा. लो. 652)

हेंत – स्त्री.– शहद, मधु।

हेंत मेंत – वि.– निःशुल्क, फोकट, बिना दाम का।

हेतो – क्रि. – था, थी, गुनगुना।

हेतो हेतो पाणी – मंद- मंद गरम पानी, गुनगुना पानी, हल्का गरम, थोड़ा ठंडा, ठंडापन।

हेंदाणी – निशान, चिह्न, हस्ताक्षर, अंगुठा।

हेम – पु.– सोना, स्वर्ण, ठण्डा, बर्फ।

हेमंत – पु.– अगहन और पूस माह की ऋतु।

हेमरी – स्त्री.– चील, गिद्ध।

हेमरिया – स्त्री.– चील, गिद्ध पक्षी।

हेमात – हिमायत, पक्षपात, तरफदारी, मदद, किसी, पक्ष का समर्थन।

हेमूरो – अव्य. – कुछ भी छोड़े बिना, पूरा का पूरा, सर्वथा, बिल्कुल, सब का सब।

हेर – वि.– सेर, पुराना 80 तोले का बाट, शहर।

हेरक्यो – पु.– गले में पहनने का आभूषण, चन्द्रहार।

हेर के हवा हेर – क्रि.वि.– सेर अथवा सवा सेर।

हेर फेर – पु.वि.– घुमाव, फिराव, चक्कर, दाँव पेंच, चालबाजी।

हेराफेरी – अदला-बदली लेना-देना, परिवर्तन, गड़बड़ घोटाला।

हेराण – वि.– बीमार, परेशान, तंग, हेरानी, भोंचक, चकित।

हेराण वईग्यो – क्रि.पु .– बीमार हो गया, अस्वस्थ हो गया।

हेरावण – पु.– सिरावन, प्रातःभोजन।

हेरी – स्त्री.– गली, वीथिका, स्त्री के लिये सम्बोधन।

हेल – पु.– बोझा उठाना, गोबर या किसी प्रकार का बोझ अपने सिर पर रखना।

हेलमेल – वि.– प्रेम भाव, मेल-जोल, मिलकर रहना।

हेल्या – पु.ब.व.– खरगोश।

हेल्यो – पु.ए.व.– खरगोश।

हेला – स्त्री.– मेहतर की एक जाति, बुलाने

का शब्द, नाराजगी, अप्रसन्नता, तुच्छ, तिरस्कार, खिलवाड़, क्रीड़ा, फटकार, हाँक, बल के फूँदे।

हेलाकर्यो – क्रि.– नाराज हो रहा, अप्रसन्न हो रहा।

हेला पाड़े – क्रि.– बुलाना, जोर से बुलाने का शब्द। (गंगा हेला पाड़ीया रे भई जे बोलो। मा.लो. 638)

हेवाँ – स्त्री.– सिवैयाँ, बियाँ ।

हो

होई जाय – क्रि.– हो जावे।

होईऱ्यो – क्रि.– हो रहा।

होकड़्या में हाथ भरना – ठण्ड लगने पर दोनों हाथ खाँक में भरकर खड़े रहना या बैठना, कोई काम न करना, आलसी।

होक भगई – न.– शोक का भोजन, मृतक के यहाँ पर समधी की ओर से मंगलश्राद्ध के बाद भोजन करवाने की रीति, कढ़ाई चढ़वाना।

होकम – पु.– आदेश, सम्बोधन।

होकेऱ्यो – क्रि.– होकर के रहा, किसी का होकर रहने का भाव।

होको – पु.– हुक्का, तम्बाखू पीने का हुक्का

होको – क्रि.– पीने का हुक्का।

होग – स्त्री.– अंगुलि, वि.- शोक, रंज, दुःख।

होगो – क्रि.– होगा।

होच में पड़नो – पु.– सोच में पड़ना, अफसोस करना।

होचऱ्यो – क्रि.पु.– सोच रहा, विचार करा रहा।

होचील्यो – क्रि.– सोच लिया, समझ लिया, विचार कर लिया।

होज, हौज – वि.– ठीक, स्वस्थ, कुंड।

होज वईग्यो – क्रि.– ठीक हो गया, दुरूस्त हो गया, स्वस्थ हो गया।

होजी रे – सम्बोधन मालवी लोकगीतों का टेक पद, आवृत्ति सूचक शब्द।

होझ – वि.– ठीक, दुरूस्त, स्वस्थ, पशुओं के पानी पीने का स्थान, स्नानागार।

होट, होठ – पु.– ओष्ठ, ओठ।

होड़ – स्त्री.–प्रतियोगिता, बाजी,स्पर्धा। (राय राणाजी री होड़ नी करस्याँ अपणी भतीजी ने कईं कई देस्याँ मा.लो. 421)

होंड्यो – क्रि.–नाराज हुआ, अप्रसन्न हुआ।

होड़ा होड़ी – क्रि.वि.– शर्त बदलकर, देखा देखी, प्रतिस्पर्धात्मक।

होड़े – वि.– समीप, पास, निकट।

होड़ो – वि.– समीप, पास, निकट, पास में किसी का बसना या हरना।

होण – प्रत्यय, बहुवचन बनाने का प्रत्यय, यथा आदमी होण, लुगायाँ होण।

होणार – वि. – होनहार, होने वाली घटनाएँ, होनी, सुनार।

होणी – वि.– होनहार बात या घटना, होना, होकर रहना।

होत – क्रि. – होने जैसी बात, होना, सोत।

होत की जोत – क्रि.वि.– रुपया पैसा पास में होगा तो ही घर में उजेला या प्रकाश होगा, धन की महत्ता।

होता – पु.– यज्ञ कर्ता, आहुति देन वाला।

होतीवात – क्रि.वि.– होने जैसी बात या काम।

होतेली – स्त्री.– सौत, सौतेली माता।

होतो – क्रि.वि.– हो तो ही, होने पर ही, होवे तो।

होतो जाऱ्यो – क्रि.– होता जा रहा, कोई काम होते रहने की क्रिया या भाव।

होद – पु.– हौज, स्नान कुण्ड, क्रि. – ढूँढ तलाशकर, पानी का हौज या टंकी।

होदो – ढूँढना, ढूँढो, तलाश करो, हाथी का ओहदा।

होद्यो – क्रि.– ढूँढा, तलाश किया।

होंद्यो – स्त्री.– सोंधिया जाति का मनुष्य।

होंदणी – स्त्री.– सोंधिया जाति की स्त्री।

होदणो – खोजना, पता लगाना, तलाश करना, हाथी को होदा, पालकी, कसवाकर।

होदा – पु.– हाथी का होदा या पालकी। क्रि.– ढूँढा, तलाश किया, सौदा सामान।

होदा कसाय – क्रि.– हाथी का होदा या पाल की कसवाकर, बाजार से क्रय की गई सामग्री बँधवाकर।

होदो – क्रि.– ढूँढो, तलाश करो, सौदा-सामान, घरेलू सामग्री, हाथी का होदा, पालकी, बाजार से क्रय करके लाई गई सामग्री।

होदो पड्यो – क्रि.– ढूँढने लगे, तलाशने का काम किया, सामग्री पड़ी।

होदो लाजो – क्रि.– बाजार से सामग्री क्रय करके लाना।

होन – प्रत्यय, बहुवचन बनाने के लिए मालवी प्रत्यय होना, होनी।

होनार – होनहार, प्रारब्ध, भाग्य, अवश्य होकर रहने वाली बात, टाले नहीं टलती, सुनार।

होने की वजे – क्रि.वि.– होने के कारण।

होनो – प्रत्यय, बहुवचन बनाने के लिये मालवी प्रत्यय, सुन्ना, सोना।

होंप – पु.– सौंफ , एक मसाला।
पु.– सोना, स्वर्ण।
क्रि.– सौंपना।

होपणो – क्रि.– सौंपना, सौंप दिया, सुपुर्द करना।

होपो – रात का शान्त वातावरण, सुनसान, सबका सो जाना।

होम – पु.– हवन, यज्ञ।

होमणो – क्रि.– हवन करना।

होय – क्रि.– होवे, होता है।

होयरो – पु.– श्वसुर, सुसरा।

होर्‌ग्यो – पु.– समेट गया, इकट्ठा करके ले गया।

होर्‌यो – क्रि.– हो रहा, समेटा इकट्ठा किया पक्षी।

होरा – वि.– ज्योतिष अनुसार एक घण्टे का समय, हरे चने को जलाकर बनाया गया होला।

होरा ऊँबी – स्त्री.– चने के बूँटे और गेहूँ की हरी एवं सिकी हुई बाली।

होरा होरी – क्रि.–समेटा समेटी,समेटकर।

होरायें – पु.– श्वसुर को।

होरावे जनी – क्रि.– इकट्ठा ही नहीं होता, समेटने में नहीं आता।

होरी को फूल – सदा गाली गलोच करने वाला। (सुसरो हे होरी को फूल। मा.लो. 111)

होरो दोरो – क्रि.वि.– बहुत कठिनता से, जैसे तैसे ज्यों -त्यों करके, सुख–दुःख से।

होलड़ो – पु.– कबूतर एक पक्षी, एक गाली।

होली – स्त्री.–होलिका, होली का त्योहार।

होलो – पु.– भुने हुए हरे चनों का होला, हरे सिके चने, तोता, शुक।
(आकड़ बाँकड़, लाखड़ी जणपे बेठ्यो होलो।)

होवे – क्रि.– सोवे या सोने का काम करे, शयन करे, होना।

होंस – वि.– हवस, चाह, उमंग, उत्साह, इच्छा, कामना, होश, चेतना, ज्ञान कराने वाली मानसिक शक्ति, सूध। (थारा दादाजी का होंस उड़ावेगा। मा.लो. 388)

होश्यार – वि.फा.–समझदार, बुद्धिमान, सावधान।

होंसीली – स्त्री.– उत्साही, उमंग से भरी हुई, सचेत।

हो हो – सहमति वाचक ध्वनि, स्वीकृति, हास्य ध्वनि।